स्टेंबर युक्त रियम श्रीटिश्व लियान িসত শ্রের এবং প্রেরের সংগ্রায় দেই-क्रिम ग्राम कोवरनं श्राम हिन्। करनादा खात्र यथन करी रहेगा जागानिशदक ভারতির উচ্চ সাকুতে লইয়া চিয়াছে তথনই বা আমাদের অবস্থা কিরূপ ছিল, আর, যখন (थाई **करी रहेशा जामामिशत**क जादाताले ह লি**ইয়া গিয়াছে, তথ্যই বা আ্যাদে**র অবস্থা কিরূপ হইয়াছে,তাহা একবার ভাবিয়া দেখ। এ मः मादः (अञ्चर वनवान् — किञ्च छोहादक ্জয় না করিলে শতুষ্যের আর কিছুতেই মসু-মনুষ্যের আত্মার যে কি ধল— राष्ट्र न!है! সংসার-সংগ্রামই তাছার পরীক্ষা-ছল। ধ্রখ-**ন্ই আম**রা হেংহের পথে অগ্রসর হইয়াছি," তথনই দেখিয়াছি যে, দেই পাংগই আছাব तन, महाञ्च, नान्ति, मूकि, मयकी दिमागान . **षाट्यः ;** पात यथनहे ८७/८४त ४०,४ अपार्शन ক্রিয়াছি তখনই দেশিয়াতি যে, সেই দংগেই আন্থার ষত তুর্গতি ষত গ্লানি যত অনান্তি म्लाहेरे तिभिष्टाहि त्य. ধত মলিনতা। **्रधारमञ्ज्ञ भर्य स्वयस्त्रक प्रस्त्रक प्रस्ति** । त নেবে প্রচ্ছন বহিষাছে — প্রেয়ের পরে জ্বা-भरनत पन्तन थार्जाल्यस्त हार्नाहका-भ्र ध्रान-तानिए धाष्ट्रक तिश्वारि । ভাল করিয়া বুঝিতে হইলে দূরদৃষ্টি এবং वस्त्र हि बादमाक, -- तिहल हिंद छ।हारक ह <u>्थिश दिनशा यत्न रह।</u> াড়ভ পরীক্ষায় দেখা ঘাইতেছে যে, প্রের পূথে যাটা কিছু ্ দেখিতে ভাল ভাহাই মগত্যিকা, আর, যাহা किছू प्रिथिएं क्षेत्र एक है आहात शक्तिल অতএব নব বাবের প্রবেশ-দারে এবং আমাদের হৃদয়ের অভান্তরে এই বাব্য-টিকে যেন আমরা স্তম্প্রী অক্ষরে মুদ্রিত করিয়া রাখি বে, "প্রেয় ্ জিমাকে স্থামরা गृहिका-पूर्व पृत्त श्रदाम

(श्रेष चार्याएम् स्वक्रम नाक्- (श्रेष चा

নাদিগকে বৈৰূপ বিষ্ণৃষ্টিতে দেখে-যদি প্রেয়কে তাহার মার্কে বিয়দৃষ্টিতে দেখি তবে আমরা ভাগের কুছক হইতে রক্ষা পা-ইতে পারি ; কিন্তু আমন্ত্রা তাহা করি না, — ( श्रां कहे আন্ত্র আমাদের পরন স্কুৰ गतन ेकति, शिवृशीन षः । तालद्वैतः नगांव मिहे कर्णा वसूत इत्छ धन अन्न-मान দমস্তই দঁপিয়া দিই। আর-আমরা শ্রেয়নে খ্যাদের নিকটে আনিতে দিই না। শ্রেয় স্ফাৎ উপরের **করুণা—সর্ব্জিগতের স্থন্নৎ—** আমাদের সালে বঙ্গলের আকর – কোয়কে আমরা অধি 😘 করি, ও বন্ধুবর্গকে বলি যে, "শ্ৰেয়কৈ সাংগ্ৰ– এমন নিৰ্কোধ জার জগতে নাই! আপনিও স্থলোগে বিরত— অন্যকেও স্থালেলেগ বিরত করিতে চাল।" শ্রেষ হে, কি হগীয় ভ্**য়ত-রস** পান খবে, . খামল ভাছা দেখিতে পাই বা-ভাই মনে করি যে, শ্রেয়েতে কোন রসক্ষ নাই ৷ কিন্তু শ্রেয় অপেন মুখে সেই রস আস্বাদন করিয়া वटनन "तटना देव मध्य "भूतियाचा त्रिमस्त्राभा" ভিন্ন ও রদের কিছুই জানে না! শ্রেম কভ य पासत्मत छिष्ट्राटम वत्नन--"विशंश-कटन মন ভৃপ্তি কি মানে—তব চরণায়ক-পান-পিপাদিত নাহি চাহি ধন-জন মানে"—প্ৰেয় তাহার বাপাও বুঝি**তে পা**রে না। নববর্ষের সোপান-ছারে এবং হৃদয়ের অভ্য-स्टरत এই वाकाणि रयन धामता सम्माहे ककरत লিখিয়া বা**খি যে, "শ্ৰে**য়। **ভূমি** আমাদিগকে লইশ চল – তোমারই আমরা **অনুগামী ুইই**য়া সন্বংদর অভিবাহন করিব।" 🕌

সঙ্গীতের প্রথমেই বেষন বস্ত্র-সকলের স্থার বাধা কর্ত্তব্য, সেইরূপ প্রেরের পর্টে চলিতে হইলে প্রথমেই আত্মাকে পর্বার্থী সহিত এক-ভানে মিলিত করা কর্ত্তব্য । তা জিকার এই মুণ্য সময়ে আইছ আমরা আ মাদের হার্য-ছিত কুদ্র ক্রিকা বাসনা—ছুক্

কুদ্ৰ আশা—কুদ্ৰ কুদ্ৰ স্বাৰ্থ—বিশ্বৃত হইয়া, অপার के श्रेटब्र **মহান** উদ্দেশ্য—তাঁহার প্রতি করণা—ভাঁহার (४: रगत অনন্ত নিবিষ্ট আমরা আমাদের সমুদায় লক্ষ্য সন্থি-্করি। আইস আগর। বন্ধুবাদ্ধবে लिक रहेशी अकन्द्रा গ্রমা-একম্নে ত্মাকে আহ্বান করি—ভাঁছাকে হাদুরের গভীর মর্ম্মের অভান্তরে প্রতিষ্ঠিত করি – ও ভাঁচাকে হৃদ্যাধিপতিরূপে বরণ ল্যাদি ভক্তি সহকারে ভাঁহার চরণে এণি-পাত বরি। অদা হইতে এই আমাদের সাক্ষা হউব যে, যে কোন কার্যা করিব--াশতের পরম লিভ: পারনেখারের আদেশ গ্রহণ করিব; এবং কার্যা-অবসানে ভাহার প্রসর ম্থ-জ্যোতিতে অন্তঃকরণে অপার শান্তি সম্ভোগ কবিদ, উ।খার আশীর্কানের জভা-ভবে বাদ কবিবল ভাহাই আয়াদের স্কা :---তাহার প্রমাদ লইয়া সংসারে বিচ্বৰ করিব--তাহাই অথোদের বল, তাঁহার জেমরদে হ্রদয়-পদা বিকাসত জ্যাবি-ভাগাই আখাদের খানল, – এইরপে খামরা খালার খাননে নিজা যাইব,আস্থার আনন্দে জাগরণ কবিব— আত্মার আনন্দে স্থংসর অভিবাংন করিব এবং সময় উপুস্থিত হইলে আত্মার ভানন্দে हेश्टलाक रहेए जाकास्टर श्राम क्रिन। অদ্য হইতে খেন এই বিমল আনন্দের ব্রড আ্যাদের হৃদ্যে চির্জীবনের মত বদ্ধমূল र्व ।

হে পরমাত্মন্। তৃমিই কেবল একই
অদিতীয় পরখেশর। তোমাকে আমর। আভাষ করিতে পারিলেই আমাদের দেবভাব সকল অচলের উপরে প্রতিষ্ঠিত হয়—
কেইই তাহাদিগকে তিলমাত্র টলাইতে
পারে না। তোমার অজ্যে প্রসাদ দারা
তৃমি, আমাদিগকে পরিবেউন করিয়া রাখ,
বেন অস্তর-বাহিরের আত্রিক দল বল

আমাদের নিকট হইতে ভয়ে পলায়ন করে; তোলার অনোগ আশুরে বলী হইয়া ঘাছাতে আমর। সংসার-সংগ্রামে জয়ী হইতে পারি— ও তোমাকে কদয়াভ্যন্তরে পাইয়। সকল তুঃপ শোক অভিক্রম করিতে পারি—তুমি আমাদিগের প্রতি সেইরূপ কুপা বিতরণ কর, তাহা হইলে আমাদের সকল অভাব দুর হইবে।

ও"একনেবাছিতীয়ং ৷

## আদি ব্ৰাহ্মসমাজ।

্ৈচিত্র রবিবার ৫৫ ব্রাক্স নম্বর।
 আচার্থের উপদেশ।

পরব্রক্ষের প্রতি আন্তরিক প্রাদ্ধা প্রেমের দিক্ দিয়া **অতি সহজ জ্ঞানের দিক্ দিয়া** অতি কঠিন। শ্রদ্ধা—কি না ঐকান্তিক বিশ্বাস স্ক্রানাসোকে সত্য প্রকাশ পায়,

 শৃদ্দ্ৰ-ভোষণী নামক একথানি বৈফৰ স্থা-দায়ের প্রিকায় এই কথাটির বিশ্বদ্ধে উক্ত হই-রাছে যে, "ত্রেমের দিক্ দিরা শ্রামান্ত জ্ঞানের দিক্ দিয়া শ্রন্ধার কি ভেদ ও কি বিশক্ষণ ভাষা আমরা বুকিডে পারি না।" সম্পাদক মধাশয় যে, কেন ব্ৰিতে পাবেন না, ভাষা আমতা বুৰিতে পারিসাম ना । यातात तथामप्रकृ कृति नाहे--छात्व छेशाम দাবা দৌন্দর্যোর প্রতি ভাষার শ্রন্ধা ক্রমাইয়া দেওয়া কত কঠিন—সম্পাদক মহাশয় কি ভাষা জানেন ন। গ छल উपिछ दहेरक प्रथिया विम्तक यथन स्मानक्त्र महिल क्रोहात जिल्मा दिल, उथनके दुवा श्वत (स, त्रीक-গোর অভি ভাহার একা নংই--্সে বাজি প্রেমের দিক भिया bसारक रमशिष्ड खारन ना ; ध्यन,—:क अमन निः। विश्व (व दम **बाषागरक চ**त्स्मत स्मीनार्था । बाह्य ७ व : কবাইবার জনা বিজ্ঞান শাস্ত্রের নামারিধ প্রমান দর্শাইবে? জ্ঞানের দিক্ দিয়া দৌলর্ঘার এতি শ্রমা উৎপাদন করা যদি দহত হইও ভবে অল कात गाळ পড़िलाहे निधान त्रांकि भादहे किन इकेटड পারিতেন। সৌন্দর্যা যে कি ভাগা ভাবেই বুকিতে চয়, জানে ভাষা বুকিছে পারা প্রকঠিন। কিছ याश क्यारन तुवा सम् खाशाहे अङ्गानकाण तुवा हर. ভাবে কেবল শভাৰ মাত্ৰ বুৰা চটয়া পাকে; এজন্য स काम दिवस्वत एव एक एक कामना छात्त वृचि-য়াই ক্ষান্ত পাকি একালার সহিত অনেক সময়ে ভল बढ़ाता शांक : विर्देक राजा (परे छून-छनिक अप-দারণ করিয়। প্রকৃত তথ্ব নির্ণয় করা জ্ঞানের কার্যা; धार्वेजन कारनेते सिक् निया वर्धन कान विवदा आमा-

পাইলেও দত্যের প্রতি দকলের বিশি মাত্রায় প্রকাহয় না। দতা আমা-

्षत्र व्यक्त रुव एशन भाका आर्कन कींतर छ শামাদের বেষন প্রিশ্ব লাগিয়াছে—ভাষার মুল্-ও एकमनि हुए २३शास्त्र। (अध-४१व) व्यापना कक्ष्यात करू विषय छ। (४ त्। वन) तने ; ए १४। स्थम कि। अधम सिंह सिंहर प्रकार कामाराज्य सहा आकर्षा করে ৷ একজন প্রিছ ইপাদা কার পোনছলে বলি-श्राहरू "योगराहे छ। यस व धरामः" ( अपानिक-विश्वा-শ্রন্ধার সকলে ভেমনি বলা স্টেতে পাবে বে, বাসন্ত কো এছে দেখা কাৰ্য ভাগালাদ নামত জালা প্ৰাণ্ড হউক এই ভাষার আন্তারক ব্যানা,---আম্রা বাহাকে हैक्छ। कवि था- ११ किनकोशी १५७, छ। हाई स्थापता भारे निषि "विश्वधादवम्", - त्य राष्ट्रा-संबाई विवर्णो हो এই বাকো আমরা অগা সম্প্র করি, এইরপ প্রের निक् निम्ना सका नगरीन न मिगाई स्थापदा की मा पान -এবং ভাষাত ভুলের সভাবন: প্রসূক ভান খারা সেই वकः। मृत्र करियाने कमा मटउटे रहे। वका सङ्क्ष्य छहू ক্ষেবল ক্ষেত্ৰক আশাৰ কৰিবল বলিন। ভাকে ভভক্ৰ खाण कें। वाटक, वयन जारा ल्यानन **अवनयन भा**त्र ख्यमहे छाटा पाकी दशा पड़ी भीडरक न्यापका ভাৰবাদে কৰম ভাষাকে দৰ্বভেগজা ভাল বলিয়া বিশ্বাস কৰে, — এলপ নিশাস সহজ বটে কিন্তু ওল্লপ विश्वानक विश्वान क्षा शहित्व भारत माः अने यनि অস্ত্রমন্ত্র পরীক্তি ধারা পতির সদ্ভব-সম্ভ বিশেষ কলে জনগত খইনা ভাষাৰ ঐ জনদেৱ বিধাসকে দুও ক-धान, छान। १हेलाहे हल' । हिल्ह भारत स्व के शक्ति आहि ं भंजीत वाहा आस्मित निक् निका छित्यम हैव्वादका ে একের সংক্রিত **পর**ল বিশ্বাস সভরতের ত্রেমের विकेश कि विकास कि अपन्य कि अपने कर मिला कर महान् भागी दिवान : balba क्छाटमंत्र मिक् निर्दा क्रेसी शास्त्र <u>त्थिमा वाङ्गिलिश्व मर्का वैश्वाद्यां बाधाय अक्र</u>करक विश्वाम कतिया ठेटकन-छ।शाह्मत माथा। भाषिक, ना कामी वाकिनिध्यत मध्या बाँशता किन्दृक्तित पृक्तिका विश्वान कत्रिया ठेरकम-श्रीशास्त्र नरना। अधिक, हेन यमा कठिन; किन्न विधि देवम् वना साहे इ भाइत तर माराज्य मान मझ्डाम क्या वृद्धि उन्तर मान-हिंड मामक्षमा बाह्य, डीशदाहे गक्ल बालका कम ঠকেন। প্রেম-খূনা বৃদ্ধি বৃদ্ধিই নহে, জারা অভিবৃদ্ধি! कान-ण्ना (अम अमरे नः १, ७। श्रु कड़-कामिक, कान कार दशासत नामक्रमाहे संदर्भत मृह जिल्लिका शेष्ट्रांद्री मान कार्यन दण, बाकारच अञ्चलन एक ख्याहनत क्षण हिल, अथन नृष्ठन देवकावीन (११४ छ एस बनाय छ। हा ्रव्यासन सम्ब स्ट्रेटिंड के, डीकांबा बीज्य श्राम स्मानार्वा নহাশযের ব্যাখ্যান প্রভৃতি প্রছের যে কোন একটি পত্র ইনটাইবেন এই পতেই ভাষাদের তুর ভাতিয়া शिक्टि ; अक्रम नटचंड एक मण्यानक मधाना अलिहा द्दम (य. "मायहा देवि कि हि. त. नाकाक कमणः कानारणका (धरमत कविक नयान कति छ अव ७ ३३-ছেছে। এইটি বাশ্বধর্মের প্রকৃত ইয়াকৈ এলিয়া বোল

দের নিকট প্রকাশ পাইলেও অনেক সময়ে আমরা অপ্রকা করিয়া তাহাকে হারাইয়া কেলি। মিখ্যার প্রক্তিই বরং আমরা অত-বিত ভাবে প্রকা সমর্থন করি;—একথা আন্ মরা কর্নে শ্রবন করি মাত্র যে,

কোহেবালং কঃ **প্রাণাৎ য**দেষ আকাশ আন-দেশন সাথে।

কেবা শানাবেপ্ত। করিত কেবা জীবিত থাকিত যদি এই আকাশে আনন্দ-মন্ধপ পরবেক্ষা না থাকিতেন; ভিন্তা এ কথাটির প্রতি
আমাদের বিশ্বাস কতটুকু? অতীব যংসামানা! এত অল্ল যে তাহাব প্রাণে কোন
বল নাই! কিন্তু যথন আমরা শুনি যে,
"মদৃপ্তই সকলের মূল—অদৃপ্তেরই বলে
আমরা জীবিত আহি—অদৃপ্তেরই বলৈ আন্
মরা চলাবলা করিতেছি—অদৃপ্তেরই কলেতের
গ্লাবার" তথন উথার ভারাবি, আমরা কি যে
ব্বিনামণ তাহার ফিকানা নাই, অথচ উল্

ংর।" **এ,ক্থার ভা**মর। কৈনে অর্থ বুলিতে পারিলাম না। স্থানি আগ্রধমাজ কোন কালেই এরপ কোন ৰাক্স ৰলৈন নাই যাগতে জ্ঞানকে প্ৰেম অংশকণ বড় वर्गात वा त्थारक कान वार्षकः वह वृक्षाः । वारि जाकामगाभ रहेर७ ठ्डकं अङ्ब्ति विकास वास्क स्ता जात्मक कथा वल। श्रेशां व वार्षे किंद्र कान श्लिहे का मनत एन-लागव कता १व नाह, नव छ छिन विद्वारत अल्ब इता अल्ब क्या वना इरेगाह ৰটে কিন্ত কোন স্লেই বিউদ্ধু প্ৰেন ভক্তির গুণ-সাঘৰ করা হয় নাই। ধর্মারণ গৃহ অভিনা করিতে হ**ইলে**— क्कान अदर ८ अन प्रेरे हारे; ब्लान योगे ना शादक फटन के १८६व शहम कृषि काथात्र १ आम यहि मा शहक करवे छशत थ्यद्यायम काणात १ शृहात लक्षम कृषि धवः প্রাঞ্জন ছুইই খণন সম্বিক্ষাক্ত ভগন জ্ঞান প্রেম ष्ट्राय अक्टिक गामि के देशों आत वक्किक वाङ्गाहेट छ या छत्र। वियम दिलाई। व हमान छेलुद्धारने व पछि बाब प्रकार कारा शाहात का जिल्लाहर्मा का कि एवं. त्यामारक छन्। यात्रा पृष्ठ कता छेठिक छ स्थामारक स्थाम षात्र। मक्षीत कता উচিত। ्रेबंडिमान विवासन नात मामारन। करे (ग, ज। माह्र मृक् अस्तरम-- भाषा असा वि বিভদ্ধ জ্ঞান প্রেম্ময়, ও বিশ্বগাড়ীত অনারিক বিশ্ব छान्यश्र- प्रवास मरका विश्वयाच वावतान माहै; ब विष्ठाः व्यामादनत्र नहिष्ठः मन्नानक सहानदान दिवान म र ८ जन साहै, - जारा जिन वमुद्रश्री होन करिया-(b # 1

গুনিব। মাত্র আমাদের মন কেমন সহতে বিশ্বাস করিয়া কেলে যে, "এই কথাই ঠিক্"। আনন্দকে আনৱা জ্ঞান দারা উপলব্ধি কবি – আনন্দ বে কি তাহা আমরা জানি, ইহা আমরা প্রত্যক্ষণ জানি যে, আনন্দই আমা-দের সকল কার্য্যের মূল প্রবর্ত্তক—,আনন্দই আমাদের সকল কার্শেরে চরম লক্ষ্য 🔋 আনন্দ-সক্রপ পর ব্রহাই সকলের মূলাধার—এ কথাটি জ্ঞানে: কথা,—তথাপি ইহার প্রতি আমা-দেব শ্রাষ্ট্ল না; আর অদৃ**উকে অ্নর।** - यम खान-भारा छेनलांत कति मा-जानम ষে কি ভাগা আমর। আনি, অদৃষ্ট যে কি ভাষা আমরা আনি না; আনন্দের আকর্ষণ আমরা ব্রাঝতে পারি এবং ভাষা কিরুপে কার্ষ্টোর আবন্ধনা করে ভাহাও আমতা প্রদয়-क्रम कति, अर्छे ध्य कि धाकर्रांन क्रमंद्रक বন করিয়াছে ত.হা আমরা কিছুই বুঝি না – কামান কালেও ব্রিচে পারিব না, আনন্দ বে মূল প্রবন্তক পদের উপযুক্ত, ইহা আনা-ट्रिय खाना कथा,—हेटा खात्नंब कथा, खनु हे যে, কোন কিছুর প্রবর্ত্তক, ইংগ আমানের না जाना क्या,--- इंश जब्हादनत क्या;--জ্ঞানে যাহা স্পষ্ট প্রকাশ পাইতেছে ভাষা আমর। কখন ব। উপেক্ষা করিয়া কখন ব। উপহাস কার্য়া কথন বা হুচ্ছ তাচ্ছিল্য করিয়া আনায়ানে উড়াইয়া দিই, আর,জ্ঞানে যাহার মুদ খুঁজিয়া পাওয়া যায় না, তাহারই প্রতি আমরা ঐকান্তিক শ্রন্ধা সমর্ণণ করি,—ইছা कि आंगादमत आंग्रात विकात-मना नटह? আমরা সত্যকে জানিয়াও সত্যকে ভোলবাসি ना-णागारमृत प्छारन्त সভ্য প্রাণের সত্য নহে—ইহাই **আমাদে**র আত্মার বিকার-দশা! আমরা মিখ্যাকে না জানিয়াও यिशादक जानवानि खाँदनद्र यिथाहि जाया-দের প্রাণের সত্য—ইহাই আমাদের আত্মার বিক্রি-দশা! জ্ঞানের প্রশক্ত পথের উপর

আমাদের মনের মালিনা উপেকা আপ্রত্তা অয়ত্ব রালীকত করিয়া দে পথকে আমরা যত তুর্গম করিয়া তুলিয়াছি—প্রকৃত পক্ষে ভাহা তত তুর্গম নহে। প্রদার অভাব-প্রস্তুজ্ঞ জৌন-পদ্ধীর মন পদে পদে সংশয় হারা বাধা প্রাপ্ত হয়; সে বাধা অভিক্রম করিত্বে অনেক সময় লাগে, কিন্দ্র একবার ভাহা অভিক্রম করিয়া উঠিতে পারিলে সম্প্রাধ্য পথ চির কালের মত নিক্টক হইয়া যায়।

জৈমের পথ যদিও সকল কিন্তু ভাহাতে विश्वाम नारे, - (म भग जनभर्या नाम् कृत ক্ষণে মুৰ্তি প্ৰিবৰ্ফন করে,--অনুকল বায় বহিল তো চোহা দিবা ত্ত্যান, ভাত্তিকুল বাহু বহিল তো ভাষাতে অঞ্চল হওয়া স্ক্ৰিন্ কুনঙ্গের আবর্ত্তে ও কুতর্কের স্বঞ্জাসাতে ঈশর েল্ডার **সরল অন্তঃকরণ মোহে নিমগ্র** সভয় किष्टू है समा**ख्य नरह।** कि**न्ह** रच ब्हानी वर्णक কুনচের ভিতরের ভার বাবায়াছেন--বন্ধুতার অব ৩ঠনের **মধ্যে স্বার্থপরতা**র বিষদ**ন্ত** এবং পাপাদভার কর্লয়-লেখা অবলোকন করিয়া-ছেন, -িঘনি কুতকের ভিতরের কথা বুঝিতে পারিস্লাছেন, বিদ্যা বুদ্ধির প্রাথর্ব্যের আ-ড়ালে অবিদানি তমো ঘনীভূত য়াছেন, তাঁহার নে ভগ নাই 🕶 তাঁগার একমাত্র ভয়ের কারণ এই সে পাছে সং-সারের অসারতা জ্ঞা**নহ**িতাহার জ্ঞানের চরম পীমা হয় – ও প্রেম তাহার হৃদয় পनायन करतः, भारत खेहारम এই বলিয়া আ**ক্ষে**প করিতে হয় দে, অনেক কৃতৰ্ক ও সংশয় খণ্ডন কৰিয়া যদি বা সভোৱ কুলে উপনীত হওয়া পোন—ইবন-এেমের অভাবে এখন দেখিতেছি যে, চানিদিকে কেবল জীবন-গুনা মকভূম প্রসারিত রহি-য়াছে, —আমার এতদিনের এত যে পরিশ্রম, ममलहे प्रधार हहेता वह सना वाक याटबबरे प्रहेमिटक मार्रिया हुन्छ। स्विक्तिक 🚅 (১) বেন কেনে উন্নত হইয়া জ্ঞানকে আছঃকরণ হইতে নির্ব্ঞাসিত না করেন, (২)
বেন বিদ্যামদে উন্নত হইয়া প্রেমকে বাদ্য
হইতে নির্ব্ঞাসিত না কনেন!

সংসার চালাইতে হইলে মেমন আয়
বয়ে উভয় কার্যেই নিপুণ হওয়া আবশাক,
ধর্ম সাধন করিছে হইলে সেইরপ জান
উপার্জন এবং প্রেন্ডিলের চুই কার্যের
জনাই প্রস্তুত হওয়া আবশ্যক। জনানকে
যদি মনের ভিতর চাবি বন্ধ করিয়া রাখা যাহ,
আথবা লোককে দেখাইবার জন্য মন্তের সময়ে
তাহালে প্রকাশ্যে বাহির করা, যায়, তবে
ফুপণের ধনের নায়ে তাহার খালা না থাকা
সমান; কিজ জ্লানের আশাস-বাক্যে শ্রনানি
পিত হইয়া আমরা যদি স্বর্জেে রীজিমত
প্রেম সমপ্র কবিতে পার্বি—ভিবনের চরম
উদ্দেশ্য সাধন কার্যে ধাদ জানকে রীজিমত
ধাটাইতে গারি—তবেই জানাদের জ্ঞান
সাথক হয়।

সাংসারিক কর্ষ্যের যেমন তিনটি অঙ্গ আয় বুয়ে এবং স্থিতি, আধ্যাত্মিক সাধনেরও সেইরপ তিনটি অস্-—ত্রমজান উপার্জন, ত্রকো গ্রীতি সমর্পন, এবং ধর্ম্মে 🕏 ি। যত-कर् श्रीहा द्वाळाटनह डेलाइट्रेटन नियुक्त ধাকি-পরম সতেরে অনুসন্ধানে নিযুক্ত ণাকি—ততক্ষণই জ্ঞান জাগ্ৰত অবস্থায় থাকে ভাহার পরে ভাহা মনোমধ্যে বিলীন হইয়া সংস্কার-মাত্রে প্রধ্বেসিত হয়, তেখনি আবার ্যতক্ষণ আমূলা ঈধরেতে প্রেম সমর্পণ করি, ততক্ষণই আমাদের প্রেম জাগ্রত অবস্থায় থাকে তাহার পরে তাহা সংস্করি-অবস্থা প্রাপ্ত हर्ये। जेनदात ७। छि यनि व्यागादमत नका থাকৈ তবে যেখান ২ইতে যে কোন-সভ্য 'প্রাপ্ত হই <mark>তাহা ঈখ</mark>রের নিকট ১ইডেই প্রাপ্ত হই, আর, যেথানে যাহার গ্রতি নিঃদার্থ ত্রেম প্রদান করি' তাহা ঈথববেই প্রদান

করি। ঈশরের নিকট ক্রিক জ্ঞান উপার্ক্ত ন এবং কবং নডে নিংঘার্থ প্রীক্তি সমর্পণ এই চুই কার্যের সংকার বথন আঁমাদের আত্মাতে বদ্ধমূল হয়—তথন সেইরূপ সংক্ষাব এরু&-क्राप्त धर्म गरमत वाष्ट्र । ज्ञालत धर्म रयमन শৈত্য এবং অধির ধর্মা ষেনগউত্তাপ, সেইরূপ, মোহমুক্ত আলার ধর্মাই-পরম সভাজ্ঞান উপাৰ্জ্জন এশং শিশুদ্ধ নিষ্কাম প্ৰেম বিভরণ। বেশজান এবং বেশুগ্রীতির সংস্কার মধন মনোমধ্যে বদ্ধমূল হয়, তথন মন স্বভাবতই সতোর দিকে ধাবিত হয় ও কার্যা মতা-বতই মঙ্গলের দিকে ধাবিত হয়—ইহারই नाम धर्मा । मनुशाक्ष्ये मनुद्रशत धर्मा,-- गला-জ্ঞানের উপার্জন এবং নিঃস্বার্থ প্রেমের বিতরণেই মনুষাত্ব—স্কুতরাং ইহাই ধর্ম শব্দের बाह्य ।

ত্রাকা ধর্ণো উক্ত হইয়াছে "ব্রেকানির্ছো নাহস্থঃ সাবি তজ্জানপরায়ণঃ যদ্য**ৎ কর্মা** প্রক্রীত ভদুঝাণ সমপয়েও।" গৃহ**স্থ ব্যক্তি** खक्रानिष्ठं ≉ এবং তেख्छानशतायुग इहेरवन, ইহাঁতে ত্রজ্জান উপার্ক্তনের কর্ত্তব্যতা উপ-দিপ্ত ইইতেছে এবং তিনি যে যে কৰ্ম করি-বেন তাহা পরত্রক্ষেতে সমর্পণ করিবেন ইহাতে ঈশরেতে গ্রীতি সমর্পণের কর্ত্তকতা উপদিও হইতেছে। ঈইরোদেশে নিঃসার্থ ভাবে জগতে প্রেম বিতরণ করিলে তাহা লেখারেতেই সমর্পণ করা হয়। এীতির উত্তে-অনায় কেছ যদি কোন ব্যক্তিকে একটি মূল্য-ান অসুরীয়ক প্রদান করেন, তবে ভাঁহার সে দানকে অঞ্গীয়ক-দান না বলিয়া প্রেম-मान वलाहे मण्ड - किन ना **म्बन्न** त्रीयक . **(कंवन** একটা উপলক্ষ যাত্র, তিনি বৃদি গর্কের উত্তেজনায় ঐ অনুবীয়কটি প্রদান করিতেক ভাহা হইলে ভাঁহার সে দান দানই হইত না—তাহা অসুরীয়কের বিনিময়ে দাতৃত্ব-োরব ক্রয় করা মাত্র, এই জন্ম ত্রেশিশ্ম

বলেন "শুদ্ধরা দেয়ং" শুদ্ধার সহিত দান করিবে। দান মাত্রই প্রেম দান, তভিন্ন আর তে কোন দান তাহা দানই নহে—তাহা ক্রেয় বিক্রর মাত্র। আমরা ঈথরকে প্রেম ভিন্ন আর কিছুই দিতে পারি না—ঈশ্বর আমা-দের প্রেম ভিন্ন আর কিছুই গ্রহণ করেন না,— আত্মার সহিত প্রমাজা প্রেমসূত্রেই গ্রহিত।

শ্লারের স্থতুঃখে, ভয়-লোভে, সম্পদ বিপানে ইশির-প্রীতি যখন বিচলিত হয়, তখন ভাহাকে অপনে পুনঃপ্রতিষ্ঠিত করিবার জ্বনা ত্যানের দহায়তা আবশাক হয়। নিহত চইতে আমরা বিবেক প্রাপ্ত হইতে পারি। অহায়ী স্থয়ুঃ**থের সহিত নিত্য** ব্রকান্দের কি প্রাছেদ, ভয়-লোভের সহিত নিঃসার্থ প্রেমের কি প্রভেদ, সম্পদ বিপদের সমিত অক্ষা চির সংখাদের কি প্রভেদ,জ্বানই তাহা আমাদিশকে দেখাইয়া দিতে পারে। ভানের উপদেশ গ্রহণ পর্মক আমরা যদি স্থপত্তথের চকল তেওক কটিছিয়া আন্তার অন্তরত্য মটল বেকান্দে নিময় ইইবার চেষ্টা করি, ভয় লোভের স্রোভ অভিত্রন ব্রিলা নিংসার্থ প্রেমের আকর্ষণে মনকে ভাষাইয়া দিবার চেপ্তা কবি, সম্পন বিপদের আাবরণ ভেদ করিয়। পরত্রেক্সের অভয়-পদ আশ্রর করিতে চেপ্তা করি, তাহা হইলে আমরা আনন্দ-ময় অনন্ত জীবনের প্রথে অব-শাই অগ্রসর হই। জ্ঞানের প্রসাদে যথন মনের ছৈধ্য হয়, তথনাই ঈখর-প্রীতি নিক্র-দেগে স্বীয় অভীষ্ট পথে ধাবিত হয় নচেং তাহা সম্ভবে না। সত্যজ্ঞান এবং নিঃসার্থ প্রেম এই দুয়ের **নঙ্গ**ম-স্থানই ধর্ম্মের প্রভাবণ।

আইস আমরা ঈশরের নিকট প্রার্থন।
করি "দে'ই জ্ঞান—দিব্য জ্ঞান, দে'ই প্রতি—
তেন প্রীতি, তুমিই মঙ্গল-আলর। বৈর্যা দে'ই
বীর্গা দে'ই, তিতিক্ষা সন্তোম দে'ই বিবেক
বৈরাগ্য দে'ই দেই ও-পদ আগ্রের।" ঈশর

স্বাঃং যে জ্ঞান সমুষো মনুষো বিভরণ করি-তেছেন, ভাহাই দিবা জ্ঞান; তিনি যে গ্রীতির প্রস্রবণ মানুষা-হৃদয়ে উন্মুক্ত করেন, তাহাই বিশুদ্ধ প্রীতি; এবং তিনি ষে খর্মের প্রবর্ত্তক তাহাই সনাতন সার ধর্মা,—তাহাই ব্রাকাধর্কী রাপে আমাদের মধ্যে আরিভূতি ষ্ট্য়াছে। তিনি আমাদের প্রতি কুপা করিয়া তঃখ-শৌকময় সংসাবের মধ্যে আনন্দের ছার উন্মুক্ত করিয়া দিয়াছেন—শুক সরুভূমিতে প্রেমের উৎস উৎসাহিত ক**িয়া দিয়াছেন**— ভয়-বিপদের অন্ধকারে অমৃত অভয় জ্যোতি বিকীণ করিয়া দিয়াছেন—তাহাই ত্রাক্ষণর্ম-जारा बागारनत भरवा बारिङ् छ इहेग्रारह। আক্লৈ আমাদের প্রাণদাতা এবং জ্ঞানদাতা পর্ম পিতাকে শ্রদ্ধা ভক্তির সহিত প্রণায করিয়া তাঁহার সেই ভাষাধর্ম - তাঁহার সেই অমৃত গাশীর্বাদ-মস্তকে ধারণ করি, সেই ভ্রানাঞ্জনে মনশ্চকু অঙ্কিত করি,সেই শোক-তাপহারী সঞ্জীবনী স্থধা গদয়ে লেপন করি,— তাহা হইলেই আমাদের মনুষা জন্ম দার্থক इहेरव ।

ওঁ একমেবাদিতীয়ং।

## ব্ৰাক্মধর্ম নীতি।

উপক্রমণিকা।

#### নীভির সহিত ধর্মের সময়।

নীতি ধর্মোন্নতির ভিত্তিভূমি। নীতি
সম্বন্ধ উন্নতি লাভ না করিলে ঈশ্বর-বিশ্বাস
ঈশ্বর-প্রীতি ও ঈশ্বর-ভক্তিতে উন্নতি লাভ
করা যায় না। ধে ব্যক্তি রিপ্গণের ভাড়নাম অহির, যে ব্যক্তি অপবিত্র চিন্তায়
নিম্প্র, যে ব্যক্তি পাপ-কার্য্যেরত, ঈশ্বরে
ভাহার স্থলন্ত অটল বিশ্বাস থাকিতে পারে
না। এ প্রকার ব্যক্তির ঈশ্বরের নামে হুৎকম্প উপস্থিত হয়, সে ঈশ্বের অটল বিশ্বাস

স্থাপন করিবে কিরপে ? ঈশরের অক্তিত প্ৰান্ত স্বীকারে নৈতিক-অবনতি-গ্ৰস্ত লো-क्त्र अत्रिष्ठ **इत्र ना**। नीजि-विक्र**क कार्या** হইতে, পাপ হইতে গিনি যত দুর বিরত ছয়েন, তিনি ঈশ্বরে তত্তুর বিশ্বাস **স্থাপন** করিতে পারেন। পাপচিন্তা, পাপকামনা ্ষাঁহার আক্সাকে কলুষিত করে, যিনি পাপ-কর্মে রত ২য়েন তাঁহার আতায় ঈশবের . প্র**তি বিশ্বাস স**কাদা অটল ২ইয়া **থাকিতে** : পারে না। ফিনি পাপচিন্তা, পাপকামনা ও পাপকাশা হুইতে এককালে বিন্ত হুইয়া-**एन**, তोशंद क्रमस्य क्रेयत-विश्वाम मर्खन পূর্ণাকারে বিরাজ করে, সর্ব্বদা অচল, অটল, ফির থাকিয়া তাঁহার শরারকে দেবমন্দির করিয়া তুলে ৷ ঈশর-বিশ্বাস সম্প্রেক **যেমন,** ঈশর গ্রীতি ভ ঈপর-ভত্তি সংক্ষেত্ত তেমনি। পাণীর ক্দণে প্রকৃত স্বীপর-প্রীতি ৩ প্রর-ভ**ক্তির স্থান হয় ন**া । যিদি **নিম্পা**প্ত निकनक, निर्मान, शिन शरिकार, त नूर्व আদর্শ, জুশ্চরিত্র ব্যক্তির আত্না তাহাকে ভাতি কারতে, ভক্তি করিতে, পারিবে কির্মপে। পাণের এতি যাধার কি'দিখাত প্রেম পাছে, বংশ্বর পূর্ব আদর্শ প্রযোগরকে দে ওক্তেত রূপে হাররের সন্থিত কি প্রকারে প্রেম করিতে পারিবে। এক শ্রেণীর লোক আছেন, দেখিতে পাওয়া যায় তাঁহারা প্রায় সর্বাদা ঈর্ষর-ভক্তির কথা বলিডেছেন, কিন্<u>বা</u> ঈশ্বর-প্রেমের গান গাছিতেছেন, ংয় জ দীবর-সংকীর্ত্তন করিতে করিতে কিয়ুঞ্**লে বক্ষ** ভাষাইয়া দিতেছেন, কিন্দা দৃশা প্রাপ্ত হইতে-ছেন, অথচ নীতি বিষয়ে উঠত নহেন্ত হর কাম-রিপুর সেবক, নয় লোভ-পরতন্ত্র, नग्र सार्थभद्र, नग्न निर्मत्र, निर्श्वद्र । এ स्थकात লোকের হৃদয়ে অকপট প্রকৃত ঈশরভক্তি বা প্রেম জন্মায় নাই। ইহাঁদের ঈহর-প্রেম অনুদেরের চারিদিকে খুরিয়া বেড়ায়, কিন্তু হাদ-

য়কে স্পর্ণ করিতে পারে তাহ্যতে এবেশ লাভ করিয়াও স্থান প্রাপ্ত ইয় না। যাঁহা-দিগের একদিকে ঈশরগ্রীতি ও ভক্তি লাভ করিবার বাসনা, **অপর দিকে পাপ হইতে** মুক্ত হইবার চেষ্টা, <mark>তাহার। ঈশরের প্রতি</mark> প্রকৃত প্রীতি ও ভ**ক্তি স্থাপন করি**বার দি**কে** গমন কৰিতেত্ত্ব তাহাতে সন্দেহ নাই এবং এজনা তাঁলারা সকলের সাধ্বাদও পাইতে পারেন ভিন্তু বতক্ষণ না ভাঁহারা পাপ হইতে সম্পূর্ণ রূপে মুক্ত হইবেন, যত-কণ না তাহারা পাপচিন্তা, পাণালাপ, ও পাপকার্য্য সম্পূর্ণরূপে পরি-ত্যাগ করিবেন, তভক্ষণ তাঁহারা আত্মায় পূর্ণ-শাত্রার প্রকৃত **ঈখ**র-প্রীতি ও ভক্তি লাভ ক্রিতে পারিবেন না।

আথাদিগের প্রাচীন ঋষিত্রা বলিয়াছেন যে কৰ্মাদার। চিত্তভানি হয় এবং চিত্তভানি ছারা ত্রেক্সজান লাভ হয়। ইহা অতি গভীর সতা। মানুষ <mark>ষেমন উচ্চ নী</mark>তির অনুযায়ী পুণা কর্মানকল সম্পাদন করিতে থাকে, সেই প্রত্যেক পুরাকর্ম-সম্পাদনের সঙ্গে সঙ্গে তাঁহার চিক্ত যাৰ্ক্তিত ও উন্নত হ**ইতে** থাকে। আবার ্যেমন চিত্তগুদ্ধ হইতে থাকে ও আত্মা পৰিত্ৰ হইতে থাকে, তেমনি আত্মার দৃষ্টি পরিমার্জিত হয়, যানব তথন ঈশ্বরকে দেখিতে তাঁহার স্বব্ধপ বুৰিতে অধিকতর কৃতকার্যা হইতে থাকে। প্রবিত্র ने यत शतिक-छतिक मानत्तत मध्रास्ट स्वाति ভূত ইইরা থাকেন। যিনি পূর্ব পবিত্র স্বর্ত্ত श्रविक ना इरेटन छाहाटक जाना कितारश मस्य रहेएज शास्त्र ? मक्न शाश्र, मक्न ज्ञान বিত্ৰতা হইতে বিষ্ণুক্ত না ছিইলে সেই অনন্ত পবিত্র সরূপের পবিত্রময় ভার বিরূপে হৃদ্রে धातना कता याहेएक सादत १ माठ वर एनथ, **এই नी** ि शानन चांत्रा आयरा द्व दक्वन প্ৰরে প্রহৃত ভক্তি ও প্রেম বাশ্বা করিতে সমর্থ হই তাহা নহে, তাঁহার অনস্ত প্রেমমর ভাব, তাঁহার অনস্ত জ্ঞান ও করণা, তাঁহার অনস্ত পবিত্র স্বরূপ, ইহজন্মে যতদূর আনা সম্ভব তাহা জানিয়া, এ জীবনে আগরা যত-দূর ত্রন্মজ্ঞান লাভ করিতে পারি তাহা লাভ করিয়া, কৃতার্থ হই।

এইরপ দেখা যাইতেতে যে সম্পূর্ণরূপে ধার্মিক হইটে গেলে সম্পূর্ণরূপে নীতিপ্রায়ণ হওয়া আমন,ক। নীতির সংক্ষাদ্দ দীয়ায় আমরা উঠিতে পারি না বলিয়াই আমরা ধর্মের সর্ক্ষাচ্চ দীমায় উঠিতে পারি না। ধর্মের সর্ক্ষাচ্চ দীমায় আরোহণ করিবার জন্য নীতির সর্ক্ষান্ত মীমায় আরোহণ করা আবশ্যক। ধর্মোন্তির উপর যথন ধর্মোন্তির এরল প্রভাব, বৈনাত্তর উপরি যথন ধর্মোন্তির সেলান, তথন প্রত্যেক বর্মোন্তি, দাবনাকাক্ষার নীতি পালনের প্রতি সম্পূর্ণ মনোযোগ প্রদান করা করেবা।

বেসাধর্ম গ্রন্থের দিতীয় থতে ত্রেকাধর্ম্ম-নীতি আত **স্থল**ররূপে বার্ণত ও ব্যাখ্যাত হইয়াছে। এই ত্রাশাবর্ণ্ম-গ্রন্থ সচরাচর পাঠ্য प्राक्त नाम नरह, हेहा धर्म-मणकीय मकल বিষয়ের তত্ত্বর্ণ গভীর-জ্ঞান-গউ পুস্তক। এইরূপ আহু এতদেশে কিন্তা অন্য দেশে স্থাপ্য নহৈ। ভক্তিমান ও চিন্তাশীল লেকের পুর্বে ইহা চিন্তার ক্ষেত্র প্রশস্ত क्षित्रा प्रमा हैश्र जाया । (यमन जेनात, जीव के एक मिन के जाता। देशांट वाहा बन्ध अमनियाबात श्राहकि, मुक्ति, छेशामना ७ शास्त्र विचार यसन नाना छण् वायाछ হইয়াছে, তেমনি শানুষের নৈতিক কর্তব্য সম্বর্গায় সভীর ভার সকল পরিব্যক্ত হইরাছে। **এहे अटबर मध्यम् ७ तम (मधिया अट**नक चाइडे ना इटेटज भारतन किंछ हैशात जिभ-দেশ ৰাজ্য সকল যে গভীরতর ও ক্লিয় বিদ্ধ-

কারী তাহা কেহই অনীকার নরিতে পারি-বেন না। ত্রাআগণ অদ্যাদি সমাক রাপে এই প্রস্থের মুখ্যাদা বুঝেন নাই, ইছা বড় তুঃথের বিষয়। আমরা এই প্রস্থেব দিতীয় থণ্ড অবলম্বন করিয়া ক্রমে লামে লোকোর অনুষ্ঠেয় সমস্ত নাতি ব্যাখ্যা করিব।

## প্রাচান ভারতে শিক্ষা।

याश्राद উপाना-छानं, भतेत्र मन ७ আরা এই ভিনের উপযোগী ভাষাই একুড जात याराहर कार किन्छ छटन **ক্ষিত হয় তাহা** অসম্পূর্ণ ও অপুশার শিক্ষা। তদ্বারা জনসমাজের কোন উপকার হয় লা। अरे मृत निव्रम धतिष्ठा तिलाव कविरल उनका যায় প্রাচান ভারতে শিক্ষা আন্ত নিজ্যের হ্লকাল ও পরকালের ওভ লক্ষ্য করিয়। এই শিক্ষা প্রদত্ত হইত। ইহা যেমন মসুগতে জনসমাজের উপযোগী জন্ম তেমনি পে নুমন্ত উপকরণ পরলে, কর মহায় ও সম্পদ হইবে মনুষ্যকে তালারও জন্য প্রস্তুত করিয়া দিত।, স্থতরাং এই শিক্ষা পূর্ণ ও উনার। ু খতি প্রাচীনকালে रेबानक बार्या मयाटक रेहा कि लागानीट গ্রদত্ত হইও এক.গ তাহার আলোচনা বরা षावनाक।

আমরা দেখিতেছি প্রাচীন ভারতে
শিক্ষার শ্লেই কঠোর প্রকালর। অধিরা
একটা আট বৎসরের শিশুকে কেন যে এই
প্রকালর্যা দীক্ষিত করে তন, কোনল শনীলতাকে কেন যে অ্সি-পত্র ধারায় ছেদন করিন
তেন তাহা ব্যাইবার পূর্বের তৎকালে গৃহস্থের
গৃহ-ধর্ম কি প্রকারে অনুষ্ঠিত ও রক্ষিত হইত
তাহার কিকিৎ আভাস দেওয়। নির্থক
বোধ হর্ম না। তেমনকার গার্মজ্ঞাটী কি প্রামরা দেখিতে পাই পার্মজ্ঞার হৈ সক্ল

নিয়ৰ ছিল তাহার মূল উদ্দেশ্য সার্থভাগে ও পরার্থদাধন। এইটি এতিপন্ন করিবার জন্য অধিক প্রশ্নাস পাইবার আবশতেতা নাই। পুহতের নিতা কার্যা এট বিষয়ে পর্যাপ্ত। এই - क्कल कार्यात गरना शक यस्त्रहे मर्न्व**श्रमान।** প্রথম ব্রহ্মগছে, বিলাদান একটা সর্বভাষ্ট **পরোপ**কার। দিন্তীয় লিত্যজ্ঞ, ত**র্পণাদি দারা** পিতৃলোকের উপকার। ভৃতীয় দেব-যজ্ঞ, ধোমাদি দারা দেবং প্রাকের ও তৎসঙ্গে মনুষা-লোকের উপকার ?। চত্র্থ ভূত্যতং, অহাদি বলিছাব। পশুপক্ষী, কীট পত্তেৰ উপকার। পঞ্চম নুয়ত্ব,অভিথিমেবায় মনুমোর উপকার। এই সমস্ত কার্যা কেবলই পরার্থ এবং গুচুম্বের মুখ্য কার্স্য। ইহা কিরূপ নিটা ও আগ্রহের সহিত সাধিত হ'ইত তাহা প্রত্তত্ত্বিৎগণের অবিদিত নাই। ফলত এইরাপ ক্থিতে আছে বে গ্রাহ্ন্য সর্বাপেক। মুখ। আপ্রম, কার্ ইহা প্রতিনিয়ত জ্ঞান ও অন্ন দারা অন্যানা আশ্রামের উপকারক হয় ?। যখন **পরার্থ**ই ইহার লক্ষা তথন যে ব্যক্তি আতাদংখ্য না করিষাছে গার্হা তাহার পকে নয় । কথাৰ আর ব্যভিচার নাই। বৰ্তুমান শতা-ক্ৰীতে হয় তে। ইহা একটা উপেক্ষার কথা কিন্তু তথনকার গার্ছস্থের ইহা প্রাণগত সতা। ফলতঃ স্বাথজয় না করিলে ভখনকার কালে গাছন্তা ধর্মা অসম্ভব হইত। স্বারও একটু (म्थ, आहात विहात कवना अवकी नित्कत वार्थ কিন্তু ইহাই বা কিরূপে নিয়মিছ ইইড।

তথনকার প্রবাদ এক জনের নিষিত্ত অর্থাই নিজের নিষিত্ত পাক করা পাল আহার করার তুলা <sup>ও</sup>। **হতরাং গৃহস্থকে অন্দেহ**র নিমিত গাক করিতে ছইত। তাই না হর আগে ভাগে নিজের উদব্লুভিটা হউক, কিন্তু দে যোটাও ছিল না। **অতিথিলেব।** তো আছেই, তা ছাড়া বাড়ির ভৃতটোরও আহারনা হইলে গৃহৰ নিজে আহার করিতে পাইতেন না ।। এতৰাতীত গাৰ্ছ যো ক্ৰোধাদি জয়েরও বিশেষ আবশাকতা ছিল। এবাহড়ক্ত পরিবার পর-স্পার সম্ভাবে থাকা বড় কটিন কথা। ভোগকে প্রস্তার দিলে এবন্ধন থাকে না এবং ইহাতে नतादात तब्बू ७ मृष्डत ताथ। छाष्टे । अहे कना সতা ও ডি.য়বাকা গৃহত্বের মৃত লবণ এভৃতি নিছা বাবহার্যা পদার্থের ন্যায় স্ক্রয় করিয়া রাখিবার কথা আছে । ফলত গাছ স্থা অতি কষ্টসাধ্য ব্যাপার। যেমন পক্ষী হুই পক্ষযোগে আকাশে যায় দেইরূপ গৃহস্থ এইরূপ গার্হস্থ ধর্মপালন্রপ তপদ্যা ও জান লইয়া সংসারে বিচরণ করিবেন <sup>৭</sup>। **ইছাতেই ভাঁছা**র মুক্তি।

এখন বলেব্য এই সাজসংখ্য যাহার বীজ্ঞাল মপুষাকে কিরপে সেই সাপ্রেমের উপলোগী করা যাইতে পারে। একটু অমু-সন্ধান করিলেই বুঝা বার ছে খামিরা এই জনাই প্রক্ষার্যাকে শিক্ষার স্কানিবিট করিয়া-ছেন। ইহা নিক্ষার সুঠাছি। ইহা মার্যাই শিক্ষার সমস্ত অব প্রত্যাক্ত বিশ্বত সহিয়াছে এখং ইহারই কব্ল গার্হহোর কঠোর দিয়ক।

<sup>(</sup>১) জালী প্রাক্ত হৃছিং সমাগাদিতামুপগছেছি
আদিতা।জায়তে বৃষ্টিং বৃষ্টেররং ডতঃ প্রকাং ।-বৃষ্ট্রা
আমিতে প্রাক্ত আহিছি সংগ্রা জালা ক্ষতে বৃষ্টি
আমে বৃষ্টি কলস্থ্যাদি উৎপন্ন প্রিয়া প্রফারকা
ক্রিয়া প্রাকে। হোমের এভাবিয়ার উপকাবিতা।

<sup>(</sup>२) वजाय कर्याभागासमितमा कातमात्रम हावहर। वृष्टाकृतेनय वार्योक्ष क्यांय (काहासमा १८)। सञ्चा

<sup>ं (</sup>७) त्यास्थात्या इतिरमितिकः। यस्।

<sup>(</sup>अ) अवर म दिनेवनः इत्यक्त वः न्रष्टी अक्तिनार । महा

<sup>(</sup>e) ভূজন অথ বিজেপু সেবু ভূচভাপু তৈবহি ভূমীয়াতাং ভঙঃ পশ্চাৎ অবশি**টার নকাতী**র গৃহত্বঃ শেষভূক ভবেৎ। মহা

<sup>(</sup>e) ছণানি ছুমি**ছরক: বাক চছুরী**ছ হর্ডা।

<sup>• • •</sup> गृहचुना दमाव्यिगाद्व क्लाव्या

गञ्

<sup>(</sup>१) क्यांजारमय शक्तांजाः वेशे तः नेक्टिश गढिः फला विकास करशांजाः विश्व वेदानिः हातीकः

লোকের স্থাধ্য হইত। এছলে এই বিষয়টা নিম্নের যুক্তিপ্রণালী দারা বুঝিলেই ঠিক্ হইবে।

জগতে তুই প্রকার পদার্থ আছে – কটিন ও কোমল। এখানে পাষাণ আছে জলও আছে। রোদ আছে জ্যোৎক্লাও আছে, পুরুষ আচে গ্রীও আছে, ক্রোধ আছে শা-ন্তি 🕆 📆 । এইরূপ প্রতিদদ্বী ভাব লই-যাই জগং। সিনি এই সকল ভাব বশীভূত করিয়া চলিতে পারেন তিনিই পুরুষ। স্বার যিনি ভাছা না পারেন তিনিই তৃণের ন্যায় অমান ও অপদার্থ। যিনি গুহুস্থ জগতের এই পুই বিরোধী ভাবের সহিত তাঁচাকে অহনিশি চন্দু করিতে হইকে। বৈরাগ্য ও ভোগ,কঠোর अ (कामन पूरेरे ठांशव मिया। किन्न रेश বভূ সহজ কথা নয়। মনুধা প্রকৃতিতে কি দেখা যায় ? কোন্টা ভাহার উপযোগী ? একটু চিন্তা করিলেই দুঝা যাইবে অগ্রে কাঠিনা পরে কোমলতা ভাহার উপযোগী। কাঠিনা ৰাখার অভাত্ত ইইয়াছে কোম-লতায় দে অভিভূত হয় না। ভূতলে শ্য়ন याहात जाकान्छ जुश्रात्कनवर मधाह जावनाहे সে স্থী হয় কিন্তু উহার অভাবে তাহার কাতরতা নাই, আবার কোমল শ্যা বাহার অভ্যস্ত, ভূতল তাহার অত্যস্ত কঠিবর হয়, দে এই পূর্বাভাাসের অভাব দ**হিতে পারে** ना। पूरे नका। नागानाजन बाहात या-शात जाना ता करना हर्द्वाटनाचा जावना है তাহাকে সুখী করে কিন্তু ইহার অভাবে সে অভিভূত হয় না। আবার রাজভোগ যাহার **पणास नामानाजुन बाहारत छाहाद कृश्वि** नारे, तम श्रादालाहमूत्र पाणाव महित्य भारत ना। रेराष्ट्रे क माधात्रण निराम, अशन (प्रश्न অঝে কঠিন পরে কোমল মনুষ্য-প্রস্কৃতির উপযোগी किन्नु विभवीष मिक्षे। क्वान् कार्श नश'। जर्द स कराठ देशाह याक्काह दिना

বীয় ভাহ। শিক্ষার ফল।, এখন বৃঝ গৃহছের नेका कि ? ना देववांगा ७ एचारा। किन्नु यपि কঠোর বৈরাগ্য ভাহার অল্যন্ত ন। হয় ভাহা হইলে কোমল ভোগ তাহাকে অভিভূত ক-রিবে এবং ভাঁহাঁর গুগান কর্তুন্য যে পরার্থকে স্বার্থ করা ভিনিন্দেল্পূর্ণ অক্ষম হই-বেন। কারণ স্বার্থই ভোগ এবং পরার্থকে यार्थ कहा उदहुर देवहागा। ज्यादन अस्त কথা উঠিতে পারে যে ভোগের মধ্য দিয়া বৈরাগ্য অসম্ভব নহ। অবশা ভাষাও সম্ভব বটে কিন্তু সেটাও শিক্ষার ফল। যাগ শিক্ষা-সাপেক্ষ তাহার ঘটনা বিরল। এখনে আরপ্ত একটু সুক্ষা কথা আছে। ভোগ হইতে যে বৈৰাগ্য ভাষা প্ৰকৃত বৈৰাগ্য নয়, ঔলাগ্য। कातन रेवत्राना चंड्रीखं इहैर्ड क्ट्य मा, অনিছো ব<sup>্ৰে</sup>শ্বপ্ৰস্তুতি হইতেই তাহী হয়। প্রাণীন ভারত তাহা বুঝিয়াছিল এবং আগে रहेरा है अव्वित्तं तीख ममूल हिम्म कवि-शाहिल। देश द्रिलंकाच्या।

এই ব্রেমাচর্যা শিক্ষার অন্তর্নিবিপ্ত থাকাতে আর একটা বড় স্থকল কলিয়াছে। ভারতের জ্ঞান ও কবিত্ব। সৌন্দর্বোর তুইটা मिक बार्ट - उन्नेयन क व्यवनयम । योहात বৈরূপ শিক্ষা সৌন্দর্য্য ভাহার মনে সেইরূপ কার্যা করে। একটা পুষ্প কাহারও মনে অলোকিক ভাবের উদ্দীপন করিয়া দের এবং আঁহাই আবার কাছারও ভোগতৃকা চরিতার্থ করিবার আ**লখ**ন হয়। পৃথিবীর সকুল প্রকার বীরতে বাঁহার দৃষ্টি সোন্দর্য ভাঁহাকেই উগ্নীত করে আর দেইটুকু বাঁর সভাব তিনিই অধোনরকৈর ভীষণ আবিত্তি ঘূর্ণমান্ হন। প্রকৃতির সহস্ত-নির্দ্দিত রম্পীয় जिल्लान, कलनाही मनी, विकार्तक्षिण शिवि-শৃত্র, পূর্বকল চন্ত্রা, ছত্রিশ্ব নলয়ানিল প্রভৃতি কবিদিগের বর্ণনীয় পার্শি এই সমস্ত ভো-গোপকরণের ম্যো বাল ক্রিতেন্য ভাঁহারা

**\$** 

বিদান করিতেন না। তাই তাঁহাদের আত্মার নাম করিতেন না। তাই তাঁহাদের আত্মার মধ্য হইতে জ্ঞান ও কবিত্ব পরিক্ষুট হইয়া পড়িত। ইহাই এক্সচর্য্যের ফর্ল।

আমরা প্রথমে বালয়াছি শিক্ষার তিনটী আক শরার, মন ও আহা। ত্রকাচধ্য এই শিক্ষার পৃষ্ঠাছি। একণে ত্রেকাচর্য্যের বিধি নিষেধ গুলি আলোচনা করিলে এই তিন অকার: শিক্ষা যে ইং। দারা নিয়মিত হইত তাহা সহজেই প্রমাণ হইবে। প্রথম শারী-রিক শিক্ষা। শিক্ষার্থী ছাত্র যথাকালে গুরু-কুলবাস স্বাকার করিলে ভাছাকে অনেকগুলি নিয়মে আৰম্ভ থাকিতে হইত। ওক্তর নিজা ভদের পূর্বের্ট গাজোখান > দূর হইটে সামধ আহরণ ই ভিক্ষার্থ প্রষ্টান ও, জনকলশ বহন, প্সাচরন 6, গোচারণ ৫ অবঃশ্যায় এবং वकाकी नवन " वह नगल निवम नाजाविक भिकात अञ्चिनिविहे। গুভাতে **८मरम ७ वाशा**य महीदत्र द्य छिन्ना इत এই সমস্ত নিয়মের মধ্যে কতকগুলি ছারা একাকা এবং অধঃশ্যায় जाराहे रहेज। শয়নে বিশেষ উপকারিত। আছে। অন্যের সহিত শামন কারলে নিখাসযোগে তাহার প্রস্থাদের দূষিত বায়ু গ্রহণ করিতে হয়। ইহাতে শরীর অহস্থ হয়। আর কাঠনের স-ছিত সঞ্জৰ্যে কোমৰ কান্ত্ৰ ছইতে থাকে, স্তুত-বাং ওচ্ছুমি বা প্রস্তরোপরি শরন করিলে नेवीत पृष्ट दश हेराहे अधः नशाह नर्तात्वत

विक प्रा

তাৎপর্যা। পরে কামত ও অকামত তেকো-ধাতুর নিরোধ। কাগত তেকোধাতুর ক্রে ব্ৰতভন্ন হইত। ইহার প্রায়শ্চিত বাছে। যদি ব্ৰেজচারী কুমিত ব্ৰত্নতত্ব করেন তাহাকে গদভ চন্দ্ৰ পরিধান করিয়া স্বীয় গহিত্য কর্মা প্রখ্যাপন প্রকি সাতটা বাড়িতে ভিন্মা ক-'রিতে হইত '। আর অকা**ন্ত তেজো**ধাতুর करा इहेटन 'शूनमारेमांविधियर' এर भक्तनि वन করিতে হইত। এখনে তুই প্রকার পাপে তুইটা প্রায়শ্চিত দেখিতেছি। ইহার মধ্য হইতে পাওয়া যায়—অনুতাপ ও সাবধানতী। দীন-বেশে স্বকৃত্ কুকর্মা প্রখ্যাপন করিয়া বেড়ান বড় সামান্য অনুতাপের কর্মানয়। পাপের বিসন্ধালা বাঁহার অন্তর দক্ষ করে সেই ব্য-ক্রিই সরলভাবে স্বত্নত পাপ অনের 🗐 কট বাক্ত করিতে পারে। আর যে ব্যক্তির তাহাতে প্ৰুক্তি হয় দেইই গোপন করে। দিতীর পর্টিপর প্রায়শ্চিত মন্তের অর্থ প্র-ভাতি ছারা কেবল সাবপানতাই অভিবাক্ত এখনও এইরূপ ছুর্বপাকে একটা রক্পত্রে পাবত মাগুনাম লিখিয়া শহ্যার আন্তে রাথিয়া থাকে।

মন্তকমুগুন রা জটাযুট ধারণ ৮। এইরূপ বিকল্পের অবশাই কোন অভিপ্রায় আছে। আপাতত বােধ হয় এই ছুই প্রাক্রিয়া দারা জ্ঞাচারীর আহার্যা শোভার বাাঘাত করাই উদ্দেশ্য কিন্তু তঘাতীত আরও কিছু থাকিতে পারে। অধায়নে চিন্তা আছে। চিন্তার সময় মাজুকের মধাগত সুক্ষা সূক্ষা শিরার একপ্রকার গতি অক্ষে। গতি হইটো জুকুলি

<sup>(</sup>भू अध्ये अपूरकाश्वानः। विकृत्या

<sup>(</sup>२) पूजाशक्षा मनियः। सञ्च।

<sup>ं (</sup>०) ध स्त्रावच्छार कनवदल देलको हदनर।

<sup>(8)</sup> डिमक्का क्रमनमः हेकानि । मह

<sup>(</sup>e) মহাভারতে থালিম আরোদধৌদ্যের উপাধ্যান

<sup>(</sup>७) अकः महील गर्सको प्रश्न । अवः गया। विश्व पृक्ष ।

<sup>(</sup>१) কামছে। রেডসংশেকং ব্রতম্পা ভিদ্যালয়।
অভিক্রমং ব্রতমাছে: ধর্মজাঃ ব্যাবাদিনঃ।
অভিস্নিনেনি প্রাত্তে বিদ্যা গর্মজালনং।
স্তাগারং চরেৎভৈক্ষাং ক্রম্ম পরিকীভিয়ন্।

বিফু স্ত্র

<sup>(</sup>৮) बक्डाविश प्रकृत क्षित्र का भागाः।

ও তদ্ধারা শিরঃপীড়া হইয়া থাকে। বৌধ হয় ইহার প্রতিকার নিমিত মস্তকমুগুনের প্রথা ছিল। অৰ্থাং শীতল বায়ু অবাধে মস্তকের উপর বহিতে পাইলে চিম্বাঞ্চনিত কোনরূপ পীড়া না হইয়া ব্দ্ধিক্টুর্ত্তির সহায়তা করিতে পারে। পণ্ডিতেরা ললাটের অব্যবহিত উর্ব স্থানটাকে বুদ্ধিতত্ত্ব কহিয়া,থাকেন। वृक्तिलङ् श्रमन बाधियात जना अहे वावसः।। ্য তো এই জনাই এতদেশীয় ত্ৰাক্ষণ পণ্ডি-তের। মন্তক্ষমুগুল করেন এবং গ্রীক জ্ঞানীর। अवन প্রয়োগ দায়। ঐখান কেশশ্না করি-্তন। আর বিকল্পিত ঘটাবহনেরও কিছু অৰ্থ থাকিতে পাৱে। মন্তকে জটা বা অধিক কেশ ভাড়িত রক্ষা করিয়া থাকে। ইহা দারা শরীর মন তুই সৃষ্থ হয়। কিন্তা এমনও ব্ ঝিতে পার ত্রন্ধচর্যোছত্র নিষ্যিক ু। কৃষ্ণ-বর্ণের উত্তাপ রিক্ষেপের শক্তি আছে। গো-চারণ-ক্ষেত্র ছত্রহীন ছাত্রকে কৃষ্ণ জটাযুটই প্রথব দুর্গোত্তাপ হটতে বক্ষা করিত। যাহাই হউক, ত্রক্ষান্তর্গান এই সমস্ত নিধি নিষেধ যে শারীরিক শিক্ষার অনুকুল তাহা সহজ্ঞেই অনুমিত হয়।

ত্রমচারার মনুমাংস নৃত্যগাঁত ও ক্বত্রিম লবণ নিবিদ্ধ । মধুমাংলে শারীরিক
উত্তাপ ও ভাহার সঙ্গে রক্ষেত্রণ রুদ্ধি
হয়। ত্রমচর্যো রক্ষন্তনের একান্ত অভিভবই আবশাক। নুলেং বিষয়বাসরা কলবতা হইয়া উঠে। ইহা যেমন শারীরিক শিক্ষার প্রতিকুল তৈমনি আবাাআিক শিক্ষারও প্রতিকুল। এই জনা ইং।
নিবিদ্ধ ছিল। অনেকে মনে করেন নৃত্য

३ चलाक्रमस्तर हाटकाक्रणांतर केल्यावन् केल्यानि ।

क्रिक्ट्र्य ।

গীত একটা নির্দেশ আমোদ। বটে কিন্তু ছাত্রদিগের পক্ষে নয় ে আমোদ-श्चिष इंदेल जनायात्नत যোগভঙ্গ হটবার সম্ভাবনা। এ বিষয়ে আরঙ একটু সুকা কথা আছে। নুডো নুর্ধনের সার্থকতা, গীতে শ্রবণের চরিতার্থতা। গীত বলিলেই দর্ম-मञ्जीष এবং नृत्रा वनित्नहे रे४७ नारमद्वर नृञा हेश (यन (कह मतन नः कत्त्रन । নিম্নদৃষ্টিতে এই নৃত্যাগীতের কথা ভাবিলে বোধ হয় দর্শন ও শ্রবণের অর্থাৎ ইন্দ্রিয়-তৃপ্তিই ইহার লক্ষ্য। **অনেকেই চক্ষ্ কর্ণে**র দার ছাড়াইয়া নুতেরে প্রয়োগকৌশন ও গীতের কবিছে পৌছিকে পারে না। তরাং যাহা ইন্দ্রিয়-ভৃত্তিকর জন্মচারী বা ভারের তাহা নিষিদ্ধ। ইহাতে ভোগবাদনা পরিবন্ধিত হঠুয়া পাকে।

লবণ দকল দেশেরই একটা প্রধান খাসং কিন্দু ব্র**ন্নচারীর পক্ষে তাহ**। কেন নিষ্কি তাহ। অনুমান করা বড় কঠিন। কিন্তু ইছা অপ-কারক পদার্থ না হইলে এরপে নিষেধ কেন। देवताक माटल विदम्ध कि चार्ड मानि ना मयुधा-तीरक सथन होका किन्द्र । এদেশে দিবার এথা ছিল, ত্থন চিকিৎনকেরা অত্যে অলব**ণ আ**হার ব্যবস্থা করিত। <sup>ব</sup>াল্যন্ত কোন কোন কঠিন রোগ এই অনবণ আ-হারে চিকিৎসিত হইতে দেখা যায়। ফলত লবণ একটা উষধ। যাহা ঔষধ তাহার বৈনিক ব্যবহার সঙ্গত নয়। কারণ যে বজ রোগ প্রতাকার করে সহজ অবস্থায় তাহারই তাবার রোগ আনয়নের শক্তি আছে। কিন্ত ইওরোপীর চিকিংকায় এই লবণ সম্বন্ধে একটু विभन वार्थी। एनशा वाहा। व्यारहम त्रांनन संदर्भ संस्पृर्व अवधी अपूर्ष्टिकत প্রার্থ। উহা কিছুতেই জীর্ণ হয় না। কোনত্রপে শরীরে প্রবিদ্ধ ইইলে অবিষ্ণুতভাবে রক্তের সহিত মিশিয়া অবি-

२ आक्र वर्त नगण्य गर्गात्व नृष्टाणी क्योग गुमार नाम नाम नामक्षेत्र भावित्रामी नाम जिल्लाम्

**কৃতি অবস্থাতেই** রক্তা-প্রবাহ-বোকে শরী-বের সর্বর্জ সঞ্চারিত হয়। পরে খাস-যুদ্ধ বুদ্ধৰ ও লোমকুপ দিয়া বহিগত হইয়া বাৰে। উহার ভীত্রতা, পাকাপয়াদি বস্তের প্লানিজনক। ইহা দারা পাকাশয়, অস্ত্র, শোষক শিরা, হৃৎপিও, রক্তবাহিনী শিরা ষ্মধ্যারূপে উত্তেজিত হইয়। নানারূপ পীড়া জন্মাইয়া দেয়। লেকা ছার পরিপাক ক্রি-স্থার ব্যাঘাত ঘটে। পরিপাক কার্য্যের নিষিত্ত ষে পরিমার মিউরেটিক ক্রোবকের প্রয়োজন তাহ্যে ক্লোরিন উলাদান প্রায় সকল প্রকার উদ্ভিদ খাদা ইইতে সংগৃহীত হইতে পারে। ভন্নিশিক্ত কোন গুকার লবণের প্রয়োজন নাই। এই লবণ বাৰহারে কাশ ও চর্দ্মরোপ **অবে। ডাক্তার পার্কস এড়তিও গ্রে<b>হেরের** সহিত একষত হুইয়া বলেন অজীৰ্ব রোঞ্চ 💁 বন্ধা অনুবৰ্ণ আহারে দুর করা যারণ **একৰে** দেখা ষাইতেছে লবণ একটা বিসবৎ পদাৰ্থ। খ্যমিরা ইছা অবশ্যই জানিতেন ক্লিস্ক জাঁহারা ছাত্রের পক্ষে কৃত্রিম লবণ দুষ্য বলিয়া সৈশ্ব-বাদিকে কেন যে গ্রহণ করিয়াছেন, ভাষা विक नुका यात्र ना।

অনাশঃ

## সাংখ্য সূত্রের অনুবাদ।

পূর্বাপ্রকাশিতের পর।

देखकवार्ग । ।।

ত্ত্বরের নাম ত্রেগুণা । সন্থ রক্ষঃ ও তমঃ,—এতহামক তণত্রশের সম্মনীভাব ত্রেগুণা নামে অভিহিত হয়।

যাহা প্রকাশ-স্থভাব, যাহা লঘু, যাহা প্রসমতা তাহাই সত্ব এবং তাহাই সত্তপ্রের কার্যা। শরীরে ইছার অসঙ্গিত, প্রতিভৃষ্টি, (অনুকম্পা) জ্ঞান, তিজিকা ও সন্তোয প্র-ভৃতি অসংখ্যবিধ কার্যা থাকিলেও অনেক ১ ভহবোধনী > কর্ম ২ ভাগ বৈশাধ। श्रकात नकन थाकिरमञ्जर एकरण सूचाजुक रामिरन गरथे हम ।

ই ক্রিগণ যে সনিত্র অর্থ অবভাসিত করে, প্রকাশিত করে, জাই। তাহারা স্থানিষ্ঠ সম্বত্ধণের দারাই করে। স্থানিকা হইছে শরীরের লয়ত। এবং ই ক্রিয়ের বিষয়-গ্রহণ-সামর্থ উদ্ধুদ্ধ হয়। যে ধর্মী থাকায় বস্তু প্রকাশিত হয় সে ধর্মের নাম লযুত্ব, এবং বৈ শক্তির দাম প্রকাশকত। এই তুই ধর্মী সন্ত্র নামক ভবের অসাধারণ হভাব। অভ্এব, লযুত্ব প্রকাশকত্ব সত্বত্ধণের সক্ষণ (অস্থ্র-মাপক ধর্ম্ম)।

যাহা উপঐতক, ৰাহা সংশ্লেষ-জনক যাহা সঞ্জিয় হথাৎ ফলে বস্তুতে ক্ষাল-নাপ্তক ক্রিয়া উৎপন্ন হয় ভাহারই নাম রক্ষঃ। সংশ্লেষ ও ক্রিয়া এই চুইটিই রক্ষো-গুণের কার্যা, গুণান্তরের নহে। অতএব, প্রেরকত্ব ও স্ক্রিয়ার্থ এই চুই ধর্মই রক্ষো-গুণের লক্ষণ। শরীরে ইহাল বেন, জোই মংসর্থা, নিন্দা, শঠতা, চুঃৰ প্রভৃতি ক্ষান্ত-ভেদ বা অসংখ্য লক্ষণ থাকিলেও সংক্ষেপে ভূগোন্তক ব্যালিক ক্রিয়ান্তিত হয়।

যাহা তক্ষ, বাহা তারি, বাহা আঁইক বা
কার্যা-প্রতিবক্ষক, তাল্রই নান তনঃ। পরীরে ইলার প্রনাদ, কালান্য, নিল্রা ও বিধাদ
বা মোই প্রভৃতি ক্ষাংবা ভেদ বা অনপ্ত
কার্যা থাকিলেও সংক্রেপে মোহাত্মক বলিয়া
উক্ত হয়। তালাগুণের দারাই শরীর-গুরুত্ব
ও ইন্দ্রিয়ের প্রকাশ-শক্তি প্রতিবদ্ধ হয়।
এতজ্ঞা অব্যক্ত অবহাপন্ন গুণুত্রের নাম
তৈত্দী। সাখাচার্যোরা আল ক্ষায় নিম্নোক্ত
প্রকার তৈত্পা-লক্ষণ ব্যক্ত ক্রিয়ার্টেন।
যথা—

যাহা প্রকাশক ভাষা গছ, যাছা ক্রাক্তিক ভাষা মজ এবংযাহা বাবেমাহকারণ ভাষা ছবা ক

#### नक्यः अधिनक्षाः । १ ।

সঞ্চর অর্থাৎ উৎপত্তি, প্রতিসঞ্চর অ-থাৎ 'প্রালয় বা বিলোগ। পূর্বেকাকে বৈজি-ধাই সঞ্চরের ও প্রতিসঞ্চরের কারণ।

সকর বা উৎপত্তি কিরুপে হয় ভাচা সর্ব্ব জগতের আদি কারণ বা বীজী-शृत्सिक-नक्षणायुक भार्ष কেনে সত্ত্ব, রক্ষ ও তম অর্থাৎ প্রকাশ শক্তি, প্রেরণ শক্তি ও ওরংও শক্তির সম্বলন বা সমষ্টি, ভাষা কথার বাখাকে, বল, বাধা ও ক্র্র্টি, এতং বিয়ের অধিকরণ বা আধার বলিলেও বলা যায় তাঁছ। ছইতে পর পুরুষের বা অসংসালী আত্মার (চিৎশক্তির) অধিষ্ঠান वन्तः क्षथमण्डः ेष्रहेलना दृष्टि वा मह्छव সঞ্জিত বা উৎপদ্ম ছইগাছল। বুদ্ধতত্ত্ব হইতে অহংকার তত্ত্বটী জন্মিগ্রাছিল। সেই শ্বেষাংপর অহংকার তত্ত্বী ত্রিভাগে বি-च्छ रहेशहिल। मार्दिक रिकाबिक (১), বাজন তৈজন (২), এবং ভাষন ভুতাদি (৫)। ভন্মধ্যে যাহা সম্বভ্ৰের বিকার ভাহা হইতে देलिय, याहा ७८माछ्य विकास-योहात অনা নাম ভূতাদি—তাহা হইতে ভ্রাত্ত, দার ধাহা তৈক্ষস অর্থাৎ বাহা রজে। সংশের বিকার ভাষা হইতেও ইক্রিয় ও ভন্মাত্র "(कर्ष्यात्मय ७ जन्दराभा उचावा मकन) हरे-রাছিল। সেই ওমাত্র পদার্থ হইতেই **এই मक्त महाकृत स्टेमार्क** ; अञ्जल जेश्निकत्मक नाम मक्का अक हरेए**उ** , पाना मकतिक स्त्र समित्रा मकते । रिक्रिकीरणात्र साम अधिककत्। मधीक त যাহা হইতে সঞ্জিত বা উৎপদ্ধ হৰীয়াছে वृश्क्राय (म जाशास्त्र शासन कारा of the simil die strange has महाकुछ रथन नव हरे(त) कांग्ना स्वेशन खनान देशा प्रचारको वक् गोर धाक जनस्य ALAN ESCE A SOR BATTE . MENN HAM

ই জৈরে প্রবেশ কারবে, বীজ ভাবে শুকারিত হইবে। তথালা সকল অহলারে বিলীন হইবে, অহলার বৃদ্ধিভত্ত্ব, বুদ্ধি অব্যক্তত্ত্ত্ একীভূত হইরা ঘাইবে। অব্যক্ত অসাজ্ঞাই থাকিবে, তাহার আর লয় হইবে না, কেন না ভাহার লয়খান নাই। অব্যক্ত অসুংগ্রন্দ পদ্যথি ও নিত্য সেই কারণেই ভাহার লয় কল্পনা নাই। সঞ্চর ও প্রতিস্থার ব্যাপ্যাত হইল, একবে উৎপদ্ম পদাংগ্রে অনা প্রকার বিভাগ শুমুন।

#### कता। यमदिक्षमा नित्रवक्ष । ७।

সমুদার প্রাকৃতিক বিকারের জনা তিন প্রকার বিভাগ আছে। যথা—কতক অধ্যাত্ম, কতক আধিভূত, কতক বা আধিদৈবত। অ-ধাাত্ম কি? আধিভূত কি? এবং আধি-দৈবতই বা কি; তাহা শুন্।

বৃদ্ধি পদার্থটা আত্মাশ্রেষ্টিত ইহার অভি নৈকটা আছে, সূতরাং
বৃদ্ধিতফুটিকে অধ্যায় বলিয়া জানিবে।
তাহার বিষয় অর্থাৎ বোদ্ধবা বস্তু মাত্রই
বহিবন্তী, ভূতভাবে অবন্ধিত, এ নিমিন্ত
বোদ্ধবা বিকার মাত্রেই অধিভূত। জন্ম নামক
ভন্দ চৈতনাই বৃদ্ধির দেবতা অর্থাৎ অনুআহক, তরিমিন্তই জন্মচিতনাকে সামরা
আহিদৈয়ত বলি।

বৃদ্ধিত ছের যাহা অহকার নামক বিকার
তাহাই অধ্যাত্ম। হাহা তাহার বিষয় অথাৎ বাহা অহত্তবা নো সকল বিষয় ভূত
ভাবে ও বৃহ্বিপ্রিভাবে অব্যক্তি বলিয়া অবিভূত। এতহুতরের বেরতা বা অনুগ্রাহক
ক্রম্ম; প্রনিমিক্ত আনির্মা ক্রম দেবকে অধিব্রুমক বা অহতাবের সেবতা বলিয়া গণা
ক্রিনা রেরি ভাব প্রচততা না থাকিলে
ক্রেক্তি হার না হত্তাহ না ভাহার বিষয়ত
প্রাক্তি হার না হত্তাহ রাজ অহতা
ক্রেক্ত হার না হত্তাহ রাজ অহতা
ক্রেক্ত হার না হত্তাহ রাজ অহতা
ক্রেক্ত হার না হত্তাহর।

নিংকর বিকরাত্মক মন অধ্যাত্ম, তাহারী
বিষয় সকল অবিভূত, চন্দ্র তাহার দেবতা বা
অমুপ্রাহক। চল্লের সহিত মনের অত্যন্ত
ঘনিষ্টতা আছে। চল্লের সহিত মন এমন
ক্রক অলক্ষ্য সূত্রে আবদ্ধ আছে যে আবদ্ধতা
আকাতে মন উত্তম রূপে কার্যা করিতে সক্রম হয়—দে আবদ্ধতা সে সমন্ধ অত্তর্ভ্তর
মানব আনে না। চল্লোদয় হইলে মন বিফারিত হয়, প্রসায় হয়, যান চল্লের নিকট
হইতেই আপনার সক্ষ্যাবিকয় শাক্ত প্রাপ্ত
হয়। চল্ল ভিন্ন মনের দেবতা শা অমুগ্রাহক আর কেই নাই। চল্লাই মনকে অমুগ্রাহক আর কেই নাই। চল্লাই মনকে অমুগ্রাহক করে, ভাই সে সক্ষয় করে অথাৎ
ক্রিয়াবান হয়।

ভোত্তির খংগার, তাহার বিষয় পরিছে প্রতিষ্ঠাৎ ভোত্তা সকল অধিজ্ ন, দিক তাহার দেবতা না. অনুপ্রাহক। দিকের অনুপ্রহ না থা-কিলে, দিগবোধ না থাকিলে, আবরণাভাবের (কাঁকের) মর্যানা না থাকিলে, ভ্রোত্রেরজিশ স্থান হইয়া যাইত। নিগ্জ্ঞানশূনা ব্যক্তির অদ্রে শব্দ উত্থাপন করিয়া তাহাকে জি-জ্ঞানা করিলেই এই তড়ের অভ্রে যাথাগা জানিতে পারিলে।

ত্বক অধ্যাক, স্পূশ্য দকল অধিভূত, বায়ু
তাহার দেবতা বা অনুগ্রাহক। বাহা বায়ুর
অনুগ্রহেই ডকের ত্বত বজায় থাকে, তাহার
স্পর্শক্তিরও আপুরণ হয়। বায়ু না
থাকিলে সকের স্পর্শশিক্তি কিঃহইয়া যাইত
তাহা বলা যায় না। এজনা, বায়ুই সক্তের
দেবতা এবং বায়ুই অধিবৈষত ত্বন্।

কৃষ্ অধ্যাত্ত, দেইবা সকল অধিভূত,
সূধা তাইছা দেইতা বা অনুগ্ৰাহক। দেইবা
না থাকিলে চকু কি দেখিত ? সূধ্য না থাকিলে চকু কাহার নিকট দর্শন-শক্তি বা দেথিবার সাহায্য পাইত ? আলোকের মাহায্য
বাতীত আলোকের অনুগ্রহ বাতীক চকু

কিছুমাত্র দেখিতে পান না, স্বভরাং আলো-কের আগার-স্বরূপ ঐ সূর্যাই জীবের অধি দৈবত চকু।

হস্ত অধ্যাত্ম, আদান অর্থাৎ গ্রহণ ভাহার কার্যা, েই কার্য্যাপ্ত বহির্বস্তই অধিভূত এবং ইক্র ভাহার দেবতা। ইক্রের অনুগ্রহ না থাকিলে হস্তের গ্রহণ-ক্ষমতা থাকিত না. ইহা অভান্ন বিবেক জ্ঞান হইলেই জানা যায়।

পদ অধ্যাত্ম, গন্তব্য সকল অধিভূত এবং বিষ্ণ ভাহার দেবতা বা অসুগ্রাহক। বিষ্ণুর অনুগ্রহ ব্যতীত, সর্বব্যাপী পরমান্ত্রার ব্যাপ-কত্ব ব্যতীত ঐ পদের গন্তব্য প্রাপ্তির সন্তা বনাও থাকিত না।

পায়ু ইন্দ্রিয়টী অধ্যাস্থা, উৎস্তাইব (মল মুত্রাদি) পদার্থ অধিস্কৃত, মৃত্যু তাহার দেবতা বা অনুগ্রাহক। মৃত্যু অধিষ্ঠান্ত্রী দেবতার অনুপ্রাহেই (জীবন অনুগ্রাহ, মরণ নিগ্রহ) গায়ুর উৎসর্জন শক্তি অক্ষত থাকে।

উপস্থ ইন্দ্রিয় অধ্যাত্ম, আনন্দয়িতবা অধি-ভূ,ত প্রজাপতি সকল অধিদৈবত। প্রজা-পতি দেবতার অনুমুগ্রহে উপস্থেন্দ্রিয়ের আনন্দ্রিতবাত্ব থাকে না।

জিল্পা অধ্যান্ত, রসয়িতবা বা আসাদ্য বস্তু সকল অধিভূত, বরুণ তাহার অধিষ্ঠাত্রী দেবতা। বরুণ দেব বা জলাধিপতিই অধি-দৈবত রস।

নাদা অধ্যায়, জাতবা অধিভূত, পৃথিবী তাহার অনুতাহক দেবতা। পৃথিবীর অনুতাহক দেবতা। পৃথিবীর অনুতাহ বাতীত আনি ও আতব্য অকর্মান্য হইয়া যায়। পৃথিবীই গন্ধের ও গন্ধগ্রাহক ইচ্ছিয়ের ক্ষতিপূরক)।

বাবই ক্রিয় স্বধ্যাস্থা, রক্তবা সকল অধিভূত, অগ্নি তাহার দেবতা বা অসুপ্রাহক বি
অগ্নির অসুপ্রাহ, তেতের প্রেরণা কা কায়াগ্নির
অতিঘাত না হইলে বাক্যন্ত পরিচালিত হয়
না, কাষে কাষেই তেত উহার কেবতা এ এই

রূপে ত্রোদশ প্রকার অবাজ্য অবিভূত ও অনিদৈব ব্যাখ্যাত হইয়া। থাকে। (বাহ্য বস্তুর সহিত মানব প্রকৃতির সম্বন্ধ নির্ণয়) এতদ্রেপ আধুনিক ভাষা প্রাচীন অধ্যাত্ম অবিভূত ও অনিদৈবত এই সুত্রের প্রায় ভূলা।

বে নর এই সকল তত্ত্ব (বস্তু যাথার্থা),
তথের বা প্রকৃতির স্বরূপ ও অধিদৈবত অবন্ধা ম্থান্থরূপে প্রতাক্ষ গোচর করিতে পারু
নেই বাক্তিই শাপ-দোষ বর্জিত ও নিঃসঙ্গ
হইরা গুনভোগ করিতে পারে। তত্ত্বপাদ
বালোত হইল। এক্ষণে অন্যান্য আধ্যাত্মিকী
কথা শুন।

#### थयाशम

১। পানী। মা প্রাদ্যনুব্জেগা
মা কামর্তিসন্থাং ।
অপ্পসভোহি কাবকী
পর্পেশতি বিপুনং স্থাং।
১। মং। মা প্রমাদ্যনুত্তীপা
মা কামর্তিসংস্তরং।
অপ্রমভোহি গায়ন্
প্রাপ্রোতি বিপুনং স্থাং।

चर्य। श्रमक हरेदिना, कामरकाधार्मित दणीज्ञ इरेदिना। चर्श्वस्थि नाक्षितान्द्रसाय दिल्ल एथ श्राल इराम। , "

হ। গালী। অপ্পমতো পমতেম্ব মতেম বহুদ্ধাগরো। অবলস্কং বা দীঘদ্দো। হিছা ধাতি মুমেধ্দো।

২। সং। অপ্রমন্তঃ প্রমন্তেরু
সংগ্রেয় বছজাগরঃ।
অবলাধ্যমিব শীভাগো
হিন্তা বাতি স্থমেগাঃ।

च। नीवंगांरी मथ स्तर्भ हर्तन मध्यक मिकस्य

कितिश यात्र, राहेजाण अभएतत घटको जाअभाव, चितिएकव भरमा वद्यकाश्रत्रवृत्तीन, कञ्चनत इहेशा थाएकन ।

পালী। অপ্পথাদেন মঘ্ব।
 দ্বোনং সৈত্ততং গতো।
 অপ্থমাদং পদংসন্তি
 পমাদো গরহিতে। দদা।

ত। সং। অপ্রমাদেন মনব।

 দেবানাং লোঠতাং গভং।
 অপ্রমাদং প্রশংসান্তি

 গ্রমাদে। গতিতঃ সদা।

**জ। ই**শ্র থাপ্রবাহণণ গরে দেবগণের মধ্যে শ্রে**টভা লাভ ক**রিয়াছেল পড়িভেন। অপ্রমানকে **প্রশংসা করেন** এবং প্রমান সভন্ত গাঁহজ।

৪। পানী। ফল্মনং চপ্রাং চিত্তং
দূরক্কং তুমিবারয়ং।
উজুং করোতি মেধাবা
উজুং করোতি মেধাবা
উজ্জাবো ব তেজনং।
৪। সং। সপদনং চপ্রাং চিত্তঃ
দূরক্যাং তুর্নিবার্যাং।
শুজুং করোতি মেধারী

আ। শবনিশাতা বেমন শরকো সর্ল করে দেইরপ মেধানী বাভিন প্রাক্তনশীল চঞ্চল অরক্ষণীয় ত্রিবাব চিত্তকে সরল করিখা থাকেন।

ইষুক্রার ইব তেজনং।

৫। পানী। ছনিগ্গহসা লহনে।
বৈথকামনিপাতিনো।
চিত্তস্য দ্যথো সাধ্
চিত্তং দক্তং স্থাবহং।

৫। সং। শ তুর্নিপ্রহন্য লমুনে।

গুরুকামনিপাতিনঃ।

ডিত্তন্য দুমপুঃ সাধ্
ক্তিতং দুস্থিবহুং।

्ष। मात् वाक्तिकेह मध् घर्यकाशः हिन्द क हम्म कक्षम । निवृशेक छित का श्यय खुनावह हहा।

৬। পালী। দূরস্বাহ একচরং অসরীরং গুহাসয়ং। যে চিত্তং সঞ্জ্ঞেসমান্তি মোকতি মারবন্ধনাং।

৬। সং। দূরংগমং একচরং অশ্বীরং গুহাশাম্। যে চিত্ত: সংফলোন্তি মোক্ষান্ত মারবন্ধনাৎ।

খ। যাঁবালে দুৰগানী একচৰ খণরীবি ক**হাশারী**চিক্তক, সংঘত কংগন ভালানা মৃদ্যুবন্ধন ক**ইড়ে মুক্ত**কইরা থাকেম।

ভাগলপুরে এক্ষোণাসনার সময়ে মহাত্মা শ্রীযুক্ত রাজনারায়ণ বস্তব প্রাথনা।

コタトン ぞる!

হে পরমাজন। ভ্রীতি ছাতা ধর্ম প্রচার করিবার ভার আমার প্রতি অপ্ন করিয়াছ, দে ভার সমাক-ক্রপে পালন করিবার ক্ষমতা ও অকিঞ্চনকে প্রদান कत। अमीना वाशी महावाता अशाबारगारगत মহোচ্চ সভা সকল ছোষণা কলন, অগতা কর্মতা আনে विज्ञासिए देर्परतत अलाव की छंन कक्रम, ए श्राकिशासत µএই কার্য্য ≥উক যেন কেবল প্রীতিরূপ স্থকোমল উপায় भावा एडामार धद्म ध्वाहात करते। अहे ककिकन "দ্বাসা ভাষাম ভামাদর্যে <mark>শ্রীছি ভাবের</mark> দিশি**ইর**প সমার ঝিয়ৎ পরিমাণেও সম্পাদিত হয়, এ অবিধ্যম ्यम किएकाल रमष्टे मबुह करिया नियुक्त बारक। ्रेशेराम एकामात ब्लीकि कीर्डन कतिबाकि, रक्षीका-বভাষ ভোনার প্রীন্তি কীর্তন করিংছি: একপে ব্যস্ক্রমে অধিক হইতে চলিল, দলেরের শীতল ভাৰ যেন আমার আত্মাতে প্রবেশ না করে। আমি যেন ভোদার প্রতি প্রীতি ও মহবোর প্রতি প্রীতি বিস্তার কার্য্যে নিয়ত দিয়তে থাকি। যেথানে বিবাদের প্রবল্ভরম্ উথিত হইডে দেখি, প্রেশানে "বিগত বিহাদং" যে ভূমি জোন**্ত**কে অরণ করিয়া **দেই** বিষয়ে প্রশংসন কেন ক'নি মন্তবান হই। মদাপি আমি ্ষে পৰিল কাৰ্পে ফড়িক লাভ লাভ করিছে পারি ভক্তি যেন কুন নাংই। শভত ভোগত প্ৰতি প্ৰীতি ्यन कार्याते शहरी किह विशिष्ट पारम । क्षीं कि भाषात्र-याका मधुमस करूके रू व्यक्ति जागांव कारी मधुमस 海麥季("

**७ এकामदा** विकीतः ।

## নববর্ষের ত্রহালন্ধীত।

রাগিণী আয়ারনি—ভাল কাঁগভাল।

দীর্ঘ জীবন পথ,

কত চুঃখ তাপ,

বত শোক দহন—

গেয়ে চলি তবু তাঁর করুণার গান।

থুলে রেখেছেন তাঁর

অমৃত ভবন দার

আতি যুচিবে অলু মুছিবে

এ গথের হবে অবসান।

অনভের পানে চাহি

আনন্দের গান গাহি

কুদ্র শোক তাপ নাহি নাহি রে—

অনস্ত আলয় যার

কিন্সের ভাবনা তার

নিন্ধেয়ের তুক্ত ভারে হব নারে ভ্রিয়মাণ!

নেইনারং—ভাল একভালা।

ত্থের কথা তোমায় বলিব না, তথ
ভূলেছি ও কর-পরশে।

যা-কিছু দিয়েছ তাই পেয়ে নাথ,
স্থে আছি আছি হরষে
আনন্দ-খালর এ মধ্র ভব,
হেথা আমি আছি, এ কি মেহ জব,
তোমার চক্রমা ডোমার তপন
মধ্র কিরণ বরষে।
কত নব হাসি কুটে ফুল বনে
প্রাজিনিক কত গ্রহ কত তারা
ভোমার নীরর সভাতে।

ন্ধননীর স্নেছ স্কংদের প্রীতি শতধারে স্থা ঢালে নিতি নিতি, জগতের প্রেম, মধুর মাধুরী,

ভূবায় অয়ত-সরসে। ক্ষুদ্র মোরা তবু না জানি মরণ, বিয়েছ ভোষার অভয় শরণ,

শোক তাপ সব হয় হে ইরণ

তোষার চরণ দর**েশ।** প্রাতিদিন যেন বাড়ে ভালবাসা,

প্রতিদিন মিটে প্রাণের পিপাসা,

नव नद नव-वद्रदशः

নাগিনী চৌছি—ভাগ একজনা।
গাও বীণা, বীণা গাওৱে!—
অয়ত মধুর তাঁর প্রেম গান
মানব নবে শুলাওরে!
মধুর তানে নীরস প্রাণে
মধুর তানে নীরস প্রাণে
মধুর ভানে নীরস প্রাণে
মধুর ভানে নীরস প্রাণে
ব্যথা দিওনা কাছারে বাথিতের ভরে,
পাষাণ প্রাণ কালাওরে!
নিরাশেরে কহ আশার কাছিনী
প্রাণে নববল দাওরে!
আনন্দর্ময়ের আনন্দ আলয়
নব নব তানে ছাওরে,
পড়ে থাক সদা বিভূর চরণে,
আপনারে ভূলে ঘাওনে।

# প্রাপ্তি স্বীকার।

আমরা ক্তজভার সহিত স্বীকার করিভেছি বে গড হই মাণে নিমনিথিত প্তক ও পতিকাগুলি আমরা উপহার প্রাপ্ত হইয়াছি।» Journal of the Asiatic Society of Bengal Vol. L111. Port 1. Special Number.

Bibliotheca Indica, Published by the Asiatic Society of Pengal.

N. S. Nos. 524, 525. (Akbarnamah)

N. S. No 523 (Karba Smit Sagara.)

N. S. No 249. ( हेवन वहते )

N. S. No 521. (Muntakhab Ul Tawarik) by Al Badaoni)

N. S. No 5%. (চড়ৰ'গাইস্থামণি ৷)

N. S. No 522. (তৈরিকীয় কুফাজ্গ্য হিজা 1)

N. S. No 526. (8@frog (a-fan day t)

N. S. No 520 (আগত্তর শৌভ হার )

প্রশীর কীবনে ভগনানের গীলা। মূজিগঞ্জ সাঞ্চল সম্ভেটিকতি প্রজানিত ।

আসাম বৰ্ণ থাসিক শস্ত। ভীতবানিরাম বড়ুযা কর্ডুক সম্পাদিত।

कार्यामर्गमा २० वेख २० ७ ५२ मध्यतः । सदस्योदनः व्यथमध्य ५ छ २ मध्यतः । सदस्योदनः व्यथमध्य ५ छ २ मध्यतः ।

Report on the Operations of the Panjah Brahma Saninj for the 55th Brohma Ear

আলোচনা। প্রথমধত মাঘ ৬ কংরন।

বাজ ধ্য সংখিতা। এ সভানন্দ ক্ষি<mark>হোৱী।</mark> কর্ত্তক প্রফাশিত।

শ্রেছার। থেবন খণ্ড, শাহুন ও নদন সংখ্যা।

Thensophical Vol. 6. No. 9, 7.
বামাবোধিনী পজিকা ২২৯১। ফুছেন।
ধর্মের উৎপত্তি ও উইন্ডি। অর্থাৎ, অধ্যাপক
শোক মূলনের হিনাট বজা্ভার বাজালা অহ্যবাদ। জব
কাশনতে এই প্রস্থের সন্নালোচনা করিতে আনাদের অভিন্যে আছে।

Proceedings of the Asiatic Society of Bengal No X1, 1884.

#### मश्रादलाह्या।

আঁশর। প্রীযুক্ত বারু সীতানাথ দত্ত এ-শীত ইংমাজি ভাষায় নিখিত Book of Faith অর্থাৎ শীশরের প্রতি বিশ্বাস করিবার (২ড়

ইত্যাদি বিষয়ক কতিপয় প্রবন্ধ" নামক কুজ পুস্তকখানি পাঠ করিয়া দক্ষীত হইলাম। <del>ঈশ্বর জ্বণতের মূল শক্তি। তিনি দকল শক্তির</del> আধারও গ্রেট্রিডা। জড় জগণতাহার **সত্তাতে** ও ভাষার ইচ্ছোটেট প্রথান রহিয়াছে, তিনি সংনের তারণ নিয়ন্তা ও সেতু বিধরণ इहेग्रा रिकार धन ईडवित गडीब उद्ध मकन এন্তকার স্থায় নত্ত ও প্রাঞ্জল ভাষার বিশদ রূপে প্রতিপম করিছেন পরন্ত ভিনি নিরী-খনুবান ও আজেন্বানের প্রত্নিত মতগুলি श्चरत कर्त । १ । १ ७म - कहिर र ८५ छ। पुरिशाः (छन्। देश्मांक जाया जिल्ल कि अरमनाता कि বিদেশীয় জনগণের পক্ষে **এছখ**ানি বিশেন উপকারী হুইতে গাবে কিন্তু ই ব্যক্তি ভাষায় এরপ প্রভের ভিপ্রোগিতা গ্রান্ডের আমরা ইচ্ছা করি যে গীতানাগ বাবু এতারুশ গ্রন্থ 🌉 কোনা ভাষায় নিখিতে প্রবৃত ১্উন। এরপে শুভের বিকাশ ভাগনীয়। কাঁধার নত হু তাবদা লেখকগণ সি ইহার জ্বার প্রবে মগ্রনর ও সদপ্রিকর हर्देश ना।

#### আয় বায়।

भावन दास गत्र १६०। भानि दासामग्रहा

আয় -	410	*••	२४०१८/२
ুপুর্বকার	<b>হিত</b>	•	9098/0
नगष्टि			る。まだいのの
ব্যয়	4+4	***	හුමහු දු/ම
<b>হ</b> ড	• • •	***	والوطوية

a dering a angus and in tigger over up y T find their when the fine best		-	Address of the part of particular		
e e e e e e e e e e e e e e e e e e e	चार ।	*	**************************************		
खाभगगां 🖷 👑	***	, e + 415,	1 346/2		
मान व्यालि ।	, k**		\$		
প্রায়ুত্র পরিভ সমালত	*		<b>*</b> \ "		
ু ১:শু রাধিকা		বন্ধী	2/		
वीम है। को दाविसी ज			<b>2</b> , '.		
,, अवाग विलिमी	দেবী		2,		
षाञ्चां सिक ५! स	,		**		
প্রীযুক্ত পঞ্চিত লিংনা			3/		
मानाबारत लाग छा छि	!	*	911/A		
		;	sauli		
তভ্যোধিনী প্রি	क्।	• • •	asher		
প্তকালয়		P 8 4	<del>k</del> b\		
्रखानग्र -			2910		
গক্তি	•	•	22411/0		
ভাকাৰৰ্ম এন্ত এক	াশের মূ	लध्न	श्रा०		
ভাষাপর্য প্রাণার			80		
ন' হব্য			= a		
मगष्टि .			হ৮৫।৶৯		
वाम् ।					
ভারস্যাত	•••	***	৮৯৫৩		
তভূবোধনী পত্তি	কা	, m	<b>७५</b> ०८५		
প্তকালয়	***	•••	७५५८/७		
যন্ত্র লয়	***	•••	२२२५ ७.		
গজিত	2 K W	***	505 /A		
রাকাথর্শ্ব গ্রন্থ প্রথ	দাঁশের য	पूल्य व	81/2		
ত্রাক্ষধর্মা প্রচার		٠	<b>.</b> , 84 √		
দাতবঃ	٠٠ -		22/		
সমষ্টি	***	***	. mone/o		
		<b>এ</b> নবী	समाय ठीकूद।		
•			-		



# তভারোধিনীপতিকা

कृष्णवाण्यासिडमप्रकासीक्रान्यत् किञ्चनाधीर्षाद्दं सम्बग्धनस् । तदेव निर्धाणाः समन्ते क्रियं स्वतन्त्रक्षित्वस्य सक्ते वाहितीयस्य मध्येत्यायं सन्दर्शनियम् सम्बोणयसम्बीयन् सर्वयाक्षिपदश्व पूर्णमपतिस्तिति । प्रकल्य तस्यैगोपासन् । पार्यक्रिकेसेहिकाच ग्रमभावति । सम्बिन् पातितस्य प्रियकाः ध्रीभाषनध्य तद्यासनस्य ।

#### নৰ বৰ্ষের ব্ৰাহ্মদমাজ।

ত্রাক্স, সপং ৫৬। অভশাসন। \*

3

বর্ত্তান্ত্র যে মানব পাপী কুরাচার, ু জনুত উপায় বিজ্ব অর্জনে বাহার, হিংসার অনলে সদা দহে গার মন, বল্যাধ না লভে স্তর্থ কড়ু সেই জন।

ধর্মা-পথ প্র্যাটনে যদি ক্লান্ত হও, প্রতি পদ বিনিক্ষেপে বিশ্ব বাধা পাও , অধার্ম্মিক পাপীদের বিপর্যায় হেরি অবর্মের দিকে কডু চাহিবে না ফিরি।

অবর্ণ্মে আপাত হয় বিষয় বর্দ্ধন, কর্মন দর্শন, কর্মন দর্শন, শক্রর নিধন হয় অধর্ণ্মের বলে, শেষে কিন্তু সবি নৃত্ত অবর্ণ্মের ফলে।

বিন্দু বিন্দু মৃতিকা করিয়া সংস্থান পুত্তিকা যেমন করে বল্মীক নির্দ্ধাণ

\* बाममर्थ--२ थप्ट ३७ व्यसाय।

ক্ষে ক্রমে সেইরুপে ধর্ম্ম উপ্যান্ত্রির পরকাক হেতু ক্রে সহায় ক্রিয়া ক্রমের ক্রিয়া ক্রমের ক্রিয়া ক্রমের দল্ল অনুক্রন নাহিক করিবে ক্রোন জীকের পীড়ন।

û

শরলোকে স্থা হ'তে না রহেন পিত। নাহি রহে জ্ঞাতিবন্ধু না রহে বনিভা ; কেবল নরের চির জীবন সহায় ধর্মা এক বন্ধু হ'বে রহেন শেখায়।

একাকী জনমে নর একাকীই মবে স্কুত হৃদ্ধত ফল্ একা ভোগ করে।

কাষ্ঠ মৃত্তিকার ব্য করিয়া গণন নতের শরীর ভূমে করিয়া ক্ষেপন বিম্থ হইয়া কিরে যায় গন্ধগণ ধর্মাই ভাহার সহ করেন গমন।

অভএব আপনার সাহাস কারণ প্রতিদিন ধর্ম-ধন করিবে অর্জন ধর্মেরে সহায় করি সংসার আঁগার সহজে গার্মিক নর হ'লে যায় পার, ধুর্ন্মের আদেশ এই ধর্ম্মের শাসন, ইছাই যতনে সবে করিবে পালন। ইছাই হতনে সবে করিবে পালন।

## তাদি ব্ৰামানমাজ।

৭ বৈশাধ রবৈরা ৫৬ ভার **সম্বৎ।**তথ্য উপজ্ব।

সতা-ধর্মাই ভাষাবর্ম। সত্য কি ভাষা ना चानित्म खामार्स्य कि छोड्। कपनाई काना খাইতে পারিবে না। সত্যকে জান। কঠিন বলিয়া সভাকে কি আমরাপারভাট ভরিব ? আর, নিখ্যাকে সভ্য বলিয়া জানা খুব সহজ विनया कि यागरा किथा कि गमानत शुक्रक আলিঙ্গন করিব : অধংপাতে যাওয়া সহজ বলিয়া কি আমরা অধঃপাতের সোপান দ্বিশ্বাণ করিব : স্বার, উমতিতে স্মারোহণ প্রবাকটিন বলিয়া কি আমরা উন্নতির দো-পান ভয় ক্রিয়া ফেলিব ৪ ''সভাং বদ ধর্মাং চর'' নতা বল—এশা আচরণ কর - এ ক্থা ছাড়িলা আমরা কি "অসতাং বদ অংশ্মং চব" এই কথান্তিকে আমাদের শিরোভূষণ করিব ? যদি নিরাকার নির্বিকার পরমেখরকে সভা বলিয়া বিখাস না কর, তবে ত্রাক্ষধর্ম অব-লম্বন করিও না। কিন্তু যদি এরূপ মনে কর য়ে. 'ঈশর নিরাদার—এ বিগারি অতি সতা কিন্তু আমার মত নাধকের ভাষাতে কোন ইউ-সিদ্ধি হয় না,"—তবে, পুথিবীতে এমন এক अन्ध धर्म-मार्क जारहन-याहात्र সত্যেতে কোন ইপ্লিছি হয় না—নিখাতেই रेडेमिकि र्य-ि ज्यानक क्या।-- यिन मटलाटल द्यान रहे प्रत्यन न|-लिन रा ধর্শেতে কোন ইপ্ত দেখিকেন ভাহারই বা मसावना कि ? बिणारे याशव रेडे-निकित

এক মাত্র উপায় হইল, তিনি কিরুপে আপ-নাকে প্ৰত্যের সাধক বলিবেন—ধর্মের সাধক विनादन!- नेयहाक शिन সভ্যৈর সভ্য বলিয়া শ্রদ্ধা করেন ভাঁহার সে আন্তরিক শ্রদ্ধা, আর, যিনি প্রীয় মনের কল্পিড বহুতে প্রবর্গ আরোপ করিয়া ভাহাতে শ্রদা সম-পণ করেন তাঁহার সে ফুত্রিম শুদ্ধা,— দুয়ের মধ্যে আকাশ পাতাল প্রভেদ। ঈশর "নিতাো হনিত্যানাং চেতনশ্চেতনানাং" অনিত্য বস্তু দকলের মধ্যে তিনিই কেবল একমাত্র নিতা – চেতন-পদার্থ সকলের ভিনিই এক-মাত্র চেতয়িতা, ইহা সম্পূর্ণরূপে হৃদয়ঙ্গম করিয়া আত্মা ভারা আমরা যেন ইশরের উপাসনা করি ;- মনঃকল্পনা--যাহা আছে এই নাই—দেই অস্থিব মনঃকল্পনা— তার্। ছারা ইবরের সহজ মতা-স্থলর-মঙ্গল-ভাবকে আমরা কখনই অনন্ধৃত করিতে পারিব না—কেবল আহত ভারিয়া ফেলিব— ইহা জানিয়া গুনিয়া গুরূপ কার্যো কোন্ সত্য-নিষ্ঠ ব্যক্তি অনুমোদন করিতে পারেন। **ঈশ্ব**র যে আমাদের ক**ত নিকটে তাহা** এক-বাব হৃদয়ের সহিত অমুভব করিয়া দেশ,-তাহাকে কল্পনা করিতে ইচ্ছা করিও না। আত্মার আধার—বিষের আধার—পর্মাত্মাকে যদি আমরা সভা-সভাই অন্ধর্যামী সমস্ত নিতা সভা বৰিয়া না জানি-ভাবে মিখ্যা-মিখ্যি ভাঁহাকৈ মেরপে কল্পনা করিলে তাছাতে ফল কি ? আর, যদি সভা-সভাই कानि (य, जिनि बागारभव निकटि त्रहित्रा-ছেন-তবে তাঁহাকে সাক্ষাৎ উপলব্ধি করি-ধার জন্য মনশ্চকুকে পাপ-মলিনতা হইতে মুক্ত না করিয়া কল্পনাপটে তাঁহাল্ল ছবি আঁকিবার রুথা আয়াসে আমন্বা আপনারাই वा शहर इस्व (कम-धनार्क्स् वा शहर क्रिय किन १ रह भाषक । इसि वीत अन्द्रम হৃদয়ের বিশুদ্ধ আনে গুদ্ধ-বৃদ্ধ-মৃক্ত পুরুষকে

আপনার সাক্ষাৎ প্রভূ বলিয়া না জান-তবে ভূমি কাহাকে প্রভু বুলিয়া বরণ করিতে চাও ? তুমি কি আপনার কল্পনাকে আপনার প্রাষ্ট্রপদে বরণ করিতে চাও ? সরল হৃদয়ের সতা জিজ্ঞানা ছাডিয়া লোকরঞ্জন কুত্রিম উপায়ে ঈশ্বরকে লাভ করিতে চাও ? অসীম আকাশ যাঁহার পরিপূর্ণ সতা ধারণ করিতে সমর্থ নতে, কুদ্র একটি মনঃকল্পিত আকা-রের মধ্যে ভাহার বাদস্থান নির্দেশ করিতে চাও ? ঈবরকে অন্তর হইতে বাহির করিয়া দিতে লাও ? – জাঁহার গুদ্ধ বুদ্ধ মুক্ত ভাবকে পরিচ্ছিন সাকারে বন্ধ করিতে চাও ং তা-হার অন্তর্গ্যমিদ্ধ এবং বিভুত্ব ভাঁহা হইতে कां ज़िया नहें एक है छ। कह ? वहः खकून মহাসভুদ্রকে ভূপের মধ্যে আনমূল করিতে পারিবে--তথাপি পরমান্তাকে অনিরুদ্ধ অন্ত-রাকাশ ধ্ইতে বাহিরের পরিচ্ছিন্ন আকাশে আন্ত্রন করি:ও পারিবে না! আফাদিগের १र मयता खाकागार्मात शर्थ- सन**र**क पृष्कारम রক। কর। উদিত : लाक-वक्षनार्ण त्यन অমেরা আমাদের চিরারাধ্য সতকেে পরিত্যাগ করিয়া নিখার শথে ফিরিয়া না ঘাই; প্রনোভনে প্রভারিত হইয়া যেন আমরা नियाद शर्थ फितिशा ना यार ; पनद्रकि ত্রিবার জন্য যেন আমরা মিথ্যার পত্থে কিরিয়া না যাই<sup>ট্</sup>, লোকভয়ে **কম্প**মান হইয়া যেন আমর মিখার পথে ফিরিয়া না চাই: সভ্যের পথে চলা কঠিন বলিয়া আমগ্রা যেন নিধ্যার পথে ফিরিয়া না চাই। আমর। যেন সত্যের অমায়িক সরল পথ ছাড়িয়া মায়াবী-. দিপের কুটিল পাক-চক্রময় গোলোক-ধাঁদার ভিতর এবেশ না করি। সরল সত্তার অমোঘ সহায় ছাজিয়া দিয়া আমাদের দশা कि लार्ष এই इंस्टिव रा, जन्म रामन जन কর্তৃক নীয়মান হইরা খুরিয়া বেড়ায় দেইরূপ বিখ্যার অভ্যন্তরে বর্ত্তমান থাকিয়া আপনাকে

অতিবড় প্রতিত মনে করিয়া দক্রমানান **ररेग्राश्चितिया तिक्राहेत ! मलास्यत खल्ः** यमा তেন লোকত্রয়ং জিতং ; সভাই ঘাঁহার ত্রত তিনি তিন লোক জয় করিয়াছেন, তিন লোক জয় করা কত না কঠিন কঠো,—কিন্তু সাধক वाक्कि कठिन कांधा माधन कटनन विलयाहे সাৰক নাম প্ৰাপ্ত হ'ন--সত্কীন আসাম-হীন ঘুমন্ত সাধককে আর সাধক কলা পাইতে পারে না। সাধকের মুখে এক কণা ছাড়া ष्ट्रे कथा थाकिटा भारत मा-र्क कथा छह থে, সভা ভূমি আগাকে যে পগে লহয়। চলিবে সেই পথে ঘাইব—ধর্মা তুমি আমানে रय পर्य नहेशा विलाद प्राप्ट भर्म याहेत-কণ্টকের উপর দিয়া যাইব –প্রেপ্র উপর দিয়া যাইব**–পৰ্ব্যত** ডেদ কবিয়া যাইব— মুখ স্মীরণে ভাদিতে ভাদিতে যাইন্--অঞ্পাদ করিতে চরিতে ঘাইব-হাস্য করিতে করিতে ফাইব—যেদিকে লইয়া যা-हैर तम्हें निर्क माहेव-- ज्ञाहात्र अ निर्क বাও দিকে চাহিব না। সজ্ঞোর মধুনয় আ-কর্ষণ—ধর্শ্যের মধুময় আকর্ষণ—ঈশ্বর-প্রেমের মধুময় আকর্ষণ—দাধকের হৃদধ্যের একমাত্র পরিদালক—ভাহাতেই তিনি চলেন, ভাহা-তেই তিনি বলেন, তাহাতেই ভিনে বর্জিয়। থাকেন, ভাছাতেই তিনি নিলা যা ন, জাহা-তেই তিনি ভাগ্ৰত হ'ন—তিনিই সাধক— **जिनिष्टे मानक! मांधरकत्र मृर्थ कथन पृष्टे** কণা থাকিতে পারে না—একত সাধকের शनग्र हरेएड अहे कथाणि गांवत हरेगाट्ट।

"তনেবিকং ভানথ আত্মানং অন্যাবাচো বিযুক্ত অমৃতনৈয়ে সেতুঃ,"

এক, সেই পরমাত্মাকেই জানো—জনা বাকা-সকল পরিত্যাগ কর—ইনিই জন্ত-লাভের সেতু। গাঁহার এক মন, এক লক্ষা এক কথা,সেই সাধকই সাধক—তিত্রিই সিজি লাভ করেন—অন্যেরা কে কিসে নীত হইয়া ত

কোণায় গিয়া পড়ে তাহার কিছুই ঠিকানা নাই! ঈখরের আদনে কেছ বা লোকানু রাগকে, কেহবা ভাবি ঐতিহাসিক খনতি প্রতিপত্তিকে, বেছ বা আপনার যথেচছগানী भगःक्स्माः भातः कतिसा कास्मरनातारकः ভাহারট পাজ, করেন-ইহার নাম কি ঈশ্বল-तामन' - १ मः माः तत् मांगज् । । ज मांगज् इहें १५ अपन आसानिभक्तं जन्नात करून। **८१ अदमाश**न्। बीनीटमत **नेक खत्नक-न**ः প্রক—কুনিই কেবল আমাদের একমাত্র সুক্রং! আমরা আপনারা-প্রয়ন্ত আপনাদের শক্ত: --আমশ ভোগাব সভাকে ছাড়িয়া অপেনাদের ইচ্ছানুশ্রা সতা গঠন করি-্লতি,—আমানের গছেতে সাহার অভিক্রতি এছটে ওালর পূজা হইনা উঠিতেছে— ভোষার বিশুদ্ধ আবা। এক সভো আমানের बरमत् वात तक करेशा शहर उटा । छारि-দিকেই অন্ধব্যস্কল জোমার ম্থলেল-ক্তিই আমাদের এক মাত্র' কোডি—কোমা পভঃ আশ্রাই আমাদের একমার গাখ্য--নিরস্তর জোলাকে দেন আমরা নিকট হইতে निकटण उपनी भागान (मिथा धाँचारम्य वृधिः নয়নে তোষ্ট্ৰ সভাৱাপ প্ৰকাশ কর—সং-সাধ-সংকট ধ্ইতে আমাদিগকে পৰিয়াণ कत्।

छँ এकस्मनाचिजोतः।

# यनायरनशयर्भक्रम थोश्र

কতকঙলি কাৰ্য্য আছে তাহারা প্রায় তুলা রূপে শরীর, মন, গুনয়, ও আছার তুর্গতি সাইন করে—এই সকল কার্য্য মহা পাপ নামের বাচ্য। স্থাপান এই সকল কার্য্যের মধ্যে একটীৰ মদ্যপানে যে কেবল শরীর অস্তুষ্ক, তুর্বল ও রোগের আবাস-স্থল হয় তাহা নহে, ইহাতে মন বুদ্ধি ও বিবেক-শক্তি নিষ্টেজ ও প্রভাহীন হইয়া পড়ে, হাদয়ের পবিজ কোমল প্রবৃত্তি-সকল অসাড় হইয়া যায়, এবং স্মাত্মার দৃষ্টি মলিন হইয়া যায়। যে দেশে এই ঘোর অনিপ্রকারী যদ্যপান-রূপ মহাপাপ প্রবেশ করে, সে দেশের আর তুরবস্থার শেষ নাই। যে পরি-বার মধে। **এই মহাপাপ** ভাবেশ করে মে পরিলারের জুর্গতির আর অন্ত নাই। বঞ্চ-নেশ্যে বড় দুর্ভাগোর বিষয় উহার ভার্মধ্য উন্নতির পক্ষে বড় নিবাশার কথা যে দিনে फिल्म नाक । **१**हे चहालाल द्रिक हरेत्उटह । ভারার ইংরাজ-রাজ বঙ্গে সম্প্রতি খোল। ভাটার নিয়ম করিয়া এই পাপ বিস্তারে যথেই প্রাত্রায় দিয়েত্রছেন—আর ক্ষীণ্যনা দুর্ব্যলহৃদয় আধ্যা**জিক-বলশূন্য বস্বাদী দলে দলে যাই**য়া মেই পাণে 'নপতিত হইতেছে। এই শ্ৰহ (मर्भ कर क्य ७ म**र्तम** मास्कि अही महा-পাণ ভন্য থাকা করাইভেচ্ছে, অকাল ाचंका लाख इटेरज्राह, १७१ व्यवसाय स्त्रा আঁদে পতিও হইতেহে , ২৩ বত বৃদ্ধিমান 9 किसान् वर्गक এই মহাপাপ बना जाश-নাক্লদেশের বুদ্ধি ও বিদ্যা হারাইয়া লোকের সন্মূণে দ্বণিত ও অপমানিত হইতেছে; কত ফুল বিনেক-প্রায়ণ ব্যক্তি বিবেকশক্তি-চুক্তে হইতেছে এবং রিপুগণের বদীভূত হইয়া প**শুর ন্যায় আচরণ করিতেছে**; কত কড জদয়-বান ব্যক্তি আপনারদিগের সভাবসিদ্ধ ভক্তি. প্রেম, ক্লেহ, শিরাচার ও ভক্ততা হইতে চুতে হ**ইয়া মনুষ্য**ই হারা**ইতেছে ; আর ক**ত কত ব্যক্তি আত্মার দৃষ্টি মলিন করিয়া স্থামন-জ্ঞানে অন্ধিকারী হুইয়া স্বাপ্সনারদিশের আ ত্থার স্গতির-পথে কৃতক রোপণ করিতে**ছে** ট मनाशान-क्रथ महाशाय जना এই राष कृष्-ৰ্দ্ধিক কি শোচনীয় কা**ও খটিতেছে—এক**বাৰ ভাহা প্র্যালোচনা করিয়া দেখিলে জ্ঞানশূন্য हरेटल इस्। 🗯 🕐

অপরিমিত মদাপানে যে ঘোর অনিষ্ঠ হয় তাহা ত সকলেই, স্বীকার করেন, কিন্তু বঙ্গের ভদ্রসমাজ মধ্যে এক্সক্রিলাক আছেন তাঁহারা পরিমিত মদাপানের পক্ষপাতী-পরিমিত মদ্যপানে ষে কোন অনিপ্ত হয়, তাহা তাঁহার। খীকার করেন ন।। ইহাঁর দিগের মধ্যে ক্রেছ কেছ ইংরাজদিগের রীতি নাতি অনুদরণ করিবাব হীন বাসনা কর্তৃক পরিচালিত হইয়া,কেহ কেছ নব্য বঙ্গসমাজের শিষ্টাচারের অনুরোধে এবং কেহ কেহ বা সাস্থ্যক্ষা ২৪ মনে করিয়া **অল্পমানার মদ্যপান** করিবার বাতের অবুসরণ করিয়া খাবেন। বাহার। মনে করেন অন্নথারার করিনে তারা হইতে অনিপ্ত হয় না, ভাহারা অতি ভ্ৰনার। মধ্য একটা প্রচন্ত বিশ্-পত্ত ্তিক, জান্ত হউক, কোন,কোন রোগা লাস্ত বাস্তি বাজীত খন্য সকল লোকের পকেই ইছা অপকাৰী ও অনিউক্র-শরীর, মন, জনত্ত ও আত্মার অবনতিকর। বতুমান কালেত ইউরোপ ও নাডেরিকার প্রধান প্রধান শরীর-**उद्गतिप्रमित्य हेर्डियल, आई हेर्गाम्या** এই মত যে অতি মতা কার্যাত আমরা তাহার সম্পূণ প্রমাণ পাইতোছ : প্রনিমত মদ্যপা-त्नि । यहा जनिहे ग्रेशा **शा**त्क ७५मक (क কতকণ্ডান প্রধান বৈজ্ঞানিবের মত আগরা নি**ল্নে উদ্ত** করিয়া দি<mark>লাম।\*</mark> প্রিমিত বা

অল্পাত্রায় মদ্যপান করিবার আর এক্টা দোষ এই যে উহা অধিক পরিষ্যাণে পান कतिनात पानभा लालभा छित्रक्त न ८२ -- ६३ লাল্যা এক শটেড মুগো এড অনু গোলে मसन कविद्या शादार कि सा शतन्त्र । दिवस স্থাবিজ্ঞ প্রস্তিক্ত বিল্যান্ত্রেল গে বাবেশব এক স্থানে জিদ পাধা ও পরিনিক ম্পাপান করা একই কথা -বাবের ভিচেত্র মধ্যে ৮৪। क्रकों क्रकों कारित जार मिर्जन भरेता इंडिसन ममञ्ज एमनाय क्षाविए करते, द न्यनि खक्ते একট মদাপান কৰিয়া মণা অন্থ সাহিত स्त्र । (पथा लोग्डिटेंड एक स्टायनाम्हार वर्षेत्र ना अञ्चला इंडिक अल्लान मनुद्रात श्राक (भाव एविच हाती, भग्नाभाभ । १८३ জন্মট প্রচরিত্র হিন্দুলন উপত্রেম দিয়া গিয়াতে ন ''মদাম্বেরমপেরম্পাহ। '' অন্যতে महा जिंदा मा, धार्शन शीन कतित्व मा, क्तिकवारत कीटवना" - सेंश्रेश मना**एन मर्जा**। যাহা নহ'লাপ, নিবে ভাষাতে প্রবৃত্ত না ইইলা যদি অনাকে তাহাতে এরত করি

spirits. The practice can not possibly do any good, and it has often done much barm." Dr Letters has recorded the following result or his observation; - Nearly all the illness of my adult patients, and most of the cases of "saddon deaths, are occusioned by the practice of taking a glass of sparits and correspond diener." Dr Harris, mean official record to The Secretary to the American Navy, states, the moderate use of spirituous liquers has detroyed many who were never drunk?" Ties Browster remarks ; "It is onough to observe that the habitual use of intexicating drink. seen within the limits of what is commonly deemed sobriety, is equally destructive to the heath of body and mind." Dr. A. S. Thora son observes, "Wine, even in moderation, when daily used, is equally builful it over stimulates and consequently exhausts the powers of life." He Rush declares; "I have known many persons destroyed by arch . spirits who were never completely intoxicated during the whole course of their lives.

<sup>\*</sup> Dr James Miller says, 'Alecohol kills in large doses, and half kills in smaller ones. It produces insanity, delicium, fits. It poisons the blood and wastes the man.' Dr Gordon says; — Leaving drunkenness out of the question, the frequent consumption of a small quantity of spicits, gradually increased, is as urely destructive of life, as more habitual intoxication.' Professor littchcock observes. "The use of spirits, even in the greatest moderation, tends to shorten life." Dr R. G. Dods remarks, — No one is said from the spiroach of countless maladies who is in the daily habit of using even the smallest portion of ardent

किया कतिएक शाहाका इति, छाङा हरेलाउ भाग करा हर, अरेषना छेल ब्रेशार्ट, "मना गटका मार्थि अमार जनादक मना निटव ना, अरकराद्ध स्थान कविदय ना । है दिस्त निकाणी कुमारत वरत्रत नवा मभारक এরপরীতি দাঁড়াইয়া গিয়াছে যে যিনি নিজে মদ্যপান করেন না, তিনি যদি মদ্যপানাসক্ত করেকটা বন্ধুকে নিমন্ত্রণ করেন, ভাহা হইলে তিনি তাঁছাদিগের প্রযোদার্থ মদেরে বিশেষ স্মান্ত্রাজন করিয়া থাকেন, পরে হয়ত আহা-স্থাতে সহতে তাঁহাদিগকে মদ্য ঢালিয়া দিখা देनीकरनात प्रतम पृक्षील एप्याहरतन मरन क-ু বিষয় ক্লাপ্তনাকে পরিভৃগু খেন করেন। এরূপ নোজৰ ৰ নিতান্ত ধর্ম-বিক্লন, ইহা ভাহার-পিলের 🔭 হয় मা; ইহা বড় আশ্চর্যা। এরণ বৌজনা ছারা মদাপান রূপ পাপের প্রতি উৎদাহ প্রদান করা হয়, অনাকে এ পাপ করিতে সাহাক্ষ করা হয় এবং ভজ্জন্য দশ্ম হইতে পতিভ হুইছে হয়; ইহা ভাঁহা-দের সমাকরপে হৃদয়ে ধারণ কর। উচিত।

# ্রাচীন ভারতে শিক্ষা।

ु(পুरसंत अध्वृद्धि)

্ৰ হিন্দুজাতির নিকট ঐহিক বিছুই নহে, পার ত্রিকই ষ্থাসক্ষে। যাগ হজ্ঞ দান ভ্রক্ত ি উপবাস বা কিছু বল পারত্রিক ফললাড তাহার একমাত্র লক্ষা। পরকালের উপার हिन्द्रकाणित धरेक्सभरे विश्वाम् । नर्मेश कृष्ट-्रें नामन किरल है हाउह राल । अधि कना ধুর্মটী ভাহাদের শিক্ষা-প্রণালীর অন্তর্নিবিট্ট দ্বিল । ইহাই আত্মান নিজা। কিন্তু একলে विष् त्रिए ना ए श्रहकाल ক্তেক গুলি মতের সম্ভিতে বিশাস দৃষ্ট क्रमारेट शाहितह ধর্মাশকার চড়াত श्रमी (क्तन मह

कार्ता हिन । जिस्सा विकामीन ज्ञान করিরা তুইবার সন্ত্রাধন্দন ও অগ্নিপরিচর্য্যা कतिए इस्केश । देश है जिलामना।

গর্ম চুইক্সার প্রবৃত্তি-লক্ষণ ও নির্ভি-লকণ অৰ্থী ছুল ও সুক্ষ। বাগ্যজাদি ্ৰেরতি লকণ বা পুল ধর্ম এবং একজ্ঞান নিবৃত্তি-লক্ষণ বা সুক্ষা ধৰা । এছলে দেখা যাইতেতে যে অন্তমনবীয় ছাত্রেন প্রথমে স্থূন ধৰ্মে দীকা হইত। সূক্ষা ধৰ্ম জ্ঞান-সাপেক। বোধ হয় বালকের কোমল মন ইচা গ্রহণ করিবার উপযোগী নয় ঋষিরা এরপই বুনিতেন। যাহারা স্থল ধর্মকে ভবার্থবের পরপার গমনে অদৃঢ় ভেলা বলিয়া নির্দেশ করিয়াছেন ; যাঁহারা কলিয়া পিয়া-ছেন যে নারিকেল ফলের জল ও লাভ হইলে যেমন ভাষার অপার ভাগ (ছিব্ড়া) ত্যাগ করিতে ইয়, **কলোঁ**দগ্য হইলে ফুলটী <u>হেম</u>ন আপন। হইতেই ক্রিয়া যায় সেইরপ অক্সজ্ঞান লাভ হইলে স্থল-ধর্মাকে হয় ত্যাগ করিতে হটবে हेरा बालना हेरेएडे विताल लाहेरव: ভাহারাই যে আবার স্থল ধর্মকে শিক্ষার অন্তর্নিবিপ্ত করিয়া যাম, ইহার অবশা কোন হেতু আছে। অধিয়া স্প্রেট বলিয়াছেন रा जुन धर्मा जनवसन हरूटि मूकि नारे किन्छ अपितक जारात मनुवादक भन्मा করিয়া রাখাও ভোয় নহে। সূক্ষা ধর্মা লাভের জনা প্রাণপণ কর, কিন্তু যত দিয় ভাহা না পাইতেছ তাবং স্থা শইয়া चाच-ज्लित रहेश रम्य । के बार्टिंग सर्च निर्फणकारम श्रीविपरगन्न व्यक्ति विख्यात বিলক্ষণ প্রকাশ পায়। তাছার জ্ঞান-লক্ষণ श्रद्धणात श्रामाना निहाद्यम् । विहाद्यम स्वात्मत शेर्क कानाकान्यमहित

<sup>&</sup>gt; কাল্যুৰ জিবেকালিক বিষয়ে। বিষ্ণু সূত্ৰ। ২ সবাহেকে পঢ়ুৱা বন্ধুকুৰাটো ক্ৰডি।

জ্ঞানোদর হইবে তলুণ্ডেই প্রেক্তা বিশ্বন করিতে পারিবে । এইনে দেখিতে বিজ্ঞা চর্যা না করিয়া থেমন কোন পার্কতে কিয়া গাইস্থা না করিয়া থেমন বানপ্রক্তারে করেন করিতে পারে না, প্রাক্তারে পাকে নে বিশি নর। যখনই জ্ঞানোদয় হইবে, তখনই প্রক্রো আশ্রয় করিতে পারে। ইহার তাক্ত পর্যা এই স্ক্রান্থ্য যখনই হাবোধ হইবে, তখনই তাহা আশ্রয় ও তদক্ষারে কার্যা করা আবশ্যক। ইহাতে কাল ও আশ্রনের কোন প্রতিবন্ধকতা নাই।

বাল্যকালে সকল প্রকার সংস্কার সহজে ৰদ্ধনুল হয়। বায়েধর্ণের ত্রুপ্রাক্ত ও তর্ক-ভরত্ন উপিত হুইয়া মনকে আকুল ও সং-শয়ান্বিত করিতে পারে। একন্য বালকোলই ধর্মারীজ বপন করিবার প্রকৃত সময়। পূর্বের তাহাই ছইত। পরে যথ**ন গার্হস্থোর প**রার্থ-ल्यान करोाइ कर्डवा वेंद्रन कतिवाद मगक আদিত, তথ্ন এই অন্তৰ্নিহিত গৃঢ় বীকা উদ্ভিন্ন হইয়া **অভি ম**ধুশয় ফল প্রদেব করিত। शृह्य रेशावरे वरन जीवरनव मकन श्रकात রহস্য ব্রিতে পারিত। সংসার-সমুদ্রের নানার্রাপ আবর্তের মধ্যে পড়িয়াও জাপনার পদ অটল রাখিতে সমর্থ হইত এবং কঠিন লোহকেও পুষ্পকোরকবৎ কোমল বুঝিত। কারণ ধর্মাই মনুযোর শুক্ত বল, ধর্মা সহায় হইলে তুস্তর অন্ধনারও স্বথে উত্তার্ণ হওয়া

বিকালীৰ সানের একটু তাৎপথ্য আছে। অন্ত:শুৰি নাজাগুৰি লাপেক। ধাৰার শরীর অশুচি বাবে, অন্ত:শুৰি ভাষার পক্তে একটা কটকর সাপার। ফলভ ইহার প্রভাবে শাস-স্থান্তনর ব্যালাক ঘটে।

একলে বামনিক বিকা ক্রিয়া হঠত

" THERE STEEL BOOK STOP

The state of the s

প্ৰেদৰ্শন কছা আবশ্যক। শিক্ষাৰী ক্রি সর্কারো বেদপাঠ করিত। যে তাকাণ विमुश्रास्त्र ना कतिया जना भाटकत जाटना-দ্দী করিত দে সবংশে শূল হইয়া যা-रेज के दिल खर्मात्रमा। যাঁহার। ধর্ম্মকে দার পদার্থ বলিয়। জানিতেন ধর্মা-গ্রন্থ বে ভাঁহাদের প্রথম পাঠোর মধ্যে নির্মাচিত हेरेरें, देश अंकेंग चान्हर गंत्र कथा नहरू। কিন্তু এই বেদ প্রথমে অর্থপ্রতীতির সহিত পাঠ করিবার রীতি ছিল না। সকলে ইহা আদ্যোপাস্ত কণ্ঠন্থ করিত। যথন অক্সরের रुष्टि इब नारे, यथन अह नात्य कान शरार्थ ছিল না, তখন একাচারির। সংযত হইর। **এই तिह कर्श्य कतिछ।** श्रदत यथन कक्दतर रुष्टि घरेग्राह्मिन, ज्थन এবং সেই সমগ্र इंड्रेटन এখনও এই রীতি অনুস্ত হইয়া থাকে। মুখে অভ্যাদ রাখিতে হয়, এই জন্য বেদের একটা নাম আহ্মার । কিন্তু সমস্ত এন্থ মুখস্থ রাখা বড় সহজ কথা নয়। দাকিণাতো এখনও কিরূপ প্রবালীতে ছাত্রেরা বেদ মুখস্থ করে এম্বলে তাহার কিঞ্চিৎ আভাস দেই। মনে কর আমি কোন একটা ঋকের শেষ পাদের কিংবা পাদাদের উল্লেখ করিলাম, শিক্ষার্থী ছাত্র সেই ঝকের পূর্ব্বপাদ আয়ুত্তি করিয়া আঁশ পূরণ করিল। আমি মন্ত্রগত কোন একটা বিশিষ্ট দেবতা বা শব্দের উল্লেখ করিয়া জিজ্ঞাদিলায এই দেবতা বা শব্দ কোন কোন বাকে আছে ছাত্ৰ ওৎক্ষণাং ভাহার উত্তর দিল। এই এক একটা ছাত্র যেন बौतिष देविषक शृक्षकामतः। है है। दिन्त निक्छे বেদের যে কোন স্থান চাও, ইহারা তৎক্ষণাঃ তাহা আর্তি ক্রিয়া দিবে। পূর্বেও এই-রূপ রীতিতে শিক্ষা হইত। কিন্তু কেবল স্মৃ

ও বৰ্ষণাভবেলেভিত শ্ৰমং ক্যালিকী সমস্তান: প্ৰক্ষেতি। বি. হ।

<sup>&</sup>lt; भोगोन्दङ सकाराहरू भोगाः। ।

তিতে গ্রন্থকার অনেক বিশদ। ইহাতে পদে পদে পাঠ বিপদ্ধ হইবার সভাবনা। **(वन्दक এই পাঠবিশর্যায় इंट्रेंट्ड द्रक**, कति-বার নিমিত্ত সংহিতা পদ ক্রম জটা ঘন প্রভৃত্তি কত্ততলি পাঠগ্রহ সাছে। ইহা नर्मछन बाउँ श्राहे । देशक जड़े वि-কৃতি বলে। এই সংহিতা পদ ক্রম প্রভৃতি य कि अवर **हेक्** बाबा किक्रटल रय रवरनव পঠি রক্ষা হয় প্রাতিসাক্ষা নামক বৈদিক গ্রন্থ বাঁহার। আলোচনা করিয়াছেন, ইহা তাঁহাদের অবিদিত নাই। আমরা প্রস্তাব-বাত্ল্য-ভয়ে এম্বলে তাহার সবিশেষ উল্লেখ করিলাম না। ফলতঃ শিক্ষার্থী ছাত্রকে এই সমস্ত পাঠ-গ্রন্থ স্থাতা বেদের সহিত কঠছ করিতে হইত। निर्म दरामंत्र अर्थकः। करेकण श्र्वजन প্রণানীর শিক্ষায় বিশেষ উপকার আছে; এবং এই শিক্ষাই সাভাবিক। ইহাতে মুতি अ तुक्ति कू**रशबरे** वृक्ति इश । জার ইহাকে যে সাভাবিক বৰিলাম, তাহার একটু কা-রণ আছে। শিশু জন্মগ্রহণের পর হইতে পদার্থ চু চিনিতে ও তাহা শ্মরণ রাখিতে চেষ্টা করে। ইংহারা শি**শুর দোলা**র উপর বুক্তবস্তাদি বুলাইয়া এই ভাবটা পরীকা করিয়াছেন, তাঁহাদিগকে শিশুর বস্তু তেনা ও भातन बाथात कथा तुनारेट इहेटना। हेहाटड অ্যাণ হয় যে সর্বাত্তে শৈশবে স্মৃতিশক্তিরই স্ফুর্তি হয়। মৃতি যে জ্ঞানটুকু আনে, তদার। ক্রমণঃ বিচারের উৎপত্তি ও বৃদ্ধি ক্ষতি ধইতে থাকে।। এই জ্যে সভাৰণ পূৰ্বতন শিক্ষা-এবালী ইছারই অনুকুল। হ্যাত্র ু**অত্যে স্থৃতি প**রে বৃদ্ধির্ত্তির চাল্না করিত। একং এখনও চতুষ্পাচীতে সাধানাত এই রীতি 🕶 তুক্ত হইরা থাকে। যে লতা নৈদর্গিক ৰিয়নে বাড়েবাধা না প।ইলে সে সর্কতোমুণী হয়। প্রবের রাসে বাল্মীক প্রভৃতির বৃদ্ধি তা-ছাই হইড। এবলে প্রদাস-সম্মত জনে একটা

कंथा चार्किट जाइ । चामता केनिशीह कर्फ ज्यनकात जिल्हात अकते भारत । शदत ८एगाहे-नाम वृद्धिक गर्सा छ। । अथन रक्ता এই যে তথনকার কল্পনার যে গভীরতা ও সতাসারণ जोहा এই মণিকাঞ্চন-বোণেরই এक में अवार्थ कन। श्वांजन काता नाहेक প্রাণ যে কোন গ্রন্থ আলোচনা কর দেখিবে कवि याहा विलिदन वा कब्रिटवन कछाईनी দৃষ্টিতে যেন ভাষার চতুর্দ্দিকটা অত্রে দেখি-তেছেন। যাহাতে বর্ণনীয় বিষয়টী পূর্ণাবয়ব ছইয়া **উঠে,** তাহার কোথায় **কি** অভাব, কোণায় কি দিলে তাহা সর্কাঙ্গস্থলর হয়,ইহা তিনি যেন সহস্র নেত্রে তল তল করিয়া প-রীক্ষা করিতেছেন। প্রাদাদের আড়ম্বর, কুটা-রের অবসাদ, বীরের দম্ভ, তুর্বলের মার্তনাদ, বাঁজ্যের সঞ্জীবতা, রোগের বিষাদ, ভগের মহোলাদ, নরকের হাহাকার যেন তিনি জীবস্ত মূর্তিতে দেখাইচেচ্ছন। **জগতের সমস্ত** রহনোর কৃঞ্জি। যেন ভাঁহার হন্তে। তিনি কবাট উদ্ভিন্ন করিয়াছেনু, ইচ্ছা যে জগতের সকলেই তাহাতে প্রবৈশ ক্রক। তমধ্যে গিয়। করুণার্ক্ত কাদের সমস্ত দেখি-তেছেন। ভাহার চিত্ত ভালান বিচারে वार्छ। **একদিকে পালের নরভ্রত** ও অপর নিকে পুনোর স্বৰ্গৰাৰ বিভাগ করিয়া রাখি-**७८६। हेरा शत्मन त्नानक-मान्त** चानिया মন মোহিত করে আবার তুগন্ধময় অন্তকার গভের অস্বাস্থ্যকর বিষ্ধায় আনিচা সাস্থ্য করিয়া তুলে। এইরপ সমগুভার প্রস্পরার থবে। আমর। কেবলা কবিবীক্ত দাতিক দৃষ্টির পরিচয় পাই। অনেক তরিত্ত-মাহাত্ত্বো আহা-কেই প্রতিবিখিত নেশি এবং খানেক দায়ত্ত-प्तितारका जाराबर इन प्राची कर हुन तार लाहीन निकालाना स्कृत-ज्यम् सात धर्मा निकात जर्खानीतिके नारे, मच्चिनी क्षिक जातज्यम् हर्देख क्षान क्षितार ।

श्क्रकाटच क्वन ख् शानमिक निका হইত তাহা নহে, ইহার মহিত সদাচার ও সভাতার শিকা ছিল। ইহাই হৃদয়ের শিক্ষা। আমর৷ ইহা প্রদর্শন করিবার পূর্বের আচার্য্য ও ছাত্র সক্ষে তুই এক ক্থা বলিয়া লই। যিনি উপনীত করিয়া বেদ অধ্যাপন করেন তিনি আচাৰ্য্য >। জন্মৰাতা পিতা ও আচা-(धात माता जाहार्यहरे शतीयान्। মাতা হইতে কেবল নাম মাত্র জন্ম হয় কিঞ বেদপারগ আচাষ্য সাবিত্রী দীক্ষা দারা যে জন্মের বিধান করিয়া খাকেন তাহাই সভা তাহাই অজর ও অমর। ফিনি ধর্ম্মযোনির কর্ত্তা, যিনি স্বধর্মের শাস্তা, অল্পবয়ক হইলেও তিনি ধর্মত পিতা। শাস্ত্রে আচার্য্য সম্বন্ধে এইরপ প্রশস্ত ভাব দেখা যায়। ছাজেরও লকণ আছে। ছাত্র পরাক্ষিত হওয়া চাইং। ষাহার অন্তরে দশ্ম এবং শ্রবণেজ। নাই, তাহাকে বিদ্যাদান নিশ্বন। উপন কেতে বাজবপনের ন্যায় ইহাতে কোন কলোদয় र्य ना। विना आभिश आधाराति कहिन ? ভগবন। আমি ভোগার সেবক, আমায় রক্ষা কর। যে ব্য**ক্তি অনুযার বশবত**ি অনুরল ও অদংষত, তাহাকে আমায় বলিও না। ইহাতে আমার বীর্ষ্যের স্থান হইবে। তুমি যাহাকে শুদ্ধসভাব অপ্ৰমাদী মেধানী ও ব্ৰহ্মচযোঁ নিষ্ঠাবান জানিবে, যে কোনও রূপে তোমার অপ্রিয়াচরণ করিবে না, তুমি তাহাকেই আমার বলিও। ছাত্রের ইহাই

है । यह होनीम जलादन के का द्वन मधानिदस स्माधार्थाः विमार । वि, य,

লক্ষ্। এছ ছাত্রের অনেক কতবা ছিল। षाहारी षारम कक्रन थात नाहे कक्रन, हेर्हाटक नियुष्ठ অধ্যয়নে যত্ন করিতে হ-ইত। মেপতি লইবার সময় শরীর বাক্য **ইন্দ্রি বৃদ্ধি ও মন সংযত** করিয়া রুভা-**ঞ্জালপুটে ওক্ন প্রতি দৃষ্টিপাত** করিত। গুরু উপবেশনে আদেশ করিলে ব্সিত। গুরুর নিক্ট সর্বদা হান্ত্র ও দীন-বেশে থাকিত। গুরুর নিদ্রাভম্বের পর্ম্বে গাভোষান এবং শয়নের পরে বিশ্রায করিত। শয়ন, আস্নে উপবেশন, ও ভোজনকালে গুরুর সহিত সম্ভাষণ বা ভাগার কোন ক্থা প্রবণ করিত না। ভানিবার স্থয় মুথ ফিরাইয়া থাকা অসদাচার। যথন গুরু উপ্ৰেশন করিয়া আ**ছেন তথন ব**দিয়া, মুখন গমন করিতেছেন তখন অনুসরণ এবং বখনু আফিতেছেন তখন প্রত্যাকামন করিয়া ঠা-হালে জিজান। করিবার রিণতি ছিল। গুরু दिवृथ हरेल मन्त्रुर्थ निशा, नृत्रक **हरेल** নিকটে গিয়া এবং শয়ান থাকিলে প্রশম করিয়া তাঁহাব আদেশ গ্রহণ করিত। পরে।-ক্ষেও ওরার নান এহণ নিশিষ। ভাষার আকার ইন্সিড ও কথাবার্ত্তার অমুকরণ অপ-রাধের মধে: প্রণা হইত। প্রক্র নিন্দারাদ खिनित्न कर्त अञ्चलि श्रमान र। छ्यः इहित् গ্রন্থান করিত। ছাত্রে যদি কোনরূপ যান রা আমনে থাকে তাহা হইলে অনতরণ পূর্ব্বক গুরুকে অভিবাদন করিত। প্রতি-বাত বা অমুবাতে গুরুর মহিত ব্যাসত না। গো অব উঠু শিলাফলক ও নৌকায় গুরুর মহিত বৃদিতে পারিত। গুরুর গুরু স্কি-হিত হইলে তাঁহাকে গুরুবং 'দেখিতে উপস্থিত হইলেও ওরুর হইত। পিতা আদেশ ব্যতীত ভাঁহাকে, ছভিবাদন করিভ না। তরুপুত্র বয়দে ছোট বা বড়ই হউন তিনি অবশাই ওরবং মাননীয় কিন্তু ঠা-

२ ना शरीकिकमधाशात्रः। वि, ए।

विना श्रेंद बाक्षनमानगां म रगिलक मार्चनविर्द्धक्वादः।
 जर्शकांश्रान्यदेशकां व न मार क्यां नीर्वादकी कथागांग्।
 गरमव विमाः किमकावः रमविन् उक्षकर्गालिकः गरु न कर्षः क्रमक्षां नावः
 गरु माः क्यां निवित्रमा क्यां क्यां क्रम्

নিবিদ। গুরুর নুর্বা ক্রী গুরুরৎ পূজনীয়া কিন্তু অসবর্গা ক্রীকে প্রভাগান ও অভিবাদন করিলেই যথেষ্ঠ হইত। গুরুপাত্রী বদি যুবতী হন তাহা হইলে তাঁহার পাদগ্রহণ দুহনীয়। 'আমি অমুক' এই বলিয়া প্রণাম করিতে হইত। এই সমস্ত সদাচার ও সভাতা। পূর্বের অতি যত্র সহকাবে ছাত্রকে এই সমস্ত শিক্ষা করিতে হইত। বাজিবলে পদ-গনার্থ-বোধ ভর্তিনের পক্ষে যথেষ্ঠ নয়। যে হলান ক্ষমকে বিনীত করে তাহাই জ্ঞান। প্রাচীন ভারত তাহা বুকিয়াছিল এবং হ্রদয়ের শিক্ষাকে সম্বিক মূল্যবান বোধ করিত।

কেবল কতকগুলা আহার করিলেই হয় ना जाहा जोर्ग करा अवर रुखाता तमदरकत রৃদ্ধি করা চাই, এই জনা ছাত্রদিগের কতক-গুলি নিৰ্দিষ্ট অনগায় কাল ছিল। ৰ্দশী ও অপ্তথীতে অহোৱাত পাড়ত না। ত্রীত্ম শীত বর্ষাদি ঋতুসন্ধির দিলীয়া, চক্র স্থাগ্ৰহণ ও শক্ৰোখানে অন্যায়। ঋটি-ৰাপাত, জাকালিক বৰ্ষ সৃষ্টি বিস্তৃত্ব ও মেফ পৰ্কান, ভূমিকম্প, উকাপাত ও দিকদাহে ...**षम**नाहा । श्रीरमत्र मटना म्**उ**त्तर विज्ञा আছে, দাছ হয় নাই, সে সমরে 'অন্ধ্যায়। क्किकान वामाध्यमि ७ वृगान . इत् दापित চিৎকারে পাঠ নিষিদ্ধ। শূদ্র ও পতিত লোকের সন্মুখে পাঠ নিষিদ্ধ । দেবমন্দির খাশান চতুত্থাও ও রখ্যায় পড়িত লাখা কোন রূপ যান বাচনে ঘাইবার সমর পাঠ নিয়িত্র া ছাত্রের বমন বিরেচন ও অজীর্ণ এই তিন অব-্রস্থায় গাঁচ নিধিদ। নেশের রাজা বেদপারগ বিপ্র,গো ও ত্রাক্ষণের কোনরূপ বিপদ হইলে পড়িত না। রাত্রি-শেষে অধ্যয়ন করিছা পুন-ব্রার শয়ন অবৈধ। এই সমস্ত অন্ধাায়কালে পঠিত প্রস্থের আলোচনা হইত এবং ছাত্রের। ইহা দারা বিশেষ বাংপদি লাভ করিত 🕻

#### শ্যামবাকার ব্রাক্ষনমাজ।

বাবিংশ সাম্বংসরিক উৎসর উপলক্ষে শ্রীযুক্ত ভৈরবচন্দ্র বন্দোলাধ্যায় মহাশুরের উপদেশ।

প্রাতঃকাল।

ব্ৰক্ষজানরপ স্থায়ি অগ্নি স্কল আত্না-তেই অবিন্ধর অকরে নিখিত আছে। ব্রক্ষজানকে অগ্নির সহিত কি দিবিত্ত তুলন। করা হইল—অগ্নিতে ুও ব্রহ্মজ্ঞানে কোন্ বিষয়ে শোসাদৃশ্য আছে: অগ্নির কি গুণ তাহা দেখিতে গেলে সামান্যতঃ তিন্টা প্র-ধান বলিয়া উপলব্ধ হয়; প্রথমতঃ উদ্ধাপ, উত্তাপের অভাবে জড় জগতে কোন পদা-ৰ্ই জীবিত থাকিজেখা বন্ধিত হইতে পাৱে না, **উত্তাপ** ব্যক্তিরেকে **জীর মা**ত্রেরই জীবন नडे एस, हिमकरलदर स्ट्रात अक ध्यान চিহ্ন। উভাপ ব্যতিখেকে যে কেবল জীব জম্ভ কেছ বাঁচিতে পারে না তাহা নহে— রক, নতা, পূজা, গুরু প্রভৃতি কোন প্রকার উদ্ভিদ্ও অখিতে বা জীবিত থাকিতে পারে না বুর্যোর উত্তাপ সমাকরপে প্রাপ্ত না হইলে পুজা বিকশিত হয়,না, ফল পরিপক हा सी, भवापि तमनीस त्माका शावन करत ना, এমন কি উত্তাপের অভাবে কুলে তৃণ পর্যান্ত জমিতে পারে **না। এই** রূপে যেমন দেখি বে উত্তাপ বহিৰ্জগতেই জীবন এনং উত্তাপ তিন্ন মনুষ্য, পশু, পকী, কীট্ৰ, পতম্ব, রুক, লতা, পূস্প প্রভৃতি কিছুই জীবিত থাকিতে भारत ना-काश्वर शानतका का ना, रम हे-রপরক্ষজান আত্মার প্রকৃত জীবন, উক্ষজান বাভিরেকে আত্মা এক বছর্তের নিমিত জী-নিত থাকিতে পারে না; ক্রেক্সান-নিহীন थात्रा थात्रारे नदहः ख्राबान-नृता **भाषा** नियाँ क निर्मादर्श निया श्रीतर्शित स्था, कान कारनहे छाहात विकास दा पर

ইবন আনানের আরা হইতে তিরোহিত
হইলেই আত্মার ধবংস। আমরা আত্মাকে
যে অবিনশ্বর বলি সে কেবল ইশরের আবিভাব ৰশতঃ; যে আত্মাতে ইশর অধিবাস করেন এবং যে আত্মা ইশরে অধিবাস
করে তাহাই প্রকৃত আত্মা; আত্মজ্ঞান ভিন্ন
আত্মার অবিনশ্বরত্ব দূরে থাকুক তাহার স্থাগ্রিত্বই সন্তবে,না, এরূপ আত্মা আছে বলিগ্রাই বনা যাগ্য না; মেনন উভাপের অভাবে
জড় জগতের জীবনের নাশ হয় সেইরূপ
ইশর-জ্ঞান ব্যতিরেকে আত্মার নাশ হয়.।
এই নিমিন্ট আত্মধর্মে বলে যে বদি আন্
মঙ্গা তাঁহাকে না স্থানিতায় তবে মহাবিনাশ
ভাইন হইতাম শা

অগ্নির দিতীয় ওপ আলোক। দংসারে আলোক না থাকিলে সকলই তিমিরাস্কন্ম অক্ষকারার্ভ হ্ইভ। আলোক না থাকিলে আমাদিণের দর্শনৈন্তিয় প্রভৃতি অকর্মণ্য ২ওয়াতে যোদদিক রাভি দকলও যে ক্ষুভি পাইতে পারিত না এবং প্রকৃতির মনোছর কান্তি ও উজ্জ্বল ভাব সমস্ত নিরীক্ষণ করিয়া আমরা প্রাৎপর প্রমাকার অপার করুণা ও নিরূপম আশ্চর্যা কৌশল ও অনস্ত মঙ্গল-সক্রপের যে প্রীষ্টকর প্রাঞ্জ হই তাহাও পা-ইতে পারিতাম না এবং তমিবীক্র আমরা त्रेयत्रस्ताननार्ष्य विकाल के जनाना जातक গুৰীরে যে বার পর, নাই ক্তিপ্রস্ত হইতাম जाशांत जिल्ला कता अयरन जनादमाक; त्व शृथितीए जालीक नी शाकित्न भूका সম্দার ম্চারুরপে প্রক্ষুটিত হইতে পারিত ना, मरमाष्ट्रत अनः स्वश्वकतात्र् क्रम मरम्गा-वृष्ठ इनानि सम्मद नाामन वर्ग क्षास्त स्ट्रेटल পারিত না, নানা বর্ণে হলেভিড ব্যাত वर्गरीन अर्थ त्याजामूना रहेक अक्षिक অপূর্ক কান্তি ও মধুকতা লোল এইড জান

সমস্ত পৃথিবী কউকারত বনে বা বালুকাময় **ওঁছ মরুভূমিতে পরিণত হই**ত, শোক এবং আশান্তি জগৎময় বিরাজ ক্রিত। সেইরূপ ব্ৰক্ষভানৱপ স্থায়ি, আলোকে আজা লালো-কিত না হইলে যোহাসকারে আত্মা পরিপূরিত হয়, ত্রক্ষান ও পর্যাতার বিমল জ্বোতির অভাবে মানবাত্মা ভক্তি ও প্রেম শ্না হইয়: শুষ্ঠ ও নীরস্থইয়া পড়ে; ঈশরের পবিজ আলোকের অভাবে হিতাহিত জ্ঞান থাকে না কি ধর্ম্ম কি অধর্ম, কি পাপ কি পুণ্য, কোন্টি ঈশবের অপ্রিয় ও কোন্টি ভূঁছার প্রিয়কার্য তাহা বুঝিতে না পারিয়া আত্মা হতাশ হইয়া পড়ে, ধর্ম অস্তমিত হওয়াতে কেবল পাপেব রাজা আস্বাতে বিস্তৃত হয়, আমাদের একমাত্র নেতা ও পথপ্রদর্শককে দেখিতে না পাইরা আত্মা পথহারা, কর্ত্তনাবিমূচ বাজির ন্যায় আপনার সর্বনাশ আপনিই করে। সেই জোতির অভাবে অন্ধবং পাপের চূন্ডর পক্ষে পতিত হইয়া সমূলে বিনষ্ট হয়।

অগ্নির তৃতীয় গুণ তাহার দাহিক। শক্তি ৷ সেই দাহিকা-শক্তি-প্রভাবে অগ্নি যে কেবল সমুদায় ভশ্মসাৎ করে তাহা নহে, দাহিকা শ-ক্তির একটা প্রধান গুণ পদার্থ সমুহের দুষ-ণীয় ভাগ নষ্ট করিয়া তাহাকে পরিষ্কৃত করা। এই সদ্য-প্রকাশিত নব সূর্যা যেমন ভুমির ক্লেদ: ७ रेनम नायुत अश्वास्त्रकत भवमानु मगछ नहे করিয়া পৃথিবীকে পরিষ্কৃত ও পরিষ্কৃদ্ধ এবং প্রভাত-সমীরণকে স্বাস্থ্যকর ও ভৃত্তিপ্রদকরি তেছে, **অগ্নি খেমন অগ্নৰে** শাসিকা বা অসার ভাগ নপ্ত করিয়া ভাতাকে পবিত্ত ও উজ্জ্বল করে; ত্রেজ্জানরপে স্বর্গীয় জাগ্ন সেই রূপ আত্মার পাপ তাপ ধ্বংস করিয়া তাহাকে পবিত্র ও পরিওক করে। যদীয় ভবাজা নের প্রভাবে ছুশ্চিন্তা, পাপুলাসসা, বিষয়-তৃষা শ্বৰত বিদ্বিত হয়—তুলেঁইতি সমূহ বিন্ত र्य-भारभव ७ मरमाद्ये धानाच्न मयस

**होन्दन हरेया सर्ट्यत** নিকট প**রাভূত** হয়। তর্মন আর আত্মার, বিকার থাকে না, পুণি-ৰীতে অনঙ্গল অশান্তি বিরাজ করিতে পারে ना, ज्यन भूरगात श्राचन, सर्पात वल मर्क्ज বিস্তৃত হইয়া আআতে ঈশবের রাজ্য সংখা-भन करता। उथन मकन **सार्ना** क्रेयरतत क्रा, ধশ্মের জয়, সত্যের জয়, বিঘোষিত হইতে খাকে। ভক্তি, শ্রদা, গ্রীতির প্রবাহে 😎 নীয়দ আলা আর্ড ও রদপূর্ণ হয় – অবিখাদী শোক-সম্বস্ত এবং নীনভাবে মুহামান আস্ত্রা **ঘটন বিখা**সভাপ ভুর্তেদ্য কবচে সংরক্ষিত হইয়া প্রেমে ও ঈখর ভাবে পূর্ব হয়, এবং করণাময়ের আনির্ভাবে পাপ তাপ হইতে মুক্ত হইয়া বিপতশোক হয়, জীবের পর্য গতি শরমেশরকে পাইয়া ভূমা আনন্দ লাভ করে, কণস্থায়ী কৃষ্ণ আপাত-মনোরম পাথিব श्रुर्थंत्र हाना जांब मांक करत ना।

🖟 রোকা ভাহগণ। এই রক্ষজ্ঞানরপ স্বর্গীয় অগ্নি আমাদের আপ্লাতে যে অবস্থিতি করি-তেছে তাহা নেন দর্মদা প্রদীপ্ত ও প্রজ্ঞানিত প্লাকে: <u>অ</u>মাদিগের কণ্মদোৱে যেন ভাল নির্ব্বপিত না হয়। করণাযর পর্যােশ্বর সর্বত্রই সমান ভাবে বিরাজ করিতেছেন। তাঁছার চক্র সূর্যা খেমন সকলেরই নিকট আ-भन ख्यां छि श्रकान कविरुद्ध, धनी, निम्न न, भूर्य, शिक्षक, माधु, जााबु (करुष्टे (यसन् निन-কর বা হিমক্রের আলোক লাভে বুঞ্চিত্র ইয় না, দেইৰূপ কোন অবস্থা কোন ব্যক্তিই-শেই বিশতশাকু জ্যোতিশায় পরিমেখরের বিশ্ব জ্যোতিঃ লাভে বহিত হয় ন।। তাঁছার **পবিত্র আ**লোক দকল আছাতেই **ভাবে श्रमीश्र ब**रियात्यः, किन्न (यगन फला) পুর্বের আলোক নিয়ত প্রদীপ্ত থাতিলেও আমরা নিফীলিত নয়নে তাহা,দৃষ্টি করিতে: नेक्य हरे ना, रमहेनाल जनाष्ट्रानकण कर्गीश जारनाक नकन नगरत्रे अक्तीना त्रशिक्ष

তাহার দীপ্তি কাৰণ নির্মাণ না নির্মাপিত ना रहेरत ७ नामहा स्माहासका बनाउः, वा প্রেন্ডকু উমান্ন'না করা প্রকুক্ত জ্যোতি-শ্ময়ের সে বিমান ক্যোতিঃ অনুভব করিতে অক্ষ হই। ভাতুগণ, খুদিও এত দিন মোহান্ধকারে আচ্ছন হইয়া থাকি, এত দিন যদিও তাঁছাকে আত্মার অনিষ্ঠাত্তী দেবতা আমাদিগের চিরস্তন ধন বলিয়া না জানিয়া থাকি, আমরা যেন অদ্যকার এই সাম্বৎস্বিক नुमाण रहेए नूष्टन कीवम প্राश्च रहे, তাঁহাকে সর্বকাল সকল অবস্থায় সমানভাবে समरत सात्रण कतिराज निका कति। ' मिंकहात्र। নাবিকের গ্রন্থ ভারার নায় তাঁহাকে যেন गर्कामा बागानिरगत्र शय-श्रामिक विनश कानि. তিনি আমাদিগের এক মাত্র নেতা, তিনিই এক মাত্র পাপের মোচয়িতা ও আত্মার আ-লোক, তিনি যেন চির দিন আমাদের একমাত্র नका शांकन, ध्वर छीशांक श्रमाय धावन ক্রিয়া তাঁহার প্রদাদে তাঁহার আলোকেই তাঁহাকে দোৰ; তিনি আমাদিগের অভৱে যে ত্রমজ্ঞান এবং প্রেম ভূক্তি বিখাস সংস্থা-পন করিয়াছেন তাহা থেন ভিরদিন ছির ভাবে অচল ও অটল ভাবে আছাতে বিরা-জিত্ত থাকে, তাঁহাকে প্রাপ্তি ভিন্ন অন্য কোন বাসনা যেন আমাদের মনে স্থান না পায়।

🕾 🖟 👂 संकत्मताविजीयः।

# শ্যাম**বাজার ব্রাম্মসমাজ।** শ্রীযুক্ত দিজেন্দ্রনাথ চাকুর মহাশহরর উপদেশ।

বিশুদ্ধ জ্ঞানের প্রথম সৌপান আপ-নাকে জানা এবা ভাষার চরম কল ঈশরকে জানা। সকল বৈশের তত্ত্বানীর মুখেই পুনঃ পুর এই উপদেশ ভারতে লাওয়া

व्यक्तिक क्रमा जेवी-(काम । १८६)

शाश-''आश्रनाटक बाटका । "बाश्रनाटक कानिए रहेरम अवने अक्षे चारन में कारना উচিত, विश्वान करेंद्र भागनाई स्थान सम मगल हे (निषद्ध नाज्या वात्र। अस्कात टगहे कान । जिवा-ताख्त्र मध्यक्त द्वाम मसा। जवन्दिजि क्रांत्र, रमरेक्रण जामारमङ মনের ভাল-মন্দের মধ্যস্থলে অহকার অব-ष्टि करत ;-- अ कना वरहात कड़िक् ভাল, কতটুকু মল ডাই। ঠিক্করা স্থকটিন। भारताभकात, विमानूभीलन, कर्न्मिछं जा **अरे** সমস্ত ভাল বন্ধর সঙ্গেও অহন্ধার জড়িত-থাকে, আবার, নর-হত্যা, সেচ্ছাচার, প্রতারণা, প্রবিক্ষা এ সমস্ত মন্দ বস্তুর সঙ্গেও অহস্কার ক্ষতিত গাকে। সহ্দা কাছাকেও এমন্ উপ-দেশ দিতে পার। যায় না ষে, "তুমি অংক্ষার; পরিত্যাগ কর,"—এমনও উপদেশ দিতে পার। সায় না মে, "তুমি অহস্কার-পোষণ কর।" **षर्हात नाकि वि**षशिक पाखःकत**्**रत्र मधा প্রদেশ, এম্বন্য আপনাকে জানিতে হইলে অহস্কারটিকে ভাল করিয়া চেনা আবশ্যক।

अश्काद अभि अकृषि दान तम, जाहादक ছাড়াইয়া উপারে **উঠিলে** লভার দারে *भो*हाता यात्र, **यात्र, त्रशान** श्टेटल, नीति নাবিলে মৃত্তার প্রানে নিশতিত হইতে হয়। আমরা **মতু-পূর্বাক** যে কোন কার্য্য করি, তাহার দঙ্গে দঙ্গে "আমি করিতেছি" विनया (महे कार्याक अकि बिर्मय मूना चा-मार्जित हर्ष क्षित्रिकाल हरू। क्षित्रका सूथन मत्न यत्न स्वर्गम् विश्वतात मर्देश कृति, जात, क्रियरकाम अध्य छाहाएक चंबन चीयह। दकान श्रकि कार्ती क्षिक करि, खबन एकरे का-ৰ্ব্যে কৰ্মণে আৰক্ষা ৰাখনাকে প্ৰতিবিদিত ट्रिपश नार्वा रहे, बर्मिश माशनाज कार्यात गरम कालगरिक स्त्रम करकार क नका, "बरवर्डा" क्षेत्रमं द्वादाव स्टब्स् ALERS ALL SILLS CARE AND SI

শা পানা করিবার অভিলায না রাখি, তবে ক্ষাৰ বহরার ক্টতে মৃত্তি পাইতে পারি ক্রে কিছ তাহা করিলে অহন্ধার ছাড়াইয়া क्षिनादत्र अठी रच ना, व्यवकाद १६८७ जाता नीत्क नाविक्वाचा उद्या इद्या-त्मचाटन निर्-5-**ইত**ি এবং মূদুকা আসিয়া আসাদিগকে আ-অসুণ করে । অভতা এবং মৃচতা অপেকা শ্ৰেকাৰ ভাল বটে, কিন্তু তাহা বলিয়া ভাহা त्य नर्ताच्दन ভान छार। न्दर। धकरितक दिसन प्रकात कार्ट्यात छेदशानक, जात এক দিকে তেখনি ভাছা কাৰ্ষেব সংহাৰক। আমরা আপুনার কৃত কার্যা মনে মনে রোম-ছন করিয়া যতটা স**নয় ন**প্ত করি, ততটা गमर मरकार्या वार कतित्व वात्मक कुल ফলিতে পারে। ''আমি করিতেছি'' এ জ্বা-वर्षि चार्यादनः स्टबांस्ता यद् । क्रम थारक, **७७रे काब जान एव** ; जात, वजरे जारा षागामत हरकत माग्रत पाषित्र। माजात, उठहे जागातित र्न छैत्मनात्क जाङ्गाल एक्निया जागारमय हेर्डिमिक्ति सीचा क ইউরোপে শাধারণ-তন্ত্র ভাচলিত করিবার জন্য যে হতে নেপোলিয়ন বিশ্ব-বিজয়ী মন্ত্রপূত অদি ধারণ করিয়া-ছিলেন—অবশেষে তিনি দেই হস্তে আপ্ৰ-नात्र मुख्दक ताक-मूक्छे आद्भाशन कति-লেন,—ইহা কিরূপ কার্য় ? হায় ! নেপো-নিয়ন এবং তাঁহার মূল অভিযন্তির মধান্তলে **घरकात्र तथ उत्या नाविज् उ १रेगः डाहाव** कार्वा-निष्कित अक्कातिह सन विषरण क-विश पिन । धेर नक्न प्रिश षश्कात्क প্ৰাপ্তায় দিতে মুকলেজু ৰাজির সভর্ক হওয়া উচিত। যশোলিপা মংকার্যের একটি এ-বল উত্তেজক—ইহা ধুবই সভা, কিন্তু তাহা বলিয়া ভাহাকে স্বান্ত্র্চিত কার্যোর মূল উদ্দে-প্রাম্থ শাস শ্বাধকার করিতে দেওয়া কোন-मध्यक के किन्द्र स्व में । विकाद (यमन अक

্ব হিদাবে মূল্য আছে এক হিদাবে কোন ेमुनाई नाहे, १८-१३ ७ ठिक् ८महेक्स । अक ৰুন রবিন্ধন্ জু**্রেরে নিকট সহ**তা মুড়ো পুৰিক এক মৃষ্টি বান্য সহত্ৰ গুণ মূল্যবান,— निक्राता लेगतारवर्षी वर्गक्तिक निक्रे महञ-যোজন ব্যাপী য়ণ অপেক্ষ তিল্প্রাণ ने प्रमुख्या महस्र छन म्लावान्। ट्यमेंन ८०८६त लूडि-मॉयक यामा-मामञी নহে, দশও দেইব্লুল হৃদয়ের পুষ্টি-সাধক व्यव नरहा अकेशर्रे भागांद वांस्टक विशूष्टे नटर,—दुवनन मश्मात-कृष्णित হওখালেই উভয়ের **যত কিছু** মাহালা। য়ৰখা বাজি টোককে সং দৃষ্টান্ত প্ৰদৰ্শন করিয়া সংপণে এরও করিতে পারেন বলি-য়াই ঘশের এন ুসহিনা; -নতেং যশকে ুক্তেই সৰ্ব্লেক্তিরা: আনেনও নাই বেং, সঙ্গে बहुत्री बाहित्वन अना। धराध है यान तक न বাক্তির কোন অসাধারণ ক্ষমতা বা সকাণ থাকে তৰে লোকে তাহা জানিলে ভাল হয়. কেননা তাহ। হ**ইলে দে** সাগাৰু বা ক্ষমতা জ্বা গ্রাস্থ্য হইয়া বিফলে যায় না—লোক-मुस्ति वार्डियेंड यह हिं शहर शहर शहर बहिन्दे इंटन्ड जादनक्ला - १३ शास्त्रे घटनड সার্থকতা। যশ বল, খনতি-বল, মান ম্যাদ্র वल, मरल्डरे जाशनाव अवर अत्नाव नक्रन-नाधरनको काराहे व्यावनाक, चार्यात व्याद्धा আপনাকে প্রতিধিষিত দেখিবর জন্ম নছে। অৰ্-মূপ্ৰ ব্যক্তি বসিয়া বসিয়া লোহার সিয়ু-ক্রে টাকায় ডাকায় আপনার প্রতিবিদ্ধ অব-्रवादन करतन, "आगिष्टे ईहात्र सागी" এই তত্ত্বটি খাবলে एन করেন। যদঃকৃপণ ন্যাক্তি ৰসিয়া ব্যাপনি কৰে কি কাৰ্য্য করিয়াছেন ও ততুপল্কে কলে কোন্ সংবাদ পত্রে কি বলিয়াছে, তাহাতে স্থাপনাকে প্রতিবিধিত দেখেন,—দেখেন বেঁ ঐ কাগ্য-ন্ধলির আমিই কর্তা। বিশ কিছু মন সামগ্রী

নহে; বশের লাহাব্যে তাবান্ এবং ক্ষমতা-বান্ ব্যক্তিরা আপ্নাদের গুণ এবং ক্ষমতা দ্র দূর দেশ পর্যান্ত অনেকের মনে উদো-ধিত করিয়া দিয়া পৃথিবীর অনেক উপকার সাধন **করেন—আরো করিতে** পারিতেন গদি অহস্কার সন্মুখে আসিয়া তাঁহাদের মুন অভিনিধিকে আড়াল করিয়া না দাঁড়াইত। गः नद मन्त्रारथ यथन बरकात्र व्यामिता जनीहे মঞ্জ কার্সেরে পথ রোধ করিয়া দুওায়মান इ. उथनरे कांशा शांख मात्र (भारहा , পৃশিবীর মহাক্সারা স্বীয় কার্ষাকে দুর্বীক্ষণ করিয়া তাহার, বধা দিয়া ভাষা মঙ্গলের রাজ্য প্রত্যক্ষ করেন<del>`</del>সে রাজেন তিনি **আ**পনার-নাম দেশিতে পানৈ না—সেই জ্বাম দেখেন ষিনি ''নামরূপের নির্বাহক্তা"—হে নাম িরকালই আছে এবং চিরকালই থাছিবে,— प्रेयद्र(थ्रमी वाक्ति मृद्या-काल्व एव नाम সদয়ের ভিতর করিয়া লইয়া য়াইতে পাবে ; কিন্তু যে বাজি আপনার কার্মকে নার্না ক্রিয়া ভাষাতে কেবল আপনারই নাম দেখিতে থাকেন, তিনি কি দেখেন ? দৰ্শণে ফুৎকার দিলে ভাষাতে যে এক রত্তি খেমবের সঞ্চার হয় ভাহাই দেখেন—ভাহা কিছুই नदर । 📲

আনানের মন রদি র্থা অহলারের রাজ্য ছাড়াইয়া ঈশর-প্রেমের রাজ্যে উথান করিছে প্রের, তবে এমন একটি নিরাপদ কুল প্রাপ্ত হর হেথানে মিখার তরক পৌছতে পারে না। সেখানে ইন্টিরাতিগ এবং নিরহন্তার সভা আনাদিশকৈ আলিক্ষন করিবার জন্য ক্রেড় প্রশারিত করিরা নিছের। এখানে আমরা ইন্টিরের বশবর্তী হইরা বে কোন কার্য্য করিছের বশবর্তী হইরা বে কোন কার্য্য করিছের। তাহাও আমরে আনে না, অহলারের বশবর্তী হইরা বে কোন কার্য্য করিছ তাহাও আন্তর্তী আমরে আনে না, অহলারের বশবর্তী হইরা বে কোন কার্য্য করিছ তাহাও আন্তর্তী বাবের আনের আনের বাবের কার্য্য করিছের বশবর্তী হইরা বে কোন কার্য্য করিছের বশব্যা করিছের আন্তর্তী হার্য্য করিছের কার্য্য করিছের বশব্যা করিছের আন্তর্তী হার্য্য করিছের কার্য্য করিছের আন্তর্তী হার্য্য করিছের কার্য্য করিছের বশব্যা করিছের আন্তর্তী হার্য্য করিছের কার্য্য করিছের আন্তর্তী হিন্তা বিশ্বার কার্য্য করিছের আন্তর্তী হার্য্য করিছের কার্য্য করিছের আন্তর্তী হার্য্য করিছের কার্য্য করিছের কার্য করিছের কার

করণে, বিশুদ্ধ অভিপ্রায়ে বে কোন কার্যা করি তাহাই দেখানে পৌরিতে পায়। সত্য यथन हिन्ता नवागन साकिएक विकास করিবেন বে, তুমি চিরস্থারী আমাকে ছাড়িয়া কণভারী ইন্দ্রিয়স্থকে সার স্থরিলে ইন্দ্রি-পরারণ বাজি তাহার কি উত্তর प्रिटव ? किছूहे ना। मजा यथन **अह**काती বাক্তিকে জিজ্ঞাসা করিবেন যে তোমার কিই ্রমন বিজ্ঞতা—কতদিনকার বহুদর্শিতা যে, তুমি আমাকে ছাড়িয়া তোমার আপনার বুদ্দিমত্তাকে সার করিয়াছ! তোমার বুদ্দি কতটুকু—তোমার বল কতটুকু—তোমার জ্ঞান অভিয়োছে কভটুকু সময়ের মধ্যে— তোমার পরীক্ষার আয়তন সৌর জগতের কত**্**টুকু অংশ—অংকারা ব্যক্তি ইহার ফি উত্তর দিবেন ? কিছুই না। কি ইঞ্যাদক্ত ব্যক্তির মুখন্বগ্ন—কি অহস্কারের স্বক্পোল-কল্লিভ স্বপ্রধানতা—সত্যের নিকটে উভরের কাহারো এক কড়াও মূল্য নাই। মূল সত্য हे ि द्वारा विभी चूठ नहर, मृत गठा हे लिया তিগ; -- মূল সতা কোন বাজি-বিশেষের মনঃকল্পনার বণী হুত নহে, মূল সত্য অভি-যানশুনা। অভএব এ কথাটি অভীর সভা বে, ইলিয়াসজি এবং **অহ্**কার ছাড়াইয়া না উঠিলে কোন-প্রকারেই ঈশ্বয়প্রেমের नागान भाजरा याहरक भारत ना।

নকল শান্তেই বলে যে, মনঃসংযম করা ঈশর-সাহিধ্য-লাভের একটি প্রধান উপায়। ননঃসংযম করিতে হইলে মনের ছুই দিকে দৃষ্টিপাত করা আবশাক — কামনা বাসনা ও প্রার্থিত করা আবশাক — কামনা বাসনা ও প্রার্থিত করা আবশাক — কামনা বাসনা ও প্রার্থিত করা আবশাক — কামনা বাসনা ও দ্বন করিবার্মন্ত্রেক লক্ষে মনে, এই যে এক ক্ষান্ত উপন্তিত হয় বে, "আমি প্রয়ত্তি দমন করিভেডি" এই অক্যান্তিক্ত সমন করা উচিত। ইত্রিকাস্তিক সাক্ষার ওবো- হাড়াইরা উঠিলে ওবেই সন্ত্তণের নির্মান আকাশ প্রাপ্ত হু হয়। যায়; – সেইখানেই আমার সতাং জানমন্তং ত্রমোর সামিধা উপস্কি করিতে পারি।

স্বরের তেম্ময় সাহিধ্য আমাদের অন্তঃ-করহনর শান্মনি। তাহাতে विषय लाममा नास्त्र रहेग्रा यात्र. जरुकात প্রেমকে আপনার সিংহাসন ছাভিয়া দিয়া আপনি তাহার কিন্তুই ইয়া কর্যোড়ে এক-পাৰে দণ্ডায়মান হয়। उथन जागाटनत কার্য্য আর একরশ হইয়া দাঁড়ায়। তখন আমরা আমাদের ঠিক অধিকারটি বুঝিতে পারি, ও সেই অধিকারটির ভালরূপ সন্ধ্যব-হার করিয়া ক্রমে ক্রমে উন্নতির দিকে অগ্র-मत हेहै। वे इंटेतान हेळ्या मकल लाटकदहे আছে কিন্তু সকল লোকের অধিকার কিছু वाद भगान नट्ट। घरुक्षाती वाजिन्माजुर মনে করেন যে, আমি সকল অপেক্ষা বড়; ডন্কুইক্ নোট্ **মনে করিতেন যে, আমা**র মত বীর-পুক্র আর জগতে নাই,—কেহ বা মনে করিতেন হে, আমিই ঈশরের প্রিয়তম প্ত্ৰ-সন্মুদী জাতি মনে করেন যে, পৃথিবীস্থ মনস্ত জাতির **মধ্যে আমরাই** একা কেবল ঈশরের মনোনীত,—এ তো কেবল জনের জনের মনের কল্পনা, কিন্তু সতা কি ? সত্য যাহা ভাহা অতি অন্দর,—ভাহা এই ;— मकल माहकत्रहे अस अवहिं एविकात निर्मिह আছে, সে অধিকার কার্য্য-ছারা বাড়ানে! कर्गात्ना हात्। जैयत-त्यात्मत त्रीय ভাগ্যবান্ পুরুবের হৃদয়কে স্পর্শ করিয়াছে, জিনি আপনার অধিকারের মধ্যেই সেই জেমোচিত কার্য্য করিয়া রাজ্যধিরাজ অর্পে-কাও আপনাকে কৃতহাহ্য যনে করেন---আপনার অধিকার উত্তরেন বরাতে তিনি এক বিশৃত স্থাৰ্থ দেখিতে গা'ন না। লোকে ভাহাতক বড় বলুক বা মা বনুব তিনি আপ-

বার অধিকারের নথে। চিত্ত স্বাবহার করিয়া

কারাই তিরি সাহরের দিকে অপ্রসর হ'ন।

কার্যাহাকে ব্রুপ্রেনিতে নিজেপ করিয়া

হেন তিনি সেই শ্রেণীর পরীকা উত্তীর্ণ

হইলেই স্বর তাঁহাকে আপনি উচ্চ শ্রেণীতে

উঠাইয়া দেন, —এ বিষয়ে আর সন্দেহমাত্র নাই।

**७** । একমেবাদিতীয়ং।

## কাজের লোক কে ?

(বালক হইতে উন্ত)

আজ প্রায় চার-শ বংসর হইল পঞ্জাবে ভলবন্দী প্রামে কালু বলিয়া একজন ক্ষত্রিয় বাবসা বাণিজ্য করিয়া খাইত। তাহার এক ক্রেন নানক। নানক কিছু নিতান্ত ছেলে-ক্রেম রহে। তাহার বয়স হইয়াছে, এখন কোথায় সে বাপের বাবসা বাণিজ্যে সাহায্য করিবে তাহা নহে—সে আপনার ভাবনা লইয়া দিন কাটায়, নে ধর্মের কথা লইয়াই থাকে।

কিন্ত বাপের মন টাকার দিকে, ছেলের
মন ধর্মের দিকে— স্কুতরাং বাপের বিখান
হইল ও ছেলেটার দার। পৃথিবীর কোন কাজ
হইবে না। ছেলের স্কুশার কথা ভাবিয়া
কালুর রাত্রে খুম হইত না। নানকেরও যে
রাত্রে ভাল খুম হইত ভাহা নহে, ভাহারও
দিনরাত্রি একটা ভাবনা লাগিয়া ছিল।

বানা যদিও বলিতের ছেলের কিছু হইবে
না, কিন্তু পাড়ার লোকের। তাহা বলিত
না। তাহার একটা কারণ বোধ করি এই
ইইবে যে, নানকের ধর্ম্মে মন থাকাতে পাডার লোকের বাণিজ্য-ব্যবসার বিশেষ ক্ষতি
হয় নাই। কিন্তু বোধ করি ভাহারা নানক্রেক্টোরা নানকের ভাব দেখিয়া আন্চর্যা
ইকাছিল। এনক কি নানকের নামে একটা
নাল রাই আছে। গ্রুটারে সভ্যানর দৈ

चात्र कारारकश्च नानाक करेद ना। जत्त्र, লোকে যেরপ বলে ভাছাই লিখিতেছি। একদিন নানক নাঠে সক্ল চরাইতে গিয়া गोट्टर छनात्र व्यारेश পड़िशाहितन। मूर्ग अन्छ वाहेदात ममग्र नामरकत भूरथ द्वाप লাগিড়েছিল । তুনা ধায় না কি একটা কালোঁ সাপু নানকের মুখের উপর ফণা ধরিয়া রেফ্ আড়াল করিছাছিল। সে দেশের রাজা সে সময়ে পথ দিয়া হাইতে-ছিলেন-তিনি নাকি খচকে এই ঘটনা দেখিয়াছিলেন। কিন্তু আসরা রাজার নি-(खत गूर्थ এ कथा छनि नारे—नानक७ कथन এ গল্প করেন নাই—এবং এনন পরোপকারী দাপের কথাও কখন তুনি নাই-ত্রনিলৈও বড় বিশ্বাস হয় न।।

কালু অনেক ভাবিয়া স্থির করিলেন নানক খদি নিজের হাতে ব্যবসা আরম্ভ ক-রেন তবে ক্রমে কাজের লোক হইয়া উঠিতে পারেন। এই ভারিয়া তিনি নানকের হাতে किছू होक। फिल्म--विशा फिल्म- "अक গাঁয় লুণ কিনিয়া আর এক গাঁরে বিজয় ক-বিয়া আইন।" নানক টাকা লইয়া বালসিকু চাকরকে সঙ্গে করিয়া লুগ কিনিতে গেলেন। **এমন गमरा পথের মধ্যে কভক্তলি ক্রি-**Cतत गटक नानहकत (मर्का कहेन । मानदकत गत्न वर्ष जानमा हरेन कि शिन जिल्लन এই ফকিরদের কাছে ধর্ণের ক্রানির। नहेंदन। किस्नुकारक निया वर्षन जीवा-দিগকে কথা জিজাসা করিলেন তথ্ন তাহানা কবার উত্তর দিতে পারে न।। তিই দিন ভাहात बाहिए शाह नाहे अमि एक्तन हरेश शिशाद दे सूच मिशा क्या मदद ना। नानत्कर गटन वर्ष महा दरेका किनि काण्ड हरेश छोहात होकरदक वितत्तन "बानान वाल किंद्र मारका अन्य अनिद्धा हारीब বাৰণা কৰিছে হয়। কৰিয়াকৈন। ক্ৰি

नाटिं होता कि कि निर्मा के हैं छूँ।
हेर उप होता थार्ट का माना के है छूँ।
हेर उप होता थार्ट का माना के है छूँ।
हेर उप होता थार्ट का माना के है छूँ।
हेर उप होता थार्ट कि की मान के हिम्म का कि है जिस्स का कि हो कि कि मान कि कि कि का मान कि है जिसा कि हिम्म कर कि हो था कि है जान के हिम्म हिम्

তাহার পরদিন নানক বাডি ফিরিয়া আদিলেন। কানু জিজ্ঞাদা কবিলেন "কত লাভ করিলে?" নান্ড ব)ললেন "বাবা, আমি গরিবদের ধাওয়াইয়াছি। এমন ধন লাভ হইয়াছে সাহা চিরকাল থা-কিবে।" কিন্তু দেরূপ ধনের প্রতি কানুর বড় একটা লোভ ছিল না। **স্থত**রাং দে রাগিয়া ছেলেকে মারিতে লাগিল। नगरत्र रम कार्पराभित कूक त्राका भथ मिन्ना ৰাইতেছিলেন। তাঁহার নাম রায়বোলার। मानकरक मात्रिटक ८पथिया जिनि चरत श्रीतम कतित्वम । विकामा कतित्वम "कि इह-রাছে? এড় শোল কেন্?" যথন সমস্ত রাপার ভনিলেন তখন তিনি কানুকে খুব করিয়া তিরস্কার করিলেন। বলিলেন "আর বদি কৰ্ম নানকেই গায়ে হাত তোল ত পেৰিতে পাইবে।" এমন কি রাজা অত্যন্ত जिल्हा महिक नान्कत्क क्ष्मार्ग कतितन। मार्क बरन ति, वयन नाम बानकरक धाउ। রিরাছিল তথ্য রাজা ভাকা দেখিয়াছিলেন वर बनार नोगरका उन्हें होशात यह छाँहा

হইরাছিল। কিন্তু সে সাপের ছাতায়রা সমস্তই ওঅব—আসল কথা নানকের সমস্ত রক্তান্ত শুনিয়া রাজা ব্রিতে পারিয়াছিলেন বে নানক একজন মস্ত লোক। নানকের উপর আর ত মারখোর চলে না। কালু অন্য উপায় দেখিতে লাগিলেন।

জয়রাম নানকের ভগিনীপতি। পাঠান দৌলং খাঁর শদেরে গোলা অনুরামেব জিল্মান ছिল। कान् खित कतिराम नानकरक छ **জ্বরামের কাজে লাগাই**য়া দিবেন—ভাহা रहेल करा नानक कारकत लाक रहेश। ঠবেন। নানকের বাপ যথন নানকের কাছে এই প্রস্তাব করিলেন, তখন তিনি বলিবেৰ "আছো।" এই বলিয়া নানক স্থলতানপুরে জয়রামের কাছে গিয়া উপ-স্থিত। **সেণানে দিনকত**ক বেশ কাজ করিতে লাগিলেন। সকলের উপরেই ওাহার ভাল-বাদা ছিল এই**জ**ন্য স্থসতানপুরের সকলেই ভাহাকে ভানবাসিতে লাগিল। কিন্তু কাজে যনু দিয়া নানক তাঁহার আসল কাজটি **ज्रुटनन नारे, जिनि नेयदात क्या मर्क्सनारे** ভাবিতেন।

এমন কিছুকাল কাটিয়া গেল। ' একদিন

সকালে নানক একলা বনিয়া ঈশানের ধ্যান

করিতেছেন, এমন সময়ে একজন মুসলমান

ফকির আসিয়া তাঁহাকে বলিল—"নানক,
তুনি আজ-কাল কি লইয়া আছ বল দেখি '
এ নকল কাজকর্ম ছাড়িয়া-দাও। চিরদিনের

যে বঙ্গার্থ ধন তাহাই উপার্জনের চেঙ্গা

কর।"—কির ঘাহা বলিলেন তাহার অথ

এই বে, ধর্ম উপার্জন কর—পরের উপকাল

কর—পৃথিবীর ভাল কুরু—ঈশারে মন দাও—

টাকা রোজকার করিয়া পেট ভরিয়া খাওয়ার

চেয়ে ইহাতে বেশী কাজ দেখে।

ক্তিরের এই কথাটা হঠাৎ এমনি নান-কের মনে লাগিল, যে ডিনি চমকিয়া উঠি- শেন, ফারুরের মূথের দিকে একবার চাহিয়া দেবিলেন ও মৃত্তি ত হইয়া পড়িলেন। মৃত্ত্ব ভারিতেই তিনি গরীব লোকদিগকে ভারিলেন ও শদা থাহা কিছু ছিল দমস্ত ভারাদিগকে রিলাইয়া দিলেন। নানক আর বরে থাকিতে পারিলেন না। কাজ-কর্ম সমস্ত ছাড়িয়া দিয়া তিনি পলাইয়া গেলেন।

ি নানক পলাইলেন বটে কিন্তা অনেক লোক তাঁহার সঙ্গ লইল। বাঁহার ধর্মের দিকে এত টান, এমন মধুর ভাব, এমন মহৎ পভাব, তিনি সকলকে ছাড়িলেও তাঁহাকে मकल छाएँ नः। गर्पाना छाँदात मान গেল, দে বাক্তি বীণা বাজাইত, গান গা-লেনা ভাঁহার সঙ্গে । গেল। খে পুরাণে। চাকর বালসি**লু ছেলেবেলা**য় নানকের সঙ্গে লুণ বিক্রম করিয়া টাকা লাভ করিতে গিয়াছিল আজও দে নানকের সঙ্গে চলিল। এবারেও বেলে করি বিঞ্ছি ধন-नारजब जाना हिन, किन्छ (४-(म धन नव, गकन धरनत आर्छ रव धन रगहे वर्ष्त्र । त्राम-माम् व बावकरक छाड़िएड शाहिल वा-डाहाद বয়স বেশী হইয়াছিল বলিয়া সকলে ভাছাকে বলিত বুড্চা। আর কত নাম করিব, এমন ভৈৱ লোক সঙ্গে গেল।

নানক ষথাদাধ্য সকলের উপকার করিয়া
সকলকে ধর্মোপদেশ দিয়া দেশে দেশে
বেড়াইতে লাগিলেন। কিনু মুনলমান সকলকেই তিনি ভালবাসিতেন। হিন্দু ধর্মের
বাহা দোব ছিল ভাগও তিনি বলিতেন,
মুনলমান বর্ণের বাহা দোব ছিল ভারাও
তিনি বলিতেন। অথচ হিন্দু মুনলমান সকলেই ভাছাকে ভক্তি করিত। নানক আমান
লেই ভাছাকে ভক্তি করিত। নানক আমান
লেই বাহালা দেশেও আসিরাছিলেন। শিবমাড়ু বরিয়া কোন এক দেশের রাজা নানা
লোভ কেথাইয়া নানককে উচ্চত দিবার

एहे। <del>विद्याद्भिता । श्रीकृति</del>नक छाहारए ভূলিবেৰ কেন ? উটিয়া হাজাকে তিনি धर्णात निर्देश में जा हिंदन । स्त्रीत्रन न खाउँ বাবরের দক্ষে একবার নানকের দেখা হয়। गत्मावे नानरकत्र नायुक्ताव प्रिचिशा नखडे इहेश তাহাকে বিশুর টাকা পুরস্কার দিতে চাহিয়া-हिटलन, किन्छ नानक छोड़ा लहेटलन ना-তিনি বলিনেন "মে কুগদীখন কুল লোক্ৰে অন দিতেছেন, অনুগ্রহ ও পুরস্কার আমি তাঁহারই কাছ হইতে চাই আর কাছারো काटह हाई ना।" नानक यथन मकाञ्च (वड़ा-ইতে গিয়াছিলেন তথন একদিন তিনি মদ্-জিদের দিকে পা করিয়া ঘুমাইতে ছিলেন। তাহাই দেখিয়া একজন মুদক্ষানের বড় রাগ হইল। যে তাঁহাকে জাগাইয়া বলিল— "তুমি কেমন লোক হে! ঈশবের মন্দ্রিরের দিকে পা করিয়া তুমি ঘুমাইতেছ !" নানক বলিনেন ''আছো, ভাই জগতের কোন্-मिटक केंगेटतत सम्मित्र नार्हे **अक्**रात (मथा-ইয়া দাও।" নানক লোক ভুলাইবার জন্য कान यान्ध्या कोमन दनवाहेश क्यरना অপিনাকৈ মন্তলাক বলিয়া প্রচার করিতে চাহেন নাই। গল্প আছে একৰাৰ কেহ কেহ তাঁহাকে বলিয়াছিল—"আচ্ছা, তুমি যে এক-जैन यस नाधू-जागामिगुरक अवद्या कान णाक्षा वालोकिक यहँनी स्था । '' নানক বলিলেন "তোমাদিগকে দেখাইবার रशाना चामि निष्कृ चानि का। चानि কেবল পবিত্ৰ ধৰ্ণের কথা আছি আর কিছুই जानि मा, जेनत गुज, मात्र सम्बद्ध का मारी

নানক অন্তের দেশ বিদেশে ভারণ কুনিয়া দেশে বিদ্যালয় সভারতী বিভাগ হই-দেশার প্রথম বিভাগ তিনি সকলকে প্রোদ্ প্রকর্ম বিভাগ তিনি কোনার প্রাণ কিছুই নাল্লিজ্য কোন বিভাগ ক্ষাক্ষা বিভাগ তেনি সম্ভাগ কর্ম কর্ম কর দাও, অন্য সকলের দোৰ মার্জনা কর, সকলকে ভালবাদ। এইরূপ সমস্ত জীবন ধর্মপথে থাকিয়া সকলকে ধর্মোপদেশ দিয়া সত্তর বৎসর বয়সে নানকের মৃত্যু হয়।

কালু বেশী কাজের লোক ছিল কি কালুর ছেলে নানক বেশী কাজের লোক ছিল মাজ তাহার হিসাব করিয়া দেখদেখি! আজ যে শিখজাতি দেখিতেছ, যাহাদের হুন্দর আঙ্কৃতি, মহৎ মুখন্তী, বিপুল বল, অদীম সাহস দেখিয়া আশ্চর্যা বোধ হয় এই াশখ্জাতি নানকের শিষ্য। নানকের পূর্কে এই শিখ্জাতি ছিল না। নানকের মহৎ ভাব ও ধর্মাবল পাইয়া এমন একটি; মহৎ প্রাতি উৎপথ ইইয়াছে। নানকের ধর্ম-শিক্ষার প্রভাবেই ইহাদের হৃদয়ের তেজ বাড়িয়াছে, ইহাদের শির উন্নত চইয়াছে, ইইাদের চরিত্রে ও ইহাদের মূথে শহুৎভাব ফুটিয়া **উঠিয়াছে। কালু যে টাকা রোজ-**গার করিয়াছিল, নিজের উদরেই তাহা খরত করিয়াছে, আর নানক যে ধর্মধন উপার্ক্তন করিয়াছিলেন খান্ত চার-শ বৎসর ধরিয়া মানবেরা তাহা ভোগ করিতেছে! কে বেশী কাজ করিয়াছে।

## সমালোচনা।

The Interpreter. Edited by P. C. Mazumdar.

রাজসনালের মত ব্যাখ্যা করিবার উদ্দেশ্য প্রসমনে

বলদেশে এই ইংরাজি মাসিক পতিকার আবির্ভাব

হইরাছে। ব্রাহ্মনাল বিজিন্ন হওয়াতে রাজদিগের

মতের অনৈরাই সকলের চকে পতিত হইতেছে,

তাহাদের মধ্যে বে স্বস্তীর-ইকা রহিয়াছে তাহা

কেহ আলোচনা করিতেছেন না। এই পতে ব্রাহ্মনালের সেই করা বারাক্ষ্মনালার করা হইবে। কালাছের ব্রাহ্মনালার স্ক্রমনার স্ক্রমনার বিশ্বাহনের ব্রাহ্মনার স্ক্রমনার স্ক্রমনার বিশ্বাহনের ব্রাহ্মনার স্ক্রমনার স্ক্রমনার বিশ্বাহনের ব্রাহ্মনার স্ক্রমনার স্ক্রমনার বিশ্বাহনের ব্রাহ্মনার স্ক্রমনার স্ক্রমনার ব্রাহ্মনার ব্রাহ্মনার স্ক্রমনার স্ক্রমনার ব্রাহ্মনার ব্রাহ্মনার ব্রাহ্মনার স্ক্রমনার ব্রাহ্মনার স্ক্রমনার ব্রাহ্মনার ব্রাহ্মনার ব্রাহ্মনার ব্রাহ্মনার ব্রাহ্মনার স্ক্রমনার ব্রাহ্মনার ব

মূৰ তাহাই এই পজের বালোচা, বাহা কিছু গৌন **ও ব্যক্তিবিশেবগত** তাহা পরিষার করা বাইবে। যাহাতে ভাদ্মসমাজে সর্বভোভাবে গামল্লস্য হাপিত হব. তজন্য টেষ্টা করা হইবে। যে সকল ভ্রম ও বিদ্বেশভাব থাকাতে ত্রাহাসমাজের উপরে ব্রুফের বিষ্ণা ভেয়াতি বিকিরণের বাাঘাত দাধন করিতেছে: সে সমত প্রাভূত केत्रिय्रो देशका और भद्रवन सहान् शका हहेरत। आमता প্রার্থনা করি প্রতাপ বাবুর এই ওছ সহর সিদ্ধ দয়। প্রথম সংখ্যক 'ইণ্টপ্রিভির'' প্রের প্রবন্ধভিনি অব্দর হুরাছে, ইহাতে সম্পাদকের সন্তদরতার পরিচা পাওম। যাইতেছে। ইহার দকল লেখার সহিত আমা-**দের মতের ঐকা হয় নাই। কুদ্র কুদ্র অনৈকা ভ**লির উল্লেখ कृतियात श्रांतकक नाहै। क्विन National Christianity অর্থাৎ স্বজাতীর গৃষ্টদর্ম নামক প্রবস্ত मध्यक्ष व्यामारमञ्ज्ञे भेज दाख्य कितिष्ठि । वृदेशमा अदः खना गा **नकल धर्यारे अभन खरनक कथा खा**हि, सारा সকল জাতি সকল ধর্ম সম্প্রদায়ই প্রার্থ করিতে পাছে। দেবতাকে ভক্তি করা, সত্য কথা বলা বা শ্রোপকার कत्रो, এश्वनि कान धर्मावित्मस्यत्र विस्मयत्र नरह। National Christianity বলিতে যদি প্রতাপ বাবু পৃষ্টধর্মের এমন কোন অংশ বা ভাবের প্রতি লক্ষা क्षित्रा थोटकन, यांश्री आमारमुत्र एएटम व्यामारमत জাতির মধ্যে নির্মিরোধে আহা হইতে পারর, আমা-एनत [क्रमरत गशस्यदे अिण्डां हम, उटन तिहे आः म-मातारक पृष्ठिभर्य नाम मिश्रा वहिएक भारत ना। युष्ट-ধর্মের ষাহা মূল বিশেষত্ব তাহাই প্রাকৃত খুইধর্ম, ভাষা कथनहे आयोप्पत्र अकाठीह रहेट्ड शास्त्र ना। यिश्व খুটের বক্তে সমস্ত মানবজাতিব পাপ ক্ষাণিত ১ইয়া ৰাওয়া এবং এই উপায়ে ঈশবের ন্যারপরতা চরিতার্থ १७वा, वि७वृष्ठे**रक** अवनंत्रम कविता केवरतंत्र निका উপনীত হওয়া, এই ধুইংকোর মূল মঞ্চা এ ভাব **সামাদের বজাতী**য় ব**দি**য়া গ্রান্ত হইতে পারে না। সামাদের ন্যারপরতার আদর্শ বতর।

এক: একামতে জন্তরেক এব প্রলীয়তে। একে বিশ্বস্থাকে প্রকৃত্যেক এবড় হস্তং। प्रकारी महता समाज्ञ कर्ता ( ( क्यो के हि प्रव हर्त । प्रकार है जीव एशक्त (क्यो करत धना क्यो के की के श्रूष्ट कर्न हजान करता" अठधर आमारत १४ किक प्रकार करता है हिस्स श्री हरें ( क्यो जा मा।

শামানের শানে আছে—শাসোনান্তউপরতন্তিতিক্ট শনাহিত্যে ভূজা আখ্যক্তবাকানং পঞ্জি ।—

তিত হইয়া আপনাতেই পরনাতাকে দেশেন।" অভ্যান আমনা কেবল উথন-প্রেদ্ধ আত্তাভাবে ভাঁহাকে আহি হইতে পারি, দিতাল কোন বল বা রাভিকে সমার্থী ক্ষিণাব আব্যাক নাই।

> তনেৰ বিশিষাতিমৃত্যু মেতি " নামঃ পছা বিদ্যুতেহয়দাণ

ং "তাহাকেই জানিয়া সাধক মৃত্যুতক অভিন্তম করে. মৃতি প্রার্থির আর অন্য গণানাই।"

অতএব পৃত্তিশ্ব সহক্ষে আর বাছাই বলা হউক্
ইহাকে অভাতীয় বলা থাইকে পারে লা। ভৃতিদর্শের
যে সকল মতা আমাদের অহণীয় ভাষা কিছুপ্রেও আছে
অভানব শে কিনারে হিন্দ্রপ্রিক ও পৃত্তিশাকেও হিন্দ্রপ্রিক প্রক্ষে
স্বল অইনকা অক্ষেত্তই হিন্দ্রপ্র বাহত গৃত্তব্যের
প্রাধিকা চ্টারহে।

সম্পাদক সহাশর এই প্রবাহে লিখিয়াছেন "উল্লেড
কোনি একেরা যে প্রকৃত গৃইধন্মের মত্য প্রহণ ও পারিপাক করিয়াছেন তার্বরে কোন সন্দেহ নাই।" প্রতাপ
বাব্ স্ট্রনার যে প্রতিজ্ঞা করিয়াছেন যে, "এই প্রত্ন
রাহ্মসমান্তর ঐক্যের উপরেই প্রাতিষ্ঠিত হইবে" উল্লিড
ভিত্ত কি অবন্ত দে ক্থাইই ডেছে বা, নাে
ভানি না, আমন্তা এই প্রয়ত্ত বলিছে গানি কা আমন্তা
লানি না, আমন্তা এই প্রয়ত্ত বলিছে গানি কা আমন্তা
লানি না, আমন্তা এই প্রয়ত্ত বলিছে গানি কা আমন্তা
লানি বাক্ষসন্তা আস্থাৎ (assimilate) করেন
লানি বাক্ষসন্তা আম্বাহ (assimilate) করেন
লানি বাক্ষসন্তা আম্বাহ (ক্রিল্ডের প্রতিজ্ঞান
লানি বাক্ষসন্তা সাম্বের সম্পাদকের উল্লিভ অস্তত্ত
লিজিক কিন' প্রের্টিই এই ভাল ইন্সেক্তর
আন্তান করিব নিহি এই ভাল ইন্সেক্তর

### THE CHARGE STATE OF THE REAL PROPERTY.

সভাপতি।

कीयुक्त वाजमात्राप्रग रस्

व्यक्षात्रकः।

জীযুক্ত দেবেক্রনাথ ঠাকুর (পাতুরেবাটা)

- " नीनमनि हर्छान्।शास
- ,, दिनाताम हाम्राभागाः
- , সাজানান মুখোপাধাায়
- , रैं इंबर्ग्स वत्मााभाषाद्व
- " कोनीकृष्णं हुछ
- ,, नेनानहक म्यानावाम
- ,, वेयगीरमाइन ठट्ढीशायाङ्ग
- ,, শত্যপ্রসাদ গ্রেলাগার
- ,, এীনাথ মিত্র
- " দিপেশ্রনাথ ঠাকুর
- প্রেয়নাথ পান্তী
- 🚁 প্রসমকুমার বিশাস্থ
- , वदीत्समाम ठाक्त

শঙ্গাদক। শীযুক্ত দবীক্রদাপ ঠাকুর

नरकाडी राजाक्य के ब्राह्मका । वेश्वक जीनकान इंट्रॉडिंग शिवास

antification of the time. The relativity state

श्वरवासिमें शिवस्था गुरुष्ठी हरूपार विश्वरूप रश्यक्त विकास



# তত্ত্ররোধিনীপত্রিকা

क्षकारकसिद्मयचासीक्षात्र्यत् विक्षवासीसिद्दं सर्वमस्कत्। तदेव निर्श्वकामसनमां शिवं समसक्तिर्वयवसेकसेवाविसीयः सर्वन्यापि सम्बेनियम् सम्बोनयसम्बेनित् सर्वमित्रभूतं पूर्वसप्रतिमस्तितः एकस्य तस्येतं।पासन्याः स्वापित्रकोष्टिकस्य अभयन्ति । तस्यिन् त्रोतिसाग्र विस्वास्य सम्बन्ध सद्धानन्येत् ।

## অতিথি।

মরমে মরমে মেখে বহে জল
মেগ তা ভাবিয়া আনে না,
প্রাণে প্রাণে গুরে রয়েছে মুক্তত
দে সন্ধাদ সে তো জানে না।

শত রশ্মি রবি না পাইত যদি
সে কি তা ভাবিয়া আনিত্
বিস্তৃতাগ্রি নাহি বহিলে মরমে
বিস্কৃতি কি নিম্নে চকিত ?

কেন দদীপূরে সলিলে সাগর নদীরে যোগার কেইবা, যাহে গাহে ফুল, ফুলে ফুলে ফল ফালে কানে আনে কেইবা।

বার কা সমেতে কে ভাষা পোরেছে ু যাইনে যা পাইনে, স্থীতি, আধান ভাষনা ভাবে না ভো কেউ ক্ষায়েত ইয়ানা অভিনি

के के ब्रह्म के कार्य के कार्य के के ब्रह्म के किए के कार्य के कार्य এ তত্ত্ব নিগুড় করিলে, স্মরণ ্র আনন্দ উথলে মরমে।

আৰু আত্মযোনি অৰিতীয় এক ভাবেন বিশ্বের ভাবনী, অকাম আপনি পরের লাগিয়া রাখেন মঙ্গল কামনা।

মুন পাড়াইয়া নকলেরে যিনি আপনি থাকেন জাগিরা থেতে দিয়ে মুখে রস্নায় দেন মধুর আস্বাদ আনিয়া। '

ভারি প্রেম স্থবা হয়ে বিক্ষিত
যার যা অভাব পূরিছে,
ভারি পুঢ় প্রেমে মগন সবাই
আপন ভাবনা ভুলিছে।

## আদি ব্রাদ্মমাজ।

৫ ই জ্যৈষ্ঠ রবিবার ৫৬ ব্রাক্স সক্ষৰ ।

শাস্ত্রির উপদেশ।

শাস্ত্রীয়ার সহিত আমাদের অবিচেছন্য

দেই সম্বেট আমত। অবিন্দর

ি निया আমাদের পরিচর দিতে গারি। াহা আমাপের, তাহা প্রশায়া ছাড়া কোণা হইতেও আসিতে পারে না। विहिर्विशा-इहेरिङ भेक म्यांन क्रिश तम ग्रेस আসিতে পারে; আর আমাদেশ নন ষধন -সম্যক্রপে ভাহাদেরই অধীনতা স্বীকার করে তথন আমরা বহিবিষয়েরই দল-ভুক্ত হইয়া যাই—তখন আর আত্মা বলিয়া আমাদের পরিচয় দিতে পারি ন। যখন আমরা পর্মান্তার অধানতা ভীকার করি তথনই আমরা প্রকৃত রূপে আলা হই,—সেই আত্মা —যাহার উপরে কালের কোন হস্ত নাই— মৃত্যুর কোন হস্ত নাই। কোন নৈয়াগ্লিক যদি হঠাৎ শুনেন, যে, প্রমান্মার ক্ষীনতাই আত্মার স্বাধীনতা, তবে তিনি হয় ও বলি-বেন ষে ও কথাটি অতি অগম্ভত, -পরের অধীনতা কেঁমন করিয়া আপনার অধীনতা इष्टेंदं - साधीनका इष्टेंदा ! जिनि जातन ना যে, পরমায়া আমাদের পর নহেন, বরং আমরা আপনারা জনেক সময়ে আমাদের পার হট -- যথন বহিবিষয়ের প্রলোভনে মুগ্ধ হট্য়া তাহাতে আমরা আত্ম-সমর্গ করি— তাহারই জীত দাস হই তথন ছাত্র আমরা আপ্নার থাকি না, তথন আম্বা নিতান্তই আপনার পর হইয়া দাঁড়াই—তথন আনা-দের স্বাধীনতা কুত্রিম স্বাধীনত!—দে স্বাধী-নতা ছদ্ম-দেশী প্রাধীনতা-তাহাকে বলে সেচ্ছাচারিতা। প্রকাশ্য শক্র **অপ্রেক্ষা ছ**দ্ম-(वनी कथारे बन्नाक समन अविक छत्र कता উচিত, সেইরূপ প্রকাশ্য পরাধীনতা অপেকা ্**ছদাণেশী** কুত্রিয় সাধীনতাকে অধিক ভয় করা উচিত। ইবরের অধীনতা কেবল नार्यरे भन्नाधीनज-काटक ষাণীনতা। ভক্তিভাজন পিতার অধীনতা কি পুত্রের স্বাধীনতা নহে, প্রিয়ত্স স্বামীর স্বীন্তা र्विक खीज साथीनेका नरह—त्व बरम रा, खाहा

পরাধীনতা ? ভক্তিভালন পিতা কি প্রের পর, প্রিয়তম সামী কি পরীয় পর :—তবে আর ভাহা পরাধীনতা কি একারে ? অন্তর-ত্য প্রযান্ধা কি আত্মার পর্য়য় প্রেমাম্পদ नरहन;—"তिनि পর" এ কথা कि মুখে चानि-বার যোগা। অতএব ইহা ধ্রুব সতা যে, পর্যাত্মার অধীনতাই আজার স্বাধীনতা। বহিবিষয় আ্যাদের মঙ্গল প্রদান করে—প্রমাত্মা আমাদের কার্যোর সহায়তা প্রদান করেন,—কে আমা-দের পর-বহির্বিষয় না পরমাত্মা ? বহির্বি-যয় আমাদের চক্ষে প্রলোভনের ধূলিমৃষ্টি নিক্ষেপ করে—পরমাত্ম। আমাদের জ্ঞাননেত্র ফুটাইয়া দেন, তক আমাদের পর – বছি-. বিষয় না প্রমাজা ? বছিবিষয় আমাদের হস্ত-পদ বন্ধন করে – পরমাত্মা আমাদিগকে মুক্তি দেন,—কে আমাদের পর—বহিবিষয় না পর্যাত্মাণ কেহ বলিতে পারেন যে. ''বহির্বিষয় যদি এতই আমাদের পর—এতই অনিষ্ট-জনক, তবে তাহা না থাকিলেই তো छाल इहेंछ ?" এ कथा कांत्र कारबंद कथा নহে। বহিবিষয়ের যদি কোন প্রয়ো**জনই** লা থাকিউ-ভেবে ঈশবের সমল-রাজে কথ-নই তাহা স্থান পাইতে পাঁরিত না 🎼 ৰহি-বিষয়ে প্রয়োজন এই বে, পাষরা ভাষাকে আত্মার বশে আন্তর্ম করিয়া আত্মার বল-বীগা সাধন করিব,—এ নতে যে, আমরা তাহার অধীমভায় মস্তক পাতিয়া দিব। বহিবিষয়কে যত আমহা আত্মার অধীন ক~ রিতে পারিব, পরমাত্মা-হইতে ভড়ই আমিরা সাধীনতা প্রাপ্ত হুইৰ প্লায়, খত আমরা আত্মাকে পরসংখ্যার ক্ষাধীন ক্ষারিটোরিব, ততই আমরা বহিবিবরকে আৰু বনীভূত করিতে পারিক। এ কথাটি ভার করিয়া क्षारम गामक कमा चुन्नगासून

সকল আত্মাই পরমাত্মা হুইতে সাধী-

নতা প্রাপ্ত হইতেছে, দেই সাধীনতাকে যিনি যত কার্ষো খাটাইয়া ফল ফলা'ন, তিনি ঈথরের নিকট হইতে তত অধিক পরিমাণে স্বামীনতা পাইনার যোগা; দ ঈথর যিনি সাক্ষাৎ ন্যায়ম্বরূপ ভিনি কথন উপযুক্ত ব্যক্তিকে উপযুক্ত কল লাভে বঞ্চিত করেন না; দেয় কেহ তাঁহার প্রদত্ত স্বাধীনতাকে রীতিমত খাটাইয়া বহির্বিষয়কে আত্মার অধীনে আনয়ন করে, তাহারই তিনি স্বাধীনতা রন্ধি করিয়া দেন, তিনি সাক্ষাৎ সম্বন্ধ তাহার আত্মাতে স্বাধীনতার সম্বল রন্ধি করিয়া দেন, ও তাহার অলক্ষিত-ভাবেশ্বাহার স্বাধীনতার ক্ষেত্র বৃদ্ধি করিয়া দেন।

विश्वित (कवन (य, विश्वी वाक्तिवह ভোগে আমে, ঈশর-প্রেমী বাক্তি যে বহি-বিষয়ের ভোগে বঞ্চিত, তাহা নহে,—বরং তাখার বিপরীত। বছিবিষয়েতেও **ঈখ**র-·প্রেমী ব্যক্তি পরমান্নার গুতিরূপ অবলোকন করিয়া পরম আনন্দ উপভোগ করেন কিন্তু তাহা প্ৰতিৰূপ-মাত্ৰ। অনুপম পূৰ্ণ পরমায়ার কোথাও উপমা নাই। তথাপি. পুষ্প যথন প্রস্কৃটিত হইয়া পূর্ণত। লাভ করে, তখন সেই ক্ষণিক পূর্ণতাতে ত্রেক্সপরায়ণ ন্ধাক্তি পর্যাত্মার অসীম চিরস্থায়ী পূর্বভার ছবি অবলোকন করেন; পণ্ড পক্ষীরা যথন পূর্ণ ঘৌবনে হ্রতথে সঞ্চরণ করে, ত্রুন তা-হাতেও তিনি পরবান্তার অসীম পূর্ণতার শতিস প্রভাক করেন,—মনুষ্-সমাজের टिंग क्यां निर्मा । समुया-ममाद्य राथन তিনি কাহাকেও এই ব্রিটের দৃষ্টান্ত-সর্রূপ দেখিতে পাল যে, "তিনি যুবা, তিনি সাধু যুবা, তিনি আশিষ্ঠ ফচিষ্ঠ বলিষ্ঠ'' তথন তিনি পরকান্তার পূর্ণতার আবির্ভাব দেখিয়া কত না মানদ লাভ করেন। পুৰুপ প্রভ পক্ষী প্রভৃতির বৌধনের পরেই পূর্বভার पारमान हत, मणूटरान छोड्। नरह ; नमू-

ব্যের আত্মা অনন্তকাল পূর্ণতা-লাভের অধি-কারী, সাহা কিছু আকার-বিশিপ্ত তাহার পূর্ণতার অস্ত আছে—আক্লার পূর্ণতার অস্ত নাই। পৃথিবীর রদ প্রেপতে পূর্ণতার मकात करत, शृथिबीत मना कीत-मंतीरत পূর্ণতার সঞ্চার করে,—সে পূর্ণতা কিয়ৎকাল দ্ভায়মান থাকিয়াই আবার মেই পুথিবীতেই বিলীন হইয়া যায়। মনুদোর আত্মাতে সয়ং পরমাত্মা পূর্ণতার সঞ্চার করেন – সত্য: জ্ঞানমন্তং একা মনুষের অ:আর চিরস্থায়ী সম্প,—অনন্ত কালের উপজী-বিকা। মনুযোর আন্থার পূর্ণতা-লাভেদ অন্ত নাই! মনুষা যদি আপনার উচ্চ অধিকাব অবপত হুইয়। মনুষ্যোচিত কার্যা, করে ও মনুষ্যোচিত আনন্দ উপভোগ করে, তবে পৃথিবী তাহাকে আর ধরা-শায়ী ক-রিতে পারে না, তবে, জ্যোতির্মায় আত্ম मूक्ति चानत्म छेथान कतियां-भेतवकातक আশ্রয় করিয়া—প্রেম-ভক্তি-রদে আদ্রেছি-ইয়া–সেই দৃতন জীবন প্রাপ্ত হ'ন– যাহা মৃত্যু**র পরপারে** অবস্থিতি করে।

হে পরমান্ত্রন্থ আমরা সংগার অক্ষকারে অসহায় হইয়া পাড়িয়া আছি তুমি আমাদিগকে জ্যোতিতে লইয়া যাও—আমরা অসত্যের মোহজালে জড়িত হইয়া পাড়য়া আছি
তুমি আমাদিগকে সভ্যেতে লইয়া গাও;
আমরা মৃত্যুর রাজ্যের অভান্তরে বাস করিতেছি তুমি আমাদিগকে অমৃতেতে লইয়া
যাও! তোমাকে ছাড়িয়া আমাদের জীবন
জীবন্ত মৃত্যু,—তোমার প্রেম্ময় সাহিধাই
আমাদের জীবন! আমাদিগকে সংগারসকট হইতে উদ্ধার কর—তোমার ম্থাজ্যোতি আমাদের অভন্তকে অনারত কর!
আমাদের ক্রে আলা তোমার পূর্ণভা ধারন
করিতে অসমুর্থ কিন্তু তোমার অবলম্বন না
পাইকে আমাদের গতি নাই; তুমি আমা-

দিগকে আশ্রয় না দিলে আর কে আমা দিশকৈ আশ্রয় দিরে — কে আমাদের এমন আশিনার যে, আমাদের আত্মার অভাব মো চল করিবে; তোমার এক বিন্দু মুখজ্যোতি আমাদের আত্মাতে নিপতিত হইলে আমা-দের রোগ শোক জরা-ব্যাধি ভয় বিপত্তি সমস্তই চলিয়া যাইবে তুনি আমাদের কু বিত আত্মাকে আশ্রয় দান কর— এই আমা-দের গ্রার্থনা।

ওঁ একমেবাদিতীংং।

### সোণায় সোহাগা।

সমাজ-সংস্থারক দিগের, এই এনটি সহজ সত্ত্যের প্রতি, সবিশেষ প্রণিধান করা কর্ত্তব্য যে, সভ্য **সমাজ মাত্রই ভাল মন্দে জ**ড়িত। পৃথিবীতে এমন কোন সভ্য সমাজ নাই যাহার যোলে৷ আনাই মন্দ কিন্দা যাহার যোলো খানাই ভাল। কোন সভ্য মথু-ষোরই এমন কোন দায় পভিতে পারে না যে, ভাছাকে জাঁহার হজাতীয় সভ্যভার ষোলো আনা মন্দ বলিয়া পরিত্যাগ করিতে হইবে, ও আর-এক জাতায় মভ্যতার যোলো আনা ভাল বলিয়া গ্রহণ করিতে হইবে। এককালে ইংলণ্ডে নৰ্মান জাতির ৰত বভ প্রতাপ ছিল। নর্ম্মানেরা মনে করিত তাহা-্**ঁদের** আগলাদের রীতি নীতি যোলো আনাই **डान ७ मार्मन ही छि-मीडि यान जानाहै** यन। किस करंग कि दिया गाम १ तिया ्यात्र स्य देश अटनत काण्डिकत छेशानान चिर-কাংশই সাক্ষন্ - তাহার উপর কিছু কিছু -করিয়া করাসিস্রঞ্নের প্রলেপ দেওয়া আহৈ মাত্র। দর্শন-শান্ত্রে "পঞ্চতুতের পঞ্চীন করণ' বলিয়া একটা যিশ্রণ-পদ্ধতি আছে,— ৰে কোন ভুত হউক্ না কেন (যেমন জল কিমা বার) ভাহার নিজের আট আনা ও

অর্ণর চারি ভূতের প্রতিটেকর দুট আনা চুই जाना कृतिया हाजि-छ्छर्त जांके जाना- এই पुष्ट आष्टि जानांत्र मश्हणात्म त्य मेमार्थ छेर शह হয় তাহা পঞ্চীকৃত ভূত বলিয়া উক্ত হয় (যেমন পঞ্চীকৃত জল পঞ্চীকৃত বায়ু, ইত্যাদি); তেমনি ই॰রাজি সভাতাকে বলা ঘাইতে পারে যে, তাহা পঞ্চীকৃত সাক্ষন সভাতা। ইংরাজি সভাতার আট আনা সাক্ষন এবং অবশিপ্ত আট আনার তুই আনা লাটিম্, তুই আনা গ্রীক্,ডুই আনা ফরাসিস,ও ডুই আনা क्लिहे। भाक्षम् भूल छेलामान, हेश्हां क সভ্যতার কেন্দ্র বা পত্তন ভূমিকে এমনি বল-পূর্ব্বক কাম্ভিয়া ধরিয়া আছে যে, ভাছাকে রাজবংশের দিক দিয়া ফরাসিস্-টানিয়াছে, শর্কবাজকের দিকদিয়। লাটিন গ্রীক্ টানিয়াছে,, আদিম নিবাদার দিক, দিয়া কেল্টু টানি-য়াছে, – কেণ্ট ভাছাকে কেন্দ্ৰ-ল্ৰষ্ট করিতে পারে নাই। নর্মান্কক্ষ্েস্টের গ্রন্থকার ফীমান্ বলেন;—"ইংলও-বিজয়ের সঙ্গে সঙ্গে नर्मारनता वार्शक द्रकरमत এक देवरमिक অনুপান সমভিব্যাহারে আনিয়াছিল, তাহা এরপ যে, কি 'আমাদের শোণিক, কি আঘাদৈর ভাষা, কি আমাদের রাজ-নিয়ম, কি আন্তিদর শিল্প, কিছুরই উপর ভাছা স্বীয় প্রভাব বিস্তার করিতে ক্রেটি করে নাই; কিন্তু তাহা ঋনুপান বই আন কিছুই नरें ; भूकी जन पृष्ठत भूल देशोगानशिल, তবুও, অবাাহত-রূপে টে কিয়া ছিল এবং অনেক প্রকার ধাকা সাম্লাইয়া চরুমে সে-গুলি আবার আপনাদের প্রাধান্য বলবৎ ক-'রিল।\*'' অর্থাৎ সাক্সন্ মূল উপাদান কিয়ৎ-

The Norman conquest brought with it a most extensive foreign infusion, an infusion which affected our blood, our language, our laws, our arts, still it was only an infusion; the older and stronger elements still survived, and in the long run they again made good their supremacy.

কাল ভ্যনে থাকিয়া আবার ভাষা স্কীয় गश्यात्र প্রাতুত্ छ इहेल। देश्तारकती स्वमन স্বজাতীয় সভাতার মূল উপাদান গুলি অব্যা-রাখিয়া ভাহার ग्रा ক্রিয়া অপর-জাতীর সভ্যতা সরূপে মিশাইরাছে; আমরা যদি সেইরূপ পদীক্রণ পদ্ধতি অবলম্বন করি, তাহা **रहेटन, थूरहे जान** हा,—जाश ह**हेटन जा-**মাদের স্বজাতীয় সভাতার ক্ষেত্রের উপর হইয়া তাহাকে শতগুণ উর্বারা করিয়া তুলে, তাহাতে—সোণাম লোহানা হয়; नहि, यनि प्रकारोत मर्छाटोद मगुरु है छेड़ाईँ हा पिया অপর কোন-জাতীশ্র সভাতাকে তাহার হলা-ত্রিবিক্ত করিতে যাই, তবে আমাদের দেশের भगा-भानिन। छैर्काता ভूমिक तमाछल निशा ভাষ্য भाग हि यना तित्नत करिन मृहिका ছাৱা ভৱাট্ কৰিবাৰ **জনা** র্থা আয়া**স পাই** মাজ, তাহাতে **–হিতে বিপরীত হ**য়

এছ্ও নাড-দি-কন্কেশর একজন সাক্সন রাজ। ছিলেন, কিন্তু ভাহার মন ছিল— मन्त्र्री क्राप्तिम्। क्रीयान् क्रीस्त्र मसद्क এইরূপ বলেন; "এছ্ওমার্ড, সঞ্চানেই হস্তক্ जीत जब्हारनर रहेक्, नर्गार्गानरगत विकासत পথ আরো নিকট্ট করিতে দাবদাসুনারে कि किर्दर्ग नाई। क्रम्पा छक्र-भ्रापद वा লাভের যেথানে যে-কিছু প্রাপ্তবা স্থান সম-ত্তই বিদেশায় লোকের দারা ক্রমান্ত আধ-कुछ इहेंड एन्या हेश्ताबरम्ब हरक अल्लान পাওয়াইয়। ঐ বিপ ভাট ভিনি ঘটাইয়া-नर्पावितरत्र कड्ड देश्नल-वि-बरात मुक्लाड अञ्ख्यार्ड स्ट्रेट्ट स्ट्रेगा हिन।" \* बहैक्रल (त्या याहरण्ड (य,

\* Edward did his best wittingly or unwittingly, to make the path of the Norman still easier. This he did by accustoming Eng-

এডওমাড-দি-কন্ফেদর ইংলতের বিভীষণ **ष्टिलन्। नर्जान्-कर्क्**क हुर्ल्छ-वि**ष**्टरत्न मूल्हे ছিলেন তিনি; তাঁহার মন্ত্রী গভওয়াইন **আর-এক ধাঁচার লো**ক ছিলেন বলিয়া— ভাই-যা' একটু রক্ষা! कीगान् दलन,— "প্তওয়াইন্ যে, সমস্ত ইংরাজি ভাবেব প্রমাণ-স্থল ছিলেন, তিনি যে, সমস্ত জাতীয় আরন্তোদ্যমের দ্যেতা ছিলেন,তিনি যে,তাপ-<del>শ্লার অসাধারণ গুণ-গৌরবে অস্ততঃ ভাচা</del>র ইউরোপীয় সভ্যতার রাদান্থনিক সার প**ন্তিভ**্র-নিজম্বভূমির প্রজাদিশ্বকে মোহিত করিয়াছি-লেন, ইছা যার পর নাই স্কুম্প্র প্রমান দারা **স্থিরীকৃত হইয়াছে।**" \* এখানে এই কুতি **হাদিক হতান্ত**ি **উ**ল্লেশ করিবার ভাৎপর্যন क्वितन बहेि दिशादमा दय, लामता, এए उला-তের ন্যায় বিবেশের টানে পড়িয়া স্বস্থাতি **रहेरछ छिन रहेना माज़ाहेरन जामारमत रम** भारत कान उपकार है आभित्व भारत मा, লাভের নধ্যে তাহার পতনের পথ জারো পেশল ও প্রশস্ত করিয়া দিব। গছু এয়াইনের নায়ে, স্বজ্বাতীয় সভ্যতার পত্তন-ভূমি দুচরূপে রক্ষা করা আমালের প্রথম কর্তব্য; তাহার উপরে অন্যান্য পার্থবর্তী নানাজাতীয় সভ্যতা माधूद्वात्र माञ्च यथाकात्म घथात्म्य यथा-পরিমাণে ধীরে-স্থান্থে নিমবেশিত করিতে পারিলে একটি সর্বাঙ্গস্থলর সভ্যতা আমা দের দেশে আবিভুকি হইতে পারে,—তাহ। হইলেই শ্রুত প্রকে সোণায় সোহাগ। ২য়। এক ব্যক্তির জ্বনয় খুব প্রশস্ত, কিন্তু

> lishmon to the sight of strangers enjoying every available place of honor or protecting the country: \* \* \* With Edward then Norman computer really begins."

<sup>.</sup> That Godwine was the representative of all English feeling, that he was the leader of every national movement, that he was the object of the despest admiration of the men at least of his own earldom, is proved by the clearest of evidence.

তাঁহার কোন কিছু করিবার ক্ষমতা নাই; আর-এক ব্যক্তির হৃদয় অভীব সংকীৰ্ণ, কিন্তু ভাষার ক্ষতার দোড় অনেক দূর পর্যান্ত ;— ুনদি পূৰ্ব্বোক্ত নাজি শেযোক্ত বাভিব ক্ষমতা পা'ন কিয়া যদি শেষোক্ত ব্যক্তি পূৰ্মোক্ত ক্তির হৃদয় পা'ন, তবেই সোণায় সোহাগা হয়। আনুদের দেশের শক্তি ইংরাজ রাজ-পুরুষদিগের পদতলে এবং আয়াদের দেশের स्मग्र जागारम्य स्वाचीय श्र्वश्रूक्यम्रित्व\* পদতলে বাধা রহিয়াছে। আনবা যদি হদে-শের হৃদয়, স্বন্ধতির স্তাতিত্ব, অবাংত রা-খিয়া ইংরাজ-শক্তি আত্মদাৎ করিতে পারি, তবেই আমাদের দেশের হৃদয়ের উগর শক্তি প্রতিষ্ঠিত হইয়া সোণায় সোহাগা করিয়া তুলে; কিন্তু যদি আমরা আমাদের দেশের হৃদয়ের মূলোৎপাটন করিয়া ইংরাজ-শক্তিকে তাহার হলাভিষিত্ত করি, তবে যে শাখায় আমরা উপনিষ্ট আছি সেই শাখা আমরা সহস্তে কর্বন করি ৷ আম্বা জামাদের মুল অাঁকড়িয়া ধরিয়া থাকিলে হদি বা ঝঞা বায়ুর তাড়না হইতে রক্ষা পাইতে পারিতাম— আপনাদের মূল আপনার। উত্তেদ করিয়া আনতা ভাহার সম্ভাবন। পর্যন্তে নিল্পপ্ত করিয়া ফেলি।

এক্ষণকার নব্য মহলে 'চাই নৃত্ন—চাই
নৃতন' "কই নৃতন—কই নৃতন "এই নৃত্ন—
এই নৃতন' বলিয়া এক তুমুল বব উঠিয়াছে, —
ভানেন না যে, পুরাত্র ঠেম্ না দিলে নৃত্ন
এক মুহূর্তও দাঁড়াইয়া থাকিতে পারে না দি
লোড়া না থাকিলে কি জাগা থাকিতে পারে না দি
ইতিহাসে কি দেখা যার ৪ দেখা যার যে,
পুরাতন ভিত্তি-ভান সমলে উত্যুলন করিয়া
"নৃতন" বখনই ভূস্ বরিয়া মাধা তুলিয়াছে,
তাহার পরক্ষণেই তাহা টুস্ করিয়া জলগর্ত্তি
বিলীন হইয়াছে। স্পান্তই দেখা যাইতেছে বে,
আমানের দেশে বৌদ্ধ ধর্মের পতন ও ফ্রা-

সিস্ দেশে সাধারণ-তক্তের পতন ঐ কার-বেই ঘটিয়াছিল। অনুমুকে ছাটিয়া কৈলিয়া বৃদ্ধিকে অতিমাত্র মার্চ্জিত করিতে গেলেই ঐরপ হিতে বিপরীত হয়। বৌদ্ধ ধর্মের ভিতর অনেক ভাল ভাল রত্ত আছে;করাদীস্ বিদ্রোহীদিগের মধ্যেও অনেক ভাল ভাল রত্ন ছিল,—কেবল একটি রত্নের অভাব ছিল, নেটি—হানয়। বৌদ্ধ ধর্মে, আত্ম-সংযম তপ্ৰাণ কঠোৱত। প্ৰভৃতি ধৰ্মের জন্য ধাহা यां हा हो है, नमल्ह है आहह, — त्कवन वक हिन অভাবে সমস্তই ভণুল হইয়া গোল, – সেটি ভগবন্তজ্ঞি ব। ঈশর-প্রেম। ফরাসীস্ বিদ্রোহী-দিগেরও ঐ দশা হইয়াছিল। ধ**র্ম্মের** ্গাড়া কাটিয়। আগার জল-সিঞ্চন করিলে তাহা হইতে কিই-আর অধিক প্রত্যাশা**করা যাইতে** পারে ৪ কদর যদি গেল তবে তথু শভিতে কি হইতে পারে ? এক্ষণকার নব্য সমাজ সদয়-শূন্য শক্তির এমনি ভক্ত হইয়। উঠিয়া-ছেন থে, দামান্য দামান্য গার্হস্থা বিষয়েও ভাঁহাদের মনের ক্ষতি বিবাদ ধরা প**ড়ে।** যদি একণকার কোন একটি স্থসভা নবা উদ্যানে গুবেশ কর, তবে হৃদয়-স্লিঞ্কারী মাধুর্যোর भारत के मास्त्रिक-मत्रमकाती छेडिम्-७ (खुत्रहे সবিশেষ প্রাত্মভাব দেখিতে পাইবে। थात्म विश्वकाल विष्ठत्रं क्षित्ल, क्रूँहे, त्वल, मलिका, शक्तताब श्रःष्ट्रिक संगक्ति स्ट्लित बना তোমার মন দীর্ঘ-নিশ্বাস পরিত্যাগ করিবে-वफ़ वफ़ लार्टिम् नामधाती शक्तरीन तक् दहाटक ফুল তোমার চকুশুল হইবে ও তাহাদের বড় বড় নাম তোমার কর্ণুল হইবে 🖟 তখন তুমি ক্রেটিন্ রুক্তে সম্বোধন করিয়া বলিবে 'হায়! ক্ৰেটিন রক্ষা ভূমি পু**রু জন্ম ক**ত না তপদা করিয়াছিলে এই উদানে, প্রীথ-কালে জুই বেল গদ্ধরাত্ব প্রভূতি কত কুলই প্रकृष्टि रहेड छाराता उनाहनत किनम् ন্দান করিত ও ক্লা-বিকে মুহুর্কে বৃদ্ধুর গীতন

তাড়াইয়াছ! বৰ্ষাকালে কুদন্ত কেতকী সে-কালিকা নব-বারিধারার প্রাণ পাইয়া উঠিয়া দোরভের **মধুরো** দিক্ আমোদিত করিত, তাহাদিগকে তুমি ভাড়াইয়াছ 🖋 শরৎকালে প্রফ্রুটিত কামিনী কুলে রক্ষের আপাদ-মস্তক ভরিয়া উঠিত, ও তাহার মধুর স্থপন্ধ জ্যোৎসা-বোত প্রাদাদ-বাভায়ন ছাড়াইয়া উঠিয়া ছাঃ পৰ্যন্ত মাতাইয়া তুলিত, তাহাকে তুমি তাড়াইয়াছ,—ধন্য তোমার ইংরাজি পরা-ক্রম ! বিদেশী রক্ষ দার। উদ্যানের বৈচিত্র দাধন কর—তাহার বিরুদ্ধে আমরা একটি কথাও গণিব ন। — কিন্তু পোনেরো আন। পদ্মহীন বিদেশী ফুল-গাছের একধারে পড়িয়া अक याना अधकी (मनी कुल (ए. **७३) विलग्ना** ছঃপের গীত খ্রুক করিবে দে, "এবার মো'লে ক্রেটিন্ হ'ব'' ইছা আমাদের প্রাণে সহ্য হয় ना ! यागास्टर मखना कथारि अहे (य, छनात्न, জুঁই, বেল, মলিকা, গন্ধরাজ প্রভৃতি স্থগন্ধি পুষ্পা-রক্ষ ক্রীতিমত সংস্থাপন করিয়া ভাহার সম্পে ষথাস্থানে যথাপরিমাণে ইংরাজি পুজ্প-রুক্ষ সাজাও, কিম্বা আন্তা কাঁটাল বট অখণ তাল নারিকেল এভৃতি ফল-পুষ্প-ছায়া-এদ রক্ষ-সকল যথারীতি সংস্থাপন করিয়া তাহাব স্কে (এদেশে ধাহা আজিও হয় নাই) ওক্ অ-লিব্ সাইপ্রেস্ প্রভৃতি নানা-দেশীয় নানা রক্ষ, উপায় আবিকার-পূর্বকি, যথান্থানে যথা পরি-মাণে বসাও—ভাহা ছইলে সোণায় সোহাগা হইবে; কিন্তু যদি ওকের খাতিরে বট-অবস্বকে দূর করিয়া দেও, অথবা প্রাবেরি, পিয়ার, এবং আপেনের খাতিরে আন্র কাঁটাল আতা-প্র-ভৃতিকে দূর করিয়া দেও, তবে তাহাতে হিতে বিপরীত হইবে, একুল-ওকুল-চুকুল নই इहेर्द !

পুরাজনের ভিত্তি ভূমির উপর কিরাপে নুতনের ইল-পদ্ধন করিতে হয় তাহা পিকা

হইবে না, আমাদের আপনাদের দেশেরই স্বৰ্ণীয় সহাত্মার — রামমোহন রায় প্রভৃতি সমাজ-সংস্কারকের। - আ্যাদিগুকে তা্হার প্রকৃষ্ট পদ্ধতি স্থন্দররাপে দেখাইখাট্ছন। **डाँहोता हिन्दू-निर्माह्यत** मध्यातक हिटलन, পর্ম-হিতৈষী ছিলেন, উচ্ছেদ্রক ছিলেন না তাঁছারা স্বজাতির হীনতা সূচক কুসংহার श्विहे रक्वन यानिरङ्ग मा, उन्हिन, दनगम করিয়া শ্বজাতির জাতি-গৌরব রক্ষা করিতে হয়, তাহাঁ ভাঁহার৷ উত্তমরূপে বুনিতেন। উঁহাদের একজন স্থবিখ্যাত ব্যক্তিকে সুখন ইংরাজেরা বড় বড় টাইটেল্ দেখাইয়া ফাঁদে কেলিবার চেষ্টা করিয়াছিল্ল, তখন তিনি তা-হাতে অস্বীকৃত হইয়া বলিয়াছিলেন-

টাইটেল্ আমার আছে তাহা অপেক্ষা উচ্চতর টাইটেল্ তোমগ্র আমাকে দিতে পারিবে ন।। এই ষে উপবীত দেখিতেছ—ইহার সমকে রাজারা পর্যন্ত মস্তক অবনত করে!" বেক্সণ ফলাইবার জন্য তিনি যে, ুঁঞ্জ কণা বলিয়া-ছিলেন, তাহ। নহে—তাঁহার ও-কথার অর্থ এই যে, আমরা আপনাদের দেশের পিতৃ-পুরুষদের নিকট-হইতে যে উপাধি গ্রাপ্ত হইয়াছি তাহাই আনাদের নিকট পূজা,--তোমর। আমাদের কে যে, তৈরামাদের নিকট হইতে উপাধি পাইয়া আমরা আপনাদিগকে শ্লাঘান্তি ননে করিব গ

একণে আমাদের দেশে ইংরাজ-বাপা-लिंद्र गर्था मामा-द्रका विलश अकरे। कथा উঠিয়াছে; কিন্তু কিরূপে সাম্য-রক্ষা করিতে **रत्र — श्वामार्**मत **रमरमंत्र श्राक्त श्राह्म स्वार**क हे তা**হা জানেন। সাম্য তুইরূপ**,(১) ভার-সাদৃশং, (২) আঁকার-সাদৃশ্য, আকার-সাদৃশ্য এক তো **অসম্ভব, ভায় আবার, ভা**হাতে কাহারে৷ কোন প্রক্ষার্থ, নাই; অথচ আমাদের দেশের সাম্যা-ভজেরা প্রায়ই বাহ্য আকার-সাদৃশ্যের

প্রেবে মজিয়া আর্যজোতি-স্থাভ এক্সরিক **ार्नाम्याणि , (इन्।**त्र हात्राहितः (केरणनः) है देश क-राष्ट्रा नित गरमा नामा का नि-माएन। फ्**रेकरण पिट्टिंड** शास्त्र - (১) एक्साटब्स्स ধুতিচালর পরিলে ওাছা ধ্রিতে ওরে, (২) বাঙ্গলিরা হল্ট কোট পাণিলে জাল, ঘটিতে 🕈 পারে: এরপুস্থন, ছুলন উচা জালি **गरभा (काम-त्रक छा**छि ५८ छ। अ**ञ्चर**पत काञ्चली इष, उत्तर विन्यू है मोहाबु १३, এক জাতি পরের সাস নাম্যিত প্রেড— **আ্র এক জ**াতি ভান্তে সভাসভাস্ট্র এইরূপ- হাতে হাতে পাওয়া পইতেছে শে, ইংরাজি পরিজ্য পরিচান করেল। पेशिका **देशाज-राष्ट्राणि**त भएक अस्तर भार স্থাপন করিতে যানি, উহিচা হলে টিক্ ভাষাৰ উপ্টা করিও। বদেন,—বাহুণ থাকার-মাদুলা ঘটাইতে গিয়া আন্তরিক ভাক-বৈদা-দুশা জাদ্ধনারপে দমর্থন করেন। আমতা स्ति देश्डाक वाक्राहित भरतः विनेतिकवित्रह मागाः का इन्द्रभोत्रदन्त माना दल-द्रशीक्टगद भाषा, িন্দ-উন্প্ৰেম্ব মান্ত কংখ্ৰক কৰিছে পাৰ্যৱ, ভিত্তি নিৰ্দেশ নিজ্ঞ কাঠেছ নাত কৰি কাই; 化类应 我们看相称 医为后类种的 精囊病 सद्धाः भर्त स्थान् स्थाः । । अस्यान्त्र भागार तह भागार घर मान छ। । प्रभवन वर्ष ২২০% নায় ৷ লা, ওসকল কোটা প্ৰতিলও বা-সালের নিদ্য পুর্তি বিকট উত্র হইয়া উচেতে পাণে নংগা ভাহা হয় যা কাজ**ুও নাই ৷ অত-**ध्व दिन १४. "८९ २१५। निश्च (**एय-विरेप्सी** युवा परीवा वातात भागा मन् हहेरु वर्ष-বাজেই উটাইল ৮েও,—আগ্য জাতীয় ভাক সামোর পণ প্রসম্ভ কর যে, অভঃকর**ের** মহত্ত্ব লাভে পুরুষাথ লাভ করিবে!" এক জন বাস্থালি ভক্ত লোক যদি নিথুভ যোলো আনা ইংরাজ সাজেন, তথাপি দ্রাভাইবে যে, ইংরাজেরা আসল ইংরাজ—তিনি নকল

ইংরাজ। জাপন মর্নে তিনি বোল আন। ইংরাজ ইইতে পারেন,কিন্ত ইংরাজের নিকট তিকি অধ্য বাসালি – প্রসাদের কাসালি– পরিছেদের কাঙ্গালি—অনুগ্রহের কাঙ্গালি— এ ছাড়া আর কিছুই নহে 🔑 ইংরাজেরা যদি অনুগ্রহ পূর্বক তাহাকে অন্ততঃ চারি আনা ইরোজ মনে করে, ভাছা হইলেও কতলটা রক্ষা,—কিন্তু তাহা হইপরা নিছের ইব্রজে সাজিয়া ইংরাজের দলে মিদিতে द्रोत्य — सन्दुन्त्य । छोड्राह्क हेश्बा**ज्या**नवे নিকট এই বলিগা হাত জোড় করিয়া কাঁদিতে ভইবে যে, "নিদেন—, ভামরা আমাদের মান রক্ষা কর।" তিব্যালার বলি যে, এরূপ যা**চিয়া** মান ও কারিয়া নোহাগ উপান্ধন করিতে ५। ७४। । वर्ष १ ता कि - **७:(शाखनरे वा कि** १ दाक्षानित्र किंग्डिट ६४, **याहारक ऋरन**नीय হৃদ্যার সহিত জড়ো জন্মে বিদেশীয় শক্তি-সামর্থ্য সংখুক্ত হইতে পারে ভাছার ভাতি লক্ষা রাপিয়া ফদেশীণ সভা-তার উপরে अस्तरः कार्याः आनः चर निशा नाष्ट्रानः, ख সেইখানে অবিচলিত থাকিয়া বিদেশীয় শক্তি-পুঞ্ (অথার্ বাহ্য আকার-পরিজ্ঞান, भदर किन्न विका त्राक्ष, तल-एश्राक्रम, कार्मा-নৈপুণ কশ্মিষ্ঠতা, ইত্যাদি মনুষ্যোচিত গুণ্ট অল্লে অল্লে আত্মনাৎ করিতে থাকেন,— তাহা হইলে আমাদের জাতি-গৌরবও বজায় খাকিবে, ভদ্রিন আনাদের দেশের মন্তকে ও বাহুতে শক্তির সঞ্চার হইয়া ভাহার মুখঞী নুতন হইয়া উঠিবে, ইহাকেই আমরা বলি--সোণায় গোহাগা।

সতীত্ই নারার প্রধান ভূষণ।

ধন্যা সা জননী লোকে, ধনেয়াসী সনকঃ পুনঃ। ধন্যঃ স'চ পতিঃ ই মান্ যেখাং গৈছে পতিত্ৰতা॥

প্রিত্র উষাহ-পৃথলে আক্র হুইলেই প্রথম সামীয় ও নারী পারীয় লাভ করেন

এবং এই গুরুতর পবিত্রতর সমদ্ধ-ছনিত नक्षमाती शतक्षाक भवस्यादक ध्रथ-मन्भन জ্ঞান-ধর্ম্মোদ্রতির ভার প্রাপ্ত হইয়া থাকেন। সামী ষেম্ম বয়ংকোষ্ঠতা ও বল-শ্রেষ্ঠতা এবং জ্ঞানাধিকা বশন্ত তুর্মম সংসার-পথে সামান্যত পত্নীর স্বাভাবিক নেতা ও উপ-দেপ্তা হইয়া ভাঁছাকে কল্যাণ-পথ প্রদর্শন করেন, স্থানিকতা সাধবী সতী রমণীও সেই-রূপ আপনার সংস্থভাব ও সন্দৃষ্টান্ত এবং পাতিব্ৰত্য-পৰ্দ্মবল-প্ৰভাবে অনেক সংগার-সন্ধটে পতিকে নানাপ্রকার রিম্ন বি-পত্তি হইতে উদ্ধার করেন। সাগী অশি ক্ষিত অধার্থ্যিক অসচ্চরিত্র চ্**ইলে** যেমন ভাষার পত্নীরও প্রভুত অমঙ্গন ও অনিষ্ট-পালের অস্তাবনা, তেমনি পত্না অগতী অস-ক্ষরিত্রা এবং গৃৎ-কার্য্যে **অপটু হইলে পবিত্র** সংসার-অংশ্রণ এককালে অমুথ অশান্তির আলয়, পাপ তাপ অপবিত্রতার আকর হইয়া গৃহ-পরিবারের স্থ-সমৃদ্ধি ভাল-ধর্ম অধিক কি বংশ পর্নন্ত নির্মানুল করিয়া থাকে। **অত**-এব প্রিরভা ভাষাই দংলার আ্শুমের পত্ন ভূমি, পতি-প্রাণা ভাষ্যাই গৃহের গৃহ-লক্ষা। ভাষণাই গৃহত্তের মূল, ভার্য।াই গা-র্ছা স্থাপর কারণ, ভার্যাই ধর্মা ফল প্রাপ্তির নিদান, ভাগ্যাই বংশরদ্ধির হেতু।

ভोरी। मृतः गृहरुमा ভोरी। भूमः स्थमा ७। ভাগ্যা বৰ্মফুলবাজে ভাগ্যা সন্তানহৃদ্ধ্যে ।

कम्पूर्वाण।

দেই পত্তম-ভূমি দুষিত ও কলন্ধিত হ हैतन, महे गृहमध्यी जलक्यी हहेता हिटन, সংসার-আশ্রের সকল স্থ তিরোহিত হ-ইয়া যায়। সম্বর-নিদিও পরিত্র উদ্বাহ-নম্ব ক্ষে ব্যভিচার ঘটিলে, ডাইার প্রভাক দশু-বন্ধপ পতি পত্নী উভয়েরই ঐতিক পারত্রিক শক্ষ প্রকার শান্তি-মন্ধল সুখ-সদসতির খা-

দৃষ্টাস্কের প্রভাবে সমস্ত পরিবারই পাপ-**দূবিত হইয়া পড়ে। পতি**র চরিত্র **দু**যিত **ছইলে গেমন পরিবাবের স্থ-সক্ষন্তা বিদূ-**রিত হয়, তেমনি পত্নী অসংচরিতা বা অ-मठी रहेरन निष्ठ कून भाइ-कून जर एकं-कुन मगुनावरे कनकिए हरेय। याय, अनः औ পতিব্ৰতা হইলে এই তিকুলই উজ্জল হইয়া তদীয় পুণবেলে পরম পনিত্র স্বর্গীয় স্থ্ সম্ভোষে কালাভিপাত করে।

পিতৃ-বংশ্যা মাভূ-বংশ্যাঃ পিতিবংশ্যাস্তর্যিভঃ : পতিব্ৰভাৱাঃ পূণ্যেন স্বৰ্গদৌখ্যানি ভূমতে

इनाश्वाधः

অভএব মর্ব্ধ প্রয়ত্ত্বে নারীগণের চরিত্র রক্ষা করা বিশেষ কর্ত্র। নারীপণ অপ-রাপর দহস্রগুণে বিভূমিতা হইলেও সতীয়-রূপ পরম রত্বের অভাবে জার আর সকল গুণই নিষ্পাভ হইয়া পড়ে। দিগের অম্বন্দেষ্ঠিব জ্রী-লাবণ্য যভই কেন অনুপম হাটক না, তাহার মধ্য হ'ইতে সভীত্বের অয়ভ্যয় জ্যোতি বিফীর্ণ না হইলে নির্গদ প্রস্থার নাায় ভাঁছার। দেব মনুষ্য কাহারও আক্রনীয়া বা পূজনীয়া হয়েন না। একারণ নারীগণ চিন্তা বাকো এবং কার্য্যে সর্ব্বদাই সাধ্বী থাকিবেন। ভ্রমেও কখন পাপ-চিন্তা পাপালাগ পাপামুর্চানে প্রবৃত্ত হইবেন না। সতঃপ্রবৃত্ত বা অনের দারা উত্তেজিত হইয়া কদাত অঞ্ভাব-উদ্দী-পক কার্যাদি দর্শন শ্রবণ বা পঠনে অন্যুরক্ত হইবেন না। যাহাতে নিরবচিছর ধর্মভাব জাগ্রত, ধর্ম-কার্যো মতি এবং পতি ভক্তি

छ करा, स्टर्साफ मर्कामा पृष्टि ताचितन । श्रा (वेबन (मंदरत, ठिक्का (येबन ठटायात, मोनामिनी द्वयन जनएत करगम्ब करत, गांकी मुद्री एडवानि मर्गाइक विम्दिन प्रमू-वर्जिने अपूर्णामिनी इहेरवन। पूर्णागा-খাওঁ হইয়া বাকেন অসৎ কাৰ্য্য ও অসৎ বিজ্ঞানী অথবা অসংচিতাঃ

जननानार्भ व। जन्दकार्रा क्षत्रख हरेल বিনয়নত্র বচনে পত্নী ধর্মাধর্ণেরর ফলাফল পবিত্ৰ-উদ্বাহ-বন্ধন জনিত ক ৰ্বুবাতা কীর্ত্তন করিয়া ভাঁছাকে সংপ্রে সাধুপ্রে व्यानयन क्रिटिंग नर्तना (हरें। वित्रा ধর্মের এমনই প্রভাব, সড়োব এমনই মহিষা, সাধু সঙ্গের এমন্ট দ্ণীয় প্রাক্র যে, শাধ্বী সতী রমণা সহবাদে পাকিলে কাল-क्राय स्राभीतक ज्यमदश्य इट्ट मदश्य প্রভাবর্তন করিতেই হয়। সাধ্রী সভী পতি-প্রাণা নারীর গুণে বত শত দ, দংপতি সং-সভাব লাভ করিয়াছেন, কত শত বিষয়-বিশন্ন আমী পত্নীর সতুপদেশে সম্পদ-সো-ভাগা দোপানে আবোহণ করিয়াচেন, জন-সমাজের মধ্যে এমন সহজ্র সহজ্র জীবিত मृष्टेख वर्षमान द्विहारह। वतानवाहीत। শেমন বলপুৰ্বকৈ গছৱা বিবরাদি ছইতে দর্প भारता कारिया समूरियात कीवन तका करत, সাধনী সতী রমণীগণ পাতিব্রত্য-ধর্ম্ম-বল-প্রভাবে তেমনি অসৎপর্থগামী ণতিকে ীংৰট পাপরূপ যম-কিন্ধরের হস্ত হইডে আকর্ষণ করিয়া সংপণ্ণে ধর্ম্মপথে অর্গপণে অনিয়ন কৰে।

ব্যালগ্রাহী যথা বাংলা নলাল্কনতে নির্বাদন

এবসংক্ষেয় দক্তেকাঃ প্তিং কর্বাং ন্যেব লালা

।

কেবল গৃহে শাস কবিলেই গৃহী হয় ন কেবল দারপরিগ্রহ করিলেই গৃহস্থ হয় ন প্রতিব্রতা পত্নী যাহাব গৃহসক্ষী, সেই মহা

शंक्यः महि विश्वतारा १ मा स्थान अधिकार.

इन्द्रभूत् .

পত্নী সাধনী সভী পতি এলা হইলে উ হার কোনা শুক্রাঘার স্বামীর বলবীয়া বিদ্ধি হয়, আয়ু আরোগ্য লাভ হয়, তাঁহার পকি স্ক্রাদে স্বামীয় চরিত্র আরো বিশুদ্ধ হয়

জ্ঞান-প্রেম আরো উল্লেম হয়, তাহার হাদর কোমল ও পবিত্র হইয়া থাকে। সেই সহ-ধর্মিণীর সহবাদে ধর্ম্মার্মের রক্তি মতি রাজ পায়, এবং ঈশ্বরের श्रीजि-मन्भामत्न ७ তাঁহার প্রিয়-কার্য্য সাধনে আরো ছমুরাগ উৎদাহ ব্দিত হইয়া থাকে! দম্পতির সাধ্ উপদেশ ও সদদৃষ্টান্তে সন্তান সন্ততি, আত্মীয় সন্তন- সকলেরই সত্যেব প্রতি, ধর্ম্মের প্রতি, ঈশরের প্রতি শ্রদ্ধাভক্তি ক্রমশ উদ্দীপ্ত হইয়া উঠে এবং পরলোক ও ব্রমলোকের আভি ক্রমে আস্থাও বিশ্বাস দুটাভূত (হয়। "পত্নী মনোগাক কর্ম-বিজ্বা ও প্রতিব আদেশ অমুবর্তিনী ও সাংবী সভী ঈশ্ববপ্রায়ব। এবং পতি সাধ সক্তরিতা ভ্রম-গত-এ ব ইইলে ধর্ম্ম-সাধনের অবর্থ পুর-স্থার সক্রপ সে বংশে ঈ্থরপ্রায়ণ স্থমন্তানই জন্ম-গ্রাংণ কালে সে কুলে কদাচ আনকাবিৎ অস্পুত্র জগ-এইণ করে না।

''নাগা এক বিৎ কুলে ভবতি''।

মুগুকোপনিষ্ ।

# ব্রামধর্ম-নীতি।

প্রথম অধ্যায়। রিপ্রসংযম। কাঁম

অনন্ত মত্বলমরপ ইশ্বর আমাদিগকে
যে সকল রিপু দিয়াছেন ভাহাদিগের সকলেরই উদ্দেশ্য অতি শুভ, অতি মঙ্গলকর।
রিপুগণের উপযুক্ত ব্যবহার করিতে পারিকে
তাহাদিগের হইতে মঙ্গল ফলই উৎপন্ন
হইয়া থাকে, কুত্রাশি কোন অমঙ্গল হয়'না '
রিপ্গণের উপযুক্ত ব্যবহার কারাকে
সে ভানও কবর আন্তিতি বাজাল
নিহিত করিয়া নিরাছেন। বাজাল

বশীভূত না হইরা, তাহাদিগের দারা পরিচালিত না হইরা, তাহাদিগকে রশীভূত ও
পরিচালনা করিতে পারিলেই তাহাদিশের
উপযুক্ত ব্যবহার করা হয়। রিপ্রনিচর্টের
প্রকৃত সংযমই রিপ্রণণের উপযুক্ত ব্যবহার।
প্রকৃতরূপে রিপ্রশ্যম করিতে পারিলে
আমাদিগের ঐহিক পার্ত্তিক সর্বপ্রকার
মঙ্গল সাধিত হয়।

যনুযাজাতির বৃদ্ধির জন্য, মানব-সৃষ্টি-রকা জন ি ঈশর মানুষকে কাম-রিপু দিয়া-ছেন। সন্তানোৎপাদন উদ্দেশে এই রিপু প্রদত্ত হইয়াছে, অতএব কেবল সেই উদ্দেশ্য সাধন জনাই মানুষ ইহা চরিতার্থ করিবে, ই ধরের ইহাই ইচছা ও আদেশ স্পষ্ট বুঝা যাইতেছে। বিজ্ঞ মানুষ এই রিপুর মন্তা-নোৎপাদন উদ্দেশ্য বিশ্বত হইয়া, ইছা হ-ইতে যে ইন্দ্রিয়-মুখ প্রাপ্ত হয় কেবল তাহাই উপভোগ করিবার জন্য যদুচ্ছা ইহার চালনা করিয়া থাকে, অপরিমিত রূপে অরিহিতরূপে ইহার সেবা করিয়া থাকে। ঈশরের ইচ্ছা ও আদেশাসুসারে মানুষ কামরিপু নিয়ন্ত্রিত ও বলীভূত্র করিতে যত্নবান হয় না বলিয়া তাহারা উহার অপরিমিত সেবা করে এবং বিবাহ-বন্ধনের পবিত্রতা উল্লেখন করিয়া অগ্যাগ্যন-দোষে দোষী ছইয়া ধর্মচ্যুত হর। কামরিপুর এইরূপ অপরিমিত ও ধর্ম-বিক্লম লেবা ঈশরের উদ্দেশ্য ও তাঁহার পবিত্র ইচ্ছার বিরুদ্ধ হওয়াতে, মানুষ উহা হইতে নানা তুঃৰ কট্ট মন্ত্ৰণ পাইয়া থাকে। कार्यद्रिश्त रचीविक्क तादशंद्र कतित्त, कायशा मिता केदिल, मंत्रीत बलशीन ও রোসের আ~ বাস-ভূমি হয়, মন বৃদ্ধি মেখা ও প্রতিভা শুনা হয় এবং আন্ধা নিভেন, অপবিত্ত প্রকৃত্ বিত হইরা যায়, আত্মায় ব্যক্তনানের বিকাশ थां का ना, अर्थ डाहाए के ट्यारमंत উপন্ন স্বয়ন্ত্ৰ হইলা গড়ে : স্প্ৰায়ন্ত্ৰীৰ

রিমিত ও ধর্ম-বিরুদ্ধ দৌষক যে,ব্যক্তি ভাষার চিত্তে কৌন পবিত্র বাসনা, কোন পবিত্র সংকল্প, কোন পবিত্র আশা হান লাভকরিতে পারে না; সে কোন সংকার্মো রুতকার্যা হয়, না, সে কোন প্রকার উম্ভি লাভ করিতে পারে না, সে জীবনের উদ্দেশা সাধন করিতে অসমর্থ হয়। সংক্ষেপতঃ, শারীরিক, মানসিক ও আলোজ্যিক অবন্তি প্রাপ্ত হয়য়া সে ব্যক্তি পশুনামের বাচঃ হয়।

বর্ত্তমান কালের ইয়োরোপীয় বিজ্ঞান-যে বিজ্ঞানের দিদ্ধান্তের সন্মুখে আজকাল সকলেই মন্তক অবর্ণত করিতে প্রস্তুত, আর যাহার প্রতি আমাদিগের দেশের শিক্ষিত লোকদিগের অচলা প্রদ্ধান্তির কোনও কাম-রিপুর অপরিমিত ও ধর্ম্মবিরুদ্ধ সেবার বিষ-ময় ফল, এবং হাদয়-মন-আত্থার অবনতিকর প্রভাব মুক্তকণ্ঠে প্রচীর করিতেছে। আমরা এ বিষয়ে কয়েকজন ইংরাজ শারীরতত্ত্ব-বিদের মত নিম্নে উদ্ধৃত কবিয়া দিলাম। \*

\* Dr T. L. Nichols, in his work on Human Physiology, says ;-- "Chastity or continen ce is the conservation and the consecration of the forces of life to the lighest use. Sensuality is the waste of life and the degradation of its forces to pleasure divorced from use. Chastity is life. Sensuality is death." The same authority elsewhere observes; "The suspension of the use of the generative organs is attended with a notable increase of bodily and mental vigour and spiritual life. Again; "It is a medical-a physiological fact, that the best blood in the body goes to form the eliments of reproduction in both sexes. In a pure and orderly life this matter is re-absorbed. It goes back into the circulation ready to form the finest brain, nerve, and muscular tissue. This life of man, carried back and diffused through his system, makes him runnly strong, brave, hereis. If wasted, it leaves him effeminate, weak and irresolute, intellectually and physically debilitated and a prey to sexual irritation, disordered function, morbid sensation disordered muscular movement, a

কামরিপুর অপরিমিত ও বক্ষবিক্তর দেবা শাসুষকে এইরূপে ঘোর তুর্দশাপদ করে বলিয়া আক্ষধশ্রের মহান্ উপদেশ এই যে কামরিপুকে জন্ম করিবে, কুলাপি উহার বদীভূত হইয়া ধর্ম ও মুক্তি লাভের পথে কন্টক রোপণ করিবে না। ব্রাফার্মে বলি-তেছেন,

**্বিশমক্রেটিনী তু সংব্যা ভতঃ নিজিং নিজেতি**।

ভাষাধন্ম ২র খা, ১৯ আঃ ৭ সোন

অর্থাৎ "কাম ও জোণকে সংখ্য করিয়া মুসুষ্য দিছিল প্রাপ্ত খ্যেন।" কাম-প্রভির বনীভূত হইয়া থাকিলে শরীর তুর্কত ও রংগ্ন,

wretched nervous system, epidepsy, in anity, and death." Again ; - "Mon can live in perfect continence for years and all their lives in full bodily and mental vigour, all the more strong and vigorous for the disuse of the onestive function." Speaking on the consequences of expessive amative indulgence, Dr Nichels makes the following remarks;"-There is a great expenditure of nervous force in excessive amotive includgence. Nature calls for this expenditure only at maturity, and at rare interval and for a specific 'purpose." "The brain is 'estiaustoi' by amative irregularity and excess" "Hysteria, chorea, and chilepsy are generally geonmected with excitement and exhaustion of the generative system, with an atra passion, and unnatural or excessive gratification." Dr O. S. Fowler observes, "broquent sexual inadulgence in any of its ferm, will run down and um out any oar of cithersex." Dr Curtis says, "He who addicts himself to the destructive imbit of excessive attrative indulgence, loses ed once both his physical and moral powers." Dr. Faltet remarks; "Debility of intellect and especially of the memory, chracterize the mental ahenation of the licentious." Dr Curtis temark ;- "The great exhaustion of the nervous system, produced by excessive sexual indulgence, occasions considerable injury to the faculty of memory, and sometime its complete ruin. The other faculties of the mind are also impaired by sexual excess. Our lunatic asylums afford many instances of insmity being produced by this practice."

মন নিস্তেজ ও উৎসাহবিহীন, এবং আত্মা পশি-প্রবৰ্গ হইয়া যায়, সতএব কোন উচ্চ বা পবিত্র সংকল্প সাবনে মনোবোনী হইলেও মানুষ তাহাতে গিদ্ধি লাভ করিতে পারে না, ধর্ম নাধনায় যতুবান হইলেও তাহাতে হ-সিদ্ধি প্রাপ্ত হয় না, ত্রক্ষজ্ঞান, ত্রক্ষপ্রেম অর্জনে চেপ্তিত হইলেও তাহাতে কৃতকার্যা হয় না। এই জনা ত্রাক্ষধর্মে উক্ত হইয়াছে,

"কামজোধৌ তু সংযমা ততঃ সিদ্ধিং নিগছতি।" ভাক্ষধর্ম্ম বলিতেছেন,

"দান্তঃ শমপ্রঃ শশ্বং পরিক্লেশং ন বিক্তি' ব্রাহ্মধর্ম ২২ঃ, ১০ কাং, ৪ স্লো।

"যিনি ই ক্রিয় ও মন সংযম করিয়াছেন, তিনি আর বারংবার ক্লেশ প্রাপ্ত হন না।" বাক্তি কামেক্রিয়ের সেবক তাহাঁর হৃদয়ে কেবল ইক্রিয়-চরিতার্থতার অপবিত্র চিতাই উদিত হয়, অভ এব তাহার মনোরাজ্যে ক্ষম পবিত্র আনন্দলহরী ক্রীড়া করে না, ক্রথন ফর্নীয় শান্তি প্রবেশ লাভ কবিতে পারে না, মে শরীর মন ও আত্মার বল হারাইয়া সকল প্রকার ক্লেশে নিয়ত উৎপীড়িত হয়। এই জন্য ভারামণশেষ উক্ত হুইয়াছে,

"দাও শমপর দাবং পারকেশং ন বিকতি।"
ভারান্য উপদেশ দিতেছেন;
অভ্যেল্স্যাব্যভিচারে ভবেদায়রণান্তিক:
এবধর্ম সমাদেন জেয় স্ত্রীপ্তরো পরঃ।
ভারান্য ২য় পঞ্ ২য় সাং, ৪ ক্রাঃ

"প্রী পুরুষে গ্রণান্ত পর্যন্ত পরস্পার কাহারও প্রতি কেই বাভিচার করিবেক না;
দাংকেপেতে তাঁহাদের এই পরম ধর্ম জানিবে।" যাহারা কাম-রিপুর বলু, যাহারা
কাম-রিপুকে দুমন করিতে পুরুরে নাই, তাহার প্রভাব পরাজ্য করিতে পুরুষ হয় নাই,
তাহারাই ধ্যাতিকার দেতি দোষী হইরা
বর্মানুত হইয়া কেবল যে আলিকাদিপের
ঘার তুপতির প্রথ উন্তুল করিয়ান্দের ভাহা

নহে সমর্প্র লোকসমাজের বিশেষ
সাধন করে। কাম-রিপুর বশীভূততা হইতে
ব্যাভিচার দোষের উৎপত্তি, আর মেই ব্যাভিদ
চার দোষ ব্যক্তিশত, পরিবারগত, সমাজগত হুগতির প্রস্তুবর্ণ, এই জন্য ত্রামাধর্ম্ম
বলিয়াছেন,

অক্যোন্তসান্যভিচারোভবেদামরণান্তিকঃ এবধর্মঃ সমাদেন জেবঃ স্ত্রীপুংসয়োঃ পরঃ। এবং আবার বলিয়াছেন.

"বিরক্তঃ প্রদারের তেন শোক্তরং লিতম্'' বাজধর্ম ২য় খঃ, ৬ খঃ ৪ শো।

"যিনি পরস্ত্রীতে বিরত তাঁহার দার। তিন নোক জিত হইয়াছে।"

াক্ষ জিতেক্রিয়া হইবেন, কাম রিপুর শরীর মন-আলার অবনতি কর, পর্মাবরুদ্ধ ও অযথা সেবা হইতে সর্দ্ধনা সর্ব্যঞ্জারে বিরত থাকিবেন, এবং ক্রমে ক্রমে কাম রিপুর আধিপতা হৃদয় হুইতে অপদারিত করিতে থাকিবেন, ইহাই জ্রেজগর্মের উপদেশ। বিনি প্রাঞ্চত ব্রোক্ষা তিনি এই উপদেশ সম্পূর্ণ রূপে পালন করেন। প্রকৃত ত্রাক্ষ কাম রিপুকে আপনার উপর আবিপতা করিতে দেন না। তিনি কুতাপি এই প্রবৃতির দাস হইর। উহার ধর্মাবিরুদ্ধ অ্যথা ব্যবহার করেন না। কামেন্দ্রিয়কে ,সম্পূর্ণরূপে জন্ন করিয়া তিনি ধর্ম্ম রক্ষা করেন, শরীর মন ও আত্মার স্বাস্থ্য, বল ও পৰিজ্ঞা সঞ্য কৰেন। যতই ভাঁহার বয়স বৃদ্ধি ছইতে থাকে, বয়োবৃদ্ধির সঙ্গে নকে ইতই পৃথিবীর সহিত তাহার বন্ধন निशिन इंटेंड शैंकि, यउटे टेक्टियात उन সভাবতঃ হ্রাস হইয়া আসে, ষতই ভিনি আ-ধ্যাক্সিকতায় গভীরতর উনীতি লাভ করিতে থাকেন, যতই অক্ষজান ও অক্ষপ্রেমে তাঁহার আত্মা জ্যোতিখান ও নহান হইতে থাকে, এবং বড়ই ভাছার আত্মা শুরুররণ পিঞ্জর रहेट शत्रामान्यस्य श्रहात्नाकृष दश्र,

ততই তিনি এই শরীর মূলক কাশ রিপুর প্রভাব স্থান্ন হাইতে অপসারিত করিডে থাকেন। যিনি রাজ্যধর্ম গ্রহণ করিয়া, রোজ্য বলিয়া জগতের নিকট পরিচয় দিয়া কামে-ভিরমকে জয় করিতে না পারেন, উহার ধর্ম-বিরুদ্ধ অপরিমিত সেবা হইতে বিরুদ্ধ গ্রহণ হরেন, এবং বর্মোরদির সহিত অধ্যায়িকতার উল্লভির সঙ্গে সঙ্গে ক্রমে উহার বিনাশ সাধন করিছা উহার প্রভাব হইতে আপনাকে এককালে মুক্ত করিতে না পারেন, তিনি রোজ্যধর্মের ও রাজ্য নামের অব্যাননা করেন, ভিনি কথন প্রস্কুতরূপে রাজ্য নামের উপ্লযুক্ত হইতে পারেন না।

## সাংখ্য স্থতের অনুবাদ।

(পূর্ণের **অন্ন**র্ডি)

ইহা হউক, উহা করিব, উহা ও তাহা পাইব,ইত্যাদিবত আকাবের মানস-ক্রিয়া বা মনোবিকারের দাম বাঞ্ছা ও সংক্ষন । সুদ্ধির যে অংশে এই সকল বিকার বা বিক্রিয়া উৎপন্ন হয় সেই অংশকে আমরা মন বলি, সূত্রাং ইচ্ছা ও ইচ্ছাঘটিত সংক্রা বিক-মাদি বিক্রিয়া সকল মনেরই ক্রিয়া অর্থাৎ মনের ধর্ম বলিয়া উল্লেখ কবা যাস

মন্তিকাবভিহ্ন বৃদ্ধিতত্বের মনতানেশেযে

া, বাঞ্চা, সংকল্প, বিকল্প, ইত্যাদি বছ
প্রকার ক্রিলা জন্মে, বিকার উৎপদ্ধ হয়, দেই
ক্রিলা বা দেই বিকার বিশেষ কর্ত্তব্যতা নামক
অন্য এক প্রকার বিকারের জননী। তাহা
চক্ষ্রিলিয়ের, শুবণেলিয়ের, আণেলিশের,
ভগিলিয়ের ও রসনেলিয়ের বসতি স্থানেই
উৎপদ্ধ হয়, সর্বত্তে হয় না। চক্ষ্রিলিয়ের
অবস্থিতিহানে রূপদর্শন ক্রিয়া, কর্ণেলিয়ের
বিভিন্নান শুক শুবণ ক্রিয়া, এবং অন্যান্য
ভালিকার জন্মে। সেই সকল ভ্রান্তিয়ার

নাম কর্ত্তবাতা। কর্ত্তবাতা সকল বৃদ্ধীন্দ্রিয়ের ক্রিয়া ও মুল্বুদ্ধির বিকার, প্রতরাং তাহা-দিয়াকৈও স্কান্ধিয়ুদ্ধি বলা যাইতে পারে।

ক্রিকিন্তের জিয়। হইলে কর্কেন্তিয়েরও

ক্রিয়া হয়। সে দবল ক্রিয়ার পৃথক্ পরিভাষা নাই। ইন্তিয়ের নানেই তত্তাবতের
উল্লেখ হইয়া থাকে। যথা- শচনক্রিয়া, গ্রহণক্রিয়া, ইড়াদি। স্বতরাং কর্মেনিরের ক্রিয়া
সকল ক্রিয়া নামেই অভিহিত হইল, পারিভাষিক নাম দেওয়া হইল না। ইহাদের
স্থা বুলিক দিকে, বুদ্ধি হইতেই ইহারা পারপর্যক্রেমে উৎপন্ন হয়, তৎকারনেই ইহাদিগকে অভিবুদ্ধি নাম দিয়াছি। পাঁচ প্রকার
অভিবৃদ্ধির ব্যাখ্যা সমাপ্ত হইল, এফণে পাঁচ
কর্মিয়োনির মাাখ্যা গুন।

' अक **कर्यास**नक का

কর্মের, শুভাগুভ শক্তির, পাঁচ প্রকার মাত্র যোনি অথাৎ উৎপত্তি নিদান, ইহা অবধারিত হইয়াছে।

গ্লতি, শ্রন্ধা, স্থাদি, বিবিদিষা, ও অবি-বিদিষা, এই পাঁচ আধ্যাত্মিক ভাব হইতে জীবের কর্ম সঞ্চয় হয়।

শ্বতি ।— কর্ত্তবাত। বিনয়ক ইচ্ছাকে, মনের সকল্পকে, বাকো ও কায়িক ব্যাপারে প্রতিষ্ঠা-পিত করার নাম'রতি। (আমি ইছা করিব,এই রূপেই করিব, এইস্কপ মানস িয়া উত্থাপিত করিয়া, ঐ প্রকার সংকল্প ধারণ করিয়া, বাকো ও কার্বো তাহার সমাপ্তি করণের নাম র্বাছা। বে ব্যক্তি তালুপে কার্ম করে, তৎপ্রতিষ্ঠ হয়, সেই ব্যক্তি প্রতিমান্ ব্রিয়া গণ্য।

শ্রহা। পদুষা-জাগ, বেক্সচর্ব্য, যাগ, হোম ও দানাদি করা এবং করাম, শ্রহা ব্যতীত হয় না। এ কারণ ঐ সমস্ত কার্যা আন্তরিক শ্রহারতির লক্ষণ অর্থাৎ বহিশ্চিক্স।

হস্ত ।—স্তথের উদ্দেশে, চিভ**্নৈর্য্যলে**র উদ্দেশে বা অন্তঃকরণের সা**দ্ধিক প্রকাশ উর্**ক পাননের নিমিত বিদ্যা করা ও তপসারত হইনে ও প্রায়শ্চিততংশর হইনে, পাপ-কর্মারী ক্রিয়া অনুষ্ঠানে হর্মান্ থাবিলে, নাখাশান্ত তাহা স্থ-নামক কর্মানেনি ব্যক্তিয়া অভিহিত করেন। বস্তুতঃ ঐ সকল ক্রিয়াই প্রকৃত স্থ্ ও প্রকৃতস্থের যোনি অর্থাৎ উৎপত্তি কারণ।

বিবিনিষা।—জানিবার ইচ্ছার নাম বিবিনিষা। তথালো প্রকৃতির একত্ব, প্রাকৃতিক
পদার্থের নানাত্বও পৃথক্ত্ব, আত্মার বা প্রবের চেতন ভাব, প্রকৃতির ও প্রাকৃতিক পদার্থের জড়ত্ব, কারণের সুফাত্ব, কার্থের বাক্ততা
ও ব্যক্তীভাবের পর্বের ভাহাদের অন্তিত্ব,—
এই ক্যেকটা জানিবার ইচ্ছাই বিবিদিষা এবং
ঐ সমন্ত বিষয়ই বিবিদ্যার বিষয়।

থবিবিদিষা।—বিনিদিষার অভাবের বা চরম কলের নাম থবিবিদিষা। ইহা স্থপ্ত এভিনুদ্ধ ব্যক্তির প্রবোধের তুল্য। এবদিং পাঁচ প্রকার কর্মধোনি আছে, ইহার ঘারাই জীং মোক্ষলাভ করিতে সমর্থ হয়।

शक्ष नामनः ।। हा।

এই স্থল দেহের মধ্যে পাঁচ প্রকার বায় বা বায়বীয় ক্রিয়া বিশেষ আছে। কি,কি ? তাহা শুন।

শরীরধারীর শরীরে প্রাণ, অপান, স্থান, উদান ও ব্যান,—এই পাঁচ প্রকার বায়ু (ই-ক্রিয়সমষ্ট্রির ক্রিয়া হইতে উৎপন্ন ক্রিয়া-বিশেষ) আছে।

প্রাণ।—মুখ নাসিকায় মাহার অন্তিষ্ঠান, যাহা প্রাণ অর্থাৎ খাসপ্রখাস ব্যাপারের কা-রণ, যাহার হারা মরণ ও জীবন নির্বাহ হয়, যাহা প্রক্রম অর্থাৎ যাহা দেহত মাজিক কা-ব্যার আরম্ভক, ভাহারইকার প্রাণ।

অপান । পায়ুদেকৈ বা আখাদেশে থা-হাল অবিষ্ঠান, যে জিয়াৰ আৰু বঁটাৰ কৰ মুজাদি নিৰ্গত হইয়া কাই, কালা কৰিছে অবোগননীল ( স্বন্ধ আছিলিনী কিছা) তাহাই এ শাস্ত্রে অপান।

সমান।—বাহা বা বে বাছ (॰) নাভি-হানে অধিষ্ঠিত থাকিয়া ভূক্ত জ্বা পরিপাক করতঃ রস রক্তাদি জন্মায় ও বথাবারীপে বিভাগ দাধন করিয়া পৃথক পৃথক নাড়ীপথে লইয়া যার, তাদৃশ বায়ুর নাম সমান।

উদান। কঠদেশে যাহার অধিষ্ঠান, বাহার সভাব উদ্যামন, যাহার বলে শরীরের উর্ন্নামিনী ক্রিয়া অর্থাৎ উৎক্রান্তি ও বমনাদি ক্রিয়া নিস্পন্ন হয়, তাহার নাম উদান।

বান — এই ব্যান নামক বায়ু শরীরস্থ সর্দ্ধনাড়ীর অধিষ্ঠাতা। ইনি বিদেষণ, বিত-জন ও বার্শ্যবং কর্মাকরেন বলিয়াব্যান।

পাঁচ বারু কি তাহ। ব্যাখ্যাত হইল, বসা হইন, একণে পাঁচ কর্মাত্মার স্বরূপ অবগত হন্ত।

#### প্ৰকৰ্মানানঃ॥ ১০ ৷

নর্পের আত্মা বা প্রয়োজক কর্ত্ত। পাঁচ প্রকার। জীর্নমর্চ অনৃষ্ট শক্তির নাম কর্মা, কার্যপ্রের উত্তেক কারক বলের নামও क्चा, देशतं खना नाम वर्षावर्षा ७ पूरा भाभ। এতাদুশ কর্ম্মের বা ধর্ম্মাধর্মের মূল বা আত্মা (প্রয়োজক) পাঁচ প্রকার। প্রেক্ট ব্লি-রাছি, শরীরে বৈকারিক, তৈজ্ঞস, ভূতাদি, সাসুয়ান ও নিরপুয়ান, এই পাঁচ প্রকার প্রা-ক্লতিক বিকার আছে। সেই গুলিকেই আবার এখন কর্মান্তা নামে অভিহিত করা গোল। তাহার কারণ এই যে, উক্ত বিকার পঞ্চকই কর্মবিভাগের আত্মা, স্বরূপ বা উপাদান কারণ। তমধ্যে যাহা বৈকারিক ভাছাই ভক্ষকভা। যাহার অন্তঃকরণে বৈকা-রিক অংশ প্রবুল বা অধিক সেই কাজিই ওডকর্মে প্রবৃত্তিশান্তর ও ওড়ক্মাঞ্জরে । আর বাহা ভৈছান, তাহাই অপত কর্মকরা अमार देखान निकारहरू शांतक वा चा-

থিকে। অভ্যন্ত কর্মা সর্কল কৃত হয়। याहारक कुछानि विनश वाष्मा कतियाहि. দেই ভূতাদিই এখনে মৃঢ় কর্মের আত্মা বা মৃত্কৰ্মকৰ্ত্তা বলিয়া জানিবে। (ভূতাদি নামক বিকারের অধিক্যে বা প্রাবল্যে লোক **স্কল মোহকর্ম**কারী হয়, অজ্ঞতার কার্য্য করে)। পূর্বে ঘাহাকে সামুমান বলিয়াছি, তাহা ওও মৃঢ় কর্মের আক্সাবা প্রযোজক। (কারিণ জানে না, কেন করে তাহা জানে না, কোন প্রকার অভিসন্ধি নাই, অথচ গুভ কর্মা করে, এরপ ভাবে 'শুভকর্ম করিলে শুভন্চ कन्त्र कहा हता)। शृद्धि राहारक निवसूयान বলিয়াছি, তাহাকেই আবার শুভ-অমূড়-কর্ণ্মের कर्छ। ता जाजा तिनार। (जान श्रांतक গুভকর্ম কৃত হইলে তাহাকে গুভ অমূচ কর্ম্ম বলা যায়)। সাংখ্যশান্তে এইরূপেই কৰ্মাত্মপঞ্চের ব্যাখ্যা হইয়া থাকে।

#### शक शर्याविका। 1 >> 1

অবিদ্যা বা অজ্ঞান পঞ্চপর্কান্থিত। অবিদ্যার পাঁচটা মাত্র প্রধান পর্কা (গাঁইট বা বিভাগ) আছে। তাহাদের নাম তম,মোহ, মহামোহ, তামিশ্র ও অন্ধতামিশ্র। প্রথম পঠিত
তম ও মোহ নামক পর্কের আট প্রকার
অবান্তর প্রভেদ জাছে। মহামোহের দশ
প্রকার প্রত্যেক ক্ষুদ্র পর্কা আছে। তানিপ্র ও
অন্ধতামিশ্র এই তুইএরও অপ্তাদশ প্রকার
বিভাগ বা ক্ষুদ্র ক্ষুদ্র পর্কা (গাঁইট) আছে।
ইহার বিস্তৃত বিবরণ এইরপ

সাধারণতঃ তমং, অজ্ঞান, ত্রম, তুর্বা, কি
এ সকল সমানার্থক শব্দ বলিয়া আম। বস্ততঃ
যাহা আমা নহে তৎপ্রতি আম্মজ্ঞানাতিমান করার নাম তমঃ। বর্বাক্ত, বৃদ্ধি, অহ
ভাব, এবং বৃদ্ধাতম প্রকতমান্তা, এই আট
হারার প্রকৃতির কোনটাই আ্যা নহে,
তিরু অটি প্রকারের কোন একটাকে
বিদ্ধা বিদ্ধা বিদ্ধান্তকর হইলে তাহা অবি-

দ্যার তথে। নামক পর্বে বলিয়া অভিহিত হইবে। আট প্রকৃতিতে পৃথক্ পৃথক্ আত্ম-জ্ঞানীভিমান হইয়া থাকে, এজনা উহা আট প্রকার বলিয়া অভিহিত হইল।

দৃষ্টজান অথাৎ লৌকিক বৃদ্ধি আৰু
আনুপ্ৰাবিক জ্ঞান অৰ্থাৎ শান্তীয় বৃদ্ধি নিৰুদ্ধ
হইয়াহে দেখিয়াই খাদি "আমি কুতকুত্য হইলাম, মুক্ত হইলাম" এতদ্ৰূপ আভমান হয়,
তাহা হইলে,তাহার তাদৃশ বাজাত কৈ আমরা
মহামোহ নাম দিই। ইছা আদি প্রকার
প্রথম্য ও দশ প্রকার বিষয় ঘটিত হইয়া উৎপন্ন হয় বলিয়াই দশ প্রকার বালয়। ব্যাখ্যাত
হইল।

্রকৃতির আট প্রকার ঐবর্ধা ও দিবনাদিব্য ভেদে দশ প্রকার শকাদি বিষয় না
পাইলে কিংবা তভাবৎ হইতে পরিস্রই হইলে
যে দৃঃথ হয়, দেই অযুক্ততম দৃঃখের নাম
ভামিণ এবং বাহা মূল মিথাা জ্ঞান, ঘাহার
জনা নাম জভিনিবেশ (মরণত্রাস, দেহের
প্রতি জাল্লাভিমানের অনুস্তি, গামি বেন
না মরি, এতদ্রপ কামনা বা প্রার্থনা বিশেষ)
তাহাই এছলে অন্ধতামিশ্র নামে অভিহিত
হইয়াছে। দেবভারাও অনিমাদি ঐথর্ধেরে
পরাকাঠা প্রাপ্ত হইয়া শকাদি দশ বিষয়ের
ভোগ কনেন, ভোগের জনাতে তাঁহারাও
ভোগ প্রতিবন্ধকের প্রতি বিদেশ করেন ও
দুংখী হন। জনিদার পাঁচ পর্ব্ব এবং অবান্তর
প্রতিদ এইরপেই ব্যাখ্যাত হইয়া থাকে।

অধ্য<sub>িব</sub>্ৰতি বধ্য অশক্তিঃ॥১১॥

অষ্ট্রবিংশতি (আটাইশ) একার বধ অথাং বিখাত হইতে অত্যাবিংশতি প্রকার অশক্তি (অক্ষমতা বা লোনহানি) ইইয়া থাকে।
আটাইশ প্রকার বধ ও আটাইশ প্রকার
অশক্তি কি কি ? তাহা বলা হাইতেছে।
একাদশ ইন্দিয়-বদ ও সপ্তদশ বৃদ্ধি-বদ, এই
বিটাইশ প্রকার বধ বা ক্রেপ্রিঘাত হইয়া

শাকে। জ্বান্ত্ৰত আটাইশ-প্ৰকার অশক্তি (অক্ষমজ্ঞান জ্ঞানহানি) ঘটনা হয়। ইন্দ্ৰিয় বহু কি তাহা বলা যাইতেছে।

া ১ শ্রোত্তবধ। শ্রোত্তেন্দ্রিরের বধবা বিশ্বাত ; তজ্জনিত বাধিষ্য নামক অশক্তি অপর্যাপিন ক্ষানক্ষনতার অভাব। শ্রবণেন্দ্রিরের সর্বাধীন অভাব হইলে জীব অনুদে শুনিতে পায় না, অংশ বিশেবের ব্যাঘাত হইলে কিছু কিছু শুনিতে পায়, অসম্পূর্ণতা থাকিলে শব্দ বিষয়ে সম্পূর্ণজ্ঞান লাভ করিতে পায়ে নাই। শ্রবণেন্দ্রিরের অসম্পূর্ণতাবশতঃই লোকে তালকাণা ও স্থরকাণা হয়, স্থলয়াই ভাষধ ব্যক্তিগণের শ্রোত্রবর্জনিত অশক্তি অথাৎ শাক্ষজ্ঞান সম্বন্ধে পূর্ণ ক্ষমতা থাকে না ইহা অব্যারণ করিতে হইবে। যোগসাধন না করিলে শ্রবণন্দ্রিয়ের পূর্ণতা হয় না, ইহাও সত্য জানিবে। এই কারণেই যোগীয়া শব্দ তার বিষয়ে অভাত, অন্যে তান্ত ।

২ জিহ্বাবপ। জিহ্বাবধ থাকিলে জড় হ
নামক (রস জ্ঞান রহিত) জার্শক্তি থাকে,
ইহা হির করিতে হইবে। বধ জনেক প্রকার। বিনাশের নামও বধ, অসম্পূর্ণতার
নামও বধু এবং জংশ হানির নামও বধ।
বিনাশ হইলে রসক্ততা আদে থাকে না,
জংশ বিশেষের হানি থাকিলে কিছু না কিছু
থাকে, অসম্পূর্ণতা থাকিলে মাত্র ব্যবহারোপ্রোগী সূল রস বুধিবার শক্তি থাকে, সুক্ষম
রস বিজ্ঞান বিষয়ে ক্ষমতা থাকে না। যোগী
বাতীত, যোগ সাধনার হারা জিহ্বেজিয়ের
উৎকর্য সাধন বাতীত, অভান্ত-রস্বিজ্ঞান
লাভের সন্থাবনা নাই।

০ ত্ক্বধ। ত্ক্বধ থাকিলে কুঠিতা নামক অশ্বিক (অলাড়—মাড় না গাড়া) থাকে। ত্লিভ্রের স্বাসীন বিশ্বানে স্পর্ভান আনে থাকে না, প্রাদেশিক বিনাশে কিছু কিছু থাকে, অ্লম্পূর্ণতা নামক বল বিশেষ থাকিলে দুলস্পাৰ্শকাতা থাকে মাত্র; কিন্তু দিব্য ও সুক্ষা স্পর্ণ গ্রহণ করিবার ক্ষমতা থাকে না।

8 ठक्क्रवध । ठक्क्र्रितिन्तरप्रत्र পূर्वदश था-কিলে অন্ধতা বা রূপগ্রহণবিষয়ে অশক্তি থাকে। আংশিক বধ বা অপূর্ণতা থাকিলে রূপ-গ্রহণ-শক্তির অনেক অংশে অভাব থাকে। যাহার চন্দু মাই অথবা যাহার চন্দু বিনর হইয়াছে দে কিছুই দেখিতে পায় না, প্রস্তু যাহার চক্ষুর আংশিক বর বা অস-च्यूर्न**ा थारक रम वाक्ति ऋर**भद्र (३८७३) ভারতমাবিবেচন। করিতে পারে না। সেই জন্যই ইছ সংসারে অনেক রঙ্কাণা লোক ৰপ্ত হইয়া থাকে এবং নেই কারণেই অনেক নমুধ্য বৰ্ণবিজ্ঞান বিষয়ে জ্ৰান্ত হইয়া খাকে। গোন-মাধন-প্রভাবে চক্ষুরিব্রিয় বথন উৎ-কৰ্মতা প্ৰাপ্ত হয়, সম্পূৰ্ণতা লাভ করে, তখ-नरे छातृन याती फिराफिरा ७ कून मूका সমস্ত রূপ গ্রহণ করিতে পারেন অম্য সময়ে **७ अना वाकि शास्त्रम ना !** 

ন নাদাবধবা আনপাক। আনেব্রিয়ের বধ থাকাতেই অআনতা অর্থাং আনশাক্তর অ-ভাব হইয়া থাকে। ইহারও সূর্ব্বাঙ্গান বধ ও আংশিক বধ এবং তদকুসারে আনাব্যয়ের অশাক্ত আংশিকও স্ব্বাঙ্গান জানিবে।

৬ বাখব। বাগিল্রিয়ের বা বাক্যন্তের বা ছইলে বা থাকিলে, মুকডা নামক অশক্তি হয়। মুক অর্থাৎ শব্দ উক্লারণৈ অক্ষম, বাক্ শক্তির অভাব (বোবা), বাগ্যন্তের অলু বধ থাকিলে, অপূর্ণতা থাকিলে, বাক্শক্তি অল্ল ও অপূর্ণ থাকে।

৭ হস্তবর। ক্তেন্ডেন্সিয়ের বর হইলে কুণিত্ব অর্থাৎ আদান, প্রদান, আকর্ষণ, বিকর্ষণ ইত্যাদিবিধ হস্তক্রিয়ায় অনুমর্থ হইয়া থাকে। ইহা এক প্রকার পঞ্চালিত। দ পদবধ। পাদ নামক কর্ম্মেনিশের বিগাতে পঙ্গতা নামক অশক্তি এন্মে। বিহরণ বা পাদবিক্ষেপাদি কার্য্যে অসমর্থতা আর পঞ্জ তুলা কথা।

৯ পারুবধ। পায়ু-ইন্দ্রিয়ের বধ হইটে উদাবর্ড (ইহা এক প্রকার রোগ) কর্থা মলত্যাগকারিণী শক্তি তিরোহিত হয়।

১০ উপস্থবধ। উপস্থেক্তিয়ের ব্য হইকে ক্লৈব্য নামক অশক্তি জন্মে।

(ধ্বক্তক রোগ আর উপত্রে তর্ত কথা।)

১১ মনোবধ। মন নামক ইন্দ্রিয়ের বর ছইতে উন্থান নামক অশক্তি জনিয়া থাকে। অনবস্থিতিচিত্ততা, বস্তুবিধয়াই অংথা জ্ঞান, মংকল্পবিদ্যা করিবার সাম্থ্য না থাকা, এবি ধান শক্তির অভাব হওয়া, ইত্যানি ইত্যানি, অনেক প্রকার মনোব্য-জনিত অশক্তি থাকা দৃত্তী হয়।

একাদশ প্রকার ইন্দ্রিয় ব্য ও তালটিও অশক্তি সকল বর্নিত হইল; এক্ষণে সপ্তদশ প্রকার ব্যাহিষ ও অস্থাটিত কাশক্তি বিভাগ তাহা জ্ঞাত হও।

তৃষ্টি নামক ও নিজি নামক ১৭ প্রকার বৃদ্ধি অবস্থা আছে। মেই মন্ত্রশ বৃদ্ধি অবস্থার বৈপরীতা হইতে বৃদ্ধিব্যপ্ত নপ্তদশ প্রকার বলিয়া কথিত, হয়। তৃষ্টি
অবস্থা ৯ প্রকার। কি কি ? তাহা পরে
বলিয়। মেই বফামাণ ৯ প্রকার তৃষ্টির বিপ্রবাধে অর্থাৎ অতৃষ্টি প্রভৃতি অবস্থা হইলে,
তাহা হইতে ৯ প্রকার বৃদ্ধিব্যপ্ত ৯ প্রকার
অশক্তি ঘটনা হইয়া থাকে।

## ব্যাখান-মঞ্জরী

শ্রীযুক্ত প্রধান আচার্য্য যহাশকের ব্যাখ্যান-মূলক পদা:

বোড়শ ব্যাণ্যান ( গত বর্গের পতিকার ১২ প্টার পর।)

শান্তি শ্বধ কোধা বল ছাড়িয়া ইশ্বর ?
চিন্নশান্তি আনন্দের ভিনিই আকর।
ভিনি ভব চিন্ন ধন, তিনি সুথ সম্প্রণ,
জিজ্ঞানা করিয়া দেখ আপান সম্ভব।

প্রাচুর বিভব মান করহ অর্জ্জন।
চৌদিকে বিস্তার কর প্রাভূত্ আপন।
সংসাদের বস্তু চর, সকলি অসার ২য়।
আত্মার গভীরে শাস্তি দেয় কি কংনে ?

ভিন রেক্ষা রসে মগ্ন ঋষির বচন।
- "হে বিগমি। কারে তুমি করিছ জাপন।
এত ভাল বাদ যারে, সাধিতে নারিবে ভারে,
নিনেবে ক্রিবে দে যে দুরে পলায়ন॥

নরণ-অধীন হর প্রিয় যে তোমার। বিচ্ছেদ ভাষার সহ হবে অনিবার। ধন জন সমুদ্র, কিছু দিন ভরে হয়, ভবৈ কেন মজ ভাহে--ক্রি আপনার।

একনে করহ যুক্তি জীবার সাধন।

যার সনে চিরকাল করিবে বাপন।

নিরস্তর তারে ভজ, জীর প্রেমরস্ক্রে মজ,
প্রেম-ভরে কর তারে ছালুরের ধন।

জানি তাঁরে প্রেমণাতা সহার জীবনে,
কাথ রাথ সদা তাঁরে হানর আসনে।
ভাঁহার বচন ধর, আআরে পবিত্র কর,
ভাঁর ফাজ কর ভূমি একান্ত যতমে।

ক্ষিত্র সেই চির গনে এখানে সঞ্চয়। ব্লে গনের কয় কভূ হইবার নয়। क्षेत्रिका वक कारक लेकि होते कोवात कारक त्म बर्टनत बनी यात्र नार्टन को कार्टन

সে ধন পাইলে আর সব দেওয়া রায় । সকল অভাব হুংখ সে বন সুচায় । বেন কিবা স্পার্শমনি, কিবা অমৃতের খনি বাঁর গুণ ভক্তগণ প্রেমানন্দে গায়।

সকল সুধের তিনি হন আসাদন।
সকল হুংথের তিনি হন প্রাশমন।
যে কাতরে চায় তাঁরে, দেন ভারে আগনারে,
বলেন অন্তরে কভ অমিয় বচন ঃ

ভাজিয়া জসার ভবে জাঁরে কর সার। অন্তের সমস ভারে কর আপনার। তাঁলে প্রেম কর ছেখা, চিরকাল যিনি সেপা তুবিবেন প্রেম-মুমা দিয়া অনিবার।

তিনি বিনা শান্তি হুখ আছনে কোপায় ? তিনি বিনা পারত্রাণ কে দিবে তোমায় ? পর্ম সম্পূদ বন, তাঁরে হয়ে বিশ্বরণ, কেন হরিতেছ আহা! জীবন রুধায়।

এস সবে তার পদে করি নমকার। তাঁছারে সকলে দিই প্রাভি উপহার। তাঁছারে জ্বরে রাখি, তাঁরে ভক্তি ভরে ডাকি, তাঁর কাছে ধর্ম্মন থাটি বার বার।

এন তার প্রেম মুখ দেখি হেন ক'রে, বেন তার ছবি হুদে নিয়ত বিহরে। করি তার প্রীতি পান, করি সবে প্রীতি দান, তাঁর প্রীতি রাখি দিই ছুদ্ধ কন্দরে॥.

ভবে তার উপাসনা হববে সকল, জীবনে মধন তাহা প্রকাশিবে কর। ববে তুমি কায় মনে, সাধিবে সে প্রেমনরে, প্রশোভন হংখে তুমি হবরে অটল।।

বিনীত ব্রহ্ম কর বর্ষের কালুন। আত্ম বল লভিবারে করা বর্ষা আগনা জিজানা কৰি, শাপ টিছা শনিবার, প্রতিটিন সাধু ভাব কর উপার্জন ।।

প্রতি দিন ত্রিসন্ধ্যায় তাঁর কাছে যাও, স্থানয়ের দার জাঁর কাছে খুলো দাও। পাপ ভাপ বিনাশিতে, তাঁর প্রতি মতি দিতে, একান্তে কাতর প্রাণে তাঁর কাছে চাও॥

প্রাণদাতা যিনি হন জীবন জীবন। তাঁহারে করহ তুমি জীবন অর্পণ॥ নিজ অভিসন্ধি আর, না ভাবিহ একবার, তাঁর ইচ্ছা কর শুধু জীবনে পালন॥

ভর বাকুলতা সব মুচিবে ভোষার।
কিছুর অভাব তব থাকিবে না আর।
ি ভূমি প্রাণ পণে, তাঁরে সদা রাখি মনে
তাঁর পদে দাও বাছা আছে আপনার।।

বিদেশী অদেশে ধায় আনন্দ হাদয়ে।
সে ৰূপ ছইবে তব মৃত্যুর সময়ে।
বীৰ দয়া প্রতিক্ষে, ভুঞ্জিতেছ এ জীবনে,
লইয়া ধাবেন তিনি অমৃত নিল্য়ে।।

হে নাথ ! ভোষার প্রেমে হইয়া মগন।
করিতে কোমারে পারি আত্ম-সমর্পণ।।
হেন যতি দাও এই দীন অভিকাশে।
কায়ে যাও আমাদের তুর্ব জীচরণে।।
ইতি বোড়ক ব্যাধ্যান সমাপ্ত।

ইতিয়ান কেনেঞ্ছ হৈতে উদ্ত। THE NEGATIVE AND THE POSITIVE ASPECT OF LIFE.

RELICION—a word in which we sum up he highest apprecians of life—is too often suposed to be nothing more than the duty of estraining our bankering after earthly happiess, and subdaing our passions. Asceticism ad left denial this come to be looked upon as he highest or the only virtues, the supreme hid for which they are merely a preparation

being forgetten. The conception that is thus formed of the glorious destiny of man is most poor. Life is assumed to be a purely nogative something. We are to say 'No' to everything, to refuse admittance to the heart to everything, we are to welcome nothing. seek nothing. The duty of conquering desire, which has been called the initial moral law. is almost imagined to be the end of existence. It is a certain narrowness of spirit a want of power to rise to the height of harman destiny-which causes men to confine their attention only to the negative aspect of life, and to lose eight of the final purpose we which sacrifice and renunciation lead the way. The heart is most insecure,—it is yet under the power of evil-which is not filled by fee vent hopes and bright visions of the higher world for the sake of which we are required to renounce this world. The soul was not made to shut its doors for ever. Impurity is to be driven out that Purity may come in. selfish desire is to be destroyed that Loco may reign supreme, the tumult of the world is to be kept as a distance in order that the voice of God may be heard. But our poor energies are often to sorely taxed by the sacritices which God exacts from as that we have not the strength to look up to the world of love and beauty to which the road lies through the secrows and trials of this life, When clouds gather around us, we find it. hard to think hopefully of the sun that shines above. Our hopes are faint; they live only as long as things wear a bright aspect but disappear at the approach of darkness , and as intervals of lucid calm are rather hare in this world, as struggles and trials abound, our view of life is associated with the most melancholy thoughts. Our hearts do not stand at a sufficient height above this world to see the circle of eternal light surrounding the little dark spot of earthly life.

we stand on very unsafe ground as long as our conception of life and religion continues to be a negative one, as long as the forement thoughts suggested by obedience to God and not of life and love, but of hardship and sacrifice. Can we say, we truly believe that the soul is destined to grow in love and beauty and to perceive more and more of the infinite beauty of God through eternity, until the light of such a faith subdues all earthly darkness

- and keeps the fountain of hope and love playing in the heart even when our dearest ones abandon us ? The soul cannot live on negations, it years for something positive to leed upon. We must realise the much that has is something more than she mond d scipine which consists in giving up claushood things, We were made to posses and not to renounce; to have, and not to give up , to grow 🛊 in love, and not to stary our afficient to We renounce I'm a short season in order that we may have, to over; our base and impure affections are to no concurred, in order that we may learn to be took. We obtain by giving up. We obtain most when we give up roest roudly. We give up the transitory in order that we say obtain the evernal. The possesses himself most trely, who surrounders sell appreciately to the will of God. Self-denial is the assertion of one's highest rights—the right is love God and to give up everything for he sake.

Roomeiation is no religion. People often renounce from the worst of notices. A wick od passion may become so strong at to in the a men sacrifice all his other interests and desires for the sake of it. Courage equal to that with which martyrs have submitted to their fate her been displayed in the worst causes. Remanciation is of value only war a it proceeds from the leve of God. A man cary subdue his passions without being at all religious, without loving and or over believing in the existence-of God. A heart which is free from impure de rec'iest does not love God, is like a hour on which things are in perfect order, but were to so our boss. Soft empress to precious aix as the preparation for our glety self in content to that. We must obtain perfect madery ever ourselves, morder character may give purselves what app to God. Where there is no growth re with any love, there is no true spiritual rife, the act reactions may have been made for the sine of deriv. It is a disagnous error to image. That selfcourted is the highest vertice, that the decimy of man is fulfilled merely by the attainment of a negative purity. It is not our highest mission to despise this life, but to love the higher life. Life is not barrenness, life is not poverty, life is eich, precious, sweet.—
it is the highest wealth bifers something more than bereavements and partings. We are impoverished and made to suffer, in order that we may be cariched and blessed. Let us ever pray to God that he may touch us to love him more and more that his beauty may completely possess our bearts. We must say 'No' to many an intruder only in order that we may welcome God with the whole soul. Life is not a set of 'Noes,' it is the affirmation of affirmations. Cod is and HE IS OWN OWN.

## বিজ্ঞাপন।

আগামী ৯ ই আবাঢ় সোমবার সন্ধা। ৭০ টার সময়ে ভবানীপুর জালাসমাজের একজিংশ বার্ষিক উৎসব হইবেক।

> প্রীপ্রীশচন্দ্র চৌধুরী। সম্পাদক।

আদি ত্রাহ্মসমাজের কার্যনির্বাহার্থে আ্যান মাদ হ**ইতে নিম্নান্থিত কর্ম**চারিগণ নুষ্ঠী কর্ত্তক নিমৃত্ত ইইলেন। য**ত দিন প্**নঃ পরিবর্ত্তিত না হয়, তত দিন ইহাঁরা হস্ত পদে স্থায়ী হইবেন। ১৭ জ্যৈষ্ঠ ডে ত্রাহ্ম সম্বং

মভাগতি।

শ্রীযুক্ত রাজনারায়ণ বহু

#### অধাক !

<u> অিযুক্ত দেলেন্দ্রনাথ ঠাকুর (পাস্</u>রেঘাটা)

(बहादांग हर्षे। शाक्षाय

, রাজারাম মুখোণালায়

ट्रेल्ड्रवष्ट्यः नट्न्साभाष्ट्राष्ट्र

,, অগৌরুষ্ণ দক

় ভ্ৰনীগো**হন চটোপাধ্যা**য়

, দত্যপ্ৰনাদ গৰে।পাধ্যায়

, খ্রীনাগ গিত্র

, বিদে<del>প জনাথ চাকু</del>র

ু পিছনাথ শান্তী

.. নুবা**ক্ত নাথ ঠা**কুর

THEORETTEE OR 1

শ্রীমুক্ত ব্রীন্দ্রনাথ ঠাকুর

সহকারী সংপাদক ও ঘ**র্রাধা**ক। প্রীযুক্ত নীলমণি চট্টোপাব্যায়

वनाधाक ।

শ্রীয়ক্ত শ্রীনাথ মিত্র

তৰ্বাদিনী পঞ্জিকার সম্পর্টিক। শ্রীযুক্ত বিজেন্দ্রীয় চাকুর

ভৰবোধনী পত্ৰিকার সংখ্যারী সম্পা শ্রীমৃক্ত হেমচক্র বিদ্যাবস্থ



# তত্তারোধিনী পত্রিকা

षण्णवाण्यसिद्सप्रणाणित्रात्यम् विश्वनारीणिद्दं सर्व्यस्यणत्। बदेव नित्यंश्वाममन्त्रः शिवं खन्नविद्यययभेकभविद्य सर्व्यवापि सर्व्यनियम् सञ्जात्रयसर्व्यवित् सर्व्ययक्तिस्त्रुतं पूर्वसप्रतिसमिति । एकस्य सर्वेदीपास्त्रस्य पारतिकसेदिकश्च प्रमानवितः तिस्तान् मोतिसास् प्रियकार्यां साधनश्च तदपासनसेव ।

# विद्राद शूक्य।

িয়া কি আঁধার ঘোর। নেবের সতন নে হিয়া আঁধার পুরে বিভূতে প্রুষ ক্ষুরে, বিভূতে আঁধার মেঘে যথা স্কুশোভন।

এক কৃষ্ণ মেঘে ভায় বিকৃত্তি চঞ্চল।
বিকৃত্তি-প্রুষ দিব্য নিপিল জগত দেব্য
নিখিল জুংখের নেদে ব্যক্ত আবরল।

যেথানে মাতার চক্ষু পুত্র-শোকে ঝরে, বিত্যুৎ পুরুষ মেথা মুছা'তে হৃদয় ব্যথা তালেন সহস্রকর শান্তি-রূপ ধ'রে।

বিপদের মেহে তিনি বিজ্যুৎ সম্পদ।
ছুপের জনদ যেথা, স্থুপ জ্যোতি তিনি মেথা,
বন্ধনের মাঝে তিনি জ্যোতি মুক্তি-পদ।

্র র্তুতে অয়ত রূপে অনন্ত প্রকাশ।

দুর্বলের মহাবল নিরাশে আশার স্থল

নিরাশশে আনুন্দের বিমল উচ্ছাদ।

যেখানে সেখানে হের – শূন্যে অক্ষকারে, দিবাপ্রভা নিরমর্গ, সমেছে ভাহার খোলা শত অবস্থ যেঘ তাহাতে নিবারে কেন তবে হে মানব হও হতাখাস ? যে আলো এ বিশপরে সকল তিমির হরে. দেখ চেয়ে তিনি তব হৃদয়ে প্রকাশ !

## আদি ব্ৰাহ্মসমাজ।

১ আঘাড় রবিবার ৫৬ বোকা সমূৎ। আচার্য্যের উপদেশ।

পরমান্ত্র। আমাদের লক্ষ্য, জগং সংসার
উপলক্ষ, এবং আমাদের বাস চুরের মধ্যস্থলে। সংসারের দিক্ দিয়া দেখিলে সেই
উপলক্ষই সর্কাপেক্ষা আমাদের নিকটের
বস্তু, লক্ষ্য স্থার-গম্য; ত্রাক্রাধর্ম তাই বলেন
"দুরাৎ স্থান্তর"। আত্রার দিক্ দিয়া দেখিলে
উপলক্ষ্যে বাহিরের বস্তু, লক্ষ্য যিনি তিনিই
অন্তরের বস্তু; ত্রাক্রাধর্ম তাই বলেন "তদিহান্তিকে চ। পশাৎস্থিতৈব নিহিতং গু
হায়াং"। তিনি নিকটে এইখানে। যাঁহারঃ
দেকেন ভাঁহারা এইখানেই তাঁহাকে আত্রার
স্থান্ত্রক্র প্রদেশে নিহিত দেখেন।

পরমাত্মা নিরস্তর আমাদের অন্তরে বর্ত্ত-মান আছেন,তবুও যে আমরা তাঁহাকে অন্তরে উপলব্ধি করি না—ইহার কারণ কেবল আ

সর্বপ্রথমেই তিনি আপনারলকা ঠিকু করিয়া গন্তবা পথে প্রয়াশ করেন। উভ বৃদ্ধিলকা ঠিকু করিবে; প্রয়ন্ত্র—দাঁড় টানিবে, হ্রদয়ের উৎসাহ—পাল পাইবে; এইরূপ হইলেই মনো-নোক। ক্রমে ক্রাভিমুখে শুঙানর হইবে, এবং আত্মা পরপারে উত্তীর্ণ হইয়া ব্রহ্মান লাভ করিবে।

পরনাত্বাকে অন্তরে উপলব্ধি করিতে হইলে আমাদের লক্ষাকে পরিশুদ্ধ করা 
মর্কাত্রে আবশাক। শাস্ত্রে ইহাকে বলে 
চিত্তগুদ্ধি। চিং বা চেতন পদার্থের প্রথম 
কুরিতাবস্থাকেই চিত্ত কহে; — চিত্ত কি-না 
সন্ধানাত্রক মনোনতি,— যেমন অভিসন্ধি, 
অনুসন্ধান লক্ষ্য ইত্যাদি। চিত্ত অন্তঃকরণের 
মূল প্রদেশ। অন্তঃকরণের মূল পরিশুদ্ধ 
হইলে তাহার আগাদ-মন্তক সমস্তই পরিশুদ্ধ হয়, এই জন্য শাস্ত্রে চিত্ত-ভৃদ্ধির 
এতাধিক প্রশংসা।

পরমাত্মাকে লাভ করাই চিত্ত-শুদ্ধির চরম লক্ষ্য; – চিত্ত-শুদ্ধির উপায় প্রধানতঃ চারিটি; – আত্মদংযম, সংকার্যের অমুর্তান, মাধুমস, এবং ঈশবেতে হৃদয়-সমর্গণ।

প্রথম, আত্ম-সংযম। যখন আমর।

যন্য ব্যক্তির অসৎ অভিসন্ধি বৃথিতে পারি,

তংকণাৎ আমরা তাহার প্রতি কর ইই,—

তবে কেন আমাদের নিজের অভিপ্রায় অসৎ

হইলে আপনার প্রতি আমরা কর না হই ?

যাহাকে আমরা ভালবাদি, ভাহারই আমরা

দোষ সংশোধন করিতে সচের হই, তবে

কেন আপনার লক্ষ্য-শুংশ-দোকের প্রতিকার

না করি ? আপনাকৈ আমরা যৎপরোনাত্তি

ভালবাদি,—তত্তে কেন আপনার মন্দ্র-প্র
দেশে সাধ করিয়া বিশ্ব-বীক্র পোরে করি ?

আমরা যথন যে কোন কালে প্রায়হ হই,

তখনই মনকে একবার জিল্লালা করা উল্লেখ্য

सारमञ्जल देवभन्नीछ। वाहिरतत वस्त রাশিতে আমাদের লক্ষ্য এমনি তম্ম হইয়া িরহিয়াছে যে, ভাহারাই আমাদের অভরের ঐহিক জীবনের গাত্রে শেই করিয়। লেথা রহিয়াছে—"এ কেবল একটা উপলক্ষ মাত্র"; किन्छ यागता जाहा दुनि ना-देन्हिक জीवनह আমাদের মর্কপ্রধান লক্ষ্য--ভাধ্যাত্মিক জী-বন আমাদের নিকট কিছুই নছে। পরিমিত একটা উপলক্ষ, ধাহা দুই দিনের জন্য বই নম, তাহাই আয়ালের প্রধান লক্ষ্য-প্রধান অবলম্বন, লালির একটা বাঁধ তামাদের প্র-ন্তরের তুর্গ। মুগত্ঞিকার ছলনা ইছা অ-পেক্ষা অধিক হইতে পারে না! যাহ্য গ্রন্ধা, তাহাই আদর্শ; যেমন আদর্শ তেমনি পরি-সংসার্ই যদি আমাদের একমাত্র লক্ষা হয়, তবে আমাদের জীবন দেই আদ-র্শেই গঠিত হুইতে থাকিবে, ভাহার পরি-ণামও তদ্মুরূপ হইবে। অগৎ সংসার रमभन शतिवर्जनशील, भारमातिक न। दिन्हिक জাবনও হবিকল দেইরপ; যেমন উঘা কালের পর পাতঃকাল, তেম**নি লৈশনে**র পর বালা: মেনন প্রাতঃকালের পর মধাক, তেমনি বালেরে পর যৌবন; সেমন মধ্যাত্তের পর অপরাজ, তেমনি যোকনের গড় জ্যোচা-বস্থা; যেমন অপরাচ্ছের পর সায়াম্ব, তেমনি প্রোঢ়াবস্থার পার বার্দ্ধিকা; সংসার বাঁহার लका, मश्मातरे डाहात कीवरनत ज्ञानम्,— रेपरिक जीवनरे छाराउ এदमीख जीवन;--আধাাত্মিক জীবন ভাঁছার নিকট নিভাড়ই **প্রহেলিকা** ;- "দুরাহ সদুরে"।

এইরপ লক্ষের বৈপরীতাই আমাদের আধ্যাত্মিক সকল রোগের মূল; অতএব কূলা-সুদারিণী নৌকার কর্ণ-ধার ঘেনন দর্ম-প্রথমেই নৌকার কর্ণকে ঠিক্ করিয়া ধরিয়া থাকে দেইরূপ মঙ্গলেচ্ছু ব্যক্তির কর্ত্বল বে, ঠিক্ করিয়া বল, তুমি আমার হইয়া আমাকে
ভাঁড়াইও না—অকপটে তোমার মন্তব্য
কথা সমস্ত খুলিয়া বল"। আমাদের মনোমধ্যে ধনি কোন প্রকার কু-অভিসন্ধি দেখিতে
পাই, তবে তৎক্ষণাৎ কর্ত্তব্য যে, আমরা
আপনাকে তজ্জন্য যথেপ্ত তিরকার করিয়া
তাহাকে দূর করিয়া দিই,—যেন মনে করি
শে, আমাদের কোন প্রিয়তম আপনার
লোককে তিরকার দারা সংশোধন করিতেছি,

•এবং সংশোধন না করিয়া কিছুতেই ক্ষান্ত হইতেছি না। এইরূপ যদি আমরা পু্খামু-পুঞ্জ অনুসন্ধান পূর্বকে আপনার মন হইতে সমস্থ ক্-অভিসন্ধি একে একে উম্মূলন করিতে পারি, তবে নিশ্চয়ই দেখিতে পাই যে, মনের আরোগা শরীরের আরোগা অপেকা সহস্রগুণে উংক্তা। যদি আমনা মনকে এরূপে গঠন করিতে পারি যে, তাহা কোন দিকে না হেলিয়া না তুলিয়া আপনার প্রাক্ত লক্ষা, অটল রূপে সমাহিত হইতে পারে — তবে সেরূপ মন কি-যে অমূলা রক্ত ভাহা বলা যায় না, তাহা পবিত্রতার আলয় —তাহা স্প্রি।

দিতীয়, নংকার্মের অনুষ্ঠান। পর্বের্ব বলিয়াছি প্রমালা আলার লক্ষা, সংদার উপলক্ষ। প্রথমতঃ পরমালার প্রতি লক্ষা দির করা আবশাক, দিতীয়তঃ আমাদের সন্মক্ষে যেরুগ যেরুপ উপলক্ষ উপস্থিত হইবে, তাহার উপযুক্ত সেইরূপ সেইরূপ সংকার্মে যত্র নিয়োগ করা আবশাক। এইরূপ হই-লেই লক্ষা এবং উপলক্ষ তুয়ের মধ্যে যোগ সংস্থাপিত হইয়া আমাদের জীবন-রুক্ষ ফলপ্রেপ সম্ক্রি-শালী হইয়া উটিতে পারে। রক্ষ যেরুন উপর হইতে সূর্ব্যালোক পান করিয়া পত্র-পূক্স-কল-সমূহে নানাবিধ বিচিত্র বর্ণ এবং বিচিত্র সোঁরভ উদ্গীরণ করে, সেই-রূপ পর্যাল্পার প্রসারক্ষাতিকে আমরানানা

উপলক্ষে নানা সংকার্গ্যে প্রতিফ্লিত করিতে পারিলেই আসাদের জীবন সর্কাপ্রস্থানর আধ্যাত্মিক পদবীতে আরোহণ করে।

তৃতীয়,সৎসঙ্গ। হাসাদের আধার্ত্তিক পথ
দৃচ করিতে হইলে সংসঙ্গ অতীন আবন্ধন।
আজা আরোল্য লাভ করিতে না কনিত্তিই
যদি কুসঙ্গের দূখিত বাল লাভার লাগে
দিশন করে, তবে তাহা আর মন্তক স্লিতে
পারে না; কিন্তু যদি শুনঙ্গের প্রতির বাল্
তাহার আরোগ্যে সহায়তা করে, তবে অচিন
রাখ তাহাতে স্বলায় বলের স্কার হল
পোষা হস্তীকে বনে ছাড়িয়া দিলে সে যেনন
জনম জনে বন্য হস্তা হইয়া সাহ, সেইরপ
সংযত মনকে কুসঙ্গের জীড়াজেতে ছাড়িয়া
দিলে তাহা জনে জন্ম অসংযত হইয়া সায়;
সারুসঙ্গের পবিত্র ছায়তেই সংযত মনের
যথোচিত বিকাশ সভবে।

চতুর্থ, পরমান্তাতে হৃদয়-স্থর্প। আত্ম-**সংয্য করিয়া, সংকার্যোর অন্মন্ঠান** করিয়া, সংসঙ্গ করিয়া জীবনের প্রধান উদ্দেশের প্রতি আমাদের লক্ষ্যকে দৃঢ়রূপে ভিত্ত করি-লাম, কিন্তু তখনও যদি আমানের কণ্ড সংসারের টানেই ভাবদ্ধ থাকে, যদ্ধি এরপ হয় যে, আমাদের লক্ষ্য প্রমান্ত্রার প্রতি আবদ্ধ কিন্তু আমাদের হৃদয় মংসারের যোহ পাশে জড়িত, তথে আমাদের জ্ঞান এবং क्षन्य पुरतः भरधा घन्म, छिशश्चिक इरेश এक है। ভূম্ল বাভ করিয়া **ভূলে। অনু**কূল বায়ু এবং প্রতিকূল প্রোত তুইই প্রবল হইলে যেমন তরঙ্গ-তাড়নে নোঁক। অধীর হইয়। উচ্চে. সেইরূপ অনুকূল জ্ঞান এবং প্রতিকূল হান্য **ठूरवर चन्नृ छेशन्दिक घटेरल गनर**क भाग-नारना जुकत रहा। (यथारन कागारण । छ्वान বলিতেছে "নতাং জ্ঞানমনন্তং ব্ৰহ্ম," মেখানে ষদি আমাদের হৃদয় বলিতে পারে 'আনন্দ-রূপময়তং ইদিভাতি," এবং হৃদয় ও জ্ঞান

উভয়ের যোগে আত্মা বলিতে পারে "শান্তং শিবম হৈছতং" তবেই আমাদের সমস্য আ-স্থার সুধা নিয়ত হয়। অদ্যকার দিনে ইহা কেহই অম্বীকার করিতে পারেন না যে,দকল সতোর মুলে এক মূল সতা দর্লিনান আছেন, পকল জ্ঞানের মূলে এক মূল জ্ঞান বর্ত্তমান আছেন-সকল অন্ত-বিশিষ্ট পদার্থের মূলে ্ত্রনন্ত-সরপ পরওক্ষ বর্ত্নান আছেন—তাঁ-হার সহিত কাহারো উপমা হয় না: কিস্তু কয়জনের হাদয় ভাঁছাকে চাঁয় ? - হাদয় যদি তাঁহাকে চায় তবে অবশাই তাহাকে পায়, — চায় না তাই পাল না ৷ জ্ঞান সত্য চায়-কি**ন্ত সতা** চাহিলেই কিছু আর সত্য পায় না,—মুসন্ধান আলোচনা পরীকা প্রভৃতি नाना छेशारम, छान, गठा छेशार्कन करता। কিন্তু হৃদয় যাহা চায় সে তাহা পায়ই পায়। ক্রোড়-স্থিত শিশুর স্কুধার উল্লেক হইবামাত্র গে যেমন তৎক্ষণাৎ মাতার ন্তন্য তুগ্ধ পায়, —তাহার চাওয়া এবং পাওয়া চুরের মধ্যে যেমন এক মুহূর্ত্তও কাল-বিলম্ব হয় না ;--म्हित्रा महत्त स्वय, भवया श्राव कना यथन्ह कारन - यथन है शत्रमाञ्चारक हास ज्थनहै छ।-হাকে পায়-প্রীতির এইরূপ প্রবল আক-र्वन। षरनक छाना हिंगानी व्यक्ति वटनन যে, ''ঈশ্বর যাহা দিবার তাহা আপনিই দে'ন, তাঁছার নিকট ভার্থন। আবার কি।" প্রার্থনা আর কিছুই নহে--ক্দয়ের চাওয়া। ব্যক্তি ভালবাদা চায়, সেই ব্যক্তিকেই ভাল-যাসা দেওয়া গাইতে পারেঞ,—যে ব্যক্তি তাহা চাহে না সে ব্যক্তিকে বলপূৰ্ব্যক ভাল-বাসা গ্রহণ করানো শায় না। অভএব পর-মাত্মাকে খিনি ঋদয়ের সহিত চা'ন-তিনি তাঁহাকে পা'ন, যিনি চা'ন না তিৰি পা'ন ি मा, - ने ध्वावधनाव এইটি সর্ফোচ্চ মূল্ড ভু। ए भद्रशार्थन् । ज्ञि भगस्र পিতা মাতা স্কং – তোমার মহান্ হান্য

শানাদের সকলেরই প্রক্তি আরুপ্ত রহিয়াছে;
—আমরা আনাদের কুত্র কদর তোমাতে
সমর্পণ করিয়া যাহাতে আমরা সংসারের
সমস্ত তুঃখ শোক অতিক্রম করিতে পারি ও
তোমার অয়ত রস পানে অমর হইরা সংসারের সমুদয় কর্ভরা সাধনের মধ্যেও সংসারের
অতীত প্রদেশে তোমার সঙ্গে থাকিতে পারি,
তুমি আমাদের প্রতি সেইরপ করণাবারি
বর্ষণ কর, এই আমাদের প্রার্থনা।
ও একমেবাদ্বিতীয়ং।

# প্রাচীন আর্য্যসমাজে পাপ ও প্রায়শ্চিত্ত।

পাপ শকের অর্থ পতন(১)। বাচিক ও মান্সিক এই ত্রিবিধ পতনের নাম भाष। বিধিবিহিত কার্গ্যের অনুসুষ্ঠান निन्छि कार्यात असूष्ठीन ७ है नित्रामिक्ता ইহা দারা এই পতন্টী দাধিত হয়<sup>(২)</sup>। পতন অবশ্য ত্রিবিধ হইতেছে কিন্তু সূক্ষা বিবেচনা করিলে আত্মার পতনেই আর তুইটার কার্য্য হয়। মনে কর লোভ একট্ম পাপ। ইহাতে কায়িক পতন হইল বটে কিন্তু সোভটী অগাত্ম। বাচিক পতনও এইরূপ বুঝিতে रहेरव, खर्वां बाजा यानन ना हहेरन वास्का পাপ বাক্ত হয় না। এখন সাহদ করিয়া অবশা বলা যায় যে পাপ মাত্ৰই আধ্যা-কিন্তু মণুষা সামাজিক। সকৃত কার্যোর নিজেই যেমন ফলভোক্তা। তেমনি সমান্ত অল্লাধিক তাহাঁৰ অংশী হইয়া থাকে। আমার পাপে আমার আত্মা মলিন হয় দতা কিন্তু আমি দমাৰ ছাড়া

<sup>(</sup>১) প্রাপত্তি।

<sup>(</sup>२) বিহিত্সান্ত্রাশাৎ সিক্তিনা চ সেবনাথ অনিগ্রহাচেন্দ্রিয়াণাং নির্বা

नरे, सामात जात्नक भाग नगात्मत समग्र न्यान করিয়া হয়। এই জনা পাপ বেমন আধ্যাজ্মিক তেমনি ভন্মধ্যে কতকগুলি কতক্টা সামা-জিক। একণে জিজ্ঞাসা এই যে, এই বিহিত মনুষ্য-সমাজ ৷ ভগবান মনু ব্যবহারিক ধর্ম্মের তিনি ব্যবহার ধর্মানির্দেশ-ব্যবস্থাপক। কালে কহিয়াছেন, যে ধর্ম রাগদেষশূন্য সাধু বিদ্বান কত্ত্বক অনুষ্ঠিত, এবং তাঁহাদের হৃদয় অসম্বোচে যাহাতে অকুজ্ঞা দিয়াছে তোমরা তাহা শ্রবণ কর<sup>(১)</sup>। মুমুর এই প্রমাণে বুঝা যায় একনাত্র আত্মাই ধর্ম্মাধর্ম বা পাপ পুণোর প্রমাপক। কিন্তু ইহা কুতাত্মা লো-কের আত্মা। খাঁহার কোনও রূপ পক্ষপাত ও বিদেয় নাই, যিনি দাধু ও জ্ঞানবিজ্ঞান-নাশন ভাঁহার আজা। প্রস্তরে উদ্ভিন হয় কি? তজ্জনা অবশা মৃত্তিকা প্রস্তুত করা চাই। এই বুসিয়াই মনু বলি-হাছেন কুতালা লোকের আজা ধর্মাধর্ম বা পাপপূৰ্ণৰে প্ৰমাপক। তিনি এই প্ৰাসঙ্গে অরিও একটা কথাবলিয়াছেন। তিনি বলি-য়াছেন, বেদাদি দাবা ধর্মাধর্ম বা পাপ-পুণ্য-নির্ণয়ে যদি সন্দেহ উপস্থিত হয় সে **স্থলে আত্মতৃষ্টিই প্রমাণ**ে)। তোমার হৃদয় शहाट अमन हहेरव भिष्किस्ता जाहाहे ঠিকু বৃথিও। সকল ধর্মশান্ত শীর্ষস্থানীয় दिवद्के पतिद्वा वर्षावर्षा वा भाभभूना निर्वत করিয়াছে। মঁকুও তাহা ছাড়েন নাই। जिनि (वनटक वर्षिष्ठे नमानत क्षिशार्टन। কিন্তু-কৃতাত্মা লোকের আত্মা যে ধ**র্মাধর্দ্রে**র প্রমাপক এবং সন্দিশ্ধ স্থলে ভোমার আছু-इष्टिरे ए उदिवदत्त तनतः श्रमान, अपीर दय

দিকে হৃৎপ্রতায় তাহাই ঠিক্তিনি এই স-কল কথা বিশেষ দৃঢ়তার সহিত বলিতেচ্ন। বস্তুতওয়ে সমস্ত শাস্ত্রকার প্রকৃত জ্ঞানী সাধু ও সরল-সভাৰ ভাঁহাদের হৃদয় হইতে প্রকৃত সত্য কথা প্রকাশ হইগা পড়ে। সেই গুলি দেখিলে স্পষ্টই বোধ হয় ইহা পূৰ্ব্বাচাৰ্দ্য-যসূর এই স্থল-টীতে তাহাই ঘটিয়াছে। কৃতাত্মা লোকের আত্মা ধর্মাধর্মের প্রযাণ বলাতে একটা ভয়ানক বেদবিরুদ্ধ কথা দাঁড়াইয়াছে। কিন্তু টীকাকারেরা বড় সাবধান। তাঁহারা এইরূপ বিরুদ্ধ স্থল পাইলে অমনি বেদমোহে তাহার অর্থান্তর কবিরাদেন। আনার সকল টীকা-কার তাহা করিতে চান না। মন্তু কছি-লেন কৃতাত্মা লোকের আত্মা ধর্ম্মাধর্ম বা পাপপুণোর প্রমাপক। টাকাকার গোবিদ্দ-রাজ তাহার ধথায়থ অর্থ করিয়া মনুর অনু-(यानन क्रिल्न। মেধাতিপিও প্রথমে সম্পূর্ণ মত দিয়া বেদভয়ে শেষে "অথবা" বলিয়া একটু দক্ষতিত হইয়া পেলেন কিন্তু অসরল কুলুকভট্টের গোবিন্দরাজকৃত ব্যাখ্যা সহা হইল না। তিনি চান বেদকে বজায় রাখিতে। কাজেই গোবিন্দরা**জ**কে অনদস্থ করা তাঁহার আবেশ্যক হইয়াছিল(১।। গাই হউক মনুর প্রমাণ এবং টাকাকারদিলের বাক্বিততা এই ছুইটা অভিনিবেশ পূর্ব্বক चारनाचना कतिरन म्लाहे त्वां इस स जा-স্বাই যে ধর্মাধর্ম বা পাপপুণের গুমাপক এইটা इक মন্ত্র প্রাণের কথা। এই জনা

<sup>&</sup>gt; বিৰভি: প্ৰেক্তি: নভিনিজি নক্ষেণ্যাগিতি:।

বন্ধনাজ্য ক্ষাতো যোগৰ্মত নিৰোধত।

ক্ষাত্মতাকৈ চ। মন্ন বৈকলিকে আৰু ছি প্ৰমাণং।
গৰ্মব্যান।

<sup>&</sup>gt; গোবিশারাজন্ত ক্ষরেনাভাত্ত্তাত ইতাজ্যকরণ বিচিকিৎসাশ্না ইছি রাখ্যাতবান্। তলতে বেদ-বিভিন্নস্থিতঃ সংশারহিত্ত ধ্যাইতি ধ্যালকণ্ড দেওে, এতক দৃষ্টার্থগ্রামগমনাদিসাধারণং ধ্যালকণ্ড দিলেন্। ন অন্ধতে। মেধাতিথিক ক্ষরেনাভাত্তাত ইতি যাও চিত্তং প্রবর্তীতি ব্যাখ্যায় অথবা ক্ষরং বেদঃ সহাধ্য-ভোতাবনাদিরপেশ ক্তক্ষমন্থিতি ক্ষর্মান্ত্রিভেত্ত

তিনি পাপপ্রানির্বয় ছলে ঐ শ্লোকটা সর্বাঞে বলিয়াছেন। পরে বেদাদির কথা।

এই পাপ পদার্থটা কি ভীষণ। ইহার ৰাস নরকে, সঞ্জোচ ও অশান্তি ইহার মন্তক, লোভ ও মোহ ইহার পদ, রোগ ও অবদাদ ইহার দক্ষিণ, তুশিচন্তা ও দারিক ইহার বাম এবং আর্ভনাদ ও हাहাকার ইহার পৃষ্ঠ। এই ভীষণ পিশাচ স্থপরিস্ক্রদে এই ভীম মূর্ভিটি প্রাচ্ছন করিয়া নিয়তই দারে দারে করিতেছে। লোকে ফাৰ্পাত্ৰস্ত শোভন স্থার নায় ইহাকে পান করে কিন্তু ইহার সভাব উদরস্থ ইইলে বিশ্বিকার উৎপাদন कतिता हैश एम्श्राकतनी वियकनति नागि (১) মন প্রাণ হরণ করিয়া থাকে কিন্তু ইহার षानिकान प्रकृत। किन्न मनुषा-शक्तिक कि চমংকার! এই অভ্নেহে দেখা বায় যদি তীব্র . বিষ কোনরূপে পাকস্থলীতে গিয়া পড়ে তাহা হইলে জড় শক্তি কোনও রূপে তাহাকে বাহির করিবার জন্য প্রাণপুণ চেঙা পায়। কখন কৃতকার্যা হয় কখন বা হয় ন। কিন্তু জড় অপেকা আত্মার শক্তি অনন্ত গুণে অধিক। মনুষ্য না বৃথিয়া এই পাপবিষ পান করে কিন্তু আত্মার শক্তি প্রাৰপণ চেষ্টায় ভাছাকে বাহির করিয়া দেয়। ইহাকে বলে ভোগাধীন পাপকঃ। জল অহিল ছাপাইয়া উঠিলে আপনাপনিই বাহির হয় এই বলিয়া কে পরীবাহ বা প্রণালী-প্রতিক্রিয়ায় বিরত থাকে ? এই জুরাই শাস্ত্রে नानाक्षण श्रायनिवास्य एष्टि 🕈

শ্বধিরা বৃধিরাছিলেন মনুষ্যসমাজের সৌন্দর্যোর হেড় ধর্ম ও মৈত্রীভাব। এই ছুএর এমনি থনিষ্ঠ যোগ দে একের অভাবে জনাটি স্থায়ী হয় না। যেথানে ধর্ম সেই খানেই মৈত্রী আবার মেখানে নৈত্রী সেই-

খানেই ধর্ম। কিন্তু পাস উভয়েরই প্রতি-পন্থী। মনুষ্টোর কায় মন ও বাকে। পাপ প্রবেশ করিলে ধর্ম থাকে না স্থাবার ধর্ম না थाकित्न रेगजी त्ववन नाममाळ हरा। गतन কর এক জনের অধিকারে কডকগুলি দ্বীপুত্র পরিবার ও সকলের ভরণপোষণের উপযোগী কিছু অর্থ আছে। তুমি যদি লোভের বনী-ভূত হইয়া এইগুলি আস্মদাৎ কর ইহাতে धर्म ७ रेगजी थारक ना. कारकह नगारक व শাস্তিভঙ্গ হয়। এই জনা পরস্ত্রীরতি চৌর্যা প্রফৃতি গুরুতর পাপ। স্যাজ হইতে এই সকল পাপ দুর করিতে না পারিলে ভাহার অক্সোর্গ্ডব তো দূরের কথা গঠনই হয় না। আবার আর একটা দিক দেখ। কর্তব্য-বৃদ্ধি পারিবারিক বন্ধনের প্রাণও প্রতিষ্ঠা। এদেশে একামণভিতা চিরাগত প্রথা। কর্ভবাবৃদ্ধি এই ভাবটা রক্ষা করিয়া আসিতেছে। নতুবা বিভিন্নপ্রকৃতি স্ত্রীপুরুষের একটা প্রাচীরে বন্ধ রাথা অসন্তব হইত। একের অধীনতা যে প্রত্যেকের স্বাধীনতা রক্ষা করে তাহা এই কর্ডবা বুদ্ধি। এখন মনে কর যদি তুমি পিতাকে অপহেলা কর, কি জ্যেষ্ঠ বা কনিষ্ঠ ভাতার ভার্মাকে গুরুপত্নী বা সুষা বলিয়া না বুঝ এবং ভনিবন্ধন যদি ভোমার সদাচারের কোনও রূপ ব্যতিক্রম ঘটে ভবে নিশ্চয় ইহা चादा পातिय। तिक भाखि ७ क हरे**रव। এই जनाहे** পিতৃদোহ ও সুষাগমন প্রভৃতি পাতকের মধ্যে গণ্য হইয়াছে। ফলত ধর্মা এই পারি-বারিক বন্ধনের জনক,পাপ ইহার নাশক,স্থত-द्रा॰ भाभ मूत्र कदिए ना भोदिरम सन्त्रमारखद নায়ে পারিবারিক গঠনত সম্ভব হয় না । এই কারণে অধিরা, যেমন মুমাজকে তেমনি এ-তেকে পরিবারকে তীক্ষ দৃষ্টিতে দেখিয়াছেন। गांथाजिक निशम तका नाकतिल (समन भाग পারিবারিক ব্যক্তিগত নিয়ুম রকা না করিলে তেমনি পাপ। ভাঁহার। ব্ৰিক্স ভিলেন তরস

<sup>(</sup>১) পূর্মকালে রাদায় রাজায় বিরোধ হটলে এই বিশ্বকন্য প্রয়োগ করিয়া অভীষ্ট সাধন করিছ।

একস্থলে উঠিলে সমস্ত সরোবর আলোড়িত হয়। সমাজের এক কোণে অগ্নি লাগিলে তাহা ক্রমশই প্রসারিত হইয়া পড়ে। এক সময়ে অবিদিগের অসুবীক্ষণের পরীক্ষায় অনেক পাপ বাহির হইয়া পড়ে, তাই আজও আমরা গৃহেও সমাজে শান্তিস্থ পাইতেছি। আজও আমাদের পারিবারিক বন্ধন ছিম হয় নাই এবং মুমাজও অব্যাহত আছে।

এতদ্বাতীত আর এক প্রকাব পাপের কথা ্লি। ইহা সংশাত্যাগ ও জাতিভ্রংশকর কার্সা। এই উদার হিন্দুধর্শ্মের একটা হল पार्ट, जशाय कालिएडंएव मण्यार नारे। দে খল ব্রক্ষাজ্ঞানী পরমহংদ। যদি গ্রহ্নজ বলজান জ্বে তথন ভেদজানের মূল জাতি পাস থাকিতে পারে না। ুকিন্তু প্রকৃত জানের অভাবে বর্ণাপ্রায়র্প্য' যদি অপরিহার্য্য হইয়। উঠে তবে জাতিভ্রংশকর কার্মা পাপ। ৬ ৮ সময়ে বর্ণচত্ত্তীয়ের মধ্যে অনুলোমে বিবাহ চলিত। এই রীতি মুগধর্মপ্রভাবে রহিত হই গ্রাছে। কিন্তু মনে কর যদিই অনু-লোম ও বিলোমে ইহার পুনঃপ্রবর্ত্তন। হয় ভাহ হুইল্লে ইহা দারা পাতিত্ব জন্মিরে, বর্ণ में हे हरे (४, विदल्लामक शृज्ज वर्गमक (४व मार्स) গণ্য হইবে কিন্তু তোমার জাতিত্ব লোগ হইবে ना। किञ्च अयुरनाम वा विरनामकारभरे হউক যদি কোন আর্গেডর জাতির সহিত হয় ইহাতেও কেবল ভোমার ধর্মা নপ্ত হইল, জাতি নঞ্চইল না; কিন্তু এই অসুলোম বা বিলোমপুত্রে যে সম্ভান জন্মিল জাতি তাহারই ষাইবে, কারণ জাতিত্ব জন্মাধীন। মোট কথা যতক্ষণ হিন্দুর সহিত হিন্দুর রক্তসংশ্রেব ও ধর্মানম্বন্ধ ততক্ষণ সে হিন্দু। ইহাই শাস্ত্র এবং ইহাই শতীত ও বর্তুমানের ব্যবহার। এম্বলে প্রসঙ্গত একটা কথা আসিতেছে। এই স্ব-ধর্মত্যাগ ও জাতিভ্রংশ্কর কার্য্য শাস্ত্রসন্মত

একটা পাপ বনিয়া বোধ থাকাতে হিন্দুজাতির বিশেষ উপকার হইয়াছে। ইতিহাস পাঠে জানা ধায়, যে জাতি জয়পরাজয় নিবজানা ধায়, যে জাতি জয়পরাজয় নিবজান অন্য জাতির সহিত গোনসহলে মিশিয়াছে তাহার মূলজাতিত্ব বিলুপ্ত এবং সে
জিত জাতির জাতির প্রাপ্ত হইমাছে। একথে
দেথ, এই হিন্দুজাতির মন্তকের উপর দিয়া
কত জয়পরাজয় চলিয়া গেল কিন্তু ইহাবঃ
সেই সরস্বতীতীরের যে হিন্দু এখনও সেই
হিন্দু। ইহার কারণ আর কিছুই নহে কেবল
হিন্দুর স্থান্মত্যাগ ও জাতিত্রংশকর কার্যের
উপর পাগজ্ঞান।

যাক্। এই মনস্ত পাপ শান্তে অভিপাতক মহাপাতক প্রভৃতি নামে নির্দিষ্ট আছে। এই সকল পাপের খিনি বৃদ্ধি দেন, যিনি অনুনো-দন করেন এাং যিনি উপকরণ দেন তিনিও পাণী। পাণীর সংশ্রবে গাপ। জন্যের পাপকাষ্য দর্শন ভাবণ ও অনুধ্যানে পাপ। এখনে তুমি বলিতে পার পাপীর সংশ্রব না রাখিলে তাহার উদ্ধানের উপায় কি। ঋষিরা তাহাদের উদ্ধারের কথা বিশ্বত হন नारे। रेश करमरे एक घरेता किन्न তুমি কি দৃঢ় বিশ্বাদের সহিত বলিতে পার যে পাপের বিষ্বায়ুর মধ্যে থাকিলে জেমার নির্মাল আত্মায় কখন না কখন কালিমা পড়িবে না ? যদি তুমি ইহা বলিতে পান তবে তুমি মনুষ্য নও দেবতা। ঋষির ব্যবস্থ। তোমার পকে নয়। কিন্তু ঋষিরা জানিতেন যাঁহাদের সমস্ত **জীবন তপঃ**কৃত্যাগ্রে উৎস্প্ত, যাঁহাদেন পুর্ণা**জোতি ত্রিভুবন** পবিত্র করিত, আমরা বর্তমান শৃতাকীর সভ্যতার ष्यूरतार्थ छाँशामत नाम कतिए हाहि ना কিছানেই সমস্ত ঋষিরাও পাপীর সংস্থাবে আশ্রম কলন্ধিত করিয়া যান।

এক্ষণে প্রায়শ্চিতের কথা বলি। প্রায়-শ্চিত পাপের মহোষধ। প্রায় ২পে -

তপ, চিত্ত নিশ্চয়(১) যে কার্যা পাপক্ষয় সাধন বলিয়া নিশ্চিত তাহাকেই প্রায়শ্চিত বলে। मृर्व। खेमग्र इंहेल्न (धमन खन्नकात नहे ह्य দেইরূপ প্রায়ন্চিত্ত করিলে পাপ নই হইয়া থাকে (२)। পাপ জ্ঞানত্ব; অজ্ঞানত্বই হউক পুনর্কার তাহার খনুঠান না করিলে তাহা হইতে নিষ্কৃতি পাওয়া যায় (৩)। স্বকৃত কার্যোর খ্যাপন অনুতাগ তপদ্যা অধ্যয়ন ও দান এই গুলি পাপ হইতে নিফুতি পাইবার উপায় (৪) ৷ শ্রীরশ্রেষণ ও ইন্দ্রিসংখ্য ইহাও উপায়ত। গ্রাপ করিয়া অনুতাপ করি-লেই পাপমুক্তি ২য় কিন্তু এইরূপ গহিত কার্যা আর করিব না এইরূপ দৃঢ় পণ করিখা তাহা হইতে নির্ভ হইতে পারিলে তবে প্রিত্র হওয়া ধায়(খ। প্রাচীন ব্যবস্থাপান্তে প্রায়ন্তিত विति এই क्र भेरे निष्ठि षाद्ध। अकृत अरे श्री श्रद्ध विधि कि ना जाशत जात्राहन। আবশ্যক। মনুষ্য ইন্দ্রিয় দমন করে না, বিধি निर्वर मारन ना अहे जना भाभ करता भाभ ক্রিবার পর যদি শত রুশ্চিকের দংশন-জালা ভাহার অন্তঃ দক্ষ করিতে থাকে ভাহাকে বলিব অনুতাপ। এই হইল প্রায়শ্চিত। কারণ লকণের সহিত সমন্বয় করিয়া বুল, বাইতেছে

ইহা পাপের করসাধনতে নিশ্চিত। কিন্ত পাপমুক্তি ও পবিত্রতা দুইটা স্বতন্ত্র কথা। এই জন্য হির হইল দুড়পণ করিয়া পালের পুনরায়তি নিয়ত করাই পবিত্রভা। কিন্তু মনে কর অমুতাপে পাপমুক্তি ও পুনরারুত্তি নিরোধে পবিত্র**াও হইল। অথচ ফলে** কিছুই হ**ইল না। কারণ অল্লপ্রাণ মনুয্যের** एए जा दछ वाभिक कान थाक ना। अहे बना বলা হইল পাপক্ষয় বিষয়ে অধায়ন ও তপস্যা চাই। অধ্যয়নে বিধিনিষেধ বোধ হইবে। আর তপদ। অথে শমদমাদি সাগন্। বিধি নিবেৰ বোৰের সাহত যদি শমদ্যাদি সাধন থাকে তাহা হইলে পাণের কি সাধ্য ষে সে আর ত্রিদীমায় আইসে। এই ইইল আ-ধ্যাত্মিক পাপে আখাত্মিক প্রায় - চত্ত। কিন্ত ইহাতেও যদি তুট অস পথভ্ৰত্ত হয় তবে ভাহার অদৃত্তে কথাপাত। এইটা হইল শরীর-শোষ্ণ ও দান। শরীরশোষণে বীষাহানি এবং তাহার সহিত দক্ষ প্রকার ই ক্রিয়ই নি-স্তেজ হইবে। আর দান অর্থে স্থিনাশ। স্বাৰ্থনাশে মানুষ পথে আইদে। এখনও যে পানে অর্থদণ্ড হয় ইহার অর্থ এতদাতীত কিছুই নহৈ। **এই** প্রায়শ্চিত**ি**শি গ্রদঙ্গে একজন পুরাণকার অতি দার কথা বলিয়াছেন। এখনে তাহার উল্লেখ আব-শ্যক। তিনি কহিয়াছেন, প্রায়শ্চিতি বিধি তো অনেক প্রকারই আছে কিন্তু তথাগে ত্রন্ধাযুশ্মরণ সর্কোৎকৃষ্ট(১)। এইটা বস্তুতই সার কথা। এই ত্রকানুমারণের সহিত্ত আত্ম-বোগ অবুদাত। আমি কে, এই কৰ্মভূমিতে আমার জন্ম কেন, তারি আমার লক্ষাই বা কি, মানুষ এই সকল যথন আলোচনা করে তখন নরকের ঘূর্ণাবর্ত আর কি ভাহাকে টানিতে পারে।

777

<sup>&</sup>gt; প্রায়ণ্ডিস্তান্যশেষাণি তপঃকর্মাত্মকানি বৈ। 💛 যানি তেবাং মশেষাণাং এক্যান্ত্মরণং পরং।

প্রাম্থেলাম তপ্রপ্রোক্তর চিতর নিন্দর উচ্চতের তপোনিশ্চরসংযুক্তর প্রায়শ্চি লামাত ক্তরে।
 প্রক্রির।

২ উদ্যক্ষন যদ্ধানি হাস্তমঃ নকাং বাপোংত।
তদ্ধং কল্যাণ্যাত্তন স্প্ৰং পাশং বাংগাছতি।
কল্যাণ্য প্ৰায়ণিতং। ঐ

ত অজ্ঞানাৎ যদি বা নোহাৎ ক্ল্যু কর্ম বিগহিতং।
তত্মাৎ বিগ্রন্তিম্বিজন হিত্তীয়ং ন গ্লাচরেৎ।
মন্ত্রী

৪ খ্যাপনেনার তাজেন ত ংমাধারনেনাচ। পাপকুৎ মুচ্চতে গোপাই তথা দানেন চাপদি।

মক্ত।

« শোষণেন শরীবস্থা তপ্দ। গ্রেনেন্ড।

পাপক্ষ মুচ্যতে পাপাই গ্রেন্ন্চ।

কুছা পাণংছি দলপ্য তত্মাং পাপাং প্রমূচাতে।
 নৈতং কুর্য্যাং প্রনারিতি নির্ত্যা পুরতে নরঃ।

এই তো গেল শাস্ত্রোক্ত প্রায়শ্চিত। আমরা এথমে বলিয়াছি পাপ সমাজের হাদয় স্পর্শ করিয়া হয় এই জনা তমধ্যে কতকগুলি কতকটা সামাজিক। পূর্বেব এই সামাজিক পাপের প্রায়শ্চিত নিমিত্ত একটা সভা হইত। ইহার নাম **देश**व মভাসংখ্যা সর্বান্ডন্দ পরিষং। তক্ষিংশতি। এই সমস্ত সভোর বেলান্ত ও মীমাংসা জ্ঞান আবশ্যক। হেত ও তর্কসাদে বিশেষ নিপুণতা চাই। ইহারাধর্মপাঠক (১)। মনুষ্য পাপ করিয়া স্চাত্রে ইইাদের শ্রণপেল হইত এবং ইহা দিগকে প্রাংশিচন্ত বিধি জিজ্ঞায়। করিত। िस এইका। जाजूमिक्ट्स्टक यिनि जानि-াতি বিধি বাবস্থা না বলিতেন তিনি পাপ-ভাগী()। আর খিনি রেই লোভ ও মেই বণত বিধি চেবছার অন্যথ। করিতেন তিনিও পাগভাগী <sup>(৩)</sup>। মিন্তু **অমুগ্রহে**র স্থল আছে। শাহার। তুর্মল ।শশু বা বৃদ্ধ ভাহার। জ্ঞু-व्याहरक)। अध्यान वायस्थानः कार्यः वास हम ना। देशरे भाज।

## **\***বৈজ্ঞানিক ধর্ম এবং আধ্যাত্মিক ধর্ম।

কন্টির যাঁহারা অনুরক্ত ভক্ত ওঁ। হাদের এই বিশ্বাস যে যাঁহাদের ঈশবে ও পরকালে

১ একবিংশতিসংখ্যাকৈনীমাংসাবেদপারগৈঃ ; বেদাককুশলৈন্চৈব পরিষৎ সংপ্রকল্পেই।

আন্ধরা। ত্রৈবিদ্যো হেতুকস্তর্কী নৈরুকোধর্ম্মপাঠক:। ইত্যাদি

ৰত্ন । ২ সাৰ্ত্তানাং মাৰ্গমানানাং প্ৰায়শিকতানি যে দিলাঃ। জানস্তোন প্ৰথক্ষতি তেগি তদোৰভাগিনঃ।'

বম।

ত মেহাৰা যদি বা লোভাৎ মোহানজানতোপি বা।
কুক্তান্ত্ৰক্তিবত্ত তৎপাপং তেমু গছতি।

৪ হর্কলেহর্থাহঃ ফার্যান্তণা বৈ শি এবৃদ্ধারোঃ। অতোনাথা ভবেদোষ জন্মানার্থাহী ভবেৎ।

শ্রদ্ধা নাই, ভাঁহার; কম্টির ধন্ম-বিজ্ঞান পড়িলে ভাঁহাদের ধর্ম্মে মতি হয় ৷ মনুষ্টোর নানা প্রজাতি,—লোকের বর্ণ্ডা-প্রস্থ ভির উত্তেজকও নানা প্রকার; কম্টির বৈ-জ্ঞানিক ধর্মা হল্প যে, লোক-বিশেষকে গর্মা-পথে আকর্ষণ করিবে—ইছ। বিস্কৃই বিচিত্ নহে। কোন বিদান ব্যক্তি প্রাচ্চ প্রসূতি অবেশন করিয়া লোক-যাত্র। নির্ব্বাহের একট উপায় আবিষ্কার করিলে ক্লেবিদা লোক মাত্রই তাহা ভাল-ভাবে এহণ ক্ষিবেন -ইছানা করিবার কোন কারণ নাই। 🕫 डिशावरे रुडेक ना कन, वाजनामगरे रुक्ते -লোক-নিন্দার ভয়ই হউন্—বিজ্ঞানের অনু রাগই হউক্, যাহাতে লোক-ম্যাজ অনুভল এ ধর্মাপণে রক্ষিত হইতে পারে ভাহাই সং-(कत यथि नाच : किस खाशाद्ध (ग. মনুষা সন্থ গাকিবে, ইহা মনে নরাই তুল। লোক-ন্যা**জ** রাজ্নীতির কলেচনিত্তে পারে, কিন্তু মনুষ্য তে। আন কলের পুরুল ন্যা যে, ভাগতেই ঘড়ে পাতিয়া দিয়া সর্ঠ চিত্তে কাল-মাপন করিবে: লোক-মুম্বাজ भामत्मत रहन हिन्द्र भारत — विस् २ २२ र তে আর জভূপিও নহে যে, যনের ভাচনা নিষ্ঠিষ্ট কৰুৱা-পথে গাবিত হইয়া নি সঙ্ থাকিবে। মনুষ্য কলের গভূল স্টাত্র সন্মত লহে,বলের ক্লি হইতেও সন্মত ন্ধে: सस्या वृत्रिया भगविया भञ्जान लाउन । जट চাহে—বাহিবের কোন-কিছু খারা চাহিত হইয়া সংগণে চলিতেও ভাব বেদি কৰে! কম্টির বৈভানিক ধর্মতার হদি মন্ত্রের এই স্থাগীনতা-প্রিয়তার যথোচিত মহাা রক্ষা করিয়া থাকে, তবেই 'নতন আনিক'ে বলিয়া কুত্রিদা মহলে জাহার ফে-এব নাম রটিয়া গিয়াছে,তাহার যাথার্থা হয়,নতের ভারঃ সম্পূর্ণ না ছউক কতক পরিমাণে পানাল **कां एक है भागिन हहेशा मां** काशा हा का मार्ग

নের পরিবর্ত্তে তিনি যদি বর্ত্তিয়ান' শতাব্দীর জন-সাধারণের মতকে,কিন্দা কয়েক জন কৃত-বিদা লোকের মতকে রাজত্ব দেন,ভবে তাহাতে লোককে একপ্রকার বল-দ্বালা বাধ্য করা হয়, লোকের জ্ঞানকৈ যথোচিত সংগীনতা দেওয়া হয় না। লোকের আসাচায় সতা সতা অমরত্ব—তুমি লোককে ডোর করিলা বলাইতে চাও যে, মরণশীল লোক প্রবাহের যে চির-· **স্থায়িত্ব, দশশা**লা বলেবতের নায় মৃত্যু খে-একটা চিরস্থায়ী বন্দোবস্ত —ভাহাই আ-মাদের যথেপ্ত অমরত, তার কোন অমনতে আমাদের প্রয়োগন নাই। লোকের আত্মার স্ফু তি অনন্ত জীবনের দিকে, অনন্ত ব্রক্ষা প্রের দিকে, অনন্ত সভাের নিকে, কুমি ত'লাকে বল পূৰ্ক্ষক পৃথিবীতে খুঁ সড়িয়া রাখিতে চাও। ত্মি বলিতেছ কর্তুব্যানুদারে পরেব জন্য কার্য্য করিবে, আমাদের শাস্ত্রও বলিতেছে কর্তুবান্তুদারে পরের অন্য কার্যা করিবে, তোমার আমার মধ্যে প্রভেদ কেবল এই যে, তোমার লক্ষা শতায়ু পার্ধিব জীবনের অস্থায়ী স্থ-স্তুন্দ, আমাব লক্ষ্য চিত্ৰাস্ অব্যাদ্ধিক জীবনের অটল আছ্প্রামাদ ও ভাষার অনুগত আর আর স্থ। মনুদার আত্মার খনন্দ্র সভা-প্রিয়ত। ও মঙ্গল-প্রিয়-ভাকে বল-পূৰ্ম্বক পৃথিবীতে গ্ৰোধিত কৰিয়। রাখিলে মনুষ্যের আত্মানা কাঁদিয়া থাকিতে পারে না—তুমি ভাহাকে কাঁদিভেও দিবে না—তোমাৰ মৃতন আৰিষ্কৃত বিজ্ঞান-শাস্ত্ৰ দিয়া তাহার স্থ চাপা দিয়া রাখিবে !—এ রূপ শাসন পীনাল্ কোড্ অপেকা **কিসে** (य, मून, जाश तुन। याम्र न।।

পরলোকের ভয়ে বা পানাল্ কোডের ভয়ে বাঁহারা কুকার্য হইতে বিরত হ'ন, আ-মাদের দেশে তাঁহারা ধর্মের কনিও এবিকারী বলিয়া গণ্য হইয়া থাকেন। কমটির ফেরপ অভিপ্রায় যে, লোকে বুবিয়া সম্বিয়া ধর্ম-

পবে চলুক্, আমাদের দেশের ভগবদগীত প্রভৃতি উচ্চ উচ্চ ধর্মশান্তেরও সেইরণ অভিপ্রায়,—উভয়ের প্রভেদ কেবল এই যে, কষ্টি আত্মার পায়ে লৌহ-শৃঞ্জল বাঁধিয়া তাহাকে পার্থিব থাঁচার মধ্যে প্রিয়া রাখিতে চা'ন, আমাদের শাস্ত্র আত্মার স্বাধীনতা-ক্ষেত্র অনার্ত করিয়া মনুষ্যের আত্মাতে জীবন সঞ্চার করে; আমাদের শাস্তের যাহা সার মর্ম্ম তাহা এই,—

একদিকে আমাদের এই নশর দেহ— আর একদিকে অবিনধর আত্মা। নধর দেহের এই যে, প্রাণ, ইহা অজ্ঞান-ভাবে আপনার অন্ধ উদ্দেশ্য সাধন করে,—সমুষ্টকে শৈশব হ্ইতে ঝোলারে, কোনার হইতে যৌদনে, যোৱন-হইতে বাৰ্দ্ধকো অলক্ষিত ভাবে উতীৰ্ণ कांग्रहा (एस,--- व शारनत स्कृ र्कि-स्कृ विषय-রাজা--এ প্রাণের তৃঞ্জিপরোক্ষ বা অপরোক্ষ हे जिल्ला-प्रा व्यवनयद आकार एवं खान, তাহার উদ্দেশ্য ওরূপ অন্ধ উদ্দেশ্য নহে— কিন্তু সজ্ঞান উদ্দেশ্য, ভাচার স্ফুর্ত্তি ক্ষেত্র অনন্ত সজিদানন পর্মায়া, তাহার তৃপ্তি ব্রহানন। যে ব্যক্তি আত্মার অনন্ত জীবু-নের মর্ম্মপ্রাহী সে বাজি অধিনশর আত্মার চিতায় আনন্দগয় উদ্দেশ্যকেই আপনার উপর আধিপত্য দেন; অনুচিত ইন্দ্রিয়াসক্তি ও স্বার্থপরতা সে উদ্দেশ্য-সাধন-পথের কউক-অরূপ, এই জনা তাহা হইতে তিনি বিরত इ'न। क्षांग रुगन महीत्रक नथत कींवनु-পৰে অগ্ৰসর করে, ধর্মা সেইরূপ আত্মাকে অবিনশ্বর জীবন-পথে অগ্রসর করে; 💆 প্রাণ যেমন পরীক্ষের স্ফুর্ডি-সামন করে, শর্ম সেই-রূপ আত্মার ক্ষুর্তি সাধন করে; প্রাণ-জিয়া অজ্ঞান-ভাবে সাধিত হয়, ধর্মাক্রিয়া সজ্ঞান-ভাবে সাধিত হয়; ধর্মাই আত্মার প্রাণ। আত্মার উদ্দেশ্য-সাধনের জ-অবিনশ্বর नाष्ट्रे धर्मा मण्जूर्व ज्ञादल धाराधिन, न्यम দেহের জন। ধর্মের অতি অল্লই প্রয়োজ-নীয়তা।

বৰ্দ্তমান সমাজের প্রতি দৃষ্টিপাত করিলে प्रथा घाँहेरव (घ, नाना लाटक नाना छेट्छ-লোর বশবতী হইয়া সংকার্য্যের অনুষ্ঠান করিয়া থাকে। কোন ব্যক্তি রাজ-শাদনের ভয়ে চুরি ভাকাতি হইতে বিরত থাকিয়া ফুষি বাণিজ্যাদি হিত-কাঠো নিযুক্ত হয়-রাজ-শাসন এখানে সংকার্য্যের প্রবর্ত্তক। কোন বাজি লোকিকতা রক্ষার জনা অভিধি-**मरकारत श्रद्ध इ'न—गांग। जिक भागन**हे ত্রানে সংকার্য্যের প্রবর্ত্ত । কোন ব্যক্তি থানা রাজ্য-রন্ধির উচ্ছেশে প্রজাদিগের সং সমূদ্ধি বন্ধন করেন,—বিষয়-বন্ধি এখানে মংকালেরে প্রবর্ত্ব : কোন ব্যক্তি কোন क वा वा नाउँ (बाद नायक (क कार्म कित्र) লোক-চিতকর কার্যা-বিশেযের অনুষ্ঠান ক-রেন, এখানে রসজ্ঞতা সংকার্ফোর প্রবর্ত্তক। এইরণ দেশ। ঘাইতেছে যে, লোক বিশে-ষের অনুষ্ঠেয় সংকাষ — প্রবর্ত্তক-বিশ্বের উপর নির্ভর করে। এখন জিজ্ঞানা এই যে কন্টি যথন বলিরাচ্ছন যে, "পাবের जना कार्या किंद्रव" उथन म कार्याद ख्रान-র্ত্তক তিনি কি ছির করিয়াছেন ? সে প্র-র্ভিক বোধ হয় এই যে, প্রত্যেক আজি ফ্রি পরের জনা কার্যা করে, তাহা চইনে স্মা-জান্তর্গত সকল ব্যক্তিই পরাকাণ্ডা উন্নতি প্রাপ্ত হয়; এটি অবশ্য উচ্চ অঙ্গের বিষয়-वृक्तित कथा, किन्नु धर्मावृक्तित कथा हेरा श्र-পেকাও উচ্চ। কন্টির অভিপ্রায় বোধ হয় এই যে, আমি যদি অন্য কোন ব্যক্তিকে মুখী করিতে পারি তক্তোহার মুখই আমার সুধ; --লোক-সমাজের ভবিষাৎ সুখ-সমূদ্ধি षामार्द्य প্রতিজ্ञ নের চেপ্তার উপর নির্দ্তর করে, আমি যদি আপন-চেপ্তায় তাহার বি-শেষ কোন সহায়ত৷ করিতে পারি তবে দ-

মাজের দেই ভবিষ্যৎ স্থাে আমি আপনাকে यर्थहे छथी छ्वान कति—जना त्कान छूथ আগার নিকট তেমন পূজা নহে। কিন্তু খা-হার স্থা আমি স্থী হটাত ইচ্ছা করি-তেছি—তাহার স্থই বা ক্যাদিনের জনা 🕈 जाभातरे रेखेक जात जार-१८३३ र्डिक----কাহারে৷ পার্থিব প্রথ একশত বংসরের ম-विक इंटेर्ड भारत ना ;— माजार कितपानी স্তুবের ভুলনায় একশত বৎসবের পার্থিত স্থপ কিছুই নহে। আপনার বা অনোব শুদ্ধ কেবল সেই অস্থায়ী পার্থিব স্থুখ-টুকুর প্রতি লক্ষা করিয়া কৈছ কোন কার্যা করিলে, তদুপলক্ষে আমরা এ কথা বলিতে অধিক ্রী নহি যে, তিনি কর্দ্ধবা-বোগে ঐ কাষ্ট্য করি-তেছেন; – হইতে পারে তিনি কর্ত্তরা বোণে ঐ কার্চ্য করিভেত্তেন,—হটতে পারে তিনি প্রবৃত্তির বশবর্ত্তা হইয়া ঐ কাগ্য করিতেছেন। যিনি রাজ-শাসনের ভাষে কোন কার্যাকে ক-র্ভব্য বোধ করেন, ভাঁহার সে কর্ভব্য-বোধকে षागत। कर्इता ताधरे विन ना, थायता दिन ८४. রাজ-শাসন ভায়ে তিনি উহা করিতেছেন-করিবা-বোধে নহে। যে কর্ডব্য-বোধের প্রব-র্ভক রাজ-শাসন তাহাকে যেমন আমরা ক-র্ভুষা-বোধ বলি না,মেইরূপ যে কর্ভুষা-বোধের প্রবর্ত্তক বিষয় বৃদ্ধি, বা বৈষয়িক ক্ষতিলাভ গ-পনা, তাহাকেও আমরা কর্ত্তবা-বোধ হলি না: কৰ্চব্য-বোধ বলি ভাচাকে ধাহার প্রবর্ত্তক— বিশুদ্ধ ধর্মা বৃদ্ধি। ধর্মা-বৃদ্ধির মূল – বিষয় নহে, কিন্তু আত্ম:। বিদয়-ছারা চালিত না হইয়া যে-কোন কার্যা করা যায় ভাহাই বিশুদ্দ রূপে আতার কার্যা; আর, বিষয়-ছারা চা'লত इहेशा कार्या कतिव ना- शालात सारी न का-র্ত্তিতে কার্যা করিব—এই যে বৃদ্ধি, ইহাই ধশ্য-वृक्ति। खिनियत खाञ्चात धर्मारे भन्मं ; नयत দেহাদির ধর্মা আর এক সামগ্রী। ক্তুত কার্যা-সকলে আত্মার ধর্ম্ম প্রকট হউক্—

ইহাই পর্না-বৃদ্ধির মর্নাভিষদ্ধি। এইরূপ ধর্ম-বুদ্ধি অনুসারে কার্য্য করার নামই কর্ত্তব্য বোবে কার্য্য করা 🔭 কার্য্য একই—কিন্তু ভাষা পাঁচ-ভাবের পাঁচটি প্রবর্ত্তক অনুসারে কৃত হইতে পারে: প্রথম, রাজ শাসন ভরে, •িৰতীয়, সামাজিক শাদন-ভয়ে; ভৃতীয়, বিষয়-বুদ্ধি অনুসারে: চৰ্গ, পরলোক-ভারে; প্রুম, ধর্ম ব্লি অনুসারে; এখন দেখিতে হইবে যে, অনুষ্ঠিত বার্মেল মূলা প্রবর্তকের উচ্চ-নীচতার উপ্রেই নির্ভর করে; অতএব, জিজ্ঞাস্য এই যে, কোন্টি অপেক্ষা-কৃত উচ্চ অঙ্গের প্রবর্ত্তক - বিষয়-বদ্দি না ধর্মাবৃদ্দি ? कम् हि वटलन, शतत क्रा कार्या कतिटर ; 'কেন ? না পরের তাহাতে গাণিব স্থ-সমৃদ্ধি व्रक्ति इहेर्दः, क्य निरमत अमा १ मा ७क শত বংসারের জন্য ; কার্যা-কর্ডার ভাছাতে কি ফল-লাভ হইবৈ ? না তাঁথার নাম অ-মর হইবে। আমাদের শাস্ত্রে বলে: পরের जना कार्या कदिटत ; दकन ? ना शद-वाङि তাহাতে নির্বিদ্ধে মঙ্গনের পথে অগ্রসর হুইতে পারে; কয় দিনের জনত অনন্ত কালের জন্যন, কার্যা-কর্ত্তার ভাষাতে কি কল লাভ হইবে ? স্বার্থ-পরতা পরাজিত হইয়া আত্মাতে অনায়িক মুক্ত-ভাব এবং নির্মাণ ৫৯মের **স্ফুর্ত্তি হ**ইবে—চিথার **আনন্দন**য় शत्रखरकत चार्तिकारतत अप **उत्रु**क हरेरत ; এই তুই আদদেরি মধ্যে কোন্টি অপেকা-ঁকুক উচ্চ, তাহার বিচা⊅কার্য্য পাঠক বর্মের স্থিতেচনায় সন্নত হইল।

বিষয়ী লোক এবং ধার্ম্মক লোক, তুরের
মধ্যে মর্ম্ম-গত প্রভেদ এই যে, ধার্ম্মক,
ব্যক্তি পরমান্তাকে জগতের কেন্দ্র-মান
জানিয়া সেই দিক্ হইতে জগৎ স্মবলোকন করেন : বিষয়ী ব্যক্তি বিষয়-রাজ্যক্রিকিন্দ্র হান জানিয়া সেই দিক্ হইতে
স্কাৎ স্মবনাকন করেন। সুর্ব্যের দিক্

रहेट जित्र **बन्द व्यवस्थानम् बन्धः त्यन्तः** বিজ্ঞান-দৃষ্টির অনুরূপ কার্বা সেইরূপ গর মালার দিক্ হইতে অগৎ অবল্যেকন করা अशाला-पृष्टित अमूतल कार्या। अशास्त्र अह একটি কথার প্রতি সবিশেষ প্রশিধান কর। কত্রা যে, জগৎ বেচ্ছু পর্মাল্লার আয়ভা-ধীন, এ জন্য বাঁহারে প্রমান্তাকে প্রীতি বরেন তাঁহারা তাঁহারই গ্রীতির মধা দিয়া অগৎকে প্রীতি করেন, – কিন্তু পরসাত্মা যে-হেতু জগতের আয়তাধীন নহেন, এজন্য याँ हाता एक কেবन জগৎকে धी जि कृतिशाहे ক্ষান্ত থাকেন ভাঁহারা প্রমান্তাকে ছাড়িয়া দিয়া অস্থায়ী পৃথিবীতেই মনকে নিম্মগ্ন ক-রিয়া রাখেন; তেমনি বলা যাইতে পারে যে, দৈহিক প্রাণ কেছেছু আব্যাত্মিক প্রাণের আয়তাধীন, এজন্য বাঁহার৷ রীতিষ্ঠ আধ্যা-ত্মিক প্রাণের ক্ষুতি সাধন করেন, দৈদিক প্রাণের স্ফুর্ত্তি-মাধনও তাহাদের কর্তবেশন মন্যে আদিয়া পড়ে; কিন্তু আন্যামিক প্রাধ श्रिट्यू देव**हिक** श्रीटनंत्र भाग्न स्थान नटर, ে জন্য ইছিরা শুদ্ধ কেবল<sub>ু</sub> দৈহিক প্রাণের ক্তি দাবন করেন তাছার। আত্মাকে ছা-ভিনা বিয়া নথার বেছের দক্ষে করেছ জরাজী হইয়া পৃথিবীর আকর্ষণে অভিভূক হইয়া পড়েন। বিষয়ী লোক যদিচ পর্যার্থ রাজ্য ছাড়িয়া দিয়া আত্মার ক্ষুদ্ধি হালাইয়া কেনে, কিন্তু গার্শ্বিক লোক বিষয়-রাজা ছাড়িয়া (म'म में) — विषय-ताकाटक छिनि शत्रभार्थकः অন্তর্ভুত করিয়। ল'ন ;—পরমাসার দিক্ দিয়া তিনি বিষয়-রাজ্য অবলোকন করেন পরমান্তার গ্রীতির মধ্য দিয়া, ভিন্দি ज्ञाटल विषय-ताका केलाइका करतेन ; शब माञ्चात जाधिश्रटार्व जनुतामी रहेगा जिल বিষয়-রাচনা আত্মার সামিশতা कदरन। कि देखित-रूप, कि नाव के दिस्स, कि गरमन चर्ग, कि देवर्गा-प्रयम्भितनके सिन

यथा नगरंत, यथा-পরিমাণে यथा-पिट्न, यथा-काटन উপভোগ करत्रन, — किन्न क्या आत काशांक छ पिरशांनन जिनि जेयत जिन्न जात काशांक छ प्रांन ना ; — हेश्तरे नाम अरमारत थांकिता जनांनक हिस्स अरमात कार्या निकाश कता; — जामाप्नत प्रांनन अर्थान अर्थान गांस्त रेशरे मसूषा-जीवरनत मर्क्तांक जांनन विनिन्ना ভূবোভূর গীত হইরাছে।

বাহিনের প্রকৃতিকে মনুষ্যের বর্ণে আনয়ন করাতে যেমন বিজ্ঞানের একটি অসাধারণ উপকারিতা ও চমংকারিতা প্রতীয়মান
হয়, মনকে আত্মার বর্ণে আনয়ন করাতে
গর্মার মেইরূপ একটি অসামান্য উপকারিতা ও চমংকারিতা জাজন্যরূপে প্রতিভাত
হয়। প্রকৃতিকে বশ করিয়। বিজ্ঞান যেমন
বৈশ্লিক প্রথব্য এবং গৌলার্যা ভোগের প্রথ বুলিয়া দেয়, মনকে বশ করিয়। পর্ন্ম-বৃদ্ধি
গেইরূপ আধ্যাত্মিক প্রথব্য এবং গৌলার্যা
ভোগের প্রথ্প্লিয়া দেয়,—সে প্রথ্যা এবং
সে গৌলার্যা স্বিরের দিক্ দিয়া আইসে—
বিয়ম্মের দিক্ বিয়া নহে।

ফল কথা এই যে, পর্যাত্মাকে মৃধ্যন্তলে পাইলে—জগতের সমস্ত যোগেরই মূল পাওয়া যায়; দেই চিন্ময় প্রেময় মহান্ প্রেময় প্রায় আত্মায় রোগ—আআয় শরীরে যোগ—আবার আত্মায় রোগ—আআয় শরীরে যোগ—আবার গাজিক জগতে যোগ—বাথাত্মক জগতে ভৌতিক জগতে যোগ—বেথানে যত প্রকার যোগ আছে সমস্তেরই মূল পাওয়া আয় সমস্তেই বিশদ হইয়া উঠে, নচেৎ জুক্ত বিবয়-রাজ্যের উপরে—জাইয়া লগত দেশ কলিলে—চারিদিক ঘোর ভারিল তার আফ্রাম পড়ে;—তাহাতে আয়া
দেশ বিবের পৃথি মনাজ্যে হইয়া বার—আম্রা মনেকরি সুরা মন যেবে আজ্মানত বিবার স্থানিক বিবার স্থানিক

চনার প্রবন্ধ হইবার নায় পরমাত্মাকে ছাড়িয়া ধর্ম-শাস্ত্রের আলোচনায় প্রবৃত্ত হইলে— ইচহা-পূর্বক এমনি এক জটিল গোলক ধাঁ-দায় প্রবেশ করা হয় যে, তাহার মর্গাভান্তরে প্রবেশ করাও তুজর—ভাহার মন্য হইতে বাহির হওয়াও তুজর।

কৃষ্টির স্বপক্ষে এই একটি বলিবার কলা আছে যে, ঈশবের, পরকালের, ও আলার **অস্তিত্ব বীকার** করা-না-করায় বিজ্ঞানের विष्ट्रे का जिन्द्रीकि इस ना, - आयता है हा অনেকাও অনিক এই বলি যে, বৰ্ণীক্রিয়ের কর্ত্তব্যতা স্বীকার করা-না কর।তেও বিজ্ঞানের किछूरे कठिन्युक्ति इस ना। দাপ লোক যদি কোনু একটি বৈজ্ঞানিক সভঃ আবিষ্ণার করেন, তবে ভাহাতে বিজ্ঞান যেমন উপকৃত হইবে, এক জন পাপী লোক সেই সত্য আবিকার করিলে বিজ্ঞান ক্ষে কোন অংশে, তাহা অপেকা অল্ল উপকৃত হইবে – ইহা বলা যাইতে পারে না। জ্ঞান পাপপুণ্যদর্শী আত্মার প্রতি নিডান্তই छनाभीन। याहा यजारतत छट्डबनात्र घट्डे, ও যাহা হীন্দ্র-গোচরে একাশ পার, তাহাই বিজ্ঞানের মূল উপাদান, কিন্তু আত্মা হয়ং না করিলে যাহা ঘটবার" নহে—প্রকৃতির অন্ধ উত্তেজনায় ঘটিবার নহে — এরূপ শাস্ত্র ভবিতৰা ঘটনা নহে কিন্তু কৰ্ত্তৰা কাৰ্য্য, মুলেই বিজ্ঞানের আলোচ্য বিষয় হইতে পারে না। ধ্রুব বিজ্ঞান-তত্ত্ যদি কিছু খাকে তবে তাহাঁ গণিত-তত্ত্ব ;--কিন্তু গণিত ভাৰ কেবল বিষয়-রাজ্যেই পাটে—আধাা-আহি রাজ্যে খাটে না। কম্টি যদি "এব-ज्या धरे जर्थ श्रुकिंगितम्म् भक्त वावहात ক্রিয়া থাকেন—তবে গণিত-বিজ্ঞান গর্মা তেই সাবৰ থাকা ভাহার পকে ভাল ছিল; **दनमेन विकान-नारस**द स्व द्य श्राप्टन गानि-**एक भिक्तिनि नार तारे तारे श**्चर्यन

छ ए परिशृत , जशाक्षेत्रधारमान (छ। कथा है मार्-्रयादन गनिटर्ज्य शिविषि म्रलिहे টলিতে পারে না। জীবতত্ত্ব হইতে স্যাজ-তত্ত্ব প্রবাস্থ সাণতের অগম্য বিস্তীর্ণ একটা জ্ঞাউরা-রাজ্য পড়িয়া আছে-- বৈজ্ঞানিক পদ্ধতি সময়ে সময়ে নবোৎদাহে মাতিয়া ভাহাকে আক্রমণ করিতে যায়,আর অমনি-নত-শির হইয়া ফিরিয়া আইদে; -বিক্তান কতবার রাবণের নাায় ভারে ভারে দোপান প্রস্তুত করিয়া ভড়পথ দিয়া আত্মাতে উত্তীর্ণ इहेबात (इहा शाह्यात्च-त्मत्व (मिशाह्य যে, কিছুতেই তাহার সে চেপ্ত। সফল হইবার নতে। আত্মার গুরুত্বও তৌল করা যায় না-ভাছার দীর্ঘ-প্রেমণ করা যায় না-স্তরাং কোনকালে তাহা যে গণিতের আয়-ভাত্যস্তরে আদিবে তাহার কোন সন্তাবনাই नाई, इंश दुविशाहे कम्णि रिक्जानिक तारकात চারিদিকে প্রাচীর গাঁথিয়া তাহার ও দিকে ঘাইতে তাঁহার শিষাদিগকে পুনঃ নিষেধ করিয়াছেন। তাঁহার বিরোধী পক্ষকে তিনি নান ভয় দেখাইয়া আধাাত্মিক রাজা হইতে ফিরাইয়া আনিবার চেটা পাইয়াছেন, ও তাঁহার ভক্তদিগকে নানা প্রলোভন দে-খাইয়া বৈজ্ঞানিক রাজ্যে ধরিয়া রাখিবার চেপ্তা পাইয়াছেন। ধ্রু আগতত্ত্ব ভাঁহার বৈজ্ঞানিক পদ্ধতি-অনুসারে পাওয়া যায় না বলিয়া তিনি একেবারেই ঠিকু ঠাক্ স্থির कतिया विमया আছেन (य, कोन टाइकी পদ্ধতি অনুমাৰেই তাহা প্ৰিয়া যায় আ; ভাঁহার এ কগাটিতে কিছু অতিরিক্ত বল-দুর্গ প্রকাশ গাইয়াছে। আমাদের বিশার এই द्व देवछानिक श्रवाली अनुमादि द्वमम् ध्रव পৰিত-তত্ত্ব প্ৰাপ্ত হওয়া যায়, আধ্যাপ্তিক গ্রালী অমুগারে সেইরপ ধ্রুব আত্মতত্ত ও ধর্মাতত প্রাপ্তির যায়,—এবং তাহাই মনুষ্য-ম্নাকের ক্রামতির প্রব ভিক্তি মূল।

# **डे**शाशान ।

श्र्वकारन अवशेष नाम मश्रदीना अ-থিবীর কোন এক রাজা ছিলেন। কিন্তু তিনি অন্যের তুল ভ এরপ অতুল বিভব লাভ করিয়াও তাহা স্বপ্নলক্ত জবোর ন্যায় নিতান্ত অকিঞ্ছিকর বুঝিতেন। যাহার প্রাপ্তি বা নামে মানুষ মোহে নিমগ্ন হয় অশ্বরীষ সেই বিভব যে অস্টায়ী তাহা জানিতেন। তিনি ভগ-বস্তক্ত এবং সাধুপ্রিয় সেই জনা বিভব ভাঁহার চক্ষে লোষ্ট্রল্ড ছিল। ছরিপদারবিন্দে তাঁছার মন, হরিগুণবর্ণনে তাঁহার বাকা, হরি-কথা-প্রদঙ্গে ভাঁহার কর্ণ এবং ছরির পাদ্-বন্দনে ভাহার মন্তক। হরির প্রদাদ স্বীকা-রের জনা তাঁহার ভোগ কিন্তু ভোগের ইচ্ছাতে নহে। কারণ প্রসাদস্বীকারে ভগ-ব্দুক্তিই রুদ্ধি পাইতে পারে। অশ্বীয় নিজের সমস্ত কর্মা হরির চরণে অর্পণ পূর্বাক ধর্মাশীল বিভাগবের সাহায্যে রাজ্য শাসন করিতে লাগিলেন।

জ্মণঃ দ্রীপ্রাদি পরিবার ও হস্তামাদি ভোগ্য বস্ততে তাঁহার আগজ্ঞি হ্রান হইয়া আদিল । কল্ড এইরপ নোকের রাজা-লাসন ও শক্রদমন অসম্ভব, কিন্তু বলিতে কি, ভক্তবংশল হরি নিশ্চিত নহেন। তিনি অস্থরীযের ভক্তিভাবে প্রীত হইয়া তাঁহার রক্ষাবিধানার্থ শক্রভয়াবহ চক্রকে আদেশ

এদিকে অন্দরীষ ত্লাশীল মহিষীর সাহিত্ত বংসরবাাপী ভালশীরতে দীক্ষিত। তিনি ব্রতান্তে কার্ত্তিক মাসে ত্রিরাক্ত উপবাস করিয়া কালিশীরুলে, সান করিলেন এবং মধ্বনে হরিকে তলকা আন্তর তাবে পূজা করিতে লাগিলেন। পানে ব্রাজাণগণের অন্ত-ভারতার পারধার উল্লেক্ত করিছেদে এই গরসারে সহতি কুলানা করিছেলেন এই

त्राक्षवादक श्राज्या । त्राष्ट्रा अवतीय श्राप्ट्रा-থানাদি দারা তাহার যথোচিত সংকার করিয়া তাঁহাকে ভোজনে অমুনোধ করিলেন। ছ-র্বাদাও সম্মত হইলেন এবং আবশ্যক কার্য্য निर्द्वाहार्ष कालिमीटि शंगन कतिरलन। जिनि উহার পবিত্র জলে ব্রহ্মধানে নিময়। এদিকে দাদশী অৰ্দ্ধ মুহূৰ্ত মাত্ৰ অবশিপ্ত আছে। हेरात मत्या भावता हारे। अश्वतीय अहे ধর্মানন্ধটে অতিমাত্র চিন্তিত হইলেন এবং ধর্মাজ্ঞ ব্রাহ্মাণগণ্ডে কহিলেন, বিপ্রগণ! ব্রাহ্মণকে অতিক্রম করা দোষ, আবার দাদ-শীতে পারণা না করাও দোষ। এরপ ব্যবস্থা আবশ্যক যাহাতে আমার শ্রেয় দয় এবং অধর্মাও না জন্ম। কহিয়াছেন জলপান করা খাওয়া না-খাওয়ার তুল্য। অতএব আমি কেবল জলপান করিয়া দাদশী ত্রতের পারণা করি। এই বলিয়া তিনি কিঞ্চিৎ জলপান পূর্ম্মক দুর্ম্মাযার আগ-মন প্রতীক্ষা করিতে লাগিলেন।

এদিকে মহর্ঘি তুর্বাদা কালিন্দী-জলে আবশাক কার্য্য সমাধা করিয়া উপস্থিত। তিনি বুদ্ধিবলৈ অন্মরীষের কার্য্য বৃঝিতে পা-রিলেন। জোধে তাঁহার সর্বাঙ্গ কম্পিত ঁএবং মুখ জাকুটাতে ভীষণ হইয়া উঠিল। তিনি অতিযাত্র বৃত্তৃক্ষিত। তিনি রাজার এই ব্যতিক্রম সহ্য করিতে না পারিয়া রোঘ-গদ্গদ স্বরে কহিলেন, এই রাজা ঐশ্বর্যায়ত্ত निर्धुत ७ षरिकत। ८२१ हेहात कंडमूत ব্দধান্মিকতা। স্বামি অক্যাগত অতিথি। এই বাক্তি আমাকে আতিখো নিমন্ত্রণ করিয়া ছিল কিন্তু অত্যে আমার না দিয়া স্বয়ৎ আহার করিয়াছে। আমি ইহার এই পাপের প্রতি-कल अथनर (न्याहेव। अरे विनिधा महर्षि प्रकामा क्यानस्त मस्टक्क स्टा **स्ट्र**भावन विमालने। अवे। यनिकाल सक्तिक हरेल । यम् (वे नामतीन किल्लाब कीठ ना बहेश

र्ह्य পरि मां ज़िंहिया तिहित्लन। হবির চক্র ভূক্ত-রক্ষায় আদিপ্ত। অগ্নি যেমন রুপ্ত মর্ণকে দিশ্ধ করে ভদ্রূপ ঐ চক্র অসি দশ্ধ করিয়া ফেলিল। এই অবসরে মহর্ষি দুর্ম্বাসা প্রাণ-ভয়ে পলাইতে লাগিলেন। করাল দাবানল ধেমন লকলক শিথায় দর্পের অতুদরণ করে তজ্রপ ঐ বিষ্ণুচক্র তুর্কাদার অনুনরণে প্রবত্ত হইল। তুর্বাসা স্থমের গুংায় প্রবিষ্ট হই-বেন তথায় ঐ চক্ত। আকাশ পাতাল সমুদ্র যথায় যান ত্থায় ঐ চক্র। যখন তিনি দেখিলেন আর কোখাও নিস্তার নাই তখন তিনি ভীতমনে ব্রহ্মার শরণাপল হইয়া কহি লেন, দেব। আমায় রক্ষা কর। একা কহি-লেন ঋষে! তুই পরার্দ্ধ সংখ্য কাল গত হইলে যথন দাহোদ্যত কালভ্রত্নের ক্রীড়া অবদান হইবে তখন সমস্ত বিশ্বের সহিত আমারও এই স্থান তাঁহার ক্রভঙ্গি মাত্রেই লুপ্ত হইয়া যাইবে। আমিই বল, রুদ্র দক ও ভৃগুই বর্ল, আমরা সকলেই লোকহিতার্থ তাঁহার আজ্ঞা শিরোধার্যা করিয়া আছি। তুমি তাঁহার ভক্তদোহী, **ভোমাকে** করা স্বামার সাধ্য নহে।

অনন্তর তুর্কাসা কৈলাসবাদী শিবের
শর্ণাপন্ন হইলেন। শিব কহিলেন, বৎস!
আমরা যে প্রকাণ্ডের মধ্যে ভ্রমণ করিতেছি
সেই ভূমা ঈশবের এইরূপে অসংখ্য প্রকাণ্ডের
উৎপত্তি ও লয় হইতেছে। আমি বল, সনংক্রমার নারদ ও কণিলই বল আমরা সকলে
তাঁহার মায়ায় আচ্ছন। সেই বিশ্বপতির
এই অন্ত আমাদের সকলেরই তুর্নিসহ।
অতএব তুমি হরিরই শর্ণাপন্ন হও, তিনিই
তোমার মঙ্গল বিধান করিবেন।

তথন তুর্বাসা নিরাশ হইয়া বৈকুঠে যাত্রা করিলেন। তথায় জীনিবাস জীর স-হিত অধিবাস করিয়া আছেন। তুর্বাসা কিলাত দেহে তাঁহার পদতলে পড়িয়া কহি-

লেন, অনন্তদেব! আমি কৃতাপরাধ, তুমি আমায় রক্ষকর। আমি তোমার প্রভাব না জানিয়া তোমার ভক্তকৈ তুঃখ দিয়াছি, তুমি আমাকে ক্ষমা কর। তোমার নাম কীর্ভন माज यथन नतकन्छ वाक्ति ७ मूक्त हम ७ थन তোমার অসাধা জার কি জাছে। ভগণান হিশ্লিন, প্রক্ষা আমি ভক্তের অধীন এই **অন্য ধেন, কডকটা অধতন্তের নাায় হট**য়া ্আছি। ভক্ত আমার প্রিয়। তাহারা আ-মার হৃদয় অধিকার করিয়া আছে। 'আমি যাহানের একমাত্র গতি সেই দনস্ত ভক্ত বাতীত আমি আত্যম্ভিকী বিভূতি অধিক কি আপনাকেও চাহি না। দেখ যাহারা গৃহ পুত্র বিভব প্রাণ ইইকাল ও পরকাল সমস্তই ত্যাগ করিয়া আমার শরণাপন হ্ইয়াছে ফ্রামি তাহাদিগকে ফিরূপে ত্যাগ বরি। যে সমস্ত मगमनो माध् वायाट क्षत्य वाँविहाट्य তাঁহালা সংস্ত্রী যেমন সংপতিকে বশীভূত করিলা থাকে গেইরূপ আমাকে বলীভুত করেন। সাধুরা আমার হৃদয়, আমি দাধু-গণের হৃদয়। ভাহার৷ আমায় বাভাত আর কাহাকেই জানে না, আমিও তাহা-াৰগের ব্যতীত **আন** কাহাকেও জানি না। একণে যার উপর তোমার হিংসাপ্রবৃত্তি হইয়া ছিল ভূমি শীঘ্র তাহার নিকট যাও। আমি সাধু ভক্তকে যে তেজ দিয়া পাকি তা-হাই প্রহর্তার অণ্ডভ সাধন করে। দেখ, ুজুপু ও বিদ্যা ছুইই ত্রাক্তবের নিঃভোয়সকর কিন্তু এই ছুইই শ্লাবার তুর্বিশীত কর্তার স-ম্বন্ধে বিপরীত ফল উৎপাদন ইরে "তোমার যে অনৰ্থ উপস্থিত ইহাতে কিছুমাত্ৰ বিশ্বয়ের **শ্বিধ্য**ুনাই। এক্ষণে ভূমি অম্বরীষের নিক্**ট**ি ক্ষ্মিল, গিয়া ক্ষমা চাও, ইহাতেই ভোমার সন্তি ও শান্তি হইবে।

মহর্ষি তুর্বাসা এইরূপ আদিও ইইরা রাজা অস্থানের নিক্ট প্রত্যাগমন পূর্বক

पुःथि**ज मत्न ठाँशात्र लामधार्ग कतित्नन**। অমরীয় পাদম্পর্নে অতিশয় লক্ষিত। তুর্মা-সার উপর ভাঁহার অভান্ত দয়। ইইল। তিনি চক্রকে স্তব করিতে লাগিলেন, চক্রা সকল ধর্মের সেভু ও অধার্মিকের পুসকেতু। ত্রিলোক ভোমারই প্রভাবে রক্ষিত হই-তেছে। তোমার ধ্যানর তেকে অন্ধকার বিনপ্ত ভালোক উভাসিত ২য়। খলস্বভাবকে বিনাশ করিবার জন্য আদি है। একণে আমানের কুলদোভাগ্যলাভের নিঘিত্ত এই আন্দের মঞ্জ বিধান কর। ইছাই আगात भटक गरथहे ज्यूबर। यनि जागि দান করিয়া খাতি, যদি স্বধর্শ্বের অনুষ্ঠান क्रिया थाकि, यमि आसात कूल खाका है দেবতা হন তবে এই সমস্ত পুণ্যে এই ব্ৰাহ্মণ নিরাপদ হউন। সর্বগুণাধার অদিভীয় লিখর খণি আমার প্রতি **এসন্ন থাকেন** ভি**রে**ু সেই পুণাবলে এই ত্রাক্ষণ নিরাপদ হউন।

রাজা গ্রহাষ এইরপ ওব করিবামাত্র দুর্ক্মিনা অন্তর্গে ইইতে মুক্ত ইইলেন এবং তাঁহাকে আনির্কান পূর্কেক কহিলেন, অহো। আজ ষণার্থই ঈর্বরসেবকের মহন্তু দেখি-লাম। রাজনা আমি হুডাপরাধ তথাট দুমি আমার মঙ্গল কামনা করিতেছা। আনি কর্মা। অথবা বাঁহারা ভগবানকে হুদরে সংগ্রহ করিয়াছেন সেই সমস্ত সাধুর দুকর কি আছে। বাঁর নাম প্রবণমাত্র লোক প্রবিত্ত হয় তাঁর সেবকের অভ্যজ্য কি আছে। রাজন্। তুমি অতি দয়াত্র স্বভাব। তুমি যথম আমার অপরাধ তুক্ত করিয়া নামার প্রাণ রক্ষা করিলে তথ্য ইহা অপেকা অনু গ্রহ আর কি হইতে পারে। একনে তৃমি স্বর্ধে থাক, আমি স্বস্থানে চলিকাম।

তাৎপর্যা।

বে ভক্তি খনেইনী তাহাই প্রকৃত ভক্তি। আরু বে ভক্তি সার্থনিভিন্ত ভাষাক ভক্তি বলিতে হাও বস কিছ তাহার বাভি-**চার আছে। श्रावशांक अवार्यनान छाशांदक** निष्ठसु क करत द्वारा खादा वाण्ठिवाही। কিন্তু কাৰি না কি জনা, অথচ প্ৰাণ ভক্তি না क्रिया शक्टि भारत ना हैशारक वटन वटन-जूकी छक्ति। (इड्, उर्क रेहात विभीमात्र নাই। আত্মবিষ্ণৃতি এই ভক্তির প্রাণ এই जना हेरात निकर हेरलाल ७ शतकाल वि-ভক্তি যখন আত্মবিশ্বৃতি আনে उथन कि ইছকাল कि পরকাল সকল কালই তাহার চকে স্থান। এই ভক্তি নিজের क्रमग्न क्रेथब्रिक त्मग्न এवर निष्क क्रेयद्विक क्रम्-য়কে পায় ইহাতেই তাহার পূর্ব ভৃপ্তি। সে আর কিছু দেখে না, আর কিছু চায়ও না, ভাগবড়কার এই উপাখ্যানে সেই ভক্তিরই ব্যাখ্যা করিয়াছেন।

কিন্তু যে আত্মবিশ্বৃত ঈশ্বই তাহার
রক্ষক। ভাগবতকার স্পাইই বলিতেছেন ঈশরের তেজ বা শক্তিই তাহাকে রক্ষা করে।
তুমি ভক্তের অপকার করিয়া কোথায় পরিত্রাণ পাইবে। ত্রক্ষাণ্ডের মধ্যে এমন স্থান
নাই যথায় ঈশবের ঘাতিনী শক্তির হস্ত
হইতে নিস্তার পাইতে পার। আকাশ পাতাল যথায় যাও সে তোমার অনুসরণ কবিবে। কিন্তু ভক্তা। ঈশবের শক্তি তোমার
রক্ষক বলিয়া আপনাকে প্রভার দিও না।
ক্ষাই তোমার মহন্ত্ব। অপরাধীর মঙ্গল

# সাংখ্য স্থতের অনুবাদ। (পূর্বের অনুর্ভি)

नवश प्रहेश ॥ ५७॥

শর প্রকার ভৃষ্টি (জ্ঞানের সম্ভোষাত্মক পরিশান) হইয়া শাহক।

কেই প্ৰেক্তিকেই প্ৰৱন্ধপদাৰ্থ বিবেচনা

বা কল্পনা করিয়া পরিত্ত থাকেন। তাঁহার তাদৃশ তুষ্টি, তাদৃশ চিত্তপরিতোষ বা ভাদৃশ চিত্তপ্রদাদ শাস্ত্রীয় ভাষায় "অন্ত" সংজ্ঞায় কথিত হয়। কোন কোন সাধক বৃদ্ধিকেই পুরুষ বা আক্সা ভাবিয়া পরিতৃষ্ট থাকেন। তাঁহাদের তাদৃশী পরিতৃষ্টির নাম "মলিনা" বাঁহাল্ক অহস্কার তত্ত্বকে শ্রেষ্ঠ বলিয়া জ্ঞান পরিতৃষ্ট—ভাঁহাদের তৃষ্টি অমোঘা। ভোগকারণ তথাত্রা বা সুক্ষাভূত বাহাদের জ্ঞানে পরম পরিভূষ্টির কারণ, তাঁহাদের তাদৃশ পরিতোষের নাম "ভৃপ্তি"। এতদ্রপে চারি প্রকার মাত্র আধ্যাত্মিকা ভুষ্টি আছে; **ইহা** বলা হইল। এতদ্বিন আরও ভাঁ-হাদিগের বাহ্যিক তুষ্টি আছে, তাহা অর্থের অর্জন দোব, বন্ধন দোষ, ভোগ দোষ ও হিংনা প্রভৃতি দোয দর্শন ২ইতে উৎপন্ন হইয়া থাকে। অর্থ উপার্জ্জনের অনেক দোষ আছে। তাহা দেখিয়া অনেকেই প্রব্রজ্যা (সম্যাদ) গ্রহণ করিয়া পরিতুর হন। এক প্রকার ভূষ্টি, ইহার শাস্ত্রীয় নাম পরা, তত্ত্বজ্ঞান না থাকায় ঐরূপ হুষ্টিতে মুক্তি হয় না। ধন থাকিলে ভাহা রাজা, ভদ্ধর, जनामि इदेख नाम প্রাপ্ত হয়, এজন্য উহা বিশেষ সুঃখপ্রদ, যাহ। তুঃপ্রপ্রদ তাহাতে কাজ নাই, এইরূপ ভাবি-য়াও **অনেকে বিষয় হইতে উ**পরত হন, ও পরিহুপ্ত থাকেন। এই দিতীয় প্রকার তুষ্টির নাম স্থপার, ইহাতেও মোক্ষ নাই। বহু আয়াস স্বীকার করিলে ধন উপার্চ্ছিত হয়, কিন্তু তাহা ক্ষণভোগেই ফুরাইয়া যায়! অত-এব তাহা আদৌ উপার্জ্জন না করাই ভাল। এই ভাবিয়া বঁহারা বিষয়বিমুধ হন, হইয়া প রত্ত থাকেন, তঁহিাদের দেই ভৃতীয় এ-কার ভুষ্টির নাম পর।। বিষয়ভোগ যতই করিবে তত্তই ভাহার ইচ্ছা বাড়িবে, ইচ্ছা-কালে ভাহা না পাইলে তুঃখ হইবে, অভএব,

ভোগস্থা জান করাই ভাল, এরপ ভাবিয়া বাঁহারা বিষয় হৈটতে উপরত হন, ভাহাদের সেই চতুর্থ প্রকার তৃষ্টির নাম উত্তম। এইরূপ তৃষ্টিই উত্তম: মোক্ষের প্রকৃত মহায়। এইরূপেই নয় প্রকার তৃষ্টির ব্যাথ্যা হইয়া থাকে।

## वार्थान-मध्नी।

শ্রীযুক্ত প্রধান আচার্ট্যের ব্যাখ্যান-

### ्लक भगा।

### - সপ্তদশ ব্যাখ্যান।

বঁথা পক্ষাত্র, রক্ষের আশ্রম, পাইরা স্থাপতে রয়। দ্বীখারে দেমন, থাকে জগজন, তিনি হন সর্বাশ্রয়॥

- এ স্থাব (.ধ. २৮८, গাঁহার। বহিমা তাঁহার অসীম অপার 🛭 উছির মহিমা গগনে গগনে। ্বোষে কভ চন্দ্ৰ ভাষক ভগনে ৪ তাঁহার মহিমা নিশির শিশিরে। তুবার মাওঁত হিমাচল শিরে॥ ভূষৰ নাদৰে তীহালে ধেয়ায়। সাগর কলোলি তাঁর তুণ সায়॥ তাঁর নাম গায় বিহন্দ নিচয়। বরবার ধারা ভারে দর। কর ।। হরিত-বস্মা ধরা মনোহর।। তাঁর প্রেম রূপ কভ ফুলে ভরা।। হে মানব ! যাঁর সকল ভুবন। ভার স্বরে নাম করে অনুক্র।। কি সম্বন্ধ তব হয় তাঁর সনে। কে ভিনি ভোমার ভেবে দেখ মঞ্জে।। তিনি পিতা যাতা প্রভূবিশ্ব হ'ন। প্রের-শান্তি-দাতা অভয় শারণু।। হেন পিতা ন'ন যে তাঁর সদনে। ভরে থেতে কাছে পুত্র কন্যাগণে॥ छात निर्देशमा गरह (इन शास्ता। শাইতে পারে ন। কেহ সেই খানে॥ িষে তাঁরে হৃদয়ে পার্ডি কিংহাসন। मक्षां एत प्रश्निक्त का वाह्य ॥

किन जानि कृषि रिवा सक्नान শোক ভাগ তার করার জোচন मतिक स्मिश्ता त्वन त्वाहे वन ह रि धन नकल हुःच निहातन । रि यम शाहरण मद (म'शा बाग्र। আর সব ভুচ্ছ যার ভুলনার॥ কি হয় সে ধন**্ধ** তাঁর সহরাস। তাঁতে রভি ছাতি হানয়-উচ্ছাস। ভক্ত 'जाँदि यदं **कृषि शामि शा**ह । ইছ স্বৰ্গ ভোগ কিছু নাহি চায় ॥ তাঁর নাম পান—উছিরে সারতে, প্রেমানন্দে তাঁর ভজন সাধনে, ভজ ক্লা-পাকে ভাষারে লইয়া। তিনিও তাছার নিকটে থাকিয়া, দেন কভ জীশা কত মৰ্মানল 📬 মুছেন ভাহার শো**কাঞ সকল**। নব প্রেমে ভার র**লান হু**দয়। স্বৰ্গ মুক্তি ভার এই খানে হয়।

অনাদি পুৰুষ যিনি ঈশ্বর মছান্!

হাটির পূরব হ'তে তিনি বিদ্যমান।

নাহি ছিল হাটি যবে, কেবল চৌদিকে তবে,

অস্ক্রনার খন এক ছিল শাগ্রমান ক্ষ

গ্রহ ভারতিক্র কিবা নক্তর-ওপন।

এ সকল কিছু নাহি আছিল তখন।

সকল কারণ বিনি, বিয়াজিও ভবে ভিনি,

অপ্রকাশ নিরঞ্জন আদি পুরাজন।

ইচ্ছা হ'ল তার বিশ্ব করিতে ক্র্যুন।

অ্থান হইল এই অন্ত ত তুরন।

হ'রে তার ইচ্ছা হ'তে, রহে তার ইচ্ছানতে,

তিনি ইচ্ছা করি ইহা করেন ধারণ।

তার ইচ্ছা এখনও আছে প্রবাহিত্র চরাচর শইতেহে তা হতে আলিছ। সে ইচ্ছায় অগ্নি জ্লে, এই মিজ পরের চলে, রবি শলী কর দিতে হ'তেহে উদিত ম

বীজ হ'তে ধানা হবা সহজেই হয়। সেরণ তাঁ'হতে বিশ্ব প্রাণহিত নায়। क्षा आणि विभिन्न में में (द्रार्थ सेक) शून र न, अधिकाम बालीन रेक्ट्रीय म्यूनय ॥

ভাষালের আই শান করেন যোজন।
কি কীটাণু কি যাওক, প্রত্যেকের প্রতি অক
করিছেন কি কৌশালুক স্থাধের সাধন।

হে মানব! আপনারে দান করিবারে। বে জন ডাকৈন ডোমা, ভাব তুমি তাঁরে। কর তাঁর নাম পান, তাঁর প্রেম-স্থা পান, এখনো ভজহ তাঁরে, "শেষে ক'বে কারে॥"

### ্ৰগন্ততি।

ত্বং ন্যন্ত দণ্ডমুনিভিগনিতানুভার আত্মাত্মদশ্চ জগতামিতি মে রতোহিসি। হিত্তা ভবদ্ক্রবউদীরিতকালবেগ-ধ্বস্তাশিয়োহজভবনাকপতীন্ কুতোন্যে।

মুনিরা তোমার প্রভাব কীর্ত্তন করেন, তুমি জগতের আত্মা ও আত্মদ, এই জন্য যে সমস্ত দেবতা তোমার ক্রভঙ্গীতে চালিত কালের বেগে ক্রত বিক্ষত হইয়া আছেন আমি তাঁহাদিগকে পরিত্যাগ করিয়া তোমাকে বরণ করিয়াছি।

দেবদ্ভ্যিমং লক্ষ্য নৃলোকমজিতে ক্রিয়া। যোনাদিক্ষেত্ত্ত্পাদে স শোচ্যাছ্যাত্মককঃ।

যে অন্ধিতে ক্রিয় পুরুষ ভোনার প্রসাদলব্ধ এই মনুষা লোক অধিকার করিয়া ভোমার চরণ সেবা না করিল, সেই আত্মবঞ্চক
লোচনীয়।

বস্তু বিস্তৃত মত্ত আত্মানং প্রিয়মীশরং বিপ্রায়েক্রিয়াগার্থং বিষম্ভায়তং তাজন্

ত্ৰি শাসা প্ৰিয় ঈশর। যে মনুষ্য শ্ৰীশ্ৰ ইক্ৰিয়াৰ্থের জন্য তোমাকে ত্যাগ কৰেজা শক্ষ ভাগি করিয়া বিষ পান করিয়া তৎ যাং কর বিশ্বস্থা ওচেইং । নামং প্রশাস্তি হলগার দৈবং। আননামেকং জন্মদার কেতঃ ভবাপবর্গায় ভজাম দেব।

হে দেব তুমি জগতের সৃষ্টি ছিতি ও নাশের হের্। তুমি দর্মকার দাম প্রশান্ত স্থলং ও আত্মদেব। তুমি অদিতীয় ও এক। তুমি জগতের ও আত্মার নিকেতন। আমি তো-মাকে সংদার বন্ধনা, হইতে মুক্তির নিমিত্ত ভজনা করি।-

### মহারা**ধ্রী**য় ভজন।

উষাকালে উঠিয়া প্রভুকে শ্বর প্রেম ভাবে। (প্রভুক্কে)
আত্ম সমর্পণ করিলে তাঁকে শান্তি লাভ করিবে॥
বাতে শরনে রক্ষা পাইয়া, হথে গুমিয়াছিলে। (তোমরা)
প্রভাতকালে তাঁহার মহিমা জ্যোতিকে দেখিলে॥
প্রকিদিকে হইয়া রাগ্র, হর্মা নভোমগুলে। (রাঙা)
মন্তক উথিত করিয়া তমঃ শক্তকে তাড়াইলে॥
এ অভুত ভাব ভাবিয়া তোমরা অবাক্ মে হইছে।(তোমরা)
আত্ম স্মর্শণ করিলে তাঁকে শান্তি লাভ করিবে॥ ১ ॥
দমাময় সব দিন তোমাদের করুন প্রতিপালন। তোমাদের)
স্বৃদ্ধি দেউন যাতে স্কৃত্বের থাকে প্রাণ দেহ মন॥
হো'ক ভোমাদের হাতে সর্কালা প্রা কর্ম্ম আচরণ। (সর্বাদা)
দান অহিংসা সভ্য প্রবাহিত ধর্মায়ন্তান ॥
ভজ্জন্য তোমরা সবে প্রভাতে প্রার্থনা করিবে। প্রভাতে)
আত্ম সমর্পণ করিলে তাঁকে শান্তিলাভ করিবে॥ ২॥

## প্রাপ্তি স্বীকার।

, আমরা ক্তজতার সহিত খীকার করিতেছি বে নিম্নিথিত পুস্তক ও পত্রিকাওলি আমরা উপকার প্রাপ্ত হইয়াছি।

- ১। ধর্ম-জিজাসা। প্রথম থণ্ড শ্রীনগেন্দ্রনাথ চট্টোপাধ্যায় প্রণীত।
- ু ২। প্রকৃতি-চর্চা। এ উমাপদ রাদ কর্তৃক প্রকা-শিত।
- ০। তর্বার। শ্রের নামক্ষ প্রম ইংসের উপ-দেশ অবশয়ন করিয়া, শ্রীবৃক্ত রামচক্র দন্ত, এফ, বি, এস, কর্তৃক প্রশীত ও প্রকাশিত।
- ৪। বেদাস্কদর্শন। প্রথম প্রত্যা প্রীযুক্ত চ্প্রশোধর বস্থা কর্তুক ব্যথাক্তিত ও প্রকাশিত।
  - ६। हिम्प्रत्यात छेशामा। अथम वक्षा की वृक्क

৬। সঙ্গীত পুনাপানপ। প্রীহেমচন্দ্র কৃত প্রণীত। । হিন্দু পার। জ্ঞানকাও ও কর্মকাও। গ্রীযুক্ত বিশিনবিহারী ঘোষাল কর্ত্ব সঙ্গলিত।

Journal of the Asiatic Society of Bengal Vol LIV. Part 1. No.11. 1883. Proceedings of the Asiatic Society of Bengal

receedings of the Asiatic Society of Bengal No 111. March 1885.

No IV. April ,

Theosophist July 1885. Interpreter July 1885. Indian Agricultural Gazette

No 11 31 May 1885.

न <b>व</b> की वन	আষাঢ়			
<b>প্র</b> চার	<b>19</b>			
ভারতী	<b>A</b>			
বাশক	<b>©</b>			
ধর্ম প্রচারক	J.			
আগ্যদৰ্শন	टेबार्ड			
নব্য ভারত	হৈল্য ও আবাঢ়			
रागादाधिनी পঞ	কা জৈয়ন্ত			
ধর্ম বন্ধু	আৰু চ্			
কৃষি গেকেট ২য় সংখ্যা				
ব্ৰাদ্ধণ ২য় খণ্ড ভাগাচ সংখ্যা				
बारणाठना	চৈত্ৰ, বৈশাধ ও জ্যেষ্ঠ			

### আয় ব্যয়।

চৈত্ৰ ব্ৰাক্ষ শহৎ ৫৫ এবং বৈশাথ ও জৈটি ব্ৰাক্ষ

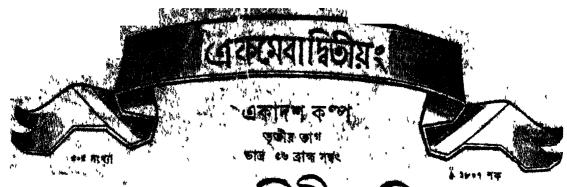
मध् ७७।

### আদি ত্রাক্ষনমাজ।

i		আয়।		
<b>হি</b> ত			264210	/s
ব্যয়	•••		१ १ निदर	ý
সমষ্টি	***	F v 4	8692he	<b>/9</b>
পূর্বকার	<b>হিত</b>	vegeta i e i delegido e	 ২৬৮৩।,	/y
অয়ি	***	•••	2 7 p p 11,	/5

ব্ৰেকাসমাজ	9910/3
দাৰ্থস্থিক দান।	•
জীযুক্ত গুগনেক্সদার্থ ঠাকুর	304
" য <b>েকুপঞ্জান</b> গলোপাধ্যায়	ا مر
्र, त्र <b>ीजना</b> थ शकूत	544
্, শিবচন্দ্ৰ দৰ্শী 💮 🔻	> • •

विर्क गरिनाम बेरिक	``
, तीरव <b>बनाय शह</b> त	•
,, (मर्दासनार्व ठीक्त (भोक्त्रवार्कि) २	
, ভূনেশচন্দ্ৰ বহু	
ু, নকুড়চক্ৰ বিশ্বাস নব বৰ্ষের দান।	10) 10)
भी पूर्व यक्रनाथ <b>मृत्यां भाषाच</b>	S)
,, নিতাগোপাল বস্থ	\$ .
শ্রীমতী দীপ <b>মরী দেবী</b>	3
<b>औ</b> युक्त प्रिक्लान शहेन	
attistation atmentionburster	. /
,, वीद्यक्तनाथ ठाकुक्	*
Cutton exactor by and	,
Otanamia fashis	\$
अ अध्यक्ति । अप्रति ।	
,, বাজেন্দ্রনাথ শেত	<b>v</b>
,, खिगभाष भाषी क	
,, কিতীলনাথ ঠাকুর	
,, কাশীনাথ মজুমদার ৷	
অল্প দানের সমষ্টি	
७७कटर्मात मान ।	
শ্রীবৃক্ত চন্দ্রকার দাস খণ্ড 💮 📉 ১১	
मानाधाद्य मान व्याखा 🦠 🕝 🚜 🔊	
Magar all administrative are substitute to a constraint of the con	****
୩୩୯୭	
তত্ত্বোধিনী পাতিকা ১৭	والما
	0/10
	9110
- d. )	bhe/9
वाकारका और अकारमात मूलरन >	ঞা৽
ভাকাংশি প্ৰক্ৰিয় ১৩	¢,
দাতব্য ১১	٠.
11.	
मगष्टि । २,५-५	11/2
५. े दाझ।	. by.
ব্ৰাহ্মসমাজ 🔭 ৩৭৫	צונים
	2   9
The state of the s	
,	all vo
	100
গচ্ছিত ১৪	310
Mark Mark	100
ব্রাহ্মধর্মা প্রচার 🖟 🐪 ১৩৫	<b>3</b> .
দাতব্য	
, <sup>2</sup> <sup>2</sup> , <del></del>	
मगष्ठि ३৯৮	



# <u>ज्ञातािश्रीशिका</u>

क ममानंकतिहमानक मिन्न मिन्न निवासी प्रतिक्षे प्रभी महण्या । तदेव नित्यं मानमनक मिन् सत्वक्षित्वयवस्थित ने वादितीयन सम्बन्धावि स्वयं निवासी सम्बोजयसम्बन्धाः पार्यकार्वे क्षेत्रक प्रभणवति । तिक्षित् प्रोतिसक्षं प्रियकार्या वाक्तकं तद्यासनस्थ ।

## আদি ব্রাক্ষান্ত।

৪ ভাবেণ রবিবার ৫৬ ত্রাকা সম্বং। মাচার্যের উপদেশ।

ভনান বারা, হাদয় বারা, আত্মা বারা, সমুদার অন্তঃকরণের সহিত কীবরের উপাসনা করা,
মনুসোর করিবা। ভলান বারা সীবরের ধ্যান
করা, হার্ল্ডের বারা সীবরের আরাধনা করা
এবং আত্মা বারা সীবরের অভিত্রেত মঙ্গলকার্ব্র সাধন করা, তিনই মনুবের করেবা
কর্মা

সতাই থাকিতে পারে না; অতএব ঘিনি মূল-সতা তিনি জ্ঞান-সর্পা। তিনি জড়জগ-তের ন্যায় সত্যের প্রতিরূপে নহেন—তিনি সত্যের স্বরূপ,—জগতের প্রকাশ ঘারা তিনি প্রকাশিত হ'ন না—তাঁহারই প্রকাশ ঘারা নমস্ত জগৎ অনুপ্রকাশিত হইতেছে,—ত্রাক্ষ-ধর্ম তাই রলেন

শন তথ্য কর্মোভাতি ন চক্রভারকং নেমা বিছারো-ভাত্তি কুডোইয়নমিঃ। জনেব ভাত্তমন্ত্রভাতি সর্বাং তদ্য ভাসা কুর্মিদং বিভাতি।

কুৰা ভাষাকে প্ৰকাশ করিতে পারে না, চন্দ্রভাষাও ভাষাকে প্রকাশ করিতে পারে না, এই বিদ্যুৎ সকলও ভাষাকে প্রকাশ করিতে পারে না; তবে এই অগ্নি ভাষাকে কি প্রকাশ করিবে। সমস্ত জগন্ত ভাষারই প্রকাশ করিবে। সমস্ত জগন্ত ভাষারই প্রকাশ বারা অসুপ্রকাশিত হই-তৈছে, ভাষার প্রকাশ করিবে। জগতের নাায় তিনি ছায়াশ্যাতিকার মূল স্থান তিনি জারাত জীবত প্রকাশ মূল স্থান তিনি জারাত জীবত ক্রমের মূল ব্যব্ধান তিনি জারাত জীবত ক্রমের মূল ব্যব্ধান তিনি জারাত জীবত ক্রমের মূলে ব্যব্ধান স্থান মূলে তিনি জারাত জীবত ক্রমের মূলে ব্যব্ধান স্থান স্থান

ক্ষাৰ বা বিচলিত কৰিতে পাৰে—
ক্ষাৰ স্থানি স্থানিত কৰিতে পাৰেই
ক্ষাৰ তিনি অন্ত স্কল্প প্ৰৱেষা। এই
স্তাং আন্মন্তং একা ধ্যন আমাদের ক্ষান্
নেত্রে প্রকাশিত হ'ন — তথ্ন স্কালীন নতা
স্থানাক্ষ ক্রিয়া আমাদের জ্ঞান প্রয় ছবিতার্থতা লাভ করে।

ু দিতীয়, হৃদয় দারা **ক্রনের পাছাবনা** कता। छान ना थाक्टिन स्वयंन दकान मछाहे ধাকিতে পারে না, প্রাণ না থাকিলে সেই क्रश कान मामकारे थाकिए शास मा। প্রাণ যাহা চায় তাহাই অনর। প্রাণ চায়-थार्गत **चा**विकार,—जाहाह समात, जीदछ मण्डे सम्मन । थारगरहार गः नर्सस्टेज-বিভাতি বিজ্ঞানন্ বিদ্যান্ ভবতে নাতিবাদী। ेरेनि लाग यहान मिनि वरे मुर्कपृत्व लगान পাইতেছেন, জানী ব্যক্তি ইহাঁকে অতিক্ৰয कतिहा कान कर्षा दलन ना। छानी राक्तित নিকট আগনা কেবল জ্ঞানের ক্থা তনি-য়াই তৃপ্ত থাকিতে পারি না—প্রাবের কথা শুনিলে তবে আমাদের প্রাণ পরিতৃপ্ত হয়। ষিনি প্রাণের সহিত সম্পর্কশ্বন্য ভক্ত জ্ঞা-নের অনুশীলন করেন তাঁহার সে জ্ঞান অঞ্চ হীন—ভাহাতে মত্যের কেবল একদিক্ 🛎 কাশ পায়, মার এক দিক্ প্রগাঢ় অম্বকারে আচ্ছন থাকে; – এইরূপ প্রাণশূন্য জ্ঞানের অনুশীলন হইতেৢই মিরীধর বিজ্ঞান-শান্ত্র-नकल खय धर्ग करते अवस्थित मस्करे তাহাদের শরীরের অভিভাগ স্থান ত্রাক্ষাধর্ম কেবল জ্ঞানের ধর্ম নতে, दाकार्य शार्वत स्या। खाकार्य बर्तन "প্রিয়ন্ত্রপাদীত"—পরসাত্মাকে প্রিয়ন্ত্রপে शामना कतिरव। "म य जाजानरमक विश्व शांत्छ न हाना थिया थमायुक्र छन्। " किनि পরমাজাকে তিয়ক্তে উপাসমা क , देशक दिल क्षेत्र महाकील हे न ना

PLUITER PERSONALITATION क्षित्र। त्यम् अस्तिक्ष्यम् अस्ति। चनर उक," कार्ड समास्त्र किए तम् कर्ण विशिद्धिन विश्वासम्बद्धाः स्वीक ভাতি' হিনি মানসরশে সুরুত্রপৈ প্রকাশ शाहरण्डम ।, मण्ड **कान्यमण्ड** विकास ठाहाता जेमाजीत्मत मात्र त्मिर्छन न তাহারা তাঁহাকে প্রাণের সহিত গ্রীভি করি-তেন ; তাঁহারা বলিয়াছেন "তদেওং প্রার্থ श्वां द्वारमाविष्ठां , श्रारमार माना मत्त्राह অন্তরতরং যদরমাত্ম। সর্বাপেকা বস্তুর তর যে এই পরমান্তা ইনি পুত্র হইতে প্রির বিত হইতে প্রিয়, আর আর সকল হৈইতে शिष्ठ ।" এ**उ क्लार्**त्रत कथा कथनहै मूर्यंत्र कथा नरह—मूर्थत कथा । नरह— ७५ दक्तन मरमत কথাও নহে—অভিলায় মাত্র নহে, अहर। প্রাণের কথা। প্রাণ যাহা চায় ভাহাই আরী रमत्र श्रिष्ठक वस्त्र, जागारमत श्रीम रवशारन অবাথে ক্ষুত্তি পায় ভাহাই আমুট্দৈর আন-ন্দের আলয়। णागारनंद्र नादीविक छा। रयमन पार्शनात क्यू क्वित कना विश्वरक्षेत्र 'চায়, আমাদের আধায়েত্রিক প্রাণ দেইরূপু আনন্দ-দরূপ অমৃত-দর্মণ প্রমাত্মাকে চায়। শারীরিক প্রাশক্রিয়া অন্ধারুতি, শান্তার लाग-किया विभाव चानल; क्लान नपड बच्छे त्व चानमत्व कुलारेहा किटाउ शांत ना,-ভাষার জীবিকা বোগাইছে পারে মা সে আনন্দ চায় "সভাং জ্ঞানমনীই ব্ৰহ্ম আনুষ্ রপং অয়তং বদিভাতি" বার ভিন্ন নার किन्द्रार्क्ट शास्त्रि गान गा। प्रकृत्रासम्बद्ध रशोन्पट्या पात्राहमझ शैक्तिय समहे**णान्या** क कि रहेटाउँ सीट्या, किन्न राजगाना किटानी कर्ता यानारम्ब आफार्ड शान्त्र स **एक-**कानस्य कर्षे द्वा THE REPARED TO SERVE PLANTS

প্রশান্ত আন্দ-রস উপভোগ করে, তাহা সাকাৎ প্রাণ-সরপ অয়ত সরপে,—তাহাতে মৃত্যুর সংস্পর্ণ মাত্র নাই

**তৃতीর, बाजा बाता जैयदात ब**िल्लासात चनुगठ हहेशा मनन-कार्या नायन करा। প্রমেশ্র স্থাং যেমন সকল মঙ্গলের প্রম अन्नन, उंशिष्ठ कार्या (महिन्नुन मकल रक्न-का-্র্যোর পরম আদর্শ। এক অদিতীয় পর্যে-শর প্রশান্ত অকুর এবং অতন্তিত ভাবে সমস্ত জগতের মঞ্চল সাধন করিতেছেন; শাস্তঃ শিবং অধৈত্বং তিনি শাস্ত মঙ্গল এবং অভিতীয়। এই মহান্ আদর্শকে চক্ষে রা-বিয়া আমরা যেন সৈ স্ব কর্ত্তব্য কার্ম্যে নিযুক্ত शाकि। श्रद्भाष्टः मन्दिक है क्रिय- हाकला ह-ইতে নিহুত্ত করিয়া তাহাকে প্রশান্ত করা ক-র্ত্তবা; কিন্তু প্রশান্ত হইয়া বলিয়া থাক। ক-र्खन भरह, सक्ष्म कार्या अनुष्ठान कता कर्खना ; এইরপ\*কার্যা করা কর্ত্রন—যেন আমরা ব্-ঝিতে পারি যে, আমাদের এক আয়াই আ-মাদের সকল কার্বেরে অদিতীয় মূল-প্রবর্ত্তক, সমস্ত ইন্দ্রিয় একমাত্র আত্মারই আজ্ঞাবহ ভূতা। এইরপে জ্ঞান দারা হৃদয় দারা ও নমস্ত আত্মা দ্বারা আমরা ধনি ঈশবের উ-পাদনাতে দিন দিন নিযুক্ত থাকি, তাহা হইলে কালের রাজ্যের মধ্যে থাকিয়াই আ-**নর্মা কালের হান্ত** এড়াইতে পাল্ল-এবং नेन्द्रम जानसभार भहताएम हेट जीतानह মুক্তিক স্কুষ্ত নিকেতনে বিচরণ করিতে शाति । 🏂 🗆

হে পরিমান্তন ! সামাদের মোহ-অন্ধ-কারে তোমার জ্ঞান-জ্যোতি বিকীর্ণ করু আমাদের ব্যাকুল হৃদয়ে তোমার প্রেমায়ত, বর্ষর, কর, আমাদের আত্মাতে তোমার অব্ নাজিত গক্তি সঞ্চারিত কর। বাহাতে মামরা সংলারের সমুদার মোহ-শোক ভর সহবাদে ক্বন্ত-ক্তার্থ হইতে পারি—তুরি আমাদের আত্মাতে সেইরূপ মধ্যয় প্রাণের সঞ্চার কর এই আমাদের প্রার্থনা।

ওঁ একমেবাদ্বিতীয়ং।

### मगढिलाइना।

বিগত জৈচ্চ ও আয়াত যানের নবা ভারতে পণ্ডিত-বর শ্রীসৃক্ত শিবনাথ শাস্ত্রীর লিখিত "ঈশর অচেতন শক্তি কি সংগ্রেন পুরুষ" এই প্রবন্ধটি পাঠ করিয়া আমরা পরম খ্রীতি লাভ করিলান। ইউরোপীস বিজ্ঞান-শাংস্কে পক্ষপার্ভাদিগকে কিরুপে নাজিকতা হইতে ছাল্ডিকত পথে কিরাইল। আনিতে হয়, তাহা শাস্ত্রী-মহাশয়ের ঐ প্রাক ক্ষটিতে - স্বন্ধর-রূপে ্প্রদূর্শিত্ হইয়াছে। প্রবন্ধটির চুই স্থান একটু অসাবধানে লি-थिछ हरेबाटछ-- छार। आगवा भटब ८मथा हेवं, किस्र माक्रला-छानकि आवान-वृद्ध-বনিতা সকলেৱই (বিশেষতঃ ইংরাজি বিজ্ঞান-প্রিয় বিদ্যালয়ের ছ'এব গর) স্থপাচ্য স্থ-ফল-প্রদ ও জীতিপ্রদ হইয়াছে, ইহাতে আর সংশয়-মাত্র নাই। প্রবন্ধটির ভাষা এবং ভাব উভয়ই নির্মাল নির্মারনীর ন্যায় এননি সহজ ভাবে হৃদয় হইতে বিনিঃস্ত ইইয়। চলিয়াছে যে, ভাহাতে সন্দন্ম পাঠক মাত্রে-बहे यन नमा क्षेत्रवाचित्रत्थ बाक्र हे ना इहेगा থাকিতে পারে না। এই প্রবন্ধটির জন্য শাস্ত্রী মহাশয়কে হদায়র সহিত ধনবোদ বিতেছি এবং আশা করি—মধ্যে মধ্যে িন এইরপ আগায়িক জ্ঞানালোক এবং প্রেমা মূত বর্ষণে দেশীয় জন-সাধারণের মনঃ-প্রাণ শীতল করিয়া আপনার বিদ্যা-বুদ্ধির সার্থক্য সম্পাদন করিতে পাকেনা

করা সংলাবের সমুদার মোহ-খোক ভয় যে দুই স্থানের কথা উপরে উল্লেখ কি স্থানিক করিছ। ভোষার স্থানক্ষয় করিয়াছি, তাহার উপর স্থানাদের আপত্তি •

\*\*\*\*

্রাষ্ট্র থে, তাহার যুক্তি প্রণালী তেমন সামা হয় নাই—নচেৎ তাহার মর্গ ও তাৎ-পর্বোর সহিত আমাদের মতের গোন অ-নৈকা নাই।

श्रापम ; - भारती प्रश्नात यानारहत दन-दुलन न्याद-नार हुन अन्त्रित्ते स्तेता युक्ति बाजा खेटाने अथयन प्रावतात को शाहिशास्त्रन द्य

लो **"कार**णान अन्यक्ता कात्रदाद **च्याननीत सन्न**सादा **रहेश परिक**ा"

এবং (৮ল এর্জন যুজনির স্করে তিনি এই গুরুত্ব ক্রাক্তরে প্রয়াণের ভার চালা-ইয়াছেন বে, জলং চার্য্যে হবন জ্ঞান পদা-বের করেন দেখিতে পাল্যা যায়, তথন জ্যাক্তরে বল জ্ঞানের ক্রাক্তপ্রের হইয়া এই এক তর্ম ভুলিয়াছেন যে,

শ্চুণ ও হরিত্রা এই বিধের কেন্ট্র লোহিত বর্ণবিশ্বিষ্ট নহে, খ্রুচ উভরের সংখ্যারে কক্ষরণের আনি
ই'ব হয়। অথবা দুশ্রানি এবা মিলাইয়া ওংন
পক্ষত ধর্ম, ভাহাদের কোন একটির পিত্রগ্রহা নাই,
কর্মনানি মিলিত ধ্যাস পিত্রলা রান্ত্রাশ পাহহৈছে। এপানে বেগন লেনালার সে, জান্ত্র এমন
ওংগর মান্ত্রি ব্যুহাতাছ লগা কান্ত্রান্ত্রান্ত্রান্তর
ল্বিধের মান্ত্রে বর্মনান হিন্দান ভূত লগা লগাবে না
বে, টেভিন্ত্রি এই দেহের নিদান ভূত লগা লগাবে এ না
হলেন একটিতে ব্যক্তিয়ারে না গণাকর ও নন্ত্রিভাবে
ভাগাবের সংযোগ সিদ্ধ নেইপিতের বারনার প্রান্ত্রাভাগ

শাস্ত্রী মহাশয় এই ওকের খণ্ডন-ছনে বিলয়াছেন যে,

रंदा छिल्या भाग इंहेल, आमान दर्भ ना।

তাবের একথা আমাদের মনে ধারণ হইতেছে বা: নাজা সহাশা বলিয়াছেন থে,
কোন কাষ্ট্রেই এবন কোন হনথাকিতে পারে
না যাহাতাহার কারণে নাই; তাহার প্রতিপ্রকার তাহার কারণে নাই; লাস্ত্রী মহাকাহার গুন তাহার কারণে নাই; লাস্ত্রী মহাশার বলিতেছেন আছো—এবন একটা কোন

কার্ব্যের একটা কেন্দ্র কারণে নাই। তাঁহার প্রতিপক্ষ
অমনি, দুর্বে হলুদে মিগাইরা তাঁহার সন্মুখে
গারণ-পূর্বাক বলিতেছে—"দেখিতে চাও—
এই দেখা। ইয়া প্রতাক্ষ, প্রমাণ—প্রতাক্ষ
অপেক। বলবং প্রমাণ আর কি আছে?
শান্ত্রী মহাশন্ত তাঁহার প্রমেয় বিসর্যি আর
একরণে প্রমাণ করিলেই ভাল হইত,—
তিনি বলিতে পারিতেন —

कार्यात थन कातरः , छन श्रेरक विভिन्न হইতে পারে, কিন্তু কার্কের সভ। কারণের मछ। रहेर्ड विভिन्न रहेर्ड शास्त्र मा । यदन কর দুণ এবং হারজ। এই তুই বস্তু মিলিয়া-াৰশিয়া একটি লোখিত বৰ্ণ দ্ৰেখ্যে পারণত হ-ইনঃ নিশ্র বড়টির সেই-যে লোহিত বর্ণ তাহা পতার্যাক্ত ভূইটি মূল বঙ্গ ভূইটি বর্গ হ**ইতে** जन-जारा १९ घ ककी **वैर्ग किन्छ** के ্ই মূচ বভৰ ে ছুই সভা**,তাহার অতিরিক্ত** বেল প্রাই মিশ্র বস্তুটিত্তে পারিতে পারে না,—তৃতীর বর্ণের নাায় ভুতীয় সতা থা किटल शास्त्र ना। **अरेतर्ग मिथा यहिटलट**ल ्य, कार्यात छ॰ य**नि ७ अयन इटेट** भारत याहा कांद्रत्य नाहे, किन्नु छ। विश्व कार्याद गढा ध्रमन हरेएक लांद्रि, ना-यादा कांद्ररन নাই। এই যুক্তিতে পাওয়া যা**য়**েষ, মুল কারণে যাদ চেতন-পদার্থেই জাত্রানা থাকিত, তবে অগতে তাই৷ কোন প্ৰকাৰেই স্থানিতে शांतिक ना । वशादन वहीं विद्यावतद्व জানা আবশাক বে, চেডন-পদার্থের সভঃ खरः ज्ञानात्र्यतं मञ्जा कुट्यतं गटशः अकि মূল-গত প্রভেদ আছে: বৈ প্রভেদ এই 🖎 ८ उस भगार्थित महा उद्योद जाभगात जना-তেওন প্রাপ্তি আপুনার সভা অসুত্র करत, - जल नागरिकत राष्ट्रा भारतत वना --८ उन-नपार्थ है बंध-नगर्वे जोहा कुन् করে; এক কথায়—কৈতন্ত্ৰ-সঙা

জড়-সত্তা পরার্থিকী ; চেত্র-সত্তা এবং জড়-সতার মধ্যে এইরূপ এক শেলজ্মনীয় প্রাচীর উত্থাপিত রহিয়াছে। 'এখন প্রস্তাবিত বিষ-(मृत मङ्राक्ट मीभाष्मा इट्रेंड शादा, यथा,---काहशाटक मथन असन दर्शन महा-है थाकिएक भारत ना घारा कैतिरनट नारी, उथन हेरा यानिएउरे २१एव (४, धून कांद्रर्ग ८५७न- मध्य विमामान थाकाट्डि खगट्ड ८०७न नहा আবিস্তুত হইতে পারিতেছে। আব এক ক্ষা এই সে, মনে কর যে জগতের লোখাও কোন-এক্টিও জীব নাই, তাহা ধইনে জড়েব নত কিছু গুণ বাছে সমস্তই গতিভ সংহতি Bolletti) এই ডুই শু**ৰে পৰ্য**্ৰদি**ত** হয়, জড়-বসার ঐ নু<sup>ক্র</sup>টি **গুণ ভিন্ন ভাগ্**তি আর সে दर्ग म 👵 ना.क्फ **र्ग, ममक**रे बाददन 🗟 🛪 ह নাবেক; কামানের বারুদে এখি সংযুক্ত गरितन भागे वाक्टनत शहराक्शात्रा गटल. ५४-এক-একাৰ গণি উৎপা হণ, তাহাই কেবল करित्व का उद्देश छिभद्दा । मर्छ कद्द मा--তালাই বিশুফ ৯পে জড়-গুন, কিন্তু তড়িন শব্দাদি আর যে কোন গুণ অ্যবহুত খুর २**४७२ जा८**वत अलि ३-मा**८भक**; - बन(७व কোথাও যান কোন জাব গ্রহান না থাকে তবে "শব্দ" বলিয়া একটা আচ্চিত্ৰ জগতেব कान जात्नरे श्रुँ जिल्ला शास्त्रा मात्र ना । इ-शास्त्र अरोषि अमान हरेतिहरू (य, पुराहन्दन নিম্মিত হইলে ততুৎপন্ন বস্তুটিতে যেরূপ পত্রিবর্ত্তন ঋটে তাহাঁ মুখা-রূপে কেবল গতির পরিবর্তন; চুলের আণব (Molecular) গতির স্থিত হলুদের আগব গতি মিলিত হইগ। তৃ-তীয় একপ্রকার আণব গতি উৎপাদন করে,— অর্থাৎ বায়ুর রেগ এবং ত্রোতের বেগ হি লিত হইয়। ক্লেকাতে যেমন তৃতীয় এক-श्चकात (वर्ग , कुद्भानन कुद्रत, सहित्रभ । काव-कि ने महिला वर्षमान शाकितार दें মিতা-বস্তুটির ঐ আশব গাতি স্কীবের প্রারে।

কার্স্য করিয়। তাহার চক্ষে রক্তবর্ণরূপী এক্টি অবভাদ উৎপন্ন করে। স্ক্রেণ্ড এ যে অবর্তীস, উহা জীবাশ্রিত। এই মৃত্তি অবলগৰ কণিয়া সংক্ৰেই বুকিতে পানা যায় <sup>থে</sup>, জড়বস্ত হইতে শন্তাদি <sup>স</sup>্পন্ন হয় বলিঃ। ভাষাতে এমন বিছু এমাণ হয় ন। **যে, জড় বস্ত হইতে ভীবও** উৎপন্ন হয়, কেননা জীব স্থাপে আজে-ভাই ভাহাকে আশ্রম কারণ। শব্দাদি পরে উৎপত্ন হয়, এরপ নত্ত্ সে, আলে শক্তান উৎপদ্ধ হয় -তাহার পরে থাব উৎপর হয়। এক বিকে জাৰ আৰু এক তেকে জড় - শদাদি ভণ্-সন্থ তুরের মধ্য প্রা: শক্ষাদি শুন স্নুত অভ্নপ্তর या किकल-दक्का, और छोर। भाभका प्रतरहीं; -- अंध-बल वर्षन कीरवंद माधामा वर्गाजरदक्त भिर्म निकार-वाही छन छलिए एटः छ९शापन की हर शास्त्र मा, उधम मुस्वडी बीव छेए-<sup>প্ৰা</sup>ৰণ <sup>ক্ষা</sup> তাহার প্ৰেক্ত ফেবুৱে **হাত** বাড়ানেন—কত সে অন্তিকার চট্টা—কত যে অনান বাাপার্–তাহা পাঠক-বর্গ ব্লিভেই भारतम । अञ्चल, भारती यश्चात्र अस्तिभ যুক্তি অবলম্বন করিয়া চলিলে, উচ্চার মন্তর্য কৰা তিনি **অকটো ক্ৰে** সংস্থান কৰিতে भाति:उन्।

কার্যা-কারণ সন্মান শান্তী নহাশর আবএকটি অপন্ধ সিদ্ধান্ত যুক্তি বরা সম্পন্দ করিবার চেরী পাইয়াছেন,—শে সিদ্ধান্তের মূলে যে, একটি দারণ দোন প্রচ্ছন আছে তাহা তিনি দেখেন নাই। তিনি কলিয়া-ছেন

"যে বাজি কগনে। দেগে নাই যে, শক্তি চইটে গতির উৎপত্তি হয়, দে কি ব্রক্তাত্তের পরিবর্তন শীল ঘটনা-রাজি দেখিয়া শক্তির অহ্যান্তকরিতে পাঁরে ?"

ইহার উত্তরে আমরা বলি যে, শক্তি হইতে গতির উৎপত্তি কেহই দেখে নাই— দেখিতে পারেও না; আমরা ্যাহা দেখি

তাহা এইয়াত জে, দিন ফেখন রাতির নিয়ত পরবর্তী ক্রিন্ত-চালনা দেইরূপ বল-প্রায়োগের বিষয়ক বিষয়ে ; -বল-প্রযোগের চেরা-টি আ-শরা আছুরিক্রিয়ে অনুভব করি, ২৬/- গ্লনা-টি শাষ্ট্রা চমুরিব্রিয়ে অবলোকন করি, কিন্তু ুঁ**কার্ন-**কারণের বন্ধন-সূত্রটি **আম**রা বহি-রিন্দ্রেও উপলবি করি না. অন্তরিন্দ্রিয়েও উপলব্ধি করি না.—অগ্য আত্মপ্রতায়ে প্রব-· करण े अनिवा कति। सरम वट अवने। कवा ংকে এই দেখিলাম স্থির রহিয়াজে, ক্ষণ পরে ৰেখি তাহা বিচলিক হইয়াভে;—ভাহার অবশ্যই কোৰ-না কোন কারণ আছে—এইটি প্রথম প্রস্তাব; তাহার অব্যবহিত প্রব বর্তী এবং নিকট-বর্তী কোন-একটি ঘটনাই ভাহার কার্ণ—এইটি দিতীয় গ্রন্ত ে ক্রাট-খানির গতির অব্যবহিত পূদের্ঘ এবং কবাটের অব্যবহিত নিকটে বায়ু সহসা বেগে বহিলা-ছিল—অভাৰ তাহাই ভাষার কারণ—এইটি চরম সিদ্ধার্ট। হল সাল-বা-ব্যাপার টিরও ্কারণ-নির্দারণ ঐক্সং পদ্ধতিতে হইয়া পাকে, উভরের মধ্যে প্রভেদ কেবল এই যে, বায়ু-বেশ স্পর্শেক্তিরের গোচর-—গ্র**্**ণড়-বেগ বস্তার বিরের গোচর, কিন্তু উভয়ন্ত कार्या विवादश्वादी मण्याणि काम हे लिल्लास्त्रहे भाष्ट्र नेहरू चिल्ला एक कम्ल पाञ्च शहर-য়েরই গোটা ৄ আমার হন্ত বিচলিত হইল ---ইহার **অবশা**ই কোন-না-কোন কারণ चार्छ - अहिंछि अभय अस्तातुः खादात वदात-फिल शूर्तर की अवश् निक हेर्नु की देवान अव है ঘটনাই তাহার কারণ, এইটি দিতীয় প্রস্তাব; চেন্ত্ৰাই **रुख-**म'ासात তাহার অব্যবহিত পূৰ্ববিভূত ও নিকটবট্টা ঘটনা, অতএৰ তা-ছাই তাহার কারণ, এইটি চরম সিদ্ধান্ত। जाशनात १७ - हालनाई दम्ब, बात किहा कवाटित महरा विष्ठि र श्राहे एन्य-তাহা দেখিবাৰাএই, কোন পত্নীকার অপেকা

ना दाथिया-छरकनार विविद्या गर्दा सम्बद्ध ণের সহিত বলি ষে, এ ঘটনাটি পুরুবর্জী কোন না কোন ঘটনার সহিত কার্যা-কারণ সূত্রে সত্মন। পূর্ববর্তী এবং পর্ रङी दूरे हैं पहेना आयता छन्हिया भान्हिया তল তল করিয়া সর্ববপ্রকারে পরীক্ষা করিয়া দেখিতে পারি-কিন্তু সহস্ত পরীক্ষা ক্রিলেও কাঠ্য-জার**ণের বন্ধন-সূত্র উভয়ের কোন স্থা-**নেই খুঁজিয়া পাইব না; তাই আমরা বলি যে, তাহা বহিরি<u>ন্দি</u>য়-মূলক এবং অন্তরি**ন্দ্রিয়**-মূলক উভয়-বিধ পরীকারই অগমা – শুদ্ধ কেবল আত্ম-প্রভায়েরই গম্য। কার্য্য-কারণ সন্বন্ধটির সার্ব্বভৌমিকতা স্পর্ট রূপে হাদয়-ঙ্গুন করি**তে ২ইলে কালে**র মৃত্তু-পর**স্পারা**র প্রতি প্রণিধান করিলেই ভাহাতে স**হজে** কৃতকার্য। হওয়া যাইতে পারিবে। কোন একটি মৃছুট্টই থেমন পূর্ব্ব মৃত্রুট্ট ইইডে যোগচুতে অথবা পূর্বে মৃহুতের সহিত সাম্বা-বর্জিত হইতে পারে না, সেইরূপ কোন পরিবর্তুন-ঘটনাই এনন হইতে পারে না, যাহা পূর্ববভী কোন-না-কোন ঘটনার সহিত কার্যা-কারণ-সূত্রে সংঘদ্ধ নছে। কিন্তু তা-হার মধ্যে একটি কথা আছে;—কালের ভোণীবদ্ধ মুহু<del>ৰ্ক-পরম্প</del>রায় **আমরা কেবল** প্রব্রুত্ত কারণের<sup>ু</sup> হবি দেখিতে পাই, স্বাধীন कांत्ररात ता मूनः धावर्खक कांत्ररात्र— धवि एन-থিতে পাই না। শাস্ত্রী মহাশয়ের উচিত ছিল এইরূপ বলা খে, আত্মার আধান্ত্রিক শক্তি ভিন্ন কোন ভৌতিক শক্তিতেই মুল-প্ৰবৰ্ত্তকের ভাব বিদ্যমান থাকিতে প্লাকে না ;--ভৌতিক কারণ মাত্রই কালের অ্তঃ-পাতী প্রবৃত্ত কারণ; 🚧 তর্কের কারণ কি খু না বায়ু-রেগ; ভাছার কারণ না পৃথিবীর গতি ও তাপ-বৈষ্ঠা; তাহ্ম কারণ কি ? না আকর্ষণ বিক্ষণ ও चवाष्ट्रित देवसा कार्य अवस् कि

हेगाब **के उद**्वित् हिट्ड **हेट्ल** स्वाणिय विमा, कुरुव-विमा, जाइल कुछ मा विमा। আয়ত করা আরশাক, – অবচ তাছার বে, এक्টा-ना-এक्टो लोहन चार्ट्स चार्ट्स अरि-यदा जात काहारता मः नत इहेट भारत ना,-এই রূপ কার্য্য-কারণের সূত্র শ্রিয়া আরোহ-ু পদ্ধতি অনুসারে যে কোন ভৌতিক কারণে উত্তাৰ্থ হও না কেন —দেখিবে যে, তাহা প্ৰ-ুকু**ও কারণ ভিন্ন আ**র কিছুই হইতে পারে ন। পূর্নের বলিয়াছি যে, জড় বস্তুর সতা পুরার্থিকী অর্থাং উহার সত্যু তথু কেবল প-রেরই জনা,—চেতন বস্তুই উহার সত। অমু-ভব করিতে পারে; এগন বলিতে চাই যে. ৰ্ব্যুত্ত গরের দারা প্রবর্তিত না হইয়। স্থা-धीने ভাবে কোন काश है कतित्व भारत ना ; নিরুদামতাই Inertia জড়বজুর মার্মা-নিহিত ধর্মা – তাহাই জাজা ; – অছিতীয় মূল কারণ ্ৰিতীয় কোন কারণের বশবভী নহেন স্বতরাং তিনি স্বয়ং-প্রবর্ত্তক স্বাধীন কারণ; ভবেই হইল যে, জিনি নিরুদ্যম প্রায়ত কারণ নহেন – প্রকৃতি নহেন—তিনি পরমাত্ম। , শাস্ত্রী মহাশয়ের প্রকৃত তাৎপর্য্য এই ষে, মূল-প্রব-র্ত্তকের ভাব আত্মার স্বাধীন ইচ্ছা ভিন্ন আর কোষাও বাৰী স্বিতিত পাই না-কিন্তু তিনি এই দিদ্ধান্ত খিন্ন করিতে গিয়া বলি-রাচ্ছন এই বে, কার্য্য-কারণের সম্বন্ধ-তত্ত্বটি আমরা আপন বল চেটার পরীকা হইতেই छनाकीन क्रियाहि। এको निरवहमा क्रिया দেখিলেই তিনি ব্ৰিতে পারিবেন যে, আত্ম-প্রভার-সিক ভত্তক, আগন্তক পরীকা-সিদ তত্ত্বের ক্ষীতে দাড় কর্মীয়া ভিনি ভাল काक करतम मारे, जाराट जिन जाननाहरे भूल निश्चित करिकारकम । जारा ना कृतिका তিনি যদি এইটি প্ৰনাৰ করিতেন হে, মূল-প্রবৃদ্ধতা কান্ধাবিকী ক্রেডন-সম্ভারই পর্যা, प्रकार प्राप्ति कर अन्तर विद्यासी पर्क

তাহা ইইলেই তাঁহার কথার উপর আর কাহারো কোন কথা চলিতে পারিত না। প্রবক্তির তুই স্থানের তুই দোস যাহা আমা-দের চকে ঠেকিয়াছে তাহা দেখাইলাম;— অবশিপ্ত সমস্ত অংশ নির্দোষ বলিলে অতি অরই বলা হয়—এক জন শ্রদ্ধাবান ত্রাক্ষের লেখনী হইতে সেমন-তি প্রত্যাশা করা যায় তাহা তাহার কোন অংশেই শ্রন নহে। যে কংশ-গুলি আ্যাদের বিশেষ ভাল লাগিয়াছে তাহা নিম্নে উদ্ধৃত করিয়া দিলাম।

এই প্রত্যক্ষ পরিদ্ধানান বিশ্বপ্রপঞ্চের অন্তর্গালে বে এক অনির্কাচনীয় মহাশক্তি বিদ্যানা, ভাষা দর্মবাদিসক্ষত। প্রচলিত ধর্মমত দকলের সমুদাহ মতা ধাহারা উড়াইরা দিয়াছেন, এবং ঈশবেব প্রকৃতি ও শ্বরপকে বাঁছারা মানবের অক্তেহ বলিয়া নির্দেশ করিয়াছেন, তাঁহারাও এই মহাশক্তির বিদ্যানতা অসীকার করিতে পারিতেছেন না। ১৮৮৪ গ্রীষ্টাক্ষের ভাত্মারি মাদের Nineteenth Century নামক মাদিক প্রিকাতে হার্নিট স্পেন্সার এক প্রবন্ধ নেথেন, তাহার উপসংহারে নির্দিশছেন—

"There is an Infinite and Eternal Energy from which every thing proceeds."

"অর্থ — জগত মধ্যে এক অনসত অবিনানী শক্তি আছে, আহা ইইডে চলচর নিগাঁ নিঃস্ত হইয়াছে!" জন ই বার্ট মিলও তাহার প্রাণীত Three Essays on Religion মামক গ্রন্থ প্রকাবান্তরে এই কথাই বলিরাছেনঃ -

"It would seem then that, in the only sense in which experience supports in any shape the doctrine of a First Cause—viz, as the princeval and universal elementain all causes the First Cause can be no other than Force"—Mill's Essay on Theism.

वर्ष। निवास नवत्क व्यासामन त्य विकास वार्षः वार्यः वार्षः वार्षः वार्षः वार्षः वार्षः वार्षः वार्षः वार्षः वार्षः वार्षः

किंक विकार शिक्षक्त गरंवर वक समिसातीय महा-

শক্তি বিষ্ণু এই তথাও উদ্ধৃত হইরাছে। কেবল ভারাতি বহৈ, এই আদ্যাশতি এক, খনন্ত ও অবিনালী। লখন প্রস্ন এই —এই শক্তিবে এক, তাহার প্রমান ান ? কে বলিল, এই বাধাও হুই বা তদ্বিধ শক্তির সংশ্রেক উৎপন্ন হয় নাই ? ইহার উত্তর ভা গুরার্চ মিল উক্ত প্রস্তে দিয়াছেন।

"The force itself is essentially one and the same; and there exists of it in nature a fixed quantity, which is never increased or diminished."

অর্থ — "এই শক্তি মূলে এক ও অভিন্ন এবং ব্রহ্মাও মধ্যে নির্দিষ্ট পরিমানে অবছেঃ বাহার হাস বা বুলি নাই।"

এই শক্তি এই বিশেষ সকল কার্য্য হইতেই বিশেষ সকল কার্য্য হইতেই, সভরাং ইহা দর্শব্যাপী। তবে এই মহা পশ্চিতদিগের, সাহায্যে আমরা এইটুকু সত্যে উপনীত হইতেছি যে, বিশেষ অভিনালে এক মহাশক্তি বিদ্যালন, যাহা ব্রহ্মবাপী, সর্ব্যাত, স্থা, অবিনালী ও জানত।

কিন্ত এই শক্তির প্রকৃতি কি ? নিলের কথার ভাবে বোধ হয়, তিনি-এই শক্তিকে সম্পূর্ণরূপে জড়শক্তিবীম, শক্তি বটে, কিন্তু অন্ধ জড়শক্তি মাজ সেইন্ধপ এই আদি শক্তিও অন্ধ জড় শক্তি মাজ। স্পেন্সার বলেন, এই শক্তির স্বরূপ অপ্রিজ্ঞের, অথচ ভর্কযুদ্ধে প্রের ইইরাছেন। উক্ত মাসিক পত্রিকার পারবর্তী এক সংখ্যার স্ক্রীকার ক্রিরাছেন বে, মানব চৈত্ত্তেও এই শক্তির প্রান্ত ক্রিরাছেন বে, মানব চৈত্ত্তেও এই শক্তির প্রান্ত হানিকের চিংশক্তি মধ্যে উৎসারত হানিকের তিংশক্তি মধ্যে উৎসারত হানিকের চিংশক্তি মধ্যে উৎসারত হানিকের চিংশক্তি মধ্যে উৎসারত হানিকের ক্রিরাছেন ব্যিরাছেন "Some thing more than consciousness" অন্ত্রিও চিংশক্তি বনিলে সামরা যাহা র্মি, এই শক্তি তালে অপ্রেশ হান নহে, ক্রিন্ত ভাহা অপেন্স অধিকা

এখন একবার বিচার করিতে হবৈরে যে, আই আদ্যাশক্তির বিষরে হবার অতিরিক্ত আরও কিছু আনিতে
পারা যায় কি না ? স্পেনসারের যে উর্কিটা সর্বাত্তে
ভারত করা গিরাছে, তাখাতে তিনি রসিয়াছেন যে,
চরাচর বিষ এই বহাশকৈ হঠতে নিস্তেত হয়ছে।
নিস্তে হয়, কল কর্মে ব্রেল্প বালে সিংক্তিব,
বিষয়ে কর্ম করি ব্রেল্প বালে সিংক্তিব,
বিষয়ে কর্ম করি ব্রিলিড ব্রুল্প বালে

আধন প্রায় এই মানবার চিক্তিত কোনা হইতে
মানিত্ত হাইল ? মানবারা কি সাক্রা হয়। কি
গভীর প্রহেলিকা! এই অহুত মারজান-লালয় চৈতনা
কোলা হইতে স্টের রাজ্যে দেখা দিন ? মানার বিজ্ঞাননিং পশ্ভিতলণ নির্দারণ করিরাছেন যে, এই জগতের
স্বাহা এক কালে উক্ত বাম্পাকার ছিল এবং তখন
সেই উক্ত বাম্পারানির মধ্যে মানব চৈতনা দুর্বে থাকুক,
কোন প্রকার জীবাসুরেরও থাকা সন্তব ছিল না।
প্র্রেতি গ্রের এক স্থ্যে মিল ব্লিরাছেন:—

"There is a vast amount of evidence that the state of our planet was once such as to be incompatible with animal life, and that human life is of very much more modern than animal life"—Essay on Theism.

অর্থ।—"ইহার প্রচুর প্রমাণ আছে রে, আমাদের এই পৃথিবীয়ু অবস্থা এফকালে এমন ছিল যে, ইহা কোন জীবের জীবন রক্ষাব উপযোগী ছিল না, এবং মানব জীবন অপর জাবনের অনেক পরে উত্তুদ ইইরাছে।"

Encyclopedea Britanica নামক গ্রন্থে স্থবি-খ্যাত Huxley হাক্সলি সাহেব (Brology) অর্থাৎ খ্যাবনত্ব স্বস্থে বে প্রবন্ধ লিখিয়াছেন তাহার এক-খ্যানে বলিয়াছেন;—

"The condition of the globe was at one time such, that living matter could not have existed in it, life being entirely incompatible with the gaseous state."

অর্থ। শৃথিথার অবঁহা এককালে এরপ ছিল, তথন কোন জাথিত প্রাণার ইহাতে বাদক্রা অসম্ভর্ক ছিল; কারণ বাস্পাবস্থার ইহা কোন প্রকার জাবের হিতির দশপূর্ণ অনুপর্ক ছিল।

তবেই দেখা হইতেছে, এই বরণী এক কালে ভারত বিষ বাস্পন্ন ও জাবন বারণের অহসারোগী ছিল, তথ্য ইহাতে বিচিন্ন শক্তিমর মানবালা দিল বাক্ত লীবনও ছিললা। স্বাহ্বমান আলি জিল মা, লীবন বালিনাছে; কোণা ইইটে লালিয়াই কলিছে এক তানের চই প্রকার উত্তর প্রকার করিছে এক উত্তর শক্তি মার্ল হিতার উত্তর করেছে হিতার উত্তর করেছে হিতার উত্তর করেছে এক বাজিনা প্রথম উত্তর মার্লিক করেছে এক বাজিনা প্রথম উত্তরটা করেছে মার্লিক করে বাজিনা করেছে করেছে বাজিনা কর



The properties of living matter distinguish it absolutely from all other kinds of things; and the present state of knowledge furnishes us with no link between the living and the not-living.

অর্থ। "দজীব পদার্থের গুণাবলী তাহাকে অপর সম্বায় পদার্থ ইইতে সম্পূর্ণ শুত্র প্রকার করিয়াছে; আমাদের জ্ঞানের বর্ত্তমান অবহাতে, কির্পে যে জড় ইইতে চেতনের উৎপত্তি ইইল, তাহা আমারা জানি না।"

উত্ত প্রবন্ধের, সার একহানে তিনি বলিয়াছেন;—
"Of the causes which have led to the origination of living matter, it may be said, that we know absolutely nothing."

चित्र। - कि लागारा व क्षार म्हार लागी चेर्यात श्रेतार्थ, वहे लागत केटात वा नाव गया स्था दर, भागतारिश्ट जानिनार

উপনিষদ কাখ্যাছেন, নার্মা শ্রিকিবিনিবৈৰ আফতে স্থাভাবিকা আনবল্জিফাচ'। 'ইইার শক্তি মধ্য ও বিভিন্ন এবং জ্ঞান্তিকা ও বল-দিনা ইইার স্থানাকিং

শিওর স্তন-পানরপ ক্রিটার বিষয় এক 📺 🖘 काविशा तस्य याउँक। व किशोडी त्क्यन आकृषा !!! এত প্রারা একটা সুমহৎ মঙ্গল উদ্দেশ্ত দাধিত হহতেতে अथ्ठ तम विश्वा जाहात काम ज्वाम नार, आरात ক্রিপে সে ক্রিটাল নিশম করিতে হহতে, তাহার . छेनामन नारः; अयह श्रहाकताम तर कियाने निनान इंदेरकुछ। अहे कियाणि अक्टांक किया हहेरक कितान विकित् । निक्त कान माहे, अपशाय नाहे, निका नाहे, **উ**পদেশ नाई, अशह वमन वक्ती किंता कतिरक्छ, वकाता अकति क्याहर क्यन के जिल्ला नित हरे करहा देशक कि देशह अजिलक का ना त्य, (मह जिल्ला) जान के दार धनन जानित उत्पादक शनाविती ইনই মহাৰ্জিতেই আছে ৷ মানৰ শিশুতে বেন্ন व्यान नार, व्यथक ब्यान्तवी व्यान किया पृष्ठ रहेटकरह, रेड रकांव कितारनी सक्त कारण अर्थन मार्च्या विना प्राचित्क नाक्ष्म स्ति। एक्टाबा धमन मकन कारी। करके बाकाब कार नेपा, जोहांवा वारत मा, धनः क्काम ब्रह्मिन बात केवता जारात मार्च्या खेडावनी M 6-4 WALL CONT. - 16.5 60 WALL होराएक विशव नाका स्थापन स्थापन नाका

ना है अफिलिटगंद क्षांप निर्माण, मब्बिककात वसू प्रक्ष বোল্তা অভূতির থান্যাহরণ কার্যা এই শেনীগণা। তেকদিগেন্ধ দেহ বিশ্তিত করিয়া এই সকল বাভাবিক कियात अत्मक आकार्या निवर्गन आश इश्वर शिवाटण। ক্তকণ্ডণি ভেককে বিশ্ভিত করিয়া দেখা গিয়াছে 💘 राहे दिशिष्ट : उष्टाश मस्टक निहीन मजीताक्षे 🕂 যথন পড়িয়া আছে, তথন তালে এক থানি পাঁরে विभि अक् विन्तु अगिष् स्कृतिया त्व इत्रा गांत्र, उर्शन आंत्र अक पानि भा पिया तमह अभि अ विम् मृण्यित कल বার বার প্রয়াদ পাইতে গাকে। এই জিন্মার প্রকৃতি কি আশ্তণ !! এ কাথো যে তাহার কর্ত্ত নাই, জীবার প্রমাণ ইহ। অপেফা আর কি ইইতে পারে γ এথানেও দেখিতেছি, অক্ততা সহকারে এমন একটা कार्या इहेरल्डाइ, याहात मर्दश अकी मुक्त छेरलना নিহিত। ইহা দেখিয়া পাঠকগণ কি বলিবেন ? যে कान ८क्टक मारे अथ्ठ कार्या ८१ छात्मत প्रविष्ठत भावता राहेटल्ल, भ छान द्यायात्र एक्स धक জন বিখ্যাত বিজ্ঞান্ত্ৰিং পণ্ডিত সৰ্জ নিভাট এ সম্বন্ধে কি বলিতেছেন গ বিগত অধিক মাদের Fortnightly Review পত্রিকাতে তিনি লিখি ছন:--"for myself I am bound hombly to confess that the more I study nature, the more I am convinced that in the action of this all-perceding ber inscrutable and unimaginable intelligence, or which add conscious banan rationality is the utterly inadequate image attainable by us, is to he sought the possible explanation of the mysterious but undomable prosence in Notare of a rationality in that which is in itself irational.

अर्थ-"आः । कथा यनि दिन् जिलामा करतन, डाहात निकने आमि दिनय महकारत आकाव कतिरन वाधा रय, आमि यन्हें शकान्य नियान निर्माण करिएनाहि, क उन्हें सानात अर्थ दिन्छा पृष्ठ हरेएक हिंद, मिर्च महिला वाभि, अनिकिन्छाम अ अनिस्नीय निर्माण कामाहिल आधारित भाग्या काम जिल्ला साहा होत्रीमाल अथन (अर्थ नाना काम जिल्ला माहे) श्रोकाक का जिल्ला आमाहित भाग्यात जिलात नाहे) श्रोकाक का जिल्ला आमाहित भाग्यात विनात विहीन अकाम विविध्य अधानिरक काम किया पर्यन तथ अन्तर्भक्षा मधनात महत्वत हहे-वात किया पर्यन तथ अन्तर्भक्षा मधनात महत्वत हहे-वात किया पर्यन तथ अन्तर्भक्षा मधनात महत्वत हहे-

केट आना बिक त्र कानगानिनो, जात धक्रें पुरुष बात्रा कव्य अविश्व स्म अस्य सहित्यानक

मर्गरम स्वीति कारमेब अतिहत। य दियत स्वीमी অন্ধাত্যক্ষ করু নগেলনাথ চটোপাধার মহাশ্য তাহার লিখিত গ্রন্থে ও এই পরিকারই প্রায়নে অনেক কর্মা विनिप्तारहरून, व्यानि तम नकव पुर्वे ज्वत श्रूनकटल्लश क्रिया পাঠকগণের সময় নষ্ট স্থিব না। তবে এ বিষয়ে গ্রহ একটা বড় লোকের মত উদ্ভ ক্রিলা নির্ভ হইব: স্থাবিখ্যাত ভারণ নাসঃ ২বেরPertilization of Orchide নামৰ একথানি বাৰ গাছে। উক্ত গ্ৰন্থে তিনি একটা ভটনার উলেখ করিলা একটা কথা বলিয়াছেন। দে বতনাটা এট ;- পতলগণ গ্ৰন মধুপান করিবার জয় পুল্পে আমে, তথন দেখা যায় যে পুল্পের গঠনের মধ্যে ামন চাতুরী আছে বে, তাংলা সহসা মধুপান করিতে ারে না, মধ্ নিকট পৌছিতে বিলম্বয়। ইতাবসরে ভাষাদের চরণ্ড পরাগরেণু গর্তবেণুর দহিত মিলিয়া ৰায়। মধুপানে যে বিশ্বত্ত্য, তাহার ক্ষেথ করিয়া डोकर्न विवादिक्य; - "If this is accidental, it is a fortunate accident for the plant. If this be not accidental, and I cannot believe it to be accidental, what a Singular case of adapt. ation !"

· অর্থ ৷-- "এই ঘটনাকে যদি আক্ষিক বল গ্রে ইহা এমন আক্ষিক যাহা উক্ত প্রপেদ প্রায়ে বলাদ্ **कता थात्र या आकश्चिक मा अग्र-व्य**िम हेर्राटक অকৈত্বিক বলিক বিধান করিছে পানি লা-ভাচা इंटेर्ज देशाएक कि साम्भर्धा (कोमरणत अवित्र शाहपा বাইতেছে !"

জন ইয়াট মিল উপান পুরেনিলিখিত প্রস্থা এক **ছলে ৰ**লিমাছেন ; -

""I think it must be allowed that in the present state of our knowledge the whaptations in Nature afford a large behance of probability in favour of creation by intelligen**ce."** 

व्यर्थ :-- "बामान त्वास कृष्ट किश वीकांत कति छोड ইইবে থে, 'ইমান সময়ে আনালৈর জান সভদুর বিস্তৃত श्हेगोर्ड, जोशांक अब दित मध्यों पृष्टि क्लीनन मिथिया. हेंदा पूर्व मुख्य विविधः त्वास द्वं त्य, व्यानदात्राहे व्यहे স্প্রী হইরাছে।"

अकड्रे मत्नात्याश शृक्षक विश्वलंद मानवामाटक हकू-किंव किया मिथिएक भाषया गहेरकेट । ( ১৯ ) हेस्का প্রস্তুত ক্রিয়া, ( ২র ) প্রভাবজাত ক্রিয়া, ( ০র ) প্রজান ক্লাভকিনা ( ৪র্ম ) ইঞ্ ব্রাই সুভি নিয়া।

কারে ইচ্ছাপুর্বক যে ক্রিয়া করা বায়, জীহা ইচ্ছাপ্রস্থস্ত ক্রিয়া—বেমন একটা প্রাক্তিভ ছাদর গোলাপ তুলিবার শ্রন্ত ক্রানার করি। ইহাতে আমাদের স্থাপুত্র উত্তেজক, জান পথপ্রদর্শক, ও প্রবৃত্তি কার্যোর পরি-

( ২র ) এডম্ভিন্ন কতকগুলি ক্রিয়া আছে যাহা নানব বখনও শিক্ষা করে নাই, কিন্তপে করিতে হয় তাহার : उभाग भाग नाह, अध्य विस्मा नका निष्मित्र करा স্থলাবভুট ভাষা করে—ভাষা স্বভানজাত ক্রিয়া; মধা, শিশুর অন পান। স্তম পানরপ জিশারীতে বিশেষ टकोनन आछ। त्यताल हे निया १% निया यात्र, শেরণ করিয়া টালা এক জন বয়:প্রাপ্ত ব্যক্তির পকে ছম্মর, অণ্চ শিশ জননীর গাচ হটাতে পজিয়া, বিনা শिकात ७ विमा उपराज्य सम्बद्धार जनमीत हुहूक भर्थ शहेर। है। सिमा भारक। इता शुक्रा हमनार्थ इस গ্ৰস্থাব্যৰ লায় জ্ঞান বৃদ্ধি বিচাগ প্ৰথক জিয়া নয়, অব্যঃ সংশ্ৰেষ্টে জিয়ার ভাষে ইচ্ছার বহিছুতি জিয়াও नग इंड्रोट १७६, व स्योग व्यापक कथे हे आस्त्र स्थाप नाडे।

( ৩র ) আর এক প্রকার ক্রিয়া, যাহার মূলে এক সময়ে ইচ্ছা ও জ্ঞানের গোগ ছিল, কিন্তু মভ্যাস বশক্ত সে যোগ আন এখন স্থ্য কবিতে পারা যায় না t তাহ। অভ্যাসজাত ক্রিয়।। নগা গমনার্থ পদবিকেপ। আমন্ত্র গমনাথ প্রভাবকেপ কবি, কিন্ত প্রভাবে পদ निक्कारभन्न मगग्र कि व्याभारतम् छः न शास्य रव, भन-বিদ্দেপ করিতেটি, এবং প্রত্যের প্রবিক্ষেপের সময় कि जिल्ला विमानान प्राथी राजि । छोहा यो ना। आगारतम् पृष्टि आकारमञ्ज नकरण तश्चिरह, आगारमञ মন কোন নিগৃঢ় প্রেরে সম্ভাতে বিরত রহিয়াছে, অথচ আমরা বাইতেছি, পদম্ম উঠিতেছেও পড়িডেছে, গতিক্রিয়া সম্পন্ন ছইতেছে। যেন কলে কাঠ্য চলি-তেছে। এক দম্যে মনের কর্ত্ত ছিল, এক দ্ময়ে मनत्क छात्रिक इटेबाहिन, त्कोशन व्यवनयन क्रिक হইগাছিল, কত ফিকির ফলী করিতে হইগাছিল, কিছ अथम সেই জিনা, करणत कियात छात्र स्ट्रियो निवारह। একটি বিশু যথন প্রথম গাঁড়াইছের ও হাঁটিতে চেষ্টা करत, त्महें मुमंदबत विषय अकथात हिन्दी कन्न ; छाहारक কত পরিশ্রম ও কত চেষ্টা করিয়া হাট্রাড হয়, কিছ অভাস বশত সেই ক্রিয়া সাভাবি**ক হুইরাছে। "এরশ** ভনাও বিয়াছে বে, কোন কোন লেখি টেভে ছাটিট যুগাইরা থাকে।

📆 💘 🏋 हे भानीतिक जिल्ला व्यवसारमन ं ( अम ) वित्नय करा आखित जिल्लाम काम मह- व शेवह निविद्या हिना हिना हिना है। বিদ্ধ অবস্থাক্তে চলিবী আহে ভাষা চতুৰ হৈণী গণা। মধা, স্থাপিওের জিলা, পাকস্থলীর জিলা, বজনোডের পতিবিধিং ইতাংদি। এ সক্ষ জিলা আনাবের ইচ্ছার বহিস্তুত।

श्रांका क किया किया साथा व्यथम जिनिय जिम्राट्डि बामना कईम्निक अपना किछाक्रांत विमान মানতা দেখিভেছি। শিশু সন্তানের তনপান ছুলে, বৰিও সে ভিয়া অজ্ঞতানহাসত ও সংলাব প্ৰাণোৰিত ক্রিবা, তথাপি ভন্মদো শিশ্ব চেটা প্রতরাং ভাষার কার্যা-প্রবৃত্তিও আংশিকরতেশ বিলামান ৷ সে মুগতিকাশ ক্রিজেছে, হাস্বয় প্রসালন ব্রিটেছে, স্তম্বর শ্রি-্ততে, জন্ধ আৰু মণ্ড কনিং ততে এ নকল তালাৰ কাৰ্য্য, ए रहा । व भक्ताव अ श्रद्ध छ। या किया का का া ৮০ ব্ৰহ্ম ব্ৰিয়াকে ক্ষেষ্ট ৰূপে অভ্যাসজ্ঞিত वर्गा हा भाग गरेरहाल, एमगरन्छ म्राह स्पा छ वास्य-জালে (১০০০) ও লামান। তিয়াক্ষমন কলিয়া মেই लाका । जीव १००१म विभन्न शांकिमान फ्रिक् भाषा शहर राजा । १० कि. राष्ट्रक मा कल्का की एका है, ती, ছবিল এক এক, লেখন প্ৰচাৰ কিবলৈ ক্ৰিটেছে**, যেখামে** ন ব্যাহ বিশ্বস্থাসাপ সাভার দ্রীন, লেখে, বৈচার শ্রভান এবিশ্রাস আগ জানার ক্রিয়েটোর কর্মে প্রবিশ্রেষ্ট । এখন কি, মিদি গ্রেষ্ট্রেম্প্রেম্প্রেম্ নির্দেশ করা গ্রন্থানে, সেই নির্দিখ্যবস্থানের কল্ডান ক্রিনান্ধা বিদামান রাম্বিটে। তাগার সংবাধ আত প্রক্রভাবে পথের জ্ঞান বহিনাছে, নাহবা সোলাহি বৈশাৰ প্ৰতিভাগে লা কেন / বিশ্বিতাৰভাতে ও আন লেব এক প্রার অভ্যত্ত ক্রীক্ষার, পর্যায় ভারতারত থাকে, ভাহার জ্বাব ক্ষানক্ষাক্ষাৰ হলন যায়। **ইহা সৰ্বদা দেখ**। যায় তে, পাৰ্লিকালে উঠিল বুদি কোন স্থানে গমন করিবার কথা থাকে এবং এক ব্যক্তি সেই माकात ७ डेरकंश नहेशा भगन करत, तमांशर है शहि, এক গুমের পর আপনা আপনি তাহার নিত্র৷ ভঞ্চত য়াছে। ইহা কিরণে হইল ? নিদার মধ্যেও ভাহাব मान विषे विष्ठात ७ द्वांश अक्ति ना शाकिएवं, छात एस কিরপে ঠিক সুমূর পাগিল ? এক বার এক থানি मारोज मञ्रक स्टिंडिश् । "स्वन प्राक्ति >> है। उदन जाहात कारशन निमा देखाना कि के निमा गाहिबात ममत विक्रिक्त बाजा वृद्धिकत द्व तक्षेत्र प्रदेशित भन्न काशक थानि वस्तात कर निरंत्र साम छेशति छ स्तूर्व, तम नमात काशास्त्र का क्षेत्र कियारमा मा बिटक धानगी विशास अभिज्ञाक सम्मानका केंद्रा दर्शिया जिल्ली अवही-

দিলকে সুইটার সন্য তুলিয়া দিতে অন্যোধ করিছা নিতা থেলেন। ঘড়িতে ঠিক যথন হুইটা, এংগ্রীগণ ডাকিবার পূলেই কাংগুন শ্যাত্যাগ করিছা এও সম্প্র ইইয়া উঠিলেন এবং দেখেন যে ঠিক গুইটা বাজিয়াছে এবং আব লশ সিনিট কাল তিনি নিট্টত পাকিলে সেই বিপদে পাজিয়ার সম্ভাবনা ছিল। সেই লগিন কইছে জাহাজ খানি বাজিয়া এলানেও দেখা গোল যে, গভীর নিদার সধ্যেক ভিতার প্রতিশাধ শক্তি গুজারভাবে কার্য্য করিতেছিল।

वांशा बरोक, भूरका क छड़ाक्ष किसाव महता बिनिन জিলাভলে ক্ষাৰ্থা কিলেজা বা ক্লোজ ,িগ বিদ্যা খানতা দেখিকেছি, কেবল যে সকল জিলাকে সভা বহিত ছ 😇 বলিয়া উল্লেখ করা গিয়াছে, যথা সংশি: ওর ক্রিন্। लाइ**डि, उ**नारधारे मान्द्रत किर्माणको (५४) शहेर्डु ন।। অথচ ভদপ্ৰি মানবের বাচুর শক্তিন। প্রেক্রি অতি গুটু গুড়-উলেগ্ড দেখা ব্যান্ত্রেছ । যে দুক্ষ जिल्ला को जनकार निविध करणहरू में । शहर व्यक्त ५ व्यदि शीयमगढभाइ सम्राधनः महिन्त स्वत कारी। भोगरवंत जिल्लामात्र असीन तरियाक, १८० छई क कक भाग दिया भागर (अपन्ये क्ये क्ये का, १६४२ वाज मानदेवत राजन भाजरावन भरक अज्ञादशक, भागांदाव अज्ञान निरम्य परधा भानत्त्व कीवननार्यन नद्यानम् দে প্ৰির উপত্তে মান্তের কাঠান্ত ভ্রের চতুপ্রি কলোৰ বৰুৰ 🕈 ইয়া কি মান্বলেকের একটা আৰু 🗈 ७६ स्ट्रा ध्वे तम्मावरश्य छाडि रिय पूर्व नवान क्षांकरा प्रविद्या विश्वकावता छोन्। मध्यार । र शिल्पका ভিনেত্ৰই কি প্ৰিচ্ম প্ৰাপ্ত : ওখা যায় না ৮

ভূতীয় দুগান্ত প্রস্তির প্রস্ব বেননা, একজন লেক বিজ্ঞানবিং পাপ্ততকে । প্রতাসা করিলেই পাঠক নহ'শর জানিতে পারিবেন থে, গার্ভিনীর ঘণন প্রশ্ব কাল উপাহিত হয়, তথা কিবং কাল পূর্ব হইতেই এক প্রকার বেদনা বাভিতে পাতে। অবশেষে প্রদেশ বাভিতে পাতে। অবশেষে প্রদেশ বাভিতে পাতেন নিল্লানগৈগাপ্রাসী এক প্রকার বেগ নিতে পাতেন। তাছাকে কোঁতপাড়া বলে। সহজ শ্বীপে স্স্তান্থানির সময়ে কাহাকেও গানি পেইলেগ কোঁত গানিতে হয়, তাহাতে কেত পরিশ্রম ও কত বল প্রয়োগ আবশ্রক হয়, তাহা সকলেই বাভ্নান করিতে পারেন। জিন্মান্থা বা কার্যাপারতি বলি কোগাও বিদ্যান থাকা আবশ্যক হয়, তবে উক্ত শ্রমান করিতে পারেন। জিন্মান্থা বা কার্যাপারতি বলি কোগাও বিদ্যান থাকা আবশ্যক হয়, তবে উক্ত শ্রমান করিতে পারেন। জন্ম আবশ্যক হয়, তবে উক্ত শ্রমান করিতে পারেন। আব্যাক হয়, তবে উক্ত শ্রমান করিতে পারেন। আব্যাক ক্রমান কর্মান করিবেশ ক্রমার মধ্যে। অগচ প্রস্তাত যথন ক্রমণ কোঁত প্রদেশ, তথন তত্পার উহিন্ন কর্মান থাকা স্প্রান্থ কিরমান নিল্লা

বিশিষ্ট কোন উপাৰে উল্লেখন করিয়া কোনা থায়,"
তথালি বিধাকালে ঐ ব্যুগ আপনি প্রকাশ পাইবে।
থাত লক্ষ করি বেগ ও বল প্রয়োগের কার্য্য হইতেচে,
কার্য্য বিধার কি রাজ কারা তারা হইতেছে তাহার
কৈ বিধার কি রাজেনা কঙ্ক নাই, ইংলাত পাঠক
মলানার কি বিবেচনা কারন গুলি কার্য্য কার্য্য হার্য্য
ই লাগত হইতেছে গুলেই গালনার সমন্ত প্রকাশির
উপারে উক্ত কার্য্যানার কার্য্য ক্ষিণ্যার ভার
রাখিলে বিলা ঘটিতে গারিত, এই ক্লা বিশ্ব কার্য্য
আমানার হাতে কেল ভাগ কার্য্য ক্রিয়ার প্রাক্তিক
মহাল্যের বোল হয় পান ইল্ড বিশ্বকাশ্রেন সাক্ষ্য

অস্ত্রে বিশ্বক্ষেত্র পান আছে - এক কিলেজা (will) আছে। কেবা ভাগে নাম, প্রতির মাডে। क्षणीति लाह्य क्रेबात ११.५, बाजर अकरात हिन्छ। कविष्ठा स्मार्थ, उद्योखित समान्यभाग किन् १४ १ श्री प्रभा तरेदन (य क्यों कर अपन श्रामातक क्रमें) करितात एटा एउटी करत, स्मेर व्यासारक स्माडि करतः १७०, यङा कि नात् त्रीत । तीवे आधातिकह লাভ হট্য়াছে ববিরাং জলতের ১৮ শূদংখ্য ুমাননের**ঃ** भावा नर्गापी त्वाक् सामन्त को लगाइ, अवः पाटे प्रशासन ঘাহাতে আমার আরও লভি এব সেজর ৫৮৪। ক্রিচেছে তথনই বুৰিতে ইইবে বে, সেই দশলন আশাৰ সিংহ বর্থাৎ ভাহার। আমান্তে পার্নি: করেন। ইহা গ্র मरक क्षां, आज अभिक त' तार आ प्रकृत सहि। ध्यान भाष्ट्रक महानम क्षेत्रको एकत १ कृष्टि **भा**रताल क्र रुख नहेंबा विष्ठां के आवश्र १८०। यन सिक्टर र्भाषांत्वत वैश्वीम च ८७, फ्रांच विल्या अयुरवाम कृति বে, বরার একটা গেলাপ ভূমিরা আবার এই প্রাবদ্ধ পিঠি করিতে আরম্ভ কলন। আছো মনে কার্রা নই, भात श्राप्त अनित (त्रामान) तिश्वारक् । के तिर्माणान-টার আতি একবান **দুদিশাত ক্**ষুক্র। উ**হার স্থা**পড়া-खींग एक रन दका बन १ के होता अस एक न हिटल के बोरान मात्रक १ : छेरात्र वर्ग दकम्ब-भद्नादबीवनकाती । जुन्ने हिश्वी करान. के समाव नग एका के भूरण हो और बारह १ छाष्ट्रीय द्वास म्युट्स क क्या बना मार् ६४,.. काश ना शहरित नगत हरात किएमे लाइड रहेराकु भूषा इक्षामिल भना त्वर् भक्ष क मा, किरा

अधिक ना। अक्तार अत्यन क्राम्य अधिकाम हिराद विविध वर्ग दिन (ने उसा बर्ग १ स्ट्रिस माधा धीन दलान श्रीरवत नाम कि थाठक महालय क्रिएड नर्देशन त्रीगादनंत वे समात्र वर्ग मा धारितंत, बाहात्र की बर्स शायरनत नायीक हरे छ ? आगता मछनूत्र कु बिएक भारत, निक नकी निरंगत काराइड कार्यन क रामत बर्गेज जिनत निर्देत कत्रिएक हमा। जिस्त वर्ग एक्रम महास्केष ७ राजा मा १६८म महालाकी ज्ञानक व्यानिवात दशने नाबाठ रहर ना। छ८व উश्ट ভদ্মপ বিচিত্র বর্ণ জীবা ছইল কেন্দ্র ইহার ও বিচিত্র वर्ग ना शाकिरण का ना जेरे जान यात्ररणत रकान वा कुछ घरेंच कि मा १ ८४ विनायमें त्या बामातमत खाल धाततातः কোন বাংগাত হয়ত 💡 উদায় অভাবেড আনবং বালি-जाम, किस देश शाकारण क्षेत्रहें खाल ने।।।एडिंड ह रेश ना धारित अकट्टे स्टाब आयात हरेडा, जरव उ स्टेंब मुख्य अक्ल अविध्यक्ति स्पोत्रिकेसात्रमी अक्लूफ भारता**रहन ८२, व्या**नका ८४ **८४** वर्ग **८३**.न **वासार्त** বীতেৰা ঘাৰ্ক ভাগ নহে, কিন্তু বাণ্ডিয়া স্থৰ্জে পানি। এবং মেই জন্ম অংগাজনত কার্যাটেন : জৌভিব श्रीकाङ्ग मण्य अनुसारत छेश कि लाकि मेहा 🎉 কেনো ভূমি বিশ্বেব অন্তরালবালি শাজন "ভূমি বৃষ্ণ bie त्य व्यागता **व्याप** थार्कि," के त्यानायती **त्यानिका**र्थ <sup>भा</sup>रक ,मरामदबन्न ध्वान कि दक्कन क्षानक 化乙烷 利宁

धार्य अविष्ठ अत्वक पृथ्येष छित्रम्य कर्षा मार्थरक भारत। अतिक विश्वति कत्ततीव आधारम माहे, व्य था। इ. दहिया (त्यक्तिक) भी। इह स्वयुक्त काद ट्डाइ, ट्रमङ क्रानवधात्त्वत्र विवत्र विक्कृतिकशा कताः गुडिक। भटन ककन, सामिरिकत श्रीडि वाल ना शाकिड, दक्तन चार्क e स्थानाकेश यनि विभागतित अतिहासक दर्ड, मन्त्रादवंत शांवकाश्य साम् ध्वताताद्य छनित कि ना । विभिन्न बार्जिक कर्म भगवन । भानिक, সানি প্রের দুল্লে কিনিতান, পাচক ব। 🚜 अार्थन कक्किक्सम करिङ, आमात सम नाम पृहिसा मार्ड, अरेकणी धानमा मार्डरज्ञा । जुरुष स्थामास्त्रम क्रमा प्रमुक्ति थे। जीत्नाक दम्हे कांबरन के मिनी परिका दिशादक कि आन तक। ७ एडे तका रहेक लो । किंक भारे यार्थ e स्थाम किंक मत्या दशम नारम् धार्मा अनार्थ एक ए। अवा विकान निवा नुसुनानहरू वस्ति कविता। यादा ! ८वान कि श्रेष्ठा ! ८कान कवि ट्लीबीब बाद्धम, िन व्यहे स्मीत निकृत्वम् महिना भनाति नर्वत के एक नम्ब इद्देशहरून हे साहित टाक्नी विश्ववनात स्वाट्य वाहित्व वामित्रक

ক্ষামুরা হৈদন কোণার পড়িছে মনে হয় যে, গরহীন পুল হইডেই মধুমজিকা মধু আহরণ করে— মান্তি ইউক ইংগতে গরিয়া লেখকের তাৎপর্য্যে কোন কাষাত আছিকে পারে না। সং

আৰু উহাত আৰু ও কাণবাদী লাই ক বৰ্ষাৰ উহাব

ক্ষেত্ৰ প্ৰথা নিউ হইবা বাইবে আৰু কৰিব।

ক্ষেত্ৰ প্ৰথা আৰু কৰিব।

ক্ষেত্ৰ প্ৰাক্তি বৰ্ষাৰ বিশ্ব আৰু কৰিব।

ক্ষেত্ৰ প্ৰাক্তি বৰ্ষাৰ প্ৰাক্তি আৰু কৰিব।

ক্ষেত্ৰ প্ৰাক্তি প্ৰাক্তি পাছিলা কৰি, ক্ষেত্ৰ প্ৰাক্তি

ক্ষেত্ৰ প্ৰভাৱ বিভিন্ত পাছিলান কৰি, ক্ষিত্ৰ প্ৰাক্তি

ক্ষেত্ৰ প্ৰভাৱ বিভিন্ত পাছিলান কৰি, ক্ষিত্ৰ প্ৰাক্তি

ক্ষেত্ৰ বাচিতে পাছিলান না। কে গো বিৰেৱ ক্ষিত্ৰ

ক্ষেত্ৰ বাচিতে পাছিলান না। কে গো বিৰেৱ ক্ষিত্ৰ

ক্ষেত্ৰ বাচিতে পাছিলান না। কে গো বিৰেৱ ক্ষিত্ৰ

ক্ষেত্ৰ প্ৰভাৱ আনাৱ মনে উদ্ভৱ হইডেইনে আৰু

ইহাও কি সভাৱ যে, মানব হৃদত্ৰ এই প্ৰেমানি ক্ষেত্ৰ

ক্ষেত্ৰ ক্ষেত্ৰ যে, মানব হৃদত্ৰ ক্ষাত্ৰ সমূৎপন্ন,

ভাহাতে কেই প্ৰেমানি নাই প্ৰভাৱৰ বলি বিশ্বকারণে

ক্ষেত্ৰ ক্ষান ও ক্ৰিয়েক। আছে, ভাহা নহে, প্ৰেমান্ত
আছে।

**কেবল ভাহা নতে,** তাঁগাতে আবিও কিছু আছে। মান্ব আকৃতির আব একটা গাট তত্ত্বের বিষয় আলো-চনা করা বাইতোহ। মনে ফকন, একজন লোকের বিশ্বকের চাবিটা হাধাইখা গিয়াছে। তিনি প্রতিবেশী বের বাড়ী হইতে খনেক প্রাণ চাবি আনটেয়াছেন; **এক একটা কৰিয়া চাৰী প**দীখন কৰিয়া, দেখোওছেন। যে ভাবিশুলি গর্ভের মধ্যে প্রবিষ্ট হইতেছে 🗽 দ্ব লাগ্রি তেছে না, তিনি এধিক ওদিক সেদিক করিছ। যার বার ্ৰেৰিয়া শেষে বলিডেছেন, না এটা লাগিলুনা, এই শ্রিনা বেটাকে প্রিত্যাল করিতেছেন। কিছা মনে क्यन, এक राक्ति अनिमाश्राम्भाग त्य. 'द्यान এकती विटनेश फरवा वमन निवादन करता जिनि এक गड भूरन (मेरेजे व्याद्यात कतिया प्रतिशासन रत, तमन निवातन করে না। তৎপরে ভিনি ছির করিলেন যে, ভাঁহার क्षमा चवा हिम्मार्। किनि कुछ सरवात वावदात शत्रि-জ্ঞাপ করিলের ক্রান্ত পরিকা করিবার ইচ্ছা থাকিল सा । आनंदिव नकन कार्याहे अक्रम तथा यात्र ; मनदाव रहिली बाबरेक विकृत १७॥ बात, छाशाट विकास कार्क मा । नक्का विज्ञानन, हेशहे मानव-मरनव भारत वीकार्तिक किय बेक्डी चल रेशत वाजिकम कि इत । अदन करून, अक् ताकि आएननात उतिबंधक নিকৰ ক্ষিমাৰ বাছ অয়াক পাইজেকেন। নতা, ভার, ৰেম ও পৰিজ্ঞা, লাডের মহা তিনি সংগ্রাম করিতে ्वन िप्रहे नः शास्त्रक का कि का प्राप्त कि का बहु कि नीर १ जीवना हैरात मध्य किनगी कांब गुका कति। ेम) अवेशाबाद क्यूक्ति बन्छ गात वार अवट THE PROPERTY CHE AN ADMINISTRATE AN ARCH.

প্ৰিয়াও আশা করে ি অভাত হলে দশবার হারিলে मित्रान हरेटकेट्ट, किछ पट्यंत एटा न उतात हातिता अ निवान इंटरकट्ट मा। ( २४) तम यथन ५/५वृधिनिरणत ৰশ্বৰী হইয়া প্ৰতিত হইতেছে, তথমও পাতত হইতে **হইতে ইহা অভ্তৰ করে যে, ধর্মোরই** জ্যুদুক্ত হওয়। উচিও ছিল; ঐর্থাৎ সে পাপের দাসত্র করিতেও श्राभाव मध्य व्यक्ष्य करता । यह वक्ष-मध्यारम अत्व स्टेंड्रा (य' फी बंबलीड़ करत, ठाटा हरेल, कथम छ **এক্সাক্ত আন্তর্ভার** করে ন। ব্যা, ব্যো**র** উপ্রে **উটিমাইছ**় ভাষার লাভ করিবার আরু কিছ নাই, বরু বে বত উদ্ধে উপনি করে, সে ২০ মতাক্র উপরে ধর্মকৈ উন্নত দেখিকে পার। প্রথম গুরুটা হ্ইছে আৰৱা এই দতো উপনীত হই গে, ধৰ্মেৰ মত্যন্ত বিধাৰ मानत्वत्र प्रजाद-निक्ष। हेर् जनशानत विद्यातन छात मन ता, व्यक्तकारी हहैला छेठिया गाय। कुछोत्रजी दारा। এই সতা অনুহত্ত করিতেছি বে, আমানের অন্তঃর ধর্মের যে ভাব আছে, ভাহার কেনে একটা দীমা স্থামনা নিৰ্দেশ করিতে পারিনা। মানবাসদরে **ধর্মের মৃত্যু**-জ্ঞান স্বাভাবিক এবং ধর্ম ভাবের মধ্যে অনুৱের ভাব নিত্রিত: এই উভয় সত্য এক সংস্থ আলোচনা করিলে कितम जान भरत जिन्हा इस, डेहाएड कि क्षेष्ट्रे विश्वाम অন্তরে প্রবর্ণ হয় না যে, আমানের প্রাকৃতিতে যে ধর্ निजम, ८नरे सप निजम दनरे विस्थत आहि काबन रहेट সমুৎপর।

े मानव शनः । व अर्थे अर्थे अर्थे अर्थे अर्थे । या का ভাষা মানবের কলবাজ্ঞানের প্রতি দৃষ্টপাত করিলে জান বার। একি এক আশ্চর্যা ভার মানবকে শাস্ত্র कविष्ठा । । अवाग्यन रहेर वाबाग्य प्रकृत लाक्षिक स्ट्रेरजन, **७४न प्रेयन क**नगर**न्**य छेल्द्र नग**र त**कात छात অপিত হইন। তখন রাজবংশের প্রতি রোনবাদী-দিগের এত বিষেব বে ভাঁছারা এই আইন করিবাভিগেন 🧬 বে, ৰোমনগৰবানী বে কোন বাজি পুনৱার রাজা-निश्रंक मानिवात यज्यही माथा शाकिता, जाहात लान-मध कत्रा रहेरत। अरेक्स विधि श्रीतात रखान अर कडर छणि রোমীর যুবক উক্ত অপরাধে অপরাধা रहेगा विठायार्थ . डे उर कनगण आत्रा निकटी मीक रहेन व ष्ट्रीभा वनक (महे प्रकारनव न्यूबा **अकान क**नमः । ছুইন পুত্ৰ ছিল। তিনি বৰ্ম বিচারাসনে, তৰন সমূচিত निर्मात कविश्वा बाहेनममञ्ज ने क्या बाहा होह । ले ज धकार कर्वका धार कात्न क्रिन स्थाती है गाका ब्याइडि खर्न विकि। स्पन चीव भूछिन्द्रगत द्वार प्रथान क्रिशियम, अव्यन् क्रिक्सिम्हक वय क्रिवात ज्यानम सिटनन । बन्ति वाक्कान काराविनदम् वृह्मिद्द गर्शा

৯চাৰীল, তথৰ কিমি মত্তে কুণ আবৰণ কৰিবা বোদন अधिक केशियन। अब मिरेन प्रमुक्ता त्यर जनत पिएक में के किया में महिला के महिला कर करेंग, এবন বারটা মানব ভিন্ন অল কোন প্রাণীতে কেই কুখনত বিশ্ব বিগত নিউটিনীর সময় সার হেনরি ক্রেক্টিঅহোধাায় কমিশ্নর ছিলেন। তিনি निष्ठान्त व्यक्त क्षेत्रभारीत अटेश विमाय अट्न कृतिया हैश्यक या अत जारियाजन आजार हिलान, हो र नरको मंगद्र मध्योग कांगिन त्ये. निकारीयक वित्यांशी हेरेग्री দিনী অধিকার গুর্বক লকোএন দিকে আসিতেছেঁঃ ত্থন তিনি অন্তেব কৰিলেন যে, সেহ বিপদের সময় ভীখার নিজের শবর্ণ েট ওসদেই গাব প্রাণ রক্ষা ু করিবার ১৮টা কষ, ইটিল প্রেক্ষ কর্তবা। ইহা ন্থির ্নীরিছা: সেই কর দেহে অধুপারে আনবোহণ করিছা এক मिन देनके गहेरा सम्बाध्यार शम्म कतिरामन, धावा २४ प्रकृष्णिक प्राप्तिक । , यात्र ठ८ तथा क विरत्न । ७९ शहर 🏄 ্বত ইইলে, এরেই নগুয়ের প্রেমিডেলিতে ফিনিয়া আলিয়া, সহরের ও চতুঃপাংখর সমুদার ইংরাজ্বক সেই বাড়ীতে প্রবিদ্যা বাড়াটাকে দগ্রাম করিখা রক্ষা করিতে লাগিলেন। এই সময়ে এক দিন এক কামানের গোলা তাহার গ্রন্থ সংখ্য পড়িয়া তাহাকে ফ । তিক রূপে আ-গাত কবিল। সেই পেহার বেদন্য তিনি মুমুর্ হইয়া পড़िलान, देशांत अन करतक मिन या अ शांदिक हिलान। কিন্তু সেই অসহ যাতনার মধ্যে তিনি শতত সেই বাড়ীতে আছিত বাজিদিগের রক্ষার উপায় ইন্তা করিতেছেন, আহতদিশের শুল্লবার বালাবন্তের উপদেশ দিতেছেল, স্ত্রাক্রিণের রক্ষার পরামর্শ লিডেছেন, শি ছচিতেব ভিত্ত লইতেছেন। পৃষ্টিত মহাশয় কোন গড়ত এপ্রকার कर्डना खारमञ्ज कत्रमा १ निताल भारतम कि मा १ भारीन मन मभूनांत्र व्यवनात, अभूनांस विश्वाम १४ व्हाइ, विश्व कर्टना काम पूरण पतिया गतिश्रम नवानेद्राह--- कर् श्वर्गीत मुन्ता दक्षण मानत्व मुख्या। ध्वर्गान्दक त्यमन কর্তব্য জ্ঞান অপর দিনে বহুতাপ। অনুভাপের অঞ मूकापन इंटेडिंड उस्ता। क्षेत्र यक स्वर्धनमूत्र विध-कोक्रु∜cकरण मानद्वत्रहे चाहि। **जास्त्रे**त्र यादा कता ছিটি ছিল ভাছা করিতে পারি নাই, ইছা প্রির। क्रिके निक्षे थानीत्क करन प्रामि हैरेएँ अधिप्राट्म ह ্রাই স্থাকাজনার উচ্চতা ও বিজ্ঞার গ*ী*লভা কেবল ৰাশবেই বুৰুব। বিনি এই উচ্চতা ও গভীনতাকে আন্ত্ৰ প্ৰতিতে নিহিত ক্ৰিগাছেল তিনি বে ''ধৰ্মাবছ मानका" मिन्दर्भत जावह ३ भारतत माजिलाका," **্বাহার বুদ্ধিতেই অমুভ্**ব করা যার না গ ক্ষিত্র দেখন মের মান্যাশক্তিতে বনি জান থাকিল,

জিলেছা সাকিল, কোন থাকিল, কা নিজৰ বাজিল, তাহা হইলে তিনি তাড়িভ না মন্য কোন তেনিছে শক্তির নায়-জড় শক্তি হইলেন না, কিছু লচেতন পুরুষ হইলেন। যে অর্থে ত্রী পুরুষ শব্দ ন্যবহার হয়, নে অর্থে এই পুরুষ শব্দ ব্যবহার হয়, নে অর্থে এই পুরুষ শব্দ ব্যবহার হয়, নে প্রেথিত ও ক্রিয়েছাসম্পন্ন বিনি, তিনি পুরুষ। এই জন্যই প্রাচীন খবিদিণের সহিত বোগ নিলা বলিতে ইছা করে;—

্ৰদাহমেতং প্ৰেবং মহাতং অ: গ্ৰাবৰ্থ উন্দঃ প্ৰস্তাৎ। তমেণ বিদিয়াতি মৃত্যুমেতি নানাঃ প্ৰা বিদ্যুতে অধ্নার।

অর্থ--''অজ্ঞান্য কারের পরপাববর্তী - এই নিম্পু পুরুষকে গানি জানিয়ছি -ইইাকে লাভ, করিয়া মায়ক মৃত্যুভয়কে মতিক্রম করে, যাইবার জ্বা পথ মুই ।''

# নাকার ও নিরাকার উপাস্নাল

(ভারতী হইছে উদ্ভ

সম্রতি কিছুকাল হইতে সাকার নিরা-কার উপাদনা লইয়া ভাত্তভাবে স্মালোচনা চলিতেছে। বাঁহারা ইহাতে বোগ দিয়াছেন তাঁহারা এমনি ভার ধারণ করিমটেন ফেন সাকার উপাসনার পক্ষ ঋবলমন করিয়া ভাহারা প্রদায়জলমগ্রঃ হিন্দুধর্মের পুনরুদ্ধার कतिर उर्हम । निवाकात छेशामना रान्स्म भएनात निरदाशी। এই जना छारात क्रिक **टकमन** विकाशीय **चारकाट्न वा**कमन हिन-एउट । बरेक्रा थाहीन विकलानी अवि ও উপনিষ্টের প্রতি অসম্রম প্রকাশ করিছে ভাহাদের পর্য হিন্তুক অভিমান কিছুমাত সঙ্কৃচিত হইতেছে না। ভাষারা মনে করি-তেছেন না, ব্রাক্ষ বলিয়া আমরা রহৎ হিম্মু সম্প্রদায়ের বাহিছুত নহি। হিন্দুর্ব শিরোভূষণ বাঁহারা, আমত্রা উহিচালে নিকট হইতে বৰ্ণাশিকা শাভ করি ৷ অতএব জাৰ ও চিন্দু বলিয়া চুই কুছেনিক বিক্স খাড়া করিয়া যুদ্ধ বাধাই**ছা দিলে লোলভিছ** इ'। प्रशास स्त्रा का सावा।

বলবুনের সভাইরে রেক্স পার্থিত কর্মিন করিছে বোঁচার করি অনেক সময়ে সেইরিশ করাতে কথাতে তুমুল দক্ষ্ম বাধিয়া যার অ্বচ উভয় পক্ষীর মত অক্ষত্ত দেহে বিরাজ করিতে থাকে। সাকার ও নিরাকার উপাসনার অর্থই বোঁধ করি এখনও স্থির হয় নাই।
করেল তুটো কথায় মিলিয়া বাঁওক্যাক্ষি

· একটি মানুষকে যখন মুক্ত স্থানে অ**রা**-রিত ভাবে ছাড়িয়া দেওয়া যায়, **সে যখন** সেচ্ছামতে চলিয়া বৈড়ায়, তথন সে প্রতি-পদক্ষেপে কিয়ৎ পরিমাণ মাত্র স্থানের বেশী অধিকার করিতে পারে না। ছাজার গর্কের স্ফীত হইয়। উঠুন বা আড়ন্তর করিয়া পা ফেলুৰ, তিৰ চারি হাত জ্যির বেশী তিনি শরীরের ছারায় আয়ত করিতে পারেন না। কিন্তু তাই বলিয়া যদি নে নেচারাকে দেই তিন চারি হাত অমির মধ্যেই বলপূর্বক প্রতিষ্ঠিত করিয়া দেয়াল গাঁথিয়া গণ্ডিবদ্ধ कतिया बाथा यात्र, भ कि अकरे कथा हरेल ! আমি বলি ঈশর-উপাসনা সম্বন্ধে এইরূপ হৃদয়ের বিস্তারজনক ও স্বাস্থ্যজনক প্রাধীন-তাই অপৈত্তলিকতা এবং তব্দৈদ্বন্ধে হাদয়ের महीर्ग्डाबनक ७ वया द्राबनक क्षणावह পৌত্রলিকতা। সমুদ্রের ধারে দাঁড়াইয়া षामादात मृष्टित द्यादर बागता मगूटजत नवणे। দেখিতে পাই না, কিন্তু তাই বলিয়া একজন বিক্ত ৰাজি যদি বলেন—এত খৰ্চপত্ৰ ও लेबिटाम कवित्रा नमूज मिथिक ग्राहिवात भाव-শাক কি কারণ, হাজার চেটা করিলেও कृति गर्याक काँउ कृत अकृते करणे तिविद्र शास्त्र मार्क मन्दर मध्य दर्गन्त आहेत्त THE SOUR WIRE STATE OF THE PROPERTY OF THE PRO क्षिण प्रकृष्टिक संस्था गरन सुन्द्रमा मधना

কের যত কথা হয়। আমর। মনে করিয়া ধরিয়া লইলেই যদি সব হইত তাহা হইলে যে ব্যক্তি আধ্প্রাদ জল খায় তাহার সহিত সমুদ্রপায়ী অগণ্ডের তফাৎ কি ? আমি যেন বুলপূর্বক ভোবাকেই মমুদ্র মনে করিয়া লইলাম কিন্তু সমুদ্রের সে বায়ু কোথায় পাইব, সেই হৃদয়ের উদারতাজনক বিশালতা কোথায় পাইব, সেইত হৃদ্য না!

আমরা অধীন এ কথা কেহই অফীকার করে না, কিন্তু অধীন বলিয়াই স্বাধীনভার চর্চচা করিয়া আমরা এত হখ পাই—আমরা সমীম रम मचल्क कांशाव कांन मरेन्स्ट नार्ट किस সসীয় বলিয়াই আমরা ক্রমাগত অসীমের षामाद्यत स्थ नारे। "जूरेमव स्थर नाटक স্তখমন্তি।" আমরা তুর্বলে বলিয়া আমাদের যতটুকু বল আছে ভাহাও কে বিনাশ করিতে চায়, আমরা সীমাবদ্ধ বলিয়া আমাদের বত-টুকু সাধীনতা আছে তাহাও কে অপহরণ করিতে চায়, আমরা বর্তমানে দরিতে বলিয়া আমাদের সমস্ত ভবিষাতের আশাও কে উন্মৃলিত করিতে চায়। স্মান্সদের পথ কৃদ্ধ করিও না, আমাদের একমাত্র দাঁড়াইবার স্থান আছে আর সমস্তই পথ--অভএব আমাদিগকে ক্রমানতই চলিতে হইবে, শগ্র-সর হইতে হইবে; কঞ্চির বেড়া বাঁৰিয়া আমাদের যাত্রার ব্যাবাত করিও না।

কেহ কেহ পৌত্তলিকতাকে কবিতার হিসাবে দেখেন। তাঁহারা বলেন কবিতাই পৌত্তলিকতা, পৌত্তলিকতাই কবিতা। আমা-দের স্বাভাবিক শ্রন্থতি অনুসারে আমরা ভাবমাত্রকে আফার দিতে চাই, ভাবের সেই স্যকার বাহ্য ক্রুডিকে কবিত। বলিতে পার রা পৌত্রলিকতা বলিতে পার। তুইরূপ ভাবের বাঁহা প্রকাশ চেঠাকেই ভাবাভিনয়ন

কিন্তু কৰিন্তা পোত্তলিকতা নংখ, পলস্কার শাষ্ট্রের আইনই গোড়ালকতা। ভাষাতি-नग्रदनकेश्वादी नाजा है कविता अन्यवाजिनग्रदनत विशेषाण्डे विश्ववादगास्त्रात्वेस श्रीत्रहमा। কবিতায় হাসিকে ্লকুস্থ বলে কিন্তু অল-স্কার শাস্ত্রে হাতিত কুপকুত্র বলিতেই ছইবে। উপরকে আলা হাদয়ের সন্ধীর্ণতা-ব্ৰশতঃ সীনাবদ্ধ কৰিয়া সা**ৰিতে পা**ৱি কি**ন্ত পৌ**লুলিক ডায় উ। হাকে বিশেষ **একরপ, সীমার** भट्या वस्त कांद्रशः कानिएक्टे स्टेटव । **रकाम** ७ व म्यास्य किस्त कतरवंद्र संस्था कीरन दाम कीर्यं शांत ना। উত্তেক করিবার উচ্চেশে যদি মূর্ত্তি গড়া বার ও দেই মুর্ত্তির মধ্যেই দ্বি মনকে বন্ধ করিয়া রাখে তবে কিছুদিন পরে দেগুর্ত্তি আর কল্পনা উটে हं कतिएक शास्त्र ना। क्रांग द्विहा**र** मर्त्वमर्का 🖹 📆 छत्रे, यादात जना जाराह <u>षात्रनाक (भ ष्रवम्त्र शाहेबामात्र दीद्र वीद्र</u> শুড়ালু থালিয়া কথন যে পল।ইন। যায়। ক্ষিরা षान्द्र १६ शांति ना। उन्तर्भे छेशाहरीहे উত্তেশ্য হইয়া দাঁড়ায়। ইতাৰ জন্য কাংগকেও দোষ দেওয়া যাঁয় না – মনুষ্য প্রকৃতিবই এই 45

বৈধানে চকুর কোন বাবা নাই এমন
এক প্রশাস্ত মাঠে দাঁড়াইয়া চাহিহিকে যপন
চাহিচা দেখি, তথন পৃথিবীর বিশালাতা কলনায় অবু হব করিলা আনাদের হাদ্য প্রদারিত
হই:। তার । কিন্তু ি করিলা জানিলাম
পৃথিবা বিশাল গু প্রান্তরের যাত্থানি, আমার
পৃষ্টিপোচর হইভেছে ততথানি যে অতান্ত
বিশাল তাহা নহে। অভ্যান আয়ুলণ কাল
ক্ষিত্র প্রান্তরের মধ্যে বিদ্যা পাল্লভাল্
ভার কিছুই না দেখিতে পাইভাল ভবে প্রইতিই সমস্ত পৃথিবী মনে কলিভান ভবে

क्षास्त्रकारमा विसा सम्दर्भ अनुन अमादर। अपू-ভব করিতাম না ৷ কিন্তু আমি না কি সাধীন ভাবে চলিয়া বেড়াইয়াছি দেই জনাই আমি জানিয়াছি যে, আনার দৃষ্টিপথ অভিক্রম कानशां अभिनी वर्डमान। সে**ইরপ ইা**হার। " সাধনা দানা স্বাধীনভাবে ঈশহকে ধণান কারতে প্রস্তুত হুইয়াছেন ভাহার৷ যদিও একে ারে অনস্ত সরপকে আয়ত্ত করিতে পারেন না তথাপি তাঁহার। জনশই হৃদত্তের প্রসারতা লভি কবিতে খালেন। স্বাধীতন<sup>ি</sup> প্রভাবে ভাঁহাল কানেন যে যতটা ভাঁহারা स्तरक्षत्र महित्र प्रश्निक न जाहा पालिकम করিয়াও ঈশর বিরাজ্যান। হৃদ্রের স্থিতিক স্থাপকত। সাছে সেউত্তরা**তর কাড়িতে** পাৰে, কিল স্বাধীনতাই ভাষার ৰাড়িবার উপায়। ্পান্তলিকতায় ভাষার বাধা দেয়। অভার, নিমাকার উপাদনাবাদীলা, আমা-দিশকৈ গোৱাৰ ছইডে বাহির হুইতে ধলি-তেছৈন, অগীনের মুক্ত আকাশ ও মুক্ত দ্মীব্রে হাছা, বল ও আনন্দ লাভ করিতে ্লিটেড্টেন, কার্যগারের, অন্ধবারের **মধ্যে** সংগ্রাচ বিশঙ্কিন করিয়া আদিয়া অসীবৈ বিশুক জেনতি ও পূর্ব উদার্গডায় ইন্দরের বিস্তার লাভ করিতে বলিতেছেন, ভাঁছারা জ্ঞানের বন্ধন যোচন করিছে আন্থার मिन्धा भाषम कतिएक छेशरम कतिएक-ছেন। ভাঁথার। বলিচেছেন, **কার**ার **মধ্যে** অস্কৃতি অহুথ অস্বাস্থা; অন্সান্তার ভানদ-আহব'নধ্বনি জ্বিয়া দুংখ গোক कृतिया वाध्य दहेश। वाष्ट्रम-वास्थान मूर्व ক্রিরী অন্তদৌশ্রেররপ পরিমান্তার শু-भूरव बीतामा (क्षरम अञ्चल रहेश। केर-यात प्रशासीक स्थित, दम दक्षम र जिम्मिन करेगा ममञ्ज खन्नदणवाहरत वर्गल वर्देस् थाक्क, कीनाका ७ श्रह्माकात ८० एकत मिन्स हरेशा मगल बनद करिया छो नेबस्साहरी

পরিণত হউব্। তাঁহার। এমন । কথা বলেন না যে এক লক্ষে অদীমকে অভিক্রেম করিতে रुद्देर्दित, मृतदीका किथा अभीरमत भीमी নির্দেশ করিতে হইবে, অসামের চারিদিক প্ৰাচীর তুলিয়া দিয়া অদীমকে আমাদের বাগনেবাটির সামিল করিতে হইবে। ভাঁহারা কেবল বলেন প্রথ শান্তি ভাছা মগলের জন্য অদাথে বান কর, অনামে বিচরণ কর, পরি-বর্তনশীল, বিকরেশীল, আচ্ছন্কারী বিচ্ছিন विकिन्त कुछ मीमात बाँता आश्चारक अवितुष्ठ বেষ্টিত কারণা রাখিও না। সুঠ্যকির**ের** জবিদাংশই সোৱা অগতে নিযুক্ত আছে, অধিকাংশ ভদাৰ আকাৰে ব্যাপ্ত হইয়াছে, জ্ঞার ভূননায় এই স্বপ্পরিমাণ পুথি--বাতে স্বাহিব**ার ক**হামাছ পড়িয়াছেন তাই বলিং এখন পোতালিক চিংকেই আন তেন যান কলতে জাহেন এল জাহ**নিক** स्कारिकालीय एक असे भी भी भी विश्वविद्यालय া 🕒 🚶 ১৩০ মুখনকিরনসমূচে পুথিবা ভাসি-सन्दर्भ विकास भूषियात जो हर्म क्षेत्र साम्य ও জাবন। প্রশায়ার জেনাড্ডেই পাস্থার **ब टमान्यं।** कारन्। याचा सूक रामग्र পর্মাল্লার সম্প্র<sup>ক্ষ</sup>্ণ্যাতি ধারণ করিতে भादा ना, कि छ छाई बनिया कि भीभनियाई षागादनत्र अवनन्तनीय श्रेटर ?

প্রভিদ্ধতার প্রভাবেই হউক, অ্থকা যে কারণেই হউক, বছিরিপ্রিয়ের প্রতি জা-ৰৱা অনেক মুমর অবিশীস করিয়। থাকি। ष्ट्रंबिक्द्र रथशास्त्र स्थान्त्र तीया तनिय য়েখানেই যে তাহার বাস্তবিক দীমা তাহ। भागीत्मंत विदास सम्मा के किंछ-निहा व्यव वृद्धिवस्ताहन वांशात्मत व्यविकात वार्ष्ट छोहांबा बादनन खोनवा कारण खहा (परि মনে তিংকাং তাহা পরিবর্তন করিয়া निर्मात अनुगादि जित्तात शिकितिएच निर्म जारा ना जानका जाटक महिना है।

कर्षी जामती जिल्लासमें कतिया लहे। व्यवि काश्न भगरत्रे हिंदिय याशास्त्र छाउँ एपि मत्न **ाशांक तुल , क**िंत्र **लहे**— त्वार्य ८४ **थुटन मौबा दर्शन बटन दम्यान इट्रेट**ः ६ भीमारक मूरत महैशा गाहै। अञ्जीतिनिक मस्दर्भ भारे कथा थापिटल शाहत। प्रस् विक्तिरमञ पाता निषद्भारक दमिएट७ निज्ञा आ-মর। ঈশ্বরের মধ্যে যদি বা সীম। দেখিছে পাই তথাপি আমরা সেই সীমাকে বিশাস অন্তরিন্দ্রিরে ক্ষমতা আমা ক্রি न।। নের বিলক্ষণ জানা আছে, তাহার সাহায্য গ্রহণ করিয়াছি বলিখা যে সর্বতোরতে। তাহাকে আয়াদের প্রভূপেনিয়া বরণ করি-য়াছি তাহ। নহে। ধেমন দূরবীক্ষণ যন্ত্র দারা চাঁদকে যত বড় দেখায় চাঁদ ভাহার চেয়ে খনেক বড় আমলা জানি তথাপি দূর-বীক্ষঞ্জ বলকে অবহেল। করিয়া ফেলিয়া দিতে পারি না—তেমনি অন্তরিন্দ্রির দারা দে-थिएक लाइन जेनदरक यांत दामांमावक प्रश्ना তথাপি আয়ালা অন্তরিক্রিয়কে অবহেলা ক विटा পादि ना-किन्न जारे विनया **जाराद** শম্পূর্ণ বিষ্ফুল করি না, ভারাকে চুড়াত भीभाः गरु वाल्या भना कवि ना।

जगामडा कब्रनात निषद्र भट्ट, त्रीमाह ক্রুবার বিষয়। অসীমতা আনাদের সহজ छानुः सर्व मछ। जीगातकरे कहे कांत्रम्। शादकीय को बहा कहाना कतिए हुए। नीमा भवत्त्रहे आमानिभद्क मिनाह्या दिश्य ह्य অপুযান ও তক করিতে হয়, অভিক্লান্ত। রঞ্জা क्षिण २५। (यम्ब अक्ल राक्सर्टिं। गत्न हे अवदर्ग भूटर्स किया भटत विद्यार করেই তেখনি অনম্ভেক ভাৰ আমানের সমুধ্য জ্ঞানের বহিত মুখ্রে লিপ্ত রহিয়াছে। अह बन। जनोद्धान क्षाना कामात्मन कत्रनांत विश्वेत শ্ব প্রকাশ বিকার উপ্রতিত হয় তাহিব অনে। সামাদের বাদরে বিরাজ করিতেছে। নিম্মে

कर्म । भागा कि दकान करें। बादरे बदश বৰিছাৰ হি আমরা বিলক্ষণ জানি এ শা পামানৰ দৃষ্টির সীমা অতিক্রম করিয়া প্রিতিতছে, এবং আমর। ইহাও নি<del>ক্</del>র कार्व बार्ठ अमीय नटह-किन्न जाहे तनिहा यकि वार्ध किरु वीवेदन नवाशी आक्रुक्र रे ক্ষাক্তিতে চেটা করি তাহা হইলে সে তিষ্ঠা বিহুতেই গ্ৰুল হইবে না। আমরা ্তিথন ব্লিস। বসি এ মাঠ অসীম, অসীম বলিলেই আমর আরাম পাই, সীমা নির্দ্ধা-রণের কঠা হইতে অব্যাহতি পাই।— সমুদ্রের ভ্ৰামখানে গেলে আমন বলি সমুদ্ৰের কুল-কিনারা নাই। আকাশের কোণাও সীমা केंद्रना कतिए शांति नो, এই जना मार्वर আনরী আকাশকে বলি অগীম, আকাশকে সদীম কল্পনা করিতে খোলেই আযাদের মন ছাতিশর ক্লিপ্ত হইরা পড়ো, অক্ষম হইর। পড়ে। কালকে আমরা সহজেই রলি অনন্ত, নক্ষত মণ্ডলীকে আমরা সহজেই বলি অগ্ন্য-এইরূপে গাঁমার সহিত যুদ্ধ বন্ধ করিয়া অসী-মের মধ্যেই শান্তি লাভ করি। অসীম আ্মা-দের মাতৃক্রোড়ের মত বিশ্রাম-ছল; শিশুর মত আমরা সীমার সহিত খেলা করি এবং\* লান্তি বোধ ছইলেই অগীমের কোলে বিরাম লাভ করি: —সেখানে সকল চেষ্টার অবদান, সেখানে কেবল সহজ সুখ, সহজ শান্তি, त्नशात्न (कदन शांख शतिशूर्व बाह्मविमर्वाम। এই । চরপুরাতন চিরদঙ্গী অসীমকে বলুপুর্বক ু বিভীবিকারতে পাড়া করিয়া ছুন্ট অভিন পণ্ডিতের কাজ। उर्क कतिशी बारा निवादक না চিনিতে হর মাকে দেখিলে ভাছাদেই কছ শর্ম আরু কিছুতেই পুচে না, কিন্তু স্বভাব-জিত মাকে দেখিলেই ছাত তুলিয়া ছুটিয়া যায়। ীমাতেই আমাদের জান্তি, অসীমেই আমান दर्भत्र भाष्टि, पूर्वेमन अवः, हेहा लहेशाहे जातात कि कि व कि । भीमा जमश्या, अहीन के

নীমার নথে বাবরা বিজ্ঞ অনীনের মধ্যে আনানের আকি বাননা অমানের মধ্যে আনাদের ভারি হয়। বিজ্ঞ অনিভেড বদাই বাছলা। বুদ্ধি ঘর্ষা দীপের আকার ধারণ করে তথ্য তাই। কাজে লাগে, ঘণ্য আলোর আলার আকার কারণ করে তথ্য তাই। অভ্যান অনুধ্য হয়। অভ্যান প্রতিভা যাহাই বলুন, আমরা কেবল নীমার দাঁতার দিয়া মরি কিন্তু অদীনে নিমগ্র হইরা বাঁচিয়া যাই।

পৌত্রনিকতার এক মহদে। ফ আছে। চিহ্নকে यथा**व**्विनशा यटन कतिया कार्य ज्ञातक समरत विकेश क्यां वे वे किशा वासे वे অন্ধ মনুষা স্বভাবতই সেই দিকে উন্ধুণ চৰুৱা পড়ে। পুণা অভ্যন্ত শস্তা হইয়া উঠে। পুণা হাতে হাতে ফেরে। পুণ্যের মৌড়ক পকের করিয়া রাখা যায়, পুরেবার পত্ত গারুর মুখ্য যায়, পুশের বীজ গাঁথিয়া গলায় পরা স্বায় 🟳 ছবিব নামের মাছাজাই এত করিয়া ভূমী যায় যে, কেবল ভাঁছার নাম উচ্চারণ করিয়াই ভরষন্ত্রণা হইতে অব্যাহতি পাত্যা যায়, তৎ मरक जाहात सक्तर्य गरन जाना जानना कह বোধ ইয় না। তাজদের কি এ আশস্কা নাই। কেরল মূর্ভিই কি চিহ্ন, ভাষা কি ,চিহ্ন নম্ব णामि अगर्न कथा दलि ना । यसूक्षा-गारवाईह **এह जानका जाटहा ध्वर (मह जनार हेर्ड़** যথাসাধ্য প্রতিবিধান করা আবশ্যক াঙরাক্তর \*চিহ্ন অপেকা ভাষা চিহ্নে এই আশক্ষা অনেক श्राहिमार्व पास थादक। তথাপি ভাষাকে সাবধানে ব্যবহার করা উচিত। ভাষার দার। প্ৰা করিছে পিয়া ছাঁযা প্ৰা জলা না হয়। (ME)त्र निकटि काश्रेटक क्रिकेट जातांत चड्रद्वत गर्या स्मिजारक कथ कथ न हम।

्थानम् वर्षाः स्रोबात्सम्ब नीमान्त्रं स्वरीकृतः पुरे हे हार्षे । ज्यासम्बद्धाः नी स्वरीकृतिक विकास

खेलाक गांधा जुलिशादि अहित्य। कामार्टिक क्षितिक तीया ও अकरितक व्यतीका वर्ष-গত (Realistic) কবিতার পোষ্টাই, বে মা-यारफद कल्लमात एकार्फ धूना भिन्ना व्यामीरफ्त দৃষ্টি হইতে অসীমের পথ লুপ্ত করিয়া দের। বিস্তুগত কবিতায় বস্তু নিজের দিকেই অঙ্গুলি निर्दम्न कतिश वटल,— जागाट हे समस्य (नर्व, আমাকে ভ্রাণ কর, আমাকে স্পর্ণ কর, আ-মাকে ভক্ষণ কর, আমাকেই কায়মনোবাক্তা ভোগ কর। কিন্তু ভাব-প্রধান (Suggestive) ক্রিতার গুণ এই, সে আমাদিগকে এমন সীমারেথাটুকুর উপর দাঁড় করাইয়া দেয় যাহার সন্মুখেই অগীমতা। ভারণ**ত** করি-ভাষাবন্ত কেবলমাত্র অসীমের দিকে অঙ্গুলি নির্দেশ করিয়া ইসারা করিয়া দেখাইয়া দেয়, **চোথের অ**তিশয় কাছে আসিয়া অসীম আ-**কাশকে রুদ্ধ করিয়া দেয় না।** আমরা চিহ্ন না হইলে যদি না ভাবিতেই পারি তবে সে চিত্ন এমন হওয়া উচিত যাহাতে তাছা গভী হইয়া না দাঁড়ায়। শাহাতে সে কেবল ভাবতে নির্দেশ করিয়া দেয়, ভাবকে আছল না क्ट्रं ।

ঈশরের আশ্রায়ে আছি বলিতে গিয়া ভত্তের মন মনুয্য-সভার বলতঃ সহজেই বলিতে পারে "আমি ঈশরের চরণজ্ঞায়ায় আছি" ভাহাতে আমার মতে পোন্তলিকতা হর না। কিন্তু যদি কেহ সেই চরণের অসুলি পর্যান্ত গণনা করিয়া দেয়, অসুলির নথ পর্যান্ত নির্দেশ করিয়া দেয়, তবে ভা-হাকে পোন্তলিকতা বলিতে হয়। কারণ, ভ্যানা ভাব নির্দেশের পক্ষে এরূপ বর্ণনার বোন আবশাক নাই;—কেবল আবশাক নাই কেভাহা নয়, ইহাতে করিয়া ভাব হইতে মন

"চরণজায়ায় আছি" বলিতে গেলেই শ্রানি যে রক্ত মাংসের একমোড়া চরণ মনে বাড়িবে তাহা নহৈ। চরণের তলে পড়িয়া থাকিবার কার্যুকু বনে আনে মাত্র। একটা

ক্ষিক্তিৰ কৰি এনেন বদন্তের বাতাস ৰাজ্যবাহ মত ইনিতে উনিতে কলে কুলে ক্ষান্তি হয়তেই তবে তবক্ষাৎ আয়ার কিন্তু হয়তি ইনিক্তিক ছায়াছবি কাণিছা

উঠিবে; ভাহার তলার ভারের সহিত বাতা-দৈর চলার ভাবের তুলন। করিয়া সাদৃশহ দেশিয়া আনন্দ লাভ ক্রিব। কিন্তু তাই ৰ্লিয়া কি নতাগতাই কোন মহা স্পতিত व्यक्तिविनिष्ठे, नथविनिष्ठे, वित्नेष (तीन राग-বিশিত্ত বোষবিশিষ্ট, এক যোড়া টলটালায়গান রভাষাংসের পা বাতাসের গাত্রে বুগলতে দেখেনা কিন্তু কবি ুয়দি কেবল ইফারায় মাত্র তাৰ প্রকাশ না ক্রিয়া যাতালের পারের উপরেই বেশী ঝেঁক খিতেন; যদি তামার भाग्नकांगा '७ **८६ँ** जांदूरे, दें। शार्यंत कार्जिक् **ডান পারে**র এক হাঁটু ফাদার কথার উল্লে**থ** করিতেন, ভাষা হইলে স্বভাবতই ভাব 🥩 ভঙ্গীর সাদৃশাটুকু মাত্র মনে আসিত না, **ন্ধ্রীরে** এক যোড়া পা **আমা**দের সন্মুপে আসিয়া তাহার পায়জামাও ছেঁড়া বুট লইয়া আঞ্চাল**ন** করি**ত। কে না জানে**ন চ<u>ন্দা</u>নন विनात थ'नात या अविने मूथ मरन शिए ना, অথবা করপদ্ম বলিলে কুঞ্চিত দলবিশিপ্ত গো-লাকার পদার্থ মনে আদে না—কিন্তু তাই বলিয়া চাঁদের **মত মুখ ও পদ্মের মত করতঙ্গ** চিত্রপটে যদি আঁকিয়া দেওয়া হায় তবে তাহাই যথার্থ মনে করা ব্যতীত আমাদের তার অন্য কোন উপায় থাকে না। রক্ষো রবস্করঃ শালপ্রাংশুমহাভূজঃ" ভাষাতে এই বৰ্ণনা ভানিলে কোন তৰ্কবাগীল একটা নিতান্ত অধাতাগিক মূর্ত্তি কল্পনা করেন না ; কিন্তু যদি একটা চি**ত্রে অ**থবা মূর্ভিতে অবিকল इरवब माध ऋव ७ पूर्टिंग नान इरक्त नाग्न বাছ রচনা ক্রিয়া দেওয়া যায় ভবে দর্শক তাহাকেই প্রাকৃত না মনে করিয়া থাকিতে भारत ना।

আর একটি কথা। কতগুল বিষয় আছে যাহা বিশ্বন জ্ঞানের গম্য, যাহা পরিকার ভাষার বাক্ত করা যার ও করাই উচিত।
বেমন, ঈথর ক্রিকালজ্ঞা। ঈথরের কপালে
তিনটে চক্ষু দিলেই বেইহা আমুরা অপেকাকৃত পরিকার বৃথিতে পারিতার। নহে বর্গ
তিনটে চক্কে আরার বিশেষ রূপে ব্যাখ্যা করিয়া ব্যাইয়া বলিতে হয় ঈথর ত্রিকালজ্ঞা।
বিশুদ্ধ জ্ঞানের ভাষা অলক্ষারপুনা। আমহারে
জ্ঞাহাকে আজ্মা করিয়া দেয়, বিহুও করিয়া

রাশকের হারা বুরাইতে নেলেই পৌত্রিকত। শাসিয়া পড়ে। কবি টোনস্ন একটি श्रीन है दाकि काहिनी पैरलयन करिया कांवा निशिशाहिन, छाहाट वाहि—यहांबाक আর্থরের এতিনিধি করপ হারী নায়ক नाम लहे क्याती जित्नवीव्तक बहातात्वत সহ্ধন্মিণী করিবার জন্য কুনারীর পিতৃভবন হইতে আনিতে গিয়া**ছেন—কিন্ত সেই** कुमाबो ट्यार्जनिविदक्र व्यार्थत ब्लान कतिया তাহাকেই মনে মনে আত্মসমর্পণ করেন; অবশেষে ধ্রম ভ্রম ব্লিতে পারিলেন তথন আর লদ্ধ এতাংধার করিতে পারিলেন না; এইরূপে এর দারণ অগুভ পরিণামের সৃষ্টি **হইল।** বিশুদ্ধ জ্ঞানের ঞুতিনিধি **রূপক্**কে **লইয়াও** এইরূপ গোলবোগ ঘটিয়া **পা**কে। আৰ্মনা প্ৰথম দৃষ্টিতে তাহাকেই জ্ঞানের স্থলে অভিষিক্ত করিয়া লই, ১৫ জ্ঞানের পরিবর্ত্তে ভাহারই গলে বরমালা এদান করি—অব-শেযে ভ্রম ভাঙ্গিলেও সহজে হৃদয় ফিরাইয়। রাইতে পারি না। ইহার পরিণাম শুভ হয় नो। कार्रा, खामान्य श्रेल चर्छारनत প্রতি পার্যাদের আর শ্রেদ্যা থাকে না, অথচ অভাব **অনুসারে এ**দাবৃচক অনুষ্ঠানও ছাড়িতে পারি না। এই জন্য তথন টানিয়া बुनिया वरायरा कतिया, शफ्रांक वाँकारना বায়া**র করিয়া ভ্রানে**র প্রতি এই ব্যভিচার**কে** নায়গশন্ত বলিয়া কোন মতে দাড় করাইতে हारे। निरंबत युक्तित रथलात निरंब चार्म्स्या ভট, স্থ**চতুর ব্যাখারে স্থ**চাক ফেনে বঁগাইয়া क्लाटक यदबत दमग्राद्म काकाहेश जाचि अवध তাহার চাক্চিকো বিষয় পরিতোষ লাভ করি। কিন্তু এইরূপী ভেক্ষিবাজির উপরে আগার আভায়ন্ত্রল নিন্দাণ করা বার না। ইহাতে কেবল বুদিই **ভীক্ত হয় কিন্তু প্রাত্তা** প্রতিদিন অভতা, কপটতা, বৌরতর বৈষ্ট্রিক-তার রসাতলে তলাইতে খাকে। ইহা ত ধর্ণের সাহত চালারী করিতে যাওয়া। ইছাতে ক্তেতা একাশ পায়। ইছার আচা-বৌরা শতিমানী উদ্ধত ও অস্তিভূ হই রা क्टिन। कावन देशांत्रा आदनन हेर्शताह ইশব্বে ভাশিতেছেন গড়িতেছেন, ইহাঁ নাই ধশ্যের সেতু।

कानभग विशास कानत्क वाक करा गुरसाका कार्य स्टब्स

THE PARTY OF THE P वस्त्रवार के शामित्रन के बार्टी किन्न भागाराह जित्रके विवस्टिक चानका सहक **जा**यात साक्र क्रिक्टि शाबि मी, जानक मगरा क्रमां वाक कतिएक एत । जेपरतंत्र षाखरत षाहि बनिदन चारात भटनत जाव वाक इक् ना, हेशहुड **अकृष्टि घर्षेन। वाक्ष रुप्त माजः, सामग्रह्मान्यः** ক্রবরের আশ্রয়ে আছে আমিও তাঁহার আশ্রয়ে আছি এই কথা বলা হয় মাতা। কিন্তু 🕶 রের চরণের তলে পড়িয়া আছি বুলিলে তরেই আমার হৃদয়ের ভাব প্রকাশ হয় ইহা কেবল আমার সম্পূর্ণ আত্মবিস্কর্মসূত্র পড়িয়া থাকার ভাব। অতএব ইহাজে কেবল আমারই মনের ভাব প্রকাশ পাইক স্বিশ্রের চরণ প্রকাশ পাইল না। অতথ্য ভক্ত (यथारन बर्लन, रह क्षेत्रं आंगारक हत्ररन স্থান দাও, দেখানে তিনি নিক্ষের ইচ্ছাকেই রূপকের দারা বা**ক্ত করেন, ক্লীরেকে** রূপকের ঘার। বাক্ত করেন না।

যাই হোক্ যদি কোন ব্যক্তি নিতান্তই বলিয়া রেদে যে আমি কোন মতেই গৃহকার্য্য করিতে পারি না, আমি খেলা করিতেই পারি তবে আমি ভাহার সহিত খগড়া করিছে চাই না। কিন্তু তাই বলিয়া দে হদি अना भार अन**्य वटल शृहकार्या क**त्रा म**ल्य** নহে খেলা কয়াই সম্ভৱ তখন<sub>্</sub>ভা**হাকে** বলিতে হয় ভোমার **গলেক সম্ভব নীয়া বিশ্বি**য়া (यू मक्टनत भटकर अम्खर दुम कथा ठिक ना रहें जिल्हा अथवा अपि क्रिया वटम दम বেলা করা এবং সৃহকার্যা ক্রম একই, তবে নে সম্ভেশাক্ষাক মততেদ প্রকাশ কারতে হর। এক জন বালিকা বখন পুতুলের বিবাহ দিয়া বুরকার ক্রা খেলে, তখন পুঁতুলকে ल निजास्ट स्ट्रिश मान कात न — उपन ক্র্নার নোকে নে উপস্থিতনত পূর্তুল ডু-क्टिम्फेब्रान क्ली गुरिशी विनवाह मेंटन कटत, किन्नु कार्य जनवार दा ठावाटक दचना बालव न। अठाकात वृक्षाक्ष व्यक्त ध्रमन रहेट७ शास ना। अकेश केल वीमतक शास বে, সেই তেন প্ৰভৃতি বৈ ক্লেক্সালি সামা-मितार कुर्बार्ण अवस कताकी নেই নকন মুখিৰ অভিস্কাহাণী PERSONAL PROPERTY.

मकन इंडि मार्थक हरेरव । आसूमि मह्मारे 'ঈথবের সহিত আত্মার সহন্ধ উপলোকি করি-वांत रहेता, धार श्रेषतरक हे लियंटण हत कति-বার চেপ্তা, এ তুইয়ের মধ্যেও সেই গৃহকার্ব্য **७ (यनात**े श्राटन। **दे**शंत्र व्यासा अकि আত্মার প্রকৃত লক্ষ্য, প্রকৃত কার্যা, আত্মার গভীর অভাবের প্রকৃত পরিকৃত্তি সাধন, অারেনটি তাহার খেল মাত। ধেলাতেই সদি খানবা জীবন কেণা করি উবে আখাদের জাবনের উদ্দেশ। ব্যর্থ হইরা যার। সকলেই কিছু গৃহদার্ঘ তালরপ্ কবিতে পারে না। কিন্তু তা**ই বলিয়া তাহা**-িগ্রে বলিতে পারি না, তবে তৌমরা গুঁতল লট্যা **পেলা** কর**। তাহাদিগতে** বলিও হ্য ভোলার। ছেওঁ। কর। যতটা পার ভাই ভাল, কারণ ইহা জীবনের কর্ত্তর্য কার্য্য। লেমেই ভোমার অধিকতর জ্ঞান অভিন্তুতা ও तम मा अ इंस्ट्रिंग आह्ना ग्राप्त शत्राचारिक एवायएड इटेएन, सङ्दा खेलाजन धटेन**ई ना,** ्थल। क्रेंग । देवरत्त गान कतिहल आजा छति ३०<sup>4</sup> इसे, किस्न अ विश्वत्य सक्दल समान কৃতকার্য্য হইটে পানেন না. আর বসনত্রে সহস্রার ধ্যানতীন ঈখ্যবের নাম জপ ক্রিন বিশেষ কোন ফলই হয় না, অথচ তাহা সক-লেরই আগ্রভাগীন। কিন্তু আঁযতারীন বলি-য়াই যে শান্তের অসুশাদনে, নরকৈর বিভী বিকার **সেই নিক্তন নাম জ**প অবল্**ধনী**য় खार्थ **सर्है।** 

সাৰদ্ধ যে-কোন পদাৰ্থকৈ আনব। অ फाल जीनवानि, जोश्रीक्षेत्र भूमारम आगारमुद्र একটা বিলাপ থাকিয়া 'যায় গৈ ডাহ।ভিনাকে আমর। আতার মধাে পাই মা। তাহারা অনুদ্রবেধান মাবেধ আসিয়া আত্মময় নহে। बाषुमि कतिशा माष्ट्राप्ट । अननी यथन मवटन শিশুকে বুকে চাপিয়া প্রেন তথন তিনি बढ़ेश भारतम वात्रधान ल्यान कहिएक हान कि निष्पूर्व शादबन ना এই कना निष्पूर्व कृष्टि देश ना। किन्छ जिन्दरक चानता है छा। क्रिया पृत्त तीक दक्न ? चामता मिटक हिष्टार्श्यक यहेट्ड कात्मान तहना क्रिया पि**टे** दिन १ जिन यात्रात स्टबार स्टाइन মাত্রাতেই ভাহার সহিত বিজন হৈতে शादन, जार्च देवन भाषात गाहित्त विज्ञा

তাঁহাকে শত সহস্র অভ্রের আড়ালে খুঁজিলা বৈড়াই দুঁ আয়ার বাহিরে মহারা আছে তাঁহাদিপকে আয়ার ভিতরে পাইতে চাই, আর ঘিনি আলার মধ্যে আছেন তাঁহাকে কেন আলার বাহিরে রাখিকে চাই।

নিরাকার উপাসনাব্রিরাগীদের একটা कथा चाट्छ द्रम, निताकात देशत निर्शं । छ त এব ভাঁহার উপাদন। সফরে না। দৈশনিশানের কিছুই জানি না সহজ-বৃদ্ধিত যাহা মনে হইল<sup>্</sup>তাহাই বলিতেছি। সন্তৰ্ণ কি নিন্তৰ্ণ কি কৰিয়। জানিব। তাঁহাব অনন্ত সর্রাণ তিনিই জানের। কিন্তু আমি যথন সত্ত্র তথন আমার ঈর্বর সন্ত্র 🖭 আন মার স্থকে তিনি স্তুণ ভাবে বিরাজিত। জগতে যাহ৷ কিছু দেখিতেছি তাহা যে ভাছাই, ভাছা কি করিয়া জানিব। নিরপেক সন্ত্রপ জানিবার কোন সম্ভাবনঃ भारे। किस आयोद मन्दर लाश- लाश्हे **নেই সম্বন্ধ বিচার** করিয়াই মামাকে চলিতে হইবে, আর কোন সমন্দ বিচার কুরিয়। চলিলে আমি মারা পড়িব: । হলা**তে সমুক্তে** বন্যা আসিত। তাই ৰবিছা কি হল্যাও সমু-দয় সমুদ্র বাঁদিয়া কেলিবে! সমুদ্রের বে অংশের মহিত তাহ'ে অব্যবহিত যোগ সৈই **টুকু**র সঙ্গেই ভাহাব বোঝপে**ড়া। যনে** করন একটি শিশুর পিতঃ জ্যিদার, দোকান-দার, মানিদিপলিটি গভার অধাক, মাঞ্জ-(हे हे, त्लथक, **यु**वद्वत कांभटका मध्यामक— তিনি কলিক তাবাদী, বাসালী, হিন্দু, ককে-শীর শাখাভুক্ত, আর্গনেংশীঃ, তিনি মনুষা — তিনি অমুকের পিলে, অমুকের মেনো, অমু কের ভাই, অমুকের শস্তুর, অমুকের প্রভু, অমুকের ভূতা, অমুকের শুত্রু, অমুকের মিলে, ইত্যাদি—ুএক কথায়, ক্রিনি যে ক্রড় কি তাহার ইকানা নাই -কিছু শিশুটি তাঁহাকে কেবল ভাহাৰ বাৰা ৰাজ্য আনে (বাৰা

• কাজেন কেন্দ্ৰন ও পিট্ৰালে ওছ কেবল এপিট্-মাত অবশিষ্ট বাজিতে লাজে না—সেইবলা কোন
দ্বারই ওপ-বালে ওছ কেবলা বজু মাল অবশিষ্ট
থাকিতে পাজেলেন লাজ এবং অনুমার চাল গৃহই
থাকিতে পাজেলেন করিতেছে বে কিং এবং আনল এই কাডালি প্রতিপালন করিতেছে বে কিং এবং আনল এই কাডালি প্রতিপালন করিতেছে বে কাথান্তভ বস্ত সংক্রিয়া পরিবা সিজিদানন বন্ধা এই এক সভা আন্তর্ভিত প্রতীয়নান হয়। সা

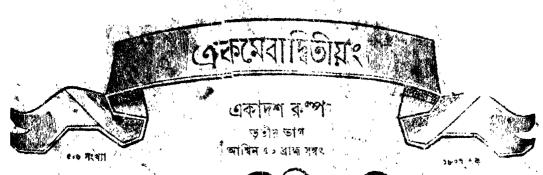
কাহাতে বলৈ ভাষ্ডি মে ভাল করিখা জানে না )— শি**ুট কেবন তাহা**কে ভাষাও প্রাপ नार विलग्ना बारन : देशांटल करिन कि । जह শিশুরিখনন তীহার পিডাকে জানেও লটে, मा जारमञ्जदही, जाः ताल (एकान केरतरक जानिक राहे ना कार रही। কেবল এই জানি তিনি প্লোচের প্রানার। चेर्यंद्र मध्यक जागारमत ०५८ वर्ष शहर नेवह हम आहेरी, जोहारी - **माभा**हक्ट लहा ह তাংটে আম্ভান A 13. তাই ছি जामादन्त 图, 程程 经 अप र रि ्रविद्राः 4.36 ভাহার एका दल পাইখে। কিং তাও পানা ও আমাদের (म राजा काया स्मर 14.8 ক্রমা. परायादम व মত পাড়া আছে না জ্ঞা নহে। CHE NO (पंक्रिका (संक्रिके भाग देश) अपि **মতা।** গুর্লেই বলিনার দ্বিদ্যোগে সহ-प्रात अभू हे बता १० के १० (७) तर्म अभू म April 1977 1 हेंद्राक षांच पार्निक देख गाँ। जानि—वरे कता स्रम्य मध्ये अपितिक ক্ষাতেছি, আনার ইহরকে ভত্ত ভাষক करिया शहिर्फाल्-नगप्र का तकासट था। দৰ্শ দীশাৰ্ক খতাই বাড়িতে ছে ৩৩% ইনুৱে শ্ৰীৰ অধিকজন বাংশ হুইটেছি: श्रीमध्यात, जैर्बाजत शास्त्र मुख्य स्तिशाहस श्रीका (प्रवासीत्क स्तिवर्ध, भाउन तम्यत्। গণিতে হইতেছে A 1 ा । । । । । । । । । अभीमोक शहिरात खना आयता आहात नीचा अन्त उन्दर्भ मृत्र कर्तिश किरे, भीशांकक मा कडि। विम् अभीमरक है भीमा। ৰছ কৰি তবে আল্লাকে সানাৰ্জ কৰিব কি र्र (३३) । के श्र**ाक पगर का**न, **चनुर** पश्चा, জনত শেষ জানিয়া আইস জামনা আমা-দের : - জেন দলাকে বিস্তার করি, ভাইেই डेख (कार्त कारक शाहर**ेड** शाहित। ভাঁচাকে হ'ন গুড় প্রিয়া দেখি ভারে ক্রামন ता १ कूछ शामित, छ। शास कि महर १६८७ 🎎 মহান বলিয়। জানি তেও অংমজা সুক্র ইই-्या । क्योगण महतस्य ६८% श्वमास्य १६४ । নত্বা পৃথিবীর অস্থ অশাতি, ভিডের বিক্ প্রতা বাড়িবে বই কমিবে ।। গুৰ ফুল क्रिया कामता वाकाम श्राह्मा बादमांचन कतित्रा तिङ्ष्टि, चाह्म जामूत्री मानत रह्या

প্রতিন খাষিদের এই কথা গাঁথিয়া রাখি । 'ভূটিন প্রথ'' ভূমাই স্থা হরপা, কোল সীনা কোন কুড়াই স্থা নাই—তা হইলে জনপ্ত প্রাটনের ত্ঃগ হইতে পরিত্রাণ নাট্র।

#### GLEANING

It is a bless, debe ight that there is a Supfor our only, as well as ior our hodies. That we that girm us she be of hight and heat gave hathered that is fair and becomed and heone on the earth of ones, and saill sustains all." the life, and is no nothing space; of nealth, and comfort, and every been of loveliness , so Ged in Heaven bean apportue inner life of ngan, giving buth to all soids, and morning them with every grace of victor, with all the the broaty of beliness. Not is it more life and beauty, but active work and berole deeds. The muits no less than the flowers are repended be this because and all our dahour and encourse as well as our prace, and rest, and joy have come from Him Whenever, therefore, on-In anot darkness come, let us wait hopefully to His a log if roots and clouds are round about as be us be sure that His rays will molt them; if wintry cold and gloom in their sousou be our portion, as heep on our stedfast round of day in the orbit which He has fixed for propad in due time the warmth and longer mays of prestune and summer will come again, fifting far hearts with jay and gladness. Inthe Lord, is the well of the, and in the light shall we see light." "O and out thy light and ar truth, that they may lead me and bring the to the later Hill

(व्यक्तिप्रदेशायनि छापि क्रियेत्वः स्टब्स् क्रियमः स्वयंस्यः । योज त्यस्य छन्नः (व्यक्तिप्रकान्त्रसम्बद्धः जीवकानः विकासः



# তভারোখিনী পতিকা

**্রেন্স্তের্গায়দি** ভাতি জন্তমকং **জ্**দরে গুকুলং ইস্তভলং। যাতি মো**হা**জা: মং এ**ল্ল**য়বের লাদয়ে ভাতিত লুবিমলং।

### <mark>় আদি ব্ৰান্য</mark>সমাজ।

১ ভা**চে রবি**বার ৫৬ গ্রাক্ষ সাধ্য। আচার্টেরে উপক্ষেশ।

জ্ঞান-প্রসাদেন বিজন্ধ-সন্ত্রস্তব্য তং পশ্যতে নিজলংখ্যায়মানঃ। জ্ঞানের প্রস-হতা ছারা খিনি বিশুদ্ধ-সভ্ হইয়াজেন, তিনি ধ্যান-যুক্ত হইয়া তথন অখিও ধার-সাল্লাকে অবলোকন করেন।

ভানের প্রমানাতেই মানা। বিশুদ্ধ-সভ্ হই, অর্থাৎ তাহাতেই মানাদের অন্তঃকরণ সভ্ তথের আধার হয়। অন্তঃকরণের চাঞ্চল লাই রক্সোন্তণ, এবং অন্তঃকরণের চাঞ্চলা চলিয়া যায়, ও মালন্দা নিঃশেষিত হইয়া যায়, মানাভাহা শারনীয় হির হুদের নাায় প্রশান্ত ও নির্দ্ধান হয়, তথন ডাহার সেইরূপ ভাষ্ট সভ ভাষে ভাষা। যনের এইরূপ প্রমান এই নির্দ্ধান আমি ক্রমানার ক্রাবিকার ক্রমানাভাতে অন্তার স্তুস্পাই আরুরিকার ক্রমানাভাতে অন্তার স্তুস্পাই আরুরিকার ক্রমানাভাতে অন্তার স্তুস্পাই আরুরিকার ক্রমানাভাতে অন্তার স্তুস্পাই আরুরিকার ক্রমানাভাতে অন্তার স্তুস্পাই আরুরিকার

বনি েই হ**ইতে** পা**রে দে, ভানের প্রস**মত। দার। দৰ্শ নিম্পাপ ও নিরাতুল হইলে পর-মাঝা আজাতে আনিভূতি হ'ন। জান-গ্ৰ সালে বেমন আমাদের হান্য নিম্পাপ ও শ্রমান্ত হইয়া জব-রূপে প্রমান্ত্রাকে আ-ত্মাতে উপলব্ধি করে; অবিদা। এবং মোহের প্রাদুর্ভাবে সেইরূপ, আমাদের হুদুরা উত্তেপ অশান্তি এবং মনিনতায় ঢাকা পড়িয়া পর্মা-জাকে আর দেখিতে পায় না – মোহে মুগ্ধ হট্য। পড়িলে চেতনে বিমুখ হট্য়**ি অচেত**-নেই তুষ্টি অবলম্বন করে,—তিন প্রেণীর গৌধমুগ্ধ ব্যক্তি জিন প্রকার সৃষ্টি প্রসন্থন করেন ; এবঁমতঃ ইভিয়-পরায়ণ বর্ণজের। अपृष्टेंनादमत कृष्टि अवनन्यन करतन ; दीशात्री অদৃত্তের দ্বোহাই দুয়া সম্পদকালে উচ্ছে এল প্রস্থিতির বৈধাতে আত্মার সর্বব্দ ভাদাইয়। तिन ७ विशान्तारम "श चमृष्टे" विलयः मिक्रपाम रहेशा शिष्ट्रमा शहकन ; निक्रिट्रांत शासकार्य अन्यत्न स्थित्तर प्रष्ट चतन्त्रम क्रान्तन,—त्म प्रि ৰিব্ৰপূৰে শূপকন সূতান্ত বাজি য**ং**কে " ক্ষা কুৱে তাহাই সতা,—

# তত্ত্বেষিনী পতিকা

বৈশ্ব করি। — বৃদ্ধিনান লোকের ভাষাতেই নাজ করি। করিব। " তৃতীয়তঃ বিদ্যাতিই নাজ করিব। করিব। " তৃতীয়তঃ বিদ্যাতিই নাজ করিব ব্যক্তি এক প্রধার ছিল-মূল
করিব ভূষি অবলন্দন করেন। সে তৃষ্টি
করিব করিবর, আপেকিক স্পান্ট আন্দের
একমাত্র জানের নিষ্ণা: ন্তুবিল প্রথম্মের
ঠিক প্রব সতা না ইউন্—অপেকান্ড প্রব
সতা—যাহা কিছু পাওয়া যায়, ভাষা কেবল
বিজ্ঞানেই আ্যান্ডের সম্ভুষ্ট থাকা করিবা—
পরমার্থে হস্ত প্রসার্থ ক্যা নিতান্ত অবেধের
কার্যা,"

এই ভিন প্রকার তুষ্টির কোনটিতেই যকুষোর নীরোগ আ**ত্মা** তু**ট থা**কিতে পারে ্রয়াতুরের পক্ষে জল যেমন আক-শ্রক-ক্লুবাতুরের পক্ষে আর থেমন আব-শ্যক—আত্মার পক্ষে ধ্রুষ মতা সেইরপ আবশাক ; - অপেকাকত এব সভা নহে কিন্দু সর্বক্ষে শাবে ধ্রুব সতা, যাহাঁ চেতনা-চেতন, সমস্ত জগতের পত্তন-ভূমি, তাহাই আকর্নাক। সমুদ্রের তিমি মৎসা যেমন পুষ্করিণীতে বাঁচিতে পারে না—অমৃতের পুত্র আত্মা মেইরূপ অঞ্জুআপেক্ষিক সতো বাঁ-চিতে পারে না; - যে বিজ্ঞান ছিন্ন-মূল ক্ণ-প্রভার ন্যায় সংশয়াক্ষ্কারতে দূরীভুত না ক-রিয়া ভাহাকে আঁরো ফ্লীভুত, করিয়া ভোলে, নে বিজ্ঞানে গান্ধা কিছুতেই পান্তি শানিতে পারে না। যে থ্নির্মল চিরপ্রতা আছার অন্তরতম চক্ষু এবং প্রাণকৈ চিয়ান প্রদৰ সতো আঞ্ঠ করিয়া রাখিয়াছে, সেই জ্ঞানই আন্তার শান্তি-পীয়্য, তাহাই আতাহ উপ-কীবিকা। তক বিজ্ঞানের মকভূমি আত্মার निटक क्षेत्रिक पाक्र विदेवत स्थान त्य, त्मश्रादन কোন নিচপেক বাজিই অধিক কাল ডিডিয়া बार्किए शादान गा। अस विशासित पृष्टि

হইতে উপান করিয়া বাঁহারা ঐত্তল ছিন্নসূল তক ৰিজানের তৃষ্টিতে প্রার্থ-পরিবর্তন করিয়া শয়ান ইইয়াছেন, তাহায়া জাবার পাশ-পরিবর্জন করিয়া অন্ধ বিশাদের ভৃতিতে ফিরিয়া শয়ন ক্রিয়া তবুও যেন কিয়ংপা-রিযাণে শাস্তি উপভোগ করেন; কিন্তু উাহারা প্রকৃত শান্তি লাভে কৃতকার্য হ'ন ু না। শুক বিজ্ঞানে তাঁহারা আস্থাতে শান্তি পা'ন নাই বলিয়া ভাঁহারা একেবারেই এই--রূপ এক তীত্র দিদ্ধান্তে উপনীত হ'**ন.যে.** জ্ঞান কিছুই নহে— এন ভক্তিই সর্বাস। ঈবর মনুযাকে জ্ঞান দিয়াছেন বলিয়া মনুষা ঈশ্বরকে জানিবার অপিকারী — সেই জ্ঞানের 🖟 অবনাননা করিয়া যিনি লোকের বিশাস অনু সারে আপনার বিখাদকে নিয়মিত করেন, তিনি কেমন করিয়া ঈশ্বরলাভে কুডকার্যন হ্ইবেন १ : যিনি জড়-দেহ-বিশেষকে ঈশর-মূর্ত্তি বলিয়া বিখাস করেন, তিনি কিরপে ইখরের চিথার আনন্দমর আত্মসূর্তি আত্মাতে खनाकन कंत्रिरंबन ? भाग या शोब-वा নীল বা **পীত—জ**ড়-রূপের এই সক**ল বিশে-**ষণ কেমন করিয়া, সচ্চিদ। নন্দ রূপের বিশেষণ श्हेरव १-कार्साइ खना गडाहे धावनाक-মিথাা কেবল কুলাইবার জনাই আবশাক হইতে পারে । সচিদানদ পরমান্তার উপা-ন্নাই ঈশবোপাসনা। নাৰাৰ আন্তরিক সভার পুণই সিদ্ধি-লাভের আক্রাম পণ, বিশার হুগড়কিকার আত্মার পিশার :-ারতি ক**রিতে** বা **ভয় নিজান্তই** বিভূষনা।

বোনতর বিষ্যাদের অবকারে ক্রিকা ইইলেও প্রকৃত সাধক ওরপ কোন আনি প্রথা অবলম্বন করের কান তিনি করি বাদের তৃষ্টি অবলয়ের করিয়া নিমা কাশিয়ের যান না,—কর্ম কর্মানের করেছ হা'ল ছাফিনা দিয়া ভাষাক্র ক্রেকা না—বিষ্যাদের ব্যাভিক্ত বিভাগ

বাড়াইবার জন্য তাহাকে লইয়া জ্ঞান সূর্যা-होन मः नह-गर्वद् खर्डन करंडन मा, - जिनि ঐ তিন প্রকার হৃষ্টির কোনটি কেই অবলম্বন करतन ना - शत्रमाञ्चादक है खुरलखन करतन। পূর্বভার আদর্শ যাহা তাঁহার প্রাণাভান্তরে জাগিতেছে ভাহার আলোকে ভিনি আপ-नात कुल्छ। वर्ड है (कन अनुसूक्त्य कलन ना, তত্ই আরো তিনি পূর্ণ কর্মারাকে আতার দাক্ষী ও আশ্রদাতা রূপে অবলম্বন করেন ; তথন, আন্ধার সমস্ত হৃদ্গত বাসনা ও সমস্তে অভাব হনুশা এক সেই প্রমান্তা-রই আশ্রে-এর্গনা রূপে পরিণত হয়; এবং নেই পান্ধক পার্থনার উত্তরে-চাতক পক্ষীৰ জনানে েখন মেগ সম্বৰীআবিভূতি হয় দেইরূপ - সমস্ত জগতের ভরম্ব এক অ্বিতীয় প্রব সভা, সমস্ত অফকারের जात्नांक हिन्दानंत्र हिन्न, भगान जलादित পূরণকৃত্তী প্রাণের প্রাণ, পরেযাজা আসাতে দৰ্শন দিয়া তাঁখাৰ সমত অক্তৰণ মোচন **करत्न । সাধে**কের আনন্দ নেতে তথন সম্ভ প্রহেলিকার ভঞ্জন হইয়া গিয়া সর্বর্জই তিনি সভা উপসন্ধি করেন—তথন ভিদাতে হাদয়-**छाष्ट्रिकारल भक्तभः म**शाः — सम्युद्धां छ छ। হইয়া যায়, নমস্ত সংশয়-পাশ ছিল হইয়া यात्र । मर्स्त भूलावात शत्रभाश्राहे स्वाटना क्षर **পত্য – আত্মার প্র**ব অবলাধন ;— আজা যদি ভাঁহার আশ্রের বঞ্চি হয়, তবে তাহার নিকটে প্রশ্ন বিজ্ঞানও ঘেমন-শ্মুচ বিশ্বাসও তেমনি—উভয়ের কেহই তাহাকে শান্তি निएड शीद्र ना, नाधक यथन खान-धामारम শুক্ষনত্ব হইক্স জাগ্রত পরমান্তাকে সীয় আ-ত্মাতে দর্শন করেন, তখনই তিনি শান্তিলাভ করেন, পান্তিলাভের আর দিতীয় উপায় নাই। ক্ৰীৰতং দেহত পদাতি ধীৱাতেৰাং ৰাজি: শাৰতী CHISCARI', II

द्ध शहमाञ्चन्। छूमिरे जामादम्ब

म्बर्धा मुका अथरना कृषि जागारनत कीवतनब **चतुन्यन अवः** रथन चामारमत हेरू-জীবন অব**দান হট্**বে তথনও তুমি আমাদেব জীবনের অবলম্বন; তুমি যেখন অটল প্রব স্তা--সেইরূপ আমাদের আস্থাকে সভ্যে ष्प्रेल कत्र—धर्णा ष्युष्टेल कत्र—ध्ध्यानिर्म ভাটল কর। তুমি আমাদের অটল আশ্রয় হ্ইয়া সমস্ত অন্ধকার-সমস্ত বিশ্ব বিপত্তি দূব করিয়া দেও - যাহাতে -আশরা তোশার সংগ্রামের অয়ত নিকেতনে বাদ করিতে পারি, আমডের **আত্মাতে** ভাহার পথ উন্মুক্ত করিয়া দেও। শিশু যেমন পিতার য়চিখানে ধনন করিয়া বল পায়--ভরসা পায়, – অভয় পায়, দেইরূপ তোমার সমি-ধানে আমানের আজা সমস্ত পাণ তাপ 👏 সংগার-যন্ত্রণা বিশ্বৃত হুইয়া অমৃত আৰক্ষ উপভোগ করিবে ইহারই জন্য আমর। এখানে স্মাগত ইইয়াছি। ত্**মি দর্শন দি**য়া আসাদের মনোবাছ। পর্ণ কব।

**७** अक्टमदाभिजीवश ।

## ভারতের দীক্ষা ও গুৰু। 🎺

যে প্রক্রিয়া দার। দিবাজ্ঞান লাভ ও পাপকর হয় ভাছাই দীক্ষা । মনুষ্যের এমন একটা সময় আইদে যথন ধর্ম ও ঈশরের জনা বাস্তবিকই ভাষার মন ব্যাকুল হয়। প্রক্রত ধর্ম কি, ঈশরই বা কিরুপে জ্ঞানে প্রত্যক্ষ হইতে পারেন ইহা জানিবার জনা দে অন্থির হয়। শাসেই সময় দীক্ষার আবেশা-কতা। ফলত ইহা সাধনের পূর্বকেন্দ্র এবং মনের একটা অবস্থা মাত্র। জ্লপই বল, ভাসই বল, সমস্তই এই দীক্ষামূলক। মনুষা বে মাজ্রমে থাক্ ইহা তাহার পক্ষে অবলম্বনীয়।

> বিবাহনানং যতো দদ্যাৎ কুৰ্ব্যাৎ পাণ্দা সংকরং
। তেন্দ্ৰীদেশি সা বোহন স্নিভিত্ত ধ্যেদিভিঃ।

মথচ কৈ বাজার শক্ষার শক্ষার হয়
দীক্ষাতে তাইৰ কিছুমান বাভিচার নাই।
ফলত প্রাচী ক্রেছ যে ইয়া সংস্কারের মধ্যে
পরিসূহীত হব নাই তদ্ধারা ইয়ার আধুনিকতাই সপ্রমাণ হয়।

সংস্কার দিবিশু বৈদিক ও স্মার্ভ। **অতি** প্রাচীন কালে ইহার মংখ্যা সর্বস্তন্ধ চল্লিশ পরে পঁচিশ দাড়ার । किस ভবদেব পশু-.পতি প্রভৃতি দশটী মংক্রেপারণ**ত করেন**শ **এই** मगदिव संश्कारका भाषा नीका गाँहे। <u>श्र</u>र्क-্ৰীকাৰ নিষ্ট্য ভিল পি.. ওকর নিষ্ট্র সাইত। ্ৰীৰ্ছান শুক্ত গেই উপস্থিত শ্ৰিষাকে বেক্স-**হিলা**র উপদেশ লিতেন। ইহা **জানালোচনা** मान्नि। छेशनंहरम्य समग्र हेर। शहें छ। किस्त राह-মানে যে দীকা এচনিত তাহা এ প্রণালীর নতে। গুরুপুজাও গুরুর নিকট একটা সূচ্ছেয়ি वीजगत धहर हैशह निका। এই निका त्यम ७ चाजित्व मार्थे। रेटा वासुनिक इस-नारक्राक्त । अध्यक्ति मीकः। यादे ४४५ किन्ह ইয়ার মল উফেশা অতি মছর। একটা फिल्मिन शतिब ग**रन मम् छ**रूत निकृष्टे सौर-নের 🖰 সহচরী শ্রীর সহিষ্টে এক ধর্ম্মে দীক্ষি-**७ १**रेलाम, । दर्वाष्ट्र-दक्षमं (४) अकला जानियाः ভিসাইশ্ম তাহা **আরও দু**ঢ় করিয়। সিল্ ইহা জতি ওরুতর পবিত্র কার্যা। এই রূপ বাহ্য জণ্টানের সহিত ধর্মা ও ঈশরের খন্য যে অনুবা∤ মকুজিত হয় তাহ। ভতি ভড। কৈ हेरा सभीकान कविता।

শনুণ অপূর্ব ভাষার মেধা ও ব্রক্তি আছে অথচ সে সকল বিষয়ে এববা ও সকল বিষয়ে প্রবেশ করিতে পারে না। ইচ্ছা ও প্রকৃতি আছে কিন্তু ভাষার গুরুবা পথ অন্ধকারাচ্ছন। এখন তবে কি বুলিব যে এইরূপ অটিল দশা-জালে জড়িত ও মুহামান থাকিবার জন্তি শর্মের সৃষ্টি। না ভাষা নহে। নতুষা সা- शक्ति । स्थानीनार एवं श्रेष छ। हात विकास था-বুলি ক্রিক ভারতি প্রবেশ করা অর্থকটা অ-रका नार्यक्षा धरे जनको छ जानक जगारकर ভারতক্রামুদারে গঠিত কুইয়া থাকে ইহা নিশ্চয় সতা যে একজন আগভা বৰ্জনেইও আ स्टात स्वादनत नीम जाटन शिक्त स्टेश (य श्रावहर প্রকাও রুক্তরূপে পরিণত হইতে পায় না ইহার কারণ তাহার সমাজ ও অবস্থা। বে যেরূপ বিষ্বারুতে খাস এগাস লয় ভাষাতে के बीक ककारन महे श्रेपोत्र मखायन। भ আবাগু বিপত্নীত দিক্টাও নেখ । সেই ভা-নের বীজা অনুকুল অবস্থা ও খানাজের ভবে (क्थन महा, क्ष कलन९ इहेग्रा थारक में केहिनिकि অৰ্থাৎ উপদেশ ব্যতিরেকেও যে জ্ঞানপ্রাপ্তি তাহ। এই প্রুকুল অবস্থারই আয়ত। বস্তুত জালনাভ যে অবস্থা-দাপেন্ট্,কোন কালেই এই নিয়মের বাভিচার নাই ৷ ইহা আজ ভাছে কাল আছে একং চিরকালই থাকিবে। কিন্তু অনুকূল অবহার গুণেই যে জানের অপূর্ণত। দূর হয় এরূপও মনে করিও না। খতই যাও সন্মুখের একটা অন্ধ-কার চির দিনই থাকিয়া য়াইবে 🕫 তবে ভোমার হত্তের আলোক বত্টুকু ভাষার গাঢ়তা নত্ত করিয়া শীণ করিতে পারে এই लाउ।

শাসে এই জ্ঞানগত পাথকো অধিতারতেদ প্রতিষ্ঠিত। এবং এই অধিকার-কল্পনায় সুলি প্র সূক্ষা ধর্মের ও ব্যবস্থা আছে।
কিন্তু অধিকার স্থল ধর্মকে মুক্তিপ্রদ কলিয়া
স্থীকার করেন নাই ধর্মদূল্য বাবিনের
ত্রমহ ভার বহন অপেকা ধর্মের প্রতিক্রম
বরং ভাল এই উদ্দেশ সূল ধর্মের স্থানি
কিন্তু জীবের প্রক্রমান প্রমান্তির
ভারাই জনা অন্তর্জান প্রমান্ত্রিক
লাভের মূল জন্মা বাবিনের ভাষা ভাষার
দূর্মিত ইববে নাই। মুক্তিমান স্কর্মার ক্রমিত

অপার হা। যাঁছার পুরুষকার ভাষারই ওমধ্যে | अर्तरम यहिकात जाहि है जर लिल्बस्त मधात भुद्रः है भार । श्रुक्तिकात्वक भुक्तिक कहि । त खनाई जपूनाण । आधिता मुका पु ্ঠিত এইটা স্পাই ব্ৰিয়া ক্ৰিয়াছেন স্থুলে ঘ্টিল নাই, ইমা সমূলোর অস্ত ভেলাটেল खता भाष नहीत पहिंदर मण्युर्व जका। यनि का विषय अपनाय सेश्य मिक्टिये इकेस कि होती अभरता १ का सब्देश । भूगि ८७४। उत्तर শেষৰ শক্তি মেবিলগ চেবা চন একুত भट्यांत रहाराम लगा दक मध्य ५१८%। भावेष । भारता । नामि करा प्रभावन कारमा किर्देश कामाप्त कर्त वेकादन स्थान **दिशाम** कथा विशेष मा ने लगा स्ट्रिटे अरम्भारत है की भाग के की तीन

以前的物理事件不可能的可能与446至15的人。

ज्या तक्षा १ कि.संस्ट । के के में १ किया । हे लेखे ্লক্ষ্ট এ ্বেন্ট্রনের স্প্রিক্ত ছব স্থানের প্রেছ া প্রেরের । সালোপ্রাপ্তর বালে সূর্যভাই সুম্পুর উপন্যালন হৈ প্ৰতিষ্ঠ কৰিছে প্ৰক্ৰিছে আৰুৱা 🖺 ত্ৰুৱা কৰেছে । জনাত **হয় যে মৃত্যিও জন্ম নাম আৰু** 的 PT者 (4) 1.12 × 177 (1444) (4) 对称" 数形物" 数形物 (4) 4) 1.1 উপরে ১৮০০ - উত্তী প্রিতির সংগ্রি**না**র সময় ৮০০ সায় । স্থানী হ'বা হ'ব বিশ্ব । প্রত্যাল বা হ'ু হ হার্বজ্ঞা স্থিতিক এক নেচর । ১ লেক ১৮০, ৮৮ 明心的证明 医一种电子测量器 对人的变形。一个许是 ब्याप्त्रात्र १७ ६.४। इंडाम्स श्रीक्षत्रात्र स.स. ११.५५४ 期限股份分子 不同一种网络物质性 國家 计如此解 এই প্রতিশাস পুরু ভারণাল আছে। শ্বিদিশের চিন্দরের এইচন্ত্র সভিনাত্রের **প্রতি**শ্ব मदः इति । सक्ता लुक्सम्यामः। १०५ वृहस् अस्टालकः **ए**षा । राम मकाम मसंविष्या प्रश्ने एक खाल চিত্ৰৰ ধাৰণ কৰিছে না পাৰে তাহা হইলে জ্জন ৰাপ্তক ভাগত কৰা ৰগতে প্ৰাণ্ড ক্ৰিয়া ক্ৰেন্ধ, আগ্ৰ काफ़र जानर ए एम पद्मार्थ गर्भाव करात केक्का धार्वक्रम रहेत्। वादा उत्भाषा स्था ७ सामिक भाव अणि एन्डे अगर्य भाग कतिहरू मध्यभा अधिएत्। अपे ভান্য ফিলি কৰ কেন্দ্ৰ বান্ধু আকাশ প্ৰভৃত্তি ভূত্তে প্ৰঞ भाग हिटल सम्भा कतियोद छन। अहे छेलान बाह्य । বীহার। এককালে হল্প এলে সনাধি করিছে গালুন त्राज्ञकारवज्ञा काश्मिनगरक स्वाक्षांभ्यकार्त्व उर्गम । कृतक कित्वत वातना किनक्षितिकातिकात काँका द्राक्टवाल क्रमा नित्त डीहीझ अन्तात जीवद्युन हुन ह आ-प्रक प्रविधी बरेटड कांत्रस कतिया कर्मका आन त्नी-

ভুপট্রিশ ভারবার নির্মুক্ত শাস্ত্রকাত্রকা ত্রকা জ্বানী আনৰ আৰশ্যকতা জানার করেন। किस कृत्यती विसंत्र क्लनात्न क्रिक्नमात्न এলে এক বিশ্বল । থাকিলে ভিন্দুরেশ্বের ्याञ । ७, ट्रुक्तना हहे छ ना ।

্ছতে সাট্ট অগ্রিশ কয় জিলে ভালাদের প্রিন্যান কাল্যাস স্থানার উপায় বিষয় তথান কালের। বিশ্বন रकार भाष नागिरवन किक्किशन सभा भार किसी १ । १ व्योति १८१८मा शीलन्द श्रूकारक नहम क বিচাৰ । এইটা ১ গ্রীয় উপ্টেশ্ছ । **ইহাতেও** ব**রি অস**কর্ম क्स अर्थीय को प्रना**रम**, सामन **इस स्ट्रिस महिनाम** । करेति ५५२ ७८८ मा। व्योधारियम बारका देखन दान নৰ্ব চে কিন্তু পুৰুত্তন জমি**হিচ্বের** (ল**ন্ন**মান প্ৰ**স্থা** াৰ বাংলা কাৰী কাহার। সংষ্ঠিক বিষয়েছে নালাভত-বার্তি নার কালির আক ব্**ন্**রপ্র নাই। কেক त त हो यो की त्रीवरण का श्रुपंपातान स्त्रीय हरें-द १ भ 🕝 है। इन रिव्ह । हाविक 🗯 हनी ब्रांगिदकन्त २ ८७५ छ। २८, भग गटामाध<sup>ी</sup> कार्तमा कुँक्टकेन । १०५० (स ं १५ वंद मधा उक्ताति: इक्ताति । अंध्यक्ति । শংস্থাৰ স্থান কৰিব কৰিব শালা বিলেল বুৰ্গা**গতি**, ショナー 夏日軍 小杉 MET CE 111 能を放射で開 २००७ हि. । भीषक अथगेर दही विक्रमुद्धि भागा करिएत कर्मार्ट अल्लाखाटरी अवस्था हे जाति ह्यांकः । প্ৰদুৰ্গ হাছ নাম উচ্চেইড হছৱা **আৰ্শ্যক্** তেনে বাল লাল্ডল জ্**লীডেম্ম্মা**লেকে বিলা **পে**ন্দিকে क्ल - ८३ - ं न : जिल्ले भागरात् म्या शाकिल ६ क्र्या करकार किएक । अंदर्शन अ**चीए**क स्ट्रेशन मिटकार ত শ্ব প্র প্রাণ ১০ কুটো ইছা স্থাপ্ত ব্রুদ্ধ इ. १४५१ वर्ष अस्थान महिन्द्र १५० वर া । ক্ষুত্র ১৬ করে মুক্তালগ্রহণ জালুর পাস নাল্লিক নুষ্ণার্থ কে জালুলে সুভা প্রকৃত্য সংক প্ৰা মূত বীভাষৰ ভাৱ বহন বিজ্ঞান ব্যালা (জোনার ্ষ্টি ধংগ্ৰাং । এ পাং কপের বাবসং। বস্তুত স্থাল মুক্তি कारी। जान्यम अलीम स्टब्साय मोत्या, स्यान मक्तम भारत हुन्सु कहा एक शिरुव मुर्दिसाग्राम मुक्ति न**हि**। एसम भा की बहु आप सका क्या में हुन क्या होता है। लानमन्त्री भिष्यक्ष । आमहा अहे वर्षिन्ध अहान ने प्र ちゅうが自由自由側になっ

एक एक अभिवत्रभः महस्य करन् करा अतः । \*সভাৱ বংশাক্ত বিক্তীয়ালাশকৈছা। চন্ত্ৰবিংশকাঃ ভংগ্ৰহী 🚉 **एर कि छात्र र मा मिलामको जिले में छ**त्र मुक्तम्बर्ग ने न अन्य पर **बीडर मक्स्कांबिङ्ग्येरः। (क्यामाराजनम्बर्) मक्समग्रा**र एका मर्क्**रकाशिभावर मर्क्तल्डा**किन्दिका**सूबैर** मर्व्य ३०मदनः **क्षिकेशकिम्। 🍇 यहाराये। भागिन्त्रकेश ह** सत्ये : সংক্রী **বেশি**শবি**উটিনা** জবতি। সংব নিরাকারে দক্ষা বদ্ধ কট্রিন শক্ষেতি উদা পৃথিত থেকো বার্কশিমনে-व्कार्याया क्राक्यानाः भूताः श्रूकंश्याची कृव मनामाना-

व्याप व्यवस्य यादा करिना करेन **াও** ও হাই প্রকাশ। (माक नंदन **প্রান-তিরিটো** অভ, তানি ভোনাঞ্ন, শ্রমান্তা দারা ভাষাদের কল নীলিত করিয়া দেন, অর্থার এনেকে 🦠 🖟 লোপ্তে স্থাবর জ্ঞান করে খিনি উল্লিখিত কণ জ্ঞানোপদেশ षाता श्रेषदमिष्ठे अधिया एमन विनिष्टे अक्टा ইচাই **তর্**র চাল্প লক্ষণ। বিকা অভ্যেষ্ঠ ल्लात्यत बाहा एँ क श्**रेतन** वर्ग किसायक सुरक्षा कर मा 🕡 कना 🗞 न महिला-্ত্রার্থপারগ ত্শনমতি শুচি ও ছিতেনিয়া হ প্রাজাবশাক। ইহাঁর কার্য। শিঘাকে সমাক ু প্ৰব্যৈধিত কল। হিনি তছিং 💢 অক্ষণ নাজ্ৰ-কৃত পাল দেখন রাদ্ধকে সাধাকত দাপ যেমন প্রতিকে চালির লিয়ায়ত পাপ ভাষকে স্পূৰ্ণ করিয়া থাকে: ইইণার দায়িত ্বালেক। এখনকার কায়ে তখন ে সে লোক यत्न क रताहे अल हहे क शातिक है। छ-**র গু**টী হণণ জাবন ক। তন্ত্রশান্তে উলে **পীনের শিষ্যভূত্রীকার** , এর ৷ **গীনের গার্হস্কেরে উ**পত একুম্বা গড়ৰ । কিন্তু গুলে পাকির৷ ভক্তরান বিশেসনা করা जातमा १। भट्ट भागार ६ विचित्र

इटेट**ः शारत। श्रुक्तकारम**्**म्यास**न कुक्र **ाम्ब ५ घरडी क्ष्मि लिए कि**या छत्, लोड़ याथन ७ कि बाइ हिन्दन यथाय থক এবং কর্মাট ক্রিছ ৯ কাম্বোজ প্রভৃতি CPCH अवस उक मिलिको ॰ लाटक अहे गठल अत वहाउँ छक्-निक्शांचन कतिहा লাইন্ড 🔻

लकर्न करें। तथा खे रहार में का ७ ভারত প্রশাস্থাবনের প্রাক্ষা হৈ **নিতান্তই প্রয়ো**ল खन: श्रीक वन। धरेशाहरू ख्वात्मत खना ভার চাই কিছা অ'লাৰ এলপাত্ত দেখা যাই-ाराः य मन्त्रायः ना शाहरत माधक वर्षे-भारत क्यूम-एम घाता मन्त्र निधिशा खग्नरह দী**কি**ত **হ**ট্ডে পারে। একলে তে নাধক আগানই আগনার গুরু। আর এক ছানে আছে নতুল্য কথনই গুরু হইতে পারে নাঞ্জ প্রকারকলগ ক**রন। মাত্র। আর দীক্ষাও রুক্ষা-**मिएक श्वाब, नाम्न निदर्शक ed ং : **ভাছে মনুধ্যকে তক্ত ভাবিলে**ঁকখনই मुक्ति इप्त ना १। এই नमछ क्लिनिक्सवाम বিষ্ণু এই ওলি কি শান্তের অর্থবাদ ? না তাহা নহে। ইহার সৈদ্ধান্ত পারে। দীকার মনের একটা অবস্তির হয়, ইহা শ্রম সাধ-

স্থেত্রপ্রিভাক্ষাণ সম্প্রাধার প্রাধ্যের। তবং পুরুষ্যারিদারি ভেত। অনাপাস্মর্থঃ স্বধ্ন ন্র্যান্ন্রাপ্রয় মচে। দাস-কংগ্ৰেক স্বাপ্ত ১। তিত্ৰ পোষ্ট্ৰপ্তি ওগৰস্কং ৰাঞ্জনে ৰং विरीकि १६ वस्किकार क्रिकानंदर क्रिकानंदर क्रिकानांत्रहरि ্চাকেং দৌমাক্ষণ চাচুছ'া ে শৃত্তিকাদাপদাবহ চরণ-्रमधारा अनुनार का वर । रेल्यामिक छन्नां के शामुखंब्युम् । ज्यादमकारणः १०० - २ १ व्यक्तरः वृह्मारण्यः **म** छ **भूमकः** निमा कि एन छ अभिन्न मुस्स्म ভব্ভি ৷

ইতেবিস্ত্। বস্ত্রী কেন্দ্রার শির্মা চ নম্মারং कृष्यिकार । अध्यक्ष्यद्रभ्योतः मधान्यमा एशकि महा-ভূতানি হতাগয়ভাকাশঃ শন্ধরণী বল্লুক নুরুলী তেল্লুন্দ গদাবাপ্যভোহভোৱাহৰপি অহম্ নেনেৰ বংগণ ভগৰ भाममासा भविवर्डिनी छविन्मिक्टामि । विषु द्वा

> व्यक्तानिक्रियाक्रमा औराक्ष्मेनवारुक्त 📆 े क्षेत्रक के बी जिल्हें (यन करें क्र 🚨 अहर व नर्में 🖈 🗀 क्षिमांत्राचरा व्यास द्वा स्थित्का प्रावह या विश्वान वहा

कावांग ।

বটপতে ক্ষামন গিপিছা এছৰং ভতং **७७३ अविभवाद्यां कि ठानापा विकार छटवर ।** • 👫 💆 **देशक मीर्**खदतात्रভाटन 🖟 त्याशिनी ७४।

a अ ६.०० अस्टेर्नन सरकश्रीके करना नोका को नामकामा कुमार प्रमाहका । क्रांगाशाच्या

व्याल धन भारतमानि स्रामादि महिता प्रकार माञ्च छक्क । तार्वि सम्बद्ध मुना घटा दमारका न जावत्त्र तावि नावत्त THE PARTY OF THE P

ভ মণ্ডেলেশ কলেকে লুন্টবে।শ**নসন্থ**লাঃ खाउट (भ टाउंडाना **कारकार उत्तरमाः** । ে ভাশাৰোম্ভবাঃ সৌরা মাগণাঃ কেরলা**ত্তবা** टकामला\*७ मेलार्ग\*७ एउत्तरः मर्ख यश्रमाः । কণাট নগুদারেবা কচ্চতীরোম্ভবাস্থপা কালিকাণ্ড কথাৰাণ্ড কাৰোজান্ধাৰমা মতাঃ।

दम्ब प्रकार बद्ध करते प्रकार बद्धार जा নিয়া দেৱ কিছ প্যনি ধর্ম ও ঈশর ভিন আর গতি নাই এরপে ব্বিয়াছেন, বাহার गत्न गांधानी उद्याह च उद्दे थापीख रहें তেছে তাঁছার পক্ষে দীক্ষার আরি আবশাকত। कि। जागता अर्जि विनग्नाहि अनगगार्ज দ্ই প্রকার লোক আছে। এক এন অবস্থা বৈশুনো এক প্রকার অস্ক্র আর এক জন অব-স্থাওনে বৃদ্ধেরীক্ষেত।। क्षेत्र भागाति । ভাষে। অধিকালেন্ডেদ প্রতিটিত। ভৱেন্তি এই বেরে বাকোর সিদাস এই যে খাৰাশ অ% একজান নাডেণ নিনিত্ত ভাগতে নাই হয়। ১ হোজন। ১ আরু খালার। বুংপেয়চেতা তর্ং বিশেষজ্ঞ তাহারা আপ-नाता है उहांनगात हत भेटक भरति शहर थ-क्टन अक निष्युराजन।

আন হির ছুইল পুষাকে গুরু করে।
আর না করা আমাদের আয়ত ! আবেশ্যক
হয় করিলাম না হয় করিলাম না। বিদ্ধান
মনুষা গুলুই বল আর বুংপেলটেল। আমিই
কল উভয়েই ছো জম প্রমাদের বলীভূত।
তবে কি আমরা ধর্মপথে অলের নাায় চলিয়াছি এবং অক্রেম নাায় নীয়মান হইতেছি।
ঈবর আয়াকে সুবার আমার কোন প্রভান
দিয়াহেন, এবিষদের আমার কোন প্রভান
মাই কিছু যাহা আমার জাবনের সর্বোচ্চ
প্রোজন তিনি কি নেই বিষয়েই আমার
অন্ধানে ফেলিয়াছেন। না ইহা ক্রম্নই
হুইতে পারে না আমুরা সক্লেই কিছু
না কিছু পরিষাণে জম্ প্রমাদের বলীভূত

১ অন্ধিন সংসারসংরত্তে জাতানাং দেহগারিণাং অশ্বর্গক্ষা রাম বানিমাবৃত্তমক্রমে। একজাবৎ শক্তেবাজানত্তানাজ নৈঃ শবৈঃ ল্যানা জন্ম জিবলি সিরিদঃ স্থানজতঃ বিত্তি স্বান্ধিন জাঞ্জিবলেশ মন্ত্রীজনত । ভবতি জানুদ্ধ জাঞ্জিবলেশ মন্ত্রীজনত ।

हें इ। व्यवनारे निजा: াধৰা আন্ত্ৰিণকে <u>বে ধূলিমন্তি ভার। নির্মাণ করিয়াছেন হ'ছ।</u> তিনি ছানেন। আমাদের সন্মু**থেন** আ নোক অপ্সপ্ত এবং অন্ধকার জগত ইহাও জানিয়াই তিনি গোমার তিনি ভালেন। कन्टा देखा बाध्या रहेता बाद्धनर । প্ৰি স্বালি ভাবে জ্ঞান চৰ্চ্চা কর গেখানে पास्तकात दमद् भारतिहै अहे किस्त का हो ভোষাৰ সাম্বাক। তিনি ভোষাৰ চিত্তে পাদিই। তালে প্রকাশ করিতেছেন। কিন্তু িজের সভাই লৈববাণী ইছাকে শুনিতে পায় 🕖 ূমি আনি হরিহর রাসভচ্চ আমরা সকলেই প্রনিতে পায়, কেবন অভাব **মূজা**-যার। ফলত সংপ্রধ্ন হুইয়া याकिटन मक शहे अहे अनीहरू महीन নিতে পা । তখন ভ্রমবান ভেনবাদ আর কিছুই খান্য মাট্ৰাপ্সতভ্ৰ ক্ৰমেটা বির অ্তর দরে। প্রায়ন ররে। ইচাতেই আমাদের শাক্তি এবং ইহাতেই মুক্তি।

### বস্তু-গুণ-তত্ত্ব।

বক্ত কণ্-তত্ত্ব সমুদ্র-বিশেষ। সেখারে জনমণ্ড তানকা বড় পড় জাহাজ খনে প্রার জনমণ্ড হইয়াছে। আনত্তা আনতা আনতানের প্রকার অন্তর্গান্ত করিয়া নেই সম্প্রটানের জানে একবার বেড়াইখা আনিতে ইছাে বাব, ইহাতে বিশ্বনাম্বার কোন কারণ বেথি না; জাহাজ যে, গুপুর শৈলে টেকিয়া বিপাদে পড়িবে ইহাতে আনতার বিষয় কিছুই নাই, একে সে কারল জন-পথ দিয়া তলে বিশ্বনা কারিয়া চলে, ভাহাতে আন্তর্গান্ত কার্বার গভার জন কার্টিয়া চলে, বিপাদে পড়িব জনি কার্টিয়া ভাহার প্রক্রে ক্রিমান্ত নিং ;

পাচাৰ্য চৈত্তাবপুৰা স্বৰ্গতিং বান্জি। ভাগৰত ১১ জন্ম।

ko ,शिरवारवानक क्षारहानवार । 💣 🔊 ।

শিক্ষা ইনিক ভাষা কিনার। কিনার। প্রকারের মানী ইইনে চিক্রণ মানার ইনিক।
কিনা ইনিক ভাষাতে আবার উপর উপর টিকণ মানুতে যদি শাসমর্থ প্র আন্ত্রোপ কর
ভাষার হারার বার্বংশে প্রারুত্তে বলি চিক্রণ মানতে ক্ষান্ত না আকিয়া লামন্
ভাষ্টের

্রিক্তির্গ্রেহান ই ুপেনামি সাগরং । মোটহর কুহকে পড়িরা হতার । র ভেলায় গার ভুইতে ইচ্ছা করিতেছি।

ভিনি এরপ বলেতে পারেন, কিন্তু আমরা
কুলের কাছ িয়া চলিব — আমাদের মুখে
ওরণ বা ভাল গুনার না। আমরা যথন
যে-কোন দার্শনিক বিষ্ট্রের আলোচনা করিব,
তথন চাহার একটি-না কেটি সহজ-বোধা
স্থল দৃষ্টান্ত সামনে রাখিয়া তাহার পশ্চাৎ
পশ্চাং চালব—ইংরিই নাম কুলের কাছ
নিয়া চল এরপ করিলে দিক্-এম ইইতে
আর আমাদের কোন বিপদের আশহ

বস্তুর একটি পুরাতন দার্শনিক ্রুষ্টাস্ত — ঘট, তাহাই আমা এখানে শিরোবার্গ্য করি-লাম। একটি ঘট ভাবো; ভাবার পব, त्मरहे तड, भीमा शक, **चत्रुवर्डी**, এই छन-গুলি তাহাতে জুড়িয়া দেও; তাহা হটলেই দাড়াইবে যে, ঐ ঘটটি মূদ্ঘট। দেশ ঐতিনটি গুণের সংখ্যের সাধারণ ঘট একটি*্* বিশেষ **अकार**द्रत घरे **हरेंगा** मांड़ा**रेंग**। সংযোগ ছার। বস্তুর ঐরপ বিশেরত্ব স্মৃথিত 🗱 বলি: গুণের আঁর এক নারী রিশেষণ। ুঁওণ বস্তুকে বিশেষিত করে, রে **বস্তুত্**ং যত অধিক গুণের আরোপ করিখে সে বস্তু উত্ই विद्यापिण श्रें(द ;---(दि यपि सम्खन जा-ব্রিপ কর, তবে ভাগা বিশেষ প্রকারের ঘট रहेत--स्थात घर हरेत ; शहरा धार विक-্রতা-গুণ আরেপি কর, তবে ঘট আরো विशिक विद्नाविक इस्टिन-छन् एक्वन अपन्नि द्देश का अकित ना किख

চিকণ মুদ্ৰটে যদি শ্যাম্বৰণ হল আন্ত্ৰোপ হৰ, **७८**व वर्षे जीता जिस्क **बिल्मिक इर्रा**न-ठिकु रामराहे गाँउ काछ ना पाकिशा नार्य-वर्ग हिकुन सम्बंधे स्ट्रेटन । এইরূপ করিয়া নম্ভর উপর যতই গুণ চড়াইবে ততই তাঁহা বিশেষিত হইয়া পড়িবে। এই জনাই **গু**-ণের নাম বিশেষণ । কেছ যদি বলো বে, 'শিকুষা এত নিয়ণ চইতে পারে না যেটুলৈ মমুষা ভক্ষণ করিবে" তবে ভাহার উত্তরে ষ্মায়ন। বলিতে পারি যে, এছলে বাকে "সভা" বিশেষণ ছারা বিলেষিত ছবা উচিত, - ইহাই বলা উচিত যে 'সভা মনুষা এত নিয়বি হইতে পারে না ষে দে মনুা ভক্ষণ করিকে" কেমনা অসভ্য-মনুষ্য-কর্ত্ব ওরূপ কার্যা অনুষ্ঠিত না হয় <u> धरेकेल (प्रथा याहै(उट</u>ह এমন লহে। ্য, আলোচ্য বিস্কোর ব্যাপ্তি নির্দ্ধারণের স্ময়েই গুণকে আম্বা বিশেষণ বলি; কিন্তু যখন উল্লেখ্য কোন একটি বস্তুর কোন-একটি প্রণ দেখিয়া ভাষ্ট্রিভাতি-নিরপন্ন ব্রিটে যাই, ওখন গুণকৈ আমরা বলি-লক্ষণ ; যাদ বলা যায় যে, "এ দপটা গোখুৱা নয়,কিন্তু কেউটিয়া, কেননা ইহার পামের রভ্ কালো দেখিটেছি'' তবে এখানকার এই কৃষ্ণবৰ্ণ-তৰ সক্ষ্য শব্দের বাচাৰ স্কৃতি श्वरणत यात अक नाम

পদ্ধতি ইহার নাম—মণ পদ্ধতি; কিন্ত মুন্বটের প্রতি লক্ষা-সন্ধান করিতে হইলে काश्माफि यात्र यात्र घर्षे हरेट जका होनिया न अब जावनाक, -- लका होनिया नहेतात अहे-বৈ পদ্ধতি ইহার নাম বাতিবেক-পদ্ধতি। মনে কর যে, লক্ষিত ঘটটি ত্রধু-বে-কেবল म्राप्त घरे जार। नटर, किस्न जारत। এই ११, তাখা চিকুণ ম্মায় টে; ইহাতে এইরূণ **দাঁড়াইভেছে যে,** মুন্ত খ্র-জারত মতে তা **গুলি চিকুণ নহে দে-গুলি ব**িচ্চেক-পদ্ধতি অসুনারে ভোমার লক্ষা হইতে বংহণ ৬ ছই-মাছে, আরি, অবর পদাত-অনুনারে চিনুণ মাজায় সংখ্যার জোনার লক্ষ্য সমাধ্যি হয়-্**এইর**ান, জ্বয় ব্যতিমেক শ্রুত क्षाटकः । **অবলম্বন** করিয়া আন্যালের লক্ষা উভ্যোভক ख्यस्य वि**रमक** श्राट्य विरम्पर अगृहीर् ७ ६४। **গুৰ, সাৰাৱণ মস্তবে বিশেষ্ড করে**, এই অর্থে বিশেষণা; ও বিশেষ বস্তর আছি লক্ষ্যান **স্কানের সহায়ত। ক**রে এই অবেশ এক। ।

व्याच्या भवन ्य-(काल ५% ७) (न) कांत्र, , काहारकरे भागता। अव-व-धकात्रकः वाक्रकः दिनिष्ठ राजशा ভावना क' इ। चर्छ . र्शन ্লা**ফণ উল্লেখ না** করেলা শুলু যদি বাল — ेला . जाश श्रामध्य तुकाल ता, जाशाव अन्तर শুরাক্তিও তাহার প্রবেশ চঞারাত। বেশ্বটের উপর মওলাঞ্চি নহে ভারাকে वामकी पहेरे दिन गा। घटडे यान उक्त छ।-লকণ মুদ্দিভায় পর্যানত হয়, তথাপি क्रिशास्त्र जागत। परेनास्त्र जात किंद्रहे বলিব না, কিন্তু যদি পটের উদর মওলটোত-লক্ষ্য পদ্ধিত্যাগ করিয়া চোঞ্জার অক্টোর করে তবে তখন খার তাহাকে ৰট বলিব না, তাহাকে বলিক—'খাদ্'। ৰবিৰ ইডকৰ উৰ্লেণ ও দীপ্তি থাকে তত-ক্ষণ তাহাকে অঞ্চিক্ত। সাজে,—অমি নির্মাণ माख रहेटल कारात्क अधि वला ना वला भ-

নান। অগ্নিকে বাদি ভাষার উফতা-ওণ বিদ্যা नारिका-माउक शरेटा পुथक केतिहा (कना যায়, ভবে ভাহার অধিত্বই গাকে ন।। অগ্রি বনিলেই বেমন বুঝায় যে, ভাছার আলোক এবং উভাপ **আছে, আজা** বলিলেই দেইরূপ বুকার যে, ভাহার জ্ঞান এবং প্রেম আছে; অফচ কোন কোন দার্শনিক পাণ্ডিচ ইঞ্চিত-চ্ছলে এইরাপ **মত প্রকাশ ক**রিতে ছাড়েন ना (र, का का निर्श्व । वाजाः यनि क्लान-্রেম না খাকে, তবে তাহাকে গুড় বলিনেট ८०। १॥ - जा शा विनिधा निर्दर्धक अफ-मः था। বাড়াইবার আবশাকা কি ? নিওনি বস্ত কে ৰূপে লোপনতে —শ্ৰণিয়া**ত**ে বা স্পূৰ্ণ ক্ৰি-ষাটে ৮ নির্ভাগ বন্ধর উপলাব্ধ দেবতারও ভালাল ! এই কাগজ-**থানির এ**-পিট্ দেখি: -তবেই আনৱা কলি যে, ইছার ল-লিট্ আছে; মেইরাপ ওণ দেখেলে তবেই সামরা বলি . १, ७। इ.त. भू**रत २४**३ । वाट्य- २८५५ । वासत्। रख-भाष्मत खिल्लाथरे करिना। दम्भाट । स কাঠিনা ওণ ও খেতবৰ্ম আন্ত্ৰিত দেখিয়া তবে আমরা তাথার সভা (বিনা বস্তম্ভ) উপলান্তি ক রয়া থাকি। আন্যা যথন বে-কোন বস্তর নামোল্লেখ কার, তখনই আমরা সেই বল্লকে এগন একটি (বা এখন কয়েকটি) গ্রুপের সহিত জড়িত ব লগা ভাবন। করি যে, গেই ্রীকটি লক্ষণ (বা মেই কয়টি লক্ষণ) সেব-ত্তর পঞ্চে নিভাত্তই আবশ্যক (যেমন দীপা-থির গক্ষে উত্তাপ এবং **আলোক নিভান্তই** আবশ্যক); দে বস্তর আর আর লক্ষণের দত ইচ্ছা **ভত** পরিবর্ত্তন **হ**উক্না কেন. কিন্তু দে- একটি লক্ষণের (বা সে-কয়টি কক্ষ-প্রে) পরিবর্ত্তন হইলে চলিবে না; দীপা: জ্বেক বক্তবৰ্ণ লক্ষণ পরিত্যাগ করিয়া খেত-বৰ-লক্ষণ ধারণ করিলেও ভাছাকে আমরা मीशादनाक बॉनन, विस्तु छाहा मीथि नकन शिक्षांग कित्रा निकार्तत नयन बाह्रभ

করিলে আর ভাহাকে আমরা "দীপা-লোক' বলিতে পারিব ন। যে-এফটি (বা বে কয়টি) লকণকে স্থিত রূপে ধরিয়া থাক। **যে এন্তর পক্ষে নিভান্ত আ**বশাক—সেই এ-কটি লক্ষ্ণ (বা সেই কয়টি লক্ষ্ণ) সেই বস্তৱ ধর্মা বলিয়া উক্ত ২য় পশুর ধর্মা কি ? ্**না পণ্ডেত্ব** ; পশুত্ব কি ? না চকুম্পদত্ব **জী**বত্ব मृष्णं बहेन्नशं करक्षां नकत्वत्र ममस्रि; পশু হইড়ে েলে মূল্বও চাই, জীবন্ত চাই, চতুস্পদন্ত 🤌 কিন্তু গোন্ধ লব্দণ প্রভাব ধর্মা বলিয়া ভিক্তা হুইতে পারে না; কেননা গণ্ডর গোছ না থাকিলেও চলে, এ-মন জনেক পশু আছে মাহার গোড় নাই,— অলেব গোড় নাই 🕩 গোছ যদিও পশুর ধর্ম নছে—কিন্তু একা গর্ম ধর্মা ভাষাতে আর সংশ্য নাই , গোড় কি ? না বিখণ্ডিত খুর, রে। সহন-পদ্ধ হ প্রীবা মৃদের উচ্চতা; প্রস্তাহ, ইত্যাদি নক্ষণের সমষ্টিশ কিন্তু কপিল-বর্ণ-বতা লক্ষণ গৰুৱ ধৰ্ম কুৰিয়া উক্ত হইছে পারে না—কেননা গারু খেত-বর্ণ ভইতে < दि—कृष्वति है। **हरेए शाद**िमान। वर्णद নানা পক্র বিদ্যমান থাকিতে পারে ৷ তো-মাকে যদি বলি – "পশু ভাবো" তবে ভুনি হয় কোঁ একটা গরু ভাবিবে, তাহা হইলেই পত্তম্ব লফ্ৰের সাহত গোড় ক্ষেৰ বাধিয়া ষাইবে,—না হয় তো তুমি একটা ঘোড়। ভাবিবে, ভাহা-মইলে পশুত্ব লক্ষণের সহিত व्यक्त नजन वादिया यार्का, ना स्य छा. व्यक्ति। नाकि कार्तिद्द, खाद्या व्हरते अधिक-নিক্ষণের সাহত হ'ড়ছ-লক্ষণ বাধিয়া ষটিবে ; ু ইহার মধ্যে পশুত্ব লকণ টিই অধারিসর্লনীয়, গোড়-প্রভৃতি লক্ষণ-গুলি, পরিবর্তনীয়, কেন নাংতোমাকে পাঞ্চ ভাবিতে বনিলে, তুমি পদ্ধ পরিবর্জ শোড়া ভাবিতে গার—ছো-ভূমি পরিবর্তে হাতি ভারিছে পার बर्गा नाना विष श्राक्षेत् अनुद्रे नानते कविटड

পার—তাহাতে কিছু নাজনাৰা করে কন্ত দেরপ করিয়া ভূমি শক্তর পরিবর্তে ক্রি ভাবিতে পার না) তুমি যখন কুথা দিয়াছ ষে, ত্মি পত ভাবিবে, ভখন তাংকা তুমি অনাথা করিতে পার না। এইরপ জেখা যাইতেছে যে, 'পশুর পক্ষে শশুদ্ধ-লঞ্জিন (চতুম্পদত্ত, মৃত্ত ইত্যাদি কতক্তলৈ ল্যান) অপরিবর্জনীয়, কিন্তু গোর্ছ, অখন এই নক্ষণ-গুলি পরিবর্তনীয়। ভেমনি আহার, গরর পক্ষে গোড় লক্ষণ ছপারবর্তনীয়; ধ্বং লত্ব, কপিলত্ব প্রভৃতি লক্ষণ-গুলি পরিহর্জ-नीश। शुनुष्ठ, कीरवत भएक कीरकुलकन (অর্থাৎ চেতন-বস্তু, ও চেত্রকা এড়তি লক্ষণ) অপরিবর্তন য়: কিন্তু গঙ্গুর পাকত্ব এভৃতি লক্ষণ-গুলি পরিবর্ত্তনীয়। আমরা যে-কো**ন** বস্তু ভাবি না কেন-একদিকে যেমন আমরা তাহার অগরিবর্তনীয় নক্ষণ-ভালির सरनानित्वभ कतिए वादा **इहे-- आत- अक** দিকে ভেষনি তাহার কোন না-কোন পরি-বর্তুই ক্লিক্ষণের প্রতি মনো-নিবেশ করিতে বাধা **হই। শ**শু ভাবিবার সময়—হয় **আমরা** গরু,**ভা**রি, নয় হন্দ্রী ভাবি, নয় **অব ভাবি** न्यता मटनामस्य नामा পশুর ওলট্পালট্ শ্রি: পশুত্রের সঙ্গে গোড় গুড়তি পরি-মর্ক্তনীয় লক্ষণের একটা না-একটা **জুড়িয়া** দিট। আনরা যথন যাহা ভাবনা করি. তখন ভাহার পরিবর্ত্নীয় লক্ষণ গুলির এক-টিকে ছাড়িয়া আর একটিকে গ্রহণ করিতে পারি; পশু ভাগির সময় আমরা গঁর না ভাবিণা হার্তি ভাবিতে পারি ;—এ স্বর্ণ পরিবর্তনীয় লক্ষর-মাত্রই পরিহার্যা,—অপরি বর্ত্তনীয় লক্ষণদেরাপ নছে—তাঁহা অপরি-হার্য। পশু ভাবিবার সময় আমন পর্যা ভাৰি, যোড়া ই ভাৰি, খোন হাতি ই ভাৰি তাহাতে কোন বারণ নাই ুক্তি তাহা-বে सूछ u-पि विश्वष्टरहरून छनिरने ना,—शक्रम

শাল চাই । বাহা কৃত হয় তাহাকেই বলি—
কর্ম; বাহা যুক্ত হয় তাহাকেই বলি—
কর্ম; বাহা যুক্ত হয় তাহাকেই বলি—
কর্ম; বাহা যুক্ত হয় তাহাকেই বলি—
ধর্মা;
পশুনাকি কানক, মৃদতা, চতুপাদ প্রভাত কালকর্মকণভালিকে কোন-ক্রমেই ছাড়ে না ক্লাগতই আঁকড়িয়া ধ্রিধ্য খাকে, ই ভনা এ
লক্ষ্য-ভলি পশুর ধর্ম পাকে, ই ভনা এ
লক্ষ্য-ভলি পশুর ধর্ম পাকে, ই ভনা এ
হয়—এই অর্থ দর্ম।

কোন বস্তুর কোন একটি গুল খনি এরপ इश् (१९) एड काल (एसे अस्त १८५० का शास्त **७**७-काल्ये तम १ व्यक्ति विचामान शास्त्र एउट **(मर्टे** छन्**टे (मर्टे वखद ४५%—(भर्टे छन्टे** ५५%) বন্ধর প্রকৃতি-সিদ্ধ গুণ। আগর বর্দ্ধটি 🐠 -প্রকৃতিই এই **যে,ভাহা উদ্ভোপ এ**বং স্থানে ১ বিষ্যারণ করে। প্রকৃতি শব্দের অপ্রি 🔑 इति इतर किया पूरणत भरवा विकास (रहान অর্থানের দেখা যায় না, আস্থাত এ কি পা গুড়িলার এ দু**ই শান্তের** এবই ড্রাইট প্রায় র্কিন: প্রাকৃত্তি রূপ ক্রিণ : — গে ক্রিয়া দাণ বেষ বন্ধর অধন্য অভিবাদন সং কেই কিন সং সেই বন্ধর প্রকৃতি বালিয়া উক্ত হয়। 💢 । প্ৰা**ন্ধানিত ১ইনে**ই ভা**হা**ৰ অভ্যন্ততে 👉 শুহ এক-প্রকার বিরা চলিত্র পার কর্মট ক্রিয়া হট্টেটে উদ্ধান এবং আলোক প স্মৃট হয়; তাই আমর। বলি 🕫, 🤊 ার প্রকৃতিই এই যে,তাহা উত্তাপ নং আনুষ্ঠাত े विकीर्ग करते। शक्याखदा, कांध सालवर्ग ध्रेट्ट <u>एक शास्त्र, ना इहेरजस शास्त्र, अहे धना ।</u> **েখতবৰ্ণ-লক্ষ্য অগ্নির ভ**ংগ্লাভ-ক্ষিণ্য জুল আলিছা উড ইইতে পারে ন। বরং পীত-মিশ্রিত-রক্তা রর্শকে আগ্নির প্রকৃতি-মিদ্যান্তণ ব-नित्न ७७ (मार्स्त १३ मा. (वनना श्वाप्रचरे अधित वर्ष के कुछ एहें। इहेश शास्त्र । हिंद-त्राजिएक क्षिकि श्रीम जारह (स. Babit is second nature reals sols entire! देश-दर्भाव के चामार्टमत महन गरेकात-वक्त

১ইয়। এর, ভা**হাই অমা**দের এক্তিনিদ্দ रहेग शाष्ट्रांश जगायक ग्रे शहीतक খুইটো জিহল র জারুরি পরন পরিসার্জাত **হইয়া** এই**তে প!রে** ১৯ টি ১ জার জান মিই ক্লিয়া প্রকাশ প্র ১৮০ ভাৰ জিহ্বাস প্ৰস্তাত্তিৰ স্থান চলাং र्णे हा । उथम मिक्षेत्रद्वत्व विशेष्ट १ ५५० कर हिर्म क्वेर्स, किन्कु अध्या विच उत्पास मर्गाला न कर्मानमा उद्देश हैं है दर्भन वर्ताल्यक हा स अर्थाने १ १५ । ह महत्य भी -- मनवारी भी भीत्रा धर्म क भाविष्ठे मध्य १८८ १ राज्य ६ राज्य ६ राज्य বাসায়া কেটি ইবল সমার লগ ্রগ্ল निकते ज्लाम कार्येण का एकारा क्**रीम** बरे न प्रजुतिक (म भूमा मध्य ८०१०) तुमार १ । वस्त्रभा बाँचे तमारुवर्ग लाउनाय स्थल त ्रिकृत १क्कि जिल्लाम स्थि छ । क्रें र एहं। इ. याल, हा हुर कि खब मुल्हा গ্ৰন্থ সাম্য ক্ষুদ্র দীজায় দে-ছবে। কৈব্যুক্ত কিন্তু সৰকা আৰু আ**্থেকা**ৰ জ ব্রা নভাব হাজে, এরের । আন্মারের সাংস্ত प्रमुख्य । इ. १८५ । १ १ मन अपार्टी न हिंदर है । प्रमुख **েন্ড**া । শুকুন্তির সভা এলা লাল— লগের **সা**ভ क र भी--- भागवन्तिहरू -- बार्श्वया अ**वस्त**्री इ**य** ६१ च १ १ अस्ति। अस्ति । अस्ति **भारत**ः শ্রে ্রাথাও নিচার - শাদাপ নার্ - বিয়াল মাই, ভাষা থানালের নিকা প্রোক্ত লাব ধাৰ : ফারে ; ৩০টা ৬০টি প্রস্থান্ত ১০চ ে. প্রাক্রে**মধে**। এরন্তি র্বান্ত সক্ষেশ্ত রোলে, পার্বচ কুষ্টের ভাষা অবুভর লবে মান विक्ष दिलामी वरिक्ष निवा**उन १, इ**व अल-ভাবে থাকিয়াও রোদের **উত্তাপ এত** অ**নু**-ভব কৰে যে, এক মৃতুর্ত্ত বায়ু গান্ধন স্থ **্ইলে ভাহার এাপ-সং**শ্য উপায়ত হয়। ाक्षा ८० ति पृद्धीस धरे (य, पामना भारा াৰ্চ্ছ ভাৰে উপলবি ক্ষা ভাষাবই সংখ

"অমি উপলব্ধি করিতেছি" এই তার্টি উ-প্লবিধি করি; নির্বিশেয়ে মকল জ্ঞান-ক্রিয়ার সক্রেই আমরা আপনারে নির্ব্ধ উপলব্ধি করিয়া থাকি; আল্লব্ধনান বিক্রেশ আল্লার প্রকৃতি-মিদ্ধ মলিশা কাল্লার বাম্পার নিক্ট জ্বাক্ত ভার লাক্ষ্য নিজ্য লাক্ষ্য বিদ্যালয় যে, আমরা কেব্য প্রান্ধ মন্ত্রিক কান্তি

আমানের নে প্র লগতকা 'ল গর মতে ।

তিন্তু প্র লাগতি প্রতি লাগত বিল্লাকে ।

সাম প্রকার কা প্রতি লাগত লাগত লগতে হাল প্রকার কা প্রতি লাগতে না লাগতি কা প্রতি লাগতে লা

প্রথম, প্রকাশ করা। শক্ষাপেশ রাপ রিমু । আনুতি বেশানে ২০ জন আ'তে, প্রকাশ-রূপ। লাহাপের সকটের মধোই মাগারণত বাং-থিতে গাওৱা গায়; অসম কি প্রকাশ লাও । য়াংগ্রী ক্রণের জনত।

প্রতীয় উভয়ের সাহাঞা। যন, বিরল প্রভৃতি নানা প্রকার ছায়ার অঞ্জন এবং নীল প্রীত প্রভৃতি নানা একার ননের রপ্তন আত-ভাহন করিয়াই আলোক পার্যন্তা হয়। ব-জনী অবসানের মধ্য ক্রিটি প্রিস্কৃত হয়। উ্যার মধ্য দিক্ষা প্রতিক্ষাল করিস্কৃতি হয়। অককার হইতে আলোক গণিও নানা প্রকার

অভানর এবং রঞ্জনের সোপান-পর্কুর্য অ'ছে—তাহাই আলোকের অভিন্যক্তির পথ; খণেক্ষাকৃত অন্ধকাবের সংসগ একেবারেই র্চিত হইয়া গেলে আলোক আর আলোক প<sup>্</sup>লয়া প্রকাশ পাইতে পারেনা। উপরে **ষে**, 'बक्षम अवर तक्षुरमत कथा वना इहेन जाहा প্রকাশ এবং অপ্রকাশ তুয়ের সন্মিশ্র। মনে কর নিম্মেখিত ব্যক্তিক চক্ষে মহন্য প্রভূৱের সুর্বালোক নিওভিত ধইল ; অনুকার হইতে এবেবনরে এই-সে আলোকের অভিয়াকে হুইন -- তারিয়া লোগলে বুহারও নালে একা-শেষ তান্তি ক্রেন-পদ্মতি নৌশতে পাওয়া যাইবে ;— আমরা সাল দশলা কার্সন্ত উপ্ স্পেরি কাখি।। সকল-গুলিকেই নক মুহুতে सुधि भारत निष्कासर्वित, जाम स्वेटताच खत्तस রান্তে পারি না পে বাববন্ত একই সময়ে সকল বলিকে পিছ বলি ছে জ্যাই এক্সৰ কানতে পারি ন। সে, উপতের সাগমকে বে সমাধ্য হিন্দ্র করিও তে **নেক্ষে**ত্র স্থান সক্ষেত্র অবিক্ল মেট সমটো বিভ ক্রিয়াভিত সেইত গণ, অনকাতির মতে ডেল্ক্সড্ ভালোক দেশা দিয়ে, সেই আলোকের জাত্রাশ ংগী, **র প্রে**রণ প্রতিষ্ঠিত প্রেল**েশ**র স্বর্গতার বি নিজ্নানা তাছে, এছা উত্রোভিগ জন্ম ক্ষত অভিযানে কাৰ্য্বাই সেই আলোক निक् शास्त्र ७१३ कि**न शाहि**र ५५ - हेश श्री५१३ কালতেই স্কুৰে ; **এই**য়াল লেকা স্কু**লেচ্ছে :** বে, অপেক্ষায়ের অস্ফুট প্রা চলের মধ্য দিয়াই खलालका हो अकान मरूदा :— अहेकल जा ন্দক্ষত কৰা ট প্ৰকাশ সাধ্য প্ৰকাশ একং অভাকাশ সুয়ের মাঝামাঝি, ভাষাই রজোগুণ 地位研究 分次日本

এইরপ দেখা যাইতেছে যে, সত্ত্তিয়া এবং রজে। এই তিনের সামানিষাই প্রশ রণ সহদর। এই তিনের সামানিষাই প্রশ রতি বলিয়া উজ ইইরাছে। তিন গুরুই

' জ্বাপনাৰের পার্থকা বিশ্বত হইরা প্রকৃতিতে अकत विलोन दश्रिराटक, - এই बना वला याक ইতে পারে যে, প্রকৃতি প্রজান পাইয়াও ৈ প্রকাশ পায় না, – প্রকৃতি গ্ৰকাশোশ্বগ অপ্রকাশ, অথবা অগ্রকাশোমুগ ভারাশ। অপ্রকাশোমুখ প্রকাশের একটি উপাহরণ নিতেছি,--এথম খানান-শিক্ষা-ভালে আ্ यता पुष्टक पार्कत भगत स्लाह छन्। ললি কৰিতাম যে, আম্যা বানান কৰিল পাড়ভেছি; কলি ভোগাৰ পালে অভান বল 😘 বালাল কার্যটে এএগ আমাদের तात. इनीयल एक्या मामार्थणाटक त्या सू স্ত্রত পড়িবার মনায় কখন্ যে আমবা বানান্ कांत जाश जानित्छ आति नाः, जज्द वन, राहेटक शांख था, ध्वथरम बानान-कारमात প্রকাশ হিন বঙ্গে **কিন্তু তাহা অ**প্রকর্তনাল্য। প্রশান্তরে, যথন আমর্। ভিন্ন ভাষ্টি কোন এकार्रे नाम श्राम्थरम फिक्रांत्रन कांत्रएक भाराचन মানি ও এবং ভাগকৈ রুদানাতে আন্তে कवि, उपम डे.मर. तर एक्स दारमत अल-কাৰ ব্ৰস্থাকে জনা ধাৰতে পাতে যে, তাৰু र्धकरिनाजूच ।

ভনের সঙ্গে এছিতির নঙ্গে এইরাল সাক্ষা থা কিছু এইরাল সাক্ষা থা কিছু এইরাল সাক্ষা থাকিব। তাল বাজিন। তাল বিশ্বর এইটি ওল-রাল । এক দিকে আমালের চালুক আরা রালা এইটা আমালক ক্রিয়া, আর একাদকে আলে বের ক্রিয়া, এ তুই ক্রিয়ার সংযোগ বাভিরেকে কোন দুশ্য বস্তুরই রূপ অভিনাক্ত ইহতে পারে না। আর্মে আশ্চর্যাের বিষয় এই যে, ব্যাবস্থায় তাল কের্য় মানালক ক্রিয়ার উল্লেখ্য ক্রিয়ার ব্রহার ক্রিয়ার ক্রিয়ার ক্রিয়ার ক্রিয়ার ব্রহার ক্রিয়ার ক্রিয়ার ক্রিয়ার ক্রিয়ার ক্রিয়ার ক্রিয়ার ব্রহার ক্রিয়ার ক্রিয়

প্রত্যক্ষ করি, সমস্তই আমানের প্রাক্তা হইতে তির, তাহা থনি হইল তবে তাহারা ক্রেতিক বস্তু ও কর্—তাহারা তাহাও নহে; তাহারা না, জানাত্মিক বস্তু; না ভোতিক বস্তু, তাহারা মানতিক বস্তু; তাহাদের উপাদান। এইকা নান্দিক বস্তুর যথন যে কোন গুণ প্রকাশ গার তাহা মানদিক ক্রিয়া-গান দেশন প্রকাশ পার, নান্দিক ক্রিয়া-গানা দেশন প্রকাশ পার, মানদিক ক্রিয়া হারাই তেখান ক্রিয়া পাকে, মানদিক ক্রিয়া হারাই তেখান ক্রিয়া পাকে, মানদিক ক্রিয়া হারাই তেখান ক্রিয়া পাকে, মানদিক ক্রিয়া হারাই ক্রেয়ার দেশন ক্রিয়া প্রকাশ প্রকাশ প্রকাশ ক্রেয়ার ক্রিয়ানালক, প্রকাশ (যাহা একই কথা) বন্তর প্রবাহরণ প্রকাশ প্রকাশ

ঞাৰ্ছ ভাবিষ্টা দেখিলেই দেখিতে পা-ওয়া সাহ্**বে** যে-

क्षानिक तक्नातिहर हुछ। थाका छारे।

गर क्षेत्वतं वर्ष विवकाश गठा, भछ। भटनव वर्ष विवकाशी चाँछ है। अक थे अनुनाक मिल पुर्वातनीटक निक्कि करा थाव उत्त वर्ष अक्षि करा विवध उत्त वर्ष करा विवध करा विवध करें। वर्ष भटना वर्ष करा वर्ष वर्ष करा वर्ष करा विवध करें। वर्ष करा वर्ष करा वर्ष करा विवध करें। वर्ष करा वर्ष करा वर्ष करें। वर्ष करा वर्ष करें। व

বিহারতঃ বল-মাবেরই কিনা বভগান বা পরিবর্ত-মান থাকা সাই। বস্তু আপনার ক্রিণা দারাই নিত্য-ন্তন বভগান কাল, অ-ধিকার করে। কোন বস্তুর যদি সমস্ত ক্রিয়া বন্ধ ইয়া যায় তবে তাহা অতীত কালে ভাবেশ করে, তাহা আন্ধর্কমান থাকে না। ভৌতিক বস্তর আকর্ষণ বিকর্ষণ প্রভূতি সম্ভান্ধ থাকে না; যাহা বহুমান কাল আধ্বনার ক বিরা অবস্থান করে না, তাহা কিন্তুর নিত্য-কাল অধিকাল করিবেপ নিত্যকাল অধ করিতে হয় :

বিকার করিতে পেলেই প্রকোক বর্জনান কাল অধিকার করা আবশক্ত-নিব্রনা দক্ষণ কালই করিছে। কিয়া ব্যক্তিরেক কোন নগই সাহ্যান কাল বা কার করিতে লাবে না- ভ্রমান কাল আধিবার করিতে লাবের ভালর কাল আধিবার করিতে লাবের ভালর মতা আধিকার কালি করিতে লাবের ভালর অধিকার কালি করিতে লাবের ভালর অধিকার কালি করে স্থানিক লাবের ভালর অধিকার কালিক লাবের না, কেন্দ্রা স্থান বালের অধিকার কালিক লাবের না, কেন্দ্রা স্থানিক বা বিজয় লাবের স্থানিক কালিক প্রিয়ার বা বিজয় লাবের স্থানিক বা বিজয় লাবের স্থানিক বা বিজয় লাবের স্থানিক বা বিজয় লাবার

ভূতীয়ত । গ্রাণার উচ্চেশ্যই ওশের অভিব্যক্তি। গ্রানসর একা<sup>ই</sup>ও ওণ—না ভাগর আপনার নিকট—না অন্য কাহারে। নিকট—-প্রকাশ-ক্ষম, ভাহা "আছে" বলি-লেও যাহা বৃধার, ভাহা "নাই" বলিলেও অবিকল ভাহাই বৃধার,—সে ভাহার-অভিত্য নাস্তিত্ব হইতে কোন অংশেই ভিন্ন নহে,।

অতএব "হস্ত" বহিংলেই ব্ৰাং যে ভাষার সত্য চিরস্থায়ী, ভাষার ক্রিয়া বর্ত্তবান, ভ ভাষার ভাগ প্রকাশ-ক্ষম। বস্তর শুধু কেবল সভা মাত্র পাকিছে পারে না—ভা-হাব সঙ্গে ক্রিয়ার বর্ত্তমানত, চাই ও গুণের অভিব্যাক্ত চাই, ভিনের একটি না থাকিলে ভিন্টিই বর্গে হইয়া যায়া।

ক্রেমালঃ!

ত্রা নাবর্ম-নাতি ব

প্রাথম অধ্যয়ে। ভিগ্ন সংখ্যা।

হিডায় প্ৰ**ন্তাব।** কোষ।

্রাত্রতে মাতুষের অন্যাগতিরণ হইতে। শুর্ম বিক্লান্ধ বাবহার হইতে বক্ষা করিবার

জন্য তেবং পৃথিবীতে অংশ্যা, অন্যায় ও অৰ সজা বস্তারের প্রতিরোগ করিবার জন্ম উব্য মনুষাকে এই জোধ রিপু দিয়াকেনী কিন্তু অন্যায়, অধৰ্ম ও অগতেরে দুয়ুন কো-ধের এই যে উদ্দেশ্য মনুষা তাঁহী বিস্মৃত হইয়া, আপনার স্বার্থের উপর সামান্য আ-ঘাত পড়িলে, কিমা কাহারও কোন কার্যা ন্যায় কাৰ্য্য হইলেও আপনার কিঞ্চিনাত্ত অগ্রীতি : হইলে ক্রোধে গ্রন্থলিত হুইয়া উঠে। অধর্মা, অন্যায় ও অসতেরে দখনার্থ," প্রতিরোধার্থ ও বিনাশার্থ, আমরা জেনার্থ রিপু পাইয়াছি; অভএব ধ্ৰন লেখিব কৈহ কৈশন অধর্মা কার্যা করিভেছে. কিন্সা 'আমাদিপের প্রতি বা অপরের প্রতি বা সর্মতা সমাজের <sup>4</sup>প্রতি জন্যায় ও সিথ্যাচরণ ক**রিতেছে,তথনই** আমরা ভাহা দুমুন ও এতিরোধ করিবার ্রনাশ করিব। **তাহাই জো**-ভের মথাল ব্যবহার, ভাহাই জোধের ঈশর-নিচিত্র উদ্দেশ্য পালন। এতদ্যতীত অন্য কেন কারণে যদি আমরা জোধ একাশ নার: ভাহা হইলে ভাহা দারা জোবের **অপ্**+ ব্যবহার ব্য়—জেলবের **ঈশ্বর-নিদিপ্ত উদ্দে**ল শের বিপরীতাচরণ কবা খনায়, অপর্যাও অসতোর দমন ব্যতীত অন্য কোন উদ্দেশ্যে আমরা কোষ একাশ করিব না, তেমনই এই উদ্দেশ্যে জুদ্দ হই-বার কালে আমরা কোমে কখন অভিভূত इरेव ना, जन्न हरेव ना - जनगाव जश्जा 🗷 অসত্যের বিরুদ্ধে জোখ প্রকাশ কালে জোখ আমাদিগের বলে থাকিবে, আমরা জেশধের বনীভূত হইব না; জোধকে জামরা নিয়-মিত করিব, ক্রোধ আমাদিগকে নিয়ার্ড করিবে না; ক্রোধকে আমর। পরিচালিক করিব, ক্রোধ স্থামাদিগকে পরিচালিত ক-तित न।। जनाह, जन्म, अ चमुका मन् করিতে থিয়া আসরা মান ক্লোধের

নিয়মিত হই, তাহা হইলে আমরাই সেই ् **अगठा ७ अनाह निवादन** काटन नगन्न-निकृष ও ধর্ম বিরুদ্ধ কার্যা ক্রিয়া ফেলিতে পারি এবং অসতোর প্রায় দিতে পারি। যিনি Cकार्यंत केश्त-निर्मिष्ठे छेएम्सा शालग यरतेन, তিনি অধর্ম অনাায় ও অসতা দখন বা গ্রাত जान। दकान छेटानर ना दक्षाप क्षाराम करतन না, অন্য কোন কারণে প্রন্য জোধের উদ্রেক इहेर्ड (मन्तूनका जात रथन टिनि की भट्टू-एम्हाना । हात्वाच १ काल कालन, ७ थन ७ किन कत्राष्ठ ८,८,१८४तः तुन्नी इ.च. स्ट्यम सी, ८,५,२,४४त षाद्वरण दिलागणम्या इहेशां १८७म मा. ক্রোধাতিশয়ে। অল্ল হই যা দিলিদিক্ জন্ম-भूमा अर्गम्म। । एकात लाकाम कार्मल ভালের লম্ম অশান্ত ও ছবিচলিত পানে। कार्ती आरोपन घणायह जिल्लारपून ;--িসংগ্রে তাকে গ্রেম্বর কাল্যান বিভিন্ন মারি এ বিভিন্ন করে প্রবাহত কোলে ল

িলাগ্রাক জেধাখিত গ্রহণেও ভার্য মন বিবাৰ ভাগু হয় না, মেনন তুণ সম্-হের উজা। সমূদের জল উভপ্ত করিতে भारत ना।"

অনায়, অবর্থ ও অসতা দ্মন বাড়াভ অন্য কোন কারণে কিন্তা অন্য কোন উচ্চেশ্য भारन जना (ज्यांच श्राकांच कांद्र ना, जरः এই উদ্দেশ্যে মুখন জোৰ প্রকাশ করিবে, তথন উহা দারা কিছু সার্জি জভিভূত হইবে ना-इशहे धरैंपात नियम, हेशहे अपटतत আছিল। কেবল যে অগরের কৃত অন্যায় অধ্বর্দ্ধ ও মিণাচরণ দমন জন্য আমরা ক্রোধ রিপু পাইয়াছি তাহা নহে, আমাদিণের নি-জের অধ্বর্দ্ধ প্রাকৃতি এবং অন্যায় ও সিখ্যা-চরণ করিবার প্রলোভন দমন করিবার জনাও আমরা ঐ বিপু পাইয়াছি। আগানিদের নিজের অধ্বর্ম প্রবৃত্তি দ্রানের নিগিতে রিপু

হইয়া পুড়ি, ক্রোধের মারা পরিচালিত ও সালের প্রতিও আমরা ক্রোগ প্রকাশ ক িশ্ৰকাম ছিন্তুই প্ৰতি, লোভের প্ৰতি, মোনের প্রতি, মদের প্রতি, মাংসর্য্যের ভিতি, এখন চি লোধের প্রতিও আ: ' জোধ প্রারণ করিয়া ভাহা দমন ক্লির - ইহাও धर्मात । स्टम, केप्यद्वत चांख्या । अरे निसम, এই হাজ, পাদন না করিয়া যে করিজ না-মান, কুজ ও নাচ কারণে জোল প্রকাশ কলে, তেল জেনবানলে প্ৰজ্ঞালিত হইয়া वि विडयमा, विवयमाविशीम ७ पिधिपिक-জ্ঞানপ্রত প্রত্রভারত শারীরিক, মান্সিক ও অপ্রোর্থিত সংশতিগ্রন্থ হইতে হয়। क्वांशन-यनार गरेटन किया क्वांत्वत्र रनी-ভূত হুইলে শ্বি)রিক স্বাস্থ্য রক্ষা হয় না। ে বৈর আবেলে সমস্ত শরীরে একটা অস্বা-ভাবিক পারিবত্তন উপস্থিত ২য়, ভাহাতে আ-(स्थत । एस्य मानि इरेता थादक । दमायन মালাৰ বৰ্মাক্ত হানুৱোগ, উন্মত্তা মুক্ত্ৰী, অপ্রার, রক্তপ্রাব, অর্জার্ণতা প্রভৃতি রোগ ষার আনোন্ত হইরা পাকে। নেনাবের তা-বৰ, জাবেগ সহা কারতে না পারিয়া জ-নেকে হঠাৎ মৃত্যুমুখেও পতিত হইয়া থাকে ৷ ১ লাগের বশীভূত হ্রলে শরীর অমুস্থ ও এডিক হয়, ইয়া ইডো**রোপ ও** হামেবিশার শারীরতাত্ত্বিদ্যাণ **যুক্ত কর্ঠে** ওচার কারা। থাকেন। আমরা এবিষ**্কোতা**-হাদিগে: কয়েত্ৰনেৰ মত নিজে উদ্ধৃত করিয়া দিলাম 🔐 জেনাধের বনীভিত্তা সেমন

<sup>\*</sup> Dr William Sweetser of America in his "Mental Hygicine" observes ;- "Hemorrhagefrom various parts as the nose, lungs, st much. and also inflammations of different organ; as of the brain, lungs; skin &c are been-constity brought on by severe fits of anger. Prousenis states that because on Haemopiesis or spitting of blood, and giolent pneumonia or influencetion of the langs, proceed solely from this passion". In another place the same authority says; "I have now and then met with

তিরর পদ্ধে আয়াস্থাকর, তেখনই স্থারীর ভাষা নানের অবনতিকর। যে ব্যক্তি কো

in the post of erysipelatous inflammation about the face and neck induced by paroxy the of passion Other cutaneous affections, as urticaria or nettlerash and herpetic eruptions, will often times-more particularly if there exists a disposition to them - be produced by the same cause." Again : - "Fainting will sometimes take place in violent anger, and, in occasional instances, the system being unable to react under the intensity of the shock, life has yielded almost as to a smoke of lightning Again, "Anger semetimes proves fatal, the severity of its shock at once suppressing the section of the beart, or, as has occasio ally happened, causing an actual rupture or this to an or some of its large blood vessels. play, hemorrhages, convalions or other grave affections may also succession it, speedily terminating existence." Again "The fluids of the mouth may, under the influence of anger, "acquire poisonons qualities". Dr Broussais, a distinguished physician of France temarks; -"Angerimparts to the saliva poisonous qualities, capable of provoking convulsions, and even madness, in those persons bitten by a man agitated with transports of it." Elsewhere the same authority says; "I have often seen diarrhoca, colin and other disorders of the digestive organs, caused by sudden fits of passhe. '. Dr Y. L. Nichols says ; - "Anger is a facto health. Every exhortation to the exereise of the christian virtue of charity is an exhortation to health." Again; violent emotion proves in cortain cases a caus of insanity or death." Dr Amariah Brigham observes; "Who is there that has not felt the influence of mental agitation in destroying the appetite and deranging digestion. and thus producing dyspensia for a shorttime." Dr Beautoont says, "When the mind is agitated by anger, the time of digestion is prolonged." Dr.Robert James Maner writes; "Habits of control in matters of ensation and passion is of the highest importance on account of its health preserving power." A distinguished medical authority of Europe has recorded the following opinion on the influence of anger on bealth | Anger destroys the appetite and checks or disorders the functions of

PITETRE BREST MEN LENGTE BE প্ৰিত হয় বিশ্বিশ্বৰ হৈ কৰিবন্ধা বাহি ्कान विश्वताहे यम मिनिहें के विश्वताही का স্ত্রাং শিকা করা, কোন একটা করো-ব্যতির উৎকর্ঘ সাধন করা, ভাহার পাঞ্চে অসম্ভব হইয়া উঠে। যে জেবের ধনীভুত হয়, সে নর্বাপেকা আত্মার বিশেষ ভর্মতি माधन करता (दागरे आणात धर्मा, दश्रामी আত্মার স্বাভাবিক অবস্থা, প্রেমই স্বাস্থার काथ **८** स्थान विद्याधी: উম্ভির অমুকুল। অতএৰ আন্ধার উঃতিবও বিরোধা 🔑 ভৱে নায়, ধর্মা ও রতা রক্ষার জন্য আমরা শান্ত ভাবে অবিচলিতমনা হইয়া যে জোধ এক কাশ করি, তাহার উদ্দেশ্য মহানু বলিয়া ভাহ আত্মার কিছুযাত্র অবনতি সাধন করিছে পারে না। - কিন্তু নীচ উদ্দেশ্যে এবং ছুছ বারণে ক্রুদ্ধ হইলে আস্থার পৰিক্রতা শান্তি ও মাপুর্য্য নপ্ত হয়, এবং জোধান্ত হইয়া মনুষ্য যে সকল গাহিত ও ধর্ম বিরুদ্ধ কার্য্য করে তাহাতে আন্তা ঘোর দুর্গতি প্রাপ্ত হয়।

প্রাম্পরে সহান্ উপদেশ এই দৈ কেবল ন্যায়, ধন্ম ও সত্য রক্ষার জন্য ক্রোবে অভিভূত না হইয়া, অন্ধ না হইয়া ক্রোব

digestion. Let one receive a provocation in the midst of his dinner, and the food at once loses all its relish for his pulate. Various morbid offices of a more or less grave and lasting character, may also succeed to intense anger. Thus pulsies, convulsions, epilipsey and missis are among its occasional consequences. Violent anger or ungovernable temper as we sametimes find it expressed holds according to the reports of different Lupatic Asylmas, prominent place among the causes of fusinity. Raying madness is the form of insunity which most dequently resears from this cause themselves and missis according to the cause of the cause of

প্রকাশ করিবেক; কিন্তু ইহার অন্যথা করিয়। যদি ভূমি কো**পন-সভাৰ ও জোবের ব**শীভূত . হও, তাহা হইলে **শ্রার মন ও** আত্মার তুৰ্গতি প্ৰাপ্ত হইয়। তোমাকে নানা কট্ট যন্ত্রণা ভোগ করিতে ইইবেক। বলিভেছেন;—

"ক্ৰোধং হিছা ন শোচ্ছি।"

"ফোৰ পরিভাগে করিয়া শোচনাশুনা हरेदक। " य वाकि कार्यत्र वनीपून, কোধ-পরাগন খ্টয়া যে বাক্তি জন্যায় ও বর্দ্ম বিকন্ধ কার্যা করে, ভাছাকে অধ্যত অনু ন্দেচনার পরিতপ্ত হইতে হয়। ক্রোব-প্রায়েশ नांक स्थ - नांड इंडेटड सहे इंडेग्रा जूपाइ ासनः ८५१५ १८८। **धरे जन**ारे डाक्र श**र्क** चें जें हमेगातः ;

"এজনল হৈ মা ন শোচ্ছি "

বোমার্যে বলিতেছেন ;—

े के महाजारे १, हूं महरामा के दह भिक्षि सिम्प्रहाँ है।

"কাম কোনতে সংখ্য করিয়া সমুদ্র গৈৰি তাতে ১লেন।" একলাভই, ভানের সাধনার । ক্রিয় । জাক্র যদি কাম তেলা। সংখ্য করিতে না পারেন, তাহা ইছলে তিনি ঐ মহাসাধনায় সিদ্ধিলাভ করিতে পারেন ন।। কাম কোধের ব্নীভূত হইলে তিনি পরব্রফোর পাবতা নিয়মের বিপরীতা-চরণ করেন, এবং তজ্জন্য ক্রমশঃ ভাষা হইতে मृत हरेट मूरवर्गगंत्र। शर्फन। এই জना ভ্ৰাহ্মধৰ্মে উক্ত হইয়াছে;

"कामद्वास्त्री कू मरममा उत्तः निक्तिः नियक्ति ।" ভাক্সপৰ্য বলিতেছেন;—

"चाकारभनं बराय कामग्"

"অ্তেট্রের ছারা জোগতে জয় করি-বেক।'' বদি কেহ তোমার অনিঔ ও অহ-বের কারণ হয়, ভাষা হইলে: তাহার প্রতি कृष ना रहेबा जाराहरू क्या कुतारे धटचात নিয়মানুযারী ও কারের অভিপ্রেত। এই ष्मा आकारका उन्हान प्रियोद्धन,

"बद्दक्राद्यन ब्रह्मदे देकायम् ।"

• প্রাক্ষণ**র্মা** বলি**ড়েছেন** ;—

ক্ষিমকেট্রের বিশে যদ্য **তেন লোক**জরং সিওম্। "

''কা**ম জোৰ যাঁহার ব্**শীভূত তাহার পার। তিন লোক **জিড**়হইয়া**টে**।" গিনি কাম ও জোধ রিপুকে বশীভূত করিতে পারেন,যিনি ঐ রিপুদ্ধ দারা কথন অভিভূত, বিচলিত্যনা ও বিবেছনাধূন্য হয়েন ুনা, যিনি া ঘুট রিপানে প্রশে 🗐 খিয়া উহাদিনের ঈখর-নিদ্দিষ্ট ধ্যাধু ব্যবহার করেন ; তিনি আহাতে প্রভাত করেন। তিনি ধৰ্মবলে, পৰিষাৰ, বলে, ত্ৰেফাৰনে বলী হইয়া লিলোক ছহার নাম অভূম বলশালী। হবেন। এই জনা ভ্রাহ্মগলে উজ্জ হইয়াছে; -

শিক্ষাৰ্যত্ৰ **মুখ্য বিজে** সংগ্ৰহত কৰা ক্ষাৰ্যত জিল্লা কৰ

ব্ৰাহ্ম অনুমায়, অনুষ্ঠাত অসত, দল্ম একং नहार वर्ष ७ महाराज तक । ७ रेफ रेन जना ক্রোয় প্রকাশ সাইবেন, এন্য কেনে ফারণে ব উष्म्टला कुछ इंदेर्यन मा ; जिन वहे स्म-२९ डेटम्ट्ना रक्तान क्षतान कति किया ভগন জোধে বিজ্ঞানত হইবেন না, কথন জোবে অভিভূত **হই**য়া আৰু হাৱা ও স্থান-বেকীর ন্যায় কার্য। করিবেন না। জাক **ब्लाद्यत अहे**कल नेयत्-निक्किष्ठे ७ १**र्मानिक** ব্যবহার করিয়া ধর্ম-পর্যে বিচরণ করিবেন. পরবঞ্চের প্রীতি-ভাজন रुरे (तन। আকাধর্ম গ্রহণ করিয়া, আ**লা বলিয়া জগতে**র নিকট পরিচয় দিয়া, ক্রোধ রিপুকে এইরপে **জ**য় করিতে না পারেন, জিনি ত্রেক্সিবর্ণোর ও আক্ষা নামের অব্যাননা ক্রিরেন, তিনি কখন জ্ফুত রূপে ত্রাকা নামের উপযুক্ত হইতে शास्त्रत ना १



### ব্যাখ্যান-নঞ্জী।

শ্রীযুক্ত প্রধান আচামেরে াখ্যান-

ज्लक भूगा।

网络证明 有时期代回 1

(अवि काम प्रतिस्थित का प्रवास **र्थत )** 

স্বারে পালেন সেই এটু দ্রাম্য । স্বার এক্স নাজ্য দ্বার আশ্রেষ। ফিছু করি শ্রীতি দান, কাব ঠাই শ্রীতি চান, বে এন ১ পুরুষ দেখ তাঁহার আশয়॥

অমা থাব গাঁলে মাছি জানিবারে পারে।
স্মেন্ন-পুজিতে ভাঁলে প্রাভিন প্রারে।
কি সম্বন্ধ ভাঁলে সন্দে, ভাবিয়া লা গাল মনে,
ভারতির ছাডিয়া লালা থাকে একেবারে॥

তে মান্ব ! ০০বে কৈ ভালের মাত্র !
ভেলে দেখা কে লামার প্রতিলে ময়ন ।
ফাদি তব পর্যা তাব, ব্যাহা হ'তে । বিজ্ঞাব।
কো লোমাত্র উল্লোখনে করিল কাগেন ॥

ে আসি হৃদয়ে তথ যাচেন তোমারে।

শিশও বাদ দাও তথা হাদর আয়াতেই।

হৃদরের কালবাদা, বাদ ওগান যত কাশা,

নিবেদা গ্রামান গুরু উলচ্যতে ।

জানিতে পিডা উর কেন্ডের সপ্তান।
ভাকিতের সভার কোলে হতে সাক্ষণন।
ভাই ভিনি ক্ষেত্র সাক্ষণন।
ভাই ভিনি ক্ষেত্র সাক্ষণন।
ভাকি ক্ষেত্র আহলান।

বিশ্বলিভা তথা করি জে ্ছ গ্রামারনার ভাকেন তোমারে বলি অমিয় বচন। হে আত্মন্ নে আহ্বান, মা করিও ঐত্যাখ্যার তার ক্রোড়ে রাও, লও হাছার শরণ গ

দেশ তাঁর কত দ্বা তোশার উপর।
দাঁড়ায়ে হৃদয় দারে চা'ন অবসর।
কবে ভূমি ভারে ল'বে, একান্ত তাঁহার হ'বে,
তাহারে করিবে ভূমি হৃদয়-ঈশ্বর।

কৰে মোল কেন্তা শিরা বিষয়ের কাম।

চাহিব যাই ১ তাঁর অমৃতের বাম।

কবে তিনি দল কবি, দিবেন চরণ ভরী,

লইয়া আগন কোলে দিবেন বিশ্রাম।

হুই পথ সন্মুখেতে আছতে আছার।

মঙ্গল ঈশ্বর পথ কণ্টক সংশার।

থাগীনতা আছে ভার, উত্ত শথে চলিবার,

থিকু সেই রক্ষা করে নিজ অধিকার,

বেছে লয়ে শ্রেয়ঃ পথ ইচ্ছার আপন।

যে ত'হে চলিছে প্রেমে হইমা মগন ১

যে আপন দেহ মন, স্থাদর সর্বাহ্ম দন,

তারে দান করি করে সফল জীবন ॥

মন্ত্র ইইরা তাঁক পাথে না চলিবে। নিতে পাব প্রাতি ভারে তরু নাহি দিবে। স্থানর প্রাম তাঁক, ভুঞ্জিতেছ অনিবার, নে প্রোমের প্রতিদান কিছু না করিবে।

বাঁর দান—প্রীক্তি কড নহে বনিবার।

্বে দান—প্রীভিরশশাধ দিতে সাধ্য কার।

মা আছে ভোমার—ভাঁর, কিবা তাঁরে দিবে আরু,

এক মাত্র আছে প্রেম তাঁরারে দিবার।

নিরন্তর সেই প্রীতি রক্ষিত্বে ভোষার। থাকিবে অনস্ত কাল বাহার ছারার। বিনা পেরে তা জুলিলে, ভাবে জুনি না স্থানিলে, সূত্র মূলে পল কেন আপন হেলার।।

তাঁর প্রেমে মজে স্থা সাধুর হানর।
তাঁরে আশনার বলি ভক্ত চিনে লয়।
করে স্থা অভিলাদ, তাঁর সহ সহবাস,
একান্ত অধীন হয়ে সাঁর কাছে রয়।

কেন আত্মা চার ভাবে—দেশহ নিদান।
ক্রিনর মঙ্গল নাহি ভাঁহার সমান।
ভিনি প্রেম সম্পূন্দ, প্রিত্তা দ্যাদন;
যে দেখে ভাঁহারে তার মুঠ্ফ মনঃ প্রাণ।।

কিন্তু দেখিবারে উংরে পায় কোন্ জন।
পবিত্র হইতে দার একান্ত যতন।
শুভ ইচ্ছা ধর্ম বলে, দলে প্রানোভন দলে,
আত্মার নির্নৃতি শান্তি পায় অনুক্রণ।।

হোক শুদ্ধ ভাব গতি ভোষার কেবল।
ক্ষাত্মপ্রাদাদের জ্যোতি হউক উজ্জ্বল।
ভখন তাঁহার প্রতি, হইবে লোমার মতি,
তাঁহার পথের বিশ্ব কাটিবে সকল।

যবে আত্মা পিতৃ-ভাবে তাঁছারে দেখিয়া, তাঁর প্রেম লয়ে আদে সংসারে কিরিয়া ভবে জাতৃ-প্রোম-ভরে, সবে আ্লিকন করে তাঁর প্রিয় কার্য্য করে তাঁছাতে মজিয়া u

ভার প্রেম তার ভাব হাদয়ে পানালে, ভারার জগৎ কিবা মঙ্গল সলিলে। নির রাম স্থানী দান, বিভক্তর অমুধান, করেন ভক্তবার প্রোমানকৈ মিলে।।

ক্রেমশঃ

#### नमारमाज्याः

कोरानत महातरात । बहे भूक छिपूछ वाद्य नोहाकमूल मूरशालीकारमूत्र वट इस्ताक হ**ইতে বস্তা**যায় **অসু**বাদিত **হুইয়াছে।** তিনি অন্তের ভূমিকায় লিখিরীছেল যে এই এছ এক জন একাৰ্যি ছারা সংস্কৃত ভাষায় বচিত হয়। পরে চীন দেশীয় বৈদ্যো চীন ভাষা তৎপরে একজন ইংরাজ পরিব্রাজক চীন ভাষ হইতে ইংরাজীতে তাহার অনুবাদ করেন। আমরা এট গ্রন্থানি আদ্যোপান্ত পাঠ করিয়া অতিশয় সম্ভন্ত হইলাম। খুবকদিগকে গাহঁতা নীতি শিক্ষা দেওয়া এই পুস্তকের উদ্দেশ্য। কিন্তু সচরাচর যেরূপ নীতিশিক্ষার পুস্তক দেখিতে পাওয়া যায় ইছা তাহার ন্যায় শুক নহে। ইছার মধ্যে গ্রন্থকারের বহুদ্শিত। নুকাদৰ্শিতা ও ধর্মাবৃদ্ধি অতি উজ্জ্ব আ-কাতে আছে। কোন একটা বিষয়ের দোঘ বা গুণ এমন তীব্ৰভাবে দেখান হইয়াছে যে তাহা পাঠিমাত্রেই ানের একটা অবস্থান্তর হয়। ইহাতে নীতির নীরসতা বা ভঞ্জ নাই। প্রসাঢ় চিন্তা তলস্পর্শ করিয়া নাতির যে রস-টুকু বাহিন করিতে পারে ইহাতে তাহারই আস্বাদ পাও্যা যায়। ফলত বন্ধ ভাষায় যে, সমস্ত সারগ্রে প্রতক প্রণীত হইয়াছে তমধ্যেই ইহার স্থান। ইহা প্রত্যেক বিদ্যা-লয়ের ভৈচ্চ ভোণীর বালকদিণের হওয়া উটিউ ৷ এবং গাইস্থা নীতি শিক্ষার নিমিত্ত প্রত্যেক গৃহত্তরই ইহা পাঠ করা हेरात प्रमुगान विलक्त ७ शाक्षन इंदेशार्ड । वायता मिलकमन वाद्रक कप-महिरा किया कहिए छिनि

## ত ভ্ৰেম্বারনী পত্রিকা

এই প্তক্রানি প্রকাশ করিয়া ছনসমাক্রের প্রভূত কল্যান সাধন করিয়াছেন।

শ্বী আগামী দ কাতিক ও ক্রবার "বালী-ধর্মন সমাজের" ততায় সাজংগারক সহোৎসব হইবে। এই উংসবে তোগ দিবার জনা সূর্বন সাবারণকে নাল্যে আক্রান করা যাইতেছে। শ্রী হারালাল মুখোপাধায়

मण्यामक ।

৯ কার্ত্তিকশান্থার কালনা ত্রাক্ষদমাজের অন্ত:দশ সাম্বংদারক উৎসব হইবে। পূর্ব্বাঞ্চ পা **ঘটিকা ও অপরাফ্নে** ৭ ঘটকার পর উপা-সনাদি কার্য। আরম্ভ হইবে।

> শ্রী বিহারীলাল বন্দ্যোপাধ্যায় সম্পাদক।

আগামী ৩০ কার্ত্তিক শনিবার বেছালা ব্রাক্ষসমাজের ছাতিংশ সাদ্ধংসরিক উৎসবে অপরাছে তিন ঘণ্টার পর ব্রাক্ষধর্মের পারা-য়ণ হইবে এবং সন্ধ্যা সাত ঘণ্টার সময়ে বিক্ষোপাসনা হইবে।

> প্রীরীর চট্টোপাধার সম্পাদক।

> > পুস্তকাল

ত্রাহ্মধর্ম্ম এছ প্রকাশের মূ

ত্রাক্ষধর্ম্ম প্রচার

যন্ত্রালয় গড়িত্ত

দাতবা

সমষ্টি

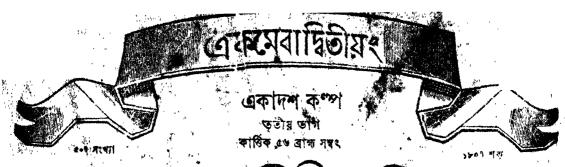
#### তার বায়।

সাধান ও শাবণ ছাল সম্বং 👟।

তাদি ভ্রামানমাজ।

আস	• . •	***	acton 9
পূৰ্ককার	া হিত		২ <b>৮৮৯।•/</b> ৬
गगष्ठि ्	***	***	৫/১৯৮৫/৩
ব্যয়	•••	***	ু ২৬৩৬।১/৩
जिएस -	* 40004		

	,			
Surenty	3 321			
शक वार्षि ।				
अभग्रशि तित्वसमाथ शक्त	50,			
श्रीयुक्त तमनीतमाइन हट्डानासाम	2			
" देवकू क्षेत्राच रतन 🎉 😤	5			
*., वाजयक्रायने चेन्न 🖑	A) o			
,, बीनाथ गिय	· · · · · · · · · · · · · · · · · · ·			
🧢 🔑 কেওয়োহন বিশাস (উনাও	) / · · · · · · · · · · · · · · · · · ·			
,, হিতেজনাথ ঠাকুর	4,7			
,, व्यक्षत्रहक्ष कर्मकाव	٠, ١			
वार्रशमिक भान।	1 S 1			
শ্রীনুক্ত রাজ্যলদাস হালদার	1 600			
, हिट्डिक मार्थ आहुत	200			
, यह्नाथ <b>म</b> िशाशाय	2000			
पांनागात पान आधाः	3/3			
e e	. >>>1d>			
তত্ববোধনী পত্রিকা 🐪	abyo			
পুত্তকালয় 🐧 .	. 89h/e			
यखानम 👈	>0.ble/s			
গড়িত	್ ಅವಿಕ್ಕಿನ			
ব্রাহাণর্শ্ম গ্রন্থ প্রকাশের মূলণ	- 1 A			
্রাক্সধর্ম প্রচার	200			
পাতব্য	हे विश्वादिक			
সমষ্টি 🖁	\$ 10cm			
ৰ্যয়।				
ব্ৰাহ্মসমাজ	٠٠٠ عموارة			
তত্ত্বোধিনী পত্ৰিকা	্ব ১৩৯।১৯			



# ञञ्जवाधिमें পिर्विका

इश्वराण्यासिद्दमप्रधानोद्वात्यत् विधनामा अविदं मझ्येसस्य ज्ञात् । तदय नित्यं ज्ञातन्त्रला श्चितं सत्यविद्यविकसे यादितीयम् मञ्जीवापि मर्खानियम् सङ्गीत्रयम् वित् सर्व्यं शक्तिसद्भव पूर्णक्षप्रतिसन्ति । स्वस्य तस्यैनोपासस्या

पारिवक्कोडिक्के श्रमस्यवित् । तस्मिन् मानिस्यास प्रिवकार्या भाष्यम व तद्यासमस्य ।

### কানি বামস্থাজ।

৫ আনিন ববিবার ৫৬ ব্রাক্ষা সক্ষঃ। ভাষাবিধান উপদেশ।

প্রমাত্মা পরিপূর্ণ আনন্দ সরূপ—তিনি ক্রত্বনা কিছুই চাহেন না, তাঁহার प्रिकेश याश हारे मक्तरे डाँशा জাবাল। অসূর্ব ;—তাহার উনতিব ু**ত্মান্ডকা আকাশ** ছাড়াইয়া উঠিতেছে কিন্তু **শক্তি भ**तीत्र **गरन**त मीमा लक्ष्यन ক্রিতে পারিতেছে না—ইছাই জীবাত্মার অপূর্ব ; ইহাই তাহার সকল তুঃথের মূল। জারাস্থার যদি ঐ উন্নতির আকাজাটি না প্রকিত তবে সে আপনার অপূর্ণতা অনুভব ক্ষিত না-পশু-পক্ষীর ঝায় মোহবর্শ্মে আ-**ইত থাকিরা স্থাধে জীবন অ**তিবাছন করিত। राष्ट्र-शकी । जन्न कीत, मनूषा ७ जन्न जीत; भ अ- शको चलूर्व कीर वटि किस जलूर्व जाया नरर अ बना छोहाता आश्रनारमत अपूर्वण जानबाहा अन्तिक करत ना, -मकुशा जानूर्ग बाता, वह बनारे मनुशा चालनात कर्नण बार्वात छेनामक करन। कोनाकात केंद्राजत

বালা অবশা অভারে ভা**ন্তরে এমন কিছু** উপ-লবি বাবলাছে, যাহ**েত তাহার উ্তরতি স্পু**হা উন্নাগত ভ্ৰমাছে—শাহাতে শৈ নানিতে পারিয়ানে পে, তাহার উন্নতির অন্ত নাই,— খনস্থ জ্ঞানের দিকে—অনস্ত আনন্দের দিকে —অনন্ত জাবনের দিকে—তাহার দৃষ্টি পড়ি-য়াছে; প্রথাত্মার স্লিধান উপদ্ধি করা-তেই জাবাত্মান এইরূপ স্পৃহ। উদ্দীপিত **रहे**श्टरं, - सेश्टरं कौरामा लक्षक कें-क्यं क्रिया **यगुगाः - पाश्चष् - ना**च क्रि-য়াতে: প্রধান্তা প্রিপূ**র্ণ আনন্দ্রিরপে**, তিনি আগনার জনা কিছুই চাহেশ না-তিনি জ বাহাার প্রের সঙ্গী ওক্সাস্থ তিনি कीवाञ्चात भक्षन हाटश्न-काश्ननाटक किया জীবাত্মার অভাব মোচন কব্লিতে চাহেন ;— মাতা, সেমন জোড় প্রাণার্থী করিয়া গুন্য চুকুৰ শিশুৰ মভাব শোচন কৰে পুর্যাছা নৈই ক্লি আপ নাৰ প্ৰেম চালিকী ক্লি-অ-য়ত দিয়া — জ্বাস্থায় অভাব মোচন করেন। পরমাত্মার শীক্ষ্ণী শক্তিতে সমস্ত জগৎ বিধৃত রহিয়াছে—উন্নি শক্তিকে 🔭 হই প্রতিরোধ কৃষিতে পরি না । জীবাতা যথন

श्रीविधि यंगिक गर-

ক্ৰিৰ বদিও আমার অভাব মেচন ৰবিতে অনমৰ্থ, তথাপি যিনি আমার প্রভু তীহার শক্তি মহান ও পরিপূর্ণ, তিনি আমার সমস্ত অভাব মোচন করিতে পারেন, তিনি আমার আতার অভ্রত্ম জারা – আমার প্রাণের প্রিস্তম বন্ধু-গার আমার কিম্বের **प्रूःथ,** किरमत ५ स्रोत,— इन्हें हि यथन सन सन्दर्थ তথন সূথে শোধ আর িছাকে অভিজ্ত করিতে পারে ন। সংগারের দুংগ শোক হইতে অস্পৃতি থাতিকে চইলে তাহার অনার্থ উপায় পর্নাজার সংহত আছোর যোগ সং-স্থাপন বরা। বেং বনেন গ্রমাত্রা অতি দুৱে হলে আছেন - াহ বলেন যে, তিনি আনাদের জ্ঞানের ফাতাত ত্যসাজ্য প্র-দেশে ওবস্থিতি করিতেছেন। তিনি আন ছেন—, গ্রু মুকল সভাের মূল মতা— জ্গচ আমাদের জ্ঞান শুলার সহিত তাঁহার কোন मुल्लाकं बाहे,—यून मरजात मिरु मकन সত্যেরই সম্পক আছে—শুদ্ধ কেবল আমা-দের জ্ঞান ৫৯,১খন সহিত কোন সম্পর্ক নাই! কি আশ্চেশ্য কথা। কেহ্ বলেন যে, ভাষার স্থ জগতের সহিত দিনি দ **র্কাংশে লিশ্ত** চইয়। \ রহিয়াছেন—এগৎই তিনি ৷ আমাদের অপূর্ব আরা যথন শরীরে বদ্ধ থাকিয়াও শবার হইটে নির্লিপ্ত থাকিতে প্রারিলে আপ্রত্যক কতার্থ মনে করে— তথন পরিপূর্ণ পরমারা বেঁ জগং ইইডে নির্লিপ্ত না খাকেবেন- জগতের স্থ্য তুঃখে জড়িত ২ইয়া, পাড়বৈন ভুঞ কথা কথাই नहर। छेशनिमार गरिष्ट-

> কুৰোদ্ধা দক্ষোক্ষ্য চকুৰ লিপাতে **চাকুৰৈবাহ** দোৰেঃপ্ একস্থণ দক্ষিত্ৰভাৱবা**দা ন লিপাতে লোকহঃখেন্**

সর্বনিকের চক্ষু সূর্ব্য যেমন দৃশ্য বঞ্চ-সকলের দোষ ধারা নিপ্ত হ'ন না নেইরণ বহিৰ্বাপী একৰাত লক্ষ্যুম্ভে অনুচাৰী কোৰে তুঃখে লিপ্ত হ'ল নান

পরবাত্মা কোন আন্দিন্ত ৰাখ্য নাম্ব আছেন, এ কথা নিতাৰ বানকে বং তিনি অনির্দেশ্য জ্ঞানাতীত এদেশে সাহের এ কথা আত্ম-জ্ঞান-বিহীন জুড়-বিজ্ঞাৰ কিছ বুদ্ধির সিদ্ধান্ত; তিনি অগতে লিপ্ত ইইয়া রহিয়াছেন, এ কথা নিতাতই স্বাদ্ধী জড় বুদ্ধির কথানা পরমাত্মা সর্বত্ত থাকিয়া সকল হইতে সর্কতোভাবে নির্লিপ্ত 🗝 🐃 মাদের আত্মা যেথানে আছে, পরমান্ত্রাও সেখানে অবস্থিতি করিতেছেন, কিন্তা কিন সর্বতোভাবে নির্লিপ্ত, – তিনি যদি শ্রামা त्नत्र नगत्र मध्भाद्य निश्च रहेशा शिक्रदेन তবে কে আমাদিগকে সংসা**র-সমুদ্র হইতে** উদ্ধার করিবে ? অটল অপরিবর্ত্তনীয় নির্লি**ও** পরিপূর্ণ আনন্দ স্তরূপ পর্মাত্মা শো্কবিহর্ল অণূর্ণ আত্মার সঙ্গে সম্পেই অবছ্কিতি করি-তেছেন—এইটি আমরা দেখি না ধলিয়াই অামাদের যত তুঃখ-- ঘত শোক-- ঘত ঘ-ত্রণ।। অভাব ময় অপূর্ণ আত্মাত্রিবং প্রারি- এ পূৰ্ব আনন্দ-সূত্ৰ**প পর্যাত্মা একত্রে<sup>†</sup> অবস্থিতি** করিতেছেন - অথচ প্রমান্থার সহিত জীবান श्रीत नाष्ट्राहर नाहे- व कि दूश्य। जी বাত্মা তবে কিরুপে সুস্থ থাকিবে—কে. তাহার অভাব মোচন করিবে—ভাহার আনন্দ কোগ। ছুইতে আদিবে! তুই মেঘের এক-ু টিতে তাড়িত পদার্থ পূর্ব মাত্রায় মাছে--আর একটিতে ভাহার অভাব আছে তিত রের মধ্যে বোপ নিবন্ধ ইইলে ডলে ভো किछी सारवत अलीव श्रम वर्षा जाना कान गुथ विद्याण्डिक रहेगा जिठित हिस्स নেৰে যুদ্ধ ভৌতিক খোগ, আত্মাতে প্ৰ নাত্বাতে অতীক্রিয় আধ্যান্ত্রিক বোগ टगर त्याद्य भीवाषात भारति PRICE HARIST SITTE

ত্বৰ শক্তির প্রভাব ব্যুবন করিয়া তাহার মৃত শরীরে জীবন করার করেন। চিমার আন্দর্মর প্রমাত্মাকে নিকটে পাইয়া বাঁ-হারা তাঁহাকে আত্মতে প্রেম-কর্মনে বাঁনিয়া রাথিয়াছেন, তাঁহারা কি অমুল্য স্পর্য-মণি করতলে প্রাপ্ত হইয়াছেন; নেই স্পর্শ-মণির দংস্পর্যে তাঁহাদের বিঘাদার্ককার দিবা আনন্দ-জ্যোতিতে পরিণ্ড হয়, তাঁহাদের জড়তা চেতনে পরিণ্ড হয়, তাঁহাদের জড়তা চেতনে পরিণ্ড হয়, তাঁহাদের জড়তা চেতনে পরিণ্ড হয়, তাঁহাদের মণির সংস্পর্যে চিমায় আনন্দময় হইয়া স্থিবাতে আক্রয়াও ঈশরের অতুল মহি-যার অভাতরে বিচরণ কলে, তথ্যই দে বীত শোক হয়।

ছে পরমাত্মন । আনাদের ক্লিত হৃদ্যু তোমার দর্শনের জন। উৎস্থাক হট্যাছে, তুমি আমাদের আআতে আবিভূতি হও। তোমার চরণে প্রাণিশাত করিতেছি—ভূমি আমাদের আআকে তুংখ শোক ও ঘন বিয়াদ হইতে মুক্ত কর, তোমার চরণে স্থান দিয়া আমাদিক কুডার্থ কর।

🥰 একমেবাদিতীয়ং।

## উন্ত

निकिणिविसम् ध्वः जाशाजिक शर्य।

গঠ প্রাবশ্বাদের ভারতীতে পরিটিনিআন্তর্গ ক্ষাক্ষল
ভট্টালার বৈ প্রবন্ধটি লিখিয়াছেন দে সম্বদ্ধে
ভটিত্তক কথা আন্তিনা বলিয়া ক্ষান্ত
শীকিতে গারিতেছি না। ইহা বলিতে আমি
শাল্তিক বালাভিত খনে করি যে তিনি
আন্তর্গ প্রম সন্তর্গ বন্ধু; এবং
শাল্তিক ব্যালিভিত ভারা প্রতি আমার

गशि दशिक ना दकन, जिन वाहित्तव লোকের কটাক্ষের প্রতি কিছু মাত্র ভ্রম্প न। कविश्वा देशताल चार्कादिय भवेन ভाटक आल-নার মত ব্যক্ত করিয়াছেন ভাহাতে ভাহার যথার্থ প্রুষত্ব, প্রকাশ পাইরাছে। কার, কালে অনেকে ফেরূপ না ভাবিয়া-চিন্তিয়। একটা যে-সে দিকাস্ত জোরের সহিত স্থাপন করিয়া লোক**সমাজে**র বিরুদ্ধে আপ-নাব পুরুষতের পরিচয় দেন, এ তাহা নহে। এই প্রবৃদ্ধটিতে তাঁহার, বছদিনের চিন্তা ও প্রাণগত অনুরাগ স্বস্ট্র মুদ্রান্ধিত রহি-য়াছে ঠিক ধেন তাঁহার মন প্রাণ অধিকৃতি ভাবে কাগজে উথনিয়া পড়িয়াছে,—ইহা-তেই তাঁহার ভাষা আরে প্রশার হইগালে: এমন চৰংকার ঝর্মরে' বাঙ্গাল। অতি অন্নই (भूषा यात्र ।

তিনি যে কি চক্ষে কমট্কে দেখিরাছেন-অনোরা পাছে সে চক্ষে না দেখে—
ছাই তাঁহার তয়, ও সকলেই কমট কে সেই
চক্ষে দেখুক এই তাঁহার মনের আগ্রহ,
এই-তুইটি ভাব তাঁহার প্রবন্ধাটর প্রাণ;
যার মাহা কিছু তিনি বনিয়াছেন তাহা
তাহার এই যে প্রগাড় ভক্তি—ইহার প্রতি
তাঁহার এই যে প্রগাড় ভক্তি—ইহার প্রতি
কাহারও কোন কথা চলিতে পারে না;
কিন্তু তাঁহার সেই ভক্তি তাঁহার চক্ষের
সমুখে এখনি এক ব্রনিকা ফেলিয়া দিয়াছে
যে, প্র-পক্ষের ধর্মের সার-আদ্র্য তাঁহার
ফক্ষ্ হইতে ঢাকা পড়িয়া নিয়াছে। এই জনা
আমরা সে আদর্যটি তাঁহার নিকট খবানাধ্য
উদ্যাতিত করিয়া দিতে প্রয়ান পাইতেছি।

তিনি এইটি বিশেষ করিয়া দেখাইয়াছেন যে,পরলোকের ক্লেশ-ভায়ে ও স্থ-ভালোভানে ধর্মকার্যা কর। পিতালাভাকে ছাড়িয়া বনে যাওয়া ক্মটের অভিপ্রায়-বিক্লা ইহাতে প্রাক্রার্যার ক্লা হইতেছে প্রকার্যার ক্রেই

बा कन-त्नथक श्वादन शादन न्या हेरे विन-संदूष्ट्र देश, जात जात धर्म्यत मात्रमन्त्र छेश। ছাড়া আর কিছুই নংখ। আর আর ধর্ম্মের কথা বলিতে আনি অন্ধিকারী কিন্তু হিন্দু-**ংশ্রের সারাংশ—**এক্রেপ্স – আমর। **যত**টুকু ব্ৰিয়াছি, ভাহার আদর্শ উল অপেকা অনৈক উদ্ল। কমানির প্রাত ভক্তির আতি-শ্ৰেয় কুষ্ণকৰত বাতৃ ভাষা দেখিয়াও দেখেন নাই। আমানিগনে যে তাহা তাঁহাকে (नथाইशा भिए० १३९ ७८६ — हेश हे **आएक**-পের বিষয়। ভগনদগীতা প্রা<mark>ভৃতি উচ্চ অঙ্গের</mark> ধর্মনান্তে ইহা ভুয়োভুগঃ উণাদপ্ত হইয়াছে ষে স্বগলোচে কিছা নরকের ভয়ে কণ্ম করা কেবল নাম মাত্রেই ধর্ম ;— ঈশরেতে कर्षाकलाइ मन्नाम शृक्षक क्खेरा तात्व কর্মা করাই প্রকৃত ধর্মা। আমরা শাস্তা-দির সার সংগ্রহ করিয়া ধর্মের যে আবর্শ পাইয়াছি, তাহা নিম্নে দেখাইতেছি; কম-रहेत धर्मात जामर्ग कि, छाहा मनि कृष्ठकमन दाद जागामिगरक न्नाडे कित्या एमणाहेया (प्रम, -- (प्र धर्मात्र क्षत्र क्षत्र कि-- यम्ब कि--তাৎপৰ্য্য কি-তাহা যদি খুলিয়া বলেন, ভবেই আশা করা ষাইতে পারে যে, পাঠক-গণ নিশ্ব-প্রদর্শিত আদর্শের সন্থিত তাহাঁর তৌল করিয়া নিজ নিজ সিদ্ধান্তে উপনীত इहें(तन ।

মনুদ্য তিন ভাবে কার্যা করিয়া থাকে; প্রথম, প্রকৃতির বশবর্তী হইয়া; দিতীয়া, ব্যাথের উদ্দেশে; তুর্গার্য, প্রয়াথের উদ্দেশে।

প্রতির অধীনে কার্য্য করা এইরূপ,—
বেমন—কোন শক্তি কোধন-ফভাব, কোন
বাক্তি লোভা, যাহার যে প্রবৃত্তি বলবান
অনেক সময় তাহার উত্তেজনার বলবভী
হইয়া দে নিজের যার্থ পর্যান্ত জলাঞ্জনি দিয়া
থাকে। লোভী বাক্তির কার্য্য সমুক্রের কেন্দ্র

বা প্রধান-প্রবর্ত্তক কোড। তেলাধী বালিকর কার্য্যের প্রধান প্রবর্ত্তক ক্রান্থার ক্রোর ইত্যাদি।

এই তো গেল প্রবৃত্তি প্রথম সার্থ কি क्रभ (नथा घाउँक। बाहाता श्रार्थ माधन করেয়া **থাকে তাহারা উপস্থিত প্রায়তিকে** प्यन कतिया **य कार्या श्राह** श्राह रामन-কোন কার্যা-নিপুণ ভূতোর প্রতি জোধ হই-লেও স্বার্থের খাতিরে অনেক সময় ক্রোধকে দমন করিতে হয়, — অর্থ উপার্জনে প্রয়ত इहेटन ज्यानक मगन्न ज्ञान-नानगारक प्रमन করিতে হয় ইত্যাদি। প্রবৃত্তি-মূলক কাব্যের কেন্দ্র যেমন উপস্থিত প্রান্তর উত্তেজনা, স্বার্থের কেন্দ্র তেমান সমস্ত প্রভূত্তির সাম+ ঞ্জদ্য-দাধন, এক কুথায়—আপনার ভাল। এখন পরমার্থ কি তাহা দেখা যাউকু একটু অপেকাক্উ গুরুতর বিষয়,—এটি ভাল করিয়া বৃঝিতে ইইলে পূর্ব্বের এ বৃটি কার্যা-প্রবর্ত্তকের মধ্যে কি সমন্ধ ভাহা এক-বার প্রণিধান করিরা দেখা আবশ্যক র্থের প্রতি যাহাদের লক্ষ্য, কতক-না-কৃতক পরিমাণে এর ভি-সকলের দামঞ্জদা দাধন করা তাহীদের কর্তব্যের মধ্যে হইয়। পড়ে 🗕 সে माथक्षमा मार्गक दक ? ना वियम-तृक्ति । विवस বুদ্দি প্রবৃত্তির লায়ে অন্ধ নহে। অন্ধ ভাবে উপাহত প্রবৃদ্ধি চরিতার্থ করা স্থার্থ সাধন নহে, দীর্ঘকাল স্বাক্তলে আপনি স্থয় উপভোগ क्रिव देशरे शक्र आर्थ। এই नका मार्ग করিতে সিয়াই,স্বার্থ, পরস্পার-বিরোধী এরভি-म्करनत गर्धा मासक्षमा चालन करत ;-क्षेत्रन किळामा अहे श्रीन्त्रात विद्वादी चार्यत गत्भा दक शासक्षमा भारतः कतिदव ? शास्तिः শীর ভূমি কাড়িয়া **শুভ্রা আশার** স্বার্থ, গুসেই चृति नगरे**व अंशा छोराह यो । এই** पूरे शा-त्रेत गामक्षक त्र क्षिक वर्क क्षिते छ। हा

कार्य, त्र भारतात वार्थ मा गानिया एनित्न भागनात सर्थ तका करा बार ना ८एथिश-স্থাপনার স্বার্থের অনুরোধেই লোকে অনোর ভার্ম রক্ষা করিয়া থাকে; এইরূপ দেখা शाहेट इट्ड द्यं, विवय-वृक्तिहे आश्रनात यार्थ भट्ट शार्थंत गर्मा भागक्षमा श्रीयन क-রিতে পারে, ডাহার জন্য ধর্ম্ম-বুদ্ধিকে ভাকিল্লা আনিবার কোন আবশকত। নাই। জিতে প্রাদ আছে—Honesty is the best policy সদাচারই সর্কেরি, কৃষ্ট নয-কোশল,--**इंश** श्रायता **अभीकादकति ना**—किन्नु पाहाता স্বার্থাসন্ধির জন্মরোবে (Policyর খাজিরে) সং হয়, ভাহাদিগকে আমরা প্রঞ্চ সম্জন বলি मा। देश १७ ४४% मठा ८७, देश्व वराशा-বাহুল: দারা এই ক্ষুদ্র এস্তাবটিকে ভারাক্রান্ত করিব না।

তাহা হইলেই—কেবল 'আপনাব ভাল' তা কথাটি ছাড়িলা দিয়া আত্মপর নির্দিশেষ নগলের অভিপ্রায়নে অবভারণা করা আব শকে হইয়া পড়িতেছে, নমেই মঙ্গল-অভি-প্রায়ই স্থার্থগণের মধ্যে সামগুদ্য স্থাপন করিতে সমর্থ। ইহাকে বিষয়-বৃদ্ধি বলা যাইতে পারে না-ইহাই ধর্ম-বৃদ্ধি। বিষয়-বৃদ্ধির লক্ষা ভদ্ধ কেবল আপনার মঙ্গল,এক কথায়— সার্থ; ধর্ম-বৃদ্ধির লক্ষ্য আত্মপর-নির্বিশেষ অনিকৃদ্ধ মন্ত্রন, এক কথায়—পর্মার্থ।

আপনার প্রার্তিগণের সামঞ্জন্য-কারী
কৈন্দ্র-সরপে আপুনাকে না দেখিলে যেমন
সার্থনারনের কোন অর্থ থাকে না, তেমনি
সকল সার্থের সামঞ্জন্য-কারী কেন্দ্রসরপে
পরমাআকে না দেখিলে পরমার্থের বা বর্ণ্যের
কোন অর্থ থাকে না। জগতের প্রকৃত মঙ্গল
ঘক্তী জাত্তি এবং সে মঙ্গল সাক্ষাৎ-সহকে
ভাষ্যির আমার জ্ঞানেতে পাওয়া যায় না
নার্থানের জানেতে পাওয়া যায় না
নার্থানের জানেতে পাওয়া বার না
নার্থানের জানেতে পাওয়া বার না
নার্থানির দ্বার্থানের জানেতে পাওয়া বার না
নার্থানির কার্যান্ত জানেতেই প্রকাশিত

করিয়া ধর্মা-রাজ্য- প্রস্তৃতি এবং সার্থের বাব श्रेटिक **प्रदेशक फेटिक प्राधिकि**क तिस्यादिक একই কার্য্য প্রার্ত্ত অনুসারে, স্বার্থ অনুসারে পরমার্থ অনুসারে, কৃষ্ট্র ইইতে পারে ; কিন্তু দেই কার্য্যের মূল্য অবধারণ কবিতে হইলে এই কণাটি জিজ্ঞাদা করা চাই যে, তাধার ম্ল-প্রবর্ত্তক উ**হাদের কোন্টি ?** প্রস্তি, স্বাং ना भारमार्थ १ মনে কর কোন ব্যক্তি এক-खः देश्यारखत स्माकाटन এकहे। दर्ग प्रहिंकः ক্ষ করিল; ঘড়ির চাকচিক্যে মোঙিত <sup>হরিদা</sup> নে আপনার স্বার্থ বিসঞ্জীন দিয়াও <sup>উচ।</sup> কিনিতে পারে; আর, পরমাথের বি-বোধী শার্থদিদির জন্যও কিনিতে পারে, কাহাকেও উত্তক্ত দিয়া ভুলাইবার মন্য কিনতে "পারে; আবরে, পর্মার্থ-সার্বনের অভিপ্রায়ে নিঃস্বার্থ প্রোপকারের জন্যও িনিতে পারে। এইরপ দেখা সাইতেছে মত উত্তেজনার কার্ব্যকেই আমরা বলি শ্রন্ নিঃ কার্সা; শুক কেবল আপনার এতিই লক্ষা বলিয়া যে কাৰ্যা ক্লুত হয় ভাহাকে আমরা বলি স্বাপ; প্রসাজার প্রতি লক্ষ্য ক্রিমা যে কোন কার্য্য ক্রিয়া হয় ভাহাকেই বনি প্রমার্থ। আপ্নাদের নিজের মঙ্গল-অভিজ্ঞান্তোর সজ্জান-মূলাগার যেমন আমরা আপনারা, তেমনি সমস্ত<sup>†</sup>জগতের অভিপ্রায়ের সজ্ঞান মূলাধার পর্যাত্র।। ''কাথ'' এই একটি কথার মধ্যে কভগুলি কথা আছে তাহা একবার ভাবিয়া দেখ; প্রথম, আপনার ভালো'র দিকে লক্ষ্যু দ্বিতীয়, সে লক্ষ্য প্রস্তুতির ন্যায় অফ লক্ষ্য নহে, কিন্তু তাহার মূলে জ্ঞান আছে ; তৃতীয়, मिट कार्निक हाफिया मिला सा लक्कात किছ् हे जर्ग के बाहिएक मा; हरू व एथू त थागात छ। न ना गोल्टन स्नागत नका थाक ना बाहा नरह, क्वान चरनहे कान जिल्ला हका सानिए भारत ने। हैशे अवदि अन मून उच्

তেনলি "পরমার্থ" এই কণাটির মধ্যেও আর কতকণ্ডালি কথা আছে; প্রথম, আত্মপর-নি-কিশেষ সমস্ত জগতের মঙ্গলের প্রতি লক্ষ্য; দিতীয়, সে লক্ষ্য অৰ লক্ষ্য নহে; তৃতীয়, তাহা স্বাহের নাায় অল্ল জ্ঞানের কুক্ত লক্ষ্য নহে, তাহা পূর্ব জ্ঞানের নহান্ লক্ষা। বে পারমাথিত ধ্রুব মঙ্গল, ইহার প্রতি সমু চিত শ্রাই গর্ডাবদার জাণ, এইরূপ শ্রদার वंत्नचे भागता न न त्य कर्वत्वात्र कमा कर्वना করিতেছি। ক্রবোর জনা কর্ত্তব্য করার জর্ম ইং নহে যে ত'হার কোন উদ্দেশ্য নাই। নে উচ্চেশ্য সমস্ত বিশ্ব ব্রহ্মাণ পুদ্বান্পুল্বরূপে ছাইয়া আছে, সেই জনা সে কথানী মুশ্বে বলা কেবল বাচালতা বলিয়া মনে হয়। সেমন আমরা বারুর ভার বহন করা সত্তেও ভার-হান হালকা শরীরে আছি, তেমনি কৰ্ত্তবা বোধে কাৰ্য্য করিবার সময় উদ্দেশ্য-সাধনের ভারে আমরা আক্রান্ত হইয়া পড়ি না। প্রস্থৃতির **অন্টাত নি**কাম কার্যা এবং স্বার্থের অন্তীত নিঃস্বার্থ কার্যা করিলে ভাগতেই ব্যাইণ্যায় যে, জগতের মঙ্গলের জন্য, পর্মার্থের জন্য, কার্য্য করিতেছি; এই জনা সে কার্যা করিবার সময় আমাদের এই क्रल भर्न इश (य, छाड़ा कथन है निक्कल इंडेरव न। खानक मगर खड़ामंत्रभंडः गतन करि ষটে যে ডাঙা নিক্ষল হইভেছে, কিন্তু প্রকৃত পক্ষে তাহা কথনই নিষ্ণল হইবার নহে, ক্ষেম . মাতাগার মূলে ঞ্ব মঙ্গল র**িয়াছে।** কম-টের শিখোরা বলিতে পারেন যে; প্রার মন্ত্র-নের প্রাত ঐ মে তোনার বিশাস উটি অন্ধ িবিশ্বাস। তাঁহার জানা উদিত যে আপেক্ষিক স্তা এবং আপেক্ষিক মন্ত্রের মূলে পূর্ণ স্তা এরং পূর্ব মঙ্গল বর্তুমান আছেই আছে—এ বিশাস অন্ধ বিশাস নহে, ইহা একটি শালীয় িনিগুড়াতত্ত্ব; এটি দর্শনশাস্ত্রের জ্ঞান-মূলক প্রাক্ষা দিদ্বাস্ত, অন্ধ-ভক্তি-মূলক কাঁচা সিদ্ধাস্থ নাই

শেশনসরের ন্যার বিজ্ঞানশান্তের ঐকাভিক্তি পক্ষপাতী বাজিকেও অপিন্তা। এই কিছাতে উপনীত হইতে হইয়াছে বে, সকল আপে-কিক সতোর মূলে পরাকাষ্ঠা মূল সতা বর্জ-মান। এ তত্ত্বটি, তাঁছার মতে, যৎপরোনাস্তি গ্রুব, অভ্রান্ত এবং অকাটা সতা। আমরা আরো বলি যে, জগতের মূল উদ্দেশ্য জ্বগ-তের মঙ্গল, এবং সে উদ্দেশ্য মূল সতোতেই ওতপ্রোত-ভাবে বর্জমান রহিয়াছে,—তিনিই ধর্মের মূল-প্রবর্জক।

এইটুকু বলিয়াই আমরা এখানে ক্ষান্ত হইলাম। এ প্রান্তাবে ধর্মা সম্বন্ধে আমাদের নিজের আদর্শ কি তাহাই বলিলাম; কমটের কিরূপ আদর্শ তাহার যদি একটি সংক্ষিপ্ত অবয়ব কৃষ্ণকমল বাবু পরে প্রকাশ করেন ত তথন আমাদের ধর্মোর আদর্শ আয়ো খুলিয়া বলিবার চেপ্তা পাইব; আর, আমাদের এই আদর্শ সম্বন্ধে যদি তাহার কিছু বলিবার থাকে তাহা বলিলে আমরা অতি আহলাদের সহিত তাহার প্রতি মনোধানে প্রদান করিব।

#### ব্রান্মনাজের ভাতৃভাব।

এক ঈবর পিতা বার তার সুঠ মন্ত্র পরস্পর ভাতা ভাবাধনেক ইহা মূল ভাব। ইহার অনাথায় অবশাই দোষ। কিন্তু বেন্দ্র কোন ভাবা বলেন বাতি সুক্রের না করিলে এই ভাতৃভার রকা পার না। ইহা জাহার-দের নিতান্ত অত্যক্তি ও অকুলারতার ভাতৃ-ভাব প্রদার্থটা কি কিলে হয় বার কিন্তুর হার। এই টুক্রিকার করিতে গেলে বেন্দ্র হয় ভাতৃভার করিছেরে বন্ধ নয় স্প্রদার হয় ভাতৃভার করিছের বন্ধ নয় স্প্রদার আনাকে আদিদ্ধন না করিতেছে, ততকণ দে ভোষার ভাজা নয়। আহার কি বিবাহ, কি আর যা কোন উপায়ই বল না, কোনটিই ইহার জনক নয়। একমাত্র হাদয়ই ইহার

ুঁ এখন দেখ হিন্দুশান্তের স্পাপ্ত উপদেশ সর্বত্র সমৃষ্টি ও মৈত্রী। নানারূপ বর্ণ-বিভাগ मार्डिं এই मामा ও रेगजी हिन्दूता किकारी ্রক্ষাকরিয়া আসিতেছেন, ইহার আলোচনা আরশকে। এখনই বলিলাম, ভ্রাকৃতাব বাহি-় রের বস্তু নয় ইহা সম্পূর্ণ হৃদয়ের। আহার বিবাহাদি বাহ্য ভাবে ইছার জন্ম নয় হৃদয়ের গ্রদার্থের ইহার জন্ম। আবার এই ঔদ্য-র্ধোর প্রতি কারণ একমান্ত রশ্মান্দুরাগ। যদি হৃদগ্নে প্রকৃত ধর্মা থাকে, তবে তাহা ঈ্বরকে ্র পিতা জানিয়া তাঁহার স্বপ্ত যসুষ্ঠাকে নিশ্চর ভ্রাতৃভাবে **অালিঙ্গন** করিবে। কোনও বাধা কোনও প্রতিকল্পক মনুষ্টোর এই ভারকে রোধ করিতে পারে না। হিন্দুজাতি ধর্ম্ম-প্রধান। ইহার আহার বিহারে ধর্ম। এমন ধর্ম-প্রাণ জাতি পৃথিবীতে আজও উদয় হয় নাই। এখন দেখ, যদিও হিন্দুর মধ্যে নানা বর্ণ-বিভাগ, কিন্তু তৎসত্তেও ইহারা সদয়ের এক-মাত্র ধর্মোখিত উপার্বেট সাম্য ও নৈত্রী র**ক্ষা**য় কৃতকার্য্য হইয়াছে। অতএব নিজে ধর্ণ্ম-প্রাণ হত, হৃদর ঈশরামুরাগে প্রশস্ত কর, তখন বিনাকৈ স্তায় তোমার ভ্রাতৃভাব পৃথিবী-गर विखात बहुद्ध शाकिता। , हिम्मूत गरभा বর্ণবিভাগ সভেত্ত বে কেবল কদুয়ের উদার্য্যে धरे नामा ७ त्याबी तका रह, रेरात मृक्षी छ পতীত ভাবের দূরে দেখিতে হইবে না। निकटेंबर अक्ट्रा (एश्रा) सहाजा दासरमाहन व्यक्तिक क्षेत्र विश्व बाळान-कूटन। यथन উল্লেখ্য হত। কর তথ্য গলায় উপবীত। जिल्लाक जान-कारत सकर। किन्न गरन জিনি জাপাৰের সাকলেক কার্যা নোৎ হাক

নেত্রে পর্যাবেক্ষণ করিতেছিলেন, তথন ও তিয়া প্রজাদিপের একটা হ্রাথের কথা গুনিরা এমান হার্ত্ত হল যে তিনি ততুপলক্ষে একটা ভোজাদেন। কোথায় জাপানের প্রজা আর কোথায় তিনি। তবে তাঁর এত কিদের আনন্দ। ইহার সেই হিন্দুর সাম্য ও মৈত্রী, ঘাহা বর্ণের কথা দূরে থাক একটা আকাশ-পাতাল-প্রভেদ জাতির হাথ দেখিয়া জাঁর হৃদয়কে স্থিত করিয়াছিল। তাই বলি বর্ণ বা জাতি ভ্রাত্ত ভাবের বিরোধী নয়। যেখানে ধর্ম্ম ও হৃদ্দেয়ের উদায়া, সেই খানেই ইহার প্রতিষ্ঠা। অভ্যাব এই উপায়ে রক্ষা করিতে পারেন।

আচ্ছা, প্রাচীনকালের নাম্য ও মৈত্রীবাদ ছাড়িয়া দেও, দিয়া দেখ এখনীই বা হিন্দু-ব্যবহার কিরূপ। তুমি যদি নগরে নগরে ত্বরিয়া বেড়াও, তবে তুমি ঠিক্ বুঝিতে পা-রিবে না। পার আর নাই পার, আমি কিন্তু পল্লীআমের গ্রাম-র্দ্ধদিগের কথা তে:-মাকে বলিব। এই সমস্ত ভল্তবংশীয় বৃদ্ধ কর্জা দিপ্রহরের কিঞ্চিৎ বিশ্রামের পর চত্তী-गएए जानिया देवरेक कदबन। শীচ বর্ণ ক্রমকেরা আদিয়া তাঁহাদিগকে ঘি÷ বিয়া বইদে। এই সন্মিলনের অতি মহৎ। রদ্ধ ক**র্তা মহাভারতের ধর্মা** ও উপাখান বলিতেছেন। ইহাতে ক্র্য-কের যথেপ্ত উপকার। আবার ক্ষক কৃষি-কার্যোর উল্লেখ করিতেছে, ইহাতে ঐ রুদ্ধ কর্ত্তাদিগের কৃষি জ্ঞা**ন-লাভে উপুকার।** কিন্তু এই সন্মিলনে বড় একটা মধ্র ভাব দেখিতে भाउम्म याम । अक्र वर्ग नीम वर्गत निष्ठ माना कर्न आम-मन्नद्रक जायक अवर वर्ग-গত ব্যবধান থাকিতেও সম্মান ও স্নেহের পরস্পর আদান প্রদান চলে। 'দে কি আশ্চৰ্যা সমতু খন্ত ৰা কি আশ্চৰ্যা ভাতৃ-ভाব। देश लाहे शाहीन धर्मानकात

শাস্ত্র যাহা নগালুগাতরের প্র ত্ত্র করিয়া এখনও চিন্দুর মনে সাবা ও বৈত্রীর বীজ রক্ষা করিতেতে। আবার এই হৈ কাতির সধ্যে এই ভাতৃভাবের এক ্বিশ্বনীনতাও দেখ। খাজ হিন্দুর তুর্গোছ-সিব। যে কোন গৃহহ যাও দেখিবে নিষ্ট-ুঁৰাক্ষ্য প্ৰিপ্তান সকলকেই দেওয়া হইতেছে। ্রিকুন্দু উপাধিত অনাহারে ফিরিবে না। মুৰ্গলমান উপস্থিত খাদ সামগ্ৰা ভাছাকেও ্ৰদিতে হইবে। আজ ধক্ষোৎসৰে হিন্দুর ্ৰিষ্ণায় নিৰ্ম্বক্ত। আজ আতি নিৰ্বিশেষে হি-ন্দুর হস্তও দেখাক্ত। স্ব্রু এই তুর্গোৎসব বলিরাই বা কেন। প্রতিগৃহে মুষ্টিভিক্ষার ধ্যময় কি হয়। তাহাও তো এই জাতি-নির্বি-চুরৈ বিভরণ। এখন জিজ্ঞানা করি তোমর। কি ইহার ভিতর ভাতৃভাবের কোন লক্ষণ পাও না ?

## দুৰ্গোৎসৰ

তুর্গোৎসব বঙ্গদেশে সর্ব্বপ্রধান *ধর্ম*াৎ-সব। এ দেশের আবলি রুদ্ধের সংকার এই ষে অযোধ্যাপতি রাম এই চুর্গা দেবীর আ-রাধনা , করিয়া রাবশুর্ধে ক্লতকার্য হন। किन्न वान्योकि बागार्य में देशन किन किन নাই। শ্ৰথন এই গ্ৰন্থ প্ৰস্তুত হয় দে সময় ভাই ভারতবর্ষে মৃতিপূজা ছিল রা। তখন दिविषक भटकित काली। किस अञ्चल कारमाक বলিবেন বাবৰ শিবলিঙ্গ পুজাক্ষরিউ, উত্তর কাতে তাহার নিদর্শন আছে। একথা ্রিষ্বৰাই সভা। কিন্তু, উত্তরকাণ্ড স্বাদেন বাল্মীকিরচিত রামান্তবের षस्त्र नहा। এই রামায়ণ রচনার অনেক পরে কোন কবি ইছা রচনা করেন। রামায়ণের নাম হাবণ্ বধ কার্য 🔭 রাবণবধেই এই কাষ্যের প্রি নমান্তি। উত্তরকাও বে বাল্মীকীয় রাজ্য

য়নের অভগত নর ইত্রে ক্রার্থ ক্রান আছে। প্ৰভাৱ বিবাসে আইছ কোন সংগ্রব নাই জেনা জানার উল্লেখ নিস্তয়োজন। ফলত রার্মন ক্ষম রচিত হয় তথন এ দেশে মৃতিপূজার তার্তনা হয় नाहै। जनन देर्गानक पर्वात्रहे रहुन क्षेत्रीत ছিল। বাঁহার। ঐতিহাসিক দৃষ্টিতে রামায়ণ আলোচনা ক্রিয়াছেন তাহারা তথারে এ কথার ভূরি ভূরি প্রমাণ পাইবেন। এই রামায়ণে দেখা যায় রাম রাবণবধের পুরের ত্রকোপাদনা ক্রিয়াছিলেন। ত্রক্সের স্তর্ভি वाप এই গ্রন্থে নিবদ্ধ আছে। ইহার নাম আদিতাহ্বদয় ভোত্র। ইভাসিদ্ধ টাকাকার রামানুজ এভৃতি সকলে এই আদিউল্লদয়ের ত্রক্ষপক্ষে ব্যাখ্যা করিয়াছেন। স্থতরাং ইহা ব্রহ্মপ্রতিপাদক কৈবাত। আর এইটা বে দীকাকারদিপের কোন মনঃকল্পিত মৃতন্ অর্থ তাহাও নয়৷ বাঁহার৷ বেদের গায়ত্তী মন্ত্রের ব্যাখ্যা পাঠ করিয়া**ছেন** তাঁহারা জ্ব-শাই স্বাকার করিবেন ঐ মত্তেরই সূর্যাপকে আর এক অর্থ আছে ৷ ফলত যাহা সুর্বাকে লক্ষ্য করিয়া উক্ত তাহাকে ত্রহ্মপক্ষে আনঃ বৈদিক কাল ২ইতে প্রচলিত। বাঁহার। আত্মার ব্রহ্মকে দেখিতে না পান ভাঁহারী জগতের মধ্যবিন্দু সূর্ব্যে তাহা দেখিলে এইটা পূর্বকালের বিশ্বাস। ফলত রামায় জাদিতারদয় বিশক্তোত নাত। সত্যনিষ্ঠ ত্রকোপাসক রীম রাবণবধের পুর্বেষ্ট্রজ্ঞো-পাণনাই করিয়াছিলেন। । যা वन সুর রানের কুলভাবভূদ, রাম তাহারই উপাশ্না करहेन । ्य क्या क्रीकात कर्तिताल बना गांत्र যে বৰ্মান কুলোৎসৰ্ব কাৰেই এবাৰ্ডত নয়। কিন্তু ৰাশিতাক্ষ্ম প্ৰক্ষেতি। ইহার शास्त्रक **स्था**र विश्वासक स्थापन क्षितालाह । তবে ৰে ও ধ্যুক্ত কাৰাইৰ উক্তমান ক্ৰিম

এই রাবণবনের পূর্বের রামের তুর্গামৃতি পূজার উল্লেখ জাছে। কিন্তু যাহা জবলম্বন ক-রিয়া রামের করিজ নির্ণীত হয় এবং যাহা রামের করিজ্ঞশায় রচিত সেই বালীকিয় রামায়ণে এই তুর্গোৎসবের কোনও উল্লেখ নাই। ইহা রামারণ রচনার জনেক পশ্চাং পোরাণিক করিরা কল্পনা করিয়া যান। হিন্দুর মধ্যে ভাহাই তুর্গোৎসব।

দাক্ষিণাত্য ও উত্তর পশ্চিমাঞ্চলে যে প্রকাও হিন্দু সম্প্রদায় আছে তাহাদের মধ্যে बारे जुर्लादमव अथन १ रहा ना। ন্ববালি নামে এই সময় একটা জাতীয় উং-मव इरेशा थाटक এই याजा अथन (५५) 'আবশ্যম এ**কই আ**ভির ভিতর এরূপ পুথক ফল কেন ? কোথাও মূর্ত্তিপূজার বাছদ্য আর কোপাও বা যংসন্তা। কেন এইরূপ ? লাহারা উত্তর পশ্চিম অঞ্চল পরিভ্রমণ করিয়া বিশেষ তত্ত্ব অবগত হইয়াছেন ভাঁহার৷ দেখিবেন বৈদান্তিক ধর্মা একেধরবাদ ঐ দেশের হাস্থি মজ্জার প্রবিষ্ট হইয়া আছে (১)। বেদোক্ত বাগধভের পর এই স্কাধর্মের সৃষ্টি ইটখা-ছিল। এতদাতীত নানক প্রভৃতির সম্প্রদায় ও यरथि आहि। कन्छ এक्टियंत्रदान स्य क्री **প্রদেশের অনেক হল অ**ধিকার করিয়া আছে (म विष्ठातिः मरन्तकः नाहै। किन्छ वन्नरहरना **ভৃতিপূজার শাহলা কেন।** আমাদের বোধ হয় এদেশের জলবায়ুর অবস্থা তাহার কডকটা কারণ 🖟 📆 হর স্থান্চিমাঞ্চলের শীতগ্রীয়াদি মাহ বড় প্রেল । দ্বন্ত শীত প্রচত গ্রীমা। हैश बाता बजाबंदर माक मकन कर्रेमिक 🕶 । প্রাক্তের জ্বার জীবিকাও তাদৃশ ৰক্ষান্ত্ৰ ৰক্ষায়াদে পাৰ্বত্য ভূমি হইতে नामामा एक ना। याहाता के जकतनत अवसीति मार्श्वादानंद्र अवसा सारतन, এकथा जीवीदमक अनुसार जाश्रमान त्वाच हरेता विकासिक वालव (नेनाच नर्गमित स्थिन) तथे।

ফলত লোক भक्त क्यूनिहरू विनशे रेवणा-ন্তিক ধ**র্মা তথা**য় **স্থান**ি পাইয়াছে। কারণ हेशाट माध्रत्व कर्ड बार्ट्स अज्ञाहारम अ ধর্ম্মে ফল লাভ হয় না। কিন্তু বঙ্গদেশ ইহার বিপরীত। **এছানে** শীতবাতাতপ সহনীয়<sup>া</sup> **জীবিকা সচ্ছল। এথানে সাধারণ**ত অন্নক**ট নাই, এ জন্য লোক স**কল স্থাপ্ৰিয় আযোদপ্রিয়। সম্ভবত এই কারণেই নুর্ত্তি-পুজা এতদেশে বাছলা-রূপে প্রতিষ্ঠা পাই-য়া**ছে।** ইহার স**হিত আমো**দের বি**লক্ষণ** যোগ। একণে বক্তবা এই যে, হিন্দুজাতির ধর্ম্মের খবস্থ। সাধারণত এক হওয়া উচিত। দেশের জলবায়ুই যাদ মাধনের কট্ট স্থাকারে বিরতি উংগদিন করিয়া থাকে তবে তাহা স্বাভাবিক হইলেও গুরপণের নয়। ইছা যে একেশরবা-বের বনপাতক হয় ইহা অত্যন্ত দুঃখের কথা।

#### বস্ত-গুণ-তত্ত্ব।

গত সংখ্যক পত্রিকায় বর্ত্তমান প্রবন্ধের যতখানি প্রকাশিত হইয়াছে, তাহাতে গুণ— কি অর্থে বিশেষণ - কি অর্থে লক্ষণ—কি অর্থে বর্ণ্ম, ইহা সুস্পার্থ প্রদাশিত হইয়াছে; কিন্তু গুণ—কি অর্থে ওপী(অর্থাৎ বন্ধন-রজ্জু) তাহা এখনো প্রদর্শিত হয় নাই; তাহাই এখন বিবেচ্য়।

গণ জ্ঞানকে বন্ধন করে—এই অণেই
গ্রণ। বর্ণ ভাবিবার সময় শকাদিতে জ্ঞানের
যাইতে বারণ; শ্যাম বর্ণ ভাবিবার সময়
শে বারণ তো আছেই—তাহার উপর আবার শেত-নীলাদি বর্ণে জ্ঞানের যাইতে
বারণ; উজ্জ্ল শ্যামবর্ণ ভাবিবার সময় শকাদি
বর্ণেতেও জ্ঞানের যাইতে বারণ, খেত-নীলাদি
বর্ণেতেও বাইতে বারণ, ভাহার উপর আবার মান্তির বারণ; ভাহার উপর আবার মান্তির বারণ;
এইরপ দেবা বাইতেতে বে; ভাবা
বিরম্ধ করা বায়—তডই

জ্ঞান কৈ সংকীর্ণ ছারতে সংকীর্ণতর কেরে বাঁধিয়া রাখা হয়: এই জনাই গুণের নাম হইয়াছে তুন (কি ছা ক্ষান্ত কছা)।

পূর্বে প্রবন্ধে পানরা দেখাইয়াছি যে,
জগতে যত প্রকার গুণ খাছে সকলের সঙ্গেই
সাই রজ এবং তামে এই জিনটি গুণ লাগিয়া থাকে : — সত্-গুণ কিন। প্রকাশ গুণ,
তামান্ত্রণ কিনা অপ্রকাশ-গুণ, রজোন্তর্গ কিনা প্রকাশ গুলি অপ্রকাশ এবং অপ্রকাশ হইতে প্রকাশ এইরপ চাঞ্চলা-গুণ।
এই তিনটি প্রধান গুণ আমাদের জ্ঞানকে
কিরপে বদ্ধন করেন্ধে এইস্থলে তাহার প্রতি
একবার প্রণিধান করিয়া দেখা আরশাক।

একাশা গুণ প্রকাশিত হউক্—এইরূপ একটি আকাড্যা জ্ঞানের স্বভাব-সিদ্ধ; এই আকাজ্যা চরিতার্থ হইলেই জ্ঞান স্থখ-বন্ধনে বন্ধু হয়। কিন্তু প্রকাশ্য-গুণের নূতন প্রকা শের সময় জ্ঞানেতে বিমন স্থােদয় হয় — দে প্রকাশ পুরা**তন ই**ইয়া গেলে তেমন-টি আর হয় না; জ্ঞানের সমকে কোন-একটি গুণ অজন্ত প্রকাশ পাইতে থাকিলে ভাহা কাল-জনে এমনি এক-খেয়ে হইয়া উঠে যে, তথন ভাহার প্রকাশত ঘুচিয়া যার ও তাহার সঙ্গে সঙ্গে তাহার অ্থদায়িত্বও চলিয়া যায়---এমন কি অনেক সময়ে তাহা বৈরক্তি-জনক হইয়া উঠে। এক যিনি চিরকালই ন্তন তিনি ভূমা (অর্থাৎ অসাম মহান্) প্র-মেশর – তিনিই কেবল পুরাত্রন হ'ন ন তিনি সকল কালেই স্বিক্রে সুখ্নীতা ् ७ इ बना हे जिल्लामर पार्ट "रव दिन जूना ্ৰতংক্তৰং নাল্পে অথম**ন্তি"। বিষয় প্ৰকাশের** প্রকাশত মতকণ খাকে ততকণই ভাহা সুধ-ৰ ব্যবহার দারা তাহার প্রকাশত্ব চলিয়া গেলেই তাহা অস্থের কারণ হইয়া দাড়ায় ; প্রকাশের প্রকাশন্থই সত্ত্ব-ভব-ভা-ছাই জানকৈ মুখ্যমন্ত্ৰে বছ কৰে। প্ৰকা-

শের আকাজ্যা জানের অভার-নিজ, বি
আকাজ্যা চরিতার করার পক্ষে হার নিজে বাহাত উপত্তিত হয়, তথাপিলে আকাজ্যা
হইতে যথন প্রকাশের আকাজ্যাই রজ্যোত্ত — ইর
হ্রা পড়ে, তথন তাহা দুর্ভের কারণ
হর; —প্রকাশের আকাজ্যাই রজ্যোত্ত — ইর
হ্রানকে গুংখ বন্ধনে বন্ধ করে। প্রকাশের
আকাজ্যা যথন চরিতার্থতা-বিহনে নিতান্তই
আনাড় হর্মা পড়ে—তথ্য উপায়াভাবে জ্ঞান
একেবারেই হালে ছাড়িয়া দিয়া—প্রকাশের
আকাজ্যাকে বিগতিনে দিয়া—প্রকাশের
নাবিয়া পড়ে; এইরপে, ত্রোত্ত জানকে
বিযাদ বন্ধনে বন্ধ করে। নিজে ইহার একটি
দুরান্ত প্রদর্শন করা যাইতেছে।

দর্গ আলোকের ভক্ত নহে,—অন্ধকারা-চ্ছন গহঁবরের অভান্তরে সে ভাষার জীবনের অধিকাংশ কাল যাপন করে; কিন্তু মৃতুখোর চকে আলোক কি ন্সুইনীয় ৰস্ত গ যদি এক সপ্তাহ ধরিয়া আকাশ-মঞ্জ মেঘাছেন থাকে, তবে মুখোর মনোমধ্যে আক্রো-क्त क्या कमन अवन किमीलिंड बहुन উঠে; - हेश हुश्र्यंत्र विक्शा। **श्राह्म जिल्ह देवयन करे। बाजा जिल्ला शा**ल त्वाथान कतिश्र<sup>िष</sup>श्रीसमान हरा, त्नेहें सूर्य वर्षन, मूजन मूर्बा कित्र माला विकिश्व করিয়া মেব মুক্ত আকাশে অভ্যুথান করে, **छ्यन क्यांन जागारमंत्र सम्म** पानुस्य केश्यून रहेश किर्फ - देश करणे कर्ने हा কিন্তুখিদি এক মাস ধরিছা প্রাক্তির বিরম্ভর चन-रंगरच जाकन गाँक, उत्त कानारकत विकेट-क्रिक पुरुष योगम विकास विकास ning ora : Gon winitra at na graff 'দ্বিষ্ঠা বৃদ্ধি, তৃশ্ব বিশ্বেইছা, ব্যক্তি े-पिना, केन-साम, क्रिकेश कार, ब्रा

विशाहनक अवन्ता अनि केलिकदन देशांच नमू-त्यात बालांकि बनहा रहेश है। ए। म. मनूरा যদি গহার-শামী সপের প্রাকৃতি প্রাপ্ত হয় তবে মুদুৰোৰ জ্ঞান মোহে অভিভূত হইয়া জড়বং হইয়া হায়,—আস্থা ত্মোগুণে বদ চইয়া পড়ে। फुरश्द्र ख्रुक्श-ज्यास्ति जनस्-यित समूद्यात अञ्चलिक रहेशा में ज़ाह, सनूश गिन सर्थित कार्यनात मर्खनार छाएक हो कतिश বেড়ার স্থিচ কিছুতৈই স্থ লাভ না করে, यपि এक्रभ इत एर, मर्स्सपाई जारात यन शूँ ९-খুঁৎ করিতেছে, সর্বাদাই রুষ্ট, সকলের উপ-রেই চটা, মনুষা যদি বাীত্রের প্রভৃতি প্রাপ্ত হয়, তবে ভাহার জ্ঞান খুশান্তির বিভ্রান্তিতে কি প্রান্ত না কলুষিত্ হইয়া পড়ে,—ইহা-কেই বলে রজোগুণে বন্ধ হওয়া। যদি স্তুৰের অবস্থা মনুষ্টোর স্বাভাবিক, অবস্থা इहेबा फॅं। ज़ाब-यिन जाहात यन मर्कनाह প্রকৃত্ন থাকে, প্রাজ্যোতিতে মুখ-চক্ষু সর্ব-দাই উদ্দেশ পাঁতক, যদি এরপ হয় যে, তাহার मुथ (पिर्देश निवास समरप्र वांशांत मकात ह्य- जम्मार्कत क्रम्टम च्छट्यत अक्षति ह्य-म्पर् सम्दर्भ सार्वत मकात हर, , उरवहे তাহার জ্ঞান মুক্ত-ভাবে ক্ষু জি পাইতে পাৰক, **७ पनहे फारनुत अधनी अञ्चिताङ हत्त, हे हारक हे** বলে স্তু-গ্ৰেক্ষ্ত্ৰয়। সন্ত্ৰ আতাকে मुक्तिक नेद्रश्राच्यामत कतिया एनय - এই পर्याखः अमन नते दर्, अदेकगदिवर आश्रादक मुक्जि धारम के बोर् क्रिया दंग्य ; मक्छन यनि अदकः বারেই আত্মান্ত্র বন্ধন-মুক্ত করিয়া দিওে পারিত ভবে নত্ত তণকে বন্ধন বলা কোন-মতেই শোকা পাইত না। মনুষ্যের আত্মা বতই কেন জ্ঞান ধর্মে ভূষিত হউক না, कारे भागादाक याति मञ्चा मस्ट थात्क, ভাষ্টে উপ্ত ভাষা উচ্চে উচিবার প্রয়াস অভিনেত্র বিভিন্ন কর্ম প্রচায়ের স্কর্ম সর্ব

व्यत्नक नवरंत्र वक्षमादक असन (स्था महा त्य, তিনি এরপ নবুগুণের বন্ধনে ভৃত্তি অবলখন করিয়া ৰুসিয়া থাকাতে থেটুকু জ্ঞানধর্ম चें भार्कन कित्रग्राहि जाहारे गरबहे अहे तम गत्न कताएक, काल-करम विम्हायम ७ धर्म-খদ বলিয়া একটা রাজদিক মততার ভাব তাঁহার মনোনধো অভ্যাতদারে আধি-পত্য বিস্তার করিতে অবসর পায়; গেই রা**জ**সিক ভাব হ**ইতে—**জ্ঞান-ধর্মা উপা— ভ্জনে বিরতি—এইরূপ এক তামদিক নি-শ্চেপ্ততার ভাব ভাষম গ্রাহণ করিয়া ক্রমে ভাঁহাকে আরে। নীচে কেলিয়া দেয়। ষোর জ্ঞান-ধর্ম যদি পরিপূর্ণজ্ঞান ধর্ম হইত, তবে তাহাতে ভর করিয়া থাকিলেই মনুষা একেবারেই বন্ধন-মুক্ত হইতে পারিত, কিন্তু তাহা যখন নম, তখন সত্ত্তগও আতার বন্ধন-স্বরূপ—ইহাতে আর ভুল নাই।

সাধারণতঃ সকল গুণই জ্ঞানকে বন্ধন করে – তাই ভাহারা গুরু (অর্থাৎ বন্ধন-রজ্জু) বলিয়া উক্ত হয়—ইহা আমরা সর্বাত্রে দে-খাইয়াছি; তাহার পর সত্ত্বব্দস্তমো এই তিনটি প্রধান তুঁণ (যাহা জগতের সকল গুণেরই গুণত্ব সাধন করে) তাহা কিরূপে আ্ফ্রাকে স্থ-দুঃখ-মোহে বন্ধ করে—প্রকাশের সঙ্গে সুখের কিরূপ সম্বন, প্রকাশের আকৃতিক। মাত্রাটির সঙ্গে তুঃখের কিরুপ সুস্থর, এবং অপ্রকাশের দহিত বিবাদের কিরূপ সম্বন্ধ, তাহা দেখাইয়াছি। আৰৱা সত্ত্ৰস্ত্ৰা গুণকে শ্ৰৈকৃত প্ৰস্তাবেই গুণ বলিয়া শিয়ো-ধার্যা করিয়াছি ; কিন্তু দর্শন-পাল্ডের তুই একজন টীকাকার সভ রজন্তবেশ গুণকে जिनि खेरा बिनिया परिवेद्यारहन 🗯 💖 १ । य कि चर्ष अर् (तकन-तक्क) छाहा छाहाता প্রণিশার্ক করিয়া দেখেন নাই ;-- তাঁহারা বলেন বন্ধন করিবার শক্তি কেবলু বস্ত রই আছে, সন্তি দির। বন্ধন করা বাইতে

পারে। হতা দিয়া বন্ধন করা যাইতে পারে, हेजानि। ইহাঁদের এতি বজ্ঞব্য এই যে, ধোড়াকে বা গরুকে বন্ধন করা স্বতন্ত্র, আর, আত্মাকে বন্ধন করা হওতা; — সুক্ষতম সৌ-কঠিন বন্ধনে বদ্ধ হইয়া পড়ে যে, কেনি প-শুকে কোন বজজ্ দিয়া দের**প ছরোচ্য** वक्रटन वक्त करा यात्र ना। गए तक्क छ रमा-গুণকে আমতা ওণই বলি—বস্তু বলি না; কিন্তু তাহা বলিয়া কেছ যেন এরূপ না বো-পোন সে, ঐ তিনটি গুণের মূ**লে বস্তু** নাই— উহারা শ্রেন শূনের অবস্থিতি ক**রে** ;—গুণ-मार्क्षतके मृत्त व्यावान-नल्ड शिक्टि **हाज** — পর্মের ইনার জানরা ধণে**ত্ত প্রমাণ** দর্শা-ইয়াছি, এখানে তাহার পুনরুল্লেখ করা বাহুলা। এখানে শদি কেহ জ্বিজ্ঞাস। করেন বে, সছরজন্তমোগুণ কোন্ বস্তর গুণ, তবে **তাহা**র উত্তর **আমরা নিম্নে** দিতেছি।

তমে। ७१ कज़रखतहे मुथा ४ मी-- এ ৰ্দ্দা তাহার **খা**র এক নাম জড়তা; বৃদ্ধি শ্রেমন প্রকাশ-ময়-জড়তা সেইরূপ ত্যো-महिरा तला गालना। तटकालन गटनत ম্থা শ্মা-এজনা তাহার আর এক নাম প্র-**য়তি**; প্রায়তি আকাজ্জাময়—উদ্বেগ-ময়— ইহা বলা বাহুলা। সত্ত্তণ আপুতার মুখ্য ধর্মা— এ জন্য তাহার এক নাম বৃদ্ধি;— বৃদ্ধি প্রকাশময় ইহা স্পষ্টই পড়িয়া 'আছে। এখানে এইটির প্রতি সবিশেষ প্রাণীশান করা আদশ্যক লে, আয়ানের ক্রমি-শাল্রে তিন-গুণই আপেকিক বলিয়া নিদিষ্ট ্ছই-सारक ;--रेनर्ग (यमन अन्य अनः त्वर्गक छा-ড়িয়া একাকী থাকিতে পারে না, ত্রিগুণের কোন ভণ্ট দেইরূপ অবনিপ্ত তুই ভণ্ছে ছাড়িয়া প্ৰকাকী থাৰিতে পাৱে না, তাৰে কোৰাও কোন গুণ প্ৰাগ্নভূ ও হইয়া উঠে, टकाथा । पिक्ल इरेगा ग्रह भणेर

etel alem diam a main allo a व खन भूषा भाषा निक्क अध्यक्षात्रक आविक शकोन अहर डाक्टिक कालमा किक श्री गार्व मर्युक्त चार्ड, जाहा सभि ना करेंच **उटन, वक्षत्रत्र खादमहा छेनात कार्या कहिए** পারিত না—জ্ঞানে প্রকাশ পাইতেও পা-রিত না ; তেননি আবার রাজনিক চাঞ্চল্য ব্দিও মনের মুখা ধর্মা, কিছা মনেতেও দা-ব্রিক প্রকাশ এবং তাসদিক জড়তা কতক পরিযাণে আছে ইহা বলা সাত্ল্য: পুনশ্চ, বুদ্দি যদিও মুখারূপে আত্মার ধর্ম, কিন্তু আমাদের আল্লা অপূর্ণ বলিয়া **তাহাতেও** কিয়ৎ পরিমাণে রাত্দিক চাঞ্চল এবং ভার-দিক জড়তা মিশ্রিত আহে। সম্বত্ত পের ভাৰাৰ্থ কি এখন ভাষা বনিলেই বুনিতে পারা যাইবে ; যথা;—সত্ত্ব-গুণ বলিতে এই রূপ এক আপেকিক জ্ঞান এবং আনুন্ধ বুৰায় যাহার সাহিত জড়ত। এবং চাঞ্চলা ক্তক পরিমাণে মিপ্রিত আছে;—এক কথায় সত্ত্ব-ওণ বলিতে অপূৰ্ণ জ্ঞান এবং অপূৰ্ণ আনন্দ বুঝায়;—এই জন্য শাক্তকারদিপের মতে পরিপূর্ণ জ্ঞান এবং আনন্দ সত্ত্ত্ব শক্তের বাচ্য নহে। কোন কোন, দুর্শনকার ঈশরের ঐশগুণকে শুদ্ধ সত্ত্ব বলিয়া নির্দেশ করেন, শুদ্ধ সত্ত্ব – কিনা যে সত্ত্তপের সহিত রাজসিক চাঞ্চলা এবং সামসিক ভুড়ভার मः च्यार्ग माज नाहे ;— हेडाई प्रथ पांत कि हुई नरह रक्वल **এই त्या अन्यत अ**तिश्र किहान नम्भ प्रज्ञभ । किस निवदन धारे त्य, एक-मन्द्र ७१, देश विकर्षक व्यवस्थान मन्द्र-७४ नटर ;- क्न ना नाध्याति वन्त्रमारक देशे गाम भाव नारे प्याहे कतिया विकेष्ठे रहेकारक বে, তিন থৰেছ কোন আই আৰ্যাই ধৰ पर्क हर्राष्ट्रके अनेकि भाक्तिक अस्ति क्र त्रवरा, क्षण के विकास स्वाहक स्वाहित HALL BUILDING BOLL CONT.

का महत्त्व इंट्रामक छाहा हाकना अरः কড়তার সহিত কিছু না কিছু কড়িত থাকিবেট থাকিৰে, এক কথায়—কীৰাস্থাতে জ্ঞান এবং व्यानम छन्। शूर्व माजाग्र थाकिएं भारत ना। এইরশ অপূর্ণ জ্ঞান এবং আনন্দকেই শাস্ত্র-कार्यक्रा मञ्चल विलया निर्द्धन कतिशास्त्र ; कार कारात्मत এ कथा बागात्मत्र निर्द्राशार्था त्य, त्रक्छ द्या ७८ वत्र नाम् मङ्ख्य ७ वत्रा-ত্মাতে অর্নিতে পারে না। আমাদের শাস্ত্র-কারেরা পরমান্তাকে কি অর্থে নিশুণ বলিয়া-ছেন—এখন ভাহা ™প্ট বৃঝিতে পারা যাইনে। বেদা<del>স্ত শান্ত্রে উক্ত হই</del>য়াছে যে সচ্চিদানন তক্ষ নিত্ৰি; যদি ত্ৰক্ষকে সৰ্ব্ব-গুণ-বৰ্জ্জিত বলা শান্ত্ৰকারেক অভিপ্রেত হইত **उ**टत जिनि सञ्चरम विलिख भादिरजन रम, क्षित्रानम खन्न निर्श्वन, क्यांव यांशारण स्वान এবং আনন্দ এতুই গুণ নাই এমন যে এক তিনি নিগুণ; তাহা না বলিয়া শাস্ত্রকার অমান বদনে বলিতেছেন ষে, যাঁহাতে জ্ঞান এবং আনন্দ এতুই গুণ পুৰ্ণ মাজায় আছে তিনি নিগুণি; একবার ঘাঁহাকে চিদানন্দ গুনের আধার **সরূপ সংপ্রদার্থ** এবং পূর্ব প্রক্রম বলিয়া স্বীকার কুরিতেছি, তাহার পরক্ষণেই তাঁহাকে **সর্বন্ধ্র বিহ্নিত** বলিতেছি—ইহা নিতান্তই প্রলামোডিয় ইহাতে এইরূপ **দাড়াইতেতে বে, শান্তকার**, হয় উন্মাদ, নয় जैद्धात समुद्रसङ्ख्या अनाक्रम । ক্রকল্প ক্রিয়া শান্তকারকে উন্মাদ করিয়। প্রতিপদ ক্রিব্রি নিতাছই প্রয়োজনাভাব, <sup>(क्न</sup> ना डाइाब वर्टनंत्र 'डावार्थ कल्नत नाति क्रुम्भेडे देश अर्थ এই (य, भित्रभूर्य छान जयः कानम के पूर्व के बतिक खरा-मञ्जरात कर्पार्था नाहे, बद्बार्श्टनक ठाकना नाहे, **उट्याक्टर्यं बाएका नाहै, ज्**वहार ठारा जि-ঙ্গাতীত কিনা বিশ্বাস্থীত। খডএন স্টেশ্বর AND THE WALL COME OF CO, TOPA

ত্রিগুণ-বার্ক্তিও; এ নহে তে, তিনি সর্বাহ্যন বার্ক্তিও; কৈন না, চিদানন্দ গুণ তাঁহাতে পূর্ব মাত্রায় আছে, ইহা সর্ববাদিসন্মত।

বন্ত-গুণ-তত্ত্বর সাগর হইতে আমর।
এই মহামূল্য রক্তি লাভ করিলাম যে, পরমাত্মা জ্ঞান-প্রেমাদি সমস্ত সক্যুণের পূর্ণ
মূলাধার; ইহাতে আমরা আশাতীত ফল-লাভ
করিয়া ধন্য হইলাম—এখন করণাময় পরমেখনকে ধনাবাদ দিয়া আনন্দে গৃহাভিম্থে
প্রয়ান করি।

একোনেনঃ সর্বভূতের্ গৃঢ়ঃ
সর্ববাপী সর্বভূতান্তরাঝা।
কর্মাব্যক্ষঃ সর্বভূতাধিবাসঃ
সক্ষি চেন্ডা কেবলৈ নিগুণিত॥

<u>উপনিষ্</u>।

#### বঙ্গে পঞ্চ ত্রামাণ।

ভারতবর্ষের প্রকৃত সামাজিক ইতিহাস কোন কালেই ছিল না একথা পলিলে অত্যুক্তি হয় না। ∗থ৺রসংভাত বিষয়াদির লোচনা-মূত্রে ভারতের প্রাকালিক সামা-জিক বৃত্তান্ত **যাহা কিছু জানা** যায়; নতুবা পদে: লিখিত উপাখ্যান ও পৌৱাণিক ইতিহাস/দি এতাদৃশ কল্পনা-কল্যিত এবং কবিভাবাপন্ন যে, সমাজদংক্রান্ত মূল কথার षात्वरात कृष्मक्षद्ध स्ट्रेल, त्कदन त्यन অন্ধকারময় অরণ্যে পরিভ্রমণ করা হয় মাত্র। মুসলমান্দিগের ভারতাপমনের পূর্কে ভার-তের প্রকৃত ঐতিহাসিক বিবরণাদি সংগৃহীত হইবার সম্ভাবনা আনে নাই; কেবল ধর্মা সংক্রান্ত ও খোদিত তাম-প্রস্তর-ফলকের প্রমাণাদি এহণ করিলে সেই অন্ধকারারত পথে একটু বিভারভার আলোক শাত্র প্রাপ্ত হওলা ব্যৱ।

রাষায়ণ ও মহাভারত রচনার পরে ভারতে বোদন্ত্রি আতুর্ভাব হইয়াছিল। পর্বতভার হিলাক্তার চরণপ্রাত্তে, নেপালের নিকটবন্তা কলিলবন্ত নগরে, খৃপ্তজন্মের ৫৫০ নংসর পূর্ত্বে ক্ষতিয়-রাজ-কূলে শাক্যমুনি জন্মগ্রহণ করেন। নেই মহাস্থাই বৃদ্ধ এবং বোদ্ধার্শ্যপ্রচারক।

আর্থাদিলের বেদানুমত যাগযজ্ঞাদি ও বৰ্ণভাষ নৰ্দ্ম বিল্পু করা এবং মনুষ্যমাত্তকেই ঘাৰভাগ বিষয়ে সমানাধিকারী গুতিপর চরাই রৌদ্ধর্মের মুখ্য উদ্দেশ্য। এট গলা, লারটে সম্দিত **হইয়া অতার্য্ন** कारलद भरवही पिनई, हीन, **ाठाइ,** खक-দেশ ও ফিডন গীপ পর্যন্ত ব্যা**প্ত হ**ইয়া-किन। चप्रदान् वक्राप्तर भानवलीला मखत्र তরিলে ভাষার শিষদাবুলিয়া <mark>ভিক্ষ্কগণ জগ-</mark> তেব িতের জন্য বৌদ্যধর্মী বতুল**রূপে** প্রচার করিয়াছিলেন। এখনও পর্যান্ত পুথিনীর তৃতীয়াংশের অধিক লোক সেই ধর্মাবলগী। দেই ধূর্ম এক দ্র**ম**য়ে অতি তীত্র তেজে ভার-তৈর বৈদিক ধর্মাকে ভস্মীভূত করিয়া সহস্রা-ধিক বংসর কাল ভারতের তক প্রান্ত হইতে অনা প্রান্ত পর্যান্ত প্রভূত ভেরের সহিত প্রজ্বাত ছিল। খুইজমের পূর্বে তৃতায় শতান্দীতে রাজা অশোকবর্দ্ধন এই ধর্ম্ম অবলন্দন করিয়া বৌদ্ধরশ্যের মহিমা ঘোষ-ণার্থে ভারতে ৮৪ সহস্র শুভ নির্মাণ করেন। क्रा जन्कितात्वत मर्ता इर्ववर्षन, जिन्द्रन প্রভৃতি বজগণের দৃত্যত্ত্রে ভা**রতে বৌদ্ধ**-পশ্মই একমাত্র ধর্মা হইয়। উঠিয়াছিল। আর্থা-ুগণের যে বৈদিক ধর্মা আদিম কা**ল হইতে** বেদের অটস ভিত্তিতে ক্রুচুরীপে সংস্থাপিত ছিল, তাহা বৌদ্ধধর্মের তুর্নিবার প্রবাহে একেবারে ভাষমাণ হইয়া গিয়াছিল।

এই ধর্মবিপ্লবে ভারতের উত্তর পশ্চিম অঞ্চলের মধ্যে কেবল নাত্র কাষকুজ প্রদেশে বৈদিক ধর্ম স্থালিতপদ হয় নাই। তথা-কার ত্রাক্মণেরা দৃচরূপে স্থির প্রতিজ্ঞার মাহিত বৈদিক ধর্মে অটলভাবে সুর্বিষ্ ছিলেন। স্থানীক্ষিত্র এবং বৈদিক জিবা কলাপাদি হইতে আহেন বিরও হন নাই। তাঁহার। ধর্ম-বৈরি-ছায়ে প্রাক্তর ভাবে কাল-হরণ করিয়াছিলেন।

ভারতে বৌদ্ধর্ম প্রচলিত থাকা সময়ে, বঙ্গদেশ মগধ রাজা হইতে পৃথক্ হইয়া প্রাকৃত প্রস্তাবে একটা সতন্ত্র রাজ্যে প্রতিষ্ঠিত হইয়া ছিল। বৌদ্ধার্থমাবলম্বী পালকংশীয় রাজা-দিগের পর অন্বর্গ জাতির রাজা আদিশুর বঙ্গের সিংহাসনে আরোহণ করেন । কুল-জীতে কথিত আছে ইনি অত্যস্ত বৈদিক ধৰ্ম-পরায়ণ ও বৌদ্ধমতোচ্ছেদক সম্প্রাদায়ের এক-জন প্রধান নেতা ছিলেন ১। মহারাজার পু-ত্রোৎপাদনের সম্ভবপর বয়ংক্রম অভীত প্রায় হইল। তিনি পুত্রকামনায় পুত্রেষ্টি যজ্ঞ ক-রিতে কৃতদক্ষ হইয়া পুরস্থ **ভার্মাণ**গণকে সাদরে আহ্বান পূর্বক ক**হিলেন "আপনারা** বেদ্বিধি মতে যুক্তর দ্রোদি আহরণ করিয়া আযার পুত্রেষ্টি যজ্ঞ সম্পাদন করুদ।" বৌদ্ধ বিপ্লবে বঙ্গীয় সপ্তশতী বোকাণাণের মধ্যে নৈদিক ক্রিয়া **লোপ হই**য়াছিল, স্থানুৱাং কেইট্রাকার ঈপ্সিত্ কার্ষো ত্রতী হইটেড অথবা বঙ্গীয়া সপ্তশতী भादित्वन ना। ত্রাহ্মণ মজ্জে ত্রতী হইলে পড়িড হইবেন এই ভুরে তাঁহার। বর্ণদক্ষর অন্মর্চের ভার্থ-नात श्रीकृष्ट हरेलन ना। ताका पन्ना শায় হইরা ব্লেদ্জ ও সাথিক পাঁচটা ভালণে জন্য কাছকুলেখর হাজা আদিশুরের নিক্ল পত্ৰসহ দুক্ত প্ৰেরণ করিলেন। আৰু পর लाखि गाव अक्टनात्वन अंतर्ह वाक शांकी मुक्त एछानर ३३३ न्दर्ब वाहिन् সমীপে প্রেরণ করিকেন। ক্রিক্রান্ত প্র जाका र्या, क्षेत्र, श्रे शहर्या । क्षेत्रक श्रे

a fight statement and safe of

नृद्धक ह्याप्र त्वरन यमीवर्ष रानाहबाइटन दाक्षादा मगानव सरेदन दिन दिन दिन वापिनुत मेमीरन जिन्न जनामेना वीतर्यन-श्री बार्यान-भरकत् योगमन-वार्तः निरवनन कृदिन । ताजा खायान-भटकत्र वीत्रतन धनः পাতুকা-সংশ্লিষ্ট পদে তাদুল চর্মণ প্রভৃতি ব্ৰাহ্মণ-বিক্ষা-আচরণ স্থাদে বীতশ্ৰন হইয়া কাষকুক্রাগত ত্রাক্ষণ পর্কের অভার্থনার্থ অগ্র-मत इहेरलन नां। खाक्रान्शन ताजात जेन्न অনেজিনো বিরক্ত ইইয়া প্রত্যাবর্ত্তনে কত-निम्हा इंटेलन, किन्न श्रीमिक अहेत्रण (य ্র সমস্ত তপোধন আত্মমহিমা প্রকাশার্থ শুক মল্লকাষ্ঠোপরি আশীর্কাদ স্থাপন মাত্রে বিগত-জীবন সেই শুক্ষ স্বন্ধ হইতে তৎক্ষণাৎ - <mark>দূতন অঙ্কুর নির্গত হইল। এই</mark> অলোকিক ঘটনা দৌবারিকগণ কর্ত্তৃক রাজকর্ণগোচর हरेल जानिनुत भनवत्त्व छारामितभव गर्भाति আসিয়া জুতিবাদে সম্ভুষ্ট করিলেন, এবং পঞ্চ ত্রাহ্মণকে রাজভবনে স্থান প্রদান করিয়া ঈপ্নিত যজ্ঞ সমাধানাতে প্রচুর ধন রত্ব প্র-দান পূৰ্বক বিদায় করিয়াছিলেন ৷ কিন্তু বঙ্গদেশীয় '**সপ্তশভী** ত্রা**ন্তাণ** যে সামাজিক ভরে আদিশুরের যঞ্জে ত্রতী হন নাই, কার-कूटक अपेट ७ स । है है । तम एमम है रेट चरमत्न थाजानाक हरेकत वर्गमकत देवमा জাতিব যঞ্জে ত্রতী হইয়া ছিলেন এই অ-বাজায়াজন হৈত্বাদে সমাজে "বজ্জিত व्हेग्राहित्सन । ७ छ्वांजिशन भूनः मरेकारते ते स्था विकिशात क्यूरिया क-विद्व नाशिक्ति। কিন্তু পঞ্চ ত্রাহ্মণ স-

र एक निकाः स्विधाः स्विधाः श्राह्मः वस्तानः वस्तानः वस्तानः । स्टानः स्टानः ह किन् मुक्तिः नक्षः, वशः, द्वनार्थः । स्टानः स्टानः ह किन् मुक्तिः नक्षः, वशः, दवनश्चिः । स्टान्स्यादेनः । যাকে অপমানিত হৈইরা সদেশে বাস করা অপেকা দেশ তাগি করা শ্রেষঃ, এই বিবেচনার প্রীহর্ষ, ভট্টনারায়ণ, দক্ষ, বেদগর্ভ ও ছালড় পাঁচটী শূক্ত ভ্তাসহ কাষকুক্ত তাগে পূর্বক গৌড়রাজ্যের আদিশ্র সমীপে উপস্থিত ইইলেন ৪।

এই প্রকারে পঞ্চ ব্রাক্ষাণ পুনরাগত হইলে আদিশুর তাঁহাদিগের প্রতেকের বাদার্থে রাঞ্ দেশে এক এক খানি আমপ্রদান করিলেন ৫। ভামাণের স**প্তশতী সমাজ হইতে** দার পরিগ্রহ করিয়া **রাজ্ঞ্দতে ভূসম্পতি**র অবীধর হইয়া পরম স্থ**ে কাল যাপন করিতে** লাগি-লেন। এই সপ্তশতী কন্যাগণের গর্ব্বে দিজ পঞ্চের উরদে উনদৃষ্টি পুত্র উৎপত্ন হয় ৬। ইহাঁরাই রাটা শ্রেণীয় বলিয়া পরিচিত! কালত্রমে সেই দিজপঞ্চের কাৰকুক্সস্থিত পূর্ব্বলব্রেংপন পুত্রনণ পিতৃউদ্দেশে সন্ত্রীক বঙ্গদেশে আগমন করিলেন, কিন্তু ভাঁহাদি-গের সহিত সপর্য ভাতাদিগের অসমারেশ হইবে আশক্ষায় আদিশূর তাঁহাদিগকে বরেক্র ভূমিতে সভন্ত স্থান নির্দেশ করিয়া বঙ্গে স্থাপন করিনেন এবং বৈয়াত্রভাতাদিলের পরস্পা: ঈর্গা জনিত (খ্রমভাব হেতু, তুই:

कलग्रा ।

ভ পুনর্গতা গৌ**ড় দেশে আদিশুর মুপান্তিকে।** 

ব্ৰহ্মকোনীঃ কামকোটী হরিকোটী স্তব্যৈষ্ট্র;
 কন্ধগ্রানে: বটগ্রামন্তেষাং স্থানানি পঞ্চ।

৬ রাজা পুনরমূল্যং ধে স্থশতিকা বি**ঞারা**চ্ছেশ নিবাসিনঃ।

ছলোগা ধর্মধান্তকা নীতিমন্তর দীক্ষতাঃ।
এক্ডাঃ কন্যাঃ প্রদানাত্ত্ব বিপ্রমুখোতা প্রব তে ॥
এতেবাং তেন নিগড়ো তবিবাতি ন সংশরঃ ॥
রাজাক্তরা দহতেতাঃ কন্যা শীলগুলাবিভাঃ ।
রাড়ায়াং বহুবাজারাং বঙ্গাল্যসমিবিভাঃ ।
বাড়ায়াং বহুবাজারাং বঙ্গাল্যসমিবিভাঃ ।
বস্পান্ কন্যানাত্ত ভাষ্টে প্রান্ কুমারিকাঃ ।
তজবিলো গুলবতো দীলো দীলাভবং বধা ॥
ভাষ্টিঃ বিভিলোভ ভাঃ দক্তলালি বোড়লঃ ।
হব্বঃ ক্রিয়াভাত ভরমাক্তলাভবাঃ ।
বাক্ষা ক্রিয়াভাত ভরমাক্তলাভবাঃ ।

বিশ্বেষ্ঠি সমস্ত ভালাগৰ বিহইয়া গেলেন ৭। মহারাজ আদিশ্ব
বলৈ সাথিক বেদজ্ঞ পদ্ধ ভালাগ আনমন
করিয়া যজ্ঞাপ চিরস্থানী কীর্ত্তি রাখিয়া গিয়ান
ছেন, কীলতামে তদীয় পৌহতে বংশীয়
রাজা বল্লালও তাদুশ স্থেন ও উপায় ঘারা
সীয় নাম চিরস্থারনীয় ২ইটে গাবে, অনুক্ষন
চিন্তা করিয়া পরিশেষে প্রিংবর্গের সহিত
পরামর্শ প্রতে বদ্দীয় সনাজে কৌলীনোর
অবতারনা করিলেন।

#### বিজ্ঞান ও ধর্ম।

বিদ্ধানের সন্তি ধর্মতাত্ত্ব কোন বি-্রোর নাই। আবাজিক মতোর নির্দ্ধারণ <sup>শ্ব</sup>ধন্য-৬ ডেঃ বিষয়ীভূত, খার ৮েট**তক সত্যের** নির্দারণ নিজানের বিষ্ঠীভৃত। দ্মিক সতা যেত্রন ঈশ্বর হইতে নিঃস্ত, ভোতিক সতা তেখনই ভাষা ২ইতেই নিঃ-প্রভা সমার শেষন আবাহিনক রাজ। তেমনই তিনি ভৌতিক অগতের রজা। অভএব এই তুই শ্রেণীর সত্য মুখন দেই সকল সভেত্র আশ্রয়ভূমি ঈশ্বর হইতেং নিস্তেত, তথ্ন ইচারা পরস্পের কখন বিরোধী :ইতে পারে না। বিজ্ঞান এখনও সমুদায় ভৌতিক সত্য নিৰ্দ্ধায়ণে, সক্ষ**ৰ**িহয় নাই এবং যে ওলি নির্দ্ধারণ করিয়াকৈ সে শুনার মধ্যে কোন আংশিক কোনটা **ভ্রমাত্মক** এবং বেগন কোনটা বা এককীলে ভ্ৰমপূৰ্ণ,সেই

क्या विकारमंत्र गरिक क्षेत्रां सर्वाउत्स्व विद्राव दाव रम्था निशा बारक। किस वर् विद्याश कार्य हित्रकाशी श्रेट्र मा। विकास নের উন্নতির সঙ্গে নাফ সেই সময় আসিবে যথন বৈজ্ঞানিক সভা-সকল আধ্যাত্মিক मठा-मक्टलंद किছूगांज बिद्रांधी हरैदर मी. যথন বিজ্ঞান ও ধর্মতাত্ত্বে নাধ্যে কিছুমাত্ত প্রতিদন্দিতা থাকিবে না। এইরূপ যে দ-টিবে এখন হইতেই তাহার পূর্ম্ব লক্ষ্প দেখা যাইতেছে। বর্দ্ম-ভত্ত-বিলোধী বৈজ্ঞানিক মত-সকলের ভ্রম ক্রমে বহিষ্কৃত হইতেছে। আমরা এখানে ইহার একটা দৃপ্তান্ত দিতেছি। তুই শত বংসর কাল পূর্ব্ব হইতে সে দিন পৰ্যন্তে অধিকাংশ ইয়োবেশ্লীয় বৈজ্ঞানিক-দিলের মধ্যে একটা বিশাস ছিল যে জড় হইতে প্রাণের উৎপত্তি হইয়া থাকে। কেবল জীবন্ত প্রাণ হইতেই যে প্রাণ উদ্ভূত হ-ইতে পারে, কেবল চৈতন্য হইতেই হৈতন্য উৎপন্ন হইতে পারে, দে দিন পর্যান্ত ইয়ো-রোপীয় বৈজ্ঞানিকগণ তাহা মানিতেন না। তাঁহার। বলিতেন যে <u>ভাঁহার), উপযু</u>র্গারি वित्नित शतीका कतिश। (मधिशाद्यन द्य शूर्य হইতে অবস্থিত কোন প্রাচেশ্ব সাহায়ে লা লইয়া প্রাণ আপনা আপনি জ্যাতে প্রের তাহার। বলিতেন ;+- "lafe is not the City Life. It is capable of springing in to being It can be spontaneously generated." "खौरन कीर्रामद भाग-एकार नरहा উহা আপনা হইতেই স্ক্রুপাইয়া উঠিতে পারে। উহা বতঃ উত্ত হতে পারে।" এই र्कंपुराम-मन्यम्कारी अ রোধী নতটা আ**ত্ত কালেব, ইবজ্ঞানিকস**ৰ কর্তৃক নিখা। বলিয়া প্রমাণিত ও পরিজ্ঞান रहेबाट । श्राहाता विद्यान निक्रम कर्ता দেশিয়াছেন যে পূৰ্ব্ব হইতে শ্বনিত স্মেন लात्तव नाहाक चालिताक लाह बार माननी चानचि छेदलत हरेट नारव मा. क

৭ ৪ না বে পৃথ্যপ্ৰায়াস কাষ্ড্ৰনিবাসিনঃ। সধ্বাঃ সংপ্রকাঃ। আগতা গৌড় পেনেমিন্ গ্<mark>ডা রাজনিকং ভতঃ।।</mark>

বিভাগ মানান্য তথা বিবু**্তি প্রাদিভিত্র দ হতা** ম্বাবিষ্

দ্বিধা বিজ্ঞান বিহুনো রাচা বারেজকাদিন। বারেজ কল

द्यान, चटिएजा स्टिट्ड टिएडटनात क्या कथ-सरे मछव मरर । जाब-कालत रेश्ताक বৈজ্ঞানিকগণের যে তুইঅন সর্বাপ্রধান, প্রধাপক হক্ষলি ও টিওেল, ভাঁহারা এই ৰতের ুগুতিপোষক। অধ্যাপক হক্ষলি यदन्त्र, Laffirm that no shred of trustworthy experimental testimony exists to prove that life in our day has ever appeared independently of antecedent life. . "आशि चित्र विन-তেছি যে, কণামাত্ত এমন বিধাদ-যোগা পরীক্ষিত বিবরণ নাই, যাহাতে গুমাণ হয় ca, अथनकात नितन श्रृद्धवर्तो क्रोबरनद्र कर्नुष वाजिदबरके कोवन जालना सालीन जावि-ভূত হইয়াছে।" আবার বলিয়াছেন;— "The doctrine of Biogenesis, or late only from life, is victorious along the whole line at the present day." † "জাবাণু-জীবতা মত, অগাং জীব হ**ইডেই জীব উৎপন্ন হ**ঃ এই মত, বত্ত-यान मनदेश चारनाशांख क्य माज कारहा আদিয়াছে।" জড় হইতে প্রাণের উৎপত্তি, षाटेहणमा **रहेटल टेहलतमा**त्र खेरशिल स्ट्रेटल भारतः, देवक्वानिकानं सथन अहे या शहनान ক্ৰিয়াছিলেন, তখন সাধারণের মধ্যে আনেকে প্রাণের জন্মদাতা ক্রম্বরকে, চৈতন্যের প্রত্য-বৰ নেই চৈতন্যময় সৃষ্টিকর্তার অভিযে **অ**বিখাদ করিতে আরম্ভ করিয়াছিলেন। किन्छ अकर्ष के बंध छटान्द्र भएन भएन त्म प्रविचान हिन्द्या शहर उट्ट। अक **ममदम**ें केपटनंत्र चालिएक हा महामह स्रि क्रिकाहिन, अन्तर्भ सहरछ त्मरे मत्नर छा निश फिला

এইরপে বিজ্ঞান ধর্ম-তত্ত্ব-বিরোধী ও ধর্ম জগতের সত্যের বিলোধকারী যে সকল মত স্থাই করিয়াছে, জবে জমে বিজ্ঞান

তাহাদিগের ভ্রম দেখিতে পাইবে। এইরপে বিজ্ঞান জন্মে যত অশশূন্য হইতে থাকিবে তত্ই ধর্মের সহিত উহার বিরোধ চলিয় যাইৰে। এমন সময় আসিবে, যখন বিজ্ঞান ও ধর্ম অবিচ্ছিন্ন স্থ্য-সূত্রে আবদ্ধ হই দে এবং উভয়ের মধ্যে সম্পূর্ণ একপ্রাণতা সং স্থাপিত হইবে। তখন বিজ্ঞান ধর্মোর ভিত্তি-ভূমিকে শিথিল না করিয়া বিশেষরপে দৃঢ় করিবে। তখন বৈজ্ঞানিক সত্য-সকল ধর্ম-তত্ত্বের সত্য-সকলের অকাট্য প্রয়াণ স্বরূপ তথন বিজ্ঞান ও ধর্ম্মের আ্রোক मिश्वानिक इरेश। मका बाजाइक श्राप्ता मेश तार छेड्डान कतिरव, **धवर मानू सव क्रोवन**-পথের অন্তব্যর দূর করিবে। তথন বিজ্ঞান ও ধর্মের কার্যা জ্লা হইয়া দাঁড়াইবে। তথন বিজ্ঞান্ধ ও বৰ্মা মিলিত হইয়া একত্ৰে উন্নত হইতে থাকিবে এবং মানবজাতিকেও উন্ন-তির পণ্ণে অতাসর করিতে থাকিবেক।

## সাকারবাদী ও নিরাকারবাদীর ভক্তি।

নাকারবাদীরা নিরাকারবাদীগণকে একটা অপবাদ দিয়া থাকেন যে তাঁহারা ঈশ্বরকে গাঢ় রূপে ভক্তি করিতে পারেন না।
সাকারবানা নগর্কে বাদিয়া থাকেন, আমি
আমার আকারবিশিপ্ত উপাস্য দেবতাকে
যেরূপ গাঢ় রূপে ভক্তি করিতে পারি, নিরাকারবাদী তাঁ রু নিরাকার ঈশরকে ক্থনই
তেমন ভক্তি করিতে পারেন না এই অপবাদটা সম্পূর্ণীক্ষলক।

জাকারবাদী বলেন যে তিনি তাঁছার উপাদা দেবতার প্রতিমূর্ত্তি থানি চকুর দ-দ্ববেশ করি দেখিতে পান, স্বতরাং তাঁছাকে । প্রাণ ভারা। ভারত করিতে পারেন; কিন্তু নিরাক্ষাবাদী ভাষার নিরাকার ঈশরেব

Ning Century, 1878, p. 50%.

Criteque Addresses L. H. /Cureley

....

কিছুই ধরিতে ছুইতে পারেন না, স্কভরাং তাঁহাকে তেমন প্রাণ ভরিষ্যা ভক্তি করিতে পারেন ন।। সাকারবাদীর এইটা কেবল अनुसान गाउ। खास्तः माकात्वांनीत्क জিজ্ঞাদা করি যে, তিনি যে তাঁহার উপাস্য ্দেরতারে লাজু ব্রেন সে কি উলোর আ-কারের জন্য, না ভাষার তথা-গুলির জনা। যে উপান্ধ জেপভাষ যে গুৰ আছে, ভাহা জানি এই নাকারবাদীর কদেয়ে তাঁহার দেব-ভার বাচ ভাজি উদিত হয়। ভাজি গুণেরই चेश्रत १४: धर्महरे खना रह, जाकारहर चिभव दिन्ता आकारतत अना एं उन रहा ना। ल दश दलन माकाइवामैं हे जरीकाद कहि-শেন না। একথা অধীকার করিলে ভাঁছার। নিভাক্ত অভোপাসক নামের বাচ্য হইবেন। থাকার ঈশ্রোগাসক বলিয়া আরকেহ ভাঁহা-দিনতে গ্ৰা করিবে না। ভক্তি গুণেরই উপর এবং গুণেরই জন্য হয়, আকারের উপর কিম্বা অকারের জন্য হয় না; এ কথা হথন সাকারবাদী অবিশাস করিতে পারেন না, তথ্য তিমিশকৈ একারে বলিতে পারেন एर नियाकादवानी**द उभव**ङ्ख्यि भाकाददारीद ভক্তির নায় ক**থন গুগাঢ় হইতে** পারে না ? নির্বিটোলি সীয় উপাসা ইব্রুকে নির্বাকার বলিয়া জানেন ও বিশ্বাস করেন এবং উাহাকে আকারবিশিষ্ট মনে করা ঘোর ভান্তির কার্য্য भारत करावत । छोहारक शृंगीकारत मर्ख প্রকার তমহৎ পবিত্র ও উচ্চুগুণের একমাত্র আনার ও অধিসামী কলিয়া পূজা করিয়া গাবেন। দেখা **যাই**তেছে **সংখ্**রবাদী ও निवाकादवानी छेल्एवरे संस्थ छेलामा (एव-ভার ভণের ভক্ত, ফিল্ল সাকারবাদীর যে গুণের গুতি ভক্তি তাহা আকার সাপেক— আকার অবশ্যন না করিয়া তিনি সীয় উ-পাদ্য দেবতার তণ দেখিতে থান না ও উপলক্ষিও করিতে পারেন না। আর নিরা-

কারবাদীর বে তথের এতি তিনি তার।
আকার লাপেক নহে, তিনি আকার অবলম্বন
না করিয়া স্বীয় উপাসা ক্রমরের তপ ও সন্থা
উপলব্ধি করিতে পারেন। উভয় লাকারবাদী ও নিরাকারবাদীর পকে তাঁহাদিগের
উপাস্য দেবতার গুণই যথন ভক্তির সামগ্রী
ও ভক্তির উদ্দেককারী, তথন আর সাকারবাদী কি প্রকারে বলিতে পারেন যে তাঁহার
ভক্তির নায় নিরাকারবাদীর ভক্তি কর্থনই
প্রগাড় হইতে পারে না ?

## দেবগৃহে দৈনন্দিন লিপি।

खांकामस् ७३। मकास्तु ३४०२।

তভাত। আন্য "Contemporary Review for November 1870" পাঠ করি। ইহাতে জৈনধর্ম ও বৌদ্ধর্ম বিষয়ক একটি প্রভাব পাঠ করি। ইংরাজেরা অন্নপ্রজি অবলম্বন করিয়া কেমন ফেনাইরা কেনাইরা লিখে। বাজালারা ভাহাদিগের নিকট হইতে এই বিদ্যাণিধিতেছে।

৮ ভারে। অন্য আমার সহধ্যিনীর মঙ্গে ক্রাধিনাকে পাক ক্রেয়া বিলক্ষণ নিপুণ করিবার আনশ্যকতা নিস্যে কথা ইয়। আনাদিগের জ্ঞানীদিগের কথা দৃরে থাকুক, পার্কর বলিয়াছেন—"I cannot take that woman as ray wife who cannot make my bread." "বে ক্রীলোক আমার ক্রটি প্রস্তুত করিছে পারে না ভারাকে আমি আমার ক্রী বলিয়া গ্রহণ করিতে পারি না।" এখন দেখিভেছি ত্রাহ্মদিগের নধ্যে বিবাহ প্রার্থী ব্যক্তিরা পাত্রী উত্তম পাক করিতে পারে কিনা অনুস্রান করিয়া পাকেন। ইয়া ওড় চিক্ল বলিতে হইবেক।

১০ ভাল। অদা প্রাত্তে বেদ্দেশবর্থ নে কর করেরী
সেক্রেটরি বাব রাজেজনাথ নিজের দক্ষে সাক্ষাও করিছের

যাই। তিনি দেবগৃহের সন্ধিষ্ট রোহিনী প্রামে করিছেন। ইনি আমার "সে কাল আর একাল" গ্রন্থ
স্থামে অতি সদায় অভিপ্রায় প্রকাশ করিছেন। আনি বির্দ্ধি হইতে প্রভাগেমন ব্রুটে পর্যাত্ত্র বির্দ্ধি বির্দ্ধি হইতে প্রভাগেমন ব্রুটে পর্যাত্ত্র বির্দ্ধি বির্দ্ধ

ভাষা কোলা । যজ ছে:খ, জানাদিখের মনের সৃষ্ট্রতি ভাষা হইছে উংপর হর। সংসারক্ষণ সংগ্রীণ কোনে মন বর থাকিলেই উল্লাই ছে:খ ভোগ কলে। ছঃথের সময় একবার উজ্জারণে ভার দেখি, চতুর্নিকে মনস্ত আকাশ আবার সেই আকাশ আনল অরপের নারা গুর্গ, তাহা হইলে দেখ দেখি কেমন করিয়া ভোনার হু:খ থাকে। মন যতই প্রশন্ত হইকে ততই মুখ, আর যত মুগ্রিয়া থাকিবে ততই ছঃখ। আনজের দিকে মনকে প্রাারিত করিয়া দেও আর ক্স সংসারকে ভাক কর, দেখিবে ভোনার স্থাবের অভাব হুইবে না। 'লোবে ভ্রাতি তব্বেখং নাল্লে মুখ্যন্তি।"

১২ ভাষ। অলা "সাধারণী" পাঠ কবি। এ-বাবের "নাধারণী"তে পলিগামের অবজা নিষম্ম একার অতি উত্তম প্রভাব প্রকাশিত হইমাছে। মেলেরিয়াও দবিজ্ঞতা প্রমুক্ত পলিথানের অবজা শোচনীয়। আম! দিগের দেশে নানা কারণে জনসং দবিজ্ঞা গ্রিছ ২ইতেছে।

২৫ ভাজ। অন্য গৃহ মন্যে একটি নপ দেখা নায়।
জাশেকের জন্ম ইহা মনে করিয়া মন কিডড়িয়া গানেক থে
সিখনের মঞ্জ রাজ্যে স্প কেন থাকিবে 
 কিন্তু ইহাতে
ভাহার কোন মঞ্চলাভি প্রায় আছে উলা চিন্তা কবিয়া
মন স্কৃতা বাভ করিল, এবং কংগ্রেক্ব জন্মও বিদ্যাভাব আমার মনে উলিত হইয়াভিল ব্রনিয়া লক্ষিত
হইলাম।

১৯ ভাত্র। অদ্য স্লগ্নে স্কারে পর বীব চুমের
প্রাদিক উকিল বাবু সাবকানাথ চক্রবর্তী ও হাজানিবাগের
নার বজনাথ মুখোপাধ্যায়ের স্ট্র সাক্ষাই করি। ভাইট্র
দিগের সহিত অনেক বিষয়ে আমার কলোপকান হল।
বালকের শরীরবিনাশকারী বর্তমান শিক্ষা প্রাচানী, উপভাবিকার জন্য লোকের শোণিতশোষণকারী উন্নপ,
কতবিদ্য বার্ক্তাদিবের ব্যায়ামের প্রতি এবং সন্ধ্যার
পর স্লাভাদি বিশুক্ব আমোদের প্রতি অমনোহ্যাগ,
বার্গিরিক বিশাস্তার বৃদ্ধি, এর্প বৃদ্ধি যে সামান্য
স্বস্থার জ্বাক্তার বৃদ্ধি, আর্শ্রের সাহার্ত্তা ইত্যাদি
আনেক বিবরে ক্রমা হয়। আমাদিলের দেশ অবন্তির
গ্রাহার জ্বাক্তার জ্বাত্রের নামিট্রের দেশ অবন্তির
গ্রাহার জ্বাক্তার জ্বাক্তারের নামিট্রের দেশ অবন্তির

২০ ভাল। আন্য এথানকার ডাক্তার বাব্র সজে সমাজ সংখ্যার্থনিবলৈ অনেক কথা হয়। তিনি মুস্ন্ মানদিগকে বাক্ত করিনা হিন্দু করিবার আনেক পোষ-ক্তা ক্রিলেন। ্থং ভারে। অন্য বিশাতের প্রসিদ্ধ পান্ধি Cano Farrar কর্তৃক রাজপুরুষদিগের ধন্দ হারা পরিচালি হওয়ার বিষয়ে উপদেশ পাঠ করিয়া পরম প্লফিন হউলাম। তিনি উক্ত বিষয় সহক্ষে বলিয়াছেন--

"It is righteousness which is the pillar of nations, yea, and the pillar of the universe Break down that pillar and the universe fail into ruin and desolation." "প্ৰতি মন্তব্য তাতিকে স্তম্ভকলপ ধাৰণ কৰিয়া বহিয়াছে; ক্ষমত্ব্য ভাতি নহে, জগতকে পাৰণ কৰিয়া বহিয়াছে; ক্ষমত্ব্য ভাতি নহে, জগতকে পাৰণ কৰিয়া বহিয়াছে। সেই পত্ত লাজিয়া দেও, লাহা হইলে সম্ভ জপৎ ভাতিল চুবিদা দলিবে।" এই বাক্ষ্য উপনিষ্টেন্ত 'পঞ্চানতা। চুবিদা দলিবে। লাকানাং অনভেদান' সঙ্গোনতা। উপনিষ্টেন্ত গোলাকানাং উপানবদকাৰ ধ্যাবিহ প্ৰদেশৰ প্ৰতি পালিবিভিন্ন দেবৰ নাহেৰ ভাতা বিভন্ন স্থোৱি প্ৰতি । চুইই সঙ্গত বাজা।

নত ভার। অধা আমাত জ্ঞানন। ''জনন এমন বুণা চলে গেল''। জ্ঞাদিনে মনো কি তাতীৰ ভালের উদ্ভিষ্য। এই দিবদে মন্ত্ৰেন্ অপুন এ ও সেহ অকলি পুত্রৰ ইন্ধ্যের পূর্বি কি ভাজনারপে মনে প্রতিভাত হয়।

२३ % में। जाना "इस्किन कृतिय" भार्त मनाश्च र्भातः। १४११७ উপन्ताम ছ**्न अन्न आर्**ग्न स्थयस्त्रस् মীবন্যান বিক্লাকের এবং পরেপেকার সাধনের উপায় নক্ষ নদ্শিত ইতিছে। এই উপ্ট্যাস্ট নীর্স বিধ্য क्षपत अव'ली बनमारत विश्वित इवेब्राइड, "In a businesdike manner"৷ যে গে স্থানে ভাবের উচ্ছাুদ ২ ৩%৷ কন্তব্য, সে সকল সান অতি নীরস ভাবে লিখিত হুই রাছে: এমন শে ক্রেশ ও ভক্তির প্রথম প্রণমালাপ ভাগী লে:কে শেষন পান্তি। কবলিব্ৰত লেখা কাৰ্য্য সম্পা-দন কার, নেইরূপ প্রকারে মক্তাদিত হইয়াছে; ভাগতে ভাবের লেশ মাত্র নাই: এই উপনাাসটি "স্থশীলাব উপাण्यात्मतः" न्यात्र माधात्रण हिन्तू ममादक्षत्र जेभर्यानीः করিয়া শেখা হয় নাই; কেবল রান্সদিগের উপযোগী कांद्रसा (लक्षा इड्रेमार्ड । रोडा इडेक, ड्रेडा इड्रेस्ट আমাদিগের জীলোকেরা গৃহক্ষিয় অর্থ সঞ্চয় ও পরে: भकाव दिव्दंश अभूना छेभाम नाङ कविट्ड भारतम । अन्। आंगार প्रभाराशा गांडा-श्रेक्त्रांशीत गृश्य किन्त्र। তাঁহাকে ভক্তিও প্রদার গৃহিত শ্বরণ করিলাম। ঈশ্বর তাঁহার আত্মাকে কুশলে রাখুন । এই উপলক্ষে পরে नान अन्ता स्त्र।

१ जापिन। जना देवनानात्व काम शूर्विमात्र त्यना।

জন্য গুনিষ্টাম মনিংর লোকের ভিড়ে গৃই জন লোক নাকি মারা পঞ্জিরাছে।

ে আধিন। অধ্য তনিলাম বৈদ্যনাথের মন্তিরে কুইটি লোক মারা প্রভিবাদে কথা বে গুনিয়াছিলাম তালা কিয়া। ভিড়ে একজন লোক সানানা আবাত প্রাপ্ত কইর্নীতে। 'The queen comited direct black crows."

২০ আধিন। অলা একটি ভাব মনে উদিত হয়। তাথ ধরসাধনের সভার সহকরি। ধরের অফ ভিন্টী; ম গদা দিওর অল্লন্ড, পাপ প্রেকৃতি দমন ও পরোগবনের সাগনা। ৬ ব মেন্ন জনবকে **শ্বরণ করি**রণ দেখে, এমন क्रिया दकान परार्थ • द्या विष्कृत क्रिक्ट्यूड निकार व्यासना ্কৰিয়া ছিলেন ও এতান । বন ্**সংবদ্ধ তিহাকে** স্বয়েখ ब्रांट्येन ! Lady Finshawe आईना क्रियांकि लग 10 God; plant a thorn in every gourd of mine so that I may always remember thee? ্ত্সপ্রেষর! আমার পর্যাক অসার্জে একটি করিখা কণ্টক নিঞ্জি কর যে আনি তেনাকে। সরদা **শ্মরার করিতে পারিব''**। ছবে সংখ্যারত স্থাব্দ অনিত্যতা দেখাইরা পাপাঞ্জরতি দমনের যেমন সংগ্র श्रुष्ठ**िकरत, अमन व्यन्ता किंदू नर**ह। इस्त शर्याह खराष বেমন দেবাইয়া শেয়, এগুন এন্য কিছু মাহন নিজে ত্থে পাইলে বেমন অন্যের ছালে মহান্ত্রা ও ২৯, এনন **মনা কিছুতেই হ**য় না। \আতএব ছঃখ প্ৰোপ্ৰাণ সাধনের প্রাত অত্য**ন্ত সহব**/বৌ ব্লিণ্ডে হইবে। ২.১ ভোগ থ্যসাধনের গ**লে বিশেষ আবিশাক** বিশ্ব ्रव्य नेश्व केश्व कार्रेस । **जैश्वी आमान्ध्रार**क कीर्यमध्य বল প্রধান কলন।

১৫ আবিল। আদ্য নেদিনী প্রের জামদার বার্
১০ নালপ প্রেরণে ও ভাহার বাদ্যাধ্যক আ্যার ক্তপ্র ছাত্র ও বন্ধ বার্ আ্যালচন্দ্র দ্রের সঙ্গে সাক্ষার
কার। প্রবাজ নহাশ্যের সঙ্গে ধন্ম বিবরে কথোপকথন হল। তিন ভক্ত ব্যোপক্ষানের সমর ত্রাক্ষানিপের প্রাত কটাক কার্যান বালুনেন ব্রাদ্ধন্দ্রর
ডচ্চতা ও ভদন্বভাগিগের আচরল এই হ্রেম মধ্যে
বৈলক্ষ্যা দ্রুইই, হহার স্থান। কিছু আ্যান ব্রাদ্ধন্দ্র
লান ভাহার কারণ মহুধ্যের অপ্রতা। উদ্ভন্ম মধ্যে
আক্ষান্ত ব্রাহ্ সঞ্জানারের বুধ্যে আহে, সেইক্রা
আক্ষান্ত তার্থ ধন্ম সন্তানারের বুধ্য আহে, সেইক্রা
আক্ষান্ত তার্থরে আ্যানিলের বিরুধ্যার করি
ভাইর্য ভূলনার, আ্যানিলের বিরুধ্যার হিন্ত

কাররা লালে, সুন্য বন্ধ ক্ষেত্রের লোকের সম্বন্ধ সেরুপ চুট্ট ইরিয়া পালে মা। স্মত্ত্র স্থাচরও বিষয় প্রাক্ষিকর স্কুত্র সারধান স্কুরা ক্রুয়।

১৯ আধিন বিদ্য 'Sunday Mimor' পঠি করি। কেশব বার্না একণে জী স্বাধীনভার বিপক্ষে কছ গিথিতেছেন। তোমরাইত, ঠাকুর। প্রথম আরক্ত করিলে।

২০ আখিন। জন্য গত বারের "বলদর্শন" লাষ্ট্র কাল। বলদর্শনে "অভিজ্ঞান শকুস্তলা" বিষয়ে বে বাজি প্রভাব লিখিতেছেন, তিনি অতাস্থ্র অভিস্থৃত ব্যাক্ত। ভাষার কাব্যের দোষগুল বিচারে আক্ষ্রী ক্ষমতা আছে। তিনি পুরুব ও স্থা সভাবের প্রতেদ সম্বন্ধ যাহা লিখিয়াছেন, ভাষা অসাধান্ত মানবস্থভাব প্রজ্ঞান প্রশন কারতেছে।

২০ আখন। অন্য শেষ সংখ্যক বাদ্ধর পাঠ করি,
ভাগতে হুলা পূঞা নগন্ধার "ভারতশাক্তর মহোৎদ।"
শার প্রভাবে লোখনার বিশক্ষণ ক্ষমতা ও শাস্তার
গবেধনার প্রসাল্ভন প্রকাশ পাইতেছে। এই ভ্রমবন্ধে
ভাগলক কানবা যান বালালার হান্ধ্যে সামার্ক প্রবাত্ত
ভবেজত ক্রা বাহতে পারে; তাহা হহল যত ।দন
পোঙালকভা ভারতে থাকেবে, তত্তিন তক্ত ভ্রমব
হলে ওক্ত কন ভ্রমে হইতে পারে। ইইা আর হুলে
বের বিষয়ে নহে যে সামান্য মেটেকিরিসিরা যাহা পারে
ভাগার বিপদের সময় তাহাকে যুদ্ধে সাহাব্য
কলা, বাসান্য পারে না; এই জনা ভাহাক্ত
প্রসাল বাসান্য করে। আমানগের নার্ক্তা
কলা, বাসান্য করা করে। আমানগের নার্ক্তা
কলার কনা সকলহ রাপক মূলক লিভাবে প্রানা
হিন্দিলের জ্ঞানের গভারতা প্রস্তাশ কারতেহে।

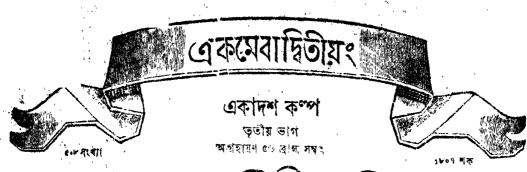
আগামী ৮ কা**তি**ক শুক্রবার "বালী-গ্রাপমার্থী" ভূতার পার্থশারক মধ্যেওুএর ২২বেন

्य रातामा कि (बानामाम राज्याक

৯ কাত্তিক শনিবার কাশনা আক্রসমান্তের আইছেক সাধ্যমারণ ভৎসব ছববে।

বিহারীকাল বক্ষোপাব্যার কশানক চ

काशाम (०० काष्ट्रिक प्रतिसेक्ष्णिकामा बाक्यनपारेक प्राज्य मान्यमानक एउनाम प्रतिसेक्षणिक (५०) व्यक्त प्रतिस्था प्रतिस्था स्थापक स्थापक प्रतिस्था वर्षा स्थापक नम्या बाक्यामानक स्थापक



# তঅবাধিনীপতিকা

श्रद्धारकसिद्मयश्वासास्यम् कि बनामोत्तद्दि स्व्याद्धश्रातः ० हटन शिन्यं ब्राच्यसम्बद्धाः स्वस्वेत्रस्वयेवसेकसेन्।हितीनन् मर्व्यथापि सञ्चीनवन् सञ्चोत्रयसर्व्यपित सञ्च्याः करूष्णे पूर्वसप्रतिससिति । एकस्य तस्येतोषासन्थाः पार्यक्रिकसेनिकत्र समस्यवित् । स्थित प्रतिसत्य द्वारकार्य्यस्थान्य कर्षास्तक्षेत्र ।

#### আদি ব্রাক্সনমাজ

**৩ কার্ত্তিক রবি**ধার জো**লা** সহ্হ ৫৬।
ভাষাচার্যোর উপদেশ।

শরৎকালের প্রদান মুক্তিতে ঈশরের প্রদান মুশক্ষবি কেমন দেদীপাষান প্রকাশ পায়! সরোবরে কুমুদ-কমলিনী প্রস্কৃতিত ২ইয়া **চন্দ্র-দূর্যোর প্রতি কেমন হা**দ্যের স্থাজ-ভাণ্ডার খুলিয়া দেয়! পদা কুন্দ কহলা সকলের**ই♦ নয়ন** ৺আকাশের প্রতি প্রেম-রশিতে বাঁবা পড়িয়া আছে, আমাদের আ-স্মাই কি কেবল মৃত্তিকার দিকে নুৱন নিয়ো-**किंड.कतिया-चे धर्य हरेट** विश्व हरेटा-অিন্নমাণ্ডাবে দিবা অবদান করিবে ৷ ঈথ-রের এই শারদীয় শোভায় অচেতন প্রকৃতি **८०७म शाह्या छ। ठेशार**छ — गागारनत गरह-. ত**ন আত্মা কিঃ অচেতন-প্রায় মোহ-শ্**যায় नेशान शांकित्व १ देश हरेंद्र शांत ना। অফতির বন্দর বিম্ন এসল মুখ-জ্যোতি-ভগবদ্ভক্ত ধর্মাস্থার বিপ্রেম-স্থাময় প্রসন্ন অস্তঃকরণ—এ তুরের কেমন মিল! महिष्क जारिम जागादनत् रुप्टातत হৰ বিশাইয়া প্রেম্ময় প্রমান্ত্র্যার প্রেমায়ত-

সাগবে খালাকে নিমগ্ন করি। িত্তে ঈধ্যার মধুর আধাস-বানীতে এট সম্বে আইন আমর ভারণ-সম্পূর্ণ করি; জাহা হইটো শত-কোটি নাস্থিকের অমসন কোলাহলের প্রতি আমানের কর্ণ হ'বর হউয়া र्याष्ट्रीत, अवर अवदात मारगत सङ्ग जग्नस्थिन সমস্ত অগংনয় ধ্বনিত হইয়া উঠিবে। এই সময়ে আইণ আমরা যত পারি÷ঈ্থরের <u>ে স-ন্যানের জ্বা-রশ্মিতে আমাদের হৃদয়-</u> প্রের পিনাস। নির্তি করিয়া নই, ভাই। হট্নে এমন্তবের বিভাষিকার প্রতি আ্মা-দের নরন অন্ধ হইয়া ধাট্<mark>তে, — উপন রক্ষে</mark>ব শাসন পরে, পুল্পের স্থাবান অঞ্নিতে, ভটনার নুভ্য লাযায়, আফ্রের সভ্য নীলি-মায়, ধর্মা**ন্সা**র ভাশান্ত মুখ-জ্যোতিতে, ঈখ-বের মঙ্গল নামাস্ত নব নব বর্ণে উদ্রাসিত हरेशा **উঠি**द्रि। अम**न मक्रानत**्यांकेत— এনন করুণার সাগর –পরমেখরকে আম্রা যেন ভুলিরা না থাকি ৷ তিনি যদি আমা-দিগকে ভুলিয়া খাকিভেন তবে আমাদের দশা কি ২ইত ! তাহা ছইলে কোথায় বা আমাদের বিজ্ঞান থাকিত—কোথায় বা কবিতা-ক্লাপ থাকিত—কোথায় বা তরুলত।

পশুপক্ষী থাকি ল-কোপাগ বা আমরা থাকি-তাম ! কি এক হতভাগ বিজ্ঞান পশ্চিম হইতে আমাদের ছেগে সংক্রামিত হইয়াছে— **জীশরকে** ভূলিলা প্রেটি মুহার জান**্সিখরের** প্রতি অপ্রভাই মাধার গরন গ্রুমার্থ ! ভূলিয়া বাকিবার এত এদ সত প্রতিতে আ**মরা** क्षे (त बन अन्द्रमध्यद्वार कुल्या शाकित १ বাঁহাকে জানর। প্রাণের মহিল প্রদ্ধ। ভাক্তি खीि कंदिएन अभारमह लाग भी भन हर-তাঁহাকেই আমৰা সালিতো অবিশ্বাস করিব ? यागेता कि रेशिए कि उस नारों हान हिता অবিধাস করিতে পারি না--ক্রিম সভাতার মায়ারী চাট্রচনে জনিশাস করিতে পারি না - আমরা কি মতেরে ছদ্দবেশগারী কৃত্রিম भट्छ। इतिशामे कतिट्छ , ११दि न!-- मझ्टलत इल-(तन-राती क्रिका समस्तत श्रांक व्यक्तिमा হরিতে পারি না,—আমাদের অবিধানের কি ্রতই পাত্রাভাব সে,যিনি সকল সতেরে পরম স্পা -সকল **মঙ্গলের** পর্য নিদান ভিড্রিক অবিধাদ না করিলে আমারেও আব উলা-शास्त्र मारे! जंगाति शृजमा ताकगीर कि এতই অন্টন গে, মাতাকে অদিশাস না ক্রিলে আর উপায়ান্তর নাই! মাসানী কুত্রিয় বংহা শোভাষয় বিজ্ঞান – যাহাঁ মুর্চ্চি-মতী অবি গা-তাহাৰ বি নমনিই পানা বাডিয়াটে হে, বাঁছা হটাতে জ্ঞান ধার করিয়া দে আনগর্গে জাত হুইয়াছে, তাহার প্রতি অবিশাসকে অপেনাৰ অক্টের ভূষণ করিয়া নির্লক্ষাংগ লোক-স্থান্তে অন্ত্রীনবদনে বিচরণ कतिर इटछ । जितिमाञ्चि (सारीख इंग्डा) सूल-ভ্ৰপ্ত বিজ্ঞান কেমন দু**ভের সৃহিত**্ত**রলিতে**ছে "মে বাস্পায় শক্ট আমান্ত কাৰ্বা -- তাড়িত ৰাৰ্ত্তিবহ আৰার কাৰ্যা—সংয়জের নাল: আমার কার্যা - আমার চরণে সাষ্টাঙ্গে- প্রাণি-পাত কর আমিই সর্কেন্দ্রা"। হে বিজ্ঞান 👆 ুমুত বিজ্ঞান! যাহা ত্মি বলিলে সম্প্র

তোৰার কর্মা—হিন্ত ভূমি কাহার কারা-তাহা একবার স্থান করিয়া দেখা কি তোমার উচিত হয় না ৷ ত্মি আনেক দিন ধরিয়া দাগা বুলাইয়া বুলাইয়া কিঞিৎ হাত পাকা-देशां हेश करहे अप्रीकांत करत ना, किन्न যিনি ভোমাকে হাত ধরিয়া লিথাইতেছেন, তাঁহার লেখা আর তোমার লেখার মধ্যে যে, কি আকাশ-পাতাল প্রভেদ, তাহা কি তৃষি আজিও জানিতে পার নাই ? জান যে, একগাছি তুর্ণের সঙ্গেও তোষার বাস্প্র-হলের তুলনা হয় না—জানিয়া অহস্কারে জলাঞ্জলি দিয়া তোমার অন্তর্যানী গুরুর চরণে প্রণিপাত কর—ও সভক্তিচিত্তে সভুতক্ত ভিত্তে দিন দিন জ্ঞান-পথে অগ্রসর হও। ইহা নিশ্চিত জানিও যে, নীরস ভ**ক্তিহীন** বিজ্ঞান বিজ্ঞান-নানের যোগ্যই শারু ত জ্ঞ ন্হে—ভাহা বিজ্ঞানের কলক্ষ-স্ত্রুল! ইহা আন্তর করিতেও মন অনেদে উচ্ছ্র নিত হইয়া উঠে যে, মনুযোর আত্মার প্রেম-সমুদ্র শুখা-ইয়া ষ্তৃক্ৰণ না মরুভূমি হইয়া যাইভেছে, জ্ঞানের সূগ্যালোক নির্ব্বাণ হইয়া যতকণ না অন্ধানসায় পরিণত **হইতেছে,—ততক্ষণ** সন্দা ঈশবকে ভুলিয়া শুক্ষ বিজ্ঞানের দাসত্ত্ব করিতে পারিবে না।

উপর আমাদের আত্মার আত্মা—তিনি
আমাদের পর নহেন; আমরা জ্ঞান, ধর্মা
প্রতি যাহা কিছু উপার্জন করিতেছি—
নকলই ভাহারই প্রসাদীশে যদি আমরা
কিজ্ঞানের ভক্ত হই, তবে উন্থেকে আদি গুরু
বলিয়া সর্কাপ্রে যেন তাহার চর্মাই প্রশিপাত
করি; যদি আমরা কবিতার ভক্ত হই, তবৈ
ভাহাকে আদি কবি আনিয়া লকাক্রি ভাহার
প্রেনে, যেন ক্রমাকে আরু করি; করে।
অসুষ্ঠানের সময় তাহাকে বেতা ক্রমার
তাহার আদেশ গ্রহণ করিয়া ক্রমার আদেশ গ্রহণ করিয়া
তাহার আদেশ গ্রহণ করিয়া ক্রমার আন্তর্গানির

প্রতি দৃষ্টি করিয়া মনকে ঠিক্ রাখি,—এই-রূপে চলিয়া যদি ঈশবের প্রেমময় সহবাদের মাধুদা একবার আমরা হৃদয়-ক্ষেত্রে রীতিমত অঙ্কুরিত করিয়া তুলিতে পারি-তবে মোহ-कालाइटलप्र महस्य अंग्रिका स्मथान इंहरड ভাগাকে উষ্ট্লিভ করিতে পারিবে না.— কিন্তু যে পর্যান্ত ঈশর প্রেম হৃদরে দুদরূপে বদ্ধ মূল না হয়, সে পর্যান্ত তাছাকে অভীব সাব্ধানে পোষণ করা কর্ত্বা;-কেন না অলক অবস্থায় তাহা একট্ডেই বিচলিক इंदेर्ड शास्त्र ; अकिंपितनत विरञ्ज तक वर्गस्तत পরিশ্রম নপ্ত ক্টয়া যাইতে পারে। এখন दाव का**रलंब माण्डिका-दिश्वि अर्भाग छा**रल (य. অনেক সরস-ভানয় থার্দ্মিক ব্যক্তিও তাহার এবল স্ত্রোত সামলাইতে না পারিয়া, আলা ভবনা সমস্ত হারাইয়া ফেলিয়া অবশেষে এই বলিয়া আক্ষেপ করিতে থাকেন যে, জগৎ আমার নিকট পূর্কের নায় আব শোভা পায় না--সকলই অসার! শরীর হইতে জ্ঞানময় প্রেমময় আত্মাকে নির্ন্নাদিত কারয়া দিলে শরীর অসার হইবে না তেঃ कि इस्टि ? **জগতের অভান্তারে** প্রমান ত্মাকে না দেখিলে জগৎ অসার যুর্ভভূমি ভুল দেখাইবে—ইহাতে আর আশ্রেগ্য কি? বিনি **অন্তরে বাহিরে** পরমান্তার মহিমাও করুণা এ অবলোকন করেন—ভাহারই নিকট জগতের অর্থ বিদ্যোতিত হইয়া উঠে— जिनि**रे में अंदात ज्ञानिमा र**हेट छात्नत দিবা**লেকে** উথান করিয়া, অপার আনন্দে ने यदनक श्री जिन्छ था। शान कृतिहा। मः नादन সমস্ত ত্রুপ শোক অভিক্রম করিয়া উঠেন। ंटि श्राम्भ का प्रति भागीतम्ब त्यार-অ ।বারের ক্রিক্রেক । ক্রেকণ নো আমরা তোৰাৰ পাই, ততক্ৰণ আমৱা ভয়ে

त्यादर द्वार पाइठ रहेशा प्रांग तापन

कति अति उद्यागातः भावेत्मरे भागता

আনন্দের জীবস্ত উৎস পাই। লাখরা সকল স্থাদে মিলে তোমাতে হৃদয় সমর্থ করিব বলিয়া এথানে সমাগত হইয়াছি। তৃষি লো-মার প্রসন্ন মুখজ্যোতিতে আমাদের হৃদয়কে পরিত্র বর এই আমাদের প্রার্থনা।

ভ একমেবাদিভীয়ং।

## উৰ্ত।

" अिंक म् अयः करणद्भिक सर्य ।

ক্ষণির মতে কুলারী ধর্মের তাদশ ক্ষণক্ষল পার্ ভারকীতে যাহা ভারাশ কবিগাছেন তারা ভাষরা দেখিয়াছি। চ্নাক্ষল বার্ইতিপর্কে যেনপ ক্লিপ্রায় সাজ্
করিয়াটেন ভাষাতে সংক্রেই প্রভাতি ইইতে
পারে যে, ক্মটের গ্রন্থ সমন্দ্রনিশ্র । ভাষা
মন্তন করিয়া ভাষা-হইতে সারোদ্যার করা—
বাপেরিটি গে বজু সহজ তাহা নহে; লেখকের
মত সার-প্রাহ্। স্কদ্র বাজি দারাই ভাষা
সন্তরে।

তাঁহার প্রবন্ধটির মাব কথা এই যে, गलूरम मलूरमा मधानुङ्धि-तिकाइहै कम-টের মতে প্রধান ধর্ম। কৃষ্ণক্রমল বাব বলেন যে "লেখা পড়ার চর্চ্চাকারী কোন ব্যক্তিই সাহস পূৰ্মক অন্ধীকার করিতে भारतन ना (य भरतद सुरथ-सुशी खुतः, भरतत ক্লেশে ক্লেশ-যুক্ত হওয়া মনুষ্টের হৃতীব-গিদ্ধ একটি গুণ। আদম স্মিথ তাঁছার Moral sentiments বিষয়ক গ্রন্থে ইহা এক প্রকার জ্যামিতির তত্ত্বের ন্যায় প্রতিপন্ন করিয়া গিয়াছেন। ইহাও কমটির নৃতন আবিদ্ধিয়া নহে, কমটের নৃতন **আবিদ্ধি**য়া **এই** খে. তিনি কহেন, এই সহাসুভূতিকেই আমাণের • ধর্মনীতির নিমন্তা ও মূলীভূত কারণ কারয়া তুলিতে হইবেক।" ইহাতে স্পান্তই বুখিতে পারা যাইতেছে যে, এ থাবৎ কাল লোকে



কয়টি সেই সিংহাসনে সহাত্রভূতিকে বসা-ইতে ঢ়া'ন। এগন সহাসুভূতি সভাস্তাই নে সিংখাসনের যোগা কি না ভাছাই বি-ठार्मा ।

কনটের মান সহাসুভূতি আর-দশটা ভার্নানর মবের একটা ভারন্তি--এ বই আর किहू है नरह। इ.४५३३ल बात् तालाउरहन--"ক্ষাটোৰ মতে কান, জেৰে, লোভা প্ৰভূ**ত্বে**র ইতা যাশর হৈছে৷, ব্যক্তি-বিশেষের, প্রতি স্কেহ, সারারণের প্রতি সন্থাসুভূতি, এই ভালি আমানের ওভাবসিদ্ধ প্রসৃত্তি।" তা স্থি ছর- তবে কমটি প্রবৃত্তি নিয়াই প্রবৃত্তিকে দ**মন** কার**তে বলিতেছেন।** এক প্রাক্তির नितिन्त् आबूर्डीत समाना श्रद्धि प्रमान থাকিতে পারে ইহা আমরা অধীকার করি ना ; এরপ প্রকৃতি-দমনের দৃষ্টান্ত পশু-পাওয়া যায়। পশুদিপের যথন অপতা এই প্রবল হয় – তথন তাহাদের ভয়-১, গ্র একেবারেই মন হইতে অন্তর্হিত হইছা যায়; क्तान अकरे। दर् जञ्ज यनि अकरे। क्य मूर्वभीत ছाना'त निक्षे-भारन यास-धाड़ा মুরগী তৎক্ষণাৎ তাহার প্রাণি তাড়া করে;. শাভের প্রাঞ্জিলের খুবই লোভ, কিন্তু মনুধ্যের ভয়ে ভাছার নে লোভ সব-সময় निक पृष्टि भावन कतिए भारत ना ;--रे-ত্যাদি। মলুষ্যের মধ্যেও এরূপ দৃষ্টান্ত বিরল নহে। কিন্তু ২≷লে ইইবে কি—প্রবৃত্তি সভাবতই অন্ধ, এমন কি—**প্রবৃত্তি জ্ঞানের** সাক্ষাৎ এতিছন্দা; প্রায়ৃতি যেখানে যে चंदन छदन इह, छ्वान (मशातन (महे जःदन যোহে অভিভূত হয়; আর জ্ঞান যেখানে যে-অংশে প্রাত্তুতি হয়, প্রবৃদ্ধি দেখানে সেই অংশে দমনে থাকে; জ্যামিডির ডড্বের নায় ইহা একটি অকটা সিদ্ধান্ত টাকাৰ

যে-সিংহাসন ধর্ম-বৃদ্ধিকে দিয়া আসিতেছে— জোধ লোভ যথনি অতি-মীতায় এবল হয় -- তণ্ন লোকে একেবারেই জ্ঞান-শূন্য হইয়া পড়ে, তেমনি আবার, **উত্তেজিত কাম-**क्लाधानित छेशत स्थन छ्वारनत मर्फाएकनी দৃষ্টি জাজ্মনারূপে নিপতিত হয়, **তথন** আপৰা হইতেই তাহাদের তেজ নরম পড়িয়া আদে। সহাত্রুতি-প্রবৃত্তি যে, এ-নিয়মের এলাকা-বহিভুতি, তাহা নহে;-দেন ভারতব্যায় **খেতাজ-দিগের স্থিত আন্সন্** গা**হেবের কেমন প্রবল**ু সহা**মু**ছূতি হইরা-ছিল, কিন্তু দে মহা**মু**ভূতি যে অনা**্**টের কভদুর পক্পাতী **ভাহা** কা**হাঝে অবি**-দিত নাই। এখানে কি দেখা **যাইতেছে?** দেখা যাইতেছে যে, ত্রান্সন স্চানু**ভূতি**-প্রায়ের উত্তেজনা-প্রভাবে জ্ঞান-শূন্য হইয়া পড়িগাছিলেন। সহাপুভূতিই বলো, আর খন্য কোন প্রবৃত্তিই বলো, তাহার উত্তে জনায় যে ক**খনই কোন ভাল** কাৰ্য্য ২৪ না—ইহা বলা আযাদের অভিপ্রেত নহে ;— নে কাৰ্য্য অন্ধভাবে হয় বলিয়াই ভাহার প্রতি আমাদের যত কিছু আপতি। এর-ভির কাছে পাতাপাতের বা নাায়ানাথের বিচার নাই ;—কোন শ্রে**রভি**কে যাদ*্*মনো-রাজ্যের রাজারণে অভিষিক্ত করা ধায়, তবে দে রাজা উপলক্ষে এই প্রবাদটি সম্পূর্ণ ৰ্থ খাচে<del>---</del>"অব্যক্তিতিত্ব প্ৰসাণোহপি ভয়ন্ধরঃ ;" তাহা দারা ভাল কান্ধ হইলেও हूरें अधित-किञ्च छ। हा वालक्का श्रीहात উপর আমাদের কোন আহা থাকিতে भारत ना। তবেই দাঁড়াইতেছে যে, महानू: ভূতির নিজের এমন-কোন রাজ্যোচত ভুণ नाहे याहाएक सत्त्र निःशानि । जाहात অধিকার অনিতে পারে ৷ ইহার উত্তরে कृष्णवगम वाव् इयरणा धरेक्रभ विमानन-क्या विशासक्त वरहे त्या "नहाम्कृतिदक्र খামাদের ধর্মনাতির নিম্না ক স্বীপুত

কারণ করিয়া ভূলিতে ছইবেক," কিন্তু ডা-हाटक अमहात्र अवस्थात अकाको नाजन করিতে দেওয়া হইতে পারে না—জ্ঞানকে ভাহার মন্ত্রীপদে নিযুক্ত করা বিধেয়— हेहाहे कम्णित निशूष षाजिलायः। এथान हेश्नर अंत्र ताकांत्र कथा गटन भट्ड, - ताका (करल नारमरे ताका-कारक महीरे ताका। क्षेत्रभ कृष्टिय नाम-कदम हेश्लाएउत सरमान চিত একটি পুৱাতন প্রথা—তাহা ইংল-उत्करे मार्च ; किन्न विख्वात्नत चाला-চনাস্থলে যে ধাহা--তাহাকে ভাছা বলাই ভा**न, তাহা ११रेन—बात-किছू ना** (११<sup>°</sup>क— কথার ঘোর-কের হইতে আপাতত পার-ত্রাণ পাওয়া যায় ! অত এব ধর্ম্ম-বিজ্ঞানের আলোটনা-স্থলে – সহাসুভূতিকে ধর্মনিতি নিয়ন্তা না বলিয়া ধৰ্ম-নীতিকে সহামুভূতিঃ नियुष्ट। विनाति है कि इय ।

অন্যান্য প্রস্তুতির নামা, মমুযোর সহাতু-**ज्ि अथम अथम महोर्ग-त्क**रद अत्नारमत्ना ভাবে কার্যনে করে; পঁরে জ্ঞান দারা নিয়মিত **হইয়৷ উত্রোত্তর** প্রশস্ত পথ অসুসরণ করে ৷ ষতকণ সহাত্ত্তির বা (বৈত্তা ভাবের) সংক্ষী-ৰ্বতা-দোষ জ্ঞান-দারা এক্ষালিত না, হয়--ততক্ষণ বৈরীভাষ বলিয়া একটা পার্যনর তা-शत मदम नदम नानिया थाटक ;- आभनाः खोश्रदक खक्र जारव जान वामित्व भारति है **এकामन्डॉ शतिनादत्** मत्या ध्र-निरण्डम चित्रवाद्या रहेशा छेट्ठ ; - भातमा दन्दन त সহিত বৈশ্বিতার প্রভাবে গ্রীকদিগের স্বদে-শাসুরাগ বেমন ভীষণ উত্তেজিত হইয়। উঠি-য়াছিল – সহজ অবস্থায় দেরপ হইবার কোন गडामा हिसाना । - এইक परनश शहरउट <sup>(व</sup>, दि अदिमादन महायूष्ट्रिंड अल-कहिंदि चाक्यूत काहा करत, तमहे পतियात जाहाह गरिक रेक्को कार सूक्त शहक है है। त्वा

रम, स्नमंगानरमत्र शतक्यादतत सरका रेसजी-ভাব হিন্দুদিগের অপেকা যে-পরিমাণে বেশী, পর-জাতির প্রতি বৈরীভাবও সেই পরিষাণে বেশী; মুদলমানদিগের মধ্যে রীতিমত জ্ঞানের চর্চ্চা হইলেই এইরূপ বৈরীভাব হইতে তাহারা উদ্ধার পাইজে পারে। অভএব অন্যান্য প্রবৃত্তির ন্যায় মহাপুভূতিকেও ফুলান-দারা নিয়মিত করা বিধেয়। জ্ঞান-ছারা এইরূপ যে, নিয়মিত বরা, ইহার গুইটি পদ্ধতি আছে;—্রথম, বিষয়-বুলি দারা নিয়মিত করা; দিতীয়, ধর্মা নাদ্র দারা নিয়মিত করা। বিষয়-বুদ্ধির লক্ষ্য স্বাথ, ধর্ম-বৃদ্ধির লক্ষ্য প্রমার্থ। এ বিষয়টি আনৱা গত সংখ্যক ভারতীতে বিশ্ব-कर्प विक्रज कहिया वीनग्राष्ट्रि—स्वतार এখানে তাহার প্নকলেখ বাছলা।

এখানে কেই বলিজে পারেন যে, "বিষয়-বৃদ্ধিই বা কি—আর ধর্মা-বৃদ্ধিই বা কি— বুদ্ধির কথা ছাড়িয়া দিয়া সহানুভ্তির প্রতি একবার ভাল করিয়া প্রাণিধান করিয়া দেখ; সহাসুভূতি বলিয়া মনুষোর যে একটি ঔার্ত্তি আছে তাহা কোন সন্ধীৰ্ ক্ষেত্ৰে বন্ধ থাকি-বার নহে, মনুষা-মাত্রই মনুষোর সহামুভূতির পাত্র।" আমরা বলি যে, জ্ঞান দারা নিয়মিত না হইলে দহামুভূতি সভাবতই ওরূপ বন্ধন মুক্ত হইতে পারে না কিন্তু সে কথা ধাক্-এখন আগরা তর্কের খাতিরে তাঁহার ঐ কথাই শিরোধার্যা করিলাম; তাহা হইলে करन कि माँखाय प्रथा या क ;- यमि श्रवह-বিশেষের বশবর্তী হইরা জন সমাজের ২ং-পরোনান্তি স্বশৃগ্লা-নাধন কথন্ত মনুদ্র-জাতির সাধায়ত হয়, তীহা হইলে ইহা আর अशीकात करिवांत को शक्कित ना (य, एगी-माहि वर भिशीनिकाद मेरी के जातक शूर्त्त ্সেরপ উন্তিলাভ করিয়া বসিয়া আছে, হতরাং ঐ ছুই পরত্ব মনুষা অপেকা ভ্রেষ্ঠ।

भोगाहिता (क्यन एम्थं नकत्वहें मकत्वर দৰ্শক শ ष्यमा षाष्ट्रे अञ्चल कार्या कतिए । एक — विदास (य काशादक दरन खाश छोड़ादा खारन ना; তাহাদের মুশুগুল স্যাজের চুলনার আন-দের সভাত্য স্থাজ অনেক গশ্চাতে পড়িয়া রহিয়ারে। কিন্তু তাহা বলিয়া সত্য-ই কি खाश्वः मगुरः कर्भका ८ एष्टं जीत ? कथनहै ना १ - का कि गठ। का शाहि वरन जातन

কাচাকে সলে জানে না--এরতিই ভাহা-নের একম'ল হার্লা কার্লা বিধাতা; ইংনাতেই সমুক্ষার গাঁহত ভারাদের অকাশ পাতাল

नो, राष्ट्रत टाक्टा के देशा कारन नो, नाम

**27**071

🖑 কম্টি এদিকে বলিতেছেন—গ্রহন্তি-বিশেষকে ননের অধিপতি-রূপে বরণ করি-লেই শব্দকার্য্য, চলিতে পারে,—৩-দিকে বলিতেছেন 'ভিন্নতিই আমাদের উদ্দেশ্য।" উন্নতি বুলিতে তুইরূপ উন্নতি বৃকাইতে পারে, –(১) মনুষোর আত্মার উহ্নতি—ইহা অনন্ত উইতি—ইহা ধর্মাবৃদ্ধি ব্যতিরেকে গুদ্ধ বেবল এর্তি ছারা ঘটনা মাধ্য নছে; (২) জন সমাজের অশুখলার উহতি,—আমাদের **মটে ইহা** আত্মার উন্নতিরই ফলত রূপ। কিন্তু যদি আল্লাকে ছাড়িয়া দিয়া শুদ্ধ কেবল अन भग'एकद अनुर्धालाहे खिर्चा उत्र हत्न नका হয়, হবে দে উন্ভিকে অনস্ত উন্তি বলা সঙ্গ নহে-কেন না মধুমকিকারা কে-উহ্নতির চর্ম দীমায় উপন্ধীত হইয়াছে। মধুমক্ষিকা স্থলত পরস্পা-সহাতুভূতি— একটা অন্ধ প্রবিভ যদি মণুযোর একমান পর্যান लापर्यक इस, ७८७ श्रुया-मगार्वत श्रुह ञ्चलुख्यला माधित इटेराज भारत, देश चागता অস্মীকার করি না; কিন্তু মনুষোর সেরূপ স্মবস্থাকে আমরা উল্ভির অবস্থা বলিতে পারি না। মনুযোর পক্ষে—গুরুত্বির অধী-নতাই অবনতি আতার আধিশতাই উন সহিত মামের ক্রাদ কর বিটা কর

মতি ; আর, ধৰা-বুদ্ধিই সে উন্নতির প্র

এখন ধর্মা-বুদ্ধি কি ? ধর্মা-বুদ্ধি কি ভাহা জানিতে হইলে—মন্বুয়ের ধর্ম কি জান্তা জানা আবশাক ; সমুখোর ধর্মা কি 🛊 জলের ধর্মা যেমন শৈতা, অগ্নির ধর্মা বৈমন উভাপ गयुरशात भन्म (गरेकाल मयुशाय । (स चुकि মনুযাত্ত্বে অনুকৃষ ভাহাই ধর্ম-বৃদ্ধি; এই জন্য মনুষাত্ব কি ভাগার সন্ধান-পাইলেই,: ধর্ম্ম-বুদ্ধি কি তাহা স্পাষ্ট বুঝিতে পারা শ্রষ্টিবে। মনুযাও কি ? সত্তোর জন্য সভাকে ভালবাগিতে কেবল মৃত্যাকেই দেখা যায়, পভরা ইহার দিক্ দিয়াও যায় না; এই জনা আমরা বলি যে, ইহাই মনুখোর মনুষ্যার। মনুষ্ এগটি ক্ষুদ্র ভীব—দে দুই দিনের জন্য পৃথিবীতে আদে- তুই দিনে চলিয়া কার 🦫 এ হিলাবে অনা জীবের লাহত মনুদ্রের কিছু যাত্ৰ এভেদ নাই। প্ৰভেদ তবে কি হিসাবে ? প্রভেদ যে-হিসাবে তাহা এই-গোড়ার সতোর জন্য (মূল-সভা এবং ক্রব সত্যের জনা ) অন্য জীবদিগের কো**ন** गाया-वंश्या नारे, ममुराहे एकवल छाहात এবসাত্র অনুরক্ত ভক্ত। আপাডডঃ মনে হটতে পারে—ইহাতে আর বি**শেষ কি** इहेन १ कि**स** यथन (मथा याद्रे—मजा निक বৃহৎ বাশিরে, কালে তাহার আদি পাঁওয়া যায় না, গভীরতার ভাষার উপা্লা-ওয়া যায় না, আকাশে ভাষার ব্যাপ্তির ইয়ন্তা भाउरा पात्र ना .— अपर दमरे महत्वाद सनेद মন্থ্ৰোর তুর্নিবার আক্রাক্তা বিহুতেই ক্রান্তি गात ना- जनम गत्न इस देव अक्रम लक्स-শ্চর্যা অনুভু উর্দ্ধান্তি কেবল মসুযোগ স छति। मध्यत्म अक्षम (कर् बिलाई नाम "THE STATE OF THE PLANT OF THE PARTY OF CULTURE FIRST HIG. PAG. CH

বন্ ! কিন্তু সতুষ্যের আন্ধ্রী এ কথায় প্রবোগ कामितात शाब निरंश मनूत्यात वाजात. পরিশূর মতোর দিকে এমনি প্রবলরপে चाक्र बिहार - (य, दम नाड़ीत होन किडू-তেই ছিল হইবার নহে। মূল সত্তার জন্য আত্মার এই যে অনুক্রাকু—ইহা কি কয় আশ্চর্যোর বিষয় ? মূল-সত্যকে মনুষ্য আ-জিও সম্চিত আরত করিতে পারে নাই, এবং কথনও গৈ পারিবৈ—ভাহার ও সভাবনা মাই, – তব্ও কেন মনুষোর আগ্রামন সভেত পানে তৃষিত চাতকের ন্যায় যুগমুগান্তর हाश्या खार्ड !-- किनल कि छाटिया शाकाई মার! শি**ন্তর পিপাস**িনির্ভির জন্য স্থনা ৬% বহিয়া**ছে,—মনু**ষোর আহার পিপা্যা-निवालित खना कि किছूहे नाहै। अ यनि हत्त. ভবে **মনুষ্যত্ব অপেক্ষা পশুত্ব শতগুণে** ভাল! কিন্তু প্রকৃত কথা এই যে, মূল সভ্যের প্রতি শাথার এ বৈ একান্তিক ম্পৃহা – ভালা কখ-ন্ট বৰ্থে হ**ইবার নহে।** আত্না মূল সভাকে সম্পূর্ণ রূপে আয়েও করিকে না পারুক্, যুগে ষুণে কিছু কিছু করিয়া আয়ত্ত করিয়া আগি-তেছে শ্সাধক-গণের আপনার আপনার আ ত্বার পরীক্ষাই ইহার বলবং প্রমাণ। गांवक-शत्पत् **गत्या मूथा অভি**দুদ্ধি श्रवः मुथा ् कर्डवा न हेया गउए जुनु नाहें कु मकल मृगारल तहे এর রায় ; সাধকের আত্মা যথনই মূল নত্যের সহিভ একভানে মিলিত হয় তথনই व्यमाञ्चल्हान-नमूद्ध बरभाइन कतिशा नरीञ्च इटेन উঠে। স্পেन्मदतत नाम विकानविक প্রভাৱ ইহা অকাটা বলিয়া স্থির করিয়াছেন ্যে জগতের সকল সভাই আপেক্ষিক সতা— কেবৰু, জগতের মূল-স্থিত সভাই পরিপূর্ণ শতা 🗝 জুবে, স্পেন্সর বলেন – দে মূল-সত্য একেবারেই অজ্ঞের, স্তরাং আমাদের জ্ঞান ও-কার্ম্বর সহিত একেবারেই সম্পর্ক-রহিত; কিছ স্পেতার ইহা ব্দ্বীকার ক্রিতে পারি-

বেন না যে, মূল সভ্যের প্রভাবেই সমস্ত জগৎ সতা হইয়াছে, স্বতরাং সুমস্ত জগতেঃ সহিত মূল-সতেরে ঘনিপ্ত স্থল রহিয়াছে: তবেই হ**ইল যে আমাদের অন্না**র সহিত – জ্ঞ।ন-প্রেমের সহিত—মূল-সভেতের ধনিপ্র সংগদ तरियारक; अरे जनारे खानता तन तम, মূল সত্যের প্রভাব যখন সকল সভেনে ই পর্থান—তথন ম্ল-সতেরে প্রতি আমাদের জানের ঐ যে, আকর্ষণ, উহার মন্যেও সেই ভাষার প্রভাব কার্যা করিভেছে; মূল-সভা দ্বাদ প্রভাবেই আমাদের জ্ঞানে প্রকাশ পাইতেছেন – আমাদের কল্পনা-প্রভাবে নয়ে। খানতিগ্রেশ খামরা বলিয়াছি এবং **এখনও** বনিতেছি যে, মূল-সত্যের প্রতি আল্লার এই ে তান্তরিক টান, ইছাই মনুষোর মনুষাত্ব;---শৈত। যেমন জলের ধর্ম**—উত্তাপ যেমন** অগ্নির ধন্দা মূল-সতেরে প্রতি আকর্ষণ দেই-রূপ মতুদ্যের দর্ম। যে- ক্রি দেই আকর্যনের অন্তক্ল-তাহাই পর্মা-বৃদ্ধি; কার, যে কার্য্য ধর্মা-বৃদ্ধি অনুসাবে কৃত হয়, ভাহাই ধর্মা-धें घाट बरेक्स माज़िंद्उट त्य. মল-নাত্রের উপরে **গেমন সমস্ত জগং** প্রা**তি-**ষ্ঠিত রণিয়াছে, দেইরূপ মনুষোর ধর্মত প্রতিষ্ঠিত রহিয়াছে। আমরা মূন দতা কাহাকে বলি তাহা স্পষ্ট করিয়া খুলিয়া বলা এখন আবশাক ;—

মূল দতা দকল মতেনেই মূল; স্তরাং
তাহা পরিপূর্ণ দতা—তাহাতে অপূর্ণতা-দূচক
কোন লক্ষণই থাকিতে পারে না। জ্ঞান
মঙ্গল, নাার, ইত্যাদি বত কিছু দভাব আহ্ছু
সমস্তই দেই একাধারে বর্ত্তনান—এবং অনায়,
অমঙ্গল, অজ্ঞান, এ-দকল অদভাব দেখানে
ছান পাইতে পারে না। এই জন্যই লামরা
বলি—সমস্ত জগৎ মঙ্গলের উপর প্রতিষ্ঠিত,
ন্যায়ের উপর প্রতিষ্ঠিত, জ্ঞানের উপর প্রতিঞ্জিত। জগতের মূল-ছিত ন্যায় মঙ্গলাও

জ্ঞানের উপর মমুষ্যের এমনি অটল আস্থা যে, যদিও আমরা জগতের অপূর্ণতা নিবন্ধন অন্যায়ের অয়—অমঙ্গলের জয় অসত্যেব জয়-শত শত বার বেখিতে পাই, তথাপি আমরা ইহা বলিতে কিছুমাত্র সঞ্চিত হই ना त्य. जनराज भएलात जात्र ध्हेरतरे ब्हेरत, মসলের জয় হইবেই হইবে, ন্যায়ের জয় ষ্টবৈই হইবে। জগতের ম্লান্তি ন্যায়ের উপর নিভর করিয়াই আখরা ফর্মান্ডকেরণের ্**সহ্তি** বলিতে পানি যে, যে ভাজি জগৎকে ঠকাইকে যায়, মে আগনি ঠকে, যে ব্যক্তি **জগতের** হিত্যাবন করিতে যায় লে গাপনার হিতসাবন করে; যে বাজি জগতের চেরস্থায়ী উন্নতি সাধন করিতে যায় সে আপনারও চিরস্থায়ী উন্নতি সাধন করে; যে কাক্তি বগতের অক্ষা জীবন ভাবং অনন্ত উয়তির बना षांभनात था। गिला (पत्र, त्म कालि ে **নিজেও অক্ষয় কী**বন এবং অনুত্ত উন্নতিলাভ **করে। - ঈশ্বরের ন্যায় নি**য়ম ত্রতি মনুদেরে · **আত্মা এবং দেই আত্মা**-ছাড়া আর সমস্ত कार-वर पुरेक छोन नत्धन हुई भारत পরিয়া আছে ; । নারবান্ মূল-সভ্য মুধাছেরে আছেন বলিয়াই মনুষ্টোর আত্মা যেমন জগ-তের মদদ চায়, জগংও তেমনি মনুষোর আত্মার মগল চায়। শে বাভিন্ন জগতের মঙ্গল সাধনের জন্য আপনার হৃদয়ের ত্রোড় **প্রসা**রিত করিয়া রাশিয়াছে, তাহাকে এক मिटक ताथ এবং জগংকে একদিকে রাখ, ু দৈখিৰে তাহার গুরুত্ব জগতের গুরুত্ব জলেকা कान जःरनहे नान नरह। कुछ विनहार्छन হে, একদিকে আকাশ-স্তি অসংখ্য নক্ষত্ৰ-জ্বগৎ আর-এক দিকে আত্মার অভ্যন্তরস্থিত ধর্মা-বৃদ্ধি, এই ডুইটি আশ্চর্য্য ব্যাপার বেমন पागात गुनक्क छ ज्ञा-काल जेशतत मारा-(भात लीतिष्य प्रत, ध्रमन स्वात किहूरे নহে; ইহার দিগুড় তাৎপর্য এই বে.

একটি-মাত্র আছোর অভ্ন-সান্ত্র করিছা ष्मार्था ष्मार्कत ष्मातिहर्गते नाश्चित महिल ওজনে সমান। যদি অগতেরই জনস্ক কাল উ-মতি চলিতে পারেত্তবে কি জগতের ঝথার वाशी--इर्थत अशी--गसूका हुई-हार्ति-किन পৃথিবীতে মহা রব-দব লক্ষ-কম্প আক্ষাল্য করিয়া - কিয়ৎকাল পরেই জম্মের মত সাড়া শক্ত বিস্তর্জন নিয়া অগাধ মহা-শ্নের পরি-न्छ इटेर्स ! छोहा यमि इस छत्न स्वत्र**्ड** মূলবৈত ন্যায়ের গাত্র চিরকলক্ষে কলক্ষিত হইয়া রহিবে। জগতেব মুলেতেই **এইরূপ** ন্যায়ের বিপর্যয়-দশা !—ইহা বদি একবার মনেতেও ভাবনা করা যায়, ভাহা হইলে নায়-ও ধর্মানুগত কার্য্য করিতে আমাদের হস্ত পদ একেবারেই অসা**ড় হই**য়া পড়ে। भून गडा यनि मजामटाई नकाविशीन—खे-(फना दिशेन-र'न, किया यपि मूँल म**र**ाउद উদ্দেশ্য সভাসভাই আত্মার বিনাশ ও জগ-তের অশঙ্গল হয়, তবে ক্থন্ই<sub>্</sub>আমরা ম-ফলকাৰ্য্যে কৃতকাৰ্য্য হ**ইভে**ুপারিব না<sub>ই</sub> ইহ। স্নিশ্চিত; তাহা হইলে মন্দল-কার্ম্যে 🐠 রত্ত হওয়া আমাদের প্রক্রের বৈড়-ন্দন। কিন্তু বাস্তাবক এই যে, পৃথিবী বহুৎ সুষ্টের আকর্ষণ ছাড়াইয়া লইয়া অন্ধকার-ময় মহাশুনো আপনাকে হাৱাইয়া ফেলিতে পারে,তথাপি মঙ্গল-নিষ্ঠ আত্মা কথনাই মঙ্গল-ময় মূল সত্যের আকর্ষণ ধৃইতে বিচ্যুত হুইয়া বিনাশ পাইতে, পারে ন। । "ন। इ कुन्। কৃৎ কল্ডিং তুৰ্গতিং তাত গ্ৰহ্ম । আছাৰ र्वेडास्टर व्यव्यव क्रिल्ट श्रे मानल-कर्न भठाएँ छेनमां कन्ना चाइँट नाद्व मृद्व যাইতে হয় না। মূল-সভার প্রক্তি আনা-দের আগ্রার এই বে একটি মানাভিক আক र्वन-हेश एकमिटक बागाएस सम्बद्ध नर् कार्रात सन-धन्तक, चात धर्मानक चाना-रमत्र पायात्र अवसरपत्र निमान

ন্দশসতাকে ছাড়িয়া, অবিনাশী আত্মার অনস্ত উনত্নিকে ছাড়িয়া, জনসমাজের অনস্ত জনতির প্রয়াসী।—ইহারই নাম ''গোড়া কাটিয়া আঁগায় জন।"

আমরা যেখানে বলি মূল-সতোই আমা-দের বিখাস, কম্টি সেখানে বলেন "প্রাক্ত-जिक नियमीवनीहे जामानित्नत विश्वाम"। हेश विनश्राहे यपि जिनि काछ थाकिएजन ভাহা ইইলে ও-কথাটি আমরা শিরোধার্যা ক্রীরিয়া, তাহার উপর আর-একটি কণা কেবল **শ্রই বলিতাম** শে, প্রাকৃতিক নিয়গাবলীও িয়েন বিশ্বাসা—আধ্যা**ত্মিক** নিয়মাবলীও তেঁমনি বিশাসা। আগগালিক নিয়মাৰলী ক্রিকৈ বলে, এবং প্রাকৃতিক নিয়মানলান সহিত তাহার প্রচেদ কি, ইহার বিচারে গ্র-इन्छ श्रेटल ाूथि वाड़िए। गाईटन, এই ভয়ে धर्यात्न षामा। धक्षे मञ्ज पृहीस धान ভাহার স্বল্ল আভাগ দিয়াই ক্লান্ত চই-তেছি, –এইটুক্ বিষয়াই ক্ষান্ত ২ইতেছি গে, ঞ্জব-তারার দিয়ে চুঁবক-শলাকার আকর্ষণ যেমন প্রাকৃতিক নিয়মানুমারে হইয়। গালে, মুল-সত্যের প্রতি আত্মার আকর্ষণ মেইরূপ जानाञ्चिक निवसानुमादव इहेका बाटक। সমস্ত প্রকৃতি জের বিস্ফ, মনুষ্য জ্ঞাতঃ পুরুষ ্ — কৈয় বিষয় নকলকে জ্ঞানে আগ্রন্ত করা মনুষ্যের পকে ধেমন জাবশ্যক, ক্রাতা পুরুষকে জ্ঞানে আয়ত্ত করাও তেখান আবশকে। বাঁহা-বিষয় সকলকেও আম্বর পূর্ণক্রীপে জানিতে পারি না, আমাদের আপ-नाटण्ड योजाटिक अवागडा श्र्रितट्र कानिएक পারি না; বাহ্য বিষয় সকলও আমরা কিছু কিছু জানি, আত্মাকে আমরা কিছু কিছু জানি। ধাহাকে যতিটুকু জানি—তাহাকে তাহা অপেকা অধিক জানিবার জন্য আমা-দের জ্ঞাসা অবশিষ্ট থাকে। কোন বিষ-द्वीर यदेवले नाजा स्थाना रहेशाँ ह . विलश

মসুষ্য অহকার করিতে পারে না; মনুষ্য षाभनात खारनत महिमा काभनारण तकवल এই পর্যান্তই বলিতে পারে যে, সড্যের প্রতি ্তাহার অসামান্য টান আছে, তাহার লত্য পিপাদা কিছুতেই<sub>্</sub>নিরুত্তি মানিবার নহে। সতোর এই যে ছুর্নিবার পিণাসা-ইটাই गजूना-ख्वादनतः कीवन । किन्न द्रशः कथल বাবু 'প্রাক্তিক নিয়মে বিশ্বাস''\_এই কথা-টির এইদ্রণ ব্যাখ্যা ক্রিতেছেন গে, "প্রামা-ণিক দৰ্শন বলিতে চাহৈ না –কেমন করিয়া পূথিবী সৃঞ্জ ছইল, অগবা পুরুবের অন্থি रहेर्ड ओरमारकत स्रष्टि हरेन अध्वत। लक्षात মুখ হইতে ত্রীক্ষণের সৃষ্টি হইন ইত্যাদি। প্রামাণিক দর্শন বলে জ্যানিতিতে বিশ্বাস ক্যা, বীজগণিতে বিখাস ক্ব,জ্যোতিষ, পদাৰ্থ निम्ताः तमायमः भतीत वितान, गमाज भाज, ७ পৰ্মনীতি (Morale) এই সমস্ত শাঙ্গে যে **সমস্ত** অভান্ত দিদ্ধান্ত স্থির হুইনাছে তাহাতে বি-খাদ কর; এই বিশাস করিতে মতভেদ ন.ই, বিবাদ বিদশাদ নাই, অনৈক্য নাই। যাঁহার <sup>छेळ</sup>। र्जिनरे के भकत गिका**रख**त ख्यान সংগ্ৰহ কৰিতে পারেন। কৃষ্ট কৃছেন এই সকল নিদ্ধান্তই প্রামাণিক দর্শনেক বনি-য়া: " ইহাতে এইরূপ বুঝাইতেছে যে, জামিতি প্রভৃতি বিজ্ঞানের কুতক্ওলি অবিষ্ণু **চিদ্ধান্তেই মনুষ্টোর জিজ্ঞানা** বা জ্ঞান-পিণাদা সমাক্রণে নির্ভ হইতে भारत। किन्नु शूर्टकाँ**र तान**ाहि त्य, **हूस**क-শলাকা ধ্রুব-ভারার দিকে আকৃষ্ট থাকে-ইহা যেমন একটি প্রাকৃতিক নিয়ম, দেইরূপ আহার লক্ষ্য পূর্ণ সত্যের দিকে আয়ুক্ত थारक हेरा এकिए जावााज्यिक नियम। धरे নিয়মের প্রভাবে আত্মার সত্য-জিজ্ঞাসা কিছু-তেই निवृত्ति गानिवाव नटर। य निन यनू-যোর সত্য-জিজ্ঞাসা একেবারে নির্ত হইগা **বাইবে, সেইদিন ভাহার মনুষ্যহও** একেবারে

চলিয়া যাইবে;—ভাহার জ্ঞানের জীবন বিনষ্ট প্রাকৃতিক বিজ্ঞান-শাস্ত্র যেরূপ অপক সিদ্ধান্ত হইতে ক্রমে ক্রমে পরিপক मिकार छत नित्क ज्ञानत हरेगा वाभिएल इ. অব্যাত্ম বিদ্যাও দেইরপ : धभन (भन्न Ogloric হটতে (নুর্গাৎ তাপ ব'লী সুক্ষা পদার্থ-বিশেষ-১ইতে) উভাপের সংপতি কেইই विश्वाम कर्तन मा, अहेक्स अकाद मुख इ-ইতে ভালালের স্থিও কেন্ট্রিখার করেন না, উভয় বিভাসেরই কাল এখন গিয়াছে। এখনকার নিদ্ধান্ত এই বেং ং 'গবিক ক**ম্পনই** উভাপের কারণ--এবং প্রিবর্ণ মূল সভাই সকল জগতের মূলাবার। আগবিক প্রবংশন নিরূপ তাহা যেমন আমনা বাহা পরীক্ষা দার্ জানি মূল সভা কিরূপ ভাগা ভেগনি আবা-স্থিক পরাক। দ্বারা জানি। তবে কি ? না পূৰ্-মাত্ৰায় আমলা ইহাও জানি না, উহাও শানি না। কৃষ্ণক্ষল বাবুর অভিপ্রায় বোধ হয় এই যে, প্রাকৃতিক বিজ্ঞানের নিয়ম যাহ। কিছু ইছারি মধ্যে আবিষ্কৃত হইয়াছে, তাহাই দামাজিক উন্নতির পক্ষে যথেষ্ট। বিভা আনবা প্রেষ্ট নেখিয়াছি যে মতুষোর ল, ্ৰাকে ছাড়িয়া দিয়া যদি কেব<mark>ল জনস</mark>-নাজের অধুজানা সাধনের দিকে অগ্রসর হওলদেই উন্ডিবলিশা ধরা যায়, ভবে মধু-মক্ষিকাৰ সনাজেৰ নত একটা সমাজ গঠন কণ্ডিতে পারিলেই মসুযোর উন্নতির আ্র কিছুই অবশিষ্ট গাকে না; তাহা হই-ুলেই অগত্যা থীকার করিতে হুর্বী সে, মধু-े बीक्किष्ठ सन्प्राएवत एतम जानम ७ म्राधु-्यक्तिका मञ्चल-लाक्षका (अर्थ कोता । शक् ত্রিক বিভানের প্রকৃত মধ্যাদার প্রতি শাৰীৰা অৰ্থ নহি,—প্ৰাকৃতিক বিজ্ঞান মযু-বোর স্বাধ্নের খুবই সহায়তা করিতে পারে ইহা আমর। স্থীকার করি,—এমন কি গোণরপো প্রমার্থ সাধ্বেরও সহায়তা ক-

রিতে পারে কিন্তু নামার আইমে আধ্যাদ থ্রিক বিজ্ঞান পরমার নামনের কবিশেষ উপযোগী—ইছা কেইই অস্বীকার করিতে পারিবেন না। অধ্যাত্ম-বিদ্যাই আমাদিগকে বলিয়া দিতে পারে যে, মূল সভ্যের সহিত আত্মা এক-তানে মিলিত হইলে—সমস্ত জগতের মূল উদ্দেশ্যের সহিত আমাদের প্রতিজনের উদ্দেশ্য এক তানে মিলিত হইলে—প্রতি-জনের আত্মার উম্বতির সক্ষে দঙ্গে সম্প্র জন-স্মাজের উন্নতি সাধিত হইতে থাকে।

"আত্মার উন্নতি" এই কথাটি কৃষ্ণক্ষল বাৰু হয় তো হাসিবেন, **ভিনি**ূ হয় তে। বলিবেন—"আপনার আপনার আপ্নাকে লীয়াই যদি সকলে ব্যস্ত রহিলেন তবে জন-সমাজের গতি কি হইবে? এ উপ-লক্ষে তিনি স্পষ্টই বলিয়াছেন "ধাৰতীয় প্রাচীন দর্শন আমি, ভ্**আমার স্থ্, আমার** তুংৰ পারহার, আমার স্বগস্থ ভোগ, আমার যোক্ষ, এই সকল ব্যতীত কোন উদ্দেশ্য জানে না। কিন্তু প্রামাণিক-বাদ (Positivism) সকলের সুখ ও সকলের সচ্ছন্দ **ইহা**-কেই উদ্দেশ্য সরূপ পরিতাহ করে।" ইহার অৰ্থ অৰশ্য এই যে, কমটির ধর্মের মধ্যে "আমি" "আমার" এ নকুল কথাঁ স্থান পা-ইতে পারে না। কিন্তু কিছু পরেই **জাবার** লেথক বলিতেছেন—"আপনায় দ্রী পুত্র প্র-রিবারতে ভালবাস, আপনার জমভূমিতে তালবাদ—তাহাতেও তোৰাছ ভালবাৰাছ খাই না নেটে সমস্ত নরজাতিকৈ ভালবাক যদি পার তো যতনুর পার ইতর ক্রন্ত সক লকে ভালবালিভে পাৰিলেও ক্ৰিনাই, वशास व कि दिशिकारिय वशास तिव-তেছি "আৰি ক্ষান্ত প্ৰায়-গৰাই উচ্চা-ছড়ি-ক্কাপার।

অন্য ভূমি; নার-জাতি যে—দে আমার সজা-জীর জীব; প্ত-পক্ষীর সহিত "আমার" দুর সম্পর্ক বলিয়া ভাহাদিগকে ভাল বা-সিতে পারি ভাল, না পারি কতি নাই। এই তো নেধা ষাইতেছে যে, আমার স্ত্রী-পুত্র হইতে আমার স্বন্ধাতীয় জীব (অর্থাৎ নরজাতি) পর্যন্ত (য-একটা ভালবাদা-বিস্তা-রের দোপান-পরম্পরা রহিয়াছে, ভাষাই ভালবাদার মুপ্য পরিসর, এবং তাছার প্রতি-ধাপেই 'আমি' 'আমার' জড়িত রহিয়াছে। কাজেই 'আমি' 'আমার' এই শক্তলি অভি-ধান হইতে উঠাইয়া দিলে কমটির অতগুলা क्षा अत्कवारवहे धूरम भवित्व इस्ता माहा। প্রকৃত কথা এই যে, আত্ম ও শর এই গুয়ের সম্বন্ধ ব্যতীত ভালবাস। দাঁড়াইতে পারে না। পরকে ছাড়িয়া দিলেও ভালবাদা চলিতে পারে না স্থাপনাকে ছাড়িয়া দিলেও ভাল-বাস। চলিতে পারে ন। । আত্ম-পরের পর্-স্পার তন্ময়-ভাবের উপরেই ভালবাদার আ-**দান-প্রদান স্থ**চার-রূপে চলিতে পারে। ভালবাসা নিজেই একটি আনন্দের বিষয়;— কাঙার আনন্দের বিষয় ? যে ভালবাসে তাহারই। আমি যদি ভালবাসি তাহাতে আর ক**হারে**। আনন্দ হোক আর নাই হোক, তাহাতে আমার আনন্দ 'हहेरव তাহাতে আর ভুল নাই। পরের স্থাথে যদি আমার আনন্দ না হয় তাহা হইলে পরকে ভাল-वानात कान अवहें थाक मा। এই तन নেখা-যাইতেছে যে, যদি আমিও আমার এই ভাব একেবারেই ছাড়িয়া দেওয়া কঘটের कट्यमा हरा. जत्व (म केटमा वक्रा थकाव चंह्रानिका हैरेटनछ कम्टोत्निटकत कथा-তেই ভাছা সমূদে ভূমিদাৎ হইয়া পড়ি रिटें । अकेष कथा अरे (य, मून मरजात প্রতি লক্ষা হাবিয়। আপনার বসল-সাধন कविदेशक भट्डत संकन्नभाग कवा रुत, भट्डत

মঙ্গলসাধন করিকেও আপনার মঙ্গল সাধন করা হয়; কেননা মূল সভাের প্রভাবে আত্ম-পর সমস্তই এক মঙ্গল-সূত্রে আরদ্ধ। সেত্র-পিয়ার এ বিষয়ে কি স্থাপর কথা বলিয়া-ছেন—

The quality of mercy is not strained, it droppeth, as the gentle rain from heaven upon the place beneath. It is twice blessed, it blesseth him that gives and him that takes.

করণা-গুণ বলপূর্বক নিউড়াইয়া আ নিতে হয় না,—স্থার বারিপারার নায় তাহা ফর্গ হইতে নর্জ্য-ভূমিতে অবতীর্ণ হয়। ভাষা যুগল কল্যাণ-ময়ী—দাভার প্রতিও কল্যাণ বর্ষণ করে, গৃহীতার প্রতিও কল্যাণ বর্ষণ করে।

আমানের প্রাচীন শাস্ত্রে যে, আমার স্থ্য, আমার যোক্ষ, ইত্যাদি আছে ভাহার অর্থ তো আর ইহা নহে যে, শাস্ত্রকার তাঁহার নিজের স্থাথের জনঃই--নিজের মোদের জনাই-এ কথাগুলি বলিয়াছেন; মনত জন-সমাজ বৃদি সংকর্মে প্রবৃদ্ধ হয় তবে ममन्त्र अन-मगारकतरे मञ्चल इहरत-हेर। रा শাস্ত্রকাবের অভিপ্রেড নহে ইহা কে বলিল ? আ্মরা কথায় বলি "জন-দাধারণ," কিন্তু-অন-সাধারণ জিনিস্-টা কি ? শত সংস্র আ-\_ মিরই (অর্থাৎ আত্মারই) কেবল সমষ্টি। ুসে আমি গুলি বাদ দিলে জন সাধারণের কি-আর অবশিষ্ট থাকে ? যন্ত্ৰায়মান চৰ্ম-পুত্তলিকা-প্রবাহের শূনা-গর্ত্ত আড়ম্মর—এ ভিন্ন আর কি ? কিন্তু বাস্তবিক কিছু-আর জন-ন্যাজ কলের পুত্লের সমাজ নহে—তাহা জাত্ত আত্মারই স্থাবা; "আমি" এর "আ্মার" তাহার মর্শ্মে অনুসূতি রহিয়াছে; थ्यन वि-विश्वत-एक के कि यथन निकास প্রীতির সহিত ক্ষরতক ভাকেন তথনও **िमि तर्मन् "आंगात नेका"। उद**्यनि ফুক্কমল বাবু এইরূপ বলেশ হে, ফুর্গ সুখ

কেবল আত্ম-ত্র্থ মাত্র, স্ত্রীপুত্র পরিবারকে লইয়া সে সুখ ভোগ করা যায় না, স্ততরাং দে স্থ-মাধনের বিধি দিলে লোকের স্বার্থ-পরতাকেই প্রশ্নগ দেওলা হয়; সবে তাহার উত্তর এই গে মনে কর এক কাজি শীত-श्राम मारीविद्यात कम्माना श्रामाना सम् করিতে যাইতে : ; ১৯ াটার পায়ে নীত বস্তু নাই ; এছনে ৬৫০০ চি দেন হি-তৈয়ী ব্যক্তি শীত চে ত'ব ব্যবহার উপদেশ দৈন, কৰ্টি কি ভাগাকে নিজেধ ক্রিয়া বলি-বেন—"পূমি এমন কর্মা কমিতেছ। দেখি-তেছ না—শা চনম্ভ গাবে দিলে উহার কেবল আপনারই স্থং হইবে, উচার স্ত্রা পুত্র পার-বার আর কেংই উদ্ধার সে-স্থর্যের ভাগী 'হইবে না; এরপ**ু উপদেশ** দান পুরের্কার লোকের। যাই। করিয়াছে**ন** তাহা করিয়া-ছেল — ফিন্তু বর্ত্তমান জ্ঞানোজ্ঞাল শতাব্দীতে लेशू त्यान करमहे स्मांचा शाय ना।" वहे-রূপ যুক্তিতেই ব**লা যাইতে প**ারে যে, পর त्याक श्रेष्ठारावत अगर **खी भूज रक**हरे महन য়াইবে না—অতএব পরলোকের স্থাধের জন্য প্রা-সংগ্রহ করিতে বলা—অতি অহাদয় ক্লাক্তির কার্যা। কৃষ্ণক্ষল বাবু যদি এইরূপ মনে করিবা থাকেন যে, পর্কালোচিত ধর্মা-ইম্-কালোচিভ দর্ম্মের বিরোদী পক্ষ, তাহা হহলৈ তিনি নিভাকই ভুকা ব্ৰিয়াছেন। তিনে খলি আক্ষধর্মের দিতীয় খণ্ডের উপর একবার-হাত্র চকু বুলাইয়া যান,√তাহা হই-লেই আহার সে ভ্রম বিত্রে ইংরা यारेटव ;—िलिंग ग्लाहेरे दिश्विक शारेदवन (य, **ट्र**श्कारलं क्ष्मि भवकात्लं क्ष्मि ;—त्म ধর্ম কি ংু না, ঈশ্রকে ভৃক্তি করা, পিতা-মাতাকে ছেতি করা, স্ত্রী প্রতকে প্রতিপালন कत्री, मर्का कथी वना मका वादहाँद कत्री, ইত্যাদ ; এবং ইহাও দেখিতে পাইনেন যে, ইইকালের আত্মপ্রসাদ এবং প্রকাদের স্বর্গ-

ত্থ—একই অভিন বস্তা এ বিষয়ে আমাদের চরম বক্তবা এই যে, শৌরাণিক হিন্দুশাস্ত্র স্বতন্ত্র এবং ভগৰক্ষীতা প্রভৃতি আধ্যাত্মিক হিন্দু-শাস্ত্র স্বতন্ত্র; শেষোক্ত হিন্দুশাস্ত্রে ঐহিক পারত্রিক আত্মপ্রদাদ এবং
ক্রেলানন্দ ভিন্ন অনা কোন স্বর্গ স্থাকে গ্রাহোর মধ্যেই আনেন নাই।

षामारमत धर्ममारस्रत छेलरम्म कम्राहेत শ্ভপদেশ হইতে যে কিদে কম তা**হা** আমর ব্নিতে পারিলাম না। কঘ্টি গেরূপ **স্থামু**-ভূতির কথা বলিতেছেন, আমাদের শাস্ত্রে: তাহা কেমন-যে নিৰ্দোষ-রূপে বলা হইয়াছে তাহা আমরা পরে দেখাইব। কিন্তু আপে একটা গল্প বলি। এক**জন খৃষ্টান বাঙ্গালী** একজন হিন্দু বা**ঙ্গা**লীকে বলিতেছিলেন\*় ''আ্যাদের দেখ দেখি কেমন বিশুদ্ধ ধর্ম এভু যিতথৃষ্ট বলিয়াছেন, কেহ তোমার এক গালে চড় মারে তবে তাহাকে আর এক গাল ফিরাইয়া দিবে।'' একজন পার্থবর্তী বাঙ্গালী এই কথা ভানিয়া বলিলেন—''যাহা কিছু ভাল নৰ ভোমাদের শায়েই ৰলে। তবে কি আমাদের **শান্তে** বলে—মানুষ দেখেছ কি অমান তাড়াইয়া গিয়া, লাঠি মারিবে ?" অধুনা আমাদের মধ্যে, স্বদেশীয় শাস্ত্রের প্রতি অবিচার করা 🕶 রপ লৌকিক প্রথা হইয়া দাঁড়াইয়াছে ; কিন্তু, কৃষ্ণক্ষল বাবুর স্বদেশের এতি, স্প্রদার কারণ বোধ হয় সতত্ত্র;—আমাদের অসুবারী তুইটি কারণ দেখা দিতেছে (১) কমুটের প্রতি অসামানা ভক্তি, (২) রুর্ত্তমান ত্রাহ্রণ পতিত সম্প্রদায়ের মৃত্ কাণের পাতিতার প্রতি চটা ভাষ-ইয়া ভিন্ন আর কিছুই বেশ

্ৰথন গ্ৰহণ প্ৰভাৱে স্বৰ্গনি ছওৱা যাক; অমৰ মানেক কুলং দৰ্গ আছে আছাল সহিত সহানুভূতি কলিতে গোলে সাণনালে পতিত ুহুইতে হয়, এবং মন্দকে উৎসাহ দেওয়াহিয়; এমন ছলে সহাসুভূতি আত্ম-পর কাছারে। পক্ষে মঙ্গলজনক নছে। তবেই দাঁড়াইতেহে সহাসুভূতি-বিস্তারেরও সীমা আছে। অতএব "সকলের প্রতি সহানু-ভূতি" শুনিতে ধেমন জোরের শুনায় উহ। প্রাকৃত পক্ষে তেমন নহে। কিন্তু আমাদের শাস্ত্রে এ দদ্ধন্ধ যাহা উক্ত হইয়াছে, তাহার উপর কাহারও কোন কথা চলিতে পারে না; আশাদের পান্তে আছে

"देशवीकक्नामूनिकाल्यकावाः चैथ-इःव ध्नएश्ना-বৈষ্যাণাং ভাবনা গ**ভিত্**পাদনং"।"

স্থের প্রতি নৈতা, অথাং পরের স্থে ুঁস্থ-বোৰ; তৃঃথের প্রতি করণো, অখাৎ পরের তুংবে তুঃগ-বোধ; পুণের প্রতি মুদিতা . (মর্থাৎ অন্যুমোরন) ; এবং পাপের প্রতি উ-পেক্ষা (অর্থাৎ তাক্তিল্য); এই সকল ভাক্তারা চিত্তের প্রসন্ধতা সাধন করিবে। দেখ –কেবল সহামুভূতির চর্চ্চা অপেক্ষা এ সাধন কত নি-**(फीय এवः ७७-धनक ! धे छे**शरम्य दाका-টিতে কেবল স্থৰ-কুংৰ ও পুনোর প্রতি দহাতু-ভূতি করিবার বিধি আছে পাপের প্রতি নহে। আবার, পাপের প্রতি পাপাচরণ--যেমন শঠে শাঠা—ইহাও শাগ্রকারের এতে নিষিদ্ধ; পাশের প্রতি কেবল উপেক্ষারই ্পাসুজ্ঞ। দেওয়া হইয়াছে। এছলে কেহ ্বলিতে পারেন-পাপের প্রতি উপেকা '**হইলে আ**র পা**প-**সংশোধন ছইল কই ? শুধু পাপের প্রতি উপেক। এই কথাটুকু বলিয়াহ ় ক্ষাস্ত থাকিলে ঐরপ দোষ ঘটে তাহা আমর। খীকার করি—কিন্তু পাপের প্রতি উপেক্ষার मत्त्र मत्त्र भूर्गात् क्षिक , जापूरमानन-वर्षाः खेरमार पान-रेशा विद्*ष*िश्रा रहेमारही বাস্তবিক দেখা যায়, পাপুঁকে পাপ ছারা পরা-बह कहा बाह्र ना, श्रीहै भागरक भहाजह ক্ষরিতে সমর্থ। পার্টেশীর প্রতি উপোক্ষা করিয়া। না—একটা ব্যস্ত্র নরহত্যা করিলেও পাণে

यनि लाटकत हर्द्यात मगटक श्रानात जानक ७ पृक्षे। **७ ज्लिया ध**ता यात्र, जाहा ह**हेत्न** তাহার গুণে যেমন মনুষ্টের ধর্মা-ভাব উত্তে-জিত হইতে পারেও পাপের প্রতি বিরাগ জনিতে পারে, এমন আর কিছুতেই নছে। ইহাই পাপ-সংশোধনের প্রশস্ত উপায়। পতঞ্জল মুনির ঐ প্রাচীন উপদেশটি কম্-টেব সহাবুভূতিব উপদেশ অপেকা কত্ৰা माद-१५।

কৃষ্ণক্ষল বাবু ব**লিতে পারেন—আমা-**নের লাজ্রের উপরি-উক্ত ঐ যে ব্যবস্থা উহারু উদ্দেশ কেবল আপনার চিত্তের প্রসাদনশী কিন্তু আমরা পুর্নেই বলিয়াছি-পরের হুথে যদি আমার নিজের **আনন্দ** ন। হয় তাহা হইলে পরকে ভালবামার কোন অর্থই থাকে না। প্রায় চিত্তে ভালবাসাই ভাল-বাসা; ওযুধ-গেলা রকমের ভালবা**সা** ভাল-বাদাই নহে। ধর্ম-কার্য্যের সূক্ষে-সঙ্গেই চিত্ত-প্রাসাদ লাগিয়া থাকা আবশাক; ধর্মাতু-ষ্ঠাতার যতক্ষণ ন। চিত্ত-প্রশাদ হর ততক্ষণ প্রানুষ্ঠান নর্কাঙ্গ-স্থন্দর হয় না। শুধু কার্ষো-ঠেই ধর্ম হয় না, কার্য্য-কভার মনের ভাবেতেই ধর্ম হয়। একই কার্যা নানা ভাবে কৃত ধ্ইতে পারে—যদি ভাহা ধর্মা-বুদ্ধি অনুদারে হুত হয় তবেই তাহা ধর্ম-কার্যা বালয়। উক্ত থ**ইতে পারে। তথু যদি কার্য**। লইয়া ধন্মাধন্ম বিচাৰ্য্য হইত, <mark>ভাহা হইলে</mark> এফট। অধান্তব পুনা ভাব অবলম্বন করিয়া। কার্য্য করিবারও যে মূল্য, পূর্ণ **সূত্য** পর-শাত্মাকে অবুলম্বন করিয়া কার্য্য করিবারও ति भूला हरेंछ। किस्त मत्न ज्ञातिक ছাড়িয়া দিয়া শুধু কেবল কৃত কার্যোতে ধর্মাধর্মের কোন লক্ষাই বর্ত্তিতে পারে ना,—এक्टी कल्बर পूज्न बाद अक्टा পুত্লকে ছত্যা করিলে সে পাপে লিগু হয়

....

লিপ্ত হয় নাই মনুষ্য যদি কেবল একটা যন্ত্র মাত্র হইত, হ অথবা পশু-বিশেষ হইত **७८व मधुरा मूर्महे धर्म-कार्यात** अधिकाती হইত না—ইহা জ্যামিতির দিদ্ধান্তের ন্যায় युष्णहे। य**नु**:यात म**मू**माङ आছে ननिहारे— প্রিপূর্ব মূল মডেবে প্রতি ভাছার আছার पाकर्मन आह्य नांना। हे- ननः अनुसा रमहे আকর্ষার কর্ত্রে আগেন্দ্র नित्मान न तित् । १८८७ तिलश्चे - भिष्कित মূন সংক্ৰিষ্ঠ ব্লিকে ভা**মরা** ব্যার ও সেইর্জ ন্র অনুসারে সে বার্ষ্য স্কৃত হয় জাহাবেই ভাষর। এক এই। বালা। মুল-সভা-নিষ্ঠ : ধর্মা-বৃদ্দি । ব্যতিবেকে ধর্মা-कार्या बहेट उर्दे भारत ना शल गारमञ्जलात-তীতে এটি আমিরা বিশদরতেপ স্তর্নাণ করি-য়াছি; কম্টি তার-একরপ বলেন-ইহা লইয়াই ক্ষাট্রি সহিত আমাদের যত বিছু বিবাদ। **গত মাদে**র ভারতীতে আমরা যাহা বলিয়াছি ভাহার সার-নিদ্ধান্ত এই ; স্থু-মেরে কার্য্যের <mark>ডিন্দেশ</mark> ভিনটি, (১) উত্তেজিক ভারতির চরিমার্থনা-সাধন; (১) উত্তেতিত -eব**ে অনুত্তেঞ্জি সকল প্র**রভিত্ত **হথেপ-**মৃক্ত চরিতার্থজা-সাইনের উপায় অবলম্বন পূর্ববৈ অপনার ছাগী স্তথ-সাধন, এক ক-থায় - সার্থ সাধন ; (৩) আপনার প্রকৃত সার্থ এব অন্যাসকলকার প্রক্ত সাধ--এই সকল স্বাধ্বর ধর্যোগ্রক্ত চরিতারতা সাধনের অপায় অবসন্থন প্ৰতিক মূল-সভোৱ মঞ্চল छिष्मर्गा गापन—अक तथात्र शत्रमार्थ-माधन । । भत्रयार्थ-भाषन्हे जामाद्रमत बद् ধৰ্ম-না∤ন এবং পর্যাধন্দী বৃদ্ধিই আমা-দের মতে ধর্ম-বৃদ্ধি। কেছ**্রে**র এ**র্কুপ** মনে न। कृतान (य, शत्रमार्थ-माध्न क्रितिएं , इंडिल षार्मद्य अदक्रवादब्रु चिज़ारेश निए 📦 ; यार्थ-गायन विकारण इहाता श्राहित्क উড़ारेश निरुद्ध रहा ना, भहराई नावन क-

রিতে হইলেও সার্থকে টেড়াইরা দিতে হয় ना ; - कतिएक रहा (कर्वन - मागक्षमा माधन ; षर्थाद উচ্চকে প্রাধান্য দেওয়া—নীচকে मीटि तथा—मधामटक मत्था तथा—हेलापि। উত্তেজিত এবং **অনুডেজিত** সকল শার্হতির দামঞ্জদা (এক কথায় – স্বার্থ) অত্যে বিবেচা, উত্তেজিত প্রবৃত্তির চরিতাথত। পরে বিবেচা; উত্তেম্বিত প্রাকৃতির চরিতা-র্থতা যে অংশে সাথের অনুমোদিত সে অংশে তাহা কার্যা-কর্তার বৈষয়িক ক্ষতি-জনক নছে; ঠিক এইরূপ যুক্তি-অমুসারে পাওয়া যায় যে, আপনার এবং পরের— সকলকার – সঙ্গল (এক কথায় পরমার্থ) অত্রো বিদেচ্য, আপনার ভা**র্থ তাহার <del>প</del>রে বি-**८वहाः ; आलनात स्वर्थ-मात्रन (य जाः स्वर् মার্থের অনুকুল দে অংশে তাছা মর্শের বিদ্যোধী হওয়া দূরে থাকুক—বরং ভাঁহা না করিলে প্রভাষায় আছে। সংক্ষেপে বলিতে হইলে,--পরমান্তার অধীনে জীবা-আকে, জীবাত্মার অধীনে মদকৈ নিযুক্ত করা কর্তব্য ; **অথবা, যাহা একই ক**থা,— ধর্মানুদ্রির অধীনে বিষয়ানুদ্ধিকে, বিষয়-বুদির অধীনে ইন্দিয়-গণকে, নিযুক্ত করা ক্তিয়া; অথবা যাহা একট কুথা,—পর-गार्थत भिरान यार्थक, विश्व भिरान প্রার্ত্তিগণকে, নিযুক্ত করা কর্তব্য 🛵 ইহাই, আমাদের মতে, ধর্মের বীজ মন্ত্রা উপসংহার-সলে সহামুভূতি বা মৈত্রী সম্বর্ আমাদের শেষ কর্ত্তবা এই য়ে, যে মৈনী প্রতির উত্তেজনায় সহসা উৎপদ্ন হয় যেমন বালকে বালকে **বৈদ্ধী** ভাষা এক-রপ; আবার, যে খৈতী, সার্থের মুক্তগায় विद्धयं दलिश स्ट्रिन स्था-त्यस्य आसे देमि इक माग, मान, (एकारेगकी, हेबाब (नारवकी-हेश यात धकतल , दक्तत, दक्त रेगली लान-गार्थ-উद्भटन गायन करा इस - प्रवाद असीवात

-

তোমার এবং সকলকার মঙ্গল-সাধন ঈশ রের উদ্দেশ্য—ইছার প্রতি প্রকাষিত চিত্তে সাধ্যাসুসারে ভাষা-পর নির্বিশেষে সাধন করা হয়, সেইরূপ বৈত্রীই ধর্মা-নাথের বৌগা।

ভার-গ্রী

## চরিত্র রক্ষিণী সভা।

সম্প্রতি একটা সভা স্থাপিত হইরাছে তাহার উদ্দেশ্য বালকদিনের চরিত্ররক্ষা। উদ্দেশ্য অবশাই মহৎ কিন্তু চরি বরক্ষার যে সমস্ত উপায় অবশারিত\* হইয়াছে তাহা বিবেচ্য।

চরিত্র বলিতে কার্যায়। বৃধায়। তাছার

মূলে ইচ্ছা ও প্ররতি। এই তুইটা নির্দোষ

হইলে চরিত্রও নির্দোষ হয়। শ্বতরাং চরিত্র

সম্পূর্ণ আগ্যাত্মিক। বিন্তু বালক দিলের এই
ইচ্ছা ও প্ররতি কিরপে নির্দোষ হয়। কেছ
বলেন শিক্ষার সহিত নীতির সংযোগ থাকিলে এই উদ্দেশ্য গিদ্ধ হইতে পারে।
আমরা তো বিদ্যালয়ে ইহার কিছুমাত্র অভাব দৈশি না কিন্তু ফলে কি হইতেছে।

বাস্তবিক কেবল নীতিশিক্ষা দাহাদ বিশেষ
কিছুই কল হইতে পারে না—সুক্রিত্রের

সংস্কৃত্যাক্য এবুং নাধু-সন্দের আবন্যক।
বিশ্বেষতঃ গুরুতে পিতা মাতার সদ্প্রাপ্ত

চিরিত্র স্টানের প্রধান উপায়।

বিদ্যালয়ই বল আর রস্কু বান্ধনই বল বালকের অধিক সংশ্রব গৃহের সহিত। পিতা লাতা ও আন্ধার অভারসের সহিত। ইহা-দের সহিত ব্যাপুক কালের সংশ্রব নিবন্ধনা ইহাদিনের কার্যাকার্য্য অপ্রত্যক্রপে বালক-নিশের চরিত্র প্রস্তুত করিছে থাকে। গৃহই চরিত্রের মৃত্যুত্তরাং গৃহ হাদি বিশুদ্ধ হয় ভাহা হইলেরালকদিলের চরিত্রশুদ্ধির জনা উপাধান্তর অন্ধরণার।

বছ পূর্বের এই ভারতবর্ষে জননী পুত্রতে স্তন্পান করাইবার কালে একটা মন্ত্র গান করিত \*। তাহাঁর অর্থ এই যে আমাল পুর বয়ঃ প্রা**প্ত হইলে মহানান্নী** ত্রতের পারগামী **रहे** त। कि जग का नियम। মাতৃস্তন-তুষ্ধের সহিতে মাতার সাধু ইচ্ছা বালক গ্রহণ আবার দেখ পিতা ও আত্মীয় জ্ স্তরপের চেট্টাও বালকের চরিত্রে গঠনের কতদূর অনুসূল **ছিল। ই**হাঁরা রাত্রি প্রভাত চ্ছতে শ্রন্কাল পর্যান্ত থা কিছু করি-ন্দেছেন তৎসম**ন্তেশ্ব**ই সহিত ধর্মোর প্রাণাঢ় এখন বিবেটনা কর এইরূপ পিতঃ মাতার পুত্র কিরূপ হওয়া ুসম্ভব। জামি এমন কিছু বলিতেছি না যে পূৰ্বকালে দকৰ বালকই প্ৰীল ও সজারত্ত হইত। পূর্বে বলিয়াভি চরিত্র সম্পূর্ণ আধ্যা**ত্মিক। স্থত**রাং সচ্চরিত্রতার হেতু আ**ত্মসংখ্য। প্রলোভনে**র ম**্**ল্যে থাকিয়া আত্মসংখ্য অভ্যাস করা ক্র क्किन काशात्र। हेश वालक्कित कभी नहि। তনে যে ইহা সভ্তব তাহা পিতা মাতাও আত্মীয় অন্তরক্তের ওবে। বালকের ধর্মা এই বে যাহা সর্বাদ। দেখে সে তাহাই শিথে। কঠিন হইলেও ভাগা সহজে শিখে। স্তুত্তরাং পুত্রেরা পূর্কো পিতা মাতার যেরূপ দেখিত কঠিন হইলেও তাহা **সহজে শি**খিত। এই জনা তথ্নকার বালক্দিগের মবৈ অধিকাং-শেরই চরিত্র শুদ্ধ হওয়া সম্ভব এবং তাহাই इहेज।

এখন বুঝা গেল যে সৃহ এবং যে সমস্ত বাহা ব্যাপার দারা নিরন্তর পরির্ভ থাকা যায় দেই গুলি বালকের চরিত্র গঠনের মূল। কিন্তু এখনকার জনসমাজের অবস্থা কি। ইহা অতি শোচনীয়। ধনী ও দরিক্র উভয়

কুমারনিংশ বৈ পায়য়মানা আহ: সকরীণাং পুরকা ব্রতং পার্যিক্ষবো ভবতেতি। শোভিণ গৃহ্য হত্ত।

লিপ্ত হয় নাই মনুষা খাদ কেবল একটা रल गाउ रहेज द्वाया शक्ष-विस्था रहेज **তবে মনুগা भूमिই धर्म्य-कोर्शित** অधिकाती हरेड ना-रेश काशिवित निकार्छत नाज स्राप्ति । यनुःमात्र समूमाञ्च आह्य विनशरि পরিবৃথি নস মতেরে প্রতি নাহার আত্মার আকৰ্ষণ আছে বাল্লাই নকেং সনুষ্য দেই আকর্মের ভযুক্লে জ্বাসন্ত বৃদ্ধিকে निर्हाण चिति १० १०० तिसारी चार्यकेल ুন্ন সংগণিত ব্লিবে আমরা ব্যব্ধি ধলি; ও সেইলগ বৃদ্দ অনুসারে যে কার্য্য হুত হয় ভালাবেই ভানসা ধর্ম কাই। বাল । भूल-माना-सिर्छ पन्धे-प्राप्त सर्वाच्टरहरू **४५**-कांका इस्टेंट इस्टेंग्स मार्च मार्गद ए दिन তীতে এটি আমারা বিশদরতে মতামাণ কবি-য়াতি; কম্টি ভার-একরূপ বলেন-ইহা লইয়াই কমটির সহিত আমাদের যত বিছু বিধান**া গত**্নাদের ভারতীতে আমরা যাহা বলিয়াছি আহার সার-লিদ্ধান্ত এই ; ম্যু-দোর কার্যের ভিদ্নো ভিনটি, (১) উত্তেজিন প্রার্থতির চরিষ্মার্থতা-সাধন; (২) উত্তেতিত ুত্বঃ অনুভেছি∥ত দকল প্রবৃত্তির হথে প-মৃক্ত চলিডা**র্থড়∤-**সাংনের উপায় অবলম্বন প্রাক আপনার ছাটা স্থা-মাধন, এক ক-থায় - খার্থ সাধন; (৬) আপনার প্রকৃত সার্থ জনা দকলকার প্রকৃত আথ--এই সকল স্বাংশর ষ্বেশং দ্বন্ত চরিতাথতা সাধনের অপায় অবস্থন পূর্মক মুদ্দাত্যের **নঙ্গল** উष्टिन्। भारत—এक वशुशा शत्रार्थ-সাধন্ ∥ু পর্যার্থ-সাধনই আমাদের মৃত্ ধর্ম-না∮ন এবং প্রমাণদশী বৃদ্ধিই আনা-(पद गाउ धर्मा-तुक्ति। (कर देशन अकुन गान न। करान रा, शत्रमार्थ-माश्म कित्रिए इंदिन न्यार्थरक अस्करारत्वे छेड़ाहेश फिर्ड क्रि: ক্রিছে হইলেও প্রান্তকে दिज़ारीम निर्देशका ना, भारगोर्थ-मावन क-

রিতে হইলেও সার্থকে উড়াইরা দিতে হর ना ; - कतिरा रहा (कर्रन-मागक्षमा मायन ; वर्णां डेक्टरक श्रांधाना रम्खा न्नीहरक नीटि तथि - यथायटक यट्या तथि - हेल्डािन । উত্তেজিত এবং অমুক্তেজিত সকল শ্রাহৃতির সামঞ্জন্য (এক কথায় – স্বার্থ) অত্যে বিবেচা, উত্তেজিত প্রবৃত্তির চরিতার্থতা ডা**য়ার** পরে বিবেচ্য; উত্তেজিত প্রাকৃতির চরিতা-র্থতা যে অংশে স্বার্থের অনুমোদিত সে অংশে ভাহা কার্যা-কর্তার বৈষয়িক ক্ষাত্তি-জনক নছে; ঠিক এইরূপ যুক্তি-অমুসারে পাওয়া যায় যে, আপনার এবং পরের— সকলকার-মঙ্গল (এক কণায় পরমার্থ) আরে বিবেচ্য, আগনার আ**র্থ ভাহার পরে বি-**বেচ্য ; আপনার স্থার্থ-সাধন যে আংশে প্র-মার্থের অনুকূল দে অংশে তাহা ধর্মের বিরোগী হওয়া দূরে থাকুক—বরং তাহা না করিলে প্রভাষা**য় আছে। সংক্ষেপে** বলিতে হইলে,--পরমাক্সার অধীনে জীবা-ত্মাকে, জীবাত্মার **অধীনে মনকে নিযুক্ত** कता कर्हवा; अथवा, याहा अकरे कशा,— ধর্মা বুদ্ধির অধীনে বিষয় বৃদ্ধিকে, বিষয়-वृक्तित अधीरन रेक्तिय-भगरक, नियुक्त करा কৃত্তিয়; অথবা যাহা একট কুথা,—পর-गार्थंत अभीरन यार्थरक, अर्थेव अभीरन প্রান্ত গণকে, নিযুক্ত করা কর্তব্য 🖘 ইহাই, আমাদের মতে, ধর্মের বীজ মন্ত্রা, উপসংহার-স্থান সহানুভূতি বা নৈত্রী সম্বাদ আমাদের শেষ কর্তবা এই য়ে, যে মৈত্রী প্রতির উত্তেজনায় সহস্ উৎপন্ন হয় रयसन वालरक वालरक रेमखी जारा अक-রূপ; আবার, যে থৈতী স্বার্থের মুব্রণায় क्टिश्य विनशं करन इय - उन्न वाक्टेनिक नाम, त्यान, (चन्द्रदेगकी, रेषांव (नादाक्रिकी हेश यात अरुत्रण : तक्षण, तम देशकी लंब-गार्थ-छटान्य गायन का इस् मेरीह कानान

তোমার এবং শক্ষর মঙ্গল-সাধন ঈথ-রের উদ্দেশ্য-ইছার প্রতি প্রদাসিত চিত্তে সাধ্যমুদারে আন্ত্র-পর-নির্বিশেষে সাধন করা ছয়, দেইরূপ বৈত্রীই ধর্ম-নামের যোগা।

ভারতী

## চরিত্র রক্ষিণী সভা।

সম্প্রতি একটা সলা স্থাপিত হইয়াছে তাহার উদ্দেশ্য বালকদিগের চরিত্ররক্ষা। উদ্দেশ্য অবশাই মহৎ কিন্তু চরিত্রকার যে সমস্ত উপার অবধারিত হইয়াতে তাহা বিবেচা।

চরিত্র বলিন্দে কার্সায়ার বৃধায়। তাহার
মূলে ইচ্ছা ও প্রারতি। এই তুইটী নির্দ্দোষ
হইলে চরিত্রও নির্দ্দোষ হয়। স্কুতরাং চরিত্র
মাস্পূর্ণ আগাজিক। কিন্তু বালকদিগের এই
ইচ্ছা ও প্রারভি কিরাপে নির্দ্দোষ হয়। কেহ
বলেন শিক্ষার সহিত নীতির সংযোগ খাকিলে এই উদেশ্য সিদ্ধা হইতে পারে।
আমরা তো বিদ্যালয়ে ইহার কিছুমার অভাব দৈশি না কিন্তু ফলে কি হইতেছে।
যাস্তবিক কেবল নীতিশিক্ষা দ্বারা। বিশেষ
কিছুই ফল হইতে পারে না—কুল্চরিত্রের
মংস্প্ত্যাক্ এবং সাধু-সঙ্গের আবনাক।
বিলোধতঃ গুলেতে পিতা সাতার সদ্পূর্ভান্ত
চীয়ার স্কুটনের প্রধান উপায়।

বিদ্যালয়ই বল আর মন্ত্র বান্ধনই বল বালকের অধিক সংশ্রব গৃহের সহিত। পিতা মাতা ও আত্মীয় অন্তরপের সহিত। ইহা-দের সহিত বাপ্রেক কালের সংশ্রব নিবন্ধন ইহাদিগের কার্যাকার্য্য অপ্রত্যক্ষরপে বালক-নিসের চরিত্র প্রস্তুত করিছে থাকে। গৃহই চরিত্রের ক্ষান্তরাং গৃহ বাদি বিশুদ্ধ হয় ভাহা হইলেবালকদিলের চরিত্রশুদ্ধির জন্য উপাশান্তর অন্তর্কন

বছ পূর্বের এই ভারতবর্ষে জননী পুত্রকে স্তৰ্পান করাইবার কালে একটা মন্ত্র গান করিত \*। তাহার অর্থ এই যে আমার পুর বয়ঃ প্রা**প্ত হটিলে মহানাম**ী ব্রেতের পারগামী হইবে। কি চমংকার নিয়ম। তুষ্কের সহিতে মাতার সাধু ইচ্ছা বালক এত্ন আবার দেখ পিতা ও আত্মায় জ-ন্তর**ঙ্গের** চেট্রা**ও বালকে**র চরিত্রে গঠনের কতদূর অনুচূল **ছিল। ই**হাঁরা রাত্রি প্রভাত হইতে শয়নকাল পর্যান্ত হা কিছু করি-তেছেন তৎসম**ন্তের**ই সহিত ধর্মের প্রগাঢ় যোগ! এখন বিবেটনা কর এইব্লপ পিতঃ মাতার পুত্র কিরূপ হওয়। সুসম্ভব। এমন কিছু বলিতেছি না যে পূৰ্বকালে দকৰ वानकर सनीन ७ मछात्रज **१रेछ।** श्र**र्का** বলিয়াছি চরিত্র সম্পূর্ণ আগ্যা**ত্মিক। স্তরা**ং পচ্চরিত্রতার হেতু আ**ত্মসংযম। প্রলো**ভনের মধ্যে থাকিয়া আত্মসংখ্য অভ্যাস কর। সভ क्किन नाभात । ऐसा नाजरकत्र कन्त्र नंदर। তবে যে ইহ। সভব তাহা পিতা মাতাও আত্মীয় অন্তরক্তের গুণে। বালকের ধর্মা এই যে যাহা সর্ন্তন দেৱেখ সে তা**হাই শিখে।** কঠিন হইলেও ভাছা স**হজে শিখে। স্ত**রাং পুত্রের। পূর্কে পিতা মাতার যেরূপ দেখিত কাঠন হইলেও তাহা **সহজে শি**থিত। জনা তথ্যকার বালক্দিগের মুখে অধিকাং-শেরই চরিত্র **শুদ্ধ হওয়া সম্ভব** এবং তাহাই হই'ত 📭

এখন ৰুঝা গেল যে গৃহ এবং যে সমস্ত
বাহ্য ব্যাপার দারা নিরন্তর পরির্ত থাকা বায়
সেই গুলি বালকের চরিত্র পঠনের মূল।
কিন্তু এখনকার জনসমাজের অবস্থা কি।
ইহা অতি শোচনীর। ধনী ও দরিত উভয়

কুরারনিইয় বৈ পায়য়মানা আছে: সয়বীলাং
 পুঞ্জা ব্রতং পারয়িফবো ভবতেতি।
 শৌভিল গৃহ্য হব।

८ भनोत ভावर भन्नीका कतिहा (नथ । याँहा-**रमत अस मः शाम आह्य वर्त्तमारम ठाँ शाम व** ভিতর কেবলই ভোগ বিলাদ, পানদোষ ও ব্যভিচার! আবার যাহারা দরিস ভাহাদের क्तित्रल**े कीतरमंत्र निभ**न्न करोहात राष्ट्री! দেশের অথ দেশের খাদ্য এচুর পরিমারে ্ৰীবিদেশবাহী হইকেচে। এ সংস্থা কোন ্বিপাণ্ডে হাউক অনুনাৰ মুগ **হইতে** গে যা কিছু কাড়িয়া লইতে পারে সেই টুকুট ভাহার লাভা। এই এন প্রক্ষা প্রতারণা খুব राजिया छिटिर रहे। युन्यार এখ**ন বাহা ভা**বে মুখ্নোন। আবার **অন্ত**দৃষ্টি না থাকি**লে ধর্ম্ম** খালে না। স্ত্রাং এখন-कात गृह लाह भूतंत्रह भारो। जनमगरज ধর্ম ও নাতি ক্রমশঃ কণা মাত্রে অসনিষ্ঠ হইয়া আগিলেছে। সং দৃষ্ঠান্ত অপেকা এখন অসং দৃষ্টান্তই অধিক। এইরূপ অব-স্থায় বিদ্যালয়ে ভূৱি ভূরি নীতিগ্রন্থই নি-ৰ্দাচিত হউক, আর সভা সমিতিই কর, চরিত্র শুদ্ধিকল্পে কিছুতেই বালকদিগের সহায়ত: হইবে नी। যত দিন গৃহ ও বাহা ব্যাপার ইগাৰ অনুকূল না হইতেছে তাৰৎ সমস্ত (छङ्कें छि विकल ।

আমনে উপনংহারে একটা কথা বলা আবশক। আমরা ভারতবাসী, অকিঞ্চন হইয়াও ধর্মারকা করা আমাদের চির দিনের অভ্যাদের বলে জীব-শের চেপ্তাকে ভূছে করিয়া যদি আবার গৃছে গৃহে ধর্মাকে প্রেরহ প্রতিষ্ঠিত করিতে পার তাহার চেপ্তা দেখা তখন ধর্মাও আবার প্রবিধ্যা বিপথে হাইবে না বিব্যা বিপথে হাইবে না বিব্যা বিপ্রেরজিশা সভারও কোন আবশাকতা থাকিবে না।

## ব্ৰাশ-জীবন।

ধর্মানত ধর্মজাবনকে গঠিত করিবে, ই-হাই স্বাভাবিক নিয়ম কিন্তু কাৰ্য্যভঃ তাহা হইতে দেখা যায় না। কার্রাতঃ ধর্মানত ও धर्माकीयन पूरेणि मन्त्रकशीन वस्त्र रहेशा माँछा-ইয়াছে। যাহার ধর্মানত যেরূপ, ভাহার ধর্মজীবন ঠিক দেইরূপ, ইহা প্রায় দেখিতে পাওয়া যায় না। ধর্মানত উচ্চ ও পবিত্র হইলে ধর্ম-জাবনও উচ্চ ও পাবত্র ছওয়া উচিত, কিন্তু প্রকৃত ঘটনায় তাহা আমরা বড় অল্প, দৈখিতে পাই। জীবনের **উপর** ধংশ্মর প্রভাব অতি বলবৎ ও গভীর, কিন্তু যাবুল গতদুর ইন্দিয়ের দাস, এতদুর প্রবৃত্তির বশ, এতদুর সংসারাসক্ত ও ভোগ-স্থাতি-লাগী যে সে সহজে স্থায় ধর্ম্মতানুদারে সম্পূর্ণরূপে জীবন গঠন করিতে পারে ন।। পোত্তলিক মতাবলদীগণের মধ্যে অল্পই প্র-কৃত ভক্ত ও চরিত্রবান পৌতলিক **খুঁজিয়া** পাওয়া যায়। খ্রীষ্টীয়ানদিগের মধ্যে সম্পূর্ণ রূপে খ্রীপ্তের উপদেশীমুসারে কার্যা করেন এরপ লোক অতি বিরল। মু**দলসান্দিগের** মনো মহন্মদের ও কৃত শিষা কয় জন আ-হেন ? এইরূপ প্রত্যেক ধর্ম্মতাবলম্বীগণের মনোই দেখা যায় যে তা**হার৷ তাহাদিগের** ধর্মনতানুসারে সম্পূর্ভক্রেপে কার্য্য করিতে भादा ना ।

পৃথিবীর অন্যান্য ধর্ম-মন্ত দার সুসংক বেমন, ত্রাক্ষা সম্প্রাদারের সম্পর্কেও তাহাই ঘটিতেছে। ত্রাক্ষাধর্ম মত ক্ষাও উক্ল, ক্ষাও পবিত্র, অতি মহান, অতি মন্দর, কিন্তু ব্রাক্ষা গণের মধ্যে কয় জন ত্রাক্ষাজীবনের দুইাও দেখাইতে পারিয়াছেন ? কর কর ত্রাক্ষার জীবন ত্রাক্ষাতের নামে উক্ল করিব, মহান ও ফুলর হইয়াছে? ভাগাদের মধ্যে অভি অন্ন কেরিয়াছেন, কিন্তু ভাগাদের মধ্যে অভি অন্ন লোকেই সেই বি-সামুসারে জীবন মঠন করিয়াছেন। ত্রা-জো তত অভাব আহরা বোধ করি না, বিশ্ব ত্রাহ্ম-জীবনের বড়ই অভাব দেখা

পথিবীর প্রত্যেক ধর্ম্মই মত প্রচারের मिटके विधिक उत गरनानिरंद्रण कतिया थारकन, কিন্তু বি-জীবন কিন্তপে সেই মতাতুদারে গঠিত ছিইবে ভাষার প্রতি তত দৃষ্টি করেন না। ব্রাক্ষাংশ্য যদি সেই দৃষ্টান্তের অনুসরণ करतमे जोश रहेटल धनामा वर्ण-मरश्राम য়ের থের্ক্সপ ্রথবস্থা দাঁড়াইয়াছে ব্রাহা সত্থা-पाटशतं ७ **(राष्ट्रि**त्रथ ७:उडा श्**ट्रेटर** — खाकावर्णा শত শত **বিংশ**র এচলিত হ**ইলেও** খ্রীষ্টীয় वा ग्रमनगीन धर्म-मध्यनातात नाम खाम সম্প্রদায়ের 🗸 সাধ্যেও 🗠 🕫 🔻 ধর্মজীবন **(मथा शहरव ना । श्रीक्षीत वर्षा मुमलगान** ধর্ম্ম প্রভৃতি দানা ধর্মের পরে ভাগাবর্মা ্তাবিভূতি হইয়াছেন। এ সকল ধর্ম বছকালে ঠেকিয়া যাহা বুক্ষিছেন, ন। ঠেকিয়া আক্র-ধর্মের তাহা বুঝা উচিত। প্রথম এবম ঐ ধর্মপ্রভাষক গণের বিশাস ছিল যে কেবল মতপ্রচারে লোকের ধর্মজাবন গঠিত করিতে পারা যায়, কিন্তু বহুকালের অভিজ্ঞতায় তাঁহানা জানিতে পারিয়াছেন যে কেবল মৃত প্রচার ছারা লোকের জীবন नियंगिष्ठ केंद्रा क्षाय विमुद्ध । आहीन धर्मा-সম্প্রদারগণের এই আভিজত। এই শিক। অগ্রাহা করিয়া কার্য্য কর। জাক্তধর্ম-প্রচারক-गर्भद क्षन्हे छिडिछ नरहा अधारा क्षतिला, के नकन क्रियात नराष्ट्र व्यक्तिकाल अ गएं कालिं रहेत्न कारका कारका गठानु क्षक प्राचानिक उम्राच सामदन केन्द्र

े जासकी राष्ट्राटक जासकी मृदन व प्रायकारी

हरेट भारतन, योशट खान्त्रश्री-सटलत ना আপনাদিগের জীবনকে উচ্চ, পবিত্র, মহা ও স্থন্দর করিতে পারেন, তৎসাধনের প্রাণ অধিকতর যত্নান হইলে ত্রাফা প্রচারকগ ব্রাক্ষর্যর প্রচারে অধিকতর কৃতকার্য্য হইবেন কেননা লোকে ব্রাক্ষদিগের জীবনের মগড় পবিত্রতা, উচ্চতা ও দৌন্দর্য্য দেখিলে আহ धर्मा **अहरत घठमूत आकृडे ह**हेरत, खोकादम्ब মতের মনোহর ব্যাখ্যা শুনিয়া তত্দুর আ কুট হুটুবে না। আম্রা আশা করিয়া খানি (१ असन अक काल जामित घथन खालावन সমগ্র পৃথিবীর ধর্ম্ম হইবে, কিন্তু আগরা যা লোক্ষাবন গঠনের প্রতি অধিকতর মনো যোগ অর্পণ না করি, আখরা যদি গ্রহুত চরিত্রবান, নিষ্ঠাবান ভক্ত ব্যক্ষের সংখ্য যুদ্ধি করিতে না পারি, আমর। যদি লোকবে ভাগা করিয়। তাছাদিগের জীবনকে প্রকৃষ ব্রাহ্ম জীবনে উন্নত করিয়া তুলিতে না পারি কেবল যদি আমরা ব্রাক্ষমত প্রচারেই ব্যাপুর্য থাকি, তাহা হইলে আমাদিগের দে আশ কখন পূর্ব হটবে না, নে বিখাস কখন সক্ষ হইবে না। যদি ভানৱা সমগ্র পৃথিকী। লোককে ত্রাক্রীনর্ম্ম দারা পবিত্রাত করাইকে চাই, তবে ত্রাক্ষারীবনের মহত্ত্ব দেখাইয় জগৎকে চমৎক্বত করিতে হইবে, ত্রাশ্বাঞ্জীব নের গৌন্দর্শ্য দেখাইয়া জগৎকে মোহিত্ করিতে হইবে। প্রত্যেক ত্রান্ধের জীবः সম্পূর্ণরূপে ত্রাক্ষধর্মের উচ্চ মত ও মহং উপদেশের অনুমায়ী না হইলে, ত্রাহ্মধর্ণ জগতের ধর্ম হইবার আশা নাই।

দুইটি প্রধান কার্বে আলাজীবন গঠন করা প্রত্যেক আন্ধার পক্ষে মহান কর্ত্তব হইয়া উঠিয়াছে। প্রথমতঃ আলা হইয় মদি জীবনই উন্নত না হইল, আলা হইয় মদি আনোর অনুধায়ী কার্যা ও মতি গতি ন আমা বিনি তিনি যদি প্রামারণের উপদেশাসারে কার্যা করিতে না পারিলেন তাহা হইলে
তাহার প্রামা হইবার উদ্দেশ্য যে জীবন্যুতি
লাভ জাহা সম্পা ইইল কোপার হ প্রমতঃ
আরার্শী প্রহণ কার বি এই হলান উদ্দেশ্য
সাধনের জনা প্রচেকে বাসেও । ল জীবন
পিঠন করা সেরপা চক্রার হলা দ উই চাইটিরাছে,
দিটীয়তঃ আমানেই প্রভার হলা দ উই চাইটিরাছে,
কপা খাবলা হ হইবাছে। লাজানার প্রচারকার্যা থাতেবে লাজেব বা ফে কার্যা। কিন্তু
গালোক প্রাণ্ডের খিবন যাল করিতে পারেন
কপনই সমলের বা গানন করিতে পারেন
না।

্রাক্ষার্থ তি উত্ত ধর্ম, জারুনতে তদপুরারী উচ্চ করা বড় কটিন বড় চুরাই কাষা,
কিন্তু বিনি বান্ধ হইয়াছেন সে কার্য্য ভাষার
পরম কর্ত্তব্য । স্যাম্য ঈশবের প্রমাদ বলে
তবং আক্সাপ্তাব-বলে রান্ধারণ সেই কর্ত্তবা
পালনে সক্ষম ইউন।

## ব্যাখ্যান মঞ্জরী ৮ -

कीयुक्त श्राप्तान श्राप्तात व्याच्यान भूतिक श्राप्तान भूतिक श्राप्ता

সপ্তদশ ব্যাখ্যান। ্ া আন্দিন মণ্ডবর পত্রিকার ২২০ পুঞ্চর পর )

বৃদ্ধ সৰ আশ্ৰেম করিয়া পদ্ধীর্থী।

শেন স্থানেতে কাবে জীগন গাগন।
সেইরূপ জীবন্ধ, তীহাতে আশ্রিত হয়,
তাঁরে অবলম্ব করি থাকে করুক্ষণ।

বাঁহু বিনা বধা নাহি আলোক সঞ্চার।

,ু গুই নাহি তিতে বিনা পত্তন-আ্যার।

সেইরূপ সে আ্লুয়, বিনা ছাড়া কেই নয়,
ভাঁহাতে রয়েছে এই অধিন সংসার।

বিশেষ আশ্রিভ হই আমরা ভাঁহার। অন্য জীব জড় নহে কছু দে প্রকার। কি সমন্ধ ভার সনে, ভাব দেখি মনে মনে, কি রূপ আশ্রয় তিনি হন স্বাকার॥ তিনি পিতা -মোরা তাঁর স্লে**ছের সন্থান**। কত সুধ রত্ন ভিনি করেন প্রদান। ষে কাভরে তাঁরে চায়, সেই তাঁরে হৃদি পায়, তাঁহার ক্লপার পার অমৃত-সোপান। তিনি মাড। শ্বেহ্যরী স্ম্মিয় বৃদ্ধন। ভাকিছেন কোলে তাঁর পুত্র কন্যাগণে। যে ভার শরণ লয়, থাকে না ভাষার ভয়. প্রোম-অ**র দিয়া ভারে ভো**ষেন যতনে।। তিনি রাজ: - প্রজা মোরা আন্তিত ভাঁহার। স্থমঙ্গল বিধি ভিনি করিয়া প্রচার। সবে করি সম জ্ঞান, ধরি ন্যার তুলামান, বিভৱেন ধথাযোগ্য দল পুরস্থার।। তিনি প্রান্ত — ভূজ্য মোরা—রাথেন চরণে। ক্রেন আদেশ তাঁর হাদি সঙ্গোপনে। (मन कुंचि--म**श्वाम**, তাঁর স্থাসম হাস, ্ৰিছার চরণ-ছায়া জীবন মরণে।। তিরকাল রবে আত্মা হয়ে তাঁর দাস। উরি পুত্র -পাবে তীর চির সহবাস। িলি পিতা মাতা প্ৰাভু, ছাড়িবে না তাঁৱে কভু তাঁছার রাজ্যেতে তির করিবেক বাস I কতই সধন্ধে আত্মা তাঁহাতে জড়িত। কিবা প্রেম রঙ্গ্রু টানে তাঁহাতে কর্ষিত। সে সমন্ত্র কে জানা'ল, তাঁরে প্রেম কে শিখা'ল, আপ্রাতে তাঁহার ভাব কা' 🚁 তে উদিত।। দয়াসম তাঁর দয়। **আত্মারে জানান।** প্রীতি দিয়া ভার ঠাই প্রীতি তিনি চান 🛊 বলেন "পবিত্ত হও, ি পাগ ছতে দুরে রও, ् धर्म-वर्ण काशमादि कत्र वनीया**न्** ॥ ू हिल कामना के पि कर विमर्ड्डन। সমস্ত **হৃ**দ্য় কর আ**মাতে অর্পণ।** 

পাইবে পরম গতি,

আগতে করিলে মভি,

পারে স্থনির্মণা শাব্ধি অভয় শরব 🚓

হার ! মোরা ভুলি সদা মোহের ছলনে ।
তাঁহার আদেশ মত চলিব কেমনে।
দান হীন ক্ষীণ হয়ে,
ক্ষেত্রে এ ধূলি লয়ে,
কেমনে যাইব মোরা তাঁহার সদনে ॥

যাবে আত্মা নিজে দেখি ভাবে নিৰুপায়।
কাত্ৰৰ নয়নে তাৰে তাৰে পাক্ষেণায়।
তাঁৰ পাথে যাইবাৰ, তিনি নেতা—নাহি আৰ,
যে পাত তাঁহাৰে পায়ে তাঁহাৰ কুপায়॥

যখন দেখি ফে মোরা নিভান্ত তুর্মন।
ভিমিই ভাসা মাত্র উপায় সঙ্গল।
ভবে প্রাণ কাঁকি কয়, "ওছে দীন দয়াময়।
লও মোর প্রাণ নন যা আছে সকল।

জন্ধনার হ তে মোরে করং উদ্ধার। লয়ে যাও জ্যোতির্মা প্রেম্ম ভোষার। জন এই সাজহ্মার, করি যেন হ'ছে মার, ভূমি যে উপায় কর ভোষা পাইবার।।

ভার প্রতি এই রূপ **নির্ভরের ভার।** যুদ্ধকন ভিনি মোর সঞ্চল **সভা**ৰ ॥ भिनित्वासी केटा करिया कश्री। লাইবেন তিনি গোড়া করিয়া লোকন। অন্ত্র মোরা— তার এথ না পাই দেখিতে ! हाशिल मित्रम हक्कु तम भर्थ हितिए ॥ · **এই তাঁর** উপাসনা --**তাঁহাতে** নির্দ্রর। कीवरनंत फेक्ट (कांग मक्क स्टब्स नत ! ॥ তাঁর উপাসনা হেখা কর আরম্ভন। कतिरव देव छेशानना जनस की वन ॥ ত্রিকাল মরিরা তার উপাসনাকর। অতীতে কৰুণা ছাঁহু মন্তন মনে স্ময ।। 💌 অতীতে কতই সুখে বাপিলে জীবন। প্রাণাতার হস্ত তবে করছ স্মরণ।। ব্দলতা প্রদাদ পুরি তুলিতেই বার। ফুডজে হইয়া তীত্ত্বে কর নমস্কার ।। ' বর্তুমানে দেখু তাঁরে পিতা বিদ্যমান। भारत (मन्जा वित्येष्य । स्विति ।। প্রেম ভক্তি পুলে তার করহ অচ্চনা। তাঁর কাৰ করি কর তাঁহার সাধনা।।

অন্তরে বাহিরে তাঁর দেগঁছ প্রকাশ।
প্রাক্তক করিতে তাঁরে করিবে অভ্যাস।
তদ্ধ হও—পাবে তাঁর সহবাস চিতে।
কিবা স্থ্য তাঁরে লয়ে জীবন যাপিতে।
ভবিনাতে তাঁরে কর একান্ত নির্ভর।
তাঁর পানে চেয়ে হও বিশোক অন্তর।।
চাও তাঁরে ধর্ম রল পাপ-নিরসন।
তাঁহার প্রসন্ধ মুখ হানয়-রঞ্জন।।
দিন দিন পাক তাঁরে মধুর বনদনে।
নব ভক্তি মানা দাও তাঁহার চরণে।
নব নব দেখ তাঁর ককণা বর্ষণ।
নব নব কেচ্ছেলা করছ অপ্রা

### शांशना ।

হে নাথ। তোনাৰ দ্বলি কেমনে করিব!
তোনারে হাদরে আগি কেমনে পুজিব!
ভোনারে পুজিতে নাথ! ভূনিই শিপাপ।
ভোনাকৈ পা'বার পথ ভূমি বলে দাও।
কবে নাপ! কবে ৩০ উপাসনা বলে।
ভব পর্নে অঞ্জার হইব সকলে।।
এই ইচ্ছা ভূমি নাথ। ক্রহ পুরণ।
ভোগারে পেবিয়া হোক সফল জাবন।।
সপ্তদশ ব্যাখানে সমাপ্ত।

## শরতে আরতি।

তারাকদ্ধন স্থান্যবকীর্যা দিকু
ক্ষেমার সর্বজগতাং বকরে: প্রকামং।
হিজীরপাপুরক্তি: শশলাহনোহয়ং
নীরাজয়ন্ ভ্রনভাবনমুজ্জিহীতে। ১
বৈরং শৈলবনাবলীং বিষ্টুরন্ সক্ষোভয়ন্ গাগরং
প্রধাতের্গিরিকলরান্ মুখরয়ন্ বল্পাওমুলোধয়ন্।
বাবো বং ওজশভাচামরভবাং প্রীতিং বিধেহি প্রভোঃ
সন্ধ্যামঙ্গলদীপকোহয়মুদগাৎ ব্যোমি ফ্রভারকে।

## \$ 1 45 0 B

## প্রাপ্তি স্বীকার।

আমৰ। সভজ্ঞ<mark>তার সহিত স্বীকার</mark> করিচেছি যে ুনিম্নিশিথিত পুত্তক ও প্রি**কাণ্ড**ি আমর। উপহার ু**প্রা**প্ত হইয়াছি।

্ৰী ্ৰু । ধণা পৰিচৰ লোগ লোগ। ক্ৰাসলা, সিংহ **ষ**য়ে মুক্তিত ।

2.1 The Universal Poligion by R. K. Sen, Countle.

than Ray Vel 1. The append and published by Eldrin Chandler to a

Vol. LLV, Part 11. No. 11. 1885

Proceedus, of the Austic Society of Bengal August 1855.

Theosophist - is compler 1885 Interpreter - Navember 1865,

প্রচার কারিন
প্রচার কারিক
ভারতী আধিন ও কারিক
বালক আধিন ও কারিক
ধর্মপ্রচারক আধিন
বামানোধিনী প্রিকা আধিন
বামানোধিনী প্রকার কারিক
বামানোধিনী প্রকার আধিন
বাম্বার্থি ১১০২ দব্যা
নব্য ভারত আধিন ও কার্তিক
ধ্রমন্ত্রী আধিন
ক্রম্বিন্তেট ভাত্

## বিজ্ঞাপন্য

আগামী ৫ পৌর শনিবার সন্ধা। ৭খটিকার পর বলুহাটী ভাতাসমাজের অন্তবিংশ সাত্তং-সরিক ভাতাসমাজ হইবে।

विगररक्ताय गत्नाभाषात्र

### আৰু বাৰু 1

ভার ও আরিন **জারা সৰ**ং ৫৬।

### আদি ত্রাক্ষদমাজ।

আয়		, •	••	2039	10/0
পূর্ব্বকার স্থিত		, " , r +		২৭৬৩।৴৽	
সমষ্টি 🔭	•••	* * *	,	७१००	19
दाश्र		7 •	•	4841/o	
হিত		-	***	২৯৩১	20
আয়।					
ব্যক্ষাসমাৰ	₹	***		89	y <sub>i</sub> o
দান প্রাপ্তি	t				, ,
≟ীমখহৰি ৫	দ্বেক্তনাথ	* * 15		204	,
बीयूङ वाम नमशासादन ८६) (वी वाश्व्य					
•		भ्यंबा	ভার	201	
किं पूर्क नीलकमन मध्याशाधाय				301	
., কান্তিকচরণ নাহিক				34	
	ल मान्द्रहो	ৰ (ফিরেয়	জ্পুর)	21100	دد د م
मानागाः व	নন প্রাপ্ত।			, dop	p)·
	~ <i>~</i>	,	4.	89 Ma	
ভত্তবোধি		1	•••	્. ૨৪৮	ma
পুস্তকালয়	Γ.			* ±	4/3
যন্ত্ৰালয়			• •	9.00	0
গাঁহত				ಿಸ್ಕಾಲ	
ব্রাক্ষার্পর গ্রন্থ প্রকাশের মূলীখন				, Þ	Top .
ব্রাফাধর্ম প্রচার				ું 🕻 🔈	, \$
দাতব্য	*			ા. જિલ્ <b>ય</b>	1/0
मगर्छि			1	>0>4	0/9
ı	٧	্ব্যয়।		40 4	, .·

বামসমাজ ...

१७१५०/२

তত্ত্বোধিনী পুত্রিকা পুস্তকালয়

Shely

গচ্ছিত

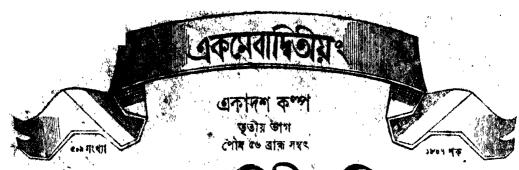
૯ પાત કર અ

ব্রাত্মধর্ম **এর প্রকাশের মূর্নিধ** ব্রাক্ষধর্ম প্রচার

40

माञ्जाः 🎉

बी करीजनार शिक् गणानक।



# তঅরোধিনীপত্রিকা

भव्यसम्बद्धिस्तित्रचामोत्रा यन् किथना**सामदिदं** सन्यसस्त्रत्। तस्य नित्यं प्रानमनकं वित्यं स्वतं वित्यसम्बद्धियमिकारिकायम् मर्व्ययपि चर्चारियक् सम्बोधयसर्व्यकित् सर्व्यक्षितास्त्रम्य पूर्णसप्रतिसमिति । एकास्य तस्त्रीदीपासनया

गरा नक्क मेहिक च यम भवति । तक्षिन् प्रोति ज्ञाम भियकार्यः साधन च सद्पासनसेव ।

## বি জ্ঞাপ্ৰ।

ষ্টপ্রশাশ সাংবংসরিক ভাষ্ণসমাজ।

১১ মার্ঘশনিবার প্রাতঃকাল ৭া০ ঘণ্টার সময়ে আদি ব্রান্দ-সমাজ-গুহে ব্রন্ধোপাদনা হইবে।

> জীরবান্দ্রনাথ ঠাকুর। সম্পাদক।

আদি ব্ৰাক্ষসমাজ । প্ৰথমান ৷ নবিবাৰ ৫৬ ব্ৰাক্ষ সম্বং। প্ৰাহাবাৰ উপদেশ। প্ৰিয়াতে মীঠ বক্তকাছে, শুকলই পুথি

পৃথিবীর জীব; কেবল মনুষোর সম্বন্ধেই ভাহার বিপরীত দেখিতে পাওয়া যায়। মনুষ্ট কেবল বলিতে পারে য়ে "আমি পৃথিবার নহি -পৃথিবী আনার!" কোণা इंटेटच श्रविनीत **উপরে মনু**ষ্যের **এ রূপ স্বত্ত্** जिमल? मनुसायित कितल लार्थित कीत ভিন্ন আর কিছুই না হয়, তবে "পৃথিবীর উপরে মনুদোর আদিপত।" এ কৃথা অতি হাপ্য-জনক; স্মুদ্রেরু উপর তরস-ফেনের আধিপতা, পর্মতের উপন পার্মকীয় ভূণের वाविश्रेटा, हैश रियमन । शास्त्रात केश ; পৃথিবীর উপরে পার্থিষ জীবের আধিপতাও সেই রূপ। মনুষ্য বঁদি সত্য-সতাই পার্থিন জীব হয়, ভবে পুথিবীর উপর জাধিপত্য বিস্তার করিতে যাওয়া আহার পরিক কিছু-তেই শোভা পার না, তাহা ইইলে তাহার क्रमेख अपूर्वित प्रे क्रिक क्योंने हुन इरेग्रा যায়; সে কুখা এই ক্ষেত্ৰপুথিবী হইতে ত্মি উৎপূর্ব ছইরাছ; তোমার চরণ পৃথিবীর স্থালে আলম রহিয়াছে: ত্মি ৰাহা কিছু কৰিতেছ, अभिनी তোমাকে দিয়া তাহা করাইয়া লইতেছে; বিধাতা, ছুমি কেবল একটা উপাদক <mark>্ মাত্র। মেইয়ালা, পৃথিবীর ক</mark>ঠোর কারা-গার হইতে মুক্তি পাইয়া কিয়ৎকালের জনা भरनत छेल्लारम सारीन छाटत निहत्त कटत. কিন্তু পরকণেই জলাকারে ঘনীভূত হইয়া পৃথিবীর মে বাঙ্গা পৃথিবীতে অমনত **হইয়া** পড়ে; ভুমিও সেইরপ াওই কেন আকাশে উভ্তেমন তর না—যতই কেন গর্ব কর নাসে, ভা্চ আচ এখন পুথিবীকে প্রভু বলিয়া মান না-প্রাপ্তা তোমাকে গ্রন্থ বলিয়া মানে: - যে ভোমার স্থ্য-সপ্ত দুই नित्मव छन्। १३ जिन भद्रहे शृथिती ভোষাকে আপ্ৰাৰ উদরে চানিয়া লইয়া তোমার সে ভ্রম জন্মের মত যুড়াইয়া বিবে।" সতাই যদি এরূপ ২্য যে, মনুষা পৃথিবীর জীব হথচ প্রভুত্তের বঙ্গন তাহাকে এরূপ অধীর করিয়া তুলিয়াছে যে, পুথিবীর উপরে আধিপতা বিস্তারের র্থা চেপ্রায় ব্যাপুত ना हरेशा (म कान-क्ट्येंट कार शक्टिङ পারে না; ভবে পৃথিবীর ন্যায় হাস-রসাত্মক নাটাশালা আব কুত্রাপি নাই। কিন্তু বাস্তবিক তাহা নহে। **আদি** কৰিব বির্চিত জগৎ এত লঘুনহে যে, তাহা त्ववन शामा-व्र**मिष्ट** शर्मावनिष्ठ श्**टेरव**;— তাঁহার রচনা নানা রদযুক্ত গভীর রচনা, তাহা শুদ্ধ কেবুল হাসা-রসের শফরী-ক্রাড়া নহে। পৃথিবীর উপরে মনুযোর যে আধি-পতা তাছা পার্থিব জীবের হাসাজনক षाधिशञा नरह, जाहा क्षेत्रदातु शूरेलात नाथा আধিপত্য। ঈশর মনুষ্যের শরম পিড়া, পরম মাতা, পরম বন্ধু, সিতার ঐশ্বর্ণ यमन श्राकत के प्रधा निष्टतत के प्रधा (महर-রূপ মনুষ্যের ঐবর্গ। অত্তার হে মানব ! হে অয়তের পুত্র ৷ ১ চতুর্দ্দিকে শিতার ঐথব্য দেখিয়া—্বাভার আরোগ-দায়র ইন্ড দে-भिन्न - जिन्द र रहेरक निपरी एक रिस्त्रन करें। আর্থনার উক্ত অধিকার বিশ্বক হটয়া—

পৃথিবীর দাসত শ্রানকে কঠেয় ভূম করিয়া—নিজ্**ও জীকের ন্যার অর্নত** মন্তবে জীবন অভিবাহন করিও নারী চতুর্দিবে প্রকৃতির মঙ্গল উৎস উৎসারিত হইতেছে— তোমার আত্মার প্রেমের উৎস উদ্ঘাটিত করিয়া দেও! ঈপর কি করিতেছেন, এক-বার এক দৃষ্টে চাহিয়া দেখ—"এক ভাসু অযুত কিরণে উজ্বলে মেযতি সকল ভুবন, তাঁহার প্রেম হইয়ে শতগা বিরুদ্ধে সতীর প্রেম জননী হৃদয়ে করে বসতি।" মাতাকে শিশু কডটুকু জানে – কডটুকু বুৰে ? জানিয়াও—না বুঝিয়াও—আপনার ফুড হৃদরের সকল প্রেমটুকু মাতাকে অর্পণ করে। ঈখরের নিগুট তত্ত্ব আমর। কি জানি – কি বুঝি ? কিন্তু আমাদের হৃদ্ধের সমস্ত প্রেম কি আমরা ভাঁহাকে সমর্পণ করিতে পারি না ? ইহা তে। আমর। জানি হৈ, এই বিশাল পৃথিবী সেই মাতার জ্রোড়—সুর্ধ্য-কির্ দেই পিতার মন্ত্র আশীর্বাদ-প্রাতঃস্মী-রণ দেই আরোগ্য-দায়ক বন্ধুর মুধ-মারুত আনাদের শরীর মন হইতে রোগ-শোক বিধৃত করিয়া কৈলে,—তবে কেন তাঁহার প্রতি আমাদের হৃদয়ের মম**স্ত প্রেম সমর্পণ** না করিব ?

মনি মৃক্তা হারক সূর্যা-কিয়ণের প্রাজ্যান তারে কিরণ বিভরণ করে, তাই তাহারা মূলাবান সামগ্রী,—মামাদের মাজা বদি স্থারের প্রেমের প্রত্তেরে প্রেম দান করিতে পারে, তবেই তাহা মূলাবান হয়; ঈথরের প্রেমের উৎস নিরম্ভর উৎসারিত হইতেছে—আমাদের হাদরের উপর তাহা যদি বার্থ হইয়া হার, তবে আমাদের হাদয়েই কিন্তা মালার প্রেম দিয়া স্থারের করে প্রহণ করিছে পারে, বেই মুদ্যেই প্রত্তে করিছ। মালা করিছে পারে, বেই মুদ্যেই প্রত্তি করিছে। মালা করিছে পারের বিশাহিত করিছে নিশাহিত করিছে নিশাহিত

করেন—অজ্ঞান শিশুও তাহার তুইটি চক্ষ্
মাতার চক্ষ্য প্রতি নিবিপ্ত করে, ইহাতে
মাতার ক্ষেহ-পূর্ণ চক্ষ্ শিশুর চক্ষুত্রে জন্মের
মত মুদ্রিত হইয়া ষায়, সেই চক্ষ্য গুণে
মাতা যে কি বস্তু, শিশু তাহা চিরকালের
মত মুনিয়া লয়; ঈশরের প্রেম-চক্ষ্য প্রতি
যে বাজি আত্মার চক্ষ্ কিরাইয়াছেন,
তাহারই অস্তশ্চক্ত ঈশরের থেম-চক্ষ্
মুদ্রিত হইয়া গিয়াছে ঈশর যে কি বস্তু,
তাহা তিনিই বুনিয়াছেন, তাহার। শ্ন্য
ইপরকে ব্নিতে গিয়াছেন, তাহার। শ্ন্য
হস্তে ফিরিয়া আদিয়াছেন।

পৃথিবী য়েমন জ্ঞান-শিক্ষার তেখনি প্রেম-শিক্ষার<sup>ক্</sup>স্থান। মাতা পিতার অফুলিম সেহে, পতি পত্নীর অফুলিম প্রেমে, বশুর অক্রতিম সোহার্দে যদি আমরা ঈশুরের প্রেম দেখিতে না পাই, তবে আমানের প্রেম-শিক্ষা নিতান্তই স্বসম্পূর্ণ খাকে। বিজ্ঞানবিৎ পশ্বিত একটি স্থান ফলের ভূপতন দৈখিয়া সমস্ত ভৌতিক জগতের মূলে আকর্ষণ দেখিতে পাইয়াছি লেন। আমরা যদি মাতৃ-ত্রেছ দেখিয়া, দম্পতি-প্রেম দেখিয়া, সমস্ত জগতের মূলে স্নেহ-ত্রেমের আকর দেখিতে পাই, তা আমাদের জ্ঞান-চক্ষু কত না প্রক্ষাতিত হইয়া म्हे त्थायत मध्द सिल्लाल উटि ! আমাদের इपटाउउ छेरम धुनिया लाल আমরা কি, পর্যান্ত না কৃতকৃতার্থ হই ? স্বর্বরে প্রেমর্গ্রন-পানে ভাগেরকে পরিপূর্ণ করিয়া যে ব্যক্তি সেই হৃদরের ভাগুর সমস্ত জগতে খুলিয়া দিতে পারেন; তিনিই ধন্য, তিনিই সুধী, তিনিই সাধু, তিনিই মনুষোর চরম আদর্শ।

যথন বালাধর্মের কলিকা কাল-জিয়ে বেন—তাঁহার পরম শত্রুও তাঁহাতে এরপ বিক্ষিত হুইরা উঠিবে, তখন পুণ্যাত্মারা পরামর্শ দিবে না ৷ হদি কাহ্য-কারণ-তড়ের বাল্যমন্ত্রীর শিরোভূত্রণ হুইবেন,—তখনই সাগর-মন্থন দেখিতে নিভান্তই তাঁহার ইচ্ছা

ত্রালাধর্মের প্রকৃত মাহাত্ম্য পৃথিবীসয় প্রচা-বিত হইবে।

হে পরমান্তন্। তৃমি পরিপূর্ণ মঙ্গল —
ভাগরা তোমার আশীর্কাদের প্রাণী।
তোমার এক বিন্দু কুপা আমাদের প্রতি
জনের হাদয়ের সন্থল—আমাদের জন্মভ্রি
ভারত-ভূমির সন্থল; এই তুঃখ শোকের
সধ্যে তৃমি আমাদিগকে অভয়-দান করিলে
ভবে আমরা থ স্ব কর্ত্তবা-পথে অটল থানিতে
পানি, চোমার প্রেম-মুখের উৎসাহ-বানী
ভানলে আমরা সকল বিপদ্ ভূজ্ম করিতে
পানি; তুমি আমাদের সঙ্গের সন্ধী হও,
বিপদের কাভারী হও, আত্মার প্রতিষ্ঠা হও,
মোহান্ধকার যেন আমাদের চক্ষ্ম হইতে
ভোমাকে ভারত করিয়া না রাখে—এই
আমাদের প্রাথনা।

'उँ এक स्थिता विकीशः ।

## কার্য্য-কারণ-তত্ত্ব।

ইউরোপীয় দার্শনিক জগতে হিউয় কার্য্য-কারণ-উড়ের সমুদ্র-মন্থন স্থারু করিয়া-ছিলেন, আজিও ভাহা প্রবল দেগে চলি-দেছে: ভাহা হইছে গরল উঠিতেছে, অমৃত্র উঠিতেছে; গাঁহারা অমৃতের আসাদ জাননেন ভাহার। অমৃত বাছিয়া লইতে পারেন; কিন্তু যিনি সে রসে বকিত ভাহাকে বলি যে, তিনি একটু সাবধানে সে দিকে পা বাড়াই-বেন—এক জন জানা-শুনা পথ-প্রদর্শককে সহায় করিয়া অমৃতের অস্বেয়ণে প্রব্রত্ত হই-বেন, নচেৎ গোড়াতেই ক্ষুত্ত হইবেন,—অমৃতের হ্রদ্ব মনে করিয়া তিনি কি শেষে বিষের হ্রদে পিপাসা নির্ভি করিতে যাই-বেন—ভাহার পরম শক্তও ভাহাতে এরপ পরামর্শ দিবে না। হাদ কার্য্য-কারণ-তড়ের সাগর-মন্থন দেখিতে নিভান্তই ভাহার ইছে।

33 **386 41**8

কন্ত পূর্বাহেই তাঁহাকে আমরা বলিতেছি

যে, মছনের কোলাহলে তাঁহার মস্তক বিভান্ত

হইয়া ষাইবে; তাঁহার গালের কণনো বা
বিষেরছিটা—কণনো বা জয়তের ছিটা—লালিবে; তাহার মধ্যে এই বন প্রবিধা আছে

যে, যে দিক্ দিয়া অগতের ছিটা আদিতেছে, সেই দিক্ পৌন্না দাঁড়াইলে আর

কোন লগু নাই—কান্দ যাংগ্রোনান্তি।
তবে পার ডিনা কিনা বিভান্ত বাহারা

যাইধা

### পরিসামা।

প্রা সংশ নগ্রনর হইবার পূর্বের যৎহিনিৎ গাথের সংগ্রহ করিয়া রাখিলে ভাল
হয়:—কাহাকে বলে আবিভাব—কাহাকে
বলে ভাব—কাহাকে বলে তত্ত—কাহাকে
বলে মূল-হত্ত—এই চারিটি বিষয় পূর্ব্বাক্তে
জানিয়া রাখিনে ভাল হয়।

मूंगारक छावरम आयत्र। छत्क प्रचि, छा-হাদ পারে মনে ভাবি; যাহা চক্ষে দেখি ভাি দুর্গের আবিভাব-যাহা মনে ভাবি জাষ্ঠা সুরোর ভাব। স্থার বিষয় যখন আমুকা মনে ভাবি, তথন সেই মন-গড়া ক্ষণাকৈ তানবা বলি -- "কুৰার ভাব"; আ-বার্গ, সেই ক্ষা গণন উদরাভান্তরে জাগ্রত হুইয়া উঠে: তথন আর তাহাকে 'ভাব'' 🚮। গোষাং না – ভংগন বলি 'ক্ষাৰ আবি-/ভবি''। আমাদের বৃদ্ধি ব্যক্ষ সন্মুথ-স্থিত / বিষয়ে ব্যাপুত হইয়া আছে, তখনকার সেই जीवल विक जागादनव मदनामदश छोहेका টাটুকা যেরূপ প্রতায়মান হয়—ভাহাই বুদ্ধির আবিভাব; কিন্তু ভাছার পরে যখন সেই বৃদ্ধি ব্যাপার-টি আমাদের স্মরণে উদোধিত হয়, তথন দেখিতে পাই তাহা বাদী হইয়া ি গিয়াছে—তাই তথ্য আর ড়াছাকে "বৃদ্ধির पार्विजाव" विन ना, उपन विन "वृद्धित

ভাব।" **णाविजात स्य दुन्ती** दहिर्ने छाउँ र्श- अगन नदर, जाना जिल बर्खद्र ७ जानिजान रुष ; रहिति <u>क्रिय</u> म**गरक रहिर्दछ**त श्राविश्व হয়, অন্তরিন্দ্রির সমক্ষে আধ্যাত্মিক ব্সত্তর আবিভবি হয়। কিন্তু বহিবল্ডর ভাব এবং আবির্ভাবের মধ্যে যেমন একটি স্থস্পাই দীমাচিত্র অন্ধিড'হইতে পারে, আধ্যাত্মিক বস্তুর ভাব এবং আবিভাবের মধ্যে তেমনটি হওয়া তুর্বট ; সূর্যোর আনির্ভাব আকাশে— मूर्यात जाव जागारमत गरन—फूरवत गरभा স্বর্গ-মর্ট্রের ব্যবধান; পক্ষান্তরে, আবিভাব এবং ভাব উভয়ই আমাদের मत्नामत्वा— ७ जनाः ७ पूर्वद मत्वा वाववान নিৰ্দেশ করা স্থকঠিন,—কিন্তু দাৰ্শনিক পণ্ডি-তেরা তাহাও করিয়াছেন। ফরাসীম দে-শীয় দার্শনিক পণ্ডিত কুজান্ আবিভাবরূপী বৃদ্ধিকে ''উৎসায়মান'' (spontaneous) এবং ভাব রূপী বুদ্ধিকে "প্রাতিভ" (reflective) উ-পাধি প্রদান করিয়াছেন, এবং উভয়ের মুধ্যে এভেদ যে কত প্রকার, তাহা স্পাষ্ট করিয়া দেখাইয়াছেন; এ বিষয়টি এখন এই প্রান্ত থাক্---যথাস্বা**নে পরে জাসিবে। এখনকে**বল এই টুকু জানিয়া রাখা এ য়োজন (य, যাহা নাকাৎ সম্বন্ধে বহিরিন্দ্রিস-সমকে বা **অন্তরি**-ক্রিয়-সমক্ষে উপস্থিত হয়, তাহাকেই বলি "প্লাবিভাব"; আর, যাহা সামার সাহিত্য ভাব নহে – অথচ সেই আবিভাবের অনুপ-স্থিতি-কালে তাহার স্থলাভিষিক্ত বলিয়া গৃহীত হয়, এক কথায়—যাহা আৰিভাৰে প্রতিনিধি, ভাহাকেই বলি 'ভাব'। স্-র্ব্যের ভাব কিছু-আর সাক্ষাৎ সূর্ব্য নহে – তাহা দুৰ্ব্যের প্ৰজিনিধি লাভ । প্ৰামৰ দার্শনিক পণ্ডিত মার্মেনীন স্বাধিতাব-करी क्यानाम अविदेश निक" (presentative) धरः जार-जानी जासक "क्षांक्रमानाज" (representative)

আমরাও বলি যে, ব্যান্ধনেট্ যেমন নগদ্
টাকার প্রতিনিধি, ভাব দেইরূপ আবির্ভাবের
প্রতিনিধি। এই গেল ভাব এবং আবির্ভাব,—এখন তত্ত্ব এবং মূলতত্ত্ব এই তুই
শদের অর্থ সংগ্রহ করিতে পারিলেই পাথেয়-সম্বলের জন্য আর আমাদের কোন
ভাবনা থাকে না।

শুধু একটি ভাবে কিন্তা শুধু একটি আবি-র্ভাবে তত্ত্ব হয় না ;—তত্ত্ব-একটি দাঁড় করা-ইতে হইলে, তুই ভাবের মধ্যে -- অথবা জা-বির্ভাব এবং ভাবের মধ্যে—বাচ্য-বাচক সম্বন্ধ অবধারণ করা চাই; "হস্তী" একটি ভাব, "চতুষ্পদ" থার একটি ভাব; এবং উভয়ের মধ্যে সম্বর এই যে, হন্দী চতু-क्षान-भरकत दोठा ७ ठड्कान . रखी-भरकत्र वाहक ;-- উভয়ের মধ্যে এইরূপ বাচা-বাहक সম্বন্ধ পাকাতেই আমন "হন্তী চতুষ্পদ" এই বাক্যটিকে তত্ত্ব বলিয়া নির্দেশ করি। শুধু যদি বলি "সূৰ্যা", তবে তাহা তত্ত্বলিয়া সৃহীত হইতে পারে না,-কিন্তু যুদি সুর্যোর ভাবের দঙ্গে উদয়াস্তের ভাব যোগ করিয়া **निष्टे, তবে দেই** ছুই **ভাবৈরী যো**গে এই একটি ভত্ত্ব উৎপন্ন হইতে পারে 🕮 সুর্ন্ত छन्याख्यान्। "मूर्य **छन्याख्यान्"** हेश (य-মন একটি ভত্ত্ব, পরিবর্ত্তন ৢ চেকুমান্ (অর্থাৎ পরিবর্জনের কারণ আছে) ইছাও গেইরূপ একটি **তত্ত্ব। ্রূর্বেরে** ভাব এবং উদয়াস্তের ভাব এই হুই ভাবের স্বোগ-দৃত্তে এই তত্ত্বটি পাওয়া যাইতেছে যে, সুর্য উদয়ান্তবান্; তেমনি, পরিবর্জনের ভাষ এএবং কারণের ভাব এই সূই ভাবের ধোঁগ-দৃষ্টে এই ভত্বটি পাওয়া বাইতেছে যে, পরিবর্ত্তন হেতুমান্। কিন্তু বৈজ্ঞানিক পণ্ডিতদিপের সিদ্ধান্ত এই त्य, मूर्वाङ अनुवाखवना आयादनत गतनत সংস্কার মাত্র; "পুৰিবী সুর্বাকে প্রদক্ষিণ करत" देशरे श्रक्त जब, निवित शत-

**खग-भोनडारे श्रहा उद।** मूर्गात छेप-য়াস্ত-বত্তা (য, কডকালের প্রাতন ভত্ত্ব, ভাছা বলা যায় না – তাহারও দেশ বিপ "পব্লিবর্তন-মাত্রই ঘটিয়াছে,—কিন্তু **হেভ্যান্ বা সহেভ্রু,'' এ তত্ত্তি**র বিপ্রয়ে ভাবনাতেও স্থান পাইতে পারে না; "দুষ্য পূৰ্ব্ব দিকে দেখা দিভেছে অথচ ভাহা স্থির আছে" এরপ ভাবনাকে মনে স্থান দেওয়া কিছুই ক**ঠিন নহে**; কি**স্তু** "পরিবর্ত্তন ঘটিতেছে অথচ তাহার কোন কারণ নাই'' এরংণ ভাবনা মনের এক কোণেও স্থান পা-ইতে পারে না; পরিবর্ত্তনের ভাবের সঙ্গে হেতুমভার ভাব এরূপ অচ্ছেদ্য বন্ধন সূত্রে তাথিত রহিয়াছে যে, দে বন্ধন-সুত্তের ছেদন ভাবনাতেও স্থান পাইতে পারে না। क्रभ, (म-दर्गन एटहुद जनाया जामाट्रम्द ভাবনাতেও স্থান পাইতে পারে না, তাহা-কেই আমরা ম্লতজ্বলিয়া নির্দেশ ক্রি-তেছি। "তুই খানের মধ্যে সরল-রেথাই মুণতত্ত্ কেননা ইছার অন্যথা ভাবনারও অগোচর ৷ কোন বস্তরই মূল-উপাদান বি-্রঞ্জ ছইটে পারে না – ইয়াও.একটি মূলতত্ত্ব; मून ७६ । एनन এই পर्मा**छ गा'क्-भरेथ** मरुहे অগ্রনর হইব ততই তাহার **অর্থ বোধ-মূল**ভ হইং:— এত এব আর কাল-বিলম্পে এয়ো-জন নাই – প্রয়াণে প্রবৃত হওয়া যা'ক্।

### লকের সিদ্ধান্ত।

প্রসিদ্ধ ইংলণ্ডীয় দার্শনিক লক্ বলিয়া-ছেন যে, আমাদের ইন্দ্রিয়-পটে বহির্ত্তগতের বে-সকল ছাপ পড়ে, তাহাই আমাদের ম-নের ভাব-রূপে পরিণত হয়; এবং সেই বহির্ম্লক ভাব-সমূহের যোগাযোগ হইতেই বৃদ্ধির তত্ত্ব-সকল উৎপদ্ধ হয়। আমাদের মনো-মধ্যে-বেন ভাব বিদ্যমান দেখিতে পাওয়া ষায়—ইন্দ্রিয়ই তাহার একমাত্র প্রা

93 **411. • 514** 

বেশ দার; এমন ভাবই নাই—এমন তত্ত্বই নাই—মাল ইন্দ্রিয়-ছারে জীবা নত না ক-রিয়া মনোমধ্যে আবিভূতি হইলছে বা হইতে পারে।

#### To 3754 (75) 81

किलेंच् बारत के उपार्ष निरंदापना क-বিয়া-কাল এরণ এড়েলি মনতত্ত্তলি ই लिस हो? १०३० विकास स्वीमा**रनत गरन** . ভাবেশ প্রাটার লপতত তালাস প্র**ক্রিয়ায় গ্র**-য়ত ঘট্নোল। জেন লেভিলেন যে, **বীজ** हरिक नवल एक ग्रंथम इस, खरान-অংগ সংকে বাৰ পাৰে অমুখ্যবহ উপান--हें हो है। उन्हार भाषा अध्या अध्या (प्रश्वि, कि छ तोष ছইতে অন্তরে দ্গনের কি-যে বাধ্যবাধকত। মে-চি আমন। ভাদবেই দেখিতে পাই না— অথচ মেইটিকেই কার**ণে**র কারণঃ ২য়। আতো যদি কোন-একটি স্থানে বান্ধ বপন করা যায়, এবং পরে আর-এক স্থান হইতে অন্তর স্বানিয়া দেই স্বানে রোপণ করা খায় ভাগ হইলেও ভো বীজ-বপনের পরে তন্ত্ বেৰ ভিশান নয়ন গোচর হয়,—ভবে কেন আঁমরা বলি না খে, এবারেও বীজ অন্ধরো-দ্গদের কারণ ? অত নক শুধু যে, পূর্ববভূ স্টলেই কারণ হয় ওবং **পরবর্তী হই**লেই শর্ষা হয়, ভাষা নহে ,—পূর্ববর্তী ঘটনার सरता यनि उपन वकी। ति इ शास्त्र— याञात श्वरन भारत हा भारता छिए भन्न इंडेएंड वाशा हर- चित्र वासता ने कु**हे** ब्रहेमात सरका কার্যা-কারণের সম্বর্ধ উপলব্ধি করি: কিন্তু टमहे (ग, "अक्षे-किड्र" शृङ्कात कर**ने कार्या** উৎপন ইইজে বাধ্য হয়, ভাষা কি ? ভাষাকে কেহ চক্ষে সেখিয়াছে ? কর্নে শুনিয়াছে গ জিহুৰায় আধাদন কৰিয়াছে ? তবে আৰু কেম্ম করিয়া বলিব বে, সে-ভাবটি আমাদের हे लिख हा इ निया यहन लातना क विद्यादक ! দিনেব পর রাজি হয় বলিয়া দিনকে কিছু-আর

রাত্রির কারণ বুলা বাইতে পারে না—বীজের পরে রক্ষ হয় বিশয়েই কিছু আর আগরা नीखरक त्ररकत कांत्रन विन ना ;-"नीरखत मत्या अगन अक्षे किছू चाहि याहार क+ রিয়। ব্লক্ষ উৎপন্ন **হইটে**ত নাধ্য **হয়**" এই ভাবিয়াই আমরা বীজকে রুক্ষের কারণ বলি; কিন্তু দেই যে ''এডটা কিছু' তাহা একেবা-রেই শিল্পাের অণােচর,—তবে আর কেমন করিখা পলিব খে, কারণের ভাব ইভিন্ন-দার जिल्ला कामाद्रज्य महना-महला शहनन कति-য়াতে ১ পঞ্চিরাজ ঘোড়া কেহই চক্ষে দেখে নাই-কন্ধ তাহা ইলিয়-ছার দিয়া আমা-দের মনে প্রবেশ করিয়াছে উহা ব্ধিতে পার। কিছুই কঠিন নছে; সদক্ষেই বোড়া দেখিয়াছে সকলেই পক্ষীর পক্ষ দেখি-য়াছে,—এই দুই চক্ষে-দেখা বস্তু একতা সরি-বেশিত হটলেই পক্ষিরাজ যোড়া হইয়া দাঁড়ায়; অভএৰ পক্ষিৰাজ ঘোড়া ইন্দিয়-দাব বিধা আখাদের **খনে** প্রবেশ করিয়াছে ইহাতে আর ভুল নাই ; দ্বিন্তু কার্য্য-কারণের অনুশা বহুন-সূত্র – যাহার গুণে কার্সা উৎপন্ন হইতে বাধ্য হয়—তাহা মুলেই ইন্দ্রিং-গণ্য नट्य,--ज्रात प्रात्र कमन कतिया निन्त त्य, তাহ। ইক্রির-ছার দিয়। মনোমধ্যে এবেশ করিয়াছে ? ভবে যদি বল যে, কার্য্য-কারণের বন্ধন-স্ত্ৰ বাস্তবিক কিছুই নহে—তাহ। আমাদের ননের সংস্কার মাত্র, ভাহাও বলিতে পার না; অগ্রে যাহা ইন্দ্রির-দারা ভূয়োভুন্ন দৰ্শন আৰু করা যার, ভাহারই मः क्रांत काल-कर्त्य महामारशा वसम् हहेश। ষায় ; পর্কন্ত কথনও যাহা দেখা স্বায় কাই-भा यात्र नाहे, अवध्यकिष्य कारन रमना याहित বা ওনা যাইবে ভাহার সন্তাবনাও সাই-ভাহার আবার সংস্কার বিরূপ 🖍 স্কার্যক্ষীয় वर्वमाना, त्य काकि, हारकेश दल्द नाम कर्तिक তলে নাই—ভাহার মনে কি, ক্ষমত এরপ

শংকার জমিতে পারে যে, ক-**অক্ষরের** পর্ খ-অক্ষর, অথবা ক-বর্গের 🦏 চ-বর্গ ? যদি বল যে, কার্যা-কারণের সংস্কারও আমাদের नाह-कार्या-कार्यन (कदन এकछो কথা-মাত্র; তবে শিশ্চিত জানিত কাৰ্ম-কারণ-তত্ত্ব মুখের কথা নহে যে, তা-হাকে এক কথায় উড়াইয়া দিবে, বরং হি-মালয় পর্বাতকে ফুঁরে উড়াইল। দেওল গাইতে পারে—কিন্তু ইন্দ্রের কল্ও কার্যা-কারণ-ভত্তকে এক-ভিন টিগাইডে পারে না,— পরিবর্জন-মাত্রেরই কারণ 四亿至--本179 "আছে" শুধু নয় কিন্তু কারণ "থাকিতেই চায়" এই সৈ একটা প্রকাও জোরের কথা, কাহাবো দাধা নাই যে, গুকগার এক চুল এদিক ওদিক করিতে পারেন। ইন্দ্রিয়-ছার দিয়া আমরা বে-কোন রভান্ত অবগড় হই, ভাহার মুহুঙ্কে আমর। কেবল এই পর্যন্তই বলিতে পারি যে, "এইরপ হইয়া আসিলেছে" যা"এইরূপ হইয়া থাকে,"যেমন কুপ্রভাহ সূর্গ্য উঠিয়া থাকে;" তদ্বিত এমন বলিতে পারি না যে "এইরূপ হইরে' ইইরে"— "প্রতাহ দূর্ব্য উঠিবেই উঠিবে।" যদি কেছ বলেন যে, "মুগ্ৰ প্ৰভাহ উ'দিও হইতেই চায়, কোন দেশেই—কোন কালেই—এত্স্কুটির তিলমাত্রও ব্যভিচার সম্ভবে না," তবে এটি ভাঁহার মূনের সংস্কার ভিন্ন আর কিছুই নহে; মেরুর निकष्ठिं প্রদেশে ছয় মাস সূর্য্য উদিত হয় না-ইহা দেখা কথা। সাপ্লাতে প্রত্ত সূর্যোদয় হয় কি না—ইহার স্থিয় তথা জানিতে - হইলে লাুপ্লাও দেশে মাওয়া আবশ্যক হয়; কিন্তু মনুষোর অংগম্য দুর্বের গাতে সময়ে সমুহে কে কালো দাস ফুটির। ব্যক্তি হইতে रम्या गात्र, जास्तु कातन चारक कि ना हेश। জানিবার জনা দূর্ঘা-লোকে যাইবার কিছু-गাত্র **ब्याजन नार्ड** यामना एतं राष्ट्री ट्रनान দিয়া বদিয়া নিংশংশয় চিত্তে বলিতে পারি

ৰে তাহার কারণ আছেই আছে। প্রতাহ নুর্ব্যোদয় দেখিতেছি এবং পুরুষাসুঁ-ক্রমে দেখিয়া আদিতেছি, তথাপি আসর। বলিতে সাহস করি না যে, পৃথিবীর সর্বত্তিই ঐরপ্র নিয়ম; কিন্তু কার্য্য-কারণের বেলায আমরা অকু**তোভয়ে বলি সে, "**পরিবভন मार्टात्रहे कातन जार्ह्य हैश निभिन्न छन्। उत মৰ্কস্থানেই বলবৎ; —ইহাকেই জে। বলে "এক ঘারায় পুথক্ ফল।" হয় **নলো যে**, প্রাটাইক সুগোলা ভত্ত েমন ইন্দিয়-দার দিয়। আনি-য়াছে, কার্যকোরণ-ভল্প দেরপ করিয়া আনে सहिः, सा वदाः (य, सुर्वात कालाहिक উদয়-বতা সেমন কোণাও বা খাটে কোথাও ৰা খাটে না, পাববৰ্তনের হেতুমভাও তেমনি त्याशां वरा चारते – ८ तथा ७ तः वारते ना ; ্যের-প্রদেশে তাল খাটে কি না—ভাহা মেক্ল বাদীরাই বলিতে পারে ! ইছার কোন্টা ঠিক হিউম্ তথের কিছুই মীমাংসা কলিতে না পারিছা সংশ্যালাদ অবল্পন করিলেন ; তিনি ভাগিলেন ''ই্ছাই' বা কেমন করিয়া বলি যে, পরি ভূন-মাতেরই কারণ আছে— এত বছ একটা বিশ্ববাদী কুখা অল্ল-ব্যাপী পরীক্ষণ ক্র নীড়ে জন্মগ্রহণ করিয়াছে; জার, ইছার্চ বা ক্রেমন করিয়া বলি যে, কার্যা-কারণ ৬টের কোন গুডাক্ষ প্রমাণ নাই— অখন প্রভাক্ষা নায় ভাছাতে বিশ্বাস স্থাপন করিতে হইবেই হইবে।"

### কাণ্টের সিদ্ধান্ত।

হিউমের সংশয়-বাদের বিরুদ্ধে কাণ্ট যে রূপ গীমাংসা করিয়াছেন তাহা এই ;—

কাণ্ট বলেন লকের সিদ্ধান্তের গোড়াতেই
ভূল। আমাদের মনোনিহিত সকল ভাবই
যে, ইন্দ্রিয়-দার দিয়া আসিয়াছে, তাহা সত্য
নহে। ইন্দ্রিয়-পটে বহিবস্তর যে সকল ছাপ
উপাছত হয়, তাহা জ্ঞানের উপকরণ-মাত্র—
ভাহা শ্বরং জ্ঞান নহে;—ইট কাট এড়তি

ভৱান বলা সকত নহে।

गংযোগে ভ্লানের উৎপত্তি হয়।

তাহাকে আসিতেই হইবে এমন কোন

বাধ্য-বাধকতা নাই ; উক্ষ বায়ু বহিন্দেও ক

हिए भारत-ना वहित्ल ना वहित्क सारत,

মৃত্ বায়ু বহিলেও বহিতে পারে—না বহিনেও

ना विहाज भारत ; किस भी जे वीस अहिरल छ

গুহের উপকরণ-মাত্রকে যেমন গৃহ বলা সম্বত নহে, দেইরূপ ইন্দ্রিয়-গত ছাপ সকলকে িৰ্মাতা যথন আপনার গঠন প্রণালী অনুসারে ইট-কটি-গুলিকে মুখানিধি সন্ধিৰোশত করে তখনই পুত্র উৎপন্ন হয়, সেইরূপ জ্ঞাত। যথ**ন ইন্দ্রি**-তের ছাপ-জলিকে নিজের ছাঁচে কেলিয়া - अधिया लग रूपनी ख्वान खेरलक रश। লক বলিয়াছিলেন জ্ঞানের সমস্তই বাহির হটতে ধাইতে, কাণ্ট বলিতেছেন জ্ঞানের छ । करवंदे ८० तल दाहित स्टेरिंड चारेरम, স্মানের প্রকরণ জ্ঞাতা আপনার ভিতর ষ্টতে উদ্বেদ করে; ভিতরকার এই প্রক-হব এবং বাহিরের ঐ উপকরণ-দুয়ের हे नित्र গমকে কোন একটি পরিবর্ত্তন উপঙ্গিত ইইলে জ্ঞানের একটি উপকরণ উপস্থিত इय- इरेवामाळ खारनव चिठव इरेएठ এरे একটি প্রতায় উদোধিত হয় যে, সেই পারিবভূনের কারণ আছেই আছে,—এই যে প্রাচায় ইহা জ্ঞানের একটি স্বভংগিদ্য এক-রব। জ্ঞানের উপকরণ ইন্দ্রিস-খারে নিয়-ভ্ৰ্ছ আম। যাওয়। করিতেছে,—কখনও এক উপকরণ আগিতেছে, কখনো আর-এক উপদৰণ আদিয়া তাহার স্থান অদিকার কার্যা বাধ্যেতে : কখনও বায় শীতল হই-তেছে, কথনও উক্ত হুইতেছে, কখনও দ্রুত-বেলে বছিতেতে, ক্**খন ও মৃত্-মৃতু বহিতেছে ;** জ্ঞানের এই-যে-দ্র উপকরণ ইন্যা; আগস্তুক-মাত্র, অর্থাৎ ইহাদৈর মধ্যে কোনটির আসি-বারও বারণ নাই দ্যাইবারও বারণ নাই

তাহার কারণ থাকা চাই—উক্স বায় বহিলেও णहात कीतन थाका **हारे, यह वाह्य वहिस्त**छ তাहात कादन शाका हाहै, एक बाह्ये दिहान তাহার কারণ থাকা চাই; এই যে, কারণের অবশ্যন্তাবিতা, ইহা আগস্তুক উপকরণ মাত্র নছে; উষ্ণ বায়ুর পরিবর্ত্তে অনুষ্ণ বায়ু বহিতে পারে কিন্তু সহেতৃক ঘটনার পরিবর্ত্তে অহে-তুক ঘটন। ঘটিতে পারে না; ঘটনা-দর্শন জ্ঞানের আগন্তুক উপকরণ কিন্তু কারণের অবশ্যস্থাবিতা-বোধ জ্ঞানের স্বতঃসিদ্ধ প্রক্র রণ। কান্ট এইরূপ যুক্তি অনুদারে **হিউনের** উত্থাপিত তকের মীমাংসা এই করিলেন যে, কাৰ্য্যকারণ-তত্ত্ব বাহির হইতে কুড়াইয়া পাওয়া মনের সংস্থার মাত্র নহে—তাহা জ্ঞানের একটি স্বতঃসিদ্ধ প্রকরণ। কিন্তু অবশেষে কাণ্ট আপনার ফাঁদে আপনি জড়াইয়া পড়ি-त्ननः काणे वनित्नन, छात्नत १ कर्रा-खारनबरे शकतन,—**खारनबं वाहिर**त (य, छा-হার কোন বাস্তবিকতা আছে ভাষার এমা-ণাভাব! কাণ্টের এ-কি বিষম বিপক্ষি-ছিউ-মুকে সংশয়-সাগর হইতে উদ্ধার **করিতে** গিয়া আপনি সংশয়ের অতলম্পার্শ পাতাল-গহুৱে নিময় হইলেন! হিউমের অল্ল-আদী দংশয় কান্টের হস্তে পড়িয়া ভয়ানক मर्स-धामी इरेश फाँड़ारेन,- वश्तेत म्नर् বৈম্পা, স্পেন্সরের অজ্জেরতা এবং হামিল্-টনের জ্ঞান-দৌর্মালা, উহারই সস্তান-সম্ভতি। ফরাগীস্ দেশীয় দার্শনিক পণ্ডিত কুজান্ এই ভীষণ-মৃত্তি সংশয়ের বিরুদ্ধে জানের শাণিত থড়া উবেশন করিলেন।

কুলানের নিদান্ত।

ক্রির প্রাত্তরে কুমান্ এইরপু বনেন त, नीर्टित जामानट्डब विचारते विकर्ण উপর আদালতে স্বাপীল চলে, কিছ मर्ट्साक बामामर उन्न विवादहर छेशदर की: থাও আর আপীন চলিতে

विकारनव योश-किছू शाका निकास खाशव প্রামাণিকভা জ্ঞানের মূলতত্ত্বের উপর নির্ভর করে, কিন্তু মূলতত্ত্বে প্রামাণিকতা আর-কাহারো উপর নির্ভর করে না-তাহা আ-পনি আপনার প্রমাণ, এক কথায় – তাহা ্ষতংসিদ্ধ 🗽 রদায়ণ-বিৎ পণ্ডিতের। এইরূপ चित्र कित्रप्राट्डन (य, नग्न ভाগ कत्नत आहे ভাগ অকিজেন এবং এক ভাগ হাইড্রোজেন, अवः हेरात ध्यमान डारात। अहे प्रशास (य, নয় সের জলের মধ্য ছইতে ঐ তুই মূল বাজ্প উদ্ত করিয়া উভয়কে পুথক্ পুণক্ তোল ক্রিয়া দেখিলেই দেখিতে পাওয়া যাইবে . रमत — मार्क तमा नम्न रमतः, नम रमत खरलत के ছুই বাম্পাংশ মিলিয়া ধর্ম ঠিক নয় দের দাঁ।-ত্থন সেই তুই বাস্প ভিন্ন জনের তৃতীয় कान मूल जिलानान नारे हेरा এक्वादबरे অকাটা। এই বৈজ্ঞানিক দিদ্ধান্তটি এত थागानिक रहेन किरम ? म्लांडेरे प्रिंगिए পাওয়া যাইতেতে যে, "কোন জনস্বাতেই কোন বন্ধর কোন উপাদানের বিলোপ বা আক্সিক উৎপত্তি হইতে পারে না" এই মূলতম্ব-টির নিশ্চয়তার উপরেই ঐ বৈজ্ঞা-নিক তত্ত্বের প্রামাণিকতা নির্ভর করিতেছে, কিন্তু এই মূলভত্তির প্রামাণিকতা কিছুর, উপরে নির্ভর করে না, ইহা সতঃ-निष । এই भूते प्रवृष्टि अमनि वनवः श्रमान ca, श्रक-कालीन बनायन-विर शिक्टवा शेरेट प्रात्मन अवर मानिकान यथा-शतिमारन বিভিত করিয়াও করন অন উৎপাদন করিতে निवाधरे भेराख्य बानियादितन, ज्यन काशाय कर तिमायय बनाउ अक्रम मः-नीत्रक भारत काम दर्गन नाहे हर, रूस हु। বা এ তুই ৰাজা ভিন্ন জনের ভূতীর কোন अक्षि मृत् केनामान चाटक लाहे हिंद चलाद

बाब एवं कन छेश्भाः रहेटच भाविष्ठ हा। অত্যপর বিজ্ঞানবিং পণ্ডিতেরা ভাবিলেন त्य, चत्रादमंखित कान-ना-कान আছেই আছে এবং দেই কারণ অংশ্বেষণ कतित्व निक्रा पिशितन (य, के पूरे वाम्माटक যথা-পরিমাণে মিশ্রিত করিয়া তাহার অভ্য-স্তরে তাড়িত-প্রবাহ সঞ্চারণ করিবামাত তৎ क्षा बन छैश्लम रहा; रेशा उरेक्त প্রমাণ হইল যে, পূর্কো তাজ়িত সঞ্চার না रुखग्राटि कन खेरभन रहेट भारत नारे; এখন যে, জল উৎপন্ন হইতেছে, ভাড়িত-मकांत्रहे जाहात कांत्रन; ज्ञता शूटर्स गाहा ছিল (কি না অক্সিজেন এবং হাইভোজেন) এখনো ভাহাই খাছে—দ্রোর এক তিলও ন্যুনাধিকা হয় নাই—অগচ চকিতের মধ্যে তাহাদের পূর্ব্বতন বাস্পীয় অবস্থা জলীয় অবস্থায় পরিণত হইল, এই প্রকার অবস্থা-পরিবর্ত্তনের কারণ অবশাই আছে, তাড়িত-দঞ্চার বাতিরেকে ওরূপ অবস্থা গরিব<del>র্তুন</del> হয় না--অতএব তাজ্তি স্কারই উহার कातन। এই गिकालाजें व श्रीमानिकला এই মুলতত্ত্বটির উপন নির্ভর করিতেছে যে, পরি-বর্ত্তন-মাত্রেরট কারণ থাকা চাই; কিন্তু এ মূলতভূচিৰ প্ৰামাণিকতা আর কিছুরই উ-পর নির্ভর করে না, উহা আপনি আপনার প্রমাণ। কুজান দেখাইয়াছেন যে, জ্ঞানের এই-যে-দকল মূলতত্ত্ব, ইহারা যাবতীয় বৈ-জ्वानिक निफारखन्न, इत्रम श्रमान-इल-इहा-দের কথার **উপরে আর** কাহারো কোন क्या विलाख शास्त्रं मा। कात्केतः निकृतः কুজান বেরূপ বুজি প্রদর্শন ক্রিয়াছেন তাহা এই ;—

আমাদের বৃদ্ধি ছুই প্রকার (১) আবিভাবরূপী ভাগ্রত বৃদ্ধি, এবং (২) ভাব-রূপী
বৃদ্ধি-যাহা ঐ জাগ্রত বৃদ্ধির প্রতিবিশ্ব-স্বরূপ;
আরাদ্রের বৃদ্ধি যথন স্বকার্য্যে ব্যাপৃত হইয়া

আছে, তখনকার দেই জাগ্রত বৃদ্ধি মনো-মধ্যে টাট্কা টাট্কা যেরূপ প্রতীয়মান হয়— खाहाहै आविर्जावक्षणी दुक्ति, कूकान् रेहांब ভাষ দিয়াহেল "উৎসায়খান বুদ্ধি" (Spontangous Reason); সাবার নেই ব্দির কার্যা যখন স্থানিত হইগা পিয়া তাহাব ভাব-টুকু কেবল মনোমধো আন্দোলিত হয়, ভথনকার সেই ভাব-রূলী। প্রতিবিশ্ব-দুদ্ধিকে কু**জান্** ''প্রাতিভ'' নামে নির্দেশ করিয়াছেন। কাট বৃদ্ধির ভাষকে আর আর ভার ভাষ হইতে বিশ্লে-ষিত করিয়া, সেই ভাবটির অপ**-বিভাজন-দারা** কতকগুলি মূলভাব আবিদ্ধার করিয়াছেন, কার্যা-কারণের ভাব তাছার মধ্যে একটি। কুজান্ বলেন যে, কা ক বুদ্ধির জাগ্রত আবি-্ভ বিকে ছাড়িয়। ব্ৰুদ্ধির শুৰ্ফ ভাব মাজকেই আলোচনা-ক্ষেত্রে আমল দিয়াছেন, এই জন্য সেই ভাবের মূলে যে বাজ্ঞবিক সত্য আছে--জাএত জীবন্ত সভা আছে-ইছা ভিনি দে-খিতে পা'ন নাই; মতঃসিদ্ধ মূল-ভানের মৃত-শরীরকে তিনি ভন্ন ভন্ন করিয়া কাটিয়া দেখিয়া এইরূপ সিদ্ধান্তে উপনীত হইয়াছেন যে, শ্বতঃদিদ্ধ জ্ঞানের ভিতরে জীবনের কোন চিহ্ন নাষ্ট্ৰ সে জ্ঞান আমাদিগকে বাস্তবিক गटन र्लोहिश मिटन शांद ना। कूषाव् বলেন, সদঃসিদ্ধ মূল-জোনের ভুক্ত-ভাব ছাড়িয়া দিয়া তাহার জাগ্রভ र्जात्वर প্রতি মনোনিবেশ করিলেই न्याडे ্দেখিতে পাওয়া যায় যে, তাহা<mark>র বাস্তবিক্তা</mark> ৰ বিষয়ে তিল-মান্ত সংশয়, কাহামো লাভ স্থান পাইতে পারে না ;—আমানের বান যধন স্বকার্য্যে ব্যাপুত ইয়া উপুন একভান এরপ সংশয় আসিয়া তাহাকৈ বাতিরা कित्रा ट्लाट्न ना त्य, "क्लाके निष्का हैशत कात्र बाल्ड वर्ते, किस्र तम कात्र क्रि वास्तिकरे पार्ट ना जारा एवं देवल क्टारनक वर है। विश्वान-माळ १" कुमान करने

अक्र मध्मरत्रत्र त्वाक वर्ष नाहें। जनस বিজ্ঞান-শাল এক লাকে; সাক্ষা দিতেছে যে, अठःगिष भूनकद क्षत्रभा पात हाः, মূলতত্ত্ব আমাদিলকে সভ্যেরই পথ প্রেদ-नि कटत गिथा कि अप श्रामनि कटत ना কুজান্দের সার সিদান্ত এই যে জ্ঞানের স্বাতঃ-निक शामि कान अवर मालाव माला বিবাৰ থাকিতে পারে না,—সেখানে ভানের কৰায় বিশাস এবং বাস্তবিক সত্যে বিশ্বাস এ তুরের মধ্যে তিল মাত্রও প্রভেদ ছৌন शाहे**ए**खें. शादत ना । "পরিবর্তন মাজেরই কারণ আছে" ইহা যথন জ্ঞানের স্বতঃসিদ্ধ মূলতত্ত্ব এখন উহা বাজবিক্ট সভা ইহাতে আর সংশা থাকিতে পারে না। কুজানের এই সিদ্ধার্থ-টি তাঁহার অছের শতাধিক পূর্চা ব্যাপিয়া র'হিয়াছে, কিন্তু আমাদের দেশের শান্ত্রোক্ত নিম্ন-লিখিত একটিঃশাত্র শ্লোকে তাহার সমুদায় মন্ম খুলিয়া গিয়াছে;

"মানং প্রবোধয়ন্তং বোধং বে সানেন কৃত্ৎসতে। এলোভিরেব দহনং দঝুং বাছন্তি তে মহা স্থানির: ॥"

সকল প্রমাণের প্রামাণিকতা সাধন করে বে জান (অথিং শ্বতঃসিদ্ধ মূল জান) তাহাকে বাহারা প্রমাণ হারা আয়ন্ত করিতে যা'ন, সেই সকল মহা পণ্ডিতেরা কি করেন ! লা কাইকে দহন করে বে অধি, সেই অধিকে তাহারা কাই দিয়া নহন করিতে মা'ন !

চলিতে পারে নাম কাহারো কোন কর্মী

### ्र टणन्मरतक निष्कांच ।

শ্রেন্দর বিজ্ঞানের গতীর সম্বানগর্ত্ত হউতে বছতের কার-ক্লেশে বৈ-একটি সি-দান্ত টালিয়া বাছির করিবাছেন ডাহা দে-থিলে আমাদের পেশের এই প্রশাস-টি মনে পড়ে—"বজের বাঁধুলি ককা লিরে।" লবের সিদ্ধান্ত অসুসারে দাঁড়ার বে, কার্মিন্দর করু মন্ত্রার বাজি-এত ক্রিয়ার; ক্রিন্দ করু মন্ত্রার বাজি-এত ক্রিয়ার; ক্রিন্দ

পরন্পরা-বড় গৈভুক সংস্কার ; কীটাণু-ছইটে वानत वाकि नवाक वानत वाकि रहेरछ ममुबा-नवास मिर्हे मध्यात श्रवाहिक हरेता আসিরাছে। শেপদ্পরের এ কথান্তিকে বদি বাস্তবিক সজা বলিয়া স্বীকার করা যায়, ভাহা হইলেও বর্ত্তমান প্রশ্নের কিছুই মী-गाःना इत्र ना ; जांदा इहेरल अरेगाज ध-তিপন হয় যে, কার্য্য-কারণের মূল-তত্ত্ব অল্ল কালের সংস্কার নহে কিন্তু দীর্ঘ কালের সংস্কার। কার্বা-কারণের অকাট্য বন্ধন-সূত্র যদি যুগ-যুগান্তর-প্রবাহিত পৈতৃক সংস্কারও হয়, তাহা হইলেও খীকার করিতে হইবে ষে, পুর্বের এক সময়ে তাহা কাহারো না কাহারো ইন্দ্রি-গোচর হইয়াছিল; বানর জাতি যদি দে বন্ধন-দূত্রটি প্রত্যক্ষ করিয়া না ধাকে, তবে হয় তো তাহায় পূর্ব্বপুরুষ কাটবিড়ালী তাহা প্রত্যক্ষ করিয়া থাকিবে,—"কোন না কোন **জী**ব তাহা প্রত্যক্ষ করিয়াছে" ইহা না মানি**লে** উক্ত সংস্কারের দাঁড়াইবার একটা ভিত্তি-मृत थाक ना। পूर्किर विनशोहि, य-वाङि ভারত-বর্ষীয় বর্ণমালা চক্ষেও দেখে নাই—ক-র্ণেও ভবে নাই—তাহার মনোমধ্যে কপনই এরপ সংখ্যার জন্মিতে পারে না যে, ক অ-ক্ষরের পর খ-অফর। অতএব কার্য্য-কার-ণের অদৃশ্য বন্ধন-সূত্রকে যদি সংস্থার বলিয়া মানিতে হয়, তবে তাহার সঙ্গে ইহাও মা-निष्ठ रहेरव रा, कान এक खनिर्द्धना ज-ভীত বুলে কোঁন জাতীয় জীবের তাহা ইন্সি-ति वियव हिन, इत जाहा त्मरे बीट्यत हत्क দৃষ্ট হইড, নয় কৰে শ্রুত হইড, নয় জিহ্বায় আস্বাদিত হইত, ইত্যাদি; কিঞ্চ সেই বে विवृता रक्त-मूर्व-एनहे स्व छेदशाविका निक-राहा बाबा वाधा श्रेषा कावन-श्रेटल कार्या छेदशम रम्न-छारा काम कारति काम बीर्षक्र देखित त्याच्य रहेटण शाद ना, अक्टबार देशान श्रीरवहरे बरमागरेवा जाशा

সংখ্যার ুবর্ত্তমূল হইতে পারে না, স্তরাং **ाश मध्यतिकारी** এक कींव हरेरेड जन জীবৈ প্রবাহিত হইতে পারে ন।। জার-এकछि कथी धार्रे (च, मरनत এकछ। मध्यात অল্ল কালেরই হউক্ আর দীর্ঘ কালেরই হউক, কান কালেই তাহা মূলতত্ত্ব পদ-वीरज जाक्रज़ इहेर्ड शास्त्र ना,—वर्णाद তাহা এখন একটি ভত্ম হইয়া উঠিতে পারে না যাহার উল্টা-ভাবনা মনেতেও স্থান পাইতে পারে না 1 সতোর জনা আব-भाक **इहेरल षामता स्र**मीर्घ कारलद स्र-দৃঢ় সংস্কারকেও অসংকোচে পরিত্যাগ ক-রিয়া থাকি, কিন্তু মূল-তত্ত্বকে পরিত্যাপ করি**তৈ**-পারা দূরে থাকুক্, তাহার জন্যর্থা আমরা মনোমধ্যে ভাবনা করিতেও পরা-ভব মানি ;- "পৃথিবী চ্যাপ্টা" ইছা মনুষা-জাতির কত কালের পুরাতন পৈতৃক সং-স্কার, কিন্তু এক শত বা চুই শত বৎসরের বিজ্ঞানের আলোকে ভাহা চকিতের মধ্যে উল্টাইয়া নিয়াছে;—শতএব, "কোন পরি-বর্ত্তনাই কারণ-ব্যতিরেকে ঘটিতে পারে না" हैहा यपि मिहेक्स अवेहा भः कांत्र हैंग्रे, जर्द তাহাও কোন দিন উপ্টাইয়া ষাইতে পারে। কিন্তু আমরা দেখিতেছি যে, তাহা একে-বারেই অভ্রান্ত এবং অকট্যি সত্য কোন-কালেই—কোন দেশেই—তাহার তিলমাত্রও বাতিক্রম সম্ভবে না। এইরূপ অখণ্ডনীয় ধ্রুব তত্ত্ব-সকল নির্বোচন করিয়ার অধিকার কেবল মনুমোরই আছে; ভড়িন্ন কোন নি কৃষ্ট অস্তু কোন তত্ত্বকেই মূলতত্ত্বলিয়া— অকাট্য সভ্য বলিয়া—জানে না: ভবে তা-হাদের নিকট হইতে মনুষ্য কেমন করিয়া म्मज्य भात्र क्तिशा शाहरत ? शिठा यान निष्य निर्धन, इ'न, छात शृरखत्र शिकृक धन কোৰা হইতে আসিবে? স্পেন্সর ইয়ার বিক্লব্দে এইরূপ বলিতে পারেন যে, পৈতৃকু ধন প্রের হতে ঘণা-প্রাপ্ত তথা-বিত হইর।
বিসয়া থাকিবে প্রায়ন কোন কথা নাই;
পিতার নিকট হইতে একগুণ দন পাইয়।
পুরে তাহাকে দশ গুণ বর্দ্ধিত করিতে পারে।
মসুষা পূর্বব-পূর্ব্ব জীবদিগের নিকট হইতে যে
সকল সংক্ষার প্রাপ্ত হইয়াছে তাহাই তাহার
পৈতৃক ধন—কিন্তু ভাহা মনুষোর হত্তে পভিয়া—রীতিনত পরিশন্ধিত প্রথ পরিমার্জিত
হইয়া—মূল-তত্ত্বের আহার ধারণ করিয়াছে।
স্পোন্ধরের একখার গোড়ায় একটি মহৎ
দোম লুকায়িত আহে—ভাহা আমরা নিম্নে
দেখাইতেছি।

মনে কর স্পেন্দর আমাদের হাত ধবিয়া क्रगंद-नाम भानात मांक-घटत लहेशा (गटलन; দেখানে গিয়া নেখিলাম যে, ভারাকর্ষণ— রাসায়নিক আকর্ষণ—জাবনী শক্তি—চেতনী শক্তি – সমস্তই একই মূল-প্রকরণের অমুবর্তী श्हेशा छ उत्या छत-करम **छत्ना**विष्ठ **श्हेशा** উঠিতেছে; কিন্তু তথনও আমর। বলিব যে, কোন প্রকারণ দারাই সদীম হইতে অ-শীম উদোধিত হইতে পারে না ;— নাক-ত্রিক জগৎ হইতে কুদ্র কুদ্র উল্কা-পিও ভক্ষণ করিয়া পৃথিবী যথেষ্ট পরিবর্দ্ধিত **ছইতে পারে, কিন্তু ফোন প্রকরণ দারাই** ্নীম পরিবন্ধিত হইতে পারে না; একটি ফুদ বদ বাজ পঞ্চূত ভক্ষণ করিয়া একটা প্রকাও বট রক্ষ হইয়া উঠিতে পারে—কিন্তু কোন প্রকরণ দারাই অসীম বিস্তুত হইতে পারে না; এমনি আবার, শংস্ক্রীর-বিশেষ কাল-ক্ৰমে মনোমধ্যে অধিক হইতে অধিক-তর বদ্ধ-মূল চইয়া এরপ প্রবদ হইয়া উঠিতে পারে যে, তাহাকে ছাড়ানো জুকর, কিন্তু এরপ ু অ্দীন-প্রবদ চ্ইয়া উঠিতে भारत ना रा, छोड़ात जनाथा /छारना कता छ 'शुभिनी चित्र' हैसा कारनद्र माथाजीज। বে কত বুগ-বুগান্তরের সংস্থার তাহা বনা

याग्र मा, ज्यांनि क्छ अल-निर्मत मध्या कारनाञ्चल यसूरा-मञ्लोब यन रहेर्ड छार জন্মের মত তিরোহিত ছইয়া সেল ৷ কিছ "পরিবর্ত্তন-মাত্রেরই কারণ থাকিতে চার্ন্ন" এ তত্ত্বের প্রবলতা এমনি অদীম বে,কোটি অয়ের সংস্কারও তাহার সহিতবলে আঁটিয়া উঠিতে পারে না। অতএব মূলতত্ত্ব-গুলিকে ধদি পরিবর্দ্ধিত সংস্কার বলিতে চাও, তবে পরি-বৰ্দ্ধিত বলিয়াই থামিয়া থাকিতে পারিবে না – বলিতে ছইবে যে, তাহ। অদীম-পরি-যদ্ধিত সংস্কার;—কিন্তু অসীম পরিবর্দ্ধন অসীম-কা**লকে অপেক্ষা** করে – ভাহার এ দিকে সন্তবে না, এক কথায়—তাহা অসম্ভব। অতএব, কার্য্যকারণের মূলতত্ত্ব আমাদের মনের-সংস্কার মাত্র লৈহে—না তাহা আশী-দের ব্যক্তি-গত সংস্কার—না তাহা আমাদের পৈতৃক লংকার পরস্ত তাহা আমাদের জ্ঞা-নের স্বতঃগিদ্ধ তত্ত্ব; এ বিষয়ে আর সংশয় হইতে পারে না। কার্য্য কারণের মূলতত্ত্ব সংহাপিত হইল—এখন তাহার কোণায় কিন্নপ প্রয়োগ হয়—তাহার স্বিশেষ তথ্য নির্ণয় করা যাইতেছে।

क्रमनः।

## ধর্ম-প্রচারক ও ছুর্গোৎসব।

কার্ত্তিক মাসের তত্ত্বোধিনীতে পুর্বের্থনান্দ সব শিরস্ক একটা প্রস্তাব প্রকাশিত করি বারানদীর আর্যার্থকারশিশী সভার ক্রান্দ ধর্মপ্রচারক তাহার একটা বিস্তার প্রক্রিরাদ করিয়াছেন। কথাটা প্রায়ই প্রক্রিয়ারশি আমরা বলিয়াছিলাম রামায়ণের মধ্যে ক্রি গোৎসবের কৈনি উল্লেখ আই হিডারার বর্তমানে যে ভুগোৎসব হর ভাষা রামের প্রার্থিত এই যে সাধারণ সংস্কার ভাষা প্রমাণ অক। রামায়ণে তুর্গোৎসবের কথা নাই

उट्टे किस कानिका जुनाया, प्रायासमारका किन्न अवदेश जामब्द्रिक रिशाकिलाम राजीकि प्रशासन बाटमब जीवमानाम ब्रह्मि । ভাছাতে यथन पूर्लाइनरतन कान करा नाहे ज्यन कानिक। श्रानक श्रानक श्रानक नहेश विनटक পারি না যে তুর্গোৎসব রামের প্রবর্ত্তিত। কিন্তু ধর্মপ্রচারকের স্থযোগ্য সম্পাদক প্র-তিবাদস্থনে কৃ্ছিতেছেন রামায়ণের উজির সহিত কালিকা পুরাণের উক্তির বিরুদ্ধত। নাই কিঞিং বিভিন্নতা আছে মাত্র। অর্থাৎ রামায়ণের আদিতাহৃদয় স্তোত্র এবং কা-লিকাপুরাণের ছুগোৎদব উভয়ই ত্রন্ধো-পাসনা। তিনি এই নুক্তিতে প্রমাণ করিতে চান যে তুর্গোৎসর রামের প্রবর্ত্তিত। এম্বলে আমাদের বক্তব্য এই আত্মাতে পরামাত্মাকে দেখাই প্রকৃত ব্রহ্মদর্শন বা প্রকৃত ব্রহ্মো-পাসনা। অমূর্টের রূপ নাই স্থতরাং কোন রূপে বা মূর্ভিতে তাহাকে দেখা এক্ত ख्याभागना इहेटड भारत ना। अहे जना **উপনিষদকারেরা বলিয়াছেন নেদং যদিদ**-সমুপাসতে। অর্থাৎ নামরূপে যাঁহার উপাসন। কুর তাহা ত্রন্ধ নহে। এইটুকু প্রাচীন ঋষি-দিপের চরম দিদ্ধান্ত। স্ত্রীং প্লবিদিগের ৰাক্যপ্ৰমাৰে অসকোচে বলা যায় যে নানরূপে बनारगंध एकिए मूकान्यत नाम वक्षे बिथा कान गांव। य कुना उदकाशामना मिरे स्था फन्नी मृद्धिल्या पाता नाज ट्रे-नातु नत्र। प्रदेश मूर्त्सत् गर्या जन्मान्दिनत क्षकी करा पादक क्षायत। याच्यीत कगरज বার ক্রিছেছি ভাষার মধাবিন্দু সূর্যা। প্রা-होत अविद्या अरेहेकू त्यिएकन पांशता आ-ছাট্ৰ প্ৰজন্পন ক্রিট্র অসমর্থ তাহারা माज्य वधारिक सूर्या देश देश व्याधित सारिका के कारण क्रिया । देश क्रिय क्रिकेटिकान बाज। बाग धारिनिटार्व প্রতিষ্ঠ করিয়। সুর্বের মধ্যে সেই খনা কোনও উপায় ছিল না।

**জ্ঞাদর্শনই** করিয়াছিলেন। স্তরাং এস্থলে রামায়ণের সহিত কালিকা পুরাণের কেবল বিভিন্নতা নয় কিন্তু একটা প্রাণগত বিরোধ माँजारेटल्ट्डा

্ধর্মপ্রচারক লিখিয়াছেন বাল্মীকি রামা-য়ণ রামের জাবদ্দশায় রচিত বলিয়া, যে সকল কণাই উহাতে লিখিউ ছিল তাহার প্রমাণ কি। **দেখা গিয়াছে অনেক লোকে**র জীবন-চরিত জীবদ্রশায় ও মরণাত্তে রচিত হইয়। সাধারণো প্রকাশিত হয়। জীবদ্দশার গ্রন্থ-খানিতে হয় তো যে কথার আদে৷ উল্লেখ ছিল না তাহার মরণান্তকালের ইতিহাস-লেখক বিশেষ অনুসন্ধান ছারা তাহার জীব-নের অনেক নৃতন সভা ঘটনা সকল প্রকাশ ক্রিয়া থাকেন। এরূপ লিখিত গ্রন্থনয় পরস্পার বিরুদ্ধ বুলিয়া কথিত হয় না। ধর্মপ্রচারক সম্পাদক যাহা বলিয়াছেন তাহা षाध्निक रावषा वर्षे किन्नु लाहीन कारनद নয়। মনে কর ইংলণ্ডের কোন ব্যক্তি তদ্দে-শীয় কোন রাজচরিত রচনা কলিয়াছেন। হয় তো ভাহাতে কোন কোন ঘটনার উল্লেখ নাই। পরবর্ত্তী লোক **অনে**ক অসুসন্ধানে (महे मयन्त्र घष्टेना वाहिव कतित्तना अहे-রূপ শে করিতে পার। ভাহার একটু কারণ আছে। এখন ঐতিহায়িক কাল। একটা প্রধান রাজার জীকনের নানা ঘটনা নানা স্থানে নান। রূপে লিপিবন ইইয়া থাকে। ইংলঔের লোক ষাহা না জানিতে পারে কিন্তু হয় তো ফুন্সের লোক তাহা জানিতে शादा। अहे अंख्यिमिक काटन अक्षे थ-কাশ্য চরিত্রের আন্দোলন মভ্য দেশ নাত্রেই **ছওয়া সম্ভব এবং ভাহা হইয়া**ও থাকে। विभि विर्मय अञ्चलकान करतन शक्छ वृद्धान्तु সংগ্ৰহ ভাৰাৰই হইয়া খাকে। কিছু প্ৰা-চীন কালে কিম্বন্তী জিল ইতিহাস রচনার

এই কালিকা পুরাণ যে কিন্দন্তী অবলম্বন করিয়া তুর্গোৎদব রামের গুবর্ত্তিত বলিয়াছেন टमरे किम्बनकी वालीकित मध्य रहेटल अवनाहे एलिया चामिर्टिष्ट् । निहरत कानिका श्रुतान ভাহা পান কোথা হইতে। তাই যদি হয় তবে বাল্যীকির ন্যায় এক জন প্রধান কবি ভালা তাগে করিয়া রামায়ণে আদিতাকদয় ্রন্তোত্তের উল্লেখ করিলেন কেন। महल छेखत এই वालोकित मयस पुरर्गाट्मव রামের প্রবর্ত্তিত এই অমনক কিম্বদন্তী আদৌ ছিল না! পাকিলে বাল্মীকি ভাষা ভাগে. করিয়া স্প্রান্থে আদিত্যসদয় স্থোত্তের ক**খন** স্মিবেশ করিতেন না! যদি বল রামায়ণের পুরের্ব কালিকা গ্রাণ্রচিত হইয়াছিল। कथा ७ विलट्ड शांत ना । কারণ বাল্টীকি আদি কবি। বেদরচনার পর বাল্মীকিই সর্ববিপ্রথম সহজ ও সরল ভাষায় অনুষ্ঠুভ इन्न गांशांद्रदश श्राह्म कि कि श्राह्म श्राम । बना कान अक थातीन शहकात वान्तीकित রচনা দৃষ্টে স্পট্টাক্ষরে কহিয়াছেন নৃতন-স্তিন্দনানবভারঃ। আর একটা কথা এই নামরা তুর্গোৎসব **এন্তাবে বলি**য়াছিলাম विश्वन करे भावभीश छेटमत्व त्व मूर्छिणुका া ∖রাম ইহার প্রবর্ত্তক ন**হেন।** এ**ছলে** ছিটিটি মুখ্য কথা। কিন্তু ধর্মপ্রচারক আ-শস্কা করিয়াছেন বাল্মীকি যাহা **অনুসন্ধানে** পান নাই কালিকা পুৱাৰ তালা পাইয়াছেন। কর্থাৎ বাল্যীকির সময় মুর্তিপূ**জা ছিল।** আমরা একথাতে আহা এদর্শন করিতে পারি না। এফলে বেদাদি শাস্ত্রের একটা সংক্ষেপ আলোচনা আবশকে। হিন্দু জাতির মূৰ্ব প্ৰথম যে ধৰ্মভাব বিকাশ পায় বেদে শ্বীকার সন্ধান পরিচয় আছে। সমুস্র এক কালেই পাৰিতীয় ঈশরকে জানিতে পারে मार्ड । अग्रेट्ड दर मम्बद्ध नमार्थ प्रार्थका-क्रून मिकिक महिक-गम्लाम, पृष्टि माळ यारा

**च्या प्रतिया प्रत्यामन करत (करे** मञ्जूरात छेनामा हर । यह असा का श्री वाशू गृर्धा जन हेजानि अन् भवित खेलामना नृहे हता। कि**स गम्**या देकवन निक-गाजरक भित्रश जुल इहेर जाति ना । स সেই শক্তির আধারকে অনুসন্ধান করিছে লাগিল এবং বছদাধনায় তাহা পাইল। ইহার ফল বেদান্ত বা উপনিষদ। এইটা উপাসনা-কাতের চরম সীমা। কিন্তু কষ্ট-দাধা দাধনায় সকলে সহজে অগ্রদর হইতে পারে না। তখন উপাসনা-কাণ্ডের অব-নতি আরম্ভ হইল। ইহার ফল পুরাব ও তন্ত্ৰ। এছলে অবশা স্বীকাৰ্য্য যে এই সকল গ্রন্থেরও প্রতিপাদ্য একমাত্র এল। কিন্তু গ্রন্থকারেরা সর্ব্ব সাধারণের ধর্মচর্যার সৌন কর্যোর নিমিত সুক্ষাকে স্থলে পরিণত করি-য়াছেন। ইহাকেই বলে মূর্ত্তিপূজা। যাঁহার দুক্ষা ত্রকোর খ্যানধারণায় অদুমর্থ পুরাণ তক্রাদি, কেবল ভাঁহাদিপেরই নিমিক্ত বামান য়ণ যদিও পৌরাণিক লক্ষণাক্রান্ত নয় কিন্তু মহাভারত ভাষাই। কিন্তু এই তুই প্রস্থ করিলে দেখা যায় এ সময়েও আলোচনা ভারতে মৃত্তিপূজার সূত্রপাত হয় নাই। সেই বেদোক্ত জ্ঞান ও কর্ম এই তুই প্রম্থে অখণ্ড ভাবে, দীপামান রহিয়াছে। ফলছে ইছার পরবর্তী অন্তে মূর্ত্তির বিকাশ 🚛 🐗 প্রচারকের হাবিজ্ঞ সম্পাদক যে ছুর্নোঙ্কার বাল্মীকির অনুসুদন্তানে পরিচ্চান্তর নালিয়া আশক। করিয়াছেন তাছার মূল ক্রে ফলত সে সময়ে মূর্ত্তিপূজ্যর ক্রিক্টি षात्ने इव नारे। इवेदन दे ह रत पर्या श्रामार्थ केना क्या का कान विष्कृति शक्ति है। महाভाइण तहना । निराहकक क

दक्रम क्रियानकाक माहि । यणि प्रामासन ও মহাভারতের কালে এই ভারতে মৃত্তি-পূজা প্রায়ে কর জাহা ছইলে বাল্যীকি ও वार्रमा नाम परिजीत कवित धर्मकर्गाल पाछ तुष करें। शतिवर्ष्धत्मत चित्रम कात्रेट कि किंदुगाइ डिलामा शाकिए। किंदुएउरे ইহা সম্ভব বোধ হয় না। সম্পাদক তুর্গোৎ-मराक खन्नाशृष्मा रनिए हान रनून, षना কেহ' বা ইহাকে শক্তিপ্ৰা বলিতে চান বলুন কিন্তু আমর। কহিয়াছিলাম রাম মূর্ত্তি-পূজা করেন নাই। তাঁহার এদর্শিত পথ অনুসরণ করিতে গেলে তুর্গোৎসব স্থান পায় मा। এই पनारे विल्ञाहिलाय बाट्यब म-ব্দক্ষে ইহা কেবল পৌরাণিক ক্ৰিদিগের কল্পনা যাত্র।

এ সহস্কে আরও একটু কথা আছে। যে মুগে বাল্মীকি জ্বদ্যেন ভার পর যুগে কৃষ-দৈপায়ন ব্যাস। নহাভারতে রামের সং-কেপ রতান্ত আছে। তমধ্যেও মূর্তিপূজার উল্লেখ নাই। এখন বলিতে পার ব্যাস মহাভারতে বদিও রামের মূর্তিপূজার বিষয় किছू बदलन नारे किस्र जिनि कालिका श्रवारन जारा विनग्नाहिन। अ कथानी वर्ज विमन्नानी। **কিছুতেই প্রছেয়** ইইতে পারে না। আরও কালিকা পুরাণ বে কৃষ্ণু দ্বৈপায়নের রচনা এ विशेष कामा को है। है है। बाम-উপাৰিষারী খনা কোন কবিন্ন হইতে পারে। व्यक्ति करे कालिकार्तान महास्ताटनत मरधा काक्ष नरह। "हैहां अक्षानि छेन्नश्रान याछ। পরিতে খেলে উপ্রাবের প্রামাণিকভাও मायाना। याहार रुखत् मूर्फिल्छ। नाम नासी-কিন মধ্য অবুসকান করিতে যাওয়া এক প্ৰকাৰ বিশ্বৰ ি মুৰ্তিপূজা যে কত আধুনিক ভাষা বদিও ঠিকু নিশ্য হয় মা কিন্তু ভাষার कामीनात्राम जानाम अक्चरन शाल्या यात्र । ग्रामात भाषकार करी गामिन गुरवर

ব্যাখ্যা ক্ষরিতে গিয়া একছলে একটা উদাহরণ দিয়াছেন। মোট্রা হিরণ্যার্থভিরর্জাঃ প্রক-ক্সিডাঃ। ত্রুবের অর্চ্চাপত্তে পূজা নয়, উহা **एक्ट्रिक् अवुक्त रुहेशास्त्र ।** छेनार्बनित वर्ष এই य मिर्धाता धनार्थी घटेडा प्रत्यमुख নির্মাণের সূত্রপাত করে। 'ঐতিহাসিক প্র-यात्। त्योशानत्य हट्यकारश्चत्र वः न वृत्राग्र । মুরা নাম্মী এক দাসীর গর্ভজাত বলিয়া উহা त्योशं वर्ग नात्य श्रिष्ठ। त्मवमूर्कि निर्म्यान যদি এই বংশ খারা হইয়া থাকে তবে তাহা বড় অধিক নিনের কথা নয়। সম্ভবত খৃষ্ট-অব্যের তিন শত বৎসর পূর্বের এই বংশ हेजिहारम दम्शा निशास्त्र। **म्हिकाल ध**न রিয়া বিচার করিশেও এই মূর্জিনিশ্মাণ সভ্য ত্রেতা ও দ্বাপরে নয় কলিতে ইহার সূত্রপাত হইরাছে। স্বতরাং মুর্ত্তিপ্জা যৎ-পরোনান্তি আধুনিক। যাঁহারা ঐতিহাসিক দৃষ্টিতে পুরাণাদির আলোচনাকরিতে জানেন তাঁহারা এ কথার যথেপ্ট প্রমাণ পাইবেন :

ধর্মপ্রচারক নবরাত্রির মেলা লইয়া বড় भग्रतान वाँधारेग्राट्यन। आयता विनया-ছিলাম বঙ্গদেশেই মূর্ত্তিপূজার বাহুল্য পশ্চি-गाकटन यदक्ता। किन्नु त्वक कानीत नव-রাত্রিতে এক তুর্গাবাভির দৃষ্টাস্ত দেখাইয়া वनिरुट्टन **अरमर्ग मृ**र्जि**श्च। स्थ्यस्न** नग् । किन्त भागारमत्र निक्षे अक कामीत्र मुद्रोस **এ**विষয়ে পর্যাপ্ত হ**ইডেছে না। বঙ্গ**দেশেও প্রায় প্রতিব্যামে এক একটা দাধারণ দেব-মূর্ত্তি প্র**ভিত্তি আছে। কিন্তু তৎ**সত্তেও প্রায় পুরেত্রগুরে **মৃত্তিপুলা হইয়া** থাকে। **अन्तिस अक्रम नव । भृटर मृद्ध मृद्धि ग**ड़िका भूका जनात पार्मी मुद्दे हम ना। छर वथाय नारात्र राप्तकृष्टि व्यास्त ख्यास या किছू मूर्जि-পূজা দেশ কাৰ। মুক্ত আৰম্ভ এখনও विशिष्टि अवस्थितमात अवस्थि जुलना कविएक क्यात पुरस्का स्वत्रका सराहा शम- নোছন রায় ধর্ম অসুসন্ধানের নিষিত এই ভারতবর্ণের নানাস্থান পদ্যটন করিয়াছিলেন। গশ্চিম দেশ সম্বন্ধে আমর। যাহা কহিলাম তিনিও বেলান্তসূত্রের মুখবদে এট কথাই বুলিয়া গিরাছেন।

আমরা বলিয়া ছিলাগ পশ্চিমের অস্থি-**মক্ষান্ন বেদান্তের একেখ**রপাদ াবিপ্ট। কারণ জনবায়ুর ওণে কটদহিতু ত্যুন্দ শ্বাসিরা হইয়া আছে। বৈপান্তিক মাননে কপ্তমহি-कुठा विद्निष वादनाक। न्हिन शामन इर না। কিন্তু বঙ্গলেশে তাহার বিপরীত ভাব अर्पनगामिका क्ल वाद्व ७८५ मृहे इहा लकना मृखिंश्रकात जान-আমোদপ্রিয়। েই বতল প্রচার দই হয়। ধর্মপ্রচার সম্পা-দক আমানের এই কথান বিজ্ঞাপের ভাষায় কিজিং ভূমিকা করিয়া কহিয়াছেন কিছু দিন পুর্বেও অর্থাং যে পর্যান্ত প্রায় অধিকাংশ বলায় গৃহস্থা ভজিযুক্ত চিতে প্জা করি-তেক, অথবা বে পর্যন্ত আছকালকার আ-নোদের তবক উ্থলিয়া না উঠিয়াছিল দে পর্যান্ত বংশের নগরে বিলয়ে আমে আমে তুর্গা কালী জনদাত্রী পূ**জ**/র প্রচার বাছল্য ছিল। ज्ञान किंच निन रिश्नेन धर्मा-विश्वादन**त द्वा**म ভক্তির খুভার্ব ও जीমোদের বাহুল্য ছই-८७८७ ८७मनि जिन जिन आहम आहम नगरव নগরে পূজার সংখ্যা ক্ষিয়াই আসিতেছে। यनि जारमानार्थ युर्किम्कात वाक्ना श्रात হইন্ড তবে আজকাল অপেক্ষাকৃত অধিক তুর্গোৎসবাদির প্রচার দোখাত পাইতাম। এমলে ধর্মপ্রচারক আমাদের অভিপ্রায় কিছু भाक वृश्विटा शादान नारे। आभादनव अ-ভিপ্রায় এই প্রশানতারা ফভাবত ক**ঔসহি**ত্য। द्यनारखत्र नामग्रेक्ट्रे जाहाता महत्य श्रोकात করিতে পারে ! এজন্য বেদান্তধর্শ্ম বহুকাল ধরিয়া তথার প্রতিষ্ঠিত রহিয়াছে। এ ধর্মে আছ্বছিকর কিছে নাই। প্রত্যুত শমদ-

यापि नायन हर्देश नाना करिएक প্রকৃত অধিকারী ৷ এই সাধন বৃদ্ধ नहर। किन्नु मूर्जिश्रुवाध रेक्टिय्रवृद्धिकन्न অনেক পদাৰ্থ আছে। সুদক্ষিত মৃতিতে নেত্রের ভৃত্তি, ধুপ দীপ পুজ্পাদির স্থগকে নাসিকার তৃপ্তি, বাদাভাতে কর্ণের তৃষ্টি এবং দেবীর প্রসাদ ভক্ষণে রসনার তৃপ্তি। (कान वादा वादकला नाहे (य यखगान माधन-চতুপ্তীয়-সম্পাধ না হইলে স্বগৃহে মুর্জিপ্রতিষ্ঠা বৈদান্তিক ধর্মের করিতে পারেন ন।। কঠোর সাধনকপ্ত। কিন্তু মূর্ত্তিপূজায় তাহা नाहै। এই जनाहै विनश हिलाम वश्रद्रानी-रित्रता (परभात क्षेत्र वाञ्चत छट्ट श्रष्ट स्म जाहरू স্তরাং যে ধর্মে আমোদের অংশ অদিক দেই ধর্মাই এখানকার বিশেষ উপযোগী হই-शाष्ट्र। मञ्लापक कानित्वन त्य, त्य त्परमञ যেরূপ প্রকৃতি দর্মা তাহার অনুরূপ না হইলে তাহা কৰাচ টেকিতে পাৰে না। ইহা ফুং-কারে উড়াইবার কথা নয়। हैश अक्षी অভ্রান্ত সত। কিন্তু আমরা ইহাও বলিয়া ছিলাম বঙ্গদেশীয়দিণের সাধন-কন্ত স্বীকরি করিয়া মুক্তির পথ অনুসন্ধান করা আবশ্যক।

## वग्रथान-मञ्जती।

শ্রীযুক্ত প্রধান আচার্ট্যের ব্যাখ্যান-

स्मक भना।

অফাদশ ব্যাখ্যান।

শ্রুষ্ত গোপান, বেঁজন দেখান, দেখান বে পথ ভার। তাঁহার শরণ, লও অহমণ, শ্বর ভারে বার বার ॥

> বাঁছাতে জীবন, করিছ ধারণ, কত সেহ বাঁর ডোমার প্রতিত্র সেই প্রেম-নাডা পিডা মাজা প্রান্ত উাহার চরগে করহ বডি এ অপার্লা ভার অরপে নোহন,

कात स्वा नाम जना महन महन महन, ্র জাহার শরণ লইয়া প্রাক 🗈 **ब्राह्मन** (थ्रम पिश्लो अकाउरह, প্রতিপ্রেম তথ্য জন চান। ডজিবে না তাঁরে ডক্তি প্রেম-ডরে, कांत्रिटन मा और दह कारत मान ॥ পেয়ে তাঁর ঠাই যে কিছু ভোমার, তাঁরে দাও সব শ্বরাণ ভরি। জীর দত ধন তিনি যদি চান, ধনা হও ভাহা প্রদান করি॥ তাঁর কাছে বলি দেও পশু-ভাবে. উপাতি হাদর কণ্টক সবে। তাঁর প্রেম কর হৃদয়ে রোপণ, মুবাস মুখ্য সুমুম হবে। क्षिणि व व दन द्यमरवह ट्यांब, কর গন্ধ দান তাঁহার প্রতি। শ্বপ ধুনা ইথে তাঁতে অনুৱাগ প্রাদের উচ্ছাদ - তাঁধাতে মতি। তাঁছার কুপার ছদরেতে ফোটে, তাঁধার প্রীতির কুমুম চয়। মেই সে তপন যাহার কিরুণে क्रमा काम शक्त सा ॥ जिन्दि काठीन त्थाम शुक्र एए, ्**डिमिरे बर्ज**त महाश्र रन। त्व डांब डांश्रद जातिक मश्मादत, जिनिरे जाराद्य जूनिया म'न ॥ পুণা ভাব दिनि करतन (श्रत्न), रेक्डिक्टबन जाशन शाटन। म रेक्कि द्यार्थ माधून महान, ক্ষাল লৈ বিয়ুত্ত ভাষার টানে।। दब नह । (कामात्र शूना चादतावदन, ৰ্ইছে গুড়ন শতেক বার। कार्विष्ट इस्तर्गकान कीवन, क्ष्यात जाबादक ब्रहेटच शाह ॥ আপমার চেকা ইডেছে নিশ্চল জোবে ভোবে ভরী এমত হয়। हुउना निवास, जाक कर्नवादत. इद्धा मा बद्धा मा बद्धा मा नरेक्क बाटनेन जिनि जाया क्रोदिन क्य विभन काम।

ভাষার মানের হও হে ভিগারী. नारेटव काषात अपुत्र साम ॥ कि एत वेषद्र शर्मात्र महात, ভাঁৰার চয়ণ যে জন চায়। भारभरके मिलिएक खाइरगांव यम, তাঁহার নিকট সে জন পায়।। স্বাধীন ধনিও করেন আন্মার, নয়নের পাতে রাখেন ভারে। পথ-হারা হ'লে, বিপাকে পডিলে, তাঁহাকে সহজে ডাকিতে পারে।। তিনি দুরে গেলে ফেলিয়া আঁথারে কি হইত ভার গ্রম বনে। ভাকিলে উদ্ধার করিবেন বলি থাকেন নিয়ত ভাছার সনে।। कि रंड शाभीत यनि तम कानिएड না পারিত তাঁর কাছেতে গিয়া। শান্তি বারি মার কেবা তাবে দিত, ছুড়াতে ভাষার তাশিত হিয়া॥

নিশার ধর্মের গুরু বিদ্যমান।
তিনিই আত্মারে প্রপথ দেখান।।
তার প্রবা তিনি দান করিবারে।
মধুর আহ্বানে ভাকেন আত্মারে॥
তার পথে ল'তে করেন কেশিল।
করেন সবল দিয়া নিজ বল॥
তার উপদেশ শুনিয়া প্রবিশে।
কি সম্বর ওব বুঝ তার সলে॥
তাহার পথেতে হওঃ অধ্যসর।
বিলয় না কর হও হে প্রভার॥

শিশুরে বেমন পিছে চলিতে শিখান।
ছাড়ি দিয়া তার কাছে আপনি দীজান।
চলিতে হইলে জান পাতীর স্থানন।
সমনি স্থেহের বৃদ্ধ কবি প্রাসারণ।।
বরেন ভাষাকে গিলা বাঁচাবার করে।
না বরিলে পড়ি শিশু পাছে প্রাণে মরে।
সে রূপ প্রম্ গিতা আত্মারে লইলা।
চলিতে শিখান কিবা ব্যন্ত করিলা।।

ক্রিতে ভাছারে দেন সংগ্রাম সংসারে। **আপনার বলে সেই যত দু**র পারে ৪ किन् पनि तर्ग मिहे क्ष भारा क्षि छ । ু**কাভরে ভাঁহারে ডা**কে---সমনি হরিত ॥ **जामिता अद्याच वल उ**न्दर करि मान। **্অাপনার হন্ত** দিয়া তাহারে <sup>ই</sup>টোন ।। कड़ (तथा निया मूथ छेर्नाह कानर । **আত্মার ধর্মে**র ভাগ করেন বর্জন চ याष्ट्र कार पूर्व है। ति ति ति गाम्भाव । व्याचा राज्यां के इंग्ला कराना वरण ॥ কভু নাতে লক ভিনি করিয়া বিষয়ে। অভুজাপ জন্জ দিয়া ভাষাতে শিবান 🛊 মাবহিত হয়ে চেং উরি ভিন্মা লয় ৷ দিবেন ভাষাত্তে মতি লাহিক সংস্থা গ উলাগীৰ পিতা ভিনিন্দেন ভোষার। শুন উচি কথা উচ্চে শ্বর বার বার।।

#### श्राणना ।

তুমি নাধ। মুক্তিদাতা দাও শুভ মতি।

দয়া করি কর নাথ। দীনের স্থাতি।।
পুণ্য-ভাব তুমি মনে, করতে প্রেরণ।
বিপথেতে যেন নাছি যাই কদাচন।।
থাক সজে বালে দাও, কি ইচ্ছা ডোমার।
দেইচ্ছা পালন বেন করি অনিবার।।
ভাইনিশ ব্যাথ্যান সমাপ্ত।

## উদ্ধৃত

#### धिन्त् ममार्ख खा जिल्हा।

चकरक धक्तिक करिया गर्याच-वहाँ संसद्धि करेन. ज्यम इट्रेट अल वित्यत्व भम्ज अस्मादेव कारी আনশিকা, সীতি নীতি, সাচার मिक्रिभिष्ठ इंहेग। दावहात, वन वीचा व्यक्ति याहाट द्यान पृष्ठ हरेन, তদমুসারে তাহার কার্যাও নির্দারিত ইইল। সকল সমাজেই বস্তুত চারি প্রকার কার্য্য দেখিতে পাছবা ধায় ! চারি ভাগে বিভক্ত না হইলেও সমাজে প্রধানত চারি প্রকার কার্যোরই স্নাবশ্যক। বে সমালে জাতি-८ पत स्थायक म्लाडे नटर, ,काशात्र कार्या **मुक्लाटक जि**न মেৰ করিলে চারি প্রেণীর কার্যা দেখিতে পাওয়া याय। अरु ट्यानीत काया छान उ निकालाने. विजीय শ্রেণীর কার্য্য দেশরকা, তৃতীয় শ্রেণীর কার্য্য আ-হার সংগ্রহ এবং চত্র্ব পেণীর কার্য্য উপলোক্ত তিন শ্রেণীর সেবা। ইউরোপীয় সমাভে বিশেষ বিশেষ বংশের উপর বিশেষ কার্যোর ভার নাও নাইইলেও. নম্প সমাজ-সমষ্টির কার্যা সকল এই চারি প্রকার বলিতে হইবে: ভারত সমাজে যাহা, ইউনোপীয় সমাজেও তাখাই। ভারতে কেব্ল বিশেষত এই যে. বিশেষ বিশেষ বংশের উপর বিশেষ বিশেষ কার্য্যভার অপিত হইয়াছে। কোন বিশেষ কান্য বিশেষ বং-শের উপর অপিত হওয়াতে যে কি ড্রুল, ডাহা প্রার সকণেই বিদিত আছেন। **সন্তান** জন্মাৰ্যা পিতার কাৰ্য্য দেখিয়া যত শিখিবে এশং সেই কাৰ্য্যে দক হইবে, অল্লবিস মাত্র বিশ্বস্থারে শিক্ষা করিয়া তা হাতে নিশ্চয়ই তত পটু হৈইবে না। পিতার **চিন্তা**-জানালী প্রয়ন্ত খনন সভান উত্তরাধিকার করে. তখন পিতার বাবসায় সন্তান বেমন শিথিবে, আনো কথনই তেখন শিখিবেনা। অতরাং আলাদিবৈর বিদেচনায় স্মাডেলার কাঁতা স্থাল বংশ-প্রক্লরায় উপর অপিত হওয়াতে সমাজের উৎ**কর্ম ব্যতীত অপ**-কর্ম সাধিত হয় না। পরস্ত এক প্রাক্তাব কায্য এক শ্রেণীয় লোকৈবই অন্তনিভিট্ট খাবা উচিত এবং ইহাতেই সমাজের মলল। এক আকার রয়ার্য্য করি वात जानकात योग नकलाकर अभिन्न रहा, जारी स्ट्रान মহান অনিষ্টের সভাবনা। স্কলকেন্স্মান , আধিকার लाए ४ इंट्रेंट, येनि एकान समस्य सकता **स्वाह्य है का**-হার সংগ্রাহে নিম্ভ হয়, তাহা হুইলে তুৎকালে সাধা-রণকে শিক্ষা দান বা দেশসকা ক্রান্ত্রীরটব্যা করে C4 1

সমাজ সংগঠনে সমাজ-তুক্ত স্কল লোককে স্মান
অধিকার নেওয়া যাইতে পারে না স্থান অধিকার
পাইলেই কি স্কলে গ্রান ছইতে পারে প্রায় বীর
শিকা ও শক্ত অনুযারে অবশাই আক্ষার পৃথক্
২ইরা পড়িবে; প্রতরাং সমান অধিকার বিভূষনা ও
বিপ্র্যায়ের কারণ হুইয়া নাড়াইলে। বীরারা সামা
তগীর হারা স্থাক-প্রীরকে বাধিকে হানেন, তাহাদিগের জানা করবা যে, স্কুল কোনেই হাপ বজ্
কবিতে বুসলে দেশকলা, আহার সাব্যাহ পরিচ্যা।
করিবার লোক মিলিরে না প্রত্তরা এক দিবক যাগ
যক্ত চলিবে না প্রত্তির সকল কোনেই সাজ্যবিক
লাক্ত ও শিকা বে স্মান স্থান বাহার বিশ্বাহ সামা
না, স্কুল

ক্থন**ই সন্তান হইতে** পারিবে না। তবে যদি স্বাভা-विक पंक्ति । भिका भाष्ट्रगात मकरनत स्ननाहे मुक्न হার উন্তক্ত থাকে, ভাহা হইলে সমাজকে সামা-মন্তে **রীকিত করা না হইয়া রোগ্যতা হতে** প্রথিত করা হয়। 'কিছু বোগাতা-সূত্রে সমাজ বাধিতে হইলে "বোগা-ছার উম্ভি" (Survival of the Fittest) নিয়মে व्यक् खाःम उन्ने इटेटम ' अभिनाःम, अवगर अवः व्यवस्मारम विमष्टे इहेरत। अंक व्यश्म विमष्टे इहेर्त ভাহরে কারণ এই যে, ভাহাকে হীনবল কবিচে না भातित्व का का का क्वान इंग्लान इंग्लेश भारत ना। শীবিত থাকিবার জনা সংসারে ইতব প্রাণাগ্র एक अकाब अकिनियुक कोरन-भःशास्म नितः । त्या-গ্যতা অনুসারে সমাজ সংগঠিত হটলে মনুসা স্থেও সেই শ্রকার জীবন-সংগ্রাম বাধিলে এবং এক व्यनारक क्रमन शीनवन ७ व्यवस्था विनर्ध कतिश अप्रः रणदान ७ डेबंट इटेटर। टिक्-मयाल जलाकात ষংগামের স্থান্ধ নহে। এ প্রকার সংগ্রানের স্মা-**८मत** मत्था है:ताज समार्भ व्यागना । है:ताज समाज मः शास्त्रित मभाभ विनिधार है लिए ७१ उक्षण वाहि अस् **নত অবস্থা হইতে** এতদ্ব উঠিলাভে যে, তথা হ**ইতে अध्या**णतक (नथा यात्र ना। किन्दु जिल्तु मशांद्रजात कृष्टे শ্রেণীর দুই জনের মধ্যে কখনই ভাদুশ পার্থকা লক্ষিত্ इरेटर मा। ५ इराइ हिन ममाझटक मारमात ममाझ विनित, भा के वाल ममाकाक शास्त्रात ममाक विविद १

ष्मामहा शुर्क (मथारेग्नाहि त्य, मामात्क वक्ता विश्वा সমাজ গঠন সম্ভব নহে। সামা হার। সমাজ বাঁধিতে भातिएन, अर्थार नमाजक मकन (नगरकत व्यवका ममान করিতে পণবলে দমাজ বড় ভথের হইতে পাবিত, ভাষাতে সন্দেহ নাই; কিন্তু তেন প্রকার গঠন সম্ভব মতে। তবে হিন্দু দলতে যে স্বাপেক। আহক সাম্য-নীতি প্রাণ্ডিড আছে, ভাষা কালারও অস্বান্যর किताद क्या नाहै। धरे महागत जर अनन नाह বে, প্রত্যো**ক্ষ এক প্রকার** কাষ্য করিবে ও সকলেট धक्लकात स्वय-दमोक्टर्यात अधिकाती श्रेशत। इतात 'সর্ধ এই বে, ভিন্ন ভিন্ন শ্রেণীর 'লোক ভিন্ন ভিন্ন বাধ্য कतिएक, किन्न औक दलनी स्वत् हुहैया अलहरक जिनस क्रियं मा। अक्टब्रिट केलिम बीधन कार्या नियुक्त भारिका वानकांत्र जीविका निकां कडित अव भन-च्यातः धमन्हे वक्तान व्यावक शांकित्व त्य, काशांब छ भाषात्व किरिय़ प्रशांत हिन्दि ना। धेई क्षकांत्र मोबाटक मृत्र मञ्ज कतिरत ममाझ उप समात ७ स्मृद्धारण विद्रिक गरिन, देशएक किङ्गपाळ गरमह नाहे।

আই তানেই হিন্দু সমাজ আবহমান ফাল চলিরা আসিরাটের মামরা এমন বাল না বে, জাতিতেদ সম্বাদ্ধে কোন পরিষ্ঠন একে বারে আবশ্যক হর নাই। মখন বেমন আবশ্যক হইয়াছে, স্বাদলী সমাজ সংখ্যানটোর তবল তেমনই বিধি প্রচলিত করিয়া ক্ষয় ন্যাজকে আবার স্বল ও সভেল করিয়া প্রবল প্রতাশের স্বাভিত জীবিত রাখিয়াছেন। তবে এই প্রয়ন্ত বলা ঘাইতে পারে বে, ভিন্ন ভিন্ন বর্ণের উপর ভিন্ন কার্যাই তার অতি প্রচিন কার্যাই নাজ ইইয়াছে, কার কার্যাই আরু ভার অতি প্রচিন কার্যাই নাজ ইইয়াছে,

A State

ভিন্ন ভিন্ন কার্যাই সম্পাদন করিয়া আসিরাহেন। কিপ **अकरन आंत्र हिन्स्मारण शृंतारी हैं** भारत छ नशीव নাই—জাতিভেদ ও জাতিগত ক্রেটার বিশুক্ষানা ঘটি-ब्राष्ट्रि ध्वर हिन्त् नमाय-वद्या धकरव लिलिल इंग्रेश বিয়াছে। সমাজ নিরতই পরিবতনশীন ; যুগে বুগে অবশাই ইহাব শরীরে পরিন্তনের চির লক্ষিত হইবে। दैनिक समरत शिल् समारकत स्पन्ध अनुष्ठा कृत् পৌরাণিক শমরে তেমন ছিল সা; পৌনাণিক সমরে বে প্রকার অবস্থা ছিল তান্ত্রিক সময়ে সে প্রক্রে ছিল नो। तामितिर्थं ममारकत स्म अवस्त ताल्ड अधिराक् মহাভারতে তাহার ব্যত্যয় দেখা খ্যা: সুদেশ সম্চাধ मयोज देहजाल मगरत विनामान जिल ना। हिन्ह तीक्ष मगरवत जातका मुगलगांस मगःव शाहर्तिह व्यवाद्धः, गुरुवामान ताज्ञक समहात जनका है ताल পাদন সময়ে পরিবর্তিত হুইতেছে। অধিক গশ্চাতে याहेरक क्टेंट्च दक्त १ --अभिरम्बंडम झाँखन चगर र ग्रमा েও যে অবশা ছিল, একৰে সে অবস্থা নাই। পাতি-Con-প্रणा जन्मरण हेश्हाकी भिकान फरल विश्वकृत भिथित इं**हे**वाद्ध । हेश्वाका भिक्षा स्राधीन श्राप्त (माश्रीहे দিতে প্রান্মালের পঞে বড়ই অনিষ্ট কবিয়াছে — অসাব ও কুশিক। দিয়াচে। জাতিভেদ একণে চিন্-मगोरक भागामान - একের दिश आखा आवत्यम क বিশা মহা গোল্যাথ উপস্থিত ক্ৰিয়াছে সম্ভক্ত থোর পরিবর্তন আনম্মন কবিধাতে।

শিক্ষার পরিবর্ত্তবে, ইংরাজা প্রথাব অধিষ্ঠানে ও বিদেশীণ ব্যবসাগ বাধজেরে গুড়াবে এ প্রকার প্রি-বৰ্তন অবগুঞ্জনী। তালাতে আনাৰ ইণ্যাল, মুগে मामा १ याभीन होत शान कविष्ठ वर्ष्ट भर्दे। आमि तां अभिकाष महस्त्रम् अवः । हार् हे आकी अधात सह-করণ করিতে গিনা নিভান্ত বিপদপ্রস্ত হইয়া পাড়বাছি। ফলত, ইংলাজাশিকা, রাতি, নাতি, বাবদাদ, বাণি-ल्हांकि यथन हिन्दू मनाटक अध्यक्ष कत्रिक, अन्त अर्थ-भाष्टे शनिवहस अभिनामा - देश्ताक्षरक (मन इहेरड ভাড়াইতে না পাণিলে আৰু পরিবর্তনের হুক্ত ইইতে রক্ষা পাইবার উপাধ নাই। ইংরাজ ব্রা**ন্ধণকে স্থান**-চাত করিয়া নিয়ে অধ্যাপকতা করিতে কাগিলেন --ু প্রাক্ষণ উদ্বাধ করিয়া পাইতে পায় না —কাজেই জা হাকে যে কে বুভি অবলম্বন করিয়া দ্বীবিকা নির্কাহ कतिएक वाया हरेएक ध्वेम। **देशतीक समर्हे एनम** রক্ষক ; স্নত্রাং যুদ্ধ ধানাদিগের বাবদায় ছিল," তাছি-দিগের অনেককে অস্তান্ত ব্যবসায় অবলম্বন করেজে क्टेंत । हैश्तुक निट्य वावशात्र शामिका आतात्र कति-लाम १९वर ज्याकर्षात् भारतारगांश विश्वेतः;—द्वशक ও राजभावी मल्लामात्र आपन शांके जुलियो विद्या स्था कार्ट्य नियुक्त शांकिया छेनताम कतिया शहिनात छछ नानांत्रिक रहेन। माना अकारत প्रतिहर्गा कतः যাহাদিটোর কার্য়া ছিল, ইংলাজ তালাদিণের কার্য্যেও হস্তকেপ ক্রিয়া তাহাদিগের মুখের গাসে কাভিয়া লইলেক্ট্ৰেকাজেই তাহারাও দিখিদিকে অসহা जारबरार्ग निक्षां छ रहेगा। देशांत छेलत हैं तान दीन-**लम-नकरनरे नमान, ग्राहा**ज रच इस्ति हेक्का रम काशहे व्यवनश्चन कत्रिएक भारत । अहे भिकात ५६८५, सांहात

बाबनाव हा वृद्धिक हेरबाब बाब्दवानी हम नारे, टनव जारीने वाबनावटक निक्रटे और जारी कान कविया कीविका निकार्द्धत्र करू श्रेश दाविष्ट स्वित व्हेन-देखाल कईक पानात इति आक्रिवाद की कितामान मह ब्रहेबार्ड, छाशास्य छ वाशा मध्यात भयांचन मिराछ ष्ट्रेन्द्र । देश्वादकत निकाय याम्या ल्विशाम---ভাষীর শহিত প্রতিবোগিতায় কাবি এব --ইংরাজ রাজা খলিক বাজাক্ষা খাবা আপনার অবিং করিয়া আমা-मिर्गटक मकन स्विवास, अकिन कारक्षण । वाहे व्य-কুৰাৰ নানা কারতে হিল স্নাধ্যে মহা গোলেয়ার পাছিমঃ (भव-हिन्नु-मधाक विम्लान ७ किम्भान १३न। सह नेश्वामद्राप्ति नशं अनुश्कात्यावर्णन । विभि नासका अखन ব্দনত সমূলে ভাৰম শেল। গ্ৰাণেদিনের পঠিত **াশ্যাজের** এরপ সাবসা বটিবে, ইফা ডাহারা পা**প্রেও** चार्रम नार्दे। वद्यमान काल मकत्याने च-ए व्ययान--कि कारोटक एक वायम मानिट हार मा-न्याब-শাসন বাতাত সম্জ-শাসনের আর ক্ষতা নাই। बो(बांक् ध्रक्रिंस उक् का अधिन के ब्हेटन बना एक स्य नकरमानुब्रममाञ्चरक ५५% कादरव, जाहा क्रानीचत्रह बार्तन-गोषत्रा व विश्वत दा अती स्मिथ ना।

 क्ष्यू नमोटल यथन द्वां अनान प्रनिष्ठ विश्रगांत्र पठिल. जन्म काटक कार्कर का जिल्हा-अला मिथिन दरेगा (शर्म । श्रुकी निक्षिष्ठ कार्या शक्त तथ्न विदन्ध भीमा-वद्यां यार्किता अकत्व मारात्रेला विस्कृष्ठ श्रदेवा लिए-क्रा । हेरता जह महिष्ठ प्याखिरा भिजीय ए काजीय वृद्धिनात्म हिंसू-नेपाल काहेत आह अविभ माहे। भाषात्रपञ् अकार्रे लाद्यत नातिया त्रिक स्टेएएह। इंश्वाह उल्लब ट्रेंग्केन्स्थान फिन दिन तांक स्थ्राटक এক ধানের উপযুক্ত অধ ব্যব্র ) বহুজনকে প্রতিপানিত इहरक एहे एटर हो भारि विस्मेद कारी विस्मेय अस थाकारिए ए। प्रकर्त, काश खेकरत पृष्टे हत ना। न्यांकि ्राम-धार्या भूनः अधिष्ठि**ङ क्**त्रिनात स्मात केलांत्र नारं। হাতারা রক্ষণীল শী্মাঞ্-শংকারক, ভাঁছার। বিভার भाग बार्मकान कवियो ज्ञान्तिका अभाग भूनः-व्यव्हान ज ক্রিন্দে প্রচান পাইতেটছুন; ক্রিন্ত যুক্তির পহিত किहूहै। करिएक शांत्रिकालाने ना : १५ अत्रार कन्छ किहूहे स्ट्रेट्डर मा। , आमानिरशत विट्या भाष, शृक्ष-धानि ड -বাতি নীতি আর প্র:-প্রাউষ্টিত হইবার মতে -সমাজ নিয়ত প্ৰিৰভিন্নাগ , প্ৰাকাৰে একংগ ইচাকে প্ৰি-চালিত ক্রিবার এটা, ভবে লভাছতি ব**লিয়া বোধ** इस । श्रीद्वांक गणांद्रज्ञत अञ्चलतात हि**ल्ला मधाकार म**ा-পঞ্জিত ক্রিলেও মদত নাল ৷ 🔞 রক্তিশীল, কি প্রি-वर्तनभीम, डेड्ड शरकत कार मधाक मध्यावर शक-নোল্য বিশু সমাজকে রখা কারতে পারিবে না---আংশিক ব্ৰহণ ও আংশিক পৰিচিত্ৰশাল সম্প্ৰদায় নক্তি ক্ত্রিকরিতে পারেন তবেই মগণ , নতুবা হিন্দু সমাস্থ কার্পের অতল গর্ভে ভূবিল—দশতের ইতিহাদের भूका ए जी कुछ रहेन।

## তুৰ্ভিকো পান, প্ৰাক্তিৰ শাস বাবে

গত ৩১ চৈত্ৰ বীৰ্ত্তৰ অঞ্চল ছাইকলীড়িত লোক-मिर्गत मार्थार्थ जानि बोजनमाम गुटर नीन जरगहाँ रहेशाहिल, जनार मक्ष्यत्व आहाया खार्यना क्या क (12 प्राव (व डाका मागृरीक ब्रेबाहिन कारात कार्य वास नित्म (मंख्या (शंग । সর্বাস্তদ্ধ সাম 38610 N मदा एक रोप ₹480

#### আয় /

ছচিক পীড়িত বাজিদিগের সাহাযার্থ भान भा उग्रा याता দান সংগ্রহের সময় যে সকল পিতলেব বাসন পাওয়া পিয়াছিল তাহা বিক্রয়। সাধ্যেণ ব্ৰাহ্ম সমাজাধীন ছড়িন্দ নিবারিশী সভা সাহাম্য করেন। 7516/2

. 240th

#### বায়।

लिअपिशंदक माश्या मान, চাউল ক্রম করিয়া বিভরণ 9 and 6 a P ফরা হয় ৪১৩।৮৮৮ মন পথসা বিভারণ করা হয় 🗀 🚜 33:00 m प्रतिअति।एक वश्व (अनं शाम ) अन्व शामा . শিক্তরণ করা হয় ভহাবধান্নত **ও অবৈত**নিক **কর্মচারীগণের** 🧨 সাহার্যাকারী কর্মচারীর বেতন 👵 🕍 🤼 অধিবতনিক কর্মচারীগণের আহারাদি বার > 24/4 ভাক্ষাভল ব্যয় 8W # বিধিধ ব্যয়

かるらうな

कांगालत এই यथि क्ला वीक्रम्स क्रेस्टर्गक প্রামনগর গ্রামে গত ও জ্যেষ্ঠ ক্রতে ১২ কার্মিক প্র-र्घाषु अर्वश्रेष १२७०२ जमाद्र अत्र (मध्या क्रियाक्ति। আশ্রুবা করণ। আনুরা বে 🔰 🗷 ट्रिंग्स्क व्यह मक्टिब नमय किंद्र नीकार्थ किंद्रिक निक् विवासि हिराटि दक्तम जानासर गमा वानान गार एकरक । गाहाबा कर विकास आमाबिगाएक नावास करि शास्त्र हिंगावित्र च उत्तक निरुठ नाश्चान करि Cole । अहारमें अर्थ नार्थक स्टेशांक । কত কথাৰ গতিত জীকাৰ কৰিতেকি কৈ ৰাপীৰৰ ভাৰ ন্মাজাৰীৰ নুলহাট ছড়িক নিবাবিশী ক্ষান্ত কাজাৱা নুফখনে প্ৰাক্তিয়া অনুমানিটোৰ অনুমূ কৰি মুক্তিক नी जिल्लाम सम् प्रापं क्रिया श्रामामित्र माहारा कतिरादिन र



# ত্তারাখিনী পার্কা

इत्रिश्व क्षित्रम् क्षामीक्षात्र्यम् किथनानी छदिदं सम्भमधन्त् । ५८० शिव्य अत्तरसम्बद्धाः स्वतन्त्राक्षरसम्बद्धाः स्व सम्बद्धाः सम्बद्धाः सम्बद्धाः अश्वरक्षाः सित् सम्बद्धाः पूर्वसर्धातस्य । एकम्य तस्येवापान्तस्य पर्योक्षकोतिकस्य यसम्बद्धाः तक्षिन् प्रातिकात्र्यस्थितार्यसम्बद्धाः सम्बद्धाः सम्बद्धाः सम्बद्धाः सम्बद्धाः स

## বিজ্ঞাপন।

ষট্পকাশ সাংবংসরিক আক্ষমাজ।

১১ মাথ শনিবার প্রাতঃকাল ৭।০ ঘণ্টার সময়ে আদি ত্রাক্ষ-সমাজ-গৃহে ত্রুকোপোন্না হইবে। শীরবান্দ্রনাথ সাকুর।

সম্পাদক।

## প্রাণ-সাগরে।

হে মানব! ভুবে ষাওঁ প্রাণের সাগরে,
প্রাণের সাগরে সে ভ্বিলে নাহি মরে।
ঐ দেখ, রেলা তাল মত্তিকার নয়,
ভুবে না, তাহাতে তানু হইতে উদয়।
গগলের সীমান্ত না সীমা তার ছোঁয়
তল তাঁর স্পার্শি না কালের রজ্জু নোয়।
ক্তু বৃদ্ধি হাস নাই, কজু না ত্কান
আপনার প্রতিষ্ঠায় আপনি শয়ান্ত
কেবল নেক্ধক্ ক্তুলা ধ্বল

দাগরে উথিত কুদ্র বাস্পের মতন উঠে তার গর্ভ হতে ধালা জীবন। উঠে স্মৃতি, উঠে জ্ঞান, উঠিছে বিবেচ, উঠিছে ইন্দিয়-শক্তি—চোতনা-উদ্রেদ। জগরিত মোর-চক্র —জগরিত ভারা— দাগরে উঠে সে বিদ্য, সাগরেই হারা। কোণা চাও, কেখাে যাও, সাগন ওাজিয়া। এই ভা অমৃতানন্দ কােমার লাগিয়া। লহজে আজার জাগাইয়া আজ্বান। তেলে দাও মহাভাবে আপনার প্রান্। যে কল গাইবে ভাহে, না পাবে মংসারে, ভুল শাও, ভবে যাও, প্রাণের মাগরে।

## আদি ব্রান্সদমাজ।

<mark>৬ পোষ রবিবার ত্রাহ্ম সক্ষ্ণ ৫৬ !</mark> ্ৰ**্লাচ্**যোর উপদেশ !

ক্ষর আমাদের নিরাশার আশ।। তিনি যথন আমাদের আত্মাতে আবিভৃতি হ'ন তথন প্রীতি ভক্তির বঙ্গনে আমর। তাঁতার চরণে বাঁধা পড়ি, আবার যথন মোছ-শৃখালে বন্ধ ইইয়া তাঁহা হইতে দুরে পড়ি ছথনও আশা-বন্ধনে আমরা তাঁহার দিকে অফ্টি থাকি। সেই আশার আকর্যনেই আমাদের সন্ত হইতে এই প্রার্থনা উথিত ইয়াল অশ্বলাক সভাত হয়াল অশ্বলাক সভাত আমাকে সং অরপে লইয়া যাও, তথাসোগা জ্যোতিক গ্রহাল অন্ধকার হইতে আনাকে প্রেরাজিক অরপে লইয়া যাও, মতোর্মাক হতং গ্রহাল মহুল হইতে আমাকে প্রেরাজিক সভাত বাহি বিবাহন প্রেরাজিক স্কাল করে। মুগতারা হারাজিক স্বালিক স্কাল করে।

্কনে পাগিব গুরুর নিবটো যদি আমরা জামাদের এই নৰোগত গ্রাথনাটি জানাই যে, "অসং ২ইতে আমাকে সত্যেতে লইগ্ৰ ঘাও" তবে নিনি আমাদিগকে এই পর্যান্ত বলিতে পারেন যে, এই সকল, খ**নিত্য** বিষয় দেখিতেছ সংখ্যাপ পরাব্রশ্ব ইহা হইতে প্তৰু, "নেতি নেতি ইহা নহৈ ইহা নহে" ত্ই উপদেশ দিয়াই তিনি ক্ষান্ত হ'ন, ইহাতে আন্বা এই ফল লাভ করি যে,আমরা অনিত্য জগৎ হইতে মনকে প্রজ্যাহার করিয়া লই-বাল চেপ্তা ক্রি--এবং আত্মাতে পর্যাত্মার আবির্ভাবের জন্য আশাদাণ উন্মুক্ত করিয়া সর্বাদ। মজাগ থাকি। কিন্তু পর্যাত্মার প্রতি মুখন আত্মার আর্থনা উপিও হয় যে "অসতেমা: সং গ্ৰয়" তথ্ন "নেতি নেতি — ইলা নতে ইলা নতে" এরপু বিভারের অপেকা না রাখিয়া সংখ্রপ পর্যালা আ-আতে সাক্ষাৎ আহিভুত হ'ন—তথ্ন কুল দেহের অভান্তরে নহান সভাবে পাইয়া শীজার আর আনন্দ ধরে না, পিঞ্জরবদ্ধ পক্ষী আকাশে উড়ঃন করিতে পাইলে তাহার যেরাপ আনন্দ হয়, পর্মাত্মার আবি-ভারে আত্মার আনন্দ সেইরূপ দশদিক্ছা-ইয়া প্রড়ে। তখন আত্মার প্রার্থনা যায় "তমুদোমা জোতিগ্ৰহা তখন আত্মা আ-

काटनंत कातागादत-भंतीरस्य निकास-অন্তকারে আরত থাকিতে চাতে না,—অনীন আকাশ বাঁহার গুরু জার বারণ করিছে জাস-মর্থ উটিকে পাইয়া আত্মার আনন্দ জ্যোতি আকাশ ছাড়াইয়া উঠে; তখন আত্মা পর-মাজার সহবাদের আনন্দকে হৃদয়ে বদ্ধমূল করিবার জন্য এই প্রার্থনা উল্পীরণ করে ''য়তেলমা বয়তং গণয়'' মৃত্যু হইতে আ-মাকে অমৃতেতে লইয়া যাও-ভোমা**র** विटप्रकार सुनु। - ज्ञा कांगाव कार हा कित्र दिन ভাকাশিত থাক "অবিরাধীর্ম এধি।" পর-মালার আধিভাবে আজার আনন জ্যোতি বেশন আকাশ ছাড়াইয়া উঠে তেমনি তাহা কাল ছাড়াইয়া উঠিয়া প্রশান্ত জ্ঞান-জ্যো-তিতে মিলিত হয়—এইরূপ জ্ঞান এবং আনন্দের দামলন অমৃতের এতাবণ হইয়া উঠে৷ নেতি নেতি করিশ আত্মাকে বিষয় হইতে প্রত্যাহার করিলে তাহাকে জল ঘলা ধৌত কলা হল, কিন্তু পরমা**ত্মা**র সাক্ষাৎ আবির্ভাব হইলে আত্মাতে অগ্নি প্রবেশ করে ;- জল-ছার। সহত্র ধৌত করিলে যাই। না হয় অসারে অগ্নি প্রবেশ করিলে ভঙ্গা-রের শ্রী ফিরিয়া যায়। হৃদয়ে ভক্মাগ্নি ভক্ত-লিত হইয়া উঠিলে দেশ-কা**লের সমস্ত** প্রাচার ভগ্ন করিয়া অমতের দার উল্লাচিত করিয়া দেয়।

হৈ গরমান্তন! সংসারের বিভীষিকায়
ভর পাইয়া আমরা ভোমার অমোহ আভায়
প্রার্থনা করিতেছি — তুমি আমাদের শত সহল্ল অপরাধ মার্ক্রনা করিয়া আমাদের
প্রতি প্রসন্ন হও—হে কুল ভোমার যে প্রক্রম
মুখ তাহা থারা আমাদিগকে সর্বদা রক্ষা
কর। আমরা সকল মন্ত্রান্তবি মিলিয়া
ভোমাকে ভাকিতের "আবিরাবী ম এবি"
আমাদের আত্মাতি আবিভূতি হও — শিত্র
নিকটে যেমন মাতা খান্য শাস্ত্রী মাইকা

আনে নেইরপ ত্মি আমাদের আত্মাতে
পবিত্র প্রেম কইয়া আইস—তোমার প্রেমময় সহবাসে আমাদের আত্মা অমতের জনা
নাথ কর; —আমাদের আত্মা অমতের জনা
পিপাস্থ হইয়া তোমাকে বার বার ভাকিতেছে তুমি আমাদের নিকট প্রকাশিত হও,
—এই সংদারের মোহ-প্রাচীর আমাদের
নিকট হইতে তোমাকে ঢাকিয়া রাখিয়াছে—
তাহার করাট উদ্যাটন করিয়া আমাদের নিকট প্রেমিত হও।—তুমি প্রাকাশিত হইলে
আমাদের সঁকল তঃখ ঘুচিলা যায়—সকল
থেদ ঢলিলা যায়—সকল আশা চরিতার্শ হয়
এই জন্য আমরা সকলে মিলিয়া তোল্
থাকে ভাকিতেছি আমাদের আত্মাতে প্রকাশিত হও।

ওঁ একমেবাদিতীয়ং।

#### উন্ত ৷

## পজিটিবিজ্ম্ এবং আধ্যাত্মিক ধর্ম।

আধ্যাত্মিক ধর্ম কি ইংহাই প্রদর্শন কর।
আমাদের মুখ্য উদ্দেশ্য; ইংহাতে অগতার
কর্টের মতের প্রতিবাদ আমাদের কর্ত্তব্যর
মধ্যে হইয়া পড়িয়াছে। অত এব, আর্যায়িক ধর্ম-স্থানের ক্ষকমল বাবু গত মাদের
ভারতীতে বৈ ক্ষেকটি সংশয়-সূচক প্রায়
উত্থাপন করিয়াছেন, আমরা আহ্লাদের
সহিত তাহার মীমাংলায় প্রব্রু হইতেছি।
আমরা বলি—মূল সতাই বর্ণের মূলপ্রবর্তক; ক্ষকমল বাবু তাহা বলেন না।
কৃষ্ণকমল বাবু মিলের মতানুসারে, "বরফ
শীতলা এইরাপ তত্ত্ব গুলিকেই সত্য বলিয়া
খীকার করেন্। পরীক্ষাসিদ্ধ স্থুল তত্ত্ব
এবং সতঃদিদ্ধ মূলতত্ত্ব (Fundamental Principles) এ তুয়ের মধ্যে যে আকাশ-পাতাল

প্রতেদ আছে—মিল্ ভাষা জাপন লাখে আদবেই আমল দে'ন নাই। মিল্ চক্
মুদিয়া মনে করিতে পারেন—সুর্বা জরুত্র কারে নিমন্ন ছইয়াছে, কিন্তু ভাষা কারে নিমন্ন ছইয়াছে, কিন্তু ভাষা কারে কালে কাল্ড থাকিবে না; মিলের মতে, হল-বিশোন ভূষা আর ত্রে পাঁচ হইলেও ইইতে পারে গ্রেপ্র কারে জ্বার ভূলিয়া কোন জগতের কোন লোকই তুই আর ভূরে পাঁচ গবতা করিবে না। মূল-ভত্ত্ব-মকল যে, কিরূপ অকটা, ভাষার একটি মামানা দৃষ্টান্ত দেখাইয়াই আমরা এপানে ক্ষান্ত ইইতেছি; —

যতবার জাণবা বরফ হতে লইয়াছি **७ जनातरे बागारनत शक्ष दन् कन् कतिशार**हे, ष्टेशां ज्यारादेव यदमानद्वा दबर्यक ভাবের সহিত হাত-কন্কনানির ভাব খোগ-নদ চইটা গিয়াছে এবং এই তত্ত্ব টি আমা-নের বুদ্ধিতে ভারেড় হইয়াছে যে, বরফ শীতল। কিন্তু ফলবার আন্তরা পরিবর্তুন দেখিয়াছি—একবারও আমরা ভাহার নিগুট कातन ऐल्पिय-ए।ता छेललिक कति नारे, खर्यंड আমাদের প্রব বিশ্বাস এই যে, পরিবর্ত্ন-মাত্রেরই কারণ আছে; আমরা বীজ-বগন দেপি এবং তাহার কিছুদিন পরে অক্ষরের উথান দেখি-–পূর্ম্ববর্তী এবং পরবর্তী জুইটি ঘটনা দেখি; কিন্তু বী**জ হইতে অঙ্কুরো**দ্গ-মের কি-যে বাধ্য-বাধকতা দে-টি আমরা আদেবেই দেখিতে পাই না—অখচ দেই-টিতেই কার**ণের** কারণত্ব হয়। শুধুষে পূর্ববর্তী হইলেই কারণ হয় এবং পরবর্তী হইলেই কার্য্য হয়, তাহা নহে; – প্রীর্ক্রনন্তী चर्छनात्र यदवा यनि अयन अक्छो-विश्व थात्क যাহার গুণে পরবর্তী ঘটন। উৎপন্ন হইতে বাধ্য হয়—তবেই আমরা ঐ তুই ঘটনার यदश कार्या-काद्ररात मयन छेननिक कति ; কিন্ত সেই যে "একটা কিছু" যাহার গুল

কাৰ্য্য উৎপন্ন হইতে বাধ্য হয়, ভাগা কি প ভাছা কি কেহু বরফের কণ্ডনালির নাম্য স্পর্শ ছারা অনুভব করিয়া/ছে, ভাহার রূপ কেছ দেখিয়াছে, ন' ভাগাৰ ধানি কেই •**छनिग्नोट६** ? वतटकत्र वसकन्यान वादवाद आगारमद है जियु-रवाहत हथ्या ५३% अहे ভত্তটি আমাদের বৃদ্ধিতে দখন প্রানাহে .ण. बरक **नीजन ; किन्न** अवत्रके**तनद ११**५० **गत।** दक्षमात्र**७ जागा**त्वत एका हे**न्दि**स्त ल्लाहरू अन्योहे खबह जागदा निल्डां हु रग, ুল[রবর্ন-মাজত স**হেতুক। এমন হইলেও** হ্ইতে পা**রে** যে, সুগালোকে জল জমিয়। दयक इन्ट्रेन ७ छ। । । उन्हें इस मा । किन्न অসাম জগতের কোন খানেই এরূপ হইতে পারে না যে, তরল জল কঠিন হইয়া উঠিন অগচ ভাহার কোন কারণ নাই। "বরফ শ্রীঞ্চল' ইষ্কার অন্যথা ঘটিলেও ঘটিতে পারে, কিন্তু 'পরিবর্জন সহেত্ক'' ইহার व्यनांश्रा करकवारबंद व्यमख्य । এই वरमद्वर পোৰ মানের ভত্তবোদিনী পাত্রকায় "কার্য্য-কাক্লা-ভত্ত্ব" এই শিশক প্রবক্ষে উপরি-উক্ত বিশ্বর জলের ন্যায় পেঔ করিয়া। খুলিয়া বলা - **হ**ট্যাছে --প্টেকের ইচ্ছা **হটলে তিনি** তাহা ণেখিতে পালেন; তথানে এইনাত্র বলিয়াই কান্ত হইতেছি যে, "বরফ শাতল" এই মাবল হুন তত্ত্ব ছাড়। এমন অনেকগুলি भूनकेल बादह- तान अटकता**द्रहरे ४७:गिषा।** স্পেদ্ধর্ অভাব স্পান্ত **এয়াগ প্রয়োগ**-পুর্বা দেখাইয়াভেন হে, আপেক্ষিক অপূর্ব সত্যাক্ষের মূলে এক অভিতীয় পরিপূর্ণ মূল / প্ৰত্য বিদ্যান আছেন ইহা একটি गुर्वतीक मृत्रक्ष ; -- कोशास्त्रा भाषा नाहे चि हर्। অখান্য কারতে পারেন। ফল কথা और ती, विভাই ভাগ ভাগ করিয়াও দেখানে। याहें हैं भारत अर्देश त्याहे वीविशेख एम्थारना যাঁ(তে পার্নেই,—"বরক শীত্ল, অগ্নি উঞ্,'\*

এ প্রকার মতা সকলকে স্থুল সজ্ঞ বিলিয়া। নির্দেশ করা যাইতে পারে; "ত্রিভুজের তিন কোণ ঠিক্ দিলে তুই ঋজু কোণ (Right আন্নাল) হয়, কোন একটি জড় পিও একই সময়ে দুই দিকে তাড়িত হইলে কোণাকুণি যায়, জলের মূল উপাদান অক্সিজেন এবং হাইড়োজেন্" এ প্রকার সত্য-সকল বৈজ্ঞা-নিক সত্য বলিলা নিৰ্দিষ্ট মইতে পাৱে; আবার, কি খুল সভা—কি বৈজ্ঞানিক সভ্য, উভয় প্রকার সভেবে গোড়াতে যে সক**ল**্ মতা নিগুড়-রূপে প্রচ্ছন্ন রহিয়াছে, দে-সকল মতাকে দার্শানক সভা বলা যাইতে পারে; ইতার একটা দুষ্টাক্ত পারিবর্ত্তন মাত্রেরই কারণ আছে: আবার মুমন্ত দার্শনিক সভোর মুলে ষে এক অদ্বিকীর সত্য প্রাচ্ছন রহিয়াছে তাহা**ই** মূন সতা, –তাহা এই যে, পারপূর্ণ সচ্চিদা-নন্দ-সর্বাপ পর্যব্রহা দকল আপেক্ষিক সত্যের মুলাগার। এইরাপ, সতাকে একহিকে যেমন বহু।। ভাগ ভাগ কৰিয়া দেখানো যাইতে পারে, আন এক দিকে তেমনি মোট বাধিয়া নেখানো যাইতে পারে। সভাঞে ভাগ ভান করিয়া ভাষার কোন একটি জংশ বিশেষে মনুধ্য-জ্ঞানের সমগ্র চরিতার্থতা হইতে পারে না;—জামিতিক **নত্যে** যাঁহার মন ভ্বিয়া র**হিয়াছে—ঐতিহাদিক** সত্যের আলোচনায় ভাঁহার নিতান্ত অপ-টুতা জন্মতে পারে; রাগায়**নিক সূত্রে** যাঁহার মন ডুবিয়া আছে, জ্যোতিষিক দ-তোর আলোচনায় তাঁছারও ঐরপ। বিশেষ-সত্যের প্রতি বিশেষ-মন্তুষ্যের বিশেষ আক-র্ষণ থাকিতে পারে—ইছা আমরা অস্বীকার করি না ; কিন্তু দে আকর্ষণ সতন্ত্র, এবং দাধারণতঃ সভ্যের প্রতি মসুষা জ্ঞানের যে আকর্ষণ, ভাছা সভন্ত;—আমরা বেশানে বলিরাছি—সভেরি প্রতি আকর্ষণ মনুষোর সভাৰ-সিদ্ধ ধৰ্ম, সেখানে মত্যের ক্ষেও এক

দিক্ ঘেঁসা কোন অসম্পূর্ণ সতা নহে কিন্তু
মোট সতা। একদিক্-ঘেঁসা কোন সতাই
সর্বাঙ্গীন সতা নহে; তাহা যদি সর্বাঙ্গান
সতা হইত, ভবে সেই-একটি সতোই মনুযোর জ্ঞান-পিপাসা সমাক্রপে চরিতার্থ
হইতে পারিত; তাহা হয় না বলিয়াই
স্পোন্সর সর্বাদিক্দশা মোট মতোর অলেযবে প্রব্ত হইয়া অগতা। ইহা প্রীকার
করিতে বাধ্য হইয়াছেন থে, এক অহিতায়
পরিপ্র ম্ল-সতা সকল আপেজিক মতোর
মুলাবার।

किस कुरुक्शन नाव भरतन (य. "आंगा-দিলের বৈদাভিতের। একা বলিয়া এক মুন সভা নিরপণ ক'বড়াকেন বলিয়া মনে করি-शाहित्वन: विस कार्य मत्य "विकास " 'शथवा ' अन्ति। অথাৎ ক্রেল্ডো ঠকানা কলালৈ লোগা, গাম্ব কিছুই दम्यः पात्र ना। त्यदम् दौराता निष्करी স্থানে স্থানে বলিয়া গিলাছেন যে,জন্ম নৈতি टगाल अहे टाएक निर्देशन-एशना। ্য জিনিসের কেন নান কর না, বেফা তা शंब किन्नहें गेन्। (श्लानगत (भहे क्था বলেন।" স্পেন্সর "নেডি নেতি" বলিয়াই ক্ষান্ত আ**ছেন—একথা**র বিশেষ কোন গ্রা-মার বাষরা দেখিতে পাইতেতি না। তেন-गत् रकरम এই रत्नन ८४, आभता खक्तरक শরপতঃ জানিতে পারি না; তেমন, এক গাচি তৃণকেও আমরা স্বরূপতঃ জানিতে পারিনা। কিন্তু আমাদের চক্ষুরিক্রিয়ে ভুবের সে**রূপ জাবির্ভাব হয়** ভাছা নিরূপণ করা কিছুই কঠিন নহে; তেমনি আমাদের আত্মতে মূল-সত্যের যেরূপ আবিভাব হয় তাহা আমরা নিরূপণ করিব—ইহাতে কা-ঠিনা কিছুই নাই। পূর্বেতন ঋষির। ত্রন্মের আবিভাব যেরপ জানিয়াছেন, তাহাই তাঁ-ৰায়। নিৰূপণ ক্রিয়াছেন,—কেন্ট্ বা তাহা

না করিবেন। "ত্রেকোর আনিভাব-দারা আ-মর। তাঁহার নিরূপণ করিতে গারি" ইহ। বলিয়াই স্পেৰ্ণর কাঁন্ত ন্দেন, আলে তিনি বলেন যে, মূল-সভা আমাদের গনে ভিড়ার প্রতি ষেত্রপ বিশ্বাদ উৎপাদন কবিতেছেন, सिहेन्ना विद्याम अनुमातः काम किलाव ভাব তিনি আমাদের হণ্ডে সম্পণ ক্রিয়া-ছেন; শেন্মরের নিজের লেখনী ছইতে নিম্ন-লিখিত কথাটি স্পান্তাকরে সাহিত্র হই-BICE :- "And when the Unknown Couse produces in lane (অর্থাৎ কোন ব্যক্তির ন্রে) a certain belof, he is thereby authorized to protest and act out that belief " ALD & ALC & মনে কৰেন তা, স্পেন্সিরের কথার ল্যাজা-में वीन विशे विभिन्न आश्रना एक है। यथा एक्क्यम्द्रत मूथ फिला ताहित कृतिशाहिः এই জনা নিজে উহার গোড়োর কথটো উহার मदभ श्रीविशा दिखाई।

"It is not for nothing that he law in him these sympathics with some principles (CN-মন এই এক principle যে, সকল আপেঞ্চিক সরের মূলে এক গছিতীয় প্রিপূর্ণ সভা त हिं(उर्द्वा) and repugnance to others. He. with all his capacities, and aspirations, and beliefs, is not an accident, but a product of the time. He must remember that while he is a descendant of the past, he is a parent of the fature: and that his thoughts are as children born to him, which he may not carelessly lot die. He like every other nam, may properly consider himself as one of the myriad agencies through whom works the Unknown Cause; and when the Unknown Cause produces in him a certain belief, he is thereby authorized to profess and act out that belief." কিন্তু এই যে, "অপ্রিক্তাত কা-वन," हेरा कि त्यानगतात गएं अत्कवादा ह অত্তের – না সকল বস্তুই যেঁগন স্বরূপতঃ আমাদের নিকট অজ্ঞেয়, ডিনিও সেইরূপ ?

স্পোন্সরের নিম্নের এই কথাটির প্রতি পা-ঠক প্রণিধান করুন,—

"The consciousness of an Inscrutable Power mannested to be through all phenomena has been growing ever clearer; and must eventually be bood from a semperfections शिक्ष अन्त १, ५१८० (स्लान्भत । अहकवी-রেই স্তেজ্য প্রিন্ত ইজা ক্ষিতেন তারে "consciou us a object coronb" Power" বলিয়া ভিনি প্ৰাম জনতে পারি**তেন** of he unconscious assessment by intable Power hat being rowing and der " জত এব ইছা অভীব স্পাই যে, মূল সভা করপতঃ অভেন্য वरि किन्नु अभिटिम्त स्वादन tin cur conscions nes») ভাঁহার মেলণ আবিজাব হয় ভাহা আ-নাদের ভেরু, "জের" শুধু নয় কিন্ধু জবলন্দ-নীয় ; আমরা "authorized to profess and act out that belief" অত-এব "ভ্ৰন্মকে একেবা-রেই জানা যায় না--নিরূপণ করা যায় না--তাঁহার কোন ঠিক ঠিকানা করা যায় না" এ কথা কন্টির হটলেও হইতে পারে, কিন্তু **ट**िन्न नार्वत नारह । टिन्न नार्वत नार्वित ক্থা মতে দ্বীড়াইতেছে যে, (১) মূল সভা আছেন ইহা স্থানিচত; (২) অন্যান্য বছর ন্যায় প্রপত তিনি আনাদের অভেয়; (৩) মণু সভেরে আবিভার আবাদের জ্ঞানে প্রাকৃপার, (৪) মূল মতা আমাদের ভি-তবে কার্য্য কবিয়া ভাঁছার প্রতি আমাদের বিশ্বাস উৎপাদন করিন্তেক্তেল; (৫) সেই বিখান অবলন্ধন করিয়া তদনুসারে কার্য্য করা जामाद्यत कर्डवा। ाहे शांठि कथात मरधा ''স্বরূপতঃ তিনি খড়েয়" এই একটি কথা কেবল কম্টের পছন্দ-সই, অবশিপ্ত জারিটি ক্থা দেখিবাংমাত্র কমটি অনুনি মুখ ফিরা-ইবেন ভাষাতে আর সন্দেহ মাত্র নাইব স্পেনসংখ্রে এই যে একটি কথা—

"The consciousness of an Inscrutable pow-

or must eventually be freed from its imperfections (মথা-কালে অপূর্ণতা হইতে নিমুক্ত হইবে)' ইহা আমর্র মস্তক পাতিয়া গ্রহণ করিতেছি ;— তুচ্চে য় মূল-শক্তির ভাব (The consciousness of an Inscrutable Power) 2151 আমাদের আত্মার ভিতর জাগিতেছে, সেই ভাব-টি অপূৰ্ণতা হইতে মুক্ত ইইলেই অন্ধ শক্তির পরিবর্ত্তে সজ্ঞান শক্তি জাগরক হইয়া উঠে; ফেননা অন্তা অপূর্ণতার লক্ষণ- ভানবতা পূর্ণভার লক্ষণ। আবার, যেখানে সজ্ঞান শক্তিমতা সেই গানেই ভাহার আগান-সরপ আত্রা আপনাতে এবং তাপনার শক্তির আবিভাবে ভাপনি আন-নিত—ইহা সভঃসিদ্ধ। এই জনা বেদাস্ত ব্রেলকে সচ্চিদানন-স্ক্রপ বলিয়া নির্দেশ অভাবারক লক্ষণ করিয়াছেন। ব্ৰেন্দ্ৰৰ "নেতি নেডি"—ভাৰাত্মক লক্ষণ সাচ্চদা-আমাদের আতারও অভাবা-नम-यज्ञा ভুক এবং ভাষাত্মক দুই শ্রেণীর আছে; - जागता यथन विन "वाद्या इस न दर- अप न दर- ठकू न दर- हेजा नि" छा-হাই নেতি-নেতি; আবার, যখন বলি যে, 'অব্যা স্থীয় শরীর-মনের <mark>এক অবিতীয়</mark> অধিকারী আজা সঞ্চান-শক্তি-ও-তজ্ঞানিত-আনন্দের আধার, ইত্যাদি" তথুন আমরা আত্মার ভাষাত্মক লক্ষণ নির্দেশ এইরূপ তৃই শ্রেণীর শ্লেকণের মধ্যে বিরো-ধের কোন প্রদেপই স্থান পাইতে, পারে না क्रुश्क्रमल वाव यपि ब्रालन (य, नक्ल फ्लान्ब চেডয়িতা এক অদিতীয় মূল ফ্যানের প্রমাণ কি গু তবে নিম্ন-লিখিত শ্লোকটিতে তাহার সমূচিত উত্তর অনেক-কাল পুর্বে দেওয়া इहेबार है।

"মানক অবোধনতং লোকং বে মানেন বৃদ্ধকৰ । এগোভিনেব দহনং দগ্ধ বাছতি তে মহাক্ষিক । প্রমাণকে গুলোধিত করে ফে জ্ঞান (জ-

র্থাৎ মূল ভান) ভাগাকে বাঁহারা প্রমাণ-দারা বুঝিতে ইচ্ছা করেন—সেই দকল মহা-পণ্ডি-**ट** ज्या कि करतन ? ना कार्ष्ठरक पश्च करते रेंग অগ্নি, দেই অগ্নিকে তাঁহারা কার্চ দিয়া দক্ষ করিতে ইচ্ছা করেন।" এই কাগজের এ পিট দেখিবা-মাত্র যেমন্ গ্রমাণ হয় যে ইহার ७-शिउ चाट्ह, मिट्रेज्ञभ चशूर्ग-छनन-शंभा অপূর্ণ দত্য (যেমন "বরফ শীতল" এই একটি মতা) দেখিবা মাত্রই প্রামাণ হয় খে পরিপ্র-জ্ঞান-গ্রাম পরিপ্র নতা मूरल दर्धगान् चार्छ.—रेष्टा कानितात कना দিতীয় কোন প্রসাণের প্রয়োজন হয় না--ইছ। স্বতংসিদ্ধ। তবে, "বরফ শীতল" हेश ता भून भठा नटर किन्न पूज पठा-ইহা কলয়ামেই গ্রমাণ করা সাইতে পারে; "ব্যক্ষ শীতল" এই সভাটের মূলে অসংখ্যা অসংখ্য সত্য অবস্থিতি করিতেছে; বরফ এক সময়ে সমুদ্রের বাষ্প্র ছিল; সমুদ্র এক সময়ে নমস্ত পৃথিবীর সহিত বাষ্পাকারে বিদ্যমান ছিন; বরফের মূল উপাদানের পরমাণু-সকল সেই বাষ্পরাশির গরন্তভ্তি ছিল; সেই অনির্দেশ্য পরমাণু-রাশি ছাড়া বরফ আর কিছুই নহে; এখন আমরা যে-ব্রফের পরমাণুকে শীতল দেখিতেছি—দেই भद्रमाधु उपन उक हिल; यथन विल (१), বরফ নীঙল, তৃথন তাহার পূর্বতন বাজ্গীয় পর্মাণুর সঙ্গে তাহার যে আনুপুর্ন্ধিক মোগ চলিয়া আদিতেছে তাহা আমরা আদবেই रमिश्रित भारे ना , पामहा रमश्रित भारे কেবল একটা আংশিক সত্য – যাহা এককালে हिल ना अवर याहा ভবিষাতে ना शांकिरनं না-বাকিতে পারে। স্থতরাং "বরফ শীতল" ইছা একটা হ'ল দুজ্য। আমরা বলি যে, ্ৰুল-সত্যের প্রতি আকর্ষণেই মমুধ্যের মমুধ্যত্ব ध्वर व्यवत्र - द्वा मुख्य कर्यन् मञ्जा জান পরিতৃপ্ত হ**ই**ডে,পারে না।

আমর। বলি যে, প্রবৃত্তির সন্থন্ন প্রবৃত্তির নিয়ামক জ্ঞান এক-মাত্র, ও সেই নিয়ামক -জ্ঞানের সম্বন্ধে প্রবৃত্তি নানা; এককমল বাব্ বলেন "আমি ইহা স্বীকার করি থে, াল মন্দ বিবেচনা জ্ঞানেরই বার্মি; হিল্প স্থান নানা, যেমন প্রবৃত্তিও নানা।" ইহার উত্তরে, কি হিসাবে জ্ঞান এক এবং কি হিমাবে জ্বান নানা, তাহা স্থপান্তক্রপে নির্দ্ধারণ বরা আবশ্যক।

শ্রন্থ। জ্**নান কি হি**সাবে এক এবং কি হিসাবে অনেক ?

উত্তর। ভগবদগীতা, নিম্নলিখিত জি-নী শোক-পর্যান্তিতে, এই প্রনের সন্তত্তর প্রদান করিয়াছেন, --

वानभाषाश्चिकः तुक्तिस्तरकरः कुक्रमन्तरः दक्षाभाष्ट्रमञ्जानः रक्षस्त्राञ्चलत्वास्तरः । वात्रमायाश्चिका वृक्तिः भयात्त्वी स् निव्यागरण ॥

ইহাতে তিন প্রকান বৃদ্ধির ঠিকানা পাওয়া সাই পেছে; (১) বিক্ষিপ্ত বৃদ্ধি (অথাৎ যাহা প্রায়ান্তির বদীভূত, (২) ব্যবসায়াত্মিকা বৃদ্ধি অর্থাৎ নিষয় বৃদ্ধি, এবং (৩) সমাহিত বৃদ্ধি অর্থাৎ মূল সতে সমাহিত ধর্ম্ম-বৃদ্ধি। এই তিনের সবো ভগবদগীতা কেবল ব্যবসায়ান্ত্রিকা বিবয় বৃদ্ধি দেই "এক" বলিয়া নির্দ্ধেশ করিয়াছেন—ইহার তাৎপর্য্য কি ৷ ইহার তাৎপর্য্য নিম্নে প্রদর্শন করা যাইতেছে;—

লিখিনার সময় সকলেই-আমরা চোত্রিশ মক্ষর ব্যেহার করিয়া থাকি, কিন্তু আ্যা-দের কাহারো হাতের লেখা চোত্রিশ প্রকার নহে—একই প্রকার : আপন আপন হাতের লেখাতে আমরা যেমন একত্ব প্রদান করি— বিষয়-বৃদ্ধি সেইকুপ আপনার অনুষ্ঠিত কার্য্য-সমূহে একত্ব প্রদান করে। ইতিহাস-বেতারা নেপোলিয়নের কার্য্যে নেপোলিয়নের বিষয়-বৃদ্ধির একত্ব, এবং সীজারের কার্য্যে লীজারের বিষয়-বৃদ্ধির একত্ব, স্কুম্পান্ত প্রতি-

দেখিতে পা'ন। হার্য-র্মাভিজ্ঞ বিশিক বাজিরা বলেন খে, রাগায়ণের উত্তর-কাও वालाकिः तहना नट्ट एक इष्टात कात्रन দেখা'ন এই যে, সমস্ত প্রেরিণতে বাল্লীকির সরল বৃষ্ণির একত্রেরপ মুদ্রারিত দেখিতে পাওয়া যায়—উত্তর-নাছে সাংগ্র নিদর্শন পাওয়া যায় না। এইরপ,বিদ্ন-বৃদ্ধি আপনার নানা কার্বো একত্ব গ্রামান কলি। মেই একত্বে আপনার একড় প্রতিবিদ্যিত বেশিতের পায়— मिथिए शाह ता, ता अक्ष वांभनाहरे मान করা একঃ হাতরাং তাহা আপনার একছেরই প্রমাণ-সর্রপ , কেননা ভাহার আপনার খাদ একত্বনা থাকিত তবে অন্য কোন কিছুতে একর দান কলা ভাগার পক্ষে সম্ভব-নাধ্য ২ইত না। এইলপ,—বাৰণায়াত্মিকা বুদ্ধির বার্ষ্যেতেই সপ্রমাণ হয় যে ভাষা এক; ভাই ভনবৎগীতা বাসমাছেন

"ব্যবসাধারিক। বুদ্ধিকেকেক ক্কনকন।"
ব্যবসায়াজিকা বুদ্ধি এক ।
ভগবংশিতা ইহাও বুলিয়াছেন যে
"ব্যবসায়াজিকা বৃদ্ধি সমাদৌ ন বিধীয়তে"
'ব্যবসায়াজিকা বৃদ্ধি সমাধিতে বিবেয় নতে";
ইহার ভাংশিয় কি — নিম্নে প্রদর্শন করা যা্বিত্ত :—

ক দিকে যেনন দেখা যায় যে, বিষয়বুদ্দি আলনার দান-কর। একত্বে আপেনার
একত্ব দোহতে পায়, আর-এক দিকে তেমনি
দেখা যায় যে, বিষয়-বুদ্দি যুদ্ধি মুলে (অর্থাও
পোড়াতে) এক না হয়, তবে শতাহার দানকরা ঐ যে, একত্ব, তিহার কোন মুলাই
থাকে না; বলচ্চে যদি আদ্বেই নগদ্ টাকা
না পাকে, তবে বাদ্দি নোটের কোন মুলাই
থাকে না। সীয় কার্যা-কলাপে বিষয়-বৃদ্ধির
দান করা যে, একত্ব, তাহা এক জিনিস্;
আর, বিষয়-বৃদ্ধির মুলেরণ যে, একত্ব, (এক
কথায়ী—আলার একত্ব) ইহা আরু এক

বিনিশ্; আত্রার একত্ব আয়ারা আত্রাতে দান করি নাই কিন্তু আত্মাতে পাইয়াছি; विगय-कार्या (ययन व्यामता এक प्रमान कति, এশরিক কার্য্য-হইতে সেইরূপ আমরা একত্ব গ্রহণ করি; উপমাচ্চলে বলা ঘাইতে পারে य, धेचतिक कार्या मूर्या, विषय-वृक्ति हन्त, বিষয়-কাষ্য্য পৃথিবী, এবং একত্ব আলোক: চক্র পৃথিবীতে আলোক প্রদান করে, কিস্ত সূর্য্য হইতে আলোক গ্রহণ করে; -- বিষয়-वृक्षि विषय कार्या अव इ लामा करन, किंद्ध পেশবিক কার্য্য ২ইতে একত্ব গ্রহণ **করে**। বিষয়-কার্য্যে একত্ব দান করিবার যে ব্যা-পার—তাহাতে ব্যবসায়াজ্যিকা ব্যার নি-জের একড় প্রতিবিহিত হয়; আর, ঐখ-तिक कार्ना-इंस्ट्रेंट अक इ खरन क्तिमात (ध ব্যাপার, তাহাতে সমাহিত-বুদ্ধির নিচ্ছের একিছ **নহে** কিন্তু মূ**ল সত**্যের একত্ব জ্ঞাতিত বিষ্ঠিত হ্য় ! ব্যবসায়াত্মিকা বৃদ্ধি বলৈ যে. ''গমার একস আছে—তা**ই আমি এ**কণ্<mark>ণ</mark> দান কবিতেছি," কিন্তু সমাছিত বৃদ্ধি আর এক কথা বলে—এই রলে <sup>ক</sup>যে, "একত্ব আমার নহে—একও মূল সতেরে উ!হা হই-তেই আমি একৰ পাইয়াছি।" এই জনাই উত্ত ইইয়াছে যে, 'ব্যবসায়াল্লিকা বুদ্ধিঃ সম:(ध) न विधीयुष्ठ।" व्यर्थाद ব্যাপারে বিষয়-বৃদ্ধি-স্থলভ নিজের কর্ত্তত্ত थारि मा।

ধর্মাবৃদ্ধির একত্ব পাঁমানের নিজ বৃদ্ধির
একত্ব নহে কিন্তু পারমাত্মার একত্ব; কিন্তুরবৃদ্ধির একত্বই আমানের নিজ-বৃদ্ধির এক
কত্ব। এখন, জ্ঞান কি হিসাবে এক এবং
কি হিসাবে অনেক, তাহা স্প্রেই বৃদ্ধিতে
পাঝা যাইবে; (১) প্রত্থারক জ্ঞান কর্মতোভারে এক; তাহা হইতে একত্ব প্রাপ্ত
হইয়াহে আমানের প্রভিত্তনের আত্যা

বৃদ্ধি অনেক, (१) এক বাক্তির বিধয় বৃদ্ধি এক, কিন্তু দেই বিষয় বৃদ্ধির ব্যাপার বা কিরা অনেক, অর্থাং তাহা নানা ব্যাপারে ব্যাপুত হয়;—এবং দেই সমস্ত বিভিন্ন ব্যাপুতে হয়। ইহাতে দাঁড়ায় এই থে, আমার অংশ-জ্ঞান এবং হস্তি-জ্ঞান একই ক্রানের বা একই বৃদ্ধির তুই বিভিন্ন ব্যাপার বা একই বৃদ্ধির তুই বিভিন্ন বিদ্যান নহে।

আমরা বলি জ্ঞান প্রান্তি হটতে শ্রেষ্ঠ ; কুষ্ণকখল বাহ্ন বনেন "কোন সম্পে প্র-র**তি** ছাবা ছনিঔ হয় বলিয়া ভোনকে প্রবৃত্তি হইতে সর্বাংশে শ্রেষ্ঠ পরা তেনান ল্ৰৰ, যেমন কোন সন্ধ্যে জান হুইটে অনিষ্ট হয় বলিখা প্রবৃত্তিকে জ্লান হাইতে শ্রেষ্ঠ বলা লম। ইহার উত্তর আনতা এই দিই জে প্রায় ভাল হইলেও তাহ। আন্ধা এবং মন্দ হইলেও তাহা অকু; আর জ্ঞান ভাল হইলেও **जारा मदान-यन ररेटा ३ जारा म**नाज । ভান এপত 'আছে-মুন অধও আছে; আবার, ভাল সার্থীও আছে স্মন্দ্র-থীও আছে; কিন্তু অধ কথনও সার-খাকে নিয়মিত করে না—সার্থীই অধকে নিয়মিত করে; এই স্বাস্থানে সার্থাকে অধ অলেক। শ্রেষ্ঠ বলিয়া থাতি। এখন, ইহা বলা বাহুলা যে, এর্ভি অধের সাহত উপনের,—স্থ্রাতি স্থ-অন্থের সহিত এবং কুপ্রবৃত্তি কু-অবের সহিত; তেগনি, জ্ঞান বা বুদ্ধি সার্থীর সহিত উপমেন,—সুবুদ্ধি **স্থ-**সারখীর সহিত এবং কুরুদ্ধ কু সারখার **ৰ্বাহিত**া। ধৰ্মা-ৰুদ্ধি স্থ ভিন্ন কু হইতে পাৱে ना; दक्वन, विषय-वृक्तित गर्गा स्वृक्ति ७ কুবুদ্ধি উভয়েরই অভিডত্ত দেখিতে পাওয়া याश । य विवश-तुकि धर्म-तुकित विद्राधी, . তাছাই কুবুদ্ধি; আর, যে বিষয়-বৃদ্ধি ধর্মি-

ব্দির অমুগত, তাহাই স্বুলি। এখনু জিজ্ঞাসা এই যে, প্রবৃত্তির নিয়াসক যে জ্ঞান বা বৃদ্ধি, তাহার লক্ষণ কিরুগ ?

উত্তর। আমর। পুর্বর প্রবন্ধে চাইই विनयां हि (स, "अम्माना ७३ सिव नहाय सहासू ভৃতিকেও জ্ঞান-দারা নিয়মিত কর। কর্লে।'' িল্ল ঘট্-জ্ঞান, পট-জ্ঞান, অধ জ্ঞান, হস্তি-জ্ঞান, প্রভৃতি এখন খনেক জ্ঞান স্থানাদের <sup>আ</sup>ছে—প্রবৃদ্ধি-সংয**মের সঠিত যা**হার কোন সম্পর্ক ই নাই, এই জন্য উহার অব্যাহিত পরেই আমরা বলিয়াছি যে, জ্ঞান-দাবা এইরূপ যে, নির্মিত করা ইয়ার দুইটি গ-ছতি লাছে ;—(১) বিষয় বুদ্ধি দার। নিরমিত করা, (১) ধর্মানুদ্ধিনাধারা । নর্মাত করা। विषय-वृक्तित लका सार्थ-। भी-वृक्ति लका পরমার্থ।" কুন্দ্রিও প্রান্তকে ক্রিতে পারে—চুমারখীও অধকে নি মিচ্চ ক্রিতে পারে—ইহা আনর; বিনক্ষণ ভাক গত অভি., এবং পাহাকে দেরপে করিতে **ट्रिक्श** विद्ययं स्ट्रं, हेशां आसादनत क्व বিশ্বাদ ; এই জনা জামরা বলিয়াছি যে, व्यक्तीकाक नियस-वृक्षित व्यक्तीरन धवः विमन्न-वृक्तितः वर्षान्त्वित्र अनीतन निरम्नाभः कता । কর্ত্বলে ধ**র্মা**-বুদ্ধিও হাছাড়া **কু** পারে না, এবং ধর্মানৃদ্ধির অনুগত বিষয়-ব্দিও হছাড়া কু হইতে পারে না; এই জন্য অনুযাদের কথা অনুসারে স্পষ্টই দাড়া-ইতেছে যে, স্থবুদ্ধিকেই গ্রন্থনির নিয়ামক পদে নিযুক্ত করা কর্ত্বা। উপমাত্রনে বল। যাইতে পারে যে, দর্ম-বৃদ্ধি সেনাগতি, বিষয়-বৃদ্ধি শতপতি (বা কাপ্তেন), প্রার্ত্তি मार्गाना रेमनिक। यनि जिल्लामा कदा यात्र যে, দৈন্য-দলের নিয়ন্তা হইবার কে উপ-যুক্ত ? তবে তাহার এক উত্র এই বে, দেনাপতি; আর-এক উভর এই যে, সেনা-পতির আজ্ঞাধীন শতপতি ; এ ভিন্ন, দেনা-

পতির অবাধ্য শতপতি দৈন্যদলের নিয়ন্ত্-পদের যোগ্য হইতে পারে না । কাক্ষন বার বলিতেছেন ''জ্মং প্রভিন ভা**র্থতা**-বিষয়ে স**হ**কালিতা করে ধে জ্ঞান দিজেন্দ্র বারু ভাষাকে কলে কণি দেন কি না, জ্ঞানি না। ইয়ার উত্ত এই ভাহাকে আমি ভৱান কচিব-বৃদ্ধি বহিব—কিন্তু · ছোহার <mark>উপর</mark> পাল <sub>গ</sub>কটি কথা এই বলিব যে, সে বন্ধি পর্ফা-বন্ধির জবাপ বিষয়-বিদ্যাপতির জবা প্রথাকি-তাহা स्वतिभिन्छन्। देशमा स्टब्ब निक्षान-भएपत ম্ফোগা। অনেক স্থ্য পর্ম-ব্ছিন ভ্রাধ্য বিশয় বৃদ্ধি: —অথবা গাহা একই পরমার্থের অবার্ধ স্বার্থকে—এ মুত্তির নিয়া-মক বদবীতে বলপূৰ্মক আরুড় হইতে দেখা ষায়; কিন্তু তাহা হইনে ন্যায়-রাজা তা-হার প্রতি যেরূপ দণ্ডের বাবকা করেন ভাহা অতি পরিকার এবং পরিপাটী ; নার ব্যান "তুমি বিষয়-বৃদ্ধি—তোমার প্রাভূ ধর্ম্ম-বৃদ্ধিক—অমান্য করিয়াছ, ইহার উচিত দণ্ড এই যে, তুমি হাহার প্রভু সে তোমাকে অ-মান্য করিলে, তোমার প্রবৃত্তি-সকল ভোমার तर्न थानिद्य मा।" नाराय अहे विवान অলঙ্ঘনীয় – তাই ধর্মাবৃদ্ধির বিরোধী বিষয়-া বুজি (এক কথ∴ কুব্জি) সহস্ৰ চেষ্টা করিলেও श्राप्त निमक्ति वर्ष हाथिए शास ना। ধর্মান্ত জিব জনাদ। বিষয় বৃদ্ধির-চুঠ সর-পত্রীর—মন্তর্গা-অনুসারে রীবণ আপনার প্র-त्र**ण्डि-**भक्तरक म्यम कात्रश **षर**मक**ँ कांल** তপ্রমা করিয়াছিলেন, ভিন্তু যে খাতা লক্ষার বির পাইয়া আগন্যকে কুলফুতার্থ মনে করি-লেন, অমনি ভাষা প্রবিদ্দমূহ একে-বাৰেই উচ্ছু খল ইইয়া উঠিয়া তাঁগাকে বি-भूमागदत निगंध कतिल। অতএব হয় ধর্দ্দর্দ্ধি স্বয়ং, নয় ধর্মাবৃদ্ধির অনুগাত বিষয়-বুদ্ধি, এই-ছুই বুদ্ধি ভিন্ন আর কোন বৃদ্ধিই

শের ভির নিয়ামক পদের যোগ্য নহে। ইহা
আমরা অস্বীকার করি না যে, রথ চালাইতে
হইলে সার্থীরও যেমন প্রয়োজন—অথেরও
তেমনি প্রয়োজন; সাংসারিক কার্য্য-নির্ব্বাহ
করিতে হইলে জ্ঞানেরও যেমন প্রয়োজন,
প্রস্থান্তরও তেমনি প্রয়োজন; কিন্তু তাহা
বিলয়া এ কথায় সায় দিতে পারি না যে,
অশ্ (অর্থাৎ প্রস্থান্ত) সার্থীর (কিনা জ্ঞানের) সমকক্ষ অথবা সার্থী অপেক্ষা প্রের্থ ।
বোধ করি ক্রক্রমল বাবু প্রেমকে প্রান্তর
মধ্যে ধরিয়াছেন—নহিলে তিনি ওরাপ কথা
কথনই বলিতেন না; কিন্তু প্রেম কত্ত্রা
এবং প্রস্থান্ত সভল্র—ইয়া জামরা নিক্ষে
দেখাইতেছি।

আমাদের কাস তুইরূপ—নিবাস এবং প্রাদ; আমাদের মনোইতিও চুইরূপা নিরত্তি এবং প্রসৃতি ; নিখাস যেমন অন্ত-মুখী খাদ, নিহুতি দেইরূপ অন্তর্থী রাভ; আন, এথান খেমন বহিমুখী খাৰ্ম, প্ৰকৃতি থেইরূপ বহিমুশী হৃতি। "নি" উপদর্গ দেখিলেই অনেকে তাহাকে অভাব-বাচক মনে করেন—নিহত্তি শুনিবামাল হতি-শূন্যতা মনে করেন—কিন্তু দেটি ভাঁহাদের বড়ই ভুল ; নিবাস-শব্দেও বাস-শূনাতা ব্ঝায় না-প্রবাস শব্দেও গ্রন্থ কিইরূপ বাস বুঝায় না; श्रावाम-भरक वाष्ट्रित वाश्रित व्याहानिकाम শকে বাড়ির অভান্তর বুঝার; অতএব নি-রতি অভমুখী রতি এবং প্রার্থ বহিমুখী বৃত্তি ইছাতে আর ভুল নাই। "नि" উপ-সর্গ এথানে in-উপসর্গের সহোদর ্থবং ''প্র' উপসর্গ Pro-উপসর্গের সহোদর ইছা प्तिथवा-माजरे भन्ना **প**र् । काम-राज्ञवापि রতি-সকল সাক্ষাৎ সম্বন্ধে বহিবিষয়ে ব্যাপুত হয় এই জন্য তাহারা প্রবৃত্তি (শর্থীৎ বহি-मू शी इंडि)भटकत वाहा 🖟 विवश-वृक्तिभा-কাৰ স্বত্যে বিষয়-ভোৱে ব্যাপুত হয় না,

পরস্তু "যাবজ্জীবন স্থথে অতিবাহন করিব"
এই উদ্দেশ্যটির সাধনে ব্যাপৃত হয়। ধর্মান
বুদ্ধি বিষয়-বৃদ্ধি-অপেক্ষা আরো উচ্চ অপের
বৃদ্ধি বিষয়-বৃদ্ধি-অপেক্ষা আরো উচ্চ অপের
বৃদ্ধি বিষয়-বৃদ্ধি-অপেক্ষা আরো উচ্চ অপের
বৃদ্ধি ইহা নিতান্তই অন্তর্মুখী বৃদ্ধি-বৃদ্ধি;
ইহার লক্ষ্য বহির্বিষয়ের দিকেও নহে; ইহার
লক্ষ্য নায়ের নিকে—সর্ব্র-ম্লাবার মূল
সত্যের দিকে— পরম পরিশুদ্ধ জ্লান-প্রেমের
দিকে—শত্রতম পরমাত্মার দিকে; এইরপ
অন্তর্মণী বৃদ্ধিরতি প্রস্থিত-শক্ষের বাচা
নহে—নিব্রতি-শক্ষেরই বাচা; এখন জি
ভ্রামা এই শে, বিশুদ্ধ প্রেমা প্রার্ত্ত কি
নির্গতি ?

বিশুদ্ধ প্রীতি বিশ্বহাবুদ্ধির বামে এক সিংহাসনে ধসিয়া আছে স্মতবাং ভাষাত নিয়ভি-শব্দের বাচা। বিশুদা বুদ্ধি বিশুদ্ধ বুদ্দিকে ভাল বাদে-আপনি অপেনাকে ভালবাদো আপনাকে অপিনার সন্মুখে আবিভূত দৈখিলে (অগাৎ নৰুয়া পশু পক্ষী তরু লতা গিরি নদী দাগরে প্রতিফলিত দেখিলে) আনন্দিত হয়; এই যে বিশুদ্ধ ভা-লবাদা ই**হাতে** িষয়ের আকর্ষণ নাই— প্রবৃত্তির অধীরতা নাই। বিশুদ্ধ বৃদ্ধির এক-क्रश व्याहिक टंमोन्सर्ग व्याह्य: जाहा কধনও শিশুর হুকোমল মুখের সরল হাদ্য-ছটায় নবোমেষিত বেৰিতে পাওয়া যায়, কথনও যুবার প্রাফুল মুখ-মণ্ডলে বিক্সিত দেখিতে পাওয়া যায়, কখনও হুদের প্রাসন ললাটে সমাহিত দেখিতে পাওয়া যায়;---विश्वक वृक्षि-श्राश्वनात्रहे এই मिन्दर्शत গুতি—আপনারই প্রতি—আপনি আক-র্ঘণ অমুভব কুরেশ বিশুদ্ধ বৃদ্ধির এই যে जाकर्षन हेराहे निशुक्त क्षाम-श्रुव्यक्तित स আকর্ষ্য তাহা কাম; এই জন্য বিশুদ্ধ প্রেম শাস্ত্রে নিকাম শব্দে উক্ত হইয়াছে। বিশুদ্ধ বৃদ্ধি আপনাকে আপনি প্রীতি করিয়া

আত্মপ্রসাদ উপভোগ করে এবং অনোতেও মখন আপুনার অন্তবতম বিশুদ্ধ ভাগ প্রতি-বিশিত দেখে তখন অন্যকেও জীতি করে; মনুষ্য মনুষ্যকে প্রতি করে; জাবার সংখন আমরা আমাদের আত্মাকে সার্থের পক্ষ-এবং বিষয়-কামনার হুটাতে পরিশুনা করি, তথন তাহা ভাদ বদ মুক্ত নিরালয় মূল সতে গোয়া টেকে ভবান ভাষা অন্তর্গামী প্রমাজার প্রেমে 'থাসন মহীয়। পড়ে ; তেবং ছিমালধ্যের উক্তশিখর ছইতে সেমন ভ গাৰণী অবতীৰ্ণ হ'ন, সেই-রূপ সেই প্রেম অংগ্রার উন্নতম শিশ্বর হইতে জন-সমাজে ভাবজান হট্যা চতু দিক মগলে পাবিত করে। এইরপ ভত্মুখী শিশুদ্ধ প্রেম্বে বিশুদ্ধ বৃদ্ধির সম্প্রমার্থনৈলে তা-হাতে ৰাহাৱো কেনি ভাগতি থাকিতে भारत मां किन्तु लाशास १०१ वित भगलका বলিলে বিশেষ ত্রেমকে শিহাস্ট্ গীন ক রিয়া ফেল। হয়। সংক্রেপে বনা গৃটিতে পারে মে, বিষয়াস্তির প্রতির সংধর্মিনী: আপনার প্রতি ভাগবলে (সূতরাং আপ-নাৰ স্ত্ৰী পুতাদির প্ৰতি ভালবাম,) বিংগ্ৰ-বৃদ্ধির মুখ্যবিশ্বী: খাল, ন্ল-সংক্রে প্রতি ভালবাদা (মৃত্যাৎ সমস্ত জগতের প্রতি **'** जानवामा) । की द्क्ति मस्यक्षिणी।

ক্ষণবেশ বাবু জ্ঞানের সহিত প্রেরির সমকক্ষতা কক। করিবার মানসে বলিয়াছেন যে, 'প্রারন্তি-গুলির কার্যা উদ্দেশ্য স্থিত করিয়া দেওয়া, জ্ঞানের কার্য্য উদ্দেশ্য বিদ্ধির উপায় অবধারণ করা।" এ কথার অর্থ আন্মরা ব্যক্তি পারিলাম না। স্থামরা দেখিত গোরিলাম না। স্থামরা দেখিত করি করা তাহার কেবল আপনার চরিতার্থতা লইয়াই ব্যস্ত, আমাদের জীবনের উদ্দেশ্য স্থির করা তাহার নিতান্তই অধিকার-বহি ভূতি। কুগাতুর পথ-হারা পথিক ধর্থন কোন ব্যক্তির দারন্থ হয়, তথন সে ভাবে

ना "कला आनि कि साहेत;" 'अयन-अहे मृद्रार्छ कि हू शाही जिल्ला वाहि" এই ভাগার একদান ভাবনা, এ লাগান কোগায় यहिता इहेर्न - कि क्रिक भगेरत भगेष्ठ खिटमनारे ७। होत्र ०० व्यो ५ असमिन करता अथन आमाहित्य - क शास-टक्स खान रहेपा चेळी १४ ल्याच व्यक्त १६दा छट्ठे क्रमम जामता जामादमर बाउदमद छिएम्सा तिवाड गरेशा घारे ; ब्लान वामान पिशक त्मरे <sup>१८५</sup>ना स्वतः कत्रार्थेश पिहा **(मरे मन** टार्डिट मगन कतिवाव विश्वप्रक्र) প্রদর্শন করে । বিষয় বৃদ্ধি বলে 'প্রস্থান্তিকে াশ্র দিলে ভোষার স্বার্থ-হানি ইইবে, ধর্মাবুনি বংগ "ওরূপ করিলে তোমার আত্মার ান্দ্রিল ভী করুষিত হইয়া যাইবে- ভোমার মপুনতের দোপ পৌছিবে।" মপুষাত্ব ধে কি তাহা **আমর। পূর্কেও** বলিয়াছি এখনো বলিতেতি **–মূল সতে**রে প্রতি আত্মার জ্ঞাক-র্গাই মনুষ্যের মনুষ্যত্ব-তাহা কুমুরেরও নাই তথ্যেরও নাইত্রহণ্ডীরও নাহ। কোন কুকুর যদি মূল সভ্যের প্রতি আকর্ষণ অন্মুভব করে, ভবে তাহাকে আমর। পলিব "বাহিৱে কুনুর্ভভিত্যে মনুষা।"

আমান বান শে, ধর্ম-বৃদ্ধির সিদ্ধান্ত ছিব দিদ্ধান্ত। কুমবেশল বাব্ বলেন যে, "সংগ্র-যাদ্ধ যান প্রান্ধানতে এই শক্ষের অনুবাদ হয়, তাহা হইলে তাহা সভাবসিদ্ধ হউক্ আর না হউক, ইহাও অন্ধ্র মুর্গাং অনেক সময়ে অবস্থাকে ধর্ম বাল্যী ধরুবা ক্রে।" ইহার মামাংসা নিমে প্রদর্শন করা ইটে-তেছে;—

ধর্মোর বৃদ্ধি এক পদার্থ এবং ধর্মোর জানুরাগ এক পদার্থ, জ্ঞান এক পদার্থ— তোম এক পদার্থ। বিষয়-বৃদ্ধি গথন পরস্ব-অপহরণকে স্বার্থ-সাধন মনে করিয়া সেই-রূপ কার্যো প্রবৃত্তি সাচলকে, নিয়ামত করে,

ধর্মার্দ্ধি তথন তাহাকে স্থ্যীর স্বরে<sup>স</sup>বারণ করে, ধর্মানুদ্ধি বলে "তুমি করিতে খাইতেছ এক-–করিতেছ আর; করিতে যাইতেছ সার্থ-সাধন-করিতেছ অনর্থ-সাধন! সমস্ত জগৎ নাায়ের উপরে প্রতিষ্ঠিত—দেই নাা-য়ের বিরুদ্ধে তুমি হস্ত উলোলন করি-তেছ!--নাবধান! জগৎ-মন্দিরে দেবতা জাগিতেছেন—হুদ্য যদিরে দেবতা জাগিতে-ছেন—তিনি নিনিজ।" ক্লেক্ষল হয় তে৷ বলিবেন যে, ধর্মানুদ্ধির এই যে কণা—এ এক প্রকার ভয়-দেখানে কথা,— গাত্রী পেনন শিশুকৈ জুজুব ভয় দেখাইয়া धाशना २६८७ निदेख दऽत – हेर्डि (प्रहें-ন্দা ; কিন্তু শশুবিক তাহা নহে ;—ন্যায়কে কেবল-তে আমরা ভয় করি তাহা নহে, কিন্তু ন্যায়কে আমন্না আন্তানক ভাল বাদি ; জামাদের কোন প্রিয় পাত্রের প্রতি কেছ হস্ত উত্তোলন করিলে যেমন আমাদের স-ক্লাঙ্গ জ্বালার। উঠে, নাজের বিরুদ্ধে কেহ হস্ত উত্তোলন করিলেও আমাদের মনের ভাব ঠিক্ সেইরূপ হয়। কোন পতি যদি বৈবাৎ ব্যভিচার-দোষে লি**গু** হইয়া আপ-নার প্রিয়ত্যা পত্নীর সমক্ষে মুখ দেখাইতে ভয় ও সক্ষোচ করে, তবে ভালবাদা সে ভাষের ভিত্তিমূল - ইহা সুস্পান্ত ; দেইরূপ,— আমরা ধ্রন স্বার্থের প্রামর্শ গুনিয়া ন্যায়ের বিরুদ্ধাচরণ করি, তখন আমরা আপনারা আপনাদের অন্তরাস্মার নিকটে **মুখ দে**খা-ইতে ভীত লচ্ছিত ও কুণ্ঠিত হই, ইহাতেই প্রমাণ হইতেছে যে, ন্যায়ের প্রতি আমা-দের আন্তরিক টান আছে। সেই বে ন্যায়, তাহা ধন্মবৃদ্ধির প্রদর্শিত; এবং ন্যা-য়ের প্রতি সেই যে আম্বরিক টান তা**হা** conscience নামক ধর্মানুরাগী চিত্ত রাভর সভাব-দিদ্ধ ধর্মী। ধর্মা বুদ্ধি ধর্মের মূল-তত্ত্ব স্কলের (অবাৎ Moral principles এই হা-

দের) আলয়, conscience ধর্মাবর্দ্ম-জনিত 
হথ তুঃথের আলয়; এ জন্য ধর্মা-বৃদ্ধিকে 
conscience বলা যুক্তিনঙ্গত নছে। আমাদের সৌন্দেয়াবুরাগ যেমন পুস্পের প্রতি 
স্ভাবতই অনুরক্ত এবং কুলার প্রতি 
হভাবতই বিরক্ত; Conscience, সেইলপ 
ধর্ম-বৃদ্ধি ও ভাহার কার্যাের প্রতি সভাবতই 
অনুরক্ত, এবং অবর্দ্ম-বৃদ্ধি ও ভাহার কার্যা
ব্যার প্রতি সভাবতই বিরক্ত। ভবে লাভ 
ব্যার প্রতি সভাবতই বিরক্ত। ভবে লাভ 
কর্মা বিরক্ত সংস্কারের প্রভাবে Conscience বর 
হভাব হিয়ৎ কালের জনা বিশ্বভাইর। মাভ 
ইলেও যাইতে পারে।

ইউরোপীও দর্শেনিকদিগের শিরোর্ষণ काष्ट्रे प्राप्त-वृद्धि (Intellect) वाष्ट्रोड दात এনটি আভা**ন্ত**রিক রন্তির অভিন্ন স্থানার করিয়াজেন এবং তিনি তাছার নাম দিয়া-তেন "Internal sense" অথাৎ অন্তরিনিয়; এই অন্তরিক্রিয়কে কবিরা বলেন হ্রন্য, দার্শনিকেরা বলেন চিত্ত। চিত্ত হংগ জঃ-থের অলের। বহির্বস্থর । ক্রা ছারা যে **মন আমাদের ব**ধিরিক্রি—এবং ভাছার **मदत्र जामारम**त हिन्न छेनात्रक (कोरानक) হয়, সেইরপ আবার আমাদের ব্ছি ক্রি-দারাও আমাদের চিত্তে উপরক্ত হত্ত -বিষয়-বৃদ্ধি-ছারাও উপরক্ত হয়-- গশ্ম-বৃদ্ধি-**ছারাও উপরক্ত হয়। ধর্ণ্ম-**বৃদ্ধির বিবোধে চলিয়াও यथन विषय-वृद्धि कान अलाहे বস্ত লাভ করে, তখন "অমুক্কে কেমন জব্দ করিয়াছি-কেমন ঠকাইয়াছি আনি কেমন বৃদ্ধিগান্' এই বলিয়া চিত্তে একরূপ বিষাক্ত আহরিক আনন্দ উপস্থিত হয়; আবার, যথন ধর্মা-বৃদ্ধি বিধয়-বৃদ্ধিকে আপ-नात अधीरन हालाहेशा , कान हे है लाड করে, তথন "বানি একটা কাজের মত কাজ করিয়াছি" এই বলিয়া চিত্তে একরাপ প্রমূজার দিব। আনন্দ উপুথিত হয়। পু-

র্ব্বোক্ত আহুরিক আনন্দ-দারা আমানেঃ চিত্ত কলুখিত হয়, এবং শেনোক্ত দিব্য জা ন-দ-ৰার৷ আমাদের চিত্ত সুঠানট হয় আমাদের ভিত্ত যাদ কখনও কোন গভিবে বিধকে **অয়ত—অধ্য**কে ধর্মান ননে করে छत रूका आयारमन भन्ने नुक्ति एए।तादी **নহে।** প্রতিও আমাদের চিট্রের ইপর কাৰ্য্য কৰে- –বিশয়-নুদ্ধিও আখানে চিত্ৰেট क्षित्र वर्षा करत - धर्मा दुष्ति । आगारण ित्वर छिपत कार्या करतः अवात गत्या শান্যদের চিভ **যদি কু**সংক্ষাতের বা ক্র**ঞ**ে বৰৰ এই সুইয়া প্ৰয়ন্তিক দিকেই অথবা । বস্তুয ব্ৰিল দিকেই বেশ্ব। বেনিক দেয়, ভাবে ভা-হাতে সক্ৰেটি অপ্তিটে প্ৰকাশ পায়— ৰক্ষ বুজিৰ গড়াৰ লাভাকাৰ পালনা। জাছা-জৌ নাতের যাদ নির্দেশ-পত্ত (chart) স্থারজ্ঞা শুক্তিরা, আল্লার অভিকৃতি মতে জাহাজ कामाह उर रास स्माय कि हू बाद निर्देश-भट्डा न'६—(१) (लाग भावित्यत । कन क्या वर (१ जागारमत नयुर्य – तरा यात्न मारेगात लायके बाद मयल भग जारह अवर अभूरका करू भाष सार्व्यः—तमारमाना वा ম্বিক ব্য়া—কোনেটিং বা মন্ত্র কক্ত ; সেই যে এটি-নাত্র সবল গণ তাহাই ধর্ম-বৃদ্ধির আনান্ত্রিপথ। কথনত কাহারে। প্রতি শাঠন क वार का अध्यय मतल शय; नार्क नार्का ক্রিনে - গ্রাভাষা অ**পেক্ষা** রক্ত পথ ; দে-भित छिभ गरतत **खना** भाष्ट्रा कतिरन-हेश অ জে৷ পঞ্চ পথ; আপনার লাভের জনা শাঠ্য করিবে ইহা ভতোনিক বক্ত পথ; कोञ्ज प्रियोत खना माठा कतिरव—इ'श ততোধিক ;—ধৰ্মা-ৰুদ্ধি কেবল ঐ প্ৰথম প-পটি অবলম্বন করিতে বলে, অবশিষ্ট সকল-পথই অগ্রাভ্য করে। আবার, ধর্ম-ব্দির কথা না শুনিয়া কেই যদি বক্ল পথ অবল্দন করে, তথ্নপুর্দা-বুদ্ধি তাহাকে সরল গথে

किताहेशः वानिनात बना सर्भकातारः अशा বজ পথ অবলম্বন করিতে বংগ। শেরপ সমাভ ভাহাতে ন্যান্ত্রিভ দর্শিত किंकु भतान अथानि जयकणम् कः। १००१रकन भरक कार्य ; a लग त्याल गाउ प्रार् तक পথ অবস্থান স্বিলে তেওঁকে তাম ভাগ্ निमानीभ कर मा इन्यास ने देन योग अंदेरे भाकि करिश अक्षताल र त-१ शास रहन (१८३१ होते असे) (१६ - १४१४) (१६म) **न २**ई-इतिष्ठ—'नामा कि मोरूष े किस कारक भाशिक तजुर सा ८ म -- तक्क तिलात प्राथ अक विवाहित स्थान महि । प्रक्रिया व हिंक भारत ला कि अवस्थान करिएक व**र**ल कला**कल** केंग्ट्रेंड ३८५५ । एमरे महन अगारि जारल-ত্র সারতে হইলে এফ-সিকে নগ্যসান ইখ-বের প্রতি সম্পূর্ণ নিভর করিয়া ধর্মা-যান্তকে স্থির রাখা স্থাবনকে, আন-এক দিকে বিষয়-ব্ৰদ্ধি**কে সেই ধৰ্ম-**বৃদ্ধিত অধীনে চালনা হয়। অবিশাক। অত্যাচারী রাজা ধর্মন এজা পীড়ন করিতেছে, তথন আসাদের ধর্ম-বুদ্ধি এক দিকে এই বলিয়া আমাদিশকে সান্ত্রা করে যে, 'উপরে ঈশ্বর আছেন,' আর এক ভিকে দেই রাজাব অত্যাচার মিবারণাথে বেৰ বিশায় **অবলম্ম করিতে বলে; কিন্তু** আনৱা যদি সেই রা**জাকে অন**াধ**রূপে** হত্তা ক্ষিত্র অংখাল অংশ্বরণ ক্রি, ভবে भर्म्य-वृष्कि को । किशरक ब्रह्म

শন পাগে ওাচিবাপিঃ সাবে সাধুয়ের সদা ভ-বেংগ

"পাপাচারীর এতি পাপাচরণ করিবে না—
সর্কারাই মাথ অনিবিশে বিনি সর্কারাই
ধন্মের উপদিন বিলাগ পথ অবলম্বন করিয়া
চলেন করিবা কেবে বেমন নেপোলিয়ন তুর্লভ,
ধর্ম্ম-বুদ্ধির কেবেও সেইরপ অজেয় ধর্ম্ম-ব্রাদ্ধির তুর্লভ;—কিন্তু তাহা বলিয়া ধর্ম্ম-বুদ্ধি-বুদ্ধি-

প্রদাপত মূল-তত্ত্ব-সকলের এক চুলও এদিক্-ওদিক্ হইতে পারে না।

ধর্মা-ব্রির নিতান্ত অবাধ্য হইলে কেছ বে, অগনি অমনি পার পাইয়া যাইবেন, তা-হারও সম্ভাবনা নাই। আমাদের কোন-একটি প্রকৃতি উচ্ছাল হইলে যেমন আমা-দের সাথে আঘাও লাগে, মেইরূপ আমাদের কাহারো স্বার্থ উচ্চ্জুল হইলে ন্যায়ে আ-ঘাত লাগে ; এবং মেই **আঘাতে**র ভা**তিখাত** সভ্ৰূপে প্ৰবিশ্বনে দাঁড়ায় এই যে, স্বাৰ্থ যেম**ন** আপনার গ্রেছ ন্যায়ের বিরুদ্ধাচরণ করি-মাজে, সেই দুরান্ত-**অনুমারে আর্থর অধী**-নস্ত প্রতি-সকল ক্রে উদ্ভাল চইগা উঠিয়া স্বাৰ্থকে পোর বিপদে **ফেলে। ন্যায়ের** এতিঘাতেই গোম-নগর **অপহৃত ধন-ভারে**-ধরাশালী ক্ইয়াছিল – স্পেন্ এবং পোটু গাল্ ভামেরিকার ক্রান্তি **স্থর্ব ভাবে অখঃ**-পতিত ১ইমাছে--আর কাহার ভাগে কি ছাড়ে ভবিষ্ণতের ইতিহা**সই তাহ। বলিতে** পারে। সাথের দেবতা—আমার তোমার ভূমি, প্রতিজনেরই বিভিন্ন; কিন্তু নালের দেবতা আমারও ফিনি-ভোমারও তিনি--সকলেরই এক।

''একো দেবঃ সাল ভূতের গুড়ঃ সর্ক-ব্যাপী সর্ক-ভূতান্তরাক্ত

"এক দেবতা সর্বাভূতে নিগুড়, সর্বব্যাণী, সর্বা-ভূতের অন্তরায়া।" আমি না থাকিলে যেনন আনার প্রারভি-সমূহুকে আট্কাইয়া রাখিবার বাঁধ থাকে না, এক কথার—সার্থ থাকে না, সেইরূপ—নায়ের জাগ্রভ দেবতা মূল-সতা না থাকিলে নানা ব্যক্তির নানা সার্থকে আট্কাইয়া রাখিবার বাঁধ থাকে না, এক কথার—পরমার্থ থাকে না—ধর্ম থাকে না; উপনিষদে তাই আছে

শ্ব নেত্রিবরণ এবাং লোকানাং অসভেদার"
কোক ভক্ক নিবারণার্থে তিনি বিধরণ

সেতৃ অর্থাৎ আট্কাইয়া রাখিবার বাঁধ। फरवरे **रहेल रय, भू**ल-मुखारक, हाफ़िशा धनी হইতেই পারে না। অতএব, আমি নাই অথচ স্বার্থ সাধন করিতে হইবে-নার্ক।ন্ত-্ধানী প্রনাতা নাই অগচ প্রমার্থ নাধন করিতে হইবে—এ কথা শুনিয়া যদি কা हात्व गत्न ह्य "गाथा-नाष्ट्र-ठात-गाथी-वर्णः" তবে ভাগকে লোম দেওয়া যাইতে পাবে না। নৰ্মের মূল কথা ভিন্ট ;- (১) সং মান্য লে।হকে যেমন প্রাকরণ বিশেষ হাত। শোৰিত করিয়া চিক্কণ লৌহ (ইম্পাৎ) করিয়া **Comment अस्तिति विश्व किएक क्ष्यान्यां ज** দারা শোধিত করিয়া শুভ বৃদ্ধি করিল৷ ভোলা कर्त्वाः देशरे পात्रभाणिक धर्मा मापनः (२) সেই শুল বৃদ্ধি অনুসারে বিশ্য কাস্য শিক্ষাহ কলা কৰ্মা; ইহাই সাংসারিক পর্কু সাবন ; (৩) পার্যাথিক ধর্ম এবং সাংসাবিক ধর্ম खेल्टा भरता भरणाहिल लग ताब्हा (n दलरे नर्म भाषन महीकोन्छ। करेल इस ;--इंश्हें शर्मांद्र निर्माशीन जान्नी।

ख|बड़ी <u>।</u>

ব্ৰান্স-ধৰ্ম্-নীতি।

প্ৰথম অন্যায়।

तिश्र मर्यम् ।

তৃতীয় প্ৰস্তাব।

োভ।

সংসার-ধর্মা-নির্বাহ ত্না যে সকল পাথিব বস্তুর প্রয়োজন তাহা অর্জন করিবার
জনা, তাহা পাইবার জন্য ঈশ্বর আমাদিগের
ফদয়ে একটা প্রার্জি নিহিত করিষ। দিয়াছেন, কিন্তু মানুষ সে প্রস্তুতি নিয়মিত করিতে না পারিয়া, তাহার প্রস্তুত ধর্ম্ম-সিদ্ধ
ব্যবহার করিতে না পারিয়া তাহাকে লোভে

পরিণত করিয়া ফেলিয়াছে! লোভ আমান দিশের উক্ত প্রবৃত্তির বিশ্বন্দ ভাগ, উমার वाजिहारात्र कल । अभात-भन्दा विक्रिक्ट क-রিবার শ্বনা, পুথিবাঁতে আস্থার মন্তির সভী রকে কেরার জন্য আমানিলের স্বাচ্চ ১৮৮ প্রায়েজন তাহা আহ্বণার্থ ঈশ্য মে বাদন, দিয়াছেন, ধংশবি নিয়ন উল্লেখন না ক্রিয়া শাখবা তাহা পালন করিব, ঈখবের ইহাই উদেশা। ধর্ম-পথে থাকিয়া আমবা আ-মানিগের ঐ রামনা ভরিত্রাথ করিবার অবি-काता । किस्न वागन्ना (मंदे वामना ) जनाम ७ सम्म निक्क अवश्वातं क्रिया লোহের পরিপত করিয়া ফেলি। এই কেল্ড রিপু মংশোরিক শুখ মন্পতি লাভের এনা আমাদিগকে ৭কেন নিংম লভান ফারতে लानुस करत । धर्मा कुष्ठारत भारमाहिक स्थ সম্পতি লাভের পারতি ঈশ্ব আ্যাদিগকে দিয়াছেন, কিন্তু বর্ণনিয়ামের বাজ্যেক্ট্রী সে পাপত্যনক লোভ বিপু ভাষা ইবাৰ-প্ৰাদত্ত নহে। অভন্ত লোভ মর্লভোভাবে গান-जातिः।

ধর্মান্দাবে সাংসাদিক সূথ সাপতি লাভ কনিনার দে দ্বীনানানত আৰু আবদ, কিন্তু দেই প্রার্থিত বিষ্ণু প্রার্থিত বিষ্ণু ভাষা আনাদিপের শরীর, মন ও আজার মনিইফারী। যে নাক্তি লোভের বশীভূত পে স্থ সফলভার নিদানভূত যে অর্থ ভাষা লাভ জন্য নানা পাপ-কার্য্যে রত হয়। লোভী ব্যক্তি অর্থ লাভ জন্য বিশেকের কণী অগ্রাহ্য করে, কর্ত্ত্বা-বোধকে জলাঞ্জলি দেয়; সেহ, প্রেম, দয়া প্রভৃতি কোমল উদ্ধ্য দ্বাহাত করে, এবং এইলপে নরহত্যা, চৌর্যা, প্রবঞ্চনা, মিথাকিথন প্রভৃতি নানা ঘোর পাথে নিমগ্র হয়। বলিতে গেলে এমন পাপ নাই, এমন অর্থ্য কার্য্য

**নাই** যাহ। লোভ-পরবশ ব্যক্তি ধনভূঞা পরি-তৃপ্ত করিবার জন্য না করিতে পারে। এই **ब**ना (लाकी वाक्तित बाबात गर्वामान रह-নে ঘোর আব্যাত্মিক তুর্গতি জাস চইয়া थाका लाजी वाक्तियम मन महिल्ला धन गा তের প্রাত নিবিই থাকাতে, ছর্গ নাল তা-হার জীননের প্রধান উদ্দেশ্য - ওয়াতেই, তা-ছার কপন্ই মান্দিক ইতি-নিস্তের উচ্চিত मात्र खना चेरपूछ गठ छेदमार ५ ३०६। পালে ন। এবং তজ্জন্য আবিশ্যক সত সময়ও ব্যয় করিটে পারে মা, স্ক্তরাং সে ক্থমই সমাক্ মান্সিক উন্নতি লাভ ক্লিতে পারে না: ৷ সমাক্ মনের উন্তি হওরা চুত্র থা-কুৰ লোভা ব্যক্তির মন এতি হীন ও নাচ इहे। भएट । लाखे वाकि धनगाउँ बना ল্যোজা ব্যক্তির অন্যায় তোষা**মো**রে গুরুত হইনা এবং সতত সীয় স্বাধীনতা ও আত্ম সম্মান পরের পদে বিসর্জ্ঞান দিয়া স্বীয় মনের হীনতা ও নীচতার পরিচয় দেয়। ধনের ন্যায় হান ও অসার পদার্থ যাহার চিস্তার এ-धान विश्वयुक्त धानरमात लागान कात्रव. এবং আদরের এধান বস্তু হয়, তাহার মন কভদুর श्रुम ७ मात्र रहेता भराष्ट्र मश्रुष्ट कारा तुना ্ৰায়! লোভ-বিশু প্ৰবৰ্ণতা জন্য সামুষের আগ্রে: ওমনহ যে কেবল এইরূপ ওগতি প্রাপ্ত ংগ তাহ৷ নতে, ভাতার শরারও অস্বাস্থ্য ও অবনাত্র ভাগা হয়। আমাদিসের আত্মা ও মনকে গাংগ এরূপ বিষ্ঠ ও এইনত করিতে প'রে তাহা আমাদিগের শরাবের অবনতি না করিয়া থাকিতে পারে না। গ্রাক্সা ও শ**নের** সম্বন্ধে থাছা আনউকারী, শরীরের সম্বন্ধেও ভাহা অনিঔকাঠী হইয়া থাকে, ইহা সাকু-ষের অভিজ্ঞতা ও শরৌর**তত্ত্বিদ্দি**গের অনু-দক্ষান এক-বাকো প্রচার করিতেছে। छ-পরে আমরা আত্মা ও মনের উপর নোভ রিপুর থেরূপ **কু-প্রভাব দেখাই**য়াছি, শারী-

রের উপায়ও তাহার কু-প্রভাব তদ্**পু**যায়ী। শ্রীরের উপর লোভ রিপুর ফল সম্বন্ধে এক-জন শারীরতত্ত্বিদ্ যাহা লিখিয়াছেন তাহা আগর, এই স্থলে উদ্ভ করিয়া দিতেছি;— Avarice lessens the healthful vigour of the heart, and reduces the energy of all the important functions of the economy under its noxious influence the cheek turns pale, the skins becomes premeturely wrinkled, and the whole frame appears to contract to meet as it were, the littleness of its avarieious souls ইচার মন্ম এই ; 'লোভ ধ্বংগিতে সাস্থা-পূর্ণ কল এবং শরীকের সম্পায় এবান প্রধান মন্ত্রের কার্যদক্ষণতা হ্রান করিল। পেয়। এই রিপুর অনিঔকারী ভালারে গওনেশ বি-বৰ্ণ হট্যা যায়, শ্বাংবের চর্ম্ম অকালে লোল श्रेता यात्र, धार भे राजित । नाडी जाहात খুক্ত হার সমাচক ইয়ার জন্য দেহ খানিও त्यन भित्र पित्न मक्कृष्ठिक घटेत्क शास्क।"

ত্রাজাবর্দ্বের মহান উপদেশ এই যে সাংসারিক সূথ সম্পত্তি ধর্মানুনারে লাভ করিবার জনা করর আনাদিলের হৃদরে বে প্রাকৃতি
নিহিত কারণে দিয়াছেন সর্বদা তাহারই
অনুবর্ত্তী হইলা চলিবেক। সেই প্রস্তুত্তির
বর্দ্ম-বহিন্তৃতি, অন্যার ও ম্পারিমিত ব্যবহার
করিল তাহাকে ক্ষনত বিক্লত করিলা লোভ
িপুতে পারণত করিকে না; যদি তুমি
তাহা কর তাহা হইলে ভোনাকে শরীর মন
আত্মার তুর্ণতি প্রাপ্ত হইলা নানা যন্ত্রণ।
পাইতে হইবে। ত্রালাধর্মা বলিতেছেন; —

"লোভং হিস্বা **স্থা ভবেং** ৷''

অর্থাৎ "লোভ পরিতাশ করিয়া স্থা হইবেক।" লোভী ব্যক্তি কখনই স্থা হইতে পারে না। লোভী ব্যক্তির, হৃদয়ে সর্বদা নামা দ্রব্যের প্রতি লোভের জার হয়, কিন্তু মানুষের শক্তি থর্কাও নান। প্রতিবন্ধক বশতঃ সে কখনই তাহার লোভ-

<sup>•</sup> Dr William sweetser's mental hygienes

নীয় সকল বস্তু লাভ করিতে পারে না, স্থতরাং তাহার হৃদ্ধে সর্মাণ অস্ত্রথ ও অশান্তি
বিরাজ করিতে থাকে। অপরিত্প বাসনার বস্ত্রণা এবং লোভ-রিপু পরবশতার জন্য
তাহাকে যে শারীরিক, মানসিক ও ভাবাত্মিক অবনতির ভাগী হইতে হল তাহার
জন্য করে মানবজীবন ভাহার নিকট করল।
তুঃখন্য রলিয়া প্রভাত হল। লোভ পারবর্জন স্থাপর একটা প্রধান কারণ এই জন্য
ভ্রাজ্য বর্ষ্মা বলিয়াছেন;

"লোক হিবা স্কণী ভবেং।" ভি)ফাৰ্ম্ম বিলেশ— "বেল্ডেন্ডাইবন স্কলে"

অগাংশ বিনাভ অন্ত ব্যাষ্টি।" লোভ আপান একটা বিষম ব্যাণি। বাংগার থারা যেমন শরীর অপাবত্র ও বলখান ইটিয়া দুগতি প্রাপ্ত থ্যা, সেইরপে যে বাং জে লোগেন্য বল ইটিয়া নকংলা, চের্টা প্রাভৃতি নান। পাপে নিময় ২৯, হাছার আজা তেখনি অপাবত ও বল্টান হনিয়া চুগতি লাপ্ত হয়। এই লোভরূপ ব্যাধ্ হইতে শাগ্রার অন্সেস ফল-লানে উপস্থিত হটতে পাবে, অগ্রার অনন্ত তুঃখের পথ উল্কু হইতে পাবে, এই জন্য গ্রাক্সক্ষ বলিতেছেন;

"নোভোব্যাধিরন প্রকঃ।" ব্রেক্সির্ক্স বিলতেড্রেন্-— "বিরক্তঃ প্রদারেন্ নিশ্পৃথঃ প্রবস্তুযু। দন্তমাৎসর্যাহীনোয়ক্তেন্ন নোক্রথং জিডাং।"

"যিনি পরস্ত্রীতে বিরত যিনি পরছানো নিস্পৃষ্ট যিনি দন্তমাৎদর্যা-বিহান, তাঁছার দ্বারা তিন লোক জিত ছাইয়াছে।" যে ব্যক্তি পরের ঐশ্বর্যা ও স্থানাপান্তি দেখিয়া তাহার প্রতি লোভাশক্ত হয়, সে দেই লোভ চরি-ভার্থ করিবার জন্য সকল প্রকার পাপকার্দ্যা প্রস্তুত হইয়া আপনার মহা অনর্থ সাধন করে। কিন্তু যে ব্যক্তি পরক্রব্যে নিস্পৃহ, যে পরের ঐশ্বর্যার প্রতি লোভাসক্ত হয় না, সে আর্থ-

নার নানা অনথের পথ কেন্ধ করিয়া লাভবান হুইয়াছে। পরদেবেরে প্রভিত লোভাসক্ত হুইলে মানুষ সীয় শরার মন আল্লার বিশেষ অনিপ্র সাধন করিছা থাকে, কিন্তু দৈই আল হাকি দমন করিলে ভাহার হৈ জানটের মন্তারনা আকে না। স্কত্তা লোলাকে পরদ্বের নিম্পৃত্ সে পরদেবে স্পৃত্তাহিত বাজির সহিত জুলনাগ যে ইপ্র নাভ করে ভাহা ত্রিলাকের উপর জয়লাভ করার সম-ভুলা। এই জনা লাজ্যবান বলিতেছেন

প্রিক্তর গ্রান্থ নিপ্তির পরস্থার দ্বান্থ নিগ্রিকার জেন , লাক্তর্য ক্রিড । প্রেক্তর ক্রিড । প্রেক্তর ক্রিড । প্রক্রিকার ক্রিড নিগ্রান্থ ক্রিকার ক্রিক

'মানানত, বাচনিক এবং শারীরিক এই তিন প্রকার কর্মেই ১৬৬ এবং অঞ্জ তল জ্মে। প্রদেশ লাভেন সালোগনা, গো-কেৰ অনিষ্ট চিন্তন এবং ঈখলেনে ও প্ৰকান लाइन जिल्लाम, ७३ जिस अनात भागीमक ্রকর্মা।" চিন্তা হটতে কংগাঁর উৎপত্তি হয়। গে ব্যক্তি পাণ চিন্তা বরে, মে পাপ-ক'র্মে প্রাই রত হয়। পাপের আলেচেনা না প্রাই পাপ-কালে। পরিবত হয়। যে কাজি মনে মনে পরন্তবা লাভের আলোচনা করে ভাষাৰ প্ৰতিক্ষণেই ধৰ্মেৰ নিয়ম উভজ্ঞান পূর্ত্ত্বক পত্তব্য লাভ করিবার সম্পূর্ণ স-ন্থাবনা, এই জন্য ত্রাক্ষাধর্ম উপরি-উদ্ভ শ্লোকে পরক্রব্য লাভের আলোচনাকে অঞ্ড-ফলপ্রদ মানদিক কুকর্ম বলিয়া নির্ফেশ করিয়াছেন।

ত্রাক্ষ যিনি তিনি ধর্মপ্রেশ নাকিয়া,
ধর্মের নিয়মের বশবন্তী হইয়া সংসাধ ধর্মা
নির্কাহ জনা, আত্মার মন্দির শবীরকে এইতিন্তু রাখিবার জনা যে সকল পাঞ্জিব বস্তর
প্রায়েজন তাহা অর্জন করিব্রন এবং ভাহ'ব

যথোচিত ব্যবহার করিবেন। তিনি কথন
ধন্মানুসারে সাংসারিক স্থ্যসম্পত্তি কালের
ঈরব-প্রদত্ত প্রবৃত্তিকে বিক্রত স্বিহা তাহাকে
লোভে পরিণত করিবেন না এবং লোভের
বনীভূত হইরা নানা পাপ-কার্টো বত হইরা
আপেনার শরীর মন আজার তগতি সাধন
করিবেন না। ঘিনি প্রাক্ষণ্ম প্রহণ করিয়া,
ব্রোক্ষা বনিয়া জগতের নিকট পরিচয় নিয়া
লোভের অধীন হয়েন, তিনি প্রাক্ষণম্প্রের ও
প্রাক্ষানামের অব্যাননা করেন, তিনি কথন
প্রাক্ষ করেণ ব্যাক্ষা নামের উপাযুক্ত হইতে
পারেন না।

## ব্যাখ্যান মঞ্জরী।

শীযুক্ত প্রধান আচার্য্যের
নাখ্যান-মূলক পদ্য।
উনবিংশ ব্যাখ্যান।

পরম ঈগরে, বে দেখে অন্তরে, সেই সে তাঁহালে পান। তার কার্য্য করে,তাঁর বাকা ধরে, জানি তাঁর অভিপ্রাম।

> নিখিল ভূবনে, অযুত ওপন, অনুত ভারকা ভাবে। क उन्हें एन्स्मा, गराम-त्रक्षम, বিভারিয়া তুপা হাসে। গগনে গগনে, শত চন্দ্র রবি, धूमरकष्टू और एस । তাঁহার মহিমা, অসীম অপার, ভার স্বরে এই করা मनी करज्ञानिनी पृथव मान्स, भूष्य हाजि मत्नाहता। ভৰুণ অৰুণ, টাদের কিরণে, কভ শোভা ধরে বরা 🛭 मनीत महती. शाबित काकली, िनिभित्र भिभित्र गार्ट्य। उँ। ति स्यम्म अश्वती मीमा, **ां≇** पंशा ऋविशोदक ॥ মনোহর সাজে, সভিন্নত কেবন, রচনা গড়ীর তার

তাহার প্রেয়ের মঞ্চল কুই যোগিতেছে অন্তিমীর CE यानव ! CRM, ठामदत द्रुकामात সে-প্রেম তপন করে। তাঁহার প্রীভিন্ন শবিত্র কুত্ম কুটিভেছে হর্গ-ভরে।। সাধক তাঁছারে, পিতা মাতা প্রভু, क्रमरग्रह वन कारन। হৃদয় আসনে, রাখিয়া তাঁহারে, চলে সে জীহার টানে॥ क्रमदत्रत्र स्वागी, व्यनार्यत्र नायं, যে তাঁর শরণ চায়। স্বরণের বল, স্বরণের মতি, তাঁহার নিকট পার॥ क्तरहात (तांगे, मार्क्त कानिया. হরেন করুণা করি। যে ভাকয়ে তীরে, সংসার সঙ্কটে, দেন ভারে পদ-ভরী॥ কঠিন কপাট, হৃদয়ের খোল, ডাক তাঁরে **জ্বদাসনে।** হৃদয়-ঈশ্বর, বসাও তাঁছাকে, প্রিয় তাঁর নিকেতনে। থে জীবন হয়, তাঁহ তে ৰঞ্চিত, সে জীবন রুখা হয়। এক কলো বদি, রাখ তাঁরে ছাদি সেইক্ষণ প্র্যাময়।। कूबाल कूबाल जीवरनत रथला, ভ্ৰম কেন অকারণ 🕈 याहाटत लाहरत, खन्म मण्डल লও তাঁর জীচরণ 🐉 অসীম আকাশে, কড ছবি কত এহ কত ভাৱা। ভাঁহার অঙ্কিউ রেখায় কেম सुनेबाल इत्न जोता ॥ कृषित (मज्जन, स्टब्र मध्यक, en aca Sia new

তার কাবে দাও কে লব লিখা,
জন্ম সম্পদ্ধ হবে।
ভার কাব বলে, যদি দীনে অল
প্রক্রিকার দান।
কে দান ইম্বার, করেন-প্রেহণ,
কি লাভ কোমার ভা'তে।
বাড়ে মার্ম মতি, ছাড় ছাড় ভাষ্টা,
ইম্বার নাইন যা'তে।
প্রমিল চিতে, তাঁরে ডাকি ঘন,
ভার কাথে দাও প্রাণ।
বলিয়া দিবেন, যেবা কার্য্য তাঁয়,
ধাকি ফাদি বভিনান।।

( S | \* 1 4 5 1

## **८म्वगृद्ध टेम्निम्न निर्णि।**

खोजमन्द ६)। अकोको ১৮०२।

২৯ সাহিন-প্রতাদ আমার আলমে পারিবারিক বন্ধোপাসন ইইয়া থাকে। আদা চারিটার সময় বাহি-বের ানিবে সঙ্গে উল্ল উপাসনা কবি। আমি উপা-সনা কার, কা বারু পার্থনা করেন এবং দা, বারু পান কলেন। আমি বলিলাম মত প্রকার রোগ আছে অধাৎ সামাজিক রোগ, রাজনৈতিক রোগ এবং ব্যা-নম্মনীর রোগ ইহাদিগের প্রত্যেকের ঔষধ আছে। সক্ল রোগের পরম ভিষক পর্মেশ্বর। তিনি ভিষ-কের ভিষক। তিনি বৈদ্যানাথ-ভিনি প্রকৃত বৈদ্যানাথের উপাসনা করিয়া আমরা ক্লভার্থ হইভেছি। উপাসনার উপাসনা করিয়া আমরা ক্লভার্থ হইভেছি। উপাসনার বিশ্বনাধির প্রভার যে প্রকার পেড়া ব্যবহৃত হয় বিশ্বনাধির প্রভার যে প্রকার পেড়া ব্যবহৃত হয় ব্যবসায়ী বাঙাদিগের স্বেলে বন্টন করিলেন। ইনি

কৈতিক প্রাণ্ড কিন্তালে ডাইনের রাজেরালাল বিষয়ের রাকে বৈদ্যালের মন্দির দেখিতে বাই। তথার ক্ষান্তের বাব্ অফিচ্যক দেবমন্দিরের প্রাচীরস্থ সমান্ত চিত্রফলকের প্রাতিকৃতি কাগ্যানের উপত্র ভূলিরা সারেন। এই সকল প্রতিকৃত্তি পাইক তাহার প্রণীত ক্ষান্ত্রকা উৎকৃত্তি বুলাজনাতিকার দেখিতে পাইবেন। ও কার্ত্তিক—অন্য কা, বারর সংগ কংগাপকথনের সময় আমি বলি যে প্রাকৃতিক পৌলনেয়ার প্রতি গাঢ় মন্তরাগ মহৎ স্বভাবের একটি লক্ষ্য:

৫ ফার্ডিক অন্য প্রাতে ধাড়ওয়া নদীতীনে একোপাদনা হয়। কা, বাবু ও মামি আনরা উভরে প্রার্থনা
করি, হা বাবু গান করেনা। আমি উন্নত-মতক বৃক্ষরাজির ন্যার ঈশবের দিকে উন্নত হইতে, গিবিং ন্যায়
হৈছা ও ধৈর্যা বিশিষ্ট হইতে এবং স্নোভংগত টা বেনন
সম্মূদিকে ধাবিত হইতেছে সেইরূপ কাগের দিকে
ধাবিত চইতে আত্মার বে বল আবশ্যক তেজনা প্রথ বের নিকট প্রার্থনা করিলাম। কা, বাবু সংশ্ব বির্থ মতিক্রম করিয়া এক বৎসরের পর দেবগুহে আদিয়া
সেই সকল বন্দ্র সহিত প্ররায় স্থিলিত হইয়া এবপ উপাদনা ক্রিতে স্বর্থন তাহাকে স্মর্থ ক্রিলেন
তজ্জনা সেই মঙ্গলম্য প্রথবের নিকট রুভক্ততা প্রকাশ ক্রিলেন।

ত কার্ত্তিক—অদা ভার তথ্যে প্রাপ্ত বয়দী সাহেন বেদ শেষ "দত্মণ" শ্বম পাঠ করি। দ্র্যাদী সাহেন খ্রীইয়ে ধর্মের দারমর্মা এক কথার বলিবা দিয়াছেন, "An angry God, a bleeding saviour and a cuping hell" 'কোপন স্বভাব ঈশ্বর, শোণিতাক্ত কলেব্য প্রিত্তাতা ও গিলিবার জনা হা করা নরক।"

১১ কার্ত্তিক -- অন্য ভারমানের আবিদর্শন পাঠ
করি। এই সংখ্যক আয়ান শনে "সন্নাসী" শিরম্ব প্রস্তাবে
"সন্নাসী" শব্দের একটি নৃত্ন মনোহর অর্থ্য করা হইরাছে। যে ব্যক্তি ত্যাগ স্বীকার করিয়া দেশেন ধর্মের,
সমাজের অথবা রাজনৈতিক অবস্থার উন্নক্তি সাধন
করেন তিনিই প্রকৃত সন্নাসী। যে পর্যান্ত না ভারতবর্ষে
বহু সংখ্যক এইরূপ সন্নাসী উদিত ইইবে দে পর্যান্ত
ভাহার প্রকৃত উন্নতি ইইবে না। এই কথা অতি ব্যার্থ।

১ং কাতিক— অদ্য বিখ্যাত বাবু প্যারিচাদ মিনের বারা ইংরাজীতে লিখিত ৮ রামকমল সেনের ইতিবৃত্ত পাঠ করি। দেওবান রামকমল সেনের জীবনরত অতীব কৌতৃহস্তুজনক। ইনি স্থবিখ্যাত কেশ্রুচজ্র সেনের পিতামহ। এই পুত্তকের শেবে লেখক রলিরাছেন যে তক্তি ধর্মসাধনের নিমের অল, সাধনের উচ্চতম অল সমাধি। তক্তির অবতা উদ্বেশ অবস্থা, সমাধি শান্তির অবতা। শান্তির অবতা উদ্বেশ অবস্থা, সমাধি শান্তির অবতা। শান্তির অবতা উদ্বেশ অবস্থা, অপেকা শ্রেষ্ঠ। আমার মতে সমাধি তক্তিরও উচ্চতম অবতা। বিষয়ে পুথান মুক্তার অবতা আহত পর ইয়াও মুক্তিদাতা জীবনে স্কালি ভালিক থাকাই প্রকৃত সমাধি। তাহা ভক্তি ও গাঢ় কিন্তা কি থাকাই প্রকৃত সমাধি। তাহা ভক্তি ও গাঢ়

ধির অবহা শাস্ত পাবস্থা লেগতের এই বাকা পাতি মথার্থ। প্রীতি ও ভজি উচ্চতম অবভাতে শাস্তভাব ধারণ করে। নদী বখন সমুদ্রের সঙ্গে নিশে তথন ভাহার মার কল্লোক থাকে না।

১৬ কান্তিক—আদ্য শেষ সংখ্যা শাদাবিণী পাঠ করি। তাহাতে প্রকাশিত দ্ভিল ও মেলেরিয়। শিরক প্রস্তাবটি অতি উইটেই। ৩ রা গেল করণা চক্ষে অল ভাইল। মেলেরিয়ালে প্রিন্তান বি রেশ উইময় ইউভেছে। বদি ইন্যার ক্ষেণ কর্ম ক্ষিণা শিক্তিছা মলল ব্যায়েতেই একটা ক্রিয়ে ক্ষিণ। তাহারা মলে ক্ষেন ক্ষিণ ব্যাহ্রিক গ্রাহণ ক্রিয়া নিক্তিছা সক্ষে হইল। ক্মিণ ব্যাহ্রিক গ্রাহণ, দে রি-গ্রেটি প্রশ্বিত হব্র। প্রার্থিক চাত্ত ?

১৭ কারি হ আং শোলাক Sunday Microx প্রাটি বাকা জতীব স্থান প্রারদী কান্য ইইতে উক্ত 
কাটি বাকা জতীব স্থান বোধ হংল। "আমি অনেক 
কিন পর্যান্ত ঈর্ষরের পথে লোককে আহ্যান করিনাম 
কিন্ত আমার কথা কেই ছনিল না। জামি তৎপরে 
তাহাদিগকৈ পরিত্যাগ করিনা ঈর্যারের আলকে চলিয়া 
প্রোনান করিবাছিগান তাহাদিগের মধ্যে অনেকে আমা 
কালেখন উচ্চ স্থানে ব্যায় আছেনা"

<u> খূৰ্ম ভারত্বৰ্যে কত কাব কত দাৰ্শনিক কত জ্ঞানী</u> क्छ विक्रिक स्था धर्म कित्रा हिल्लन। छौरात्मत वाकः 🙀 बेर्पारे ज्याज्ञ अ त्यारकत आत्याहनात वियम হইমা খ্রীডেন \তাহাদের নামে লোকের হৃদম ভতিতে অন্তে হিন্দ 🙌 জন বনুবাদ্ধ একল হইলে তাঁথা-দেৱৰ সং চ**থা কী**তিত ২ছৱা পাকে। যদিও তাঁছাৱা বছপ্লাপে প্রাথিব গ্রীলা সম্বরণ করিয়াছেন কিন্ত স্থনামে অব্যাপি জাবিত। বিগ্রহ স্বাভ মহাত্রা যেরপে পদাক রাখিরা গিলাছেন (চাহা বালুকাতবের উপর নর স্থানিণে আহত। কি**খ** ননে বিড় জোভ হয় যে **আমকা** জ্বীর্দির সেই সমন্ত প্রিত মূর্ভি দেখিতে শাই না। মন্ত্রমার ইহাই সভাব বৈ গাহার উপ**র**্জনি বা ত্রেন হয় তাহাকে দেখিবার জন্য একটা জাননী লালস্ क्षित्रिक दश्का शादक। किन्त क्षित्र ब्याठीन कारन अहे ভারত্বি ভবিষাতের অন্ত প্রতিমুখি বাখিবার একটা व्यवी किता। देश आधुनिक वार्था कितार भीव सानीक श्लीटक मधाम्भू बाबिएक सर्वे क्रिया के क्रिया के प्रक्रिक कार्य अन्य अन्य प्रक्रिका थारक कि अने अने अने (लाइकत अफ्रियु डि नक्की किया किह मार्ग देवना अव

ইহা অতীতের শহিত বর্তমানের একটা সমন্ত রক্ষ্মিন্ত স্থানা । আমরা ব্যান বৈ ক্ষেমি মহায়ার সন্তবের আলোচনা করি প্রক্রিক ভাইলে মনে বড় আনন্দ উপকিটা অভিব্যক্ত দেখিতে পাইলে মনে বড় আনন্দ উপহিত হয়। প্রতিমৃতি রক্ষার ইহা একটা কারণ।
বিতীয় কারণ ভক্তির পাত্রের কিরপ মৃতি ছিল তাহার প্রতিরূপ স্বচক্ষে দেখার একটা বড় আয়্মন্ত্রাস হয়।
যাই হউক বভ্যানের এই কচি অবশাই প্রশংসনীয়।

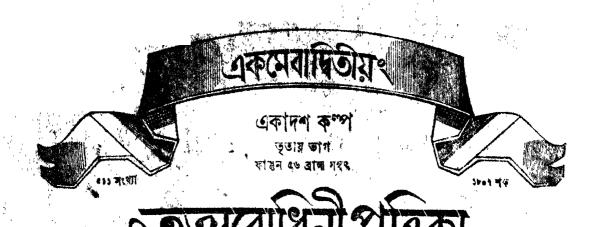
সম্প্রতি অনরা শ্রীনন্মহর্ষি দেবের্জনাথ ঠাকুর মহাশরের একথানি লিথোগ্রাফ ছবি উপহার প্রাপ্ত হইয়াছি। ইছার প্রণেতা ভারত চিত্রালয়ের নার অতুলক্ক
মিত্র। যে মহান্মার ছবি প্রস্তুত ইইয়াছে ভিনি অন্যাপি
জীবিত। এদেশের প্রায় যোল আনা গোকই ভাহাকে
দেবিলাছেন। ছবি থানি ঠিক হইখাছে কি না তাহা
ভাগারাই বিবেচনা করিবেন। কিন্তু আখরা বাবু
অতুলক্ক মিত্রের এই চেটায় বিশেন আনন্দিত হইলাম। তিনি যে সহায়ার ছবি প্রস্তুত করিয়াছন
ভবিল্যতে ইংহাকে দেবিবার জন্ত লোকের বান্তবিক্কই
একটা অদমা লাল্যা উপন্থিত হইবে। অতুলক্ক বাত্র
ভাগা চরিতার্থ করিবার উপায় করিবা রাণিলেন।
হলতে আনরা বিশেষ সম্ভাই হইলাম।

#### বিজ্ঞাপন।

দকল হিন্দুশান্তের চরম উপদেশ যে ত্রক্রোপাদনা তাহা যাহাতে এ দেশের দক্তি
প্রচলিত হয় এই উদ্দেশে মহালা রামমোহন
রায় আদি আক্রাদ্যাজ সংস্থাপন করিয়াছিলেন। ঐ মহৎ অভিপ্রায়ানুসারে ঐ সন্
মাজের কার্যা অদ্যাপি চলিতেছে। কিন্তু
এরপ রহৎ কার্যা ব্যর-সাপেক। এ জন্যা
এদেশের অনেক সম্রান্ত ভক্র লোক ক্রা
সাধ্য সাহায্য করিয়া আলিতেছেন। একশে
আগামী বৎসরের জন্য অনসংস্থান আক্রা
শাক। এই সম্বান্ধ যিনি শ্রের ক্রির।

কৃতজ্ঞতার সহিত স্বীকার করিতেছি মহাজা রামমোহন রায়ের পুত্রবধু মৃত বাব্ রমাপ্রসাদ রায়ের পদ্ধী জীবাতী জবমগ্রী দেবী। ১২ টাকা ধান করিয়াছেন।

> শীরবীজনাথ ঠাকুর সম্পাদক।



ब्रह्मवावकसिंदसम्बासीसान्यस् किथनम्सात्तिद्दं सम्बेसस्जत्। तदव नित्यंशानसम्भां शिषं स्वसम्बद्धिरवययभेकसेवादिताय सम्बेद्यापि सम्बेशियन् सम्बाद्यसम्बेदिन् सर्भयात्तिसद्भव पूर्णसपनिसासितः। सकस्य तस्त्रैयोपाससम्ब

#### यानिक खान्ननमाज।

८७ डाक मंपर ६ मान।

মাবের একাদশ দিবসীয় মহোৎদবের সঙ্গে আমারদের আজার এমনই নিগুড় ষোগ যে, দেই উংসব-আনন্দ ভোগেন্থ-ন্তুত হইবার নি*গিত্ত* **অদ্য হইতেই** আমর। আমারদের আত্মাকে উর্বোধিত করিতেছি। লোকে দামান্য বাহা ক্রিয়া-কলাপ সম্পা-দনের জন্য পূর্বে হইতে কত আগ্রোজন স-কল কলে, আমরা কি গুরুতর মহত্তর আ-सामिक अमिजि-कट्झ छनामीन थाकिट পারি ক্রিকা আয়ে।জনে সংসারে কোন कारी है निर्दित्य स्विन्धिम हम्र ना। विना निक्षत्व कान पालिसे बरे यहाँदनाटक कान বিষয়ে নিজিলাভ করিতে প্রারে না। বিশে-ষতঃ অনিরা যে মছোৎসবের প্রতীকা ক্ষিট্ৰেছি ভাহাতে ৰাহ্য ব্যাপারের সংখ কোৰ সমন্ত নাই ভাষা সম্পূৰ্ণ আধ্যাত্মিক। বাহা বিষয়েই আয়োজন এক, আর আধ্যা-विक बाहराष्ट्रन पना क्षकार । वाहा वस्त मा शह नाश-पन-तर्पन चैलति निर्देश करत, क्षांचिक क्षा निर्मानत्त्र बना पाच

তাহারও বানা বিল্প, আকর্ষণ প্রলোভন চতুদিকে রাশি রাশি। সে সমস্ত উল্লক্ত্যন অতিক্রম করিয়া দেব-পরে এটল-ভাবে গমন করা বড় সংজ ব্যাপার নহে। পৃথিবী আমারদের পাদ্ধয় আপনার কেন্দ্রা-ভিমুখে টানিয়া রাখিয়াছে, गमूनत व्यक्तिंश वा**मात**एत है कियंगन देव নানা ভাকারে আকর্ষণ করিতেছে, ইন্দ্রিয় ও বিষয় স্থ-নামগ্রী সকল দিনুরাত্তি আ-মার্রাদণের চিত্তকে নান। প্রলোভন প্রদর্শন করিতেছে; এ সমস্ত আকর্ষণ আতিক্রম ক-রিয়া পৃথিবীর অতীত বুদ্ধি-মন্ত্রগমা বিষ-য়ের জন্য প্রস্তুত **হওয়া কি দহক্ষ** ব্যাপার ? मार्गाना नपनपीत श्रीक-द्वारिक मतीत मका-लना कवार रचन मणूरवात शरक पृश्वाध्र, তখন সংসার ও বিষয়-স্থানে প্রতিকূলে আত্মাকৈ ত্রন্ধান ক্ষান্ত করিবার জন্য অগ্রসর করা কত 🖚 কঠিন ব্যাপার। দৃত সংকল বভৌত কার সাধা যে এ বিষয়ে সিদ্ধুল্ভ कदत्र । पाछ अव पाहिन मक्त पान हरेत्वर সংক্র করি, যে আমরা আমারদের আত্মাকে স্থান বিশ্ব হইতে রক্ষা করিয়া সেই জেল-তিপ্নীত ক্রিব। সেই এক ছাহতীয়

রক্ষেরপূজার জনা দিখাভাব পরিত্যাগ করিয়া। হল্মনা একাগ্রমনা হইয়া থাকিব।

আমবা দৃত্তা-রহিত ও সংকল্লগুনা হ-ইয়া কার্য্য করি বলিয়া আমারদের আশাসু-क्रभ कल जां इस ना, जांगतः निकिनाट হুতকার্য্য হইতে পারি না। किरमंत्र जना **সংকল্পের প্রায়েজ**ন, তাহা একবার বিশদ ক্লপে আত্মাকে বুঝাইয়। দেও, সে আপনার স্বার্থ পর্মার্থ, আপনার শান্তি কল্যাণ এক-বার স্থানররূপে বুঝিতে পারিলে আপনা **ছইতেই**; দৃঢ়ব্ৰত হইবে। আত্মা পৃথিবীর নিহে, দৈ পাথিব উপাদানেও নহে; যদিও সে শিকা সাধনের জনা অ-मिन विषयब्राभित्र गर्धा मक्षत्र कतिरल्ट्स কিছুকালের জন্য এই রোগ-শোক-জরা-स्रा-পূर्ণ পৃথিবীতে অবস্থান করিতেছে, কিন্তু সে স্বৰ্গীয় উপাদানে গঠিত, সে অনন্ত উন্নত ধানের যাত্রী, ভুমওল তাহার গন্য প্রের পান্থ-নিবাস মাতা। এই মৃত্যুময় সংসারে থাকিয়া যাঁহার সঙ্গে হোগেতেই তাহার অ্মরত্ব লাভ হয়, রোগ-শোক-পাপ-জাপ-নিলাপ-জন্মন-পূর্ব **ज**रशत्नादक এই দ্রিয়মাণ মুহামান আজা, বার দর্শন লাভ क्रिंटि शाहित्व (म नव-बीवन नव-छे९ माह **নৃতন ব**লবীৰ্ণা লাভ ক্ৰিয়া বীতশোক হয়, (महे गहा गहरादमत (महे त्मीन्तर्थां जा-কর, শোভার ভাণ্ডার, অমৃত স্বরূপ **ঈশ্বরের** প্ৰায় জনা শুলুও হইবার আৰুনাক। সেই পরত্রক্ষার দর্শন প্রবৰ মনন নিদিধ্যাসনের निमिष्ट चार्याचन कवारे शासन, अह স্মংবাদ একবার ভাহার অন্তর্ভন আদেশে প্রেরণ কর, তাহ। হইলে সে আপনা হই-रण्डे स्थारमाला**टम के**रमूल रहेशा छितिता শোণিত শিরার, শারীর প্রাণে, হোরূপ दनिष्ठ मचक, जाजात मदभ भत्ना हात्र তাহা অপেকাও অনন্ত তবে গাছতর নিগুছ-

তর ঘনিষ্ঠ যোগ। একুরার তাহাকে বিশেষ-রূপে বুঝাইয়া দাও, বৈ বিষয়-কুজ্বটিকার, गर्या रच छान-रक्षा-बुद्धांत ज्ञानम छन्न-जब कारन दम्बिट्ड मारे ना, जनमगारकत হীনাবস্থা নিবন্ধন সকল স্থানে বে প্রভাক **लाग-यद्गलाय ज्वन-माधन मर्द्यमा मृहे ए**ग्न না, মাবের পবিত্র একাদশ দিবদে ভাঁহারই পূজার্চনা হইবে। মেবাস্থু নিপতনের উপ-ক্রম দেশিয়া একটি চাতক উচ্চরবে চীৎকার করিলে যেমন চতুর্দ্দিক হটতে পিপাস্থ চা-তক দল উৰ্দ্ধমুখে ভাকিতে থাকে, তেমনি সেই জ্ঞানপ্রেমায়ত বর্ষণের সংবাদ একবার একটি আল্লা হৃদয়ঙ্গম করিয়া আহ্বান ক-রিলে, শত সহস্র আত্মা সেই মহা মহোৎ-সবে স্বতঃপ্রবৃ**ত্ত হইবার জন্য দৃ**ঢ় সংকল্প कतिरव। वन्नीरक कातामूक इरेवात मधान, विरम्भीटक अरमभ-भयनवाद्धा श्रमान कडिएन দে কি আর স্থান্থির থাকিতে পারে, সে আ-পনা হইতেই সম্বল সংগ্রহ করিয়া অগ্রসর **হয়। ঈ্ব'রের** मदभ যুক্তয়ন যুক্তাত্মা হ**ই**য়া থাকাই আত্মার স্বভাব। শঙ্গল গীত গান করাই অস্তর-রসনার স্বাভা-যেখানে অনন্তের কীর্ত্তিত হয়, যে ঘটনাতে **ন্দিশরের ক্লেহ** প্রেম-চছট। উজ্জলতর রূপে প্রতিভাত হয়, যে কার্গে তাঁহার মঙ্গল লক্ষ্য সংক্রিছ হয়, মানব আত্মা তাহার প্রতি সহতে ধাবিত না हरेशा थाकिट भारत ना । भारत सा-ধীন ভাবে তাহাতে যোগ দিতে পারিলেই আপনাকে কৃতার্থ জ্ঞান করে। জালতেই ভাষার ধর্মবল ধর্মসাহস বর্তিভ হুইয়া থাকে। তাহাতেই ভাহার প্রহৃত মানন, ভাছাতেই ভাছার প্রস্কৃত উৎসব। এ সমৃত্ত কাৰ্জিতেই ক্ষমন আত্মসংকর, वाष-८० है।, बालिक होर मिनास श्रायम, ट्यान द्वारेनीरमहरू बनाय वारनाक

ভূমির যতই কেন দেবদন্ত উর্করা শক্তি,
বীজের যতই কেন অঙ্গুরোৎপাদিকা ক্ষমতা
থাকুক না, উপর হইতে জল আলোক বর্ষিত
না হইলে কোন জমেই স্থকল লাভ হয় না।
তেমনি অমর আত্মার ঈশরদন্ত আত্মপ্রভাব
থাকিলেও ভাঁহার করুণায়ত প্রাপ্ত না হইলে,
আমরা কোন কার্যোই জ্বয়লাভ সিদ্ধিলাভ
করিতে সমর্থ হই না। সেই জনা এই শভ্ দিনে শুভক্ষণে বোধন উদ্বোধন দারা আল্
আকে উদ্বোধিত করিতে সন্মিলিত হইয়াছি।
এই সময়ে আইস আমরা নকলে মিলে ভাল্ হার প্রসাদ—ভাঁহার সাহায়া প্রার্থনা করি।

হে সর্কাসিদ্ধিদাত। করুণাময় ঈশর।

যাহাতে তোমার প্রদাদে আমর। তোমার

উৎসব আনন্দ ভোগী হইতে পারি, তুমি
আনারদের প্রতি প্রসম হইয়া এরূপ ধর্মাবল ও শুভবৃদ্ধি প্রেরণ কর। আমরা চক্ষল
পরিবর্তনশীল ঘটনার মধ্যে অবস্থান করিতেছি, তোমার করুণা ভিন্ন কখনই আমরা
আমারদের চিন্তকে স্থান্থির ও অটল রাখিতে
পারি না। তোমার বলে আমাদিগকে বলায়ান কর, তুমি আমারদের আত্মাকে প্রেমানন্দে উৎসাহিত করিয়া ভোমার সমিহিত

হইবার সম্বল সংগতি প্রদান কর, বিনীতভাবে তোমার সমিধানে এই শুভাশীর্কাদ
প্রার্থনা করি।

ওঁ একমেবাদ্বিতীয়ং।

#### ব্রাদ্যাদ্যালন।

গত ৯ মাঘ র্হম্পতিবার প্রাত্যকালে

ত্রীমৎ প্রধান আচার্য্য মহাশরের প্রাঙ্গণে
ব্রাক্ষসন্মিলন হয়। ঐ দিন ত্রীযুক্ত দিকেন্দ্রনাথ ঠাকুর, ত্রীযুক্ত সভোক্রনাথ ঠাকুর,
ত্রীযুক্ত প্রতাপক্তর মজুমদার, ত্রীযুক্ত শিবনাথ শাস্ত্রী, ত্রীযুক্ত উমেশচন্দ্র দত্ত, ত্রীযুক্ত

ত্রৈলোক্যনাথ সার্যাল ও প্রীযুক্ত রবীন্দ্রনাথ ঠাক্র এই ক্যুজন বেদির আসন গ্রহণ করেন। শীযুক্ত প্রতাপচক্র মজুম্দার উদ্যোধন ও প্রার্থনা করেন। তাহা অতি হৃদয়গ্রাহী হইয়াছিল।

সন্মিলন উপলক্ষে শ্রীযুক্ত বিজ্ঞেনাথ ঠাকুরের উপদেশ।

"তমেবৈকং জানথ আছানং অক্সা বাচো বিম্পথ অমৃতগ্যৈষ সেতৃঃ "

আমরা নানা ঘটনার মধ্য দিয়া অদ্য এই শুভ সাম্মলনের উৎসবে উপনীত ছই-য়াছি। নানা বিষয়ের নানা স্রোতে আ-মাদেব বৃদ্ধি বিক্রিপ্ত হইয়া গিয়াছে, আজিও তাহা দ্বির হইতে পারে নাই। এই জনা আজিকের মত এইরপে সাম্মলন আমাদের পক্ষে পরম উপকারী। নানা দিক্ দিয়া নানা অশান্ত নদী বেমন যাগর-বক্ষে আসিয়া প্রশান্তি লাত করে, সেইরপে প্রশান্তি লাভ করিবার জন্য আমরা সমস্ত বিবাদ বিসম্বাদ বিশ্বত হইয়া করুণাময় প্রমেশরের মঙ্গল ছায়ায় অদ্য এখানে সাম্মিত হইয়াছি। ব্যাহাধান্য আমাদিগকে আজ করুণার্ম্ন সরে বলিতেছেন

'ভিষেত্ৰকং জানগ আত্মানং অন্যা বাচো বিমু**ঞ্থ** অমৃতবৈদ্যৰ সেতুঃ ৮'

"নেই অদিতীয় পরমাত্মাকে জান এবং অন্য বাক্য সকল পরিত্যাগ কর ইনি অমৃত লাভের সেতৃ,।" রোক্ষধর্মের এই সারগর্ভ কথায় আমরা কর্ণপাত না করিয়া নানা প্রকার অলীক এবং অসার কথায় কাণ দিয়াছি, তাই আমরা নানা দলে বিভক্ত হইয়া পড়িয়াছি। রোক্ষসমাজের বর্ত্তমান অবস্থা দেখিয়া ভগবদগীতার এই কথাটি মনে পড়ে

"শক্ষ্যাণাং দহত্রেষ্ কশ্চিৎ বততি দিছতে।

যতভামপি দিছানাং কশ্চিন্মাং বেভি ভবতঃ।"

ইহার তাৎপর্যা এই যে, সহত্র বাভিনে

াবো এক বাক্তি যদি ঈশবের জনা যত্ন করেন, এবং সেইরূপ যত্নশীল সাধু ব্যক্তিনিগের মধ্যে এক বাক্তি যদি ঈশবকে সংগ্রহণে জানেন। আমরা এত অপ্রানাপক বিষয় লইয়া ব্যাপুত হইয়া পড়িসাছি সে, ঈশবের জনা যত্ন করিবাস একসাশ জামানের অভি জার। বিবাদ বিসাধানের স্থান কোলা-হলে অন্যর। প্রানাশ্যির কৌ অমুলা কথাটি জাকেবারেই বিশ্বাহ হয়। জিলাছি যে,

শন্ত্যবৈধা লাশ্য আন অন্য বাচেচা বিমু**ঞ্ছ** অমৃত্যবিধানেরঃ

'शतभाषातः है दक्तन खान अदः जना বাক্য স্বল প্রিনাগ কর ইনি অ্যুক্ত লাভের দেতু।" খিনি অয়ত লাভের একমার নেং— যিনি সাক্ষাৎ অমৃতের উংগ্লাতিনি যে কত, यद्भत भाषती, ब छात्रि जागादमत गरन अ-খনোভাল করিয়া বমে নাই,—আমরা মনে করি গে, ঈপরেতে ক্রমাগত লাগিয়া থাকিলে আমরা একেবারেই কাজের বারি হইয়া প-ড়িব;—লাগ্যই যদি মত্য হয় তবে শরীর কোন সমায় বলিতে পারে যে, আমি প্রাণের সঙ্গে ক্রমাণত যুক্ত থাকিলে অকর্মাণা হইয়া গজিব; অয়: তর নহিত ক্রমাণত ফুক্ত থা-কিলে আমরা মৃত্যুৎ অকল্মণ্য ইইয়া প'ড়ব— এ হাব্য কিন্নপ কথা! ব অলীক ক-ধ্য রাজ বি এনিক মূলা যে, উহাতে ' ভূলির) আমবা মাক্ষার জ**মৃত্তর উৎসকে** অগত্নে হারাহ্যা থেগলব 🔭 যেমনু একটি রত্ন-ভাগ্রার লাভ করিলেই পারিলেই তাহার অভ্যন্তরতি গণত কোটি মণিমুক্তা লাভ করা ধায়, দেইরপ এক অদিতীয় প্রশালাকে জানিদেই তাঁহার আদিট্ট সমস্ত কর্ত্তবাগুলি বিশদরূপে জানিতে পারা যায়, আর প্রমা-ত্মাতে আমানের শ্রীতি নিবিপ্ত ইইলেই দেই **म्हें क ईट**नाइ अनुष्टाता आगादनद सन जी-পना इहै (उहे शावित इम्र) এক অন্নিতীয় পরমাত্মাকে জানিলেই আমরা এই তার্টি জানিতে পাই যে, আমাদের সকলের আত্মা তাঁহ। হইতে আসিয়াছে এবং তাঁহাতেই অবস্থিতি করিতেছে, — তথন সকলের প্রতিই আমাদের প্রেম বিস্তৃত হয় ও সকল কর্তব্যানানেই আমাদের বুদ্দি ব্যাপৃত হয়। বাকিরের কোন স্থান অয়েঘণ করিলে আমরা এই অয়তের সেতৃকে পাইব না—কেবল আজার অভান্তরেই আমরা তাঁহার অয়েঘণ পাইতে পারি।

আমাদের আত্মার অভান্তরে চুইটি, প্র-দেশ আছে—একটি বহিঃস্থিত আর একটি অন্তর,হিত। বহিঃপ্রদেশটিতে **সাংসারিক** ভাবনা-চিন্তঃ অন্তপ্রহর তরঙ্গিত হইতেছে ; প্রত্যেক তরঙ্গেরই তুই তুই পার্য, এক পার্যে স্থ আর এক পার্দে তুঃখ – একপার্দে দিবা আর এক পার্থে রজনী, এক পার্থে কর্ম আর এক পাৰে ভোগ। আ**ত্মার এই** বহিঃ-क्षार्टन पर्वापकारत्या विष्ठानगर जवर মনোময় কোষ বলিয়া উল্লেখ করেন—এই বিচিঃপ্রদেশেই দেখিতে পাওয়া যায় যে,চজ-বং পরিবর্ত্ততে তুঃখানি চ সুখানি চ, সুখ এবং তুঃখ চক্রবৎ পরিবর্ত্তিত হইতেছে। বিহ্ন আ-ত্মার অন্তরতম প্রদেশটিকে শারীরিক অথবা মানসিক কোন অভাগই স্পূর্ণ করিতে পারে না, এখানে ভাবনা চিন্তা নাই-কুধা ভূষণা নাই, জরা মুগু নাই—এ স্থানটি অতি নিভ্ত স্থান, অতি নিরাপদ স্থান। বিনি জেনের সাক্ষাং আকর তিনি <u>গ্রেম-পিপাস্</u>দি**রগুর জন্য** এই স্থান স্থাবের গালয় করিয়া রাখিয়াছেন, अहे **सात्रे एमडे मिना जानत्मत छे९म**-অমৃতের উৎস—দক্ষোপিত রহিয়াছে যাহা দাক্ষাৎ প্রাণ-স্বরূপ ;—দে উৎদের কণামাত্র প্রমাদ পাইলে রোগ-শোক শান্তিতে পরিণ্ড হয়, জরা যোবনে পরিণত হয়- মৃত্যু অমুতে পরিণত হয়, — ঝাঝার এই অন্তর্তম স্থানটিই

পরমান্তার আবিভাবের স্থান-দার্শনিকের। हेरात्कहे बाननगर काय वलन। এर নিস্ত স্থানটিতে প্রমান্ত্র। তাঁহার সমস্ত প্রেম ভাণ্ডার খুলিয়া রাখিয়াছেন, এখানকার ষাহা কিছু সমস্তই সাক্ষাৎ পরমার। হইতে ষাদিতেছে – জাবন্ত স্থায়। আগিতেছে **জ্যোতির্মায় জ্ঞান আসিতেছে—** প্রধাষ্য থেম আসিতেছে; পৃথিবী হইতে কোন পালেয় मद्भ क्रिता अथारन जानियात आस्याकन नारे, এখানে আনদ-দর্রপ পর্যাত্ম) স্বয়', মৃত্যু ছত্তে প্রেমায় 5 বিভরণ করিতেছেন। তাই ত্রাকারশ্য বলিতেছেন "ইনিই অয়ত-লাডের শেহ।" কিন্তু হায় আনর। নেই এয়তের দেহুকে ছাড়িয়া নান, দিকে ধাবিত হহয়াহি, ভাই আজি আমাদের এই ছুদশ।।

(यज्ञान काला इलस्य मन्द्र-सद्धा व्यागत। ্নিক্সিপ্ত হ্ইয়াছি কাল উত্তীৰ্ণ হ্ইতে হুইলে আমাদের একখানি দৃঢ় তরণ। চাই--দেই তরণার একজন দৃঢ় কর্ণদার চাই—এবং দেই ক্ৰবিং বের ভাতি আমাদের দৃঢ় নিউর চাই। खाकादन्य स्मर्ट पृष्ठ एउदर्श, यप्रश्नमध श्रवमाणा দেই কর্ণার; ভাষার এতি আমাদের দৃচ নির্ভরের কেবল অপেক্ষা। স্থামানের নিড-রের মাত্রা পূর্ণ ছইলে-কোন ওপ্ত শৈলে আমাদের ভয় নাহ-কোন ঘূর্ণ। আবর্ত্তে আমানের ভয় নাই—কোন কৃষ্ণবৰ মেঘে व्यागाटनत छत्र नार्-वागाटनत काउति অমুতের দেতু—িতান আমাদিগকৈ অমৃতধামে উত্তার্থ করিয়া দিবেন ইহা নিঃসংশয়। আ-মাদের সমস্ত আশা ভ্রদা দেই কাণ্ডারীর হত্তে সমর্থণ করিয়া কিয়ৎকাল যাদ আমরা বৈষ্য ধারত্রা পরস্পারের হিতামুন্তানে নিযুক্ত থাকি—এবং সেই হিতাস্থান ভিন্ন আর কোন পার্থিব লাকালাভের প্রতি আমাদের मुक्त ना पाएक - छट्व पहिताद खकानटमत জাল্লবৰ জীমাদের আক্সাতে খুলিয়া যাইবে—

তথন সংকার্যের অমুষ্ঠান নিবাস-প্রখাদের নাায় সহজ ও অথসাধ্য হইয়া উঠিবে, তথন প্রস্পারের সহিত বিবাদ কলহ আন্ মাদের মন হইতে একেবারেই উল্লেড হইয়া ঘাইবে।

এইরপ ঘিনি আমাদের অয়ক্তনাকের সে**তু** তাঁহার উপর নির্ভর কর। কি ৫টিন কাৰ্যা। একদিকে ভাষা খেমন কচিন, আর একদিকে ভাহা তেখনি সহজ। বিফ-ের মায়া নব নব বেশে আমাদের মনকে বশ করিয়া এমনি ভাবশ করিয়া কেলে শে, সেই রা**ফ**দীর হল্ড এড় ইয়া উপরের ত্রোড়ে একপদ অগ্রসর হইতে গেলে চারিবিকে বিভীষিকা মুখ ব্যাদান করিয়া উঠে, এই কাবণেই ঈশরের আশ্রয়ে निर्जंत कता स्किष्ठिन। किञ्च षात्र-এकिंपिक দেখা শায় যে, নানা প্রভুর আশ্রয়ে নিভর করা অপেকা এক অদিতীয় প্রভুর আশ্রয়ে নির্ভর করা সহজ, তুর্বলৈ প্রভুর জাশ্রয়ে নি ভর করা অপেকা সর্কশি**ক্তিয়ান্ প্রভুর আ**-লয়ে নির্ভা করা সহজ, নির্দয় প্রভুর আশ্রয়ে নির্ভর করা অপেকা করুণাময় প্রভুর আশুয়ে নির্ত্তর করা সহজ, নির্কোপ প্রভুর আশুয়ে নিভর করা অপেক্ষা সর্বব্যঞ্জ প্রভূর আ**শ্র**য়ে নির্ভার করা মহজ, অজ্ঞাত-কুলশীল পর-মনুষোর প্রেন-সৌহার্দে নির্ভর করা অ-পৈকা আত্মার অন্তরতম প্রিয়তম স্থলদের প্রেমে নির্ভর করা সহজ্ঞ,—এতগুলি কারণে পরমান্তার আশ্রেমে নিভার করা দহজ।

ব্রাহ্মধর্ম আমাদিগকে শিখাইয়াছেন যে, আমাদের আবচলিত আশ্রয় নেতা ও হ্বছং আমাদের নিকট হইতে তিল-মাত্রও দূরে নহেন—তিনি আমাদের আত্রার অন্ত-রাক্সা। আমরা শান্ত দান্ত উপরত তিতিক্ এবং সমাহিত হইয়া যত্ন করিলে পরমাত্রা ক্থনই আমাদিগকে দর্শন-দানে বঞ্চিত করি-

33 WH & WIN

েবন না,—তখন, চক্ষুতে সেমন আমরা কুষ্যুর আরিভাব দেখিতে পাই—ভাজাতে দেই রূপ পরমাত্মার আবিভাবে দেখিতে পা-**हेर्न प्रस्त हक्ष्ट (**मनन मर्द्रत छेपश , ভাতি**ভাত হয় না, মে**ই রূপ মোহাজি**ন** আত্মাতে প্রমান্ত সত, তাতিভাও হয **না। গোহ-কু**জ্বা<sup>টিক।</sup> ই*টালে* আয়াদের আত্ম रथन भूक ३३११ - करान भनीत छ्या-त्मत मम्ब स १४:१मत के १७३ किंद्म शतमाञ्चा দেই আত্মাতে আবিভূত চৌৰেন,—তথন ইন্দ্রের ঐশ্বরত আনাদিগকে ভুলাইতে পা-तिरव ना -- हेला हेटल शांतिरव ना। किन्न তাহা ষত্ৰিন আ ইইতেছে, তত্ৰিন ক্ষমতা-শীল জাতির ফ্রডাশীন ব্যক্তিরা যেমন বিষয়ী লোকের চর্য সন্দল, সেইরূপ ত্রাক্স-দিগেরও তাঁহারাই একমাত গতি মুক্তির নিদান হইবেন ; ঈশরের আশীর্কাণ অণেকা তাঁহাদের অনুগ্রহ তালাদিগের অনিক প্রাথ-नीय हरेत,-डांशांद्यत पृष्टिक छित्र छेलद्र हे ব্রাক্ষধর্মের মরণ বাঁচন নিভুন্ন করিবে। ছায় আমানের কি দারুণ তুর্দ্দশা। আমরা ভার একটু লোভের কুহকে চিরজীবনের সমল হারট্যা ফেলিয়া বিদতেছি; সংসারের একটু চক্ষ রাভানিতে ঈশ্বরের হস্ত ছাড়িয়া নিপ্র মাগ্র-রাক্ষদীর অঞ্জ ধরিয়া ঘুরিয়া নেড়াইতেছি; ইংাতেই প্রমাণ হইতেছে যে ঈশবের প্রতি আমাদের নির্ভর অতি যৎ-সামানা। আমাদের রোগ আমরা স্পষ্টই দেখিতে পাইতেছি – আপুনাতেও দেখিতে পাইতেছি—অন্যেতেও দেশিতে পা**ইতেছি**, ্য এখন **আম**াদের কর্ত্তব্য এই যে, তা**হা বদ্ধমূল** 🦚 ইইতে না-হইতে তাহার প্রতীকারের জন্য প্রাণপণ চেপ্তায় নিযুক্ত হই।

প্রথমতঃ আমাদের রোগের প্রতীকার আমাদের নিজের নিজের হস্তে। প্রাত্থাতে জ্ঞানময় মঙ্গলময় পরমান্ত্রার আবির্ভার ক্রিনে

জামাদের সকল কামনা পূর্ণ হইবে এই আ-শায় ভর করিরা আমাদের প্রথম কর্ত্তব্য— আমরা চিত্তকে পরিশুদ্ধ করি, মনকৈ বিষয়-কামনা ও প্রভুত্ব-কামনা হইতে শূন্য করিয়া িত সাধন কোন না কোন কাৰ্যো নিযুক্ত থাকি। মনের এইরূপ অনাসক্ত শুনা অবস্থা কাল ক্রমে যথোচিত দৃঢ়ত। প্রাপ্ত **হইলে—** মন-আসন যথোচিত পরিষ্কৃত হইলে— করণানয় পর্যাত্মা নিশ্চয়ই অলক্ষিত-পদ-সঞ্জারে সাধকের শূন্য হৃদয়কে স্থাময় প্রেম আলিঙ্গনে পূর্ণ করিবেন। যথন সাধক পার্গির স্থাে অনানক্ত হইয়া নিরুদ্রেণে কর্ত্তরা কার্যা সাধন করিবে—এবং আন্থার নিভূত নিলয়ে পর্মাত্মার প্রেমামৃত পান করিয়া অপার শান্তিতে নিমগ্ন হইবে, তথন **ঈ**গুরের তাশ্চর্য্য মঙ্গল নিয়নের অনুশাসনে সমস্ত জগৎ সেই সাধককে অথে র।থিবার **জন্** ব্যতিবাস্ত হইবে, তরুলতা প্রস্তর পায়াণ পর্যান্ত ভাঁহার সহিত মধুর সম্ভাষণ করিবে। তাপূর্যামাণমচলপ্রতিষ্ঠং সমুদ্রমাপঃ প্রবিশক্তি যদৎ, ভদৎ কামা ধং প্রবিশক্তি সর্কেশ্য শান্তিমাপ্রোতি न कायकाशी।

আপূর্যমাণ জচল প্রতিষ্ঠ সমুদ্রে যেমন নদী সকল প্রথাবিত হয়, সেইরূপ আপনা হইতে সমস্ত কাম্যবস্ত আসিয়া যাহাকে আ-লিক্সন করে, তিনিই শান্তি প্রাপ্ত হ'ন, যিনি কাম্য বস্তর পশ্চাৎ লালাঁয়িত হইয়া ঘূরিয়া বেড়ান তিনি নহেন।

দিতীয়তঃ, আমাদের মেনের প্রতীকার পরস্পারের সাহাযোর উপর নির্ভন্ন করে। আন্দ্র ভারা যদি সমস্ত বিবাদ-কলহার স্মৃত হইয়া পরস্পারের আন্সার শান্তি-সাধ্যে এবং উন্নতি-সাধনে সহায়তা করেন, তাহা হইলে পরমান্ত্রা স্বয়ঃ শান্তি এবং আরোগোর দার উদ্যাটন করিয়া আন্তানের মধ্যে বান্ সন্মিলন যথার্থই আনন্দের সন্মিলন হইয়। উঠে কল্যাণের সন্মিলন হইয়া উঠে।

তৃতীয়তঃ; রোগ-প্রতীকারের প্রধান
তিপায়—সরল-ভাবে ঈশ্বরের প্রসাদ প্রার্থনা
করা। সরল হৃদয়ের প্রার্থনা নিশ্চয়ই
পর্মাত্মার আবিভাবের দার খুলিয়া দিতে
পারে; কেবল এই এক বিষয়ে সাবধান
হওয়া আবশাক যেন সে প্রার্থনার সঙ্গে
বিষয়-কামনা কিয়া প্রভুত্ব-কামনা মিশ্রিত
না থাকে,—তাহা হইলে তেমন মহোপকারী
ঔষধ খুঁজিয়া পাওয়া ভার। সে রূপ নিকাম প্রার্থনা ঈশ্বরের করুণাকে এমনি ঘনিপ্র
রূপে আকর্ষণ করে যে, প্রার্থনাট নিজেই
ঈশ্বরের করুণা রূপে পরিণত হয়,—তথন
সাধকের প্রার্থনা এবং ঈশ্বরের করুণা এ

তুয়ের ময়া হইতে ভেদ-ব্যবধান একেবারেই
চলিয়া য়য়।

হে পরমাত্মন তোমার প্রামম মুখ-জ্যোতি অনারত করিয়া আমাদের সন্মি-লনকে তোমার সাম্মলনের দার কর, তুমি যেমন দেতু স্ক্রপ হইয়া সমস্ত জগৎকে धात्रग कदिशा আছ, मেইরূপ আমাদের मक-লকে তোমার প্রেম-নিকেতনে ধারণ করিয়া রাথ—যেন আমাদের জ্বয় ছিল ভিল্ হইয়া দশদিকে প্রধাবিত না হয়। তোমার আশী-र्वापरे जागादपत এकगाव भराय भरान-ভূমি প্রসন্ন হইয়া আমাদের সকলকে পাপ তাপ হইতে মুক্ত কর—আমাদের তপ্ত হৃদয়ে শান্তি-মুধা বর্ষণ কর; তাহা হইলে আমা-**(मंद्र ७क क्षमध**्विक्रमिण **स्ट्र**रव—निर्कीव আত্মা সজীব হইবে—এক দিনের এই সন্মি-ন্ন আমাদিগকে অনস্ত জীবনের পথে অগ্র-সর করিয়া দিবে—তোমার চরণের স্মালয়ে आमहा नकल पूर्थ लाहि जूनिया हैर जीव-নেই অমৃত-নিকেতন লাভ করিব।

্ও অক্যেবাদিজীয়ং।

#### शीन।

রাগিনী বাহার। ভাল খং।

জর জীবন্ত জাগ্রত প্রকা জলন্ত পাবন।
ভূমি দেবদেব মহাদেব সভা দনাভন।
জড় জীব একভানে, নানা ভাবে নানা স্থানে,
ভোমার মঙ্গল নাম করিছে কীন্তন।
গন্তীর বিরাট মৃদ্ধি, সর্ব্বগত গৃড় শক্তি,
মহাভেজ জাদি জ্যোভি কারণ-কারণ;
ভামার জীবন খামী, এই ভো সম্মুশে ভূমি,
দেহি নাথ দান জনে অভয় চরণ।

রাগিণী পরজ। তাল একডালা। মা জগত জননী। বিশ্বজনবন্দিনী, বিচিত্র গুণধারিণী চৈতন্যরূপিণী।

লগে প্রেমকোলে সকল সন্তানে,
করিছ পালন স্নেহ-তুগ্ধ দানে,
শ্বরণে তোমায় উথলে হৃদয়
ওগো হৃদয়বাসিনী।
হয়ে কল্লতক্ষ কর বিতরণ,
অন্ন জল জ্ঞান প্রেম প্রা ধন,
দীন ভক্ত জনে দেও দরশন ভক্তচিক্তহারিণী;

রপের ছটায় বিজলী চমকে, করে ঝলমল জলে চারি দিকে, কোটি দূর্যা প্রভা অকুপম শোভা প্রতাপে কম্পিত ধরণী।

বিষ্টি। একতালা। একবার তোরা মা বলিয়ে ভাক্, জগত-জনের প্রবণ জুড়াক্, হিমাজি পাষাণ কেঁদে গলে যাক্,

মুখ তুলে আজি চাহরে।

পাঁড়া দেখি তোরা আত্মপর ভূলি,
ফদয়ে হৃদয়ে ছুটুক্ বিজ্বলি,
প্রভাত গগনে কোটি শির তুলি
নির্ভয়ে আজি গাহরে।

-> 35. 9.0019

বিশ কোটি কঠে মা বলে ডাকিলে রোমাঞ্চ উঠিবে অনন্ত নিথিলে, বিশ কোটি ছেলে মায়েরে ঘেরিলে

দশদিক্ প্রথে হাগিবে । সে দিন প্রভাতে ন্তন জপন মৃতন জীবন করিবে স্পান, এ নহে কাহিনী এ নচে অপন

আদিবে দে দিন আনিবে। আপনার মাতে বা বলে ডাকিলে, আপনার ভায়ে ধর্মে রাখিলে, সব গাপ তাপ দুে নাম চলে

পূণ্য প্রেমের বাতাসে।
সেগায় বিরাজে দেব আশীর্কাদ
না থাকে কলম্ না থাকে বিবাদ,
মুলে অপমান, ক্ষেগে ওঠে প্রাণ

বিষল প্রতিভা বিকাশে॥

রাগিণী বাহার—ভাল এক গ্লা।

পিতার তুয়ারে দাঁড়াইয়া সবে ভূলে যাও অভিমান।

এস ভাই এস প্রাণে প্রাণে আজিরেখো-নারে ব্যবধান।

সংসারের ধূলা ধূরে ফেলে এস মুখে লয়ে এস হাসি,

হৃদ্যার থালে লয়ে এদ ভাই প্রেম ফুল রাশি রাশি।

নীয়দ হৃদয়ে আপনা লইয়ে রহিলে তাহারে ভুলে,

অনাথ জনের মুখপানে আহা চাহিলে না মুখ তুলে।

কঠোর আঘাতে ব্যথা গেলে কত ব্যথিলে পরের প্রাণ।

তু**ছ কথা নিয়ে বিবাদে** মাতিয়ে দিবা হল অবদান।

তাঁর কাছে এনে তবুও কি আজি আপ-নারে ভুলিবে না। হাদয় মাঝারে ডেকে নিতে ভারে হাদর কি খুলিবে না।

লইব বাঁটিয়া সকলে মিলিয়া প্রেমের অয়ত তাঁরি,

পিতার অসীম ধন রতনের সক্রেই অধিকারী।

#### কীর্ত্তন।

বল শান্তি শান্তি শান্তি হার।
শান্তিপ্রদ হরিপদ হিয়ামাকে ধরি।
হরি যার বন্ধু তার কেহ নাই অরি;
দেখে দর্ব্ব ঘটে চিদানন্দের লহরী।
যুচে গেল ভেদাভেদ, মিটিল মনের খেদ,

'পোহাইল ডুণের শর্কারী; কেছ নয় পর তবে কেন মনে করি; হাদয় ভিতরে স্বানিধ প্রাণভরি।

( याभनग्रस्त्र )

#### সাংবৎসরিক ত্রন্ধোৎসব।

#### >> মাথ প্রাতঃ**কাল**।

সূর্ব্যাদয় হইতে না হইতে সমাক্ষ্যহ লোকারণ্য হইয়া উঠিল। অনেকে স্থানা-ভ'বে দাঁড়াইয়া রহিলেন এবং জনেকে দাঁড়াইতে না পাইয়া তুঃখিত মনে প্রস্থান করিলেন। আমরা সমাজ গৃহে এরপ লোক-সমাগম কখন দেখি নাই এবং এলোৎস্থে এমন উৎসাহও কখন দেখি নাই।

অনন্তর ষথাসময়ে ভক্তিভাজন আচার্দা শ্রীযুক্ত বিষ্ফেন্দাথ চাকুর শ্রীযুক্ত সভ্যোক্ত নাথ চাকুর শ্রীযুক্ত বেচারাম চট্টোপাধ্যায় বেদি গ্রহণ করিলে শ্রীযুক্ত হেমচন্দ্র বিদ্যারত্ব বেদির অভিমুখে নিম্নোক্ত বিষয়টা পাঁঠ ক-রিলেন।

এক দিন আমি কোন গৃহত্ত্ব গৃছে
গিয়াছিলাম। গৃহপতি বৈদ্ স্থানীর।
গৃহ এখনকার মানারূপ উপাহরতে সুস্তিত।

কিন্তু গৃহপতি তুই এক কথার প্রাপ্ত করিয়া আমার কহিলেন আমি আপনাকে আমার বড় মত্রের তুই একটা বস্ত দেখাইব। এই বিলয়া তিনি একথানি জার্ন হস্তালপি ও একটা নম্যের শন্তুক বাহির করিয়া কহিলেন আমার উর্জ্জন সপ্তর্ম অমুক একজন দেশপ্রদিদ্ধ পণ্ডিত ছিলেন। এই তাহার সহস্ত নিথিত গোত্ম সূত্র আর এই ভাহার ব্যবহাত নদ্যের শন্তুক। এই তুইটা বড় আমার যত্রের ধন। আমি বিশ্বরাজ্যের প্রথা পাইলেও হহার বিনিম্যে লইতে পারিনা।

এই ব্যাপারে ব্রিলাম প্রাচীনতার প্রতি অতুবাগ মতুষ্যের একটা সভাবদিদ্ধ ধর্ম। ষার পূর্বা পুরুষের কিছু অবশেষ থাকে সে তাহার যত্ন করিয়া থাকিতে পারে ন।! **ফলত** যাহ। ব্যাপ**ক মা**ত্রায় কাল অধিকার করিয়া আছে তাহা বাস্তবিকই একটা গৌ-বস্তু। এ দেশে তো অনেক রক্ষিত হইয়া আদিতেছে কিন্তু তংগত্তে বে-দের এত গৌরব কেন ? ইহাব অবান্তর কা-রুণ যাই থাক্ কিন্তু সর্নবাত্রে বলিব প্রাচী-ेंनजा। ফলত প্রাচীন বস্তুর গৌরব কর। मनुत्याद संडाविभिक्ष धर्मा। जानात्क मान করিতে পারেন ইহা একটা মুমতের কথা মাত বটে কিন্তু ইহাতে ওটিতা কি মাছে? আমরা বলি ইহাতে ঘথেপ্ট ঐচিতা আছে। সচরাচর এমন অনেক কার্যা দৃপ্ত হয় খাহার মধ্যে কতকগুলির কারণ অব্যক্ত এবং কতক-গুলির বাক্ত। কিন্তু প্রাচীনতার প্রতি অ-সুরাগ একটা বাজে-কারণ। মনুষ্য-জন্মের ৰাহা ককা এই অসুৱাগ ৰাবা তাহার অধি-कार महि मिन हरा।

তাবের ক্ষেত্র। বানে কর রখন পূর্বন ভানের কোন একটা সাহত ভাগার নাই কেই সময় দক্ষা এই কিচন্তা কনো বিশকে

দেখিয়া অন্তশন্তি উস্ফ্রাসে যে সকল ফুল ফুটাইয়া নিয়াছে যুগযুগান্তের কত রাই-বিপ্লবের পরও সেই পুডেপর সেই কাওি সেই গন্ধ আমরা যেন নৃতনের নাাম ভোগ করিতেতি। তাঁহাদের সেই গভীর উস্ফ্রাসেনিজের উস্ফ্রাস মিলাইতেছি এবং সেই এন বাঢ় আনন্দে আত্মবিষ্কৃত হইয়া ষাইতেছি।

দিতীয় ইতিহাস। অতীতের সফ্তি
বিভ্যানের যোগকে ইতিহাস বলা যায়।
মনে কর গেই আদি কালের তুরস্ত শীত
বাতাতপের মধ্যে প্রচণ্ড হিংল্ল জন্ততে পরিরুত হইগা লোকে নিরলঙ্কার সরল কথায়
যে মকল পতা ব্যক্ত করিয়া গিয়াছে আজ্ব
এই জ্ঞান বিজ্ঞানের তীত্র আলোকে প্রকৃতির সকল প্রকার কটোরতা হইতে সুরক্ষিত
নির্দিশ্ব নম্যে সেই মুমন্ত স্তাই আমাদের
উপজাবা হইতেছে। ফলত শ্ররণাতীত
অতীকের বৃহতি বর্ত্তানের এমন সুন্দর ও
গাত গোগা আর কিছ্তেই নাই।

कृ शेव मगाज। अत्मरकत्र मश्कीत वह (ग. वर्त्तमान मनूरगात ममष्टि मनूषा-ममा**छ ।** किन्न এইটা 👣 ভুল। মনুষোর नानीजाश চিন্তার দাত প্রতিদাতে যে একটা ভাব বা প্রকৃতি বদ্ধুল হয় **তাহার সহিত যে মনুষ্-**সমষ্টি মুখা অর্থে ভাষাট মনুষা-সমাজ। সমাজের এই প্রাণটী ছাড়া কি সভা কি অ-ন্ত্য কোন সমাজই ন্যাজপদের বাচ্য হইতে পারে না। মনে কর মঁকুষা বলিলে আমর। কি বৃঝি। আমরা কি মনুষা বলিতে একটা মুখ চকু নাদিকা বিশিষ্ট জীবমাতকে বৃশিং না তাহার সহিত ভক্তি শ্রন্ধা মেহ দয়া প্রভৃতি আবাজিক প্রকৃতিকে মনুষা বলিয়। व्या ? घिन छोटे भन्या हा। छत्व भन्या-**জনাজের পক্ষে** এই মূল নিয়মের ব্যভিচার কেন । নানারপ চিন্তার ঘাত প্রতিঘাতে সমু-খিত ভাবের বা প্রকৃতির সহিত বে মনুনা-

সমষ্টি প্রকৃতি পাক তাহাই সনুষ(-সমাজ। এখন দেখা উচিট্ট এই যে চিন্তার গাতগ্রতি ঘাতজ প্রকৃতি ইটার মূল বি সক্ষামে বদ্ধ না অতীতের গভীরে প্রামারিক গ স্বশা हिल्ला मकरलई खाटनम एर वर्छमारम आधारमंत्र জ্ঞানের অধিকাংশট প্রদূরপরপারাগত জ্ঞান। আমরা কেবল দেই গুলিকে ব্যবহারে জ্ঞান। भाभाष्टिक एक्षिका ८०१ न्हें वल अहे मूर्व ম তাহা দাঁড়াইটা বলে। পাতরাং যথন মনুষা-সমাজ বলিতে মনুষা-সমষ্টির সহিত সেই সামাজি গুরুতি লক্ষিত হয় তথন ইহা স্থির मिहास (य वर्त्तगांन मनुया-मगार्कत मृल (महे जाि काल्बर मसुया-ममाक। (महे স্থান হইতে চিম্ভার তরস্থ অনিক্রন স্লোতে वल्यात्न णामिशा মিলিতেছে। ভাবিষা দেখ মনুখা-সমাজ বলিলে তা-হার গভীরতা ও প্রদার কত দূর। ইহ। একটা অপার শতলম্পর্ণ সম্দ। কিন্তু সমু-দের কতকঞ্জি জলীয় প্রমাণ্যাত্তকে যেম্ম সম্ভ্রনা যার না, প্রত্যুত সমুদ্রের দিগন্ধ-ण्यांनी विनाल वटक ममछ छलीए शहरान्त গত প্ৰতিবাতে যে আকাৰটী দাঁড়ায় ভাছাই সমুদ্র মনুষ্টসমাজও তদ্রপ, অভীতের छपर मन्त्रमात्र हेशात शूर्वरणीत এवः वर्छ-মান ইহার উত্তর তীর। কালের এই প্র-কাও বক্ষে তরঙ্গের উপর তরঙ্গ উথিত হইয়া যে বিশ্তীর্ণ আকার দাঁড করাইয়াছে মণুষা-দ্যাথা ব্ৰিতে তাহাই ব্ৰাইবে। যল দেখি মূল সভাকে ছাড়িলে সৃষ্টির আর্থ বুঝা যায় কি ?, সমাজও একটা প্রকাত সৃষ্টি স্থারাং অতীতের মনুষ্য সংগজকে ছাড়িলে বৰ্জনাৰ মনুষ্য-সমাজ কিল্লপে বুঝিনে !

ष्ठ्यं कीवन। यन्त्रात पूरे श्रकात ब्योर्स क्रुकिंगे देनहिक व्यश्रदेश আधाश्चिक। দৈয়িক ভীবন কিছু পূৰ্ব্বে আরম্ভ হইয়াছে

আধ্যাত্মিক জীবনের মূল সেই অতীতে। যনে কর উর্দ্ধতন পুরুষের। নানা রূপ কঠো-বতা সহা করিয়া যে অমূল্য ধন রাঝিয়া গিয়াছেন যদি কোনরূপ বিপ্লৱ তাহা অপ-হরণ করিত তবে না জানি আমাদের কি তুর্দ্দশাই ঘটিত। অতীতের মূল হইতে নির-ন্তর রস আকৃষ্ট হইতেছে বলিয়াই আমথা অল্লায়াদে এই আধাৰ্মিক জীবনকে ফলবং দেখিতেছি।

এখন বৃষ প্রাচীনভার প্রতি অনুরাগ সভে-কারণ কি না। ধার অভীতটা **উদ্দল** তার মনে ফলবতই এই অনুরাগ প্রবল। এই তো আজ এই স্থানে বহু সংখা লো-কের সমাগণ হইয়াছে। ইহাঁদের মধ্যে কেহ সাহ্য করিয়া বলুন দেখি আমি ভাষ্টীয় হৃদয় জাতীয় ইতিহাস জাতীয় সমাজ ও জাতীয় कीरन हाशि न।। যদি না চাও তথন জিজ্ঞাসা করিব মমতা নামে যে একটা কথা আছে তাহার ক্ষেত্র কোথায় ? 'যার মমতা নাই সে অসম্পূর্ণ মনুষ্য । স্থতরাং ম**র্তা** যখন অপরিহায়্য তথ**ন প্রাচীনতার চিরকালই** গৌরব থাকিবে।

मठा (पन कोटल दक्ष नग्र। এই जामि ব্রোক্সদমাজ সেই বিশ্বজনীন ব্যাপক সড্যের একান্ত পক্ষপাতী। কিন্তু প্রাচীন ভারতে বহু-সাধনায় এমন সকল সত্য সংগৃহীত হইয়াছে যে তাহার প্রভা কোন কালেই মলিন হইবার নহে। কালের হস্ত ভাষার নিষ্ট পরাজ্ঞ এই প্রাচীনতার বিরোধী সময়ে এই প্রকর্ম আদি ত্রাক্ষাসমাজ সেই সমস্ত সত্যের বার্ সমাদর করিয়া আসিতেছেন। বলিজেকি এখন প্রবল পাশ্চাভোট্ট বন্যা আনেশের 🖘 নেক বত মূল্য বন্ধ কোথায় ভাসাইয়া লইৱা গাইলেছে কিন্তু এই আদি বাজসনাম তুর্বে वीरवंत्र नार्ध्य भारत भारत प्रशासन । विश्व এবং দিউক দিন পরেই শেষ হইবে। কিন্তু । পাশ্চান্ত্র কুজ্মটিকা দৃষ্টি আছে করিয়া এছ-

দেশীয় অনেককৈ অন্ধকার পথে লইয়া যাই-তেছে কিন্তু এই আদি ত্রাক্ষসমাজ হিমালয়ের ম্যায় ধার ও স্থির। মহাত্মা রামমেহন রায় প্রাচীনতম প্রষিদিগের হাদরজাত যে অগ্রির ক্ষমাবগুঠন অপসারিত করিয়া প্রস্কার স্থালাইয়া দেন দেই অগ্রি কিছুতেই নির্মাণ স্থার নয়।

এই আদি ভাক্ষসমাজের লক্ষ্য সন্তিন সত্যধর্ম এচার। <sup>\*</sup>ইছা আবহ্মান কাল দেই ত্রত নির্মিলে বহন করিয়া আমি-তেছে এবং আশা করি ভাষী জীবনেও কিন্তু এই ভারতের অ-তাহা করিবে। তীত ইতিহাস পাঠে দেখা যায় যুঁগে যাহা ছিল মধ্যযুগে তাহার সমাক নাই। কাল ও অবস্থার প্রভাব তাহার বক্ষে কিছু কিছু পরিবর্ত্তন খানিয়াছে। কিন্তু সেই সমস্ত পরিবর্তনের স্ক্রানুস্ক্র অব্নস্কান করিলে দেখা যার যেন তাহা মূল প্রক্ল**িকে** ছাড়িয়া নয়। একটা রক্ষের শাখা কাটিলে বেমন অপর এক শাখা তাহার স্থানে উপিত ছটিয়া গুণে ও সৌন্দর্যো স্থাণুর অনুরূপ হয় ঐ সমস্ত পরিবর্ত্তনও সেইরূপ। দেশাবচ্ছিন্ন ভাবের মৃহিত কোন অংশেই তাহার বৈদা-मुना गते नारे। এই चानि खाक्रमगाज यनिए প্রাচীৰভার পক্ষপাতী কিন্তু সময় যদি কোঁন পরিবর্ত্তন চান তবে তাহা প্রাচীন রীতি ক্রমে रम्भाविष्टम छारवत সहिं गर्काशी गाम्भा রকা করিয়াই সাধিত হইবে এবং হইতেছে। ৰাই হউক প্ৰাচীনতাৰ প্ৰতি পক্ষপাত আছে বলিয়াই আজ শত শত কুত্রবিদ্যা হিন্দু পরি-বারের ইহার উপর প্রগাঁড় শ্রহা। যদি এই ুপুৰভূমি ভারত কেত্রে প্রাক্ষামান দারা **∤কোনও কৰাৰে সাধিত** হয় তবে তাহা এই আর্মি ভাক্তবারে বার। হইবে কারণ ইহার M day for the

সাস সামি বাহা পঠি করিব ইহা একটি

लाहीन खेल्एम। यमिछ हेह। एव नदमूत পূর্বে, যখন এই গৃহ প্রতিষ্ঠিত হয় নাই **मिरे मगरा, এই खाक्रमगार्थ नितृष्ट इस्दा-**ছিল কিন্তু প্রকৃত পক্ষে ইহার জন্ম গে কোন -কালে ভাহার কিছুই নির্ণয় হয় ন।। ইহা একটা প্রাচীনতম উপদেশ। প্রবির যখন প্রকৃতির ভয়মোহকর দুশ্যে আর্রাব্সুদ इंग्राफिटलन हेटा (म. मन्दरत नटर्। যণন ভাঁহার৷ এই প্রকৃতির অভান্তরে সত্রাক্স ক্রাপে পুরুষকে পাইয়া উৎদাহ সরে কহিয়া-ছিলেন "েনাহমেতং পুরুষং মহান্তং" ইহা দেই মুমুরের : **অভি** প্রাচীন -কালে লোকের জড়নেত ভেদ করিবার নিমিত ইহার সৃষ্টি, কিন্তু ৫৭ বংগর পূর্বের্য লোকের মূর্তিযোহ . ভেদ করিবার নিমিত্ত ইহার অবতারণা। লক্ষ্য উভয়ত্রই এক, বিভিন্নতা এই যে প্রাচীন কালে একমাত্র জন্মবাদিনী ইচার লোতা ছিলেন কিন্তু আজ পরম দৌভাগা যে এইস্থানে বহুসংখ্য ভ্ৰম্মবাদিনী ইছা শুনি-বেন। আমি তাহা অতি উৎনাহের সহিত পড়িতেছি তোমনা সকলেই শুন।

ইহার পর পরলোকগত রামচন্দ্র বিদ্যাণ বাগীশের একটা উপদেশ পঠিত হইয়াছিল। পাঠকের কোতৃহল থাকিলে তাহা ১৭৭১ শ-কের একথানি মুজিত পুস্তক দেখিয়া লইতে পারেন।

#### সঙ্গীত।

রানিনী টোড়ি। ভাল চিমা ভেতালা।
শান্তি সমুত্র ভূমি পভীর
অতি অগাধ আনন্দ রাশি।
ত্যেমাতে সব তুঃখ জ্বালা করিব নির্বাধ,
ভূলিব সংসার—
অসীর স্থ সাপরে ভূবে যাব।
রানিনী যোগিঞা। ভাল কাওয়ালি।
নিশি দিন চাহরে ইবি পানে।

বিকশিবে প্রাণ তার গুণ গানে। হেরবে অন্তরে দে মুথ স্থলর, ভোল তুখ তাঁর প্রেমমধু গানে।

মিশ্র ললিত। একতালা। ভাকিছ শুনি জাগিসু প্রভু

ভাষিত্ তৰ পা**ৰে।** 

আঁথি ফুটিল চাহি উঠিল

তরণ-দরশ আনে।

খুলিল দার তিনির ভাব

नुत्र रहेन जारम।

হেরিল পথ বিশ্ব জগত

शाहेल निज्वादम।

বিমল-কিরণ এেম খাঁথি

ञ्चमत भत्रकाटन ।

নিথিন তার অভয় পায়

দকল জগত হানে।

কানন সব ফুল আজি

गৌরভ তব ভাগে।

मुक्ष-कारम मा मार्थ

এথ্রম-কুম্বন-বাদে।

উ**ন্ধান য**ত ভকত সদয়

যোহ তিমির নাশে।

দাও নাথ প্রেম-খমূত

বঞ্চিত তব দামে।

খনন্তর উপাদনা সনাপ্ত হইলে প্রদান স্পান প্রীযুক্ত বেচারাম চট্টোপোধ্যায় ব্রাহ্মধর্ম এবং ভক্তিভাজন শীযুক্ত নত্যৈক্রনাথ ঠাকুর ব্যাখ্যান পাঠ করেন। খনন্তর ভক্তিভাজন আচার্য্য প্রীযুক্ত হিজেন্দ্রনাণ ঠাকুর মধুর সন্তীর সরে এই উপদেশ পাঠ করিলে

তরণী ভগ্ন-প্রায় – সমুদ্র অপার – অন্ধ্রনার বজনী – বিচাতের উথেষে তরগভন্ধ শকায়মান হইয়া দেখা দিতেছে — কোথায় কোন্
গুপ্ত শৈল তাহার কিছুই ঠিকানা নাই ক্রান্
সমর্যে যদি কর্ণধার কেই না থাকে তবে ক্রোন

কার কি বিষম তুর্বিপাক! আমাদের দৈলের এইরূপ ভয়ানক ডুর্বিপাক উপস্থিত—ঈশর षागादनत काछात्री ना इहेटन चात्र षागादनत গতি নাই। আমরা মোহান্ধকারে আরত হইয়া হৃদয়-তরণীর কর্ণধারকে দেখিতেছি না ভ**য়ে** শোকে নোহে ব্যাকুল হইয়া জন্দৰ করিতেছি—যাহাকে সন্মুথে পাইতেছি তা-হাকেই কর্ণধার নিযুক্ত করিতেছি –বিপদ এড়াইতে গিয়া বিপদ্কে দ্বিত্তণ করিয়া তুলি-তোছ,—দেখিতেছি না যে করুণাময় কর্ণ-ধার হাল্ ধরিয়া আছেন, কেহ ভাঁহাকে না দেখুক তিনি সকলকে দেখিতেছেন তিনি দকলের উদ্ধারের পথ উন্মুক্ত করিয়া দিতে-ছেন! এক দিকে বিল্প-বিপত্তিময় সংসার-দাগর অার এক দিকে পরমাত্মার অপার করণা, সংসার-দাগরের গর্জন আকালন यिथा - शतरमध्यत कर्नगारे मजा माजा বালককে বিপত্তি হইতে র**ক্ষার জ্বন্য ভয়** দেখান কিন্তু বালক যখন কাঁদিয়া তথন তাহাকে ক্রোড়ে করিয়া কত না সা**ন্ত**ুনা করেন; সেইরূপ আহরা যথন পার্প-ছুদে পড়িয়া ঈশ্বনের রুদ্র মুখ দেখি, এবং ভ**য়ে** শোকে তাপে বিহ্বদ হইয়া কাপিতে থাকি তথন পতিত-পাবন পারমেশ্বর **ভাঁছার অন্ত**্র ময় প্রদন্ন মুখ দেখাইয়া আযাদের ব্লীভ শ্রী-रतत कोवन मकात करतन। <u>कालार</u> एनद एनट কিয়ৎকাল পূর্বে সংসার-সমুক্তের ক্রম ধ্যান এত তুর্দান্ত, হইয়া উঠে নাই বিশ্বেক ছদয়-তরী যখন এত ভগ্ন হয় স্থান लाक द्रथ-भगात भन्न हिन - कान हरेए यायापिशटक भावसान कतिरान कना व কৰিবৰ আক্ষাৰণ ক্ষানাৰ পাটাৰত্বী আমাদের নিকট প্রেরণ করিয়াছেন। বিকর ञ्च प्रथ मन्त्रम् विश्रम नक्षेट् कृतः कृतः नगरवत जेनदंत कृतिएएएए निकेद्रात नगरवा ीरन मिन मा बाँटर-दिशदका "मा

धमन किन ना बटव ; — धर्यन जात जामार कर নে দিন নাই এখন সংসার-সমুদের উত্তাল তরকৈ অধ-পদা টলমলায়মান, এক এক ু নেঘের শ্রেপানে সাজ্বনার দিক্ অন্ধকার হইয়া যাইত্রেছ —এক এক বিত্যুতের উদোধে বি-্রেপ্রের রক্ষাত্র মুখ ব্যাদান করিয়া উঠিতেছে, ভার্মধর্ম-ভেলা অবলম্বন করিবার এই মুখ্য সুময়। এখন আর এ কথা বলিবার সময় নাই বে, "আজিকের রাত্রি নিজা যাই, কাল প্রত্রে উঠিয়া ভেলা অবলমন করিব ্র" কর্ণার ত্রাহ্মধর্ম্মরূপ ভেলা লইয়া উপস্থিত, যে-ভেলা কাল-ভরঙ্গের অধীর তাড়না হেলায় অতিক্রম করিয়া আমাদিগকে অমৃত সাগরে উত্তীৰ্ করিয়া দিবে – নেই ভেলা লইয়া উপ-স্থিত – এখনি আইস আমরা তাহা অবলমন্ করি—এখনি আমরা নিরাপদ কুলে উপনাত रहेत!

ব্রাক্সর্পর ভেলার উপকরণ সকল বত প্রা-घोन का**ल इंडेट क्रिक्** ही **ड** इंडेग्राटह। উপকরণের গুণে মিদর দেশীয় পায়াণস্তুপ তিরস্থায়ী হইয়া ইউবোপের ক্ষুত্র কারী-ক'রীর প্রতি প্রবীশোচিত হাস্য করিতেছে— त्म अनकार वा क्छ मृत्। (ये अनकतत्व छत्। हिमानसं ज्ञाकारन मुक्क छत्छानन করিয়া এক ক্লাকে পৃথিবীর সমস্ত জল-স্থল প্রা/বেক্ষণ করিতেছে - ভাহাই বা কত দৃত্। /এখন যে উপকরপের কথা বলি-তেছি তাহী কালের কোল ধার্ট ধারে না— তাহা দত্ত সভাই খন্ত-কাল চিরম্বায়ী। याहा जानीत जिकि मुन-गहा महार जाका-শের সমস্ত কালের সমস্ত অগতের ভিত্তি মুল-তাহার ন্যায় দৃঢ় উপকরণ অস্থায়ী বি-যয়-রাজ্যের কুরাপি মিলিতে পারে না,--खाक्र प्रकर एन। सरे निय-निषदी काल-, विम्ने क्रिक्टर गठिए-एन्डे ट्लम या-वा अस्ति वाहें न वासना এहे चाश्रम-

সাগরেঁ নিরাপদ হই। আমাদের হৃদয় ত রণীভগ্ন-প্রায় নাংসার সমুদ অপার —বিদা। বিস্তাতের উদ্মেহে তরক্ষ-ডক্ষ শক্ষায়মান হইয়া দেখা দিতেছে—কোণায় কোন্ রিপুর গুপ্ত শৈল ভাষার কিছুই ঠিকান। নাই— এইবেলা আইস আমবা আলাধর্ম তিলার কর্ণিরেকে কর্ণাময় পরব্রক্ষকে অক্ষায়ন করিয়া নির্বিদ্ধে ভরিয়া যাই।

ত্রিক্মতং স্থাপা সমং শরীরং স্থীলিয়াণি মনস্ স্থিনেশ্য রক্ষোচ্পেন প্রতরেত বিহান্ লোভাংসি স্ কাণি ভ্যাবহানি।

হে পরসাত্মন্ আমরা অদ্য তোমার বিগ-বিজয়ী করুণাব ভিখারী **হইয়া** স্থাগত হইয়াছি—লোমার প্রদন্ধ মুখ দেখা দিয়া আমাদের হাদ্য-বেদনা অপহরণ কর। যথন আমাধের দেনের প্রতি দৃষ্টিপাত করি — যাপনার হৃদরের প্রতি দৃষ্টিপাত করি তথন এই জন্দন-প্রান আকাশ ভেদ করিয়া উণিত হয় "গভীর বেদনা অম্বির প্রাণ ক-রছে আগারে শান্তি দান!" তোমার প্রেমা-মৃত—তোমার কক্রণামূত আমানের **তপ্ত হা**দ-দের শান্তি-পীয়ুষ। এককালে আমরা সক-লকে ছাড়িয়া যাইব--সকলে আমাদিগকে ছাড়িগা যাইবে—তথন যেমন তোমীর ক-রুণা গ্রামাদের একমাত্র বল-এক মাত্র সম্বল —একমাত্র ভরদা, এখনো ভেমনি ভোমার প্রেমায়তই আমাদের একমাত্র শান্তি-বারি; দংদার-দাগরের ভীষণ তরুর উত্তিত হইয়া चामात्तव रानंत-छत्नी छश्च कतिया निरंज्दण, তোমার করণাই আমাদের একমাত্র বল-ভরসা। তাই আমন্ধ্র ক্রোয়াকে ডাকিতেছি "बावित्रविक धार्य क्या गटक मिक्न मूर्यः ट्रन मार পাহি নিত্যংশ 😘 👵

আমাদের নিকট প্রকাশিত হও—তো-মার যে প্রসন্ন মুখ তাহা দারা আমাকে সর্বা– দাই রক্ষা কর।

ওঁ একমেবানিতীয়ং।

33 **484** 578

এই সময়োপযোগী সারবৎ উপদেশের পর সঙ্গীত আরম্ভ হইল। শেওশাক। ঝাঁপভাল। আশ্চর্যা দেখি এক যোগী কলিগুহায়, নিখিল জগতে এক আনন্দ বারা। অতি ধীর গজীর আপনে আপনি স্থির না সেথায় দিন ভায় না নিশীপ তার।। নাহি বাকা দেখা যায়, ভাবনা ভাবে মিসায়, দেশ-কাল করি দূর প্রেমরণে ভরপুর মগন ভক্ত চিত আপন-হারা। রাগিনী কুকভ—ভাল গামার। আর গো কত ঘুরি হইবে সারা वरन दरन भएग भएग चारत चारत । কে আছে নিজধামে দেখরে ফিরিয়ে, প্রাণে প্রাণ পাইবে হেরিয়ে॥ রাগিণী ধুন। ভাল ঠুংরি। অন্ধ জনে দেহ আলো মূত জনে দেহ প্রাণ। তুমি করুণায়ত-সিন্ধু कद कद्भगा-क्शा मान। শুক হানর মম, কঠিন পাষাণ্সম প্রেম সলিলগারে সিঞ্ছ শুক নয়ান। গে তোগারে ভাকে না হে ভারে ভূমি ডাক ডাক। তেশ্যা হতে দুরে যে যায় তারে ভূমি রাখ' রাখ'। ত্বিত যে জনশফিরে তব স্থ্যাদাগর তীরে, জুড়াও তাহারে স্নেই নীরে সুধা করাও হে পান। ভৌমারে পেয়েছিমু যে কখন হারাতু অবহেলে, কখন্ ঘুমাইসু হে পাঁধার হেরি জাখি মেলে। বিরহ আনাইর কায়, 🐇

माख बादक मित्र हो।

বরষ বরষ চলে যায় হেরিনি প্রেম বয়ান, **पत्रभन पाछ इ पाछ इ पाछ** काँदि क्षा सियागाव। রাগিনী ভৈরবী। তাল ঝাঁপভাল। হেরি তব বিমল মুখভাতি— দূর হল গহন দুখ-রাভি। ফুটিল মন প্রাণ মম তব চরণ-লালমে দিনু হৃদয় কমল দল পাতি। তব নয়ন-জ্যোতি কণ লাগি, তরুণ রবি-কির্ণ উঠে জাগি। নয়ন খুলি বিশ্বজন বদন তুলি চাহিল, তব দরশ পরশ স্থুখ মাগি। গগন-তল মগন হল গুল্ল তব হাসিতে উঠিল ফুটি কত কুমুম পাঁতি হেরি ভব বিমল মুখ ভাতি। ধ্বনিত বন বিহুগ কল তানে, ুগীত দৰ ধায় তৰ পানে। পূর্ব্ব গগনে জগত জাগি উঠি গাহিল, পূর্ণ সব তব রচিত গানে। প্রেম-রস পান করি গান করি কাননে, উঠিল মনপ্রাণ মম মার্তি— হেরি তব বিমল মুখ ভাতি। ताशिगी वाशिकति—जान बीलजान। আমি দীন অতি দীন— কেমনে শুবিব নাথ হৈ তব করুণা-খাব। তব ক্লেছ শত ধারে ডুবাইছে সংসারে তাপিত হৃদি মাঝে শ্বিছে নিশি দিন। रुपदा या चादह, पिन जन कार्ट्स, তোমারি এ প্রেম দিব তৌমারে চিরদিন তব কাজে, রহিব জগত মাজে জীবন করেছি তোনার চরণজীয় লীন ज्ञानिनी क्रिस दिलाउन । पान वानिपान ভনেছে ভোমার নাম, জনাথ আছুর কর এনেছে তোমার ঘারে বিরুদ্ধের

কাঁদে বারা নিরাশায়, জাঁথি বেন মুছে যায়, বেন গো অভয় পায়, ত্রাসে কম্পিত মন। কুড শত আছে দীন, অভাগা আলয় হীন শোকে জীর্ণ প্রাণ কত কাঁদিতেছে নিশিদিন। পাপে যারা ভ্রিয়াছে, যাবে তালা কার কাছে কোথা হায় পথ আছে, দাও ভারে দরশন।

রাগিনী থট্—তাল ঝাঁপতাল।
পেরেছি অভয়পদ আর ভয় কারে।
আনন্দে চলেছি ভবপারাবার পারে।
মধুর শীতদ ছার, শোক তাপ দূরে যায়,
করুণা কিরণ তাঁর অরুণ বিকাশে।
জীবনে মরণে আর কভু না ছাড়িব তাঁরে।
আনা ভৈরবী। ভাল ঠুংরি।
মিটিল সব ক্ষুণা, তাঁহার প্রেম-অুণা
চলরে ঘরে লয়ে যাই।
সেথা যে কত লোক, পেয়েছে কত শোক
ভৃষিত আছে কত ভাই।

ভাকরে তাঁর নামে সবারে নিজ্ঞামে সকলে তাঁর গুণ গাই। ছথি কাতর জনে রেখোরে রেখো মনে হুদরে সবে দেহ ঠাঁই।

সঙ্জ চাহি তাঁরে ভোলরে আপনারে সবারে কররে আপন। শান্তি আহরণে শান্তি বিতরণে

জীবন কররে যাপন। এত বৈ হুখ আছে কৈ তাহা শুনিয়াছে চলৱে সবারে শুনাই—

বলরে ডেকে বুল "পিতার ঘরে চল মেথায় শোক তাপ নাই।" খাতিনামা কবি শ্রীযুক্ত বাবু রবীক্রনাথ

ব্যাতনামা কবি প্রাযুক্ত বাবু রবান্দ্রনাথ
ঠাকুর এই সমস্ত সঙ্গীতের মধ্যে কএকটা
নীত স্বয়ং গাহিয়াছিলেন। তাঁহার পবিত্র
কঠিনংস্ত মধুর সুসীত স্থায় মুগ্ধ হন নাই
প্রাত্তংকানীন উপাদ্ধার এরপ লোক বিরল।
কিন সানেকেরই এই প্রাচীন কিম্মন্ডীতে
কিন্তু ইইয়ভিন স্থান মুকাংহি সাম।

এই ১১ মাঘ সারংকালে জীমৎ প্রধান আচার্য্য মহাশয়ের বাটীতে ত্রেক্ষাৎসব হয়। লোকসংখ্যা প্রায় তিন হাজার হইয়াছিল। বহিঃপ্রদেশের তোরণ ও প্রাঙ্গণে বৈচ্যুতিক আলোক এবং সভাস্থলের চতুর্দ্ধিকৈ গ্যানের আলোক। সর্বত্তি পুষ্পপত্তের নানা রূপ রচনা গৃহের অপূর্ব শোভা সম্পাদন করিয়াছিল। নিমস্তৃতের মধ্যে কলিকাতার লব্ধপ্রতিষ্ঠ সম্রান্ত লোক অনেকেই ছিলেন। এইরূপ লোকসমাগম একটা বিশেষ উৎসাহের কারণ হইয়াছিল। শতাক অতিক্রম করিতে এখনও অনেক বিলম্ব আছে কিন্তু ইহার মধ্যে এক-মাত্র ত্রেগের নামে যে এত লোক সম-বেত হন ত্রাক্ষনমাঞ্জের পক্ষে ইছা বিশেষ গৌরবের কথা। কিন্তু কএক বংসরের পরী-ক্ষায় দেখা গেল শ্রীমৎ প্রধান আচার্য্য মহা-শয়ের শ্ববিতীর্ণ গুহেও উৎসব-দর্শনার্থী-पिट्रभत दान गन्ध<sub>न</sub>लन इय ना। याहे **रखे**क এই সংবাদ ভ্রাহ্মদিগের বিশেষ আনন্দের इटेरव मरल्ड नाहै।

ষথা সময়ে শ্রদ্ধাম্পদ আচার্য্য শ্রীযুক্ত নীলমণি চট্টোপাধ্যায় শ্রীযুক্ত বেচারাম চট্টোপাধ্যায় শ্রীযুক্ত শন্তুনাথ গড়গড়ি বেদি গ্রহণ করিলেন। সঙ্গীত আরম্ভ হইল।

## সঙ্গীত ৷

রাগিণী ইমন কল্যাণ। তাল চেতাল।
শোন তার স্থাবাণী শুভ মুহুর্ছে শান্ত প্রাণে,
ছাড় ছাড় কোলাহল, ছাড়রে আপন কথা।
আকাশে দিবানিশি উথনে দলীত ধ্বনি
তাহার কে শুনে সে মধুবীণারব—
অধীর বিশ্ব শূনা পথে হল বাহির।

রাগিণী থাষাজ—ভাদ থামার।
ভাকিছ কে তুমি তাপিত জনে
ভাপ হরণ স্নেহ-কোলে।
নয়ন সলিলে ফুটেছে হাসি
ভাক শুনে সবে ছুটে চলে
ভাপ্ত হরণ স্নেহ কোলে।

ফিরিছে যাত্রী পথে পণে, তিক্ষা মাগিছে ছাত্রে ছাত্রে, শুনেছে তাহারা তব করুণা, তুথি জনে তুমি নেবে ভুলে ভাপ হরণ স্নেহ কোলে।

রাগিনী বাহার—ভাল থানার।

এত আনুন্দ ফবিন উঠিল কোথায়।
ক্ষণত প্রবাদী নতে কোথায় ধায়।
কোন অয়ত ধনের পেয়েছে সন্ধান।
কোন স্থা করে পান।
কোন আলোকে আখার দূরে যায়।

অনন্তর আচাষা **প্রীযুক্ত নীলমণি চট্টো-**পাষায়ে এইরূপে উদ্বোধন করিলেন ব

পিতা মাতার আশ্রয়-বঞ্চিত শিশু বহু
করের পর মাতার আগমনে যেরূপ তৃপ্ত হয়;
স্থা-বিরহ কাতর ব্যক্তি বন্ধু-স্মাগ্রেম যেরূপ
উল্লাস্ত হয়; চিরপ্রবাসী গৃহে প্রত্যাগ্রমন নিমিত্ত যে প্রকার উৎস্কুক হয় রাক্ষেরা
এই উৎসব আগমন প্রতীক্ষার সেইরূপ উৎস্কুকা প্রকাশ এবং এই উৎসবক্ষেত্রে উপস্কিত হইয়া তদপেক্ষা সহস্র গুণে বিমলতর
আনন্দ লাভ করিয়া থাকেন। যিনি সকলের
একমাত্র লক্ষা এবং মাতার স্লেহের এবং
স্থার প্রেমের আদি কারণ, যিনি আমাদের
অস্তরাত্মা হইতেও প্রিয়তম এবং একমাত্র
বাহাকে আশ্রয় করিয়া সমুদার স্থিতি করিতেছে অদ্য তাহার সাক্ষাৎকার ,লাভের প্রত্যাশায় জামরা সকলে স্মাণ্ঠ হইয়াছি।

একদে সংসারের লাপ-প্রাক্তিল চিন্তা দূর করিয়া বিদয় প্রলোভনকে একবারে ছুচ্ছ করিয়া আনাদের পরমারাধ্য নারম দেবতার পূজার নিমিত্ত আমরা প্রস্তুত হই। আহার উপা-সনার আরা নৃতন বল প্রাপ্ত বা হইলে ডুরাহ জীবন-পথে নিরুদ্ধের শকার্কা হইয়া যাত্র। করিছে ক্থানই সক্ষম হই না। অভএব আইন আমরা চ্ছুদ্ধিকের কোলাহলের প্রান্ত বাধর হইরা এক্ষম শনে স্নৃদ্ধ চিত্তে দেই দেবাদিনের কর্মপ্রাক্ষার চরতে আজ সমর্পন করি এবং আনাদেক সমুদায় প্রীতি সংসাম হইতে আকর্ষণ করিয়া কেবল উাহাতেই বন্ধ করিবার জন্য শুস্তুত হই।

পরে উপাসনা সমাপ্ত হইলে ভক্তিভাজন বাগ্যী প্রীযুক্ত বাবু সভোজনাথ গ্রাকুর
প্রাক্ষণে দণ্ডায়মান হইয়া একটা উপদেশ
দিলেন। এই উপদেশ অতিশয় সায়গর্ভ
ও মধুর হইয়াছিল। সারবতা ও বাকা-মোর্চর
রক্ষা করিয়া বাগ্যী অকাতরে প্রায় দেও ঘন্টা
কাল বলিয়াছিলেন। সভাছ সকলে নিন্তর
ভাবে তাহা শুনিয়া বিশ্বিত ও চমহক্ত হন।
আমরা উপদেশটী প্রাপ্ত হইলে বারাভরে
প্রাকাশ করিব। এই উপদেশের পর
আচার্যা প্রীযুক্ত শভুনাথ গড়গাড় মহাশয়
বেদী হইতে এই উপদেশ পাঠ করেন।

#### मिदः छ्नाः।

এই অথিল জগতের যিনি পিতা গাতা,
তিনি শিবং স্পরং। তিনি শোভার আকর
প্রেমর সাগর। সেই জেমানল হইতেই
এই জগৎ উৎপন্ন হইরাছে। "আনন্দাছোর
খলিমানি ভূতানি জান্ততে" সেই প্রেম করী
তেই চন্দ্র সূর্যা গ্রহ নক্ষত্র পর্বাত সমূহ করী
হ্রদ রক্ষ লতা কল তুল পশু পক্ষী মন্ত্রা
প্রেছিণ সকলই উৎপন্ন হইনাছে। তার
পেই অতুল সোলবাের হ্রা। এই সকলের
উপর পত্তিত ইয়াছে।

সোলবা হবতেই প্রেমের উদ্দাপন
হয়। ঈবরের প্রেম কিন্তু অনা ক্রান্ত কৌ
লগ্য দেখিয়া উৎপদ হয় নাই, তিনি স্থাপন
নার সোন্দর্হো আপনি পাঁরপূর্ণ এবং ক্রাপন
নার প্রেমে আপনি বিভার হইয়া আহিবল।
তিনি মহায়াকৈ তার এই শোকার ভাণার
বংলারে হালের কার্রান্ত এবং আন্তর কারের
প্রেম দিলেক। বাল প্রাম্ন বালার করের
প্রেম দিলেক। বাল প্রাম্ন বার্মী হবী

যিনি সেই প্রেমকে অবিকৃত রাশিয়া-ছেন, ও সাধন-বলে বুদ্ধি করিয়াছেন, তিনি কি প্রাকৃতিক কি জাধাান্তিক উভয়বিধ শোভ। অনুভব করিয়া পরমানশ ভোগ করেন।

্ৰিছালার স্বাভাবিক গতিই শোভার দিকে, বিশীই যদি সেই পতি রৌধ না করে। কেবল ্মাত্র বাহিরের শোভা দেখিয়া ইহা সম্ভুষ্ট हेंद्रेंटि পারে ना। हेहा আরো কিছু চায়— আরও কিছু অমুদদ্ধান করে। সকল শোভা ্রভেদ করিয়া মে সেই শোভার আকর-স্থানে , বাইতে স্পৃহানিত হয়। সেই অকৃত অয়-**তের সৌন্দ**র্গা **সভােগ বাতীত** কিছুতেই ভাঁহার প্রেম চরিতার্থ হয় না। তিনিই ভাষার পর্ম গতি—তিনিই ভাষার পর্ম লোক। সেই লোকে বাস করিতেই তা-মধুকর বিশেষ আনন্দ। হার পুঞ্সে বদিয়া অনন্দেনে তাহার মধুপান তেমনি পরমেশ্বরে আত্মা স্থিতি করিয়া তাঁহার প্রীতি-স্থগা পান ক-बिट ड जानवाटन। त्मरे कि मन्नानी त्मरे ় কি ষোগী ্যিনি গৃহত্যাগী হইয়। কেশল বাত্র ব্যারাম-ভূলা বোগ-্যাগ অভ্যাদ করেন ? न।—ক্ৰন্ই নহৈ। \* তিনিই যোগী তিনিই প্রেমিক বিনি এই প্রেমের সাহায়ে সেই শোভার আকর প্রেমম্ম পর্যেশরে উপনীত ইইরী নিঃসংশধে আপনাকে তাঁহাতে প্রতি-🐞ত দেখেন এবং নিঃসংখন্নে বলিতে পা-ं देने अवाम् भेत्रमा भिन्न — अट्यामा भारत्या দৌকঃ—এষাসা পরবা সম্পৎ"। তিনিই প্র-কুত প্রেমিক বিনি ভাইাকে অপনার পিতা गार्ज बानिया शियता ये एक-गन्दित शृक्षा ক্রেন। অকুগত প্রের নার ভাষার আ-दिन्नीक्षकत परशाब बादनन अवन नामन क्रांबा डाकाद क्षाना क्रमुंचर करितन क्षेत्र বিশ্বনী ক্রিটেন সহিত তারীর ভ্রেম-মুখ Carried to the second second

আমরা যাঁহাকে ভালবানি, তাহার জন্য কি না করিতে পারি ? সেইরপ ইম্বর-প্রেমী—যিনি তাঁহার হৃদ্দেরকে প্রেমের চকে দেখেন, তাঁহার প্রেম-মুখ ভাল ক-রিয়া দেখিবার জন্য—আরও ফুটন্ড রূপে দেখিবার জন্য কি না করিতে পানেন ? সেই প্রসন্ধ মুখ—সেই প্রেম-মুখ ধ্যান করিবার জন্য তিনি সদাই পিপাস্থ। তাঁহার ধ্যান তাঁর নিকট যেমন মধুর এমন আর কিছুই নহে। যদিও তিনি আপনাকে আত ফুদ্র ও অকিকন বলিয়া জানেন, তথাপি তান তাঁহাকে অম্বরণ করেন। সে অম্বে-ম্বেই তাঁর কত আনন্দ। প্রিয় জনের অম্বেশ কি পথের ক্লেশ অনুভ্য হয় ?

मानक धथन এই প্রকারে ব্যাকুল হইয়া তাহাকে অবেষণ করেন,তাঁহার জন্য তল্গত-প্রাণ হইয়া উঠেন, সে এক সময়! তথন কোণা হইতে অনুমূল বায়ু—ক্লপা-পৰন বহিতে থাকে। সেই কূপা-প্ৰনই অতি নহজে তাঁহাকে তাঁহার প্রিয় পরমেশ্বরের চরণতলে আনিয়া দেয়। তিনি প্রেমের ভরে ভক্তির আবেশে তাঁহাতে জুবিয়া যান। সেই সৌ<del>ল্ব</del>্যা সাগরে \*নিম্ব হয়েন। তথন আর তিনি আপনার নহেন সম্যক রূপে ভার। ভাঁহার অন্তরে তখন কি প্রেমের গান নিনাদিত হুম, ভাষা এ জগতে অপ্রকাশ থাকে, তিনি প্রেমে বিভার হইয়া কি তাহাকে নিবেদৰ করেন, তাহা যিনি প্রোতের প্রাক্ত ভিনিই ভানতে পান। দেই <u>প্রেম্মান্ডাও তথন</u> কি মোহন রবৈ তাহার সাধককে অভিবান করেন—কি অপার সৈংহর সহিত ভাঁহার নিকটে প্রকাশিত হন, কি অপ্রতিষ নৌন্দর্যা ভারা তাঁহাকে উদান ক্রিরা ভুলেন, কেইই তাহার সন্ধান পায় मा। त्म पंखरवंद वाभाव चल्दाहे थाटक, এবং চির দিনই अस्त्र शांक्रत । कि হুখের

সন্মিলন। তাঁহার স্পান্য্থ কি গভীর — কি অবক্তব্য।

কোথা প্রেমশার এ সময়ে— দুলী অকিথন যে এখন তোমাকেই চাহিতেতে, তোমাকেই যাচিতেছে। তোমার সৌন্দর্য্য
আমাকে কি এক অপ্রতিহত প্রভাবে আকর্ষণ
করিতেছে। আমি তোমার জন্য বাক্ল
হইয়াছি। কৃষি দুখাও ভোমার অমৃত
নিকেতনের দার। আমি তথায় প্রবেশ করিয়া
চরিতার্থ ইই।

ওঁ একমেবাদিতীয়ং।

ক্র দিন শীমং প্রধান আচার্বা মহাশয়ের জন্তঃপুরে দ্রীলোকদিগের ত্রশ্বোৎসব হইয়া-ছিল। আমরা তথাকারও একটা উৎকৃষ্ট উপদেশ পত্রস্থ করিলাম।

সমংগর পরে আজ আমরা সকলে তুঃখ তাপ ভূলিয়া সেই পরম পিতার আনন্দময় ক্রোড়ে সমবেত হইয়াছি, এখানে মৃত্যু শো-त्कत मरशा ভাষার করুণা, पुः**धरतामरन**त गर्धा उँ। हां बं जोनलगर मुर्लि, नःसारतत সহস্র বিপদান্ধকারের মধ্যে তাঁহার জ্যোতি বিভাগিত দেখিতেছি; আর আমাদের কট্ট नितामा नाहे, पूर्थ क्रिम नाहे, (वश्रीक्ष्मा, যান অভিযান নাই। অরুণ-কিরণে মুদিত भजनन (यगन श्रक्त रहेश छ रहे, त्मेर ग-হান তেমের তেম-রশিতে আজ শত সহস্র তঃখ-শোক-পীড়িত কদর্ম, ক্ষেহ, প্রেম, আ-नत्म-नवीन छाट्य अक इहेशा कृषिया छिक-शाटक । भूठूर्छ भूटर्स याशाटक ट्रिंग लाहे, যাহাকে পর বলিকা জানিতান, আৰু দেকি তেছি সে আমার আপনার, আপনার বোদ্ বলিয়া আজ ভাহাকে ক্ৰম আলিক্স কৰিতে চাহিতেছে। **ভাক जानमगरी विवस्ननी** कारल विषया विश्वमः मेर्डिं CHACOLE !

हता मुद्दा छात्रा समाव समा हका त्वान मृद्र थाविशा अक्षे रकन-मूर्त भारत হইয়া যেমন পরস্পারকে আকর্ষণ করি-তেছে, সেইরূপ আত্মার সহিত আত্মার হৈ বন্ধন তাহা ধারা আকৃষ্ট হইয়া আৰু স-কলে সেই মহান আত্মার অভিমুখী হইয়া দাঁড়াইয়াছি। পিতা মাতার স্নেছে, স্বামী স্ত্রীর প্রেমে, ভাই ভগিনীর ভালবাসার, মনুষ্যের প্রীতিতে, সকলের মধোই এক সেই আক-র্ষণ শক্তি বিরা**জ** করিতেছে। পৃথিবীর লক্ষ্য যেমন দুর্যোর দিকে, আমাদের লক্ষ্য তেমনি সেই মহান প্রেমের দিকে, এ লক্ষ্য-হীন হইয়া সংসারের সহস্র স্থা আমাদের তৃত্তি এলকা পথে আৰু আমরা যাত্রী, বি**কশিত** ভাই আমাদের **स**पग्न উঠিয়াছে, তাই আজ वानम ।

কিন্তু আজিকার এই আনন্দ কি কেবল একদিনের জনা ? আজিকার এই পবিজ্ঞভাব কি অল্ল ক্ষণের মধ্যেই সংসারের গলিনভার আচ্ছন হইয়া যাটবেঃ আক্লিকার এই প্রেম ভাব মুহুর্ত্তে লয় পাইয়া আবার দেবহিংসা স্বার্থপরত। লইয়াই কি জীবনের জধিকাংশ কাল অতিবাহিত করিব ? তাহা হইলে আ-यारपत नका माधन इट्टेन करें १ यप स्थार्थ्ह আমরা লক্ষা সাধন করিতে চাই উাহাকে बानिए वाधा हरे, एरव बक्र मुद्दुर्दक बना नत्र, अकिंग्टनक बना नश्, क्षेत्रिक बूट्ड, क्षेत्रिक দিন, সম্তে জীবন ছেয় হিছেন সার্থপর্জা विमर्द्धन पिया जाजभार जूनिया जामहोनिएक क्टेर्टर, उर्द अक मृदुरके कमा नह, धक पि-त्नत्र समी नत्र, क्षांत्र महात, क्षांत्रिक नगरः कीयम नक्ष्माद्रम् त्यार जान करेंद्र वाचादक ACE MINES ASIA

ভাৰণা-বিশ্বীয় স্ট্রা, সুইবার-চ্যানী ক্যানীয় বৈশে তার্থে তারে ভর্ম করা,ক্রিয়া भवीत्रक माळ कडे दन छता है मश्मादात दमार कान नरह।

্ৰে পালানি ন কুৰ্বন্তি মনোবাত্তব্রকিভিঃ তে ভপ্তি মহাত্মানো ন পরীয়দ্য শোবণম্।

বাঁহারা মন বাকা কর্ম ও বুদ্ধি ছারা পাঁপাছরণ না করেন—দেই মহাত্মারাই ত-পদা। করেন—ঘাঁহারা শরীর শোষণ করেন— ভাঁহারা তপসা। করেন না।

ষিনি সংসারের মোহ ত্যাগ করিবেন—'
তিনি পৃথিবীতে থাকিয়াও পৃথিবীর হই নেন
না, ক্ষনক রাজার ন্যায় তাঁহার শরীর ম্ন
নাংসারিক কার্যো ব্যাপৃত থাকিলেও
ভাঁহার আধ্যাত্মিক রতি উচ্চ কার্য্যে ব্যাপৃত
থাকিনে, শারীরিক বিষয়ে পৃথিবীতে থাকিয়াও তিনি আধ্যাত্মিক উচ্চ জগতে বিরাজিত
থাকিনেন।

কায়মনোবাকো সংকর্ম অনুষ্ঠান দারা চিত্তগুদ্ধি করাই যথার্থ মোহ ত্যাগ।

হন্ত পদ বারা আমরা যাছা করি তাহাই যে কর্ম এমন নহে, আমাদের মন দিয়া মছু-ভের জনাও যথন যে চিন্তাটা চলিয়া যায় তা-হাও এক একটি কর্ম। এই কর্মের উপরেই আমাদের ক্ম কুংখ উন্নতি অধ্যোগতি নিভর করিতেছে।

> ভভাওভফলং কর্ম মনোবালেহসভবমু কর্মনা গতনো দুশামুত্যাধমমধ্যমাঃ।

মানদিক বাচনিক এবং শারীরিক এই জিম প্রকার কর্ণোই শুভ এবং অশুভ কল জন্মে, জার মনুষাদিশের উত্তম-মধ্যম অগম তিন প্রকার গাড়ি কর্ণা দারা হয়।

कांत्रता कर्गकात्मत क्या मिथा त्यर हिश्मात क्रिक हरेगा रचन ये। यन कर्म मकत कर्ति, छाहा जान द्वारत ना, छाहात क्रिक्टान क्रिक्ट क्रि, बात मश्कर्म कांत्रा क्रिक्टान द्वार प्रश्व क्रिक

নের লক্ষা সিদ্ধ হয়। ভাল কার্যোর ভাল कल. यन्म कार्सात यन्म कल एडाम कति-वात जनगा नियम विचमः मात्र পরিব্যাপ্ত, ইহাতে নিয়ন্তারি করুণা আমরা দেখিতে পাইতেছি। মন্দ কর্মা করিয়া যদি আ-মরা তাঁচার রুদ্র মুর্ত্তি না দেখিতাম তাচ্য হইলে আমাদের সংশোধিত হইবার আর উপায় ছিল না। প্রকৃত পকে সুখ **চুঃখ** चार्यात्वत कीवत्नत উष्प्रभा नत्ह, धार्या-**ट्रिय कीवरनंत छट्यमा आगारमंत्र উप्त**ि, আমাদের জীবনের উদ্দেশ্য আত্মার সহিত পর্মান্তার যোগ-সাধন। হর্মশোকে বিপদ मम्लादम जुःथ-जानदम घाटार**्टे जा**मा-দের এ উদ্দেশ্য সাগন হয় তাহাই আমা-দের প্রার্থনীয়—তাহাই আমাদের মঙ্গল |

আমাদের আত্মা দর্পণের মত, দর্পণ নির্মাল না ছইলে ভাছাতে যেমন প্রতিবিশ্ব ম্পার ফুটে না—আত্মা নির্মান না করিতে পারিলে আমরা দেই মহান আত্মার আলোক প্রতিবিশ্বিত দেখিতে পাই না। স্বতরাং যদি আগরা দেই শুদ্ধ দত্যের নিকট পোঁ-ছিতে চাই তবে বিশুদ্ধ হইবার পরিশ্রেয় কাতর হইলে চলিবে না। এক দিনে আমা-रमत এ एउ हेळा शूर्व इहेरण भारत ना, षागता मानुष, षशूर्ग, पूर्वला, किसू यनि शह-ত্তির অধীন হইব না বলিয়া জ্যাগত ভাহাকে वट्ग खानिट्ड दहें। क्रि-ड्रा ख्रामारे . তাছার উপর আমলাভ করিতে পারিব। मार्म कतिरत कार्या जात्रस्य कता कठिन नर्द, **क्विमाज हैकाइ खंद्राक्न। य**पि देशी সহকারে ক্রমাগত আকরা বিশুদ্ধ হইবার ইচ্ছা করি, তাহা হইলে সুর্ব্বপ্রধান বিপদ্ श्रद्धि व्यवनारे कर्म मनन रहेर्द । बात कर-वात शतुक्ति वयटम मक्त्र क्षेट्रम् उथन यटन इ-हेरव के बीदा रकन बाउ क्रिन करिका किनाय।

ভারিয়া দৈখিলে এই পৃথিবী কতদিনের
অন্য পূলাল বাহাকে দেখিতেছি, কিছুদিন
পবে আর জাহাকে দেখিতে পাই না, আজ
আমি আছি কাল হয়ত থাকিব না, দেখিতে
দেখিতে পলে পলে আয়ুঃক্ষয় হইয়া আকিতেছে, কাল চলিয়া যাইতেছে, কিন্তু ইহার
মধ্যে জীবনের কাজ কতটুক করিয়া রাখিতেছি। যদি প্তিক্ষণে জীবনের এই অনিতাতো ভাবিয়া দেখি, আগু সুথের জন্য
কোন অন্যায় কাখে প্রস্তু আসিলে যদি
ভাবিয়া দেখি সেই সুধ কতক্ষণের জনা,
ভাহা হইলে সহজেই সে কাজ হইতে ফিরিতে বল পাই।

বাস্তানিক পক্ষে অপ্রবিজ্ঞার অধর্ণে দুখ কোথার ? এ দুখ বাহিরে দেখিতে স্থলর— কিন্তু ভিতরে বিষময়, যদি যথার্থ সুখ শান্তি পাইতে হয়—ত ধর্ণো, পবিজ্ঞায়, প্রা-কর্ণো। ধর্ণোর পবিজ্ঞ পরমানন্দ— মুহু কাল তুঃখ যন্ত্রণা ছিনাল করিতে পারে না; তাহা সর্বজ্ঞাই ইট্যা বিরাজ করে, ভাহা মুহুর শোক-তাপের অতীত সেই শ্রমর শুদ্ধ সভ্য নিরঞ্জনের নিকট জামাদের পৌছিয়া দেয়।

তাই বলিতেছি—ভগিনীগণ আজিকার
এই শুভ মুহূর্জ, যে মুহূর্জ আমা দিগকে পবিত্র
শান্তিনিকেতনে লইয়া আদিয়াছে, বিবাদ কলছ
ভূলিয়া যে মুহূর্জে দকল ভাই বোনে একদলে
খায়ের স্লেহের কোলে বদিয়া মারের প্রেমের
উৎস-মধ্যে ভূবিয়া পড়িয়াছি লে মুহূর্জিন
আমরা চলিয়া যাইতে না দিই মারিকার এই
মূতি আজিকার এই প্রেম ফেন জিলিনের
আমলা চিরদিনের আলোক হইরাজারালের
ভবিধ্যৎ অন্ধকার জীবনের পথ দেশাইরা
চলে। এল বোনে বোনে নলিয়া এই গোলে

শ্বী ক্ষাংজননি, বড় বিশ্বী করিয়া বড়।

नाकून रहेश त्जामान काटर चामिसाहि मा, ত্মি তোমার দীন হীন অবোধ অজ্ঞান সন্তান দিগকে কোলে ভূলিয়া লইয়া জ্ঞান শিকা দাও। আমরা নিডাক্ত নিভ না, আমরা এখনো কি ভ্রান কি অভ্রান সব বৃথিয়। উঠিতে পারি না, কি ভাল কি মন্দ সর বা-ছিয়া লইতে জানি না, যতটুকু বা জানি যত-টুক্ বা বৃকি—তাহাও কাজে করিয়া উঠিজে পারি না—আমরা তোমার এমনি তুর্বল—-এমনি অন্ধ সন্তান! এ অন্ধ সন্তানেরা মা-য়ের কাছে থাকিয়াও যে মাকে দেখিতে পাইতেছে না, ভাই বে'নে একত্র থাকিয়াও যে কেহ কাহাকে দেখিতে পাইতেছে না, আপনার লোককে দেখিবার জন্য যথন প্রাণ আকুল ব্যাকুল করিয়া উঠিতেছে – যথন আপনার লোককে আপনার করিতে শর্মা-ন্তিক বাসনা হ**ইতে**ছে, তথনো যে দেখিবার ক্ষমতা নাই যা, এ তুঃখ তুমি না ঘুচাই বে কে ঘুচাহবে ? প্রাণের এ আকাঞ্জা তুমি না পুরাইলে কে পুরাইবে জননি ? ভূমি মাড়া আযাদের এ মোহান্ককার ঘূচাইয়া সভার আলোকে হাদয় উজ্জ্বল কর; আজ তোমার त्थ्यम-कर्गामारन जामारनत त्य सक्बोद्दन् निहाहि रय पिया वक्षू कृतिहैशाष्ट्र, वित्रजीवन कामा-দের হৃদয়ে তাহ। জুলম্ভ রানিকা কর্তার অতৃপ্ত আকাজ্যা নিবারণ কর স্টেভারার স্লেই-ভূম্বে আমাদিগকে স্বল কর জেলার অহত কোড়ে আমাদের স্থান নিয়ে শাল ভাপ विकान जनकात हरेए जनमिनाक भूग রাখ-আমরা আম ছোল চম্বার্থ ক रिया मकरले मिनिया के समिति। नेएक रेरारे প্রার্থনা ক রতেছি ।

কু তাক কোন কিন্তাগ্ৰহ

मामानारम अवस्ति खेरमान्त्रस्य ग्रेस गमीन मेजियारक क्षणीन कर्म श्रीक माध



अञ्चावाणकसिद्सप्याची आन्यत् किञ्चनाची भाददं चर्ळामक भर्। तदण नित्ये ज्ञानमनमां भित्र खतन्वज्ञिर्ययवस्यसे वाणितीयम् मध्ये वापि गर्वे नियम, भव्यात्रत्रभव्यं विस मध्ये शक्तिमध्ये युणेमप्रतिमसिति । एकसा मस्त्रेयोपासमसा पार्याचककोहिकच एमचार्यतः । वामिन् धातिमन्य प्रियकास्य माधनच तद्पासनकेव ।

#### कलिश।

দেশিকত না পাই গে দিকে তাকাই কোথা সীমানা ? ভাষিষা ভাষিয়া বিতেছি চলিয়। নাহি ঠিকানা। নাহি হয় ঠিক্ मिक् कि विमिक् পাথার ধুধু, 👻 নাহি 🐂 প্রাণী শুৱাইতে বাণী नीत्रव ७४ । কেবল বিকাশ খনন্ত আকাশ 🧷 কিছু না হেরি, নাহি পৈয়ে কুল ইন্দিয় আকুল **উঠি**ছে ভরি। "কোৰায় কোথায়" পরাণ শুবায়, 👞 প্রাণের মানে, শিক্ষশার হাসি— প্রতিক্ষনি আসি 🤼 হৃদয়ে বাঁজে। আতক্ষে এ তমু হয়ে প্রমাণু ছুটিতে চায়, চর্ম স্মরিরা মর্ম ভরিয়া ভাকিনু তাঁয়।

মহার্টনা চিরি 🔍 বিতাৎ বিস্ফারি

কে শ্বৰা তালিলং लाग भकातिन ৰলিল খোৱে— মহা পারাবার তাদন বাঁহার वस्य कर्ब পারাবার মালে সে পড়ু বিরাজে **ज्या** वि ? चारत !

### মানিক ব্রান্সনমাজ।

ত ফান্তুন রবিবার লাকা সম্বৎ ৫৭। আচার্যের উপদেশ।

পর্মালার উপাসনার জন্য আমরা ্রখানে ঘিলিত হইয়াছি। সং<mark>দারের সম</mark>স্ত ভবেনা জিন্তা দূরে নিক্ষেপ করিয়া আইস আমর জান্যর প্রেম্ময় প্রমান্তার প্রতি গনকে সমাহিত করি। আমাদের সন্মুপে কোন দেবমূর্ত্তি নাই, কোন পূজার সামগ্রীর ভারোজন নাই, বাহিরের লোন ঘটা আড-खत भारे, किरम श्रामाएन यन श्राहरे हरेरत **१** ছ্মানাদের যিনি দেবত। তাঁছার নাম নাই-কি বলিয়া আমরা ভাঁছাকে ডাকিব ? ভাঁছার রূপ নাই, কিরূপে আমর। তাঁহাকে দেখিব পু তাঁহার উপম। নাই, কি একারে আমরা তাঁ-

হাকে ধ্যান করিব ? ইহার উত্তরে ব্রা**শ্বধর্ণ** বলিতেছেন

'শাস্তোদাস্ক উপরত্তিতিকঃ সমাহিতোভূষা আ-অনোবাঝানং পশাকি;

শান্ত দাল টিপরত তিতিয় এবং সমা-হিত ছইস্টা পাধত আলাতেই প্রমান্তাকে দ-র্শন করেন।"

আস্বাস্থ্য সভা কলা ভাইতে বিষয়ান্তরে शांतिक १ हेट २४ ८८ में तियहरू खित थाकिए । ५१४ मा । २५ दकान वियस मनस्क वाधिशा द्वाप ना, जाहाद किय़ दकाल शरतहे এখন দেশা হটাটে বালিরে যাইবার প্র অ**ন্তে**ষণ ক্রিবে ; স্থান হইতে বাহিবে বিচরণ করি-বার সংস্কার আমাদের মনে এরপ বন্ধমূল হাইয়। গিয়াছে যে, আনাদের উপাদ্য দেব-তানে আগবা বাভিনে দেখিতে না পাইলে আমরা মনে কবি গে অন্তরে দেখা দেখাই নতে। আমাদের মদেব এইরূপ বহিমুখী সংস্কার অনেক দিনের সংস্কাব ভাষার পরি-বর্ত্তন এক দিনে হটতে পারে না; দীর্ঘ काल धतिशा नामन नाइल एटवर অনে ভাষাতে আমনা ক্লাচ-কান্য হইতে পর্বার আমান্তের মনে বেমন বহিম্পী শ স্কার প্রবল, যদি কোন ভাগাবান বা-ক্তির মনে খেতুম্গী সংস্কার সেইরূপ প্রলাক্ষণ, উঠে জাবে ভাঁছার মন আর 😎 भाभी स्वतः भागाः भाष्ट्रशैमः পিতৃহীনের নাছ, বাহিৰে আহিৰে পুরিষ্ণা বেড়ায় না; পরিমাত্মার প্রেমে তাংগারীমন এমনি বাঁধা প্রভিন্ন যায় যে সেখান হইতে ক্রেছই ভীহার (म मनदक छेठाहेशा आनरज लाटत ना; कार्या-कार्टेन यम शतयाञाटक आर्थ कतिहा ক্ষ্য্রিকরে, বিরাম-কালে মন প্রযান্তার क्षेत्रिक नास्ति-स्राथ निमन्न एवं li Ce म कि यौद्दीता जारनन, उँदिता जारनन् रय, गरनत ८के में रयथारन निवक **र**ग्रस्ट (मथान हेहें € उ

মনকে আর কোখাও ফিরানো ভুক্তর। মন ইতস্ততঃ বিক্ষিপ্ত হইয়া বেড়াইতেছে এ অ-বস্থায় দৈব-যোগে যদি তাহাকে অজ্ঞাত-সারে ভ্রেম আদিয়া অধিকার করে তবে তাহার বিক্ষেণ একেবারেই স্থািত হইয়া যায়,— একই প্রেমের বস্তু তাহার তপ তপ ७ शान इंदेश छेट्छ। ७ घरेनारि जामा-দিগকে কি শিক্ষা দিতেছে ? এই শিক্ষা দিতেছে, যে, বাহ্নির দুরিয়া বেডাইবার নংস্কার মদের একমাত সংস্কার নছে,—নানা বিষয়ে বিজিপ্ত না হইয়া মন একমাত ব-ন্সতে ও নিমগ্র হইতে পারে,—ইহাতে অস-खन वा जातीकिक किছूर नारे; ध्यमी ব্যক্তির মন একমাত্র প্রে**মের বস্তুতে** দিব!-লাত্রি নিম্র থাকে ইছা পরীকার কথা। গৃহত বাজির প্রেম দ্রী পুর, পরিশারে বদ্ধ ধাকে – ইহাই প্রেমের প্রথম সোপান: এই তেন যদি ঈশর-তেমের সহিত সংযুক্ত হয় দবেই ইহা অতি পবিত্র প্রেম হইয়া **উঠে।** উদাদীন ব্যক্তির মনে প্রেমের ভাব তুর্গট; ভত্তে প্রেমের ভাব মনে হাবিকার না পাইলে ব্যক্তি শৈশ্ব কাল হইতে স্নেষ্ঠ প্রেমের অধিকারে বাস করিতেছে—গৃহস্কু ব্যক্তিই সহজে ঈশ্বর-৫ে মের স্বর্গনারে উপনীত হ-ইতে পারে। এই জন্য **ঈশ্বর-প্রেম সাধ-**त्नत जना जुङ्खान्यम्हे नर्ततारशका खेदकृष्ठे আশ্রন বলিয়া সকল শাস্ত্রে গীত হইয়াছে। কিন্তু পুষ্করিণী কিয়ৎদূর খনন করিয়া যুদি .. ক্ষান্ত হওয়া যায় তাহা হইলে এতোক বৰ্যা ঝাতুতে চতুম্পার্খ হইতে মৃতিকা বিগলিতু হইয়া তাহাৰে অল্প কালের মধ্যেই প্রক্রী পূর্ণ করিয়া ভোলে; এই জনা যে পর্যান্ত না পাতালের জল নাগাল পাওয়া যায় সেই প-গতে গভীরে খনন করা কর্ত্তব্য ; গার্হস্থা প্রেমের গভীরতা এবং পবিত্রতা সাধন ক-

রিয়া তাহাকে ঈশ্বর-তেমের সহিত সং-যুক্ত করা কর্ত্বর । গৃহ এইরূপ সংযোগ সা-ধনের পরম উপসোগী বলিয়াই তাহা আশ্রম বলিয়া উক্ত ইইয়াছে। গৃহ এও যে পাৰত আশ্রম—কিন্তু ঈশর-প্রেম হইতে বিচ্যুক্ হইলে আৰু তাহা আশ্রম থাকে না—ত্তা কঁঠোর কারাগার হইয়। উঠে, ভাষণ অংগ্ रहेशा छिति। ने धवतक आछित। अश् शन्तरम মনুষ্যে ্ভাম লগড়া কলার কথা; ঈধর-**जहे मनुशा-: धाम कार्यन ग्रहाचन नाही छ** এক দণ্ডও ভিষ্টিতে পাবে ना— हेश खाना कथा। श्रुपिती महेर्ड कथन विद्वार शि छै िठिएक भारत ना--गल-एशि क्हेंटक अनीत প্রেম জন্ম গ্রেক্রিক্ত পারে লা । ভ্ৰপ্ত সম্পূদ বিপদ্ধে সম্প্ৰ কার্যা আনে, প্রেম বিবাদ-কলছ সাঙ্গ বার্যা কারে, पर्य-वाकालन भक्तरक महस्र किल्हा व्याहन, नकी मनित्क भट्ट कविया जान। देखा বে গুটের উপায়। দেব । সেই গুলুই ভেবের পৰিত্ৰ আশ্ৰম ৷ খুৰ হুইতে ৱদাকৰ্ষৰ ক্ৰিয়া রক বেমন শালাপত ফল-ফুলে শোভিত হয়. দে গৃহ দেইরূপ, ঈশ্বের স্বর্ণীয় এয়ত আক-येन कविष्ठा प्रजान (४,म कला:(१ त्ना) ६ ५ হয়। এই জনা আক্রধর্মে উজে মুইয়াছে গৃহস্থ বাজি ত্রেমানিষ্ঠ হইবেক !

দিবসের প্রারম্ভে শান্ত দান্ত হইরা পরমাত্মাতে মনকে সমাহিত করা গৃহস বাভির
প্রথম কর্ত্তবা। বাহিরের বিষয় হটতে মনকে
আকর্ষণ করিয়া পরমান্তাতে সমাহিত কর।
সাধকের পক্ষে প্রথম প্রথম কঠিন ঠেকিতে
পারে, কিন্তু প্রদা ভক্তি এবং প্রীতি ক্রণে
যত বর্দ্ধিত হইবে তত্ত্বী তাহা আনন্দের প্রঅবক্র হইরা উঠিবে। সেই এক অভিতীয়
অন্পম পরমান্তাকে মাসরা অন্তরে পাইলে
সকলকেই আমরা অন্তরে পাই—কেননা
সকলেই পর্মান্তার অন্তর্ভ্ত। তথন বাহি-

রের যাহা কিছু সমস্তই অভরের হইরা উঠে; লাভা তথন অভরের আনা হয়, প্রী পুর মন্তরের স্ত্রী-পুত্র হয়, পিতামা চা অন্ত-রের পিতামাতা হ'ন, ন্মূলকে অন্তর্ম পান ইনে আগরা সকলকেই অন্তরে পাই!

তাঁৰ একলিকে দেখা যায় যে, সাংসাবিক অন্তৰ্ণাকেৰ জীলতা হ**ইতে নিয়তি লা**ভ কবিতে হটবল গ্রমাল্লাতে জাজার সমাধান ষেমন প্ৰেম মুছে। ধ্ৰ এমন আর কিছুট নছে। জ্ঞান্ত প্রক্রিকার ক্রিকার ক্রিকার ক্রিকার ক্রিকার ক্রিকার বিভিন্নতি সংক্ষারের উপর নির্ভর করে, সে-স্বল সংস্থার ভার্ত্তীটোর নায়ে আমরা আপ-ন'বাত্ নির্দাণ করি এবং আপনারাই তা-হাতে জড়াইয়া পড়ি। দেশাগার-মূলক কু मध्यः तरकरे ए. गत्। महत्राहर কুসংস্কার যাল্যা নিদেশ কাল্যা থাকি ; কিন্তু তথ্য-ভাত আরে৷ অনেক কুসংস্কার আ**মাদের** ভাছে ;—খানাদের বে-টা **মনে**ব ইচ্ছা তা**হা** মতা না ধইলৈও তাধাকে আন্ত্রা সভাব-लिए। तियाग कतिएक ८७६। कति—हेराहे যত ক্ৰাফারের গুল। যাঁছারা অনেক কাল সম্প্রের উদ্ধ শিখনে অন্তিতি করিয়া আ-গিতেছেন, ভাঁগাদের সে ফম্পাদের **জনা** ভাছাদিগকে কোন আয়াদ পাইতে হয় না, তথাপি এই এক ইছো-মাত্র তাঁহাদের ম-न्त अधिकात कतिशा तरह (य, এ नम्श्रम् চিরস্থায়ী হউক, এবং শুদ্ধ সেই ইচ্ছার বলে खाँहाता गत्न करतन (य, धन धन (योवन সকলই চিরস্থায়ী; এইরূপ কুসংস্কার কোন কোন মৃত্ ব্যক্তির চক্ষে এরূপ ধূলিমুষ্টি নি-ক্ষেপ করে যে, সে যখন অপবায় দারা সীয় সম্পত্তি বিনাশ করিতে থাকে—তথনও মনে করে যে, সে তাহার সম্পত্তি বিনষ্ট হইবার নহে। আনাদের যাহা বছকালের স্থাংকার তাহট্ট আমানের ইচ্ছা হইয়া দাঁড়ায়, এবং সেই ইছোই জ্বামাদের স্তাসিতা ও স্বং তৃংশের একমাত্র প্রমাণ ছইয়া দাঁ। ড়ায়।
কিন্তু দে প্রকার অমূলক সংস্কার আমরা আলপনারেই আপনাদের ক্ষান্ধ নারাপ করি—
অতরাং ভাহা কুত্রিম। বাহিকের বিষয়ু-সকল
আমাদিগকে ছাড়িয়া পাইকেছে কিন্তু আমরা
ভাহাদিগকে ছাড়িয়া পাইকেছে কিন্তু আমরা
ভাহাদিগকে ছাড়িয়া প্রারাই তিরস্থায়ী,
এই জন্য ভাহায়া প্রিমা কেনেও, আমরা
ভাটা মনে করিতে পারি না সে, ভাহার।
চিরস্থায়ী ন্য। প্রমায়াতে আহ্বাকে ম্যান্
হিত করিতে পারি না সে, ভাহার।
কিরস্থায়ী ন্য। প্রমায়াতে আহ্বাকে ম্যান্
হিত করিতে পারিলে এই সকল কুসংস্কার
বিথিল হইয়া পড়ে— স্ক্তরাং সেই কুলংস্কারমূলক ংগ-শোকও শিথিল হইয়া পড়ে,—
এবং তাহার স্থানে সভ্য-জ্বান-মূলক অটল
ভ্রমানন্দ উছোঘিত হয়।

হে পরমায়ন্! আমানের পতন শাল ত্কল অবয়কে তোমার প্রেমায়ত সিঞ্দে भक्षीत कृत, अक्षकांत्रदक आसारमृह मुख्य इ-ইতে সরাইয়া দেও, একবার ভোমার রশ্মি-কণায় আমাদের আকুল নয়ন সাথক হউক: আনাদের হৃদ্য হইতে প্রেম উলিত এইয়া তোমার মাধুর্ষ্যে বিলীন হইতে চার, তে:-নার মুখের আলোকে তুমি তাছাকে পথ াদর্শন কর-এ দীন হৃদয় তোমাকে ছা-ড়িয়া ভার কোখায় গিয়া শীতল হইবে। মংসারের মুগত্ফিকার পাছু পাছু কতদিন खत्ता अत्राम शिल्मन किट्रिय! এক বিন্দু প্রেম-কণিকা ক্রিখিলের জীবন— সেই অমৃত-বিন্দুতে ভ্রুলত; মঞ্জুরিত হয়— তাহাতেই পশু পক্ষী চেতন পায়—তাহা-তেই মনুষ্যের আত্রা অমরত লাভ করে। সেই অমৃত-বিন্দু হৃদরে পাইয়া হৃদয়ের স্-মস্ত বেদনা দূর করিব এই জন্য আমরা এ-খানে সমাগত হইয়াছি তুমি আমাদিগুকে শান্তিদান করিয়া চিরদিনের মৃত কৃতার্থ কর্মী उँ प्रकरगवाषिष्ठीयः।

#### সাংখ্য-সূত্রের ব্যাখ্য

(भूटकंत अध्यक्ति।)

षष्ठेवा मिक्टिश 58॥

সিদ্ধি আট একার। কি কি শুক্তাহা বলিতেছি।

তত্ব আলোচনার দারা চকিলে তত্ত্বে : জ্ঞান জ্মিলে তাদুশী দিদ্ধি প্রথমা ও প্র-ধান বলিয়া গণা। এই গ্রথমা সিদ্ধির নাম "পরা" (১)। প্রবণ মাজেই যদি বস্তুতত্ত্ব বোধ হয় তবে ভাহা দিতীয়। সিদ্ধি বলিয়া এই দিতীয়া সিদ্ধির নাম "স্থপারা" (२)। जशासन भसकारल छ्लान खिलाल তাহা তৃতীয়া এবং তাহার শাস্ত্রীয় নাম ''প্রমোদা'' (গ)। সাধনার দারা আধিভৌ-তিক জুঃখ নিবারণ করিয়া জ্ঞান জ্মাইতে পারিলে তাহা চতুর্থী মিদ্ধি বলিয়া গণা। এই চতুর্থী সিদ্ধির অন্য নাম ."রমা।" (৪)। পরিচর্ব্যার ছারা অথবা ধনদানাদি দারা জ্ঞানীর পরিতোষ জন্মাইয়া জ্ঞান লাভ করিনে তাহাও দিদ্ধি নামে অভিহিত হয়। এই গঞ্মা দিন্ধির পারিভাষিক নাম "প্রমো-प्रथान।" (१)। **छ**ानीत भश्म**र्श** शक्ति। জ্ঞান লাভ করিলে তাহা "রমাফলা" নামক ষষ্ঠী মিদ্ধি। ওরু যদি পরিচর্য্যার দার। অথবা দানের দারা পরিত্র হন, হইয়া জ্ঞানচকু বিতরণ করেন; ভাহা হইলে দেই সপ্তমী দিকির নাম "মুদিতা" (৭) । এত্তির অইমী নিদ্দি আছে, তাহা বোগ-প্রভব এবং শাস্ত্রীয় नाय छेळ्या। এই প্রকারে সাংখ্যবাদীদিনে আট্ প্রকার সিদ্ধির ব্যাখ্যা হইয়া থাকে

प्रभ मृतिकार्थाः॥ ১৫॥ 🔭

সাংখ্য শাস্ত্রের মূল অর্থ অর্থাৎ প্রধান অভিবেয় দুশ। যথা;

আন্তিত্ব (১), এক (২), অর্থবন্ধ (৩), প্রত্ব (৪), অন্যত্ব (৫), অকর্ড্ড (৬), যোগ- বিরোগবন্ধ (1-৮), পুরুষবছন্ত (৯) ও দেহ ছিতি বা শেষ রুক্তি (১০)।

- > অন্তিত্ব। জগতের কারণ আছে;
  তাহা অব্যক্ত; এবং পুল্ব আছেন; তিনি
  ভোক্তা। এইরূপে কারণের অন্তিত্ব ও আত্মার অন্তিত্ব সিদ্ধ হয়।
  - ২ একছ জগতের মূল কারণ এক; তাহার শাস্ত্রীয় নাম ''গ্রধান'' ও 'প্রাকৃতি'', তির তির পরিণাম দকল তাহারই অপস্মুদ্ধুত; স্থতরাং মূল কারণ এক; এব-স্পাকারে কারণের একত্যিদ্ধি হইয়া থাকে।
  - ৩ অর্থবত্ত্ব। যাহা মূল কারণ তাহা স্থ-তুঃখ-মোহরপা; স্করাং কাহার অর্থবত্ত্ব সাকলা বা প্রোজ্ঞাবত্ত্ব আছে।
    - ৪ পাবস্থা—
- ে জনাত্ব।—জগংকারণ প্রধান প্রকৃষ হইতে শিল্প, ইহা নিজগ্যাদি হেছুও দ্বারা অসুঁমিত হয়। ভ্যাং প্রধান ত্রিভাগ; কিন্তু পুরুষ্ণ নিজাণ; এবং ক্রমেই প্রধানের ভিন্নতা ্রমিদি হয়।
  - জ অকর্ত্ব। -- প্রেষ চৈতন। সাত্র সভাব স্থেতরাং প্রেষ কিছু কলেন না; প্রকৃতিই জগৎ সৃষ্টি করেন; এইরূপ যুক্তিতে পুরুষের অকর্তৃহ সিদ্ধ হয়।
  - ৭ যোগবন্ধ।—প্রকৃতি পুরুষকে আয় রূপ দেখান, ভোগ জন্মান, এবং পুরুষের জনাই তাহার প্রবৃত্তি বা পরিণান হয়; এ-জনা তাঁহাতে যোগবন্ধ আছে। তাংপ্রা এই গে, প্রকৃতির সহিত পুরুষের উল্লিখিত প্রকার সম্বন্ধ আছে।
  - ৮ বিয়োগবন্ধ।—বিবেক জ্ঞানে প্রকৃতি পুরুষ দর্শন হইলে শরীর নাশের পরক্ষণেই প্রকৃতি-বিয়োগ সিদ্ধ হয় অর্থাৎ প্রকৃতি-সম্বন্ধ থাকে না।
    - ৯ পুरुष रहा । পुरुष এक मरह, रहा

ষত শরীর ভত প্রুষ; ইছা জন্মমরণাদির স্থাবস্থা দেখিয়া অনুভব করা যায়।

>০ শেষ বৃত্তি।—প্রকৃতি দাক্ষাংকার হইবা মাত্রেই আত্মাতে প্রকৃতি-দাধক ছেদ হয় সতা; কিন্তু চক্রগতির নার কিঞ্চিং কাল ভাহার অসুবর্ত্তন থাকে; সেই জনাই জাবদ্ধনায় প্রকৃতিমৃত্তি হয় না; বিবেহ না ২৪৪। পর্যান্ত কিঞ্চিৎ সদক্ষাভাগ থাকে।

এই দশ একরি মূল অর্থ (মুখ্য জভিনেয়)
সাংখ্য সপ্ততি এতে বিস্তৃত আছে। পঞ্চাশং
প্রকার বুদ্দি ও এই দশ প্রকার বিজ্ঞান,
ষষ্ঠি প্রকার পদার্থের ব্যাখ্যা বা উপদেশ
থাকায় সাংখ্য শাভুকে লোকে ষষ্ঠিতন্ত বলিয়া
উল্লেখ করে।

षणु वर्ष भर्तः ॥ ३७॥

अपूर्वदर्व नाग भनं सर्वाट एष्टि।

অপুগ্রহ কি ? কাধার প্রতি কাহার অকুগ্রহ ? বলিতেনি, শুসুন।

প্রাথান প্রক্রি (१) প্রথম বে**ছা ; তিনি** তথ্যকরে প্রতি ধ্যানরপে অনুগ্রহ ক্রেন। ক্রিনে তাহা হটতেই সৃষ্টি হয়।

**চ** कुर्मनिविद्या भू उनकी ॥ ১१॥

ভূতসৃষ্টি অণাৎ ভাব সৃষ্টি চৌদ্দ একার। অভিপ্রায় এই খে, সমুদায়ে চৌদ্দ প্রকার ভাব শরীর বিদ্যমান আছে। যথা;—-

দৈন, পৈশাচ, রাক্ষস, যাক্ষ, গান্ধকা, প্রক্রন, প্রাজ্ঞাপতা, ত্রাক্ষা,—এই আট প্রকার দেনগোনি এবং পশু, যুগ, পক্ষী, সরীস্প ও স্থাবর,—এই পাঁচ প্রকার তির্বাক্ষোনি এবং এক প্রকার মন্ত্র্যানে, সমুদারে চৌদ্দ প্রকার ভৌতিক সৃষ্টি; ইছা অবশারণ করিবে।

जिनिद्यावस्तः॥ ३५॥

বন্ধন তিন প্রকার। কি কি ? তাহা বলিতেছি।

প্রাকৃত বন্ধন, বৈকারিক বন্ধন, এবং দক্ষিণা বন্ধন। আট প্রকার প্রকৃতির কোন্ত

একটিতেঁ আত্মাভিমান থাকিলে ওজ্জনিত বন্ধনকৈ প্রাকৃত-বন্ধন নাম দেওয়া যায়। বিকার সমূহের **ছারা (ই**ন্ট্রিলনের হারা) সম্বরূপপ্রচূতে থাকায় দার্গাই শকাদে বিষয়ে বাাসক্ত থাকাল ভঞ্জনিত বস্তানী নাম বৈকারিক বন্ধন। জা:মান প্রত্তিক দক্ষিণা-ুদান্সাধ্য কর্ণ্ডে ১ ইন্তেড বন্ধন দক্ষিণা-वैद्धन। विभिन्न मार्च लाइ**छ वद्धत्न व**फ इंगी द्रशा भगाउक ७ व २००वि श्रुक्त श्राहर विकातिक रुक्ता यहा ११८७म अर्थः काम्क लक्कालाया ७ वन्दी श्राम्यस्य । १८१७ निरुष्टेच्य पक्किं। यक्षान तमा इत। याँहाजा दशक् कीहाजा এই ত্রিবিধ বর্জন ছেল্ডনৰ জন্য সংগোদ্যুক্ত থাকেন এবং বিধেবকাভ্যাস দারা ক্রমে বন্ধন ছেদনের জ্ঞান অসি (বিলেক জ্ঞান) নিকটস্থ कदत्रन ।

#### जिविदेशास्त्राकः॥ **५**%॥

নেক্ত তিন্তকার।

প্রথম জ্ঞানের উদ্রেক, ২য় ইন্দ্রিরের লাগনান্তি বা বিষয়-বৈম্থা, এবং তৃত্যির কর্মক্ষর। জ্ঞানোডেক হইলে আত্মানর জ্ঞান নিবার, ইচ্ছা হয়, ইন্দ্রিয়ের বিষয়ানাক্ত নাম হইনে পাপ প্র উপ্পন্ন হয় না, ক্রন্থে পাপ প্রোর শভাবে প্রকৃতি পরিত্যাগ রূপ মোক্ষ হয়।

#### ক্রিবিষং প্রমাশ্য । ২০॥

প্রমাণ তিন ওতার। এ প্রতিষ্ঠি (১); অনুমান (২), এবং আপ্রকাল (৬)। চন্ধ্রাদি
ইন্দির গঞ্চক বিষয়ের সহিতে সংগ্রুক্ত হইয়া
যে স্ব্যাভিচরিত জ্ঞান জনার, তাহা
প্রভাক, হৈছু দর্শনের পর যে তংসক্ষ
বস্তব জ্ঞান হয়, তাহা অনুমান এবং লাপোক্রেম শাস্ত্র বাক্য সকল আপ্র । এই ভিনপ্রকার এমানের দ্বারা প্রমেষ্ঠ্র বন্ধ্র জানা
যার, প্রতেকে সভা পদার্থ দিলা হয়।

#### তিশিবং তুঃখন্॥ ২১॥

তৃংগও তিন প্রকার। আধ্যাত্মিক (১),
আধিদৈবিক (২), এবং আধিভোতিক (৩)।
আধ্যাত্মিক তুঃখ আবার তুই প্রকার;
নারীব ও মানস। পরীরের বাতাদি ধাতু
অসমান হইলে তাহা হইতে যে রোগনামক ব্যথা জমো দেই ব্যথাকেই আমরা
শারীর তুংখ বলি। ক্রোধাদি মনোহত্তির
প্রণালা মনোমগো যে তাপ কপ তুঃখ
অমে সে তুঃখ মানস নামে অভিহিত হয়।
সে তুঃখ মতুষ্যাদি প্রাণার ছারা উৎপন্ন হয়
সে তুঃখ অধিভোতিক এবং শীতোক্ষ বর্ষাদিসমুদ্রব তুঃখ সকল আধিদৈবিক।

# নব্য-বদ্দের উৎপত্তি স্থিতি এবং গতি।

नवा वन कोशांदक वर्तन छोटी वर्गाया क-রিয়া বুশাইবার প্রয়োজন নাই,—যে ব**ঙ্গ** আমাদের চক্ষেব সামনে দেদীপামান ভাছাই নবা বহু। এ বঙ্গের উৎপত্তি কোথা হইতে হইল গুনবা বন্ধ অকমাৎ আকাশ হইতে পড়ে নাই,—বাহ্নুর অলাক্ষত স্ঞারে তুথে যেমন ক্রমে ক্রমে সর পড়ে, সেইরপ কা-**रमत** हालना-विशेन जानगा-विशेन हरस्त অসক্ষিত সঞ্চালনে পুরাতন বন্ধ হইতে দুতন तक धीरत भीरत छेडामिछ इहेशारह अवः <u> अथरना इरेरल्ट्स । नदा वस्त्र जन्म-माधरन</u> তিন বিভিন্ন জাতির বিভি**ন<sup>্</sup>কার্য্য-কারিতা** নয়ন-জোচর হয়:, অন্তঃপুরের হিন্দু আচার বাবহারে ন্মতি-প্রাণ-তন্তের কার্যা-শারিজ্যু रेक्ठिकशामात<sup>्</sup>वावृशितिर्ण मूगलमानिष्ट्रित কাৰ্য্য-কাৰিতা, জ্বং সভাস্থলের বক্তৃতার 🕲 मः वान-भरकत अवृत्य है । ताब विमानदात কার্য্য-কারিতা স্পষ্টাব্দরে লুক্ষিত হয়। হিন্দু नव दील, मृतनमान मृतनिवासीत वायः

রাজি কলিকাতা, এই তিন স্থানের তিন সভ্যতা-স্রোতের ত্রিনেণী-সঙ্গমের বাষ্প্র জমিয়া ধীরে ধীরে নব্য বঙ্গ সংগঠিত হং-য়াছে।

ইংরাজি আমলের অনতি-পূর্কে নব-षीरशत विम्नुधर्मा <u>अट</u>ः मृतनिमावारतत ताङ-বৈঠকী রীতি নীতি উভয়ে বিবাহ পাশে বদ হট্য়া বন্ধ-দেশে নৃতন এক সালতোৰ জন্ম দান করিয়াছিল; সৈ সভাতাৰ প্রধান আড্র দিল কুমান্গৰ এবং দোহার প্রধান নায়ক ছিলেন রাজা রুফচ্জ রায়। মেই নগাবি হিন্দু সম্প্রতা আলাদেশ পিডাম্ছা গগেৰ স ময়ে গৌবনে পদ। নফেল করেয়। কলিকাভার প্রভুক্ত কার্যা কোত্রে অবভার্য হইল, ও এজা রামমোহন রায়কে আপনার অপিনারক এদে বরণ করিল। পরিশেশে লালা লাম্মাহন बाब উत्तानी इहै। जिहे नवान हिन्दू महा-তাকে জানোত্মল ইংগজি সভাতার সহিত বিবাহ বন্ধনে আবদ্ধ করিলেন। সেই বিবাহের শুভ ফল।

তুই সভ্যতার বিবাহ হট্তে মুতন সভা-তার জন্ম কেবল যে এই ভাগম শামরা দে-থিতেছি তাহা নহে—সর্বতেই এরাপ গেখা যায়। বাহাকে এখন আমল বিশিই ক্রপে ূঞাক সভ্যতা বলি, তাহা গ্রীকদেশের প্রাঞ্চ তন আগ্য সভ্যতা এবং প্রাতন মিদর দে-শের সভাতা এই দুই সভাতার বিবাহ হইতে প্রাসূত; যাহাকে এখন আমরা রোমাণ কা-थिनक धर्मा विन, छार। हेरूनीय श्वाउन शीहे ধর্মা এবং জ্রীক দেশীয় তত্ত্বজানের অমু-শীলন এই ডুয়ের বিবাহ হইতে প্রসূত, আর পাউল মহাপ্রাভু (St Pual) এই বিবা-হের স্থানপুন ঘটক; সারাদেনিক সভাতা এবং রোমান্ কাথলিক সভ্যতা এই সুয়ের বিবাহ হইতে ইউরোপের মাধ্যকালিক স-জাজা প্রদত চইয়াছিল: বৌদ্ধ সভাতা এবং বৈদিক সভাতা এই দুই সভাতার বি-বাছ হইতে পৌরানিক সভাতা উৎপন্ন হই-রান্তে। অতএব দুই দিক্ হইতে দুই স-ভাতা একলে মিলিত হইয়া বঙ্গদেশে বে ন্তন এক সভাতার সূত্রপাত ব্রিথে ইছা কিছুই আশ্চর্যের বিসয় নকে,—জন্ম নাম্ম্য িবাহের ফল।

গ্ৰাসকল-বিষয়ে জবিকল পিডাৱ মত ত ও না – চুইয়া কাজভ নাই। যদি ভাক তিল এইরপ শিল্প হয়তি যে, প্র আন ফল নিজাৰ অনুভ্ৰপ হই,ব, তবে পৃথিৱীয় নগর তাম হইতে বৈচিত্র জম্মের মতে বি-দায় এছণ করিত,— ভাছা ইইলে একঘন ম-नुगारक ङागितन है जाहाव न भाव मकन মনুষ্টকেই জানা ক<sup>2</sup>ত ৷ ভাগা বে হয় শা— ইহা অগতের প্রোলাগ্য। ন্রণীপের সভাতা এবং মুর্বসংখ্যাদের সভ্যতা ইভয়ের বিবা-হের ফল যদি আবার মেই ন্রহা**পে**র স-ভাতা অথবা আবার সেই মুয়ানদাবাদেব মালাজা এ লিম সার বিভূই না হইজ, তাহা ষ্ঠাল ভাষাতে কাষার কি লাভ **হই**ভ ? न। हिम्मुत (कोन लाए एवं 5--न। सूनन<mark>गारनत</mark> কোন লভে হইত। তেমনি আবার, নবাবি হিন্দু সভাতা এবং ইংবাজি মভাতা উভয়ের বিবাহের ফল যদি আবার মেই নবাবি হিন্দু সভ্যক্তা অথবা আবার দেই ইংরা**জি স**ভাতা ্র ভিন্ন আর কিছুই না হইত, **তা**হাতেই वा काशांद्र कि लाखें रहेंछ? ना हिन्तुव কৌন লাভ হইত না ইংরাজের কোন লাভ হুইত। তাহা হুইলে পূর্বে বাহা ছিল এখনো তাহাই থাকিত, দূতন িছুই হইত ना।

নবাবি হিন্দু-সভাতার মহিত ইংরাজি সভাতার বিবাহের শ্বকল হাতে হাতে ফ-লিতেছে; — মুদলমান সভাতার পরাক্রমে বঙ্গের পুরাতন আর্ঘ্য সভাতা ক্রমশই হীন-

জ্যোতি হইয়া পড়িতেছিল—ইংৱাজদিগের বিদ্যা-বৃদ্ধির আনে পাইয়া একংব তাহা আবার মাথা তুলিব ব উপ ক্রম করি-তেছে/। প্রাচীন লোকেল অনেক সময় এই বলিয়া আক্রেপ কলেন খেলাগুলুয়ানি আর थाटक कमात्र!" हे श्रीया अबू क्वार्यन-एना-চার রক্ষা করাই দেশখন। কোনো হিন্দু শাস্ত্রে লেখে না ে এওপ্রের বাছিরে স্ত্রী-लाकप्रिरंगत्र भागाला निरंधश.—दत्रर हेशांव অধিকল বিপরীত; ওন্দ-শাক্তে আছে "ছারে-বানুগতা অচহা ছায়াব ন্যায় স্ত্রী সামীর षमूताला श्हेरतन,---(वासारयह हिन्नूहा नश-রিবাবে লোকানার যাভাগ্রাভ করিতে কিছু-या व क्षिण रक्षाना, शर्नानवीन् भक्तिहै यायनिक नक । औरनाक्तिशक जन्द्रश्रहत हादि वन कतिहा अथिए इस्ट्र-अहा थान् য়ুসলমানি প্রাশানতবুও আমানের কাছে তাহা হিন্দুয়ানি : কুলক্সীদিগের প্রতি কু-দৃষ্টি-পাত করা একেগারেই হিন্দুদিলের প্র-कृति विकास - मार्गनी खीरिनाटक माधावनकः মাতৃ-সম্বোধন ক্লাই ছিন্দুদিশোর চিত্রকালের অভান,—এখন ছবি ভাহার, কোন ব্যত্যয় হইয়া থাকে, তকে নিশ্চয়ই ভাহা মুদলমান খাশলের প্রবৃত্তিত ন্ব।বি বাবুলিনির ফল। প্রের মম্ফে নাতা যেমন অসংক্রেটে বা-ভিন হইতে পারে, দিন্দু-স্ত্রী সেইরপ রাতি-মত ভক্ত বিকা কবিয়া ভক্ত সমাজে অসং-কোচে বাহিত্ত হইতে গাবেল,—ভাঁহার প্রতি रय वां कि स्नलगानि जन्गात नशामिश। कू-ভাবে किहे क कर्य, त्म आजिए हिन्दू हहे-লেও তাহার মন মুদলনানের অধ্য ; \_এই শ্রেণীর কদগ্য কাপ্রুষ লোকদিগের প্রতি একজন স্থবিজ্ঞ রাজান এইরপ অভিনম্পাত নেওয়া আছে Honi soit qui mal y pense যে মন্দ ভাবে তাহার মন্দ হউক। বোদাই ও गाजाक প্রদেশে জ্রীলোকদিগকে শ্রু।-

শক্তি করিয়া ঘরে চাবি দিয়া রাখিবার রীতি নাই কেন ? দিলীর প্রতাপ সে সকল স্থানে পূর্বতেজে পৌছিতে পারে নাই— এই তাহাব একথাত্র করেণ। মুসলনান-দিগের অপেক্ষা আমাদের বোদাই মাক্রাজী ভাতারা আমাদের অধিক আদরের বস্তু; হিন্দুয়ানির গঠন না করিয়া আমাদের উচিত যে সেই খাটি হিন্দু ভাতাদিগের নিকট হইতে আমরা হিন্দুয়ানির কথ শিক্ষা করি। বস্থানের সংস্কৃত উদ্ভারণ যেমন তাই উল্লোক্তি লেশের সংস্কৃত উদ্ভারণ যেমন তাই উল্লোক্তি নেইরূপ এই হিঁত্রানি। খাটি হিন্দুয়ানি যদি কোথাত থাকে তবে তাহা ও সকল মবনাজিত প্রাদেশ ভাতে।

রানমোহন রায়ের দুল-দর্শিতাকে ধনা —
তিনি একাকা আপন বুদ্ধি প্রভাবে নব্য
বন্ধের উ: তির জটিল সমস্যা অবলীলা-ক্রমে
পূরণ কবিয়া গিয়াছেন। তিনি নবা বঙ্গের
ক্রম্বান করিয়াই ক্রান্ত হ'ন নাই ভাধার
নঙ্গে তিনি ভাহার স্থিতি এবং গতি উভয়েইই মূল সংস্থান করিয়া গিয়াছেন। সে
স্থিতি এবং গতি কিরূপ ভাহা একবার আলোচনা করিয়া দেখা যা'ক।

গতি নিনা পরিবর্তন। যথন প্রীম্ম মাত্র আইনে তথন সন্দে হয় যে, ইহার আর অন্তর্গ নাই; প্রত্যহই লোকেরা তাপে ক্লেরিত হইয়া কার-ক্লেশে কোন রূপে দিবা অবসান করে, কাহারো শরারে অধিক বন্ধ সহে না। তাহার পর যথন শীও প্রাত্র আইনে তথন সমস্তই উল্টিয়া যায়; প্রের শোকেরা অর্ক্ত তথন আহি সেবন করিত এখন অহি শেকের করে; একজালে আর এক কালের সকলই উল্টিয়া যায়। শীত কাল চলিয়া গোনেও যে অভিয়া যায়। শীত কাল চলিয়া গোনেও যে অভিয়া যায়। শীত কাল চলিয়া গোনেও

\$5% >p.09

্রত কাল গ্রীম্ম চলিয়া আদিয়াছে निया हितकां नहें दें औषा खनाद्य हिन्दू ह शिक्टिंब, जांगांव ट्यांन वर्ष नारे । न्यम्टवा বেষন কালোচিত পরিবর্ত্তন আবশাক স-মাজেরও নেইরূপু কালোচিত প্রিবর্থ আ বশ্যক; এই কালেচিত পরিবর্তনংক্ষ এ খানে আমরা "গতি' এই কুচ এচরতি নামে নির্দেশ করিতেছি। কিন্তু আর এক-দিকে দেখা যায় যে, যদিও শতি-কালেখ চিত বস্ত্র-পরিধানের নিয়ম আল্ল-কালে পরি-বর্দ্ধন করিতে হয় 😕 গ্রীত্ম-কালে।চিত ঞ **পরিধানের নিয়ম শীত-কালে প্রিবর্তন ক** রিতে হুণ, কিন্তু বস্ত্র পরিধানের একটি নিয়ম কোন কালেই পরিবর্ত্তন কারতে পরে৷ ঘার না—দে নিঃম এই যে সাফ্যোগ্যোগা বস্ত্ৰ পরিধান করিতে ইইবে। গাঁদ বলি যে উষ্ণ বস্ত্র পরিধান করিতে হইবে, ভবে এ कथा जीवाकारल थाएं ना, यनि वनि य मुक्त বস্ত্র পরিবান করিতে হইবে তবে একথা भीज-कात्न थारि ना; किस गांप तान त्य पार्द्याभर्याको वञ्ज भावसान काबराज इहेरव, তবে এ কণা শীতকালে দেমন খাটে, প্রীয়া कारमञ्जूष्ट्रमनि थाएँ, वर्धाकारमञ् एउमान थालि; कान कालिए এ कथा छन्।। १८७ भारक मा। अथारन धृष्टे ऋल नियम रनियं उ পাওল যাইতেছে—প্রথম, কালোচিত নিয়ম কিমা মাথাকালিক নিয়ম, – শীত বস্ত্র পরি-ধান কারতে হইবে ইহা একটি যাথাকালিক निश्चम, तकनना ध निश्चम यथाकारमरे थारहे, **्रें क्लो-कारन थाएँ ना** ; षि**डी**ग्न, मोर्क्ट कालिक निवन,--शार्षात जिन्दानी वस निवन क-ब्रिट्ड इट्टेंट्र- अ निश्चम मकन काटल है थाएछ। क्षेत्रन कार्यता এইটি বলিতে চাই যে, मया-ুঁক্টেয়ত প্রকার **সামান্তি**ক নিয়ম আছে ভাহার মধ্যে যে-গুলি সার্বকোলিক তাহার ৰায়িত্ব সমাজের ছিতির ভিত্তি-মূল, এবং

থে গুলি যাথাকালিক তাহার কালেচিত পরিবর্ত্তন সমাজের গতির ভিন্নিন্ন।

রামমোহন লায় বঙ্গের গতি ভালার দিকে দিরাইবার জন্য ইংবাজি বিদ্যান্ধরের মূল প্রতিষ্ঠা করিলেন এবং তাহার স্থিতি ভাটল রাখিবার জন্য প্রসমন্ত্রের মূল-প্রতিষ্ঠা করিলেন। জ্ঞানেভাতর সংস্থে নমাজের আচার ব্যবহার লাভি নাতি ও কার্যপ্রধানা গরিবর্তিত হউতে থাকিবে ইহা জনিবার্য কেবল নয়,—ইহা প্রাথনীয়। কিন্তু সাথাকালিক রাতি-নাতির কালোচিত পরিবত্ন কারে দিলা জান্যা যেন মেই সঙ্গে নার্ব্রেলিক গ্র্মিনিয়মের স্থৈয় বিনাশ না করি—এই বিষয়ে জানাবের সার্ব্রেশ স্বর্ণান হওল করে।

লামবেশাহন লায় জহলাজি বিদ্যালয়েল মুত্রণাত কণিত্রাই ক্ষ্মেলে মধ্যে কবিতে পা-রিলেন এং, এনা একজন সমাত-সংস্কারকের यह ७ श्रीदल्या बरे भा रहेल देशारे बर्य है। কিন্তু ভাছা হছলে এই বদ দলতের কি দা-কণ চূজনা হুট্ হ তাহা একবার লাবিয়া **দেখ**। ভাষা হছকে ছুমাবরৰ-শূনা ইংরাজি কিব**নে** বস সমাজের মাথা এরূপ পার্য্যা যাইত সে, বঙ্গ স্থাজ অচিরে ভ্রমার প্রাপ্তান এবং জ্ঞানাভি-मानी माखिक এই पुष्टे मध्यमास्त्रव अस-কারণণ অউলার আড্ডা হইক। তাছা হইলে বামালির৷ আসল কাজে যাহাই হউক না— আচার-ব্যবহারে ইংরাজ অপেকাও ইংরাজ হইয়া উঠিত ; বাঙ্গালি সভাতা একং ইংরাজি সভাতা দুয়ের সন্মিলনের ফল সরূপ আর যে কোন-প্রকার নূতন সভাত। উৎপন্ন হ-ইবে তাহার পথ বন্ধ হইয়া যাইত। মুসল यानिष्टिशत वायटन १११८म् (यक्कश भातमा ভাষার অনুশালন প্রচলিত ্তিল, ভাষাতে লোচকর সাধীন চিন্তার চক্ষু ছুট্ট্য। তুলিতে পারে এমন কোন অঞ্জন ছিল না; এই জন্য রাজা কৃষ্ণ ক্রের আমলে মুদলমান দিণের আদৰ কায়দা এবং পুরাণতলের ধর্মা এ ছু-য়ের মিলন মিশনের প্রেফ বিরেশ্য কোন প্রতিবন্ধক ঘটিতে পারে নাই! কিন্তু ইং-রাজি বিদ্যার অনুশীলন সহস। বেরুগ লো-त्कत श्राधीन हिल । । अ कृतिहेटा (**डाट**न, তাহাতে দে অনুশালকা অঞ্চলতা পুরাণ তজের ধর্ম্ম কোন গতিলে চান্ধ-খাইতে পারে मा,—के हुए विधायो मामलीएक तन श्रुकांक মিশাইতে গোলে তেলে ককে মিশালে। হয় गाउ। स्राविका : रहा धर्म थान श्रात-তন কালে বঙ্গের জিলের ভিত্রিমূল ছিল- এ-ক্ষণে ইংবাজি বিদ্যার ভোড়ের মুখে তাহা कान करभेरे तिविष्ठ शास ना,- अधन বদ্ধের স্থিতির এইরণ একটা মৃতন ভিডি মূল আৰশ্যক, যাহা ইংরাজি বিদ্যার উল্লিড লোটত না টালিয়া পর্বতের নায় ছির থাকিতে পারে।

পূর্বতন হিন্দুসমাজে স্থিতির কিছু অতিনাত্রা বাড়াবাড়িছিল। আপদি মস্তক भुद्याना-वन्नरम हिम्दुमभाज छ्ए-जाएहे रहें। পডিয়া ছিল। পর্বতের হিন্দ্-সমাজে গৃহ ব্বের কর্ত্তবা, সম্বাদীর দার্ভবা, রাজার কর্ত্তব্য, গুজার কর্ত্তনা, মমস্ট প্রানুপুর্রূপে নি-কাচিত ও বল্পা গাও দিয়া নামাবদ্ধ— করা ছিল। মৃত্র আনলের বাঁধা রাস্তায় বাঁধা চালে চলা হিন্দুন্মাজের এরূপ অভ্যাস পাইয়া গিয়াছে যে, এনকীর এই গুমন্ত হিন্দুসমাজও ঘুমের বোরে সেই একই দ্রাপ্তায় একই বাঁগা চালে চলি-তেছে। কামারের কাজ কামার করিতেছে, কুমোরের কাজ কুমোক করিতেছে, ভাতির কাজ ভাতি করিডেছে, চাদার কাজ ঢাসা ক্রিতেছে,—তাই না হয় নুতন প্রণালীতে তক্রক, তাহাও নহৈ, নাকাতার আমল হ-केटन द्याल दार्श-श्रमाती हिल्या जामिएकरक

আজিও দেই প্রণালীতে সকলে স্ক্রম ম কার্য্য করিতেছে। স্থিতির যেথানে এইরাপ অতান্ত বাড়াবাড়ি দেখানে গতি সহজেই পড়িয়া আদে—ইহাই সমাজের তাগের পূর্ব্ব-লক্ষণ। স্থাবর স্থিতি-শীলেরা বলিবেন সন্দেহ নাই যে, "চাসা দিব্য চাস করিতেছে, পণ্ডিত অধ্যাপনা করি-তেছে, রাজা রাজ-কার্য্য করিতেছে, অন্ন-প্রাদন বিশাহ প্রাদ্ধ দ্বা নিয়মে চলিতেছে সকলই দিবা নিৰ্দ্ধিয়ে চলিয়া খাইতেছে, **ইছা** অপেক্ষা অধিক ভাল আর কি আশা করা বাইতে পারে ? ততে বেন মিখা। এক পরি-বভঁলের বিপ্লব আনিয়া গুল গুল্ব স্মান্তের শান্তি-ভঙ্গ কলা!" অনু সংস্থার দিবা চক্ষে দেখিতেছেন "সমা**জ** দিব্য চলিতেছে।" কি**ন্তু** সতা-সভাই কি সমাজ দিবা চলিতেছে ? গতিহান সৈতিশাল দ্যাজের উপরে জ্ঞানের এক বিন্দু আলোক পড়িলেই ভাছার দিবাত্ব খ্তির। যায়। এরপ সমাজের নীচের লোকেরা বাঁপে কা কর-যোডে দিবা নিশি গ্রীবা অবনত। য়ত ভার চাপাও ভঙ্গী সহে বলদের মৃত।।

স্থা প্রাণাণ।

উপরের লোকদিগের— গর্ক অভিমান ওঠে সকল-হইতে উক্তে চাড়, সাধ যার চরাচর পদতলে যাক্ গড়াগঙি,॥

3

ত্ররপ স্থিতি-শীল সমাজের নীচের লোকদিগের উপরে উঠিবার দিঁতি নাই, উপরের
লোকদিগের নীচের সাহায়ে নামিবার দিতি
নাই। স্থিতি-শীল সমাজের উপর-শ্রেণীর লোকেরা বিনা যত্ত্ব বিনা পরিশ্রমে তক্ক কেবল
পূর্বপ্রুষদিপের কুপায় সমাজের উচ্চ আসকে
ভাবিরার পাইয়াছেন—তাহারা প্রাণ শাকিতে
সে আসন যথার্থ উপযুক্ত ব্যক্তিকেও ছাছিল।
দিতে পারেন না; তাহারা হাহেন "সম্ভি
যেমন আছে তেমনি কাছে;" তাহারা মনে
ভাবেন যে, সমাজ বেনক আছে তেমনি

থাকেলেই তাঁহারাও যেখানে আছেন সেই
থানে থাকিবেন —সমাজের মন্তকের উপরে
থাকিবেন, কিন্তু তাঁহারা মুখে এইরপ কার্বা
দর্শান শে, "প্রেষামুক্তনে যাহা চলিয়া আদিতেছে তাহা ভাল বই মন্দ হইতে পারে
না।" যাহাদের "ছিত" আছে অথাৎ
ধন-মান খ্যাতি প্রতিপত্তি খাছে —ছিতিশীল
সমাজ তাঁহাদের প্রস্তরের চুগাং গ্রু দ্ব

শ্চাবি-স**ন্ধ হৃদয় পা**ধাণসম, স্বচন্ত্ৰী কটা কন্ধ প্ৰেমাবিতে সালা চাত্ৰি বিকে গাঁও জ্বাকিন্দ্ৰত

मुज्य छिलाईहार्गत वह शतात आगर्छ ই'হারা সন্মত নহেন—গুরি এর পিবপের শ্রমার্ক্সিত প্র মান রক্ত, করাই চ'হাদের প্রধান কার্দা, এবং যাহা আছে তাহা হারাই-বার ভয়ই ই হাদের প্রধান ছব। গতিশীল भूगार्थं गरम खेला कारनत मध्य १० विनदस्त গোলা থাকে, ও সহপ্র ব্যক্তি উৎসাহ এবং উদ্যুমের মহিত অভীপ্ত পথে চলিয়া অভীপ্ত ফল লাভ করে; স্থিতিনীল সমাজে ঠিক ইছার বিপরাত। এ সমাজে ধন-মান গাছা-দের আছে তালদেরই থাছে, আন সমস্ত लातक अंकि मीन भीन कारत कांशरमन ঘারের অভিায় গ্রহণ করিয়া কোনরতো স স পরিবার প্রতিপালন করে। স্থিতিশাল সমাজ যাঁছাদের প্রস্তুরের তুর্গ ভাঁহাবা ভাঁহা-দের স্বাপের অনুবোধে বলিতে পারেন "ममाज पिवा छलिटल्ड्," वैश्वन कि निम्न-শ্রেণীর লোকেবাও অন্ন সংস্কারের বশ-क्टी इरेश जालनात्नत्र आरथ्त विक्रामण উপরি-উক্ত কথা শিরোধার্যা করিতে পা-বেন—কিন্তু অপক্ষপাতী জ্ঞান কথনই ওরপ কথ্য সায় দিতে পারে না। ই জ্ঞান স্পট্ট विनिद्द (य, "এ সমাজের নাড়ী পাওয়া य।ই-ুতেছে না, ইহাতে গতির তাড়িত-স্ঞার

করিতে আর এক দণ্ডও বিলম্ব করা উচিত হয় না।" কিন্তু আর এক দিকে দেখা বায় থে, পতিৰোধক স্বিতি সমাজের পক্ষে যতই কেন ভয়াবহ হউক্ না, স্থিতি ভঞ্জ পাঁদ তাহা মপেকা আলে। অধিক ভয়াবহ। একাঞ্চিক िक जित्र केल जोत यथन मसारकत जनगा हरेगा উঠে, তথন সমাজ পরিবর্ত্তনের দিলে সভা-एउट्टे **डिगूथ इ**हेया थाटक। भरारकत विहे-রূপ তপ্ত অবস্থার বাহির হইতে পরিবভ্রের উন্দীপক কোন নতন উপকরণ তাহার উপরে অসিয়া পড়িলে পুরাতনের সঙ্গে নূতনের সঙ্গে কিছুকাল ধরিয়া কোঝাপড়া চলিতে থাকে : প্রথম ভাগম শতন কিছুতেই পরি-পাক থায় না, - ক্ষে স্থন ন্ত্নের ন্তন্ত थिउदिश गरः। शिष्टा चारम, उथन श्रा-তানের সহিতি তাহার কত্রটা সিশ খায় ; প্রথম প্রথম নূতনকে অদ্ভুত ন্তন মনে হয়, পরে চলন-মই নুচন মনে হয়, ভাছার পর পুরাজ**নের মহিত মূতনে**র রীতিমত লয় **বাঁ**-পিয়া গিয়া নৃত্ন প্রাতনের অক্সের সামিল ছইসা দাড়াধ। কিন্তু প্রাজনের মহিত দুজনের সভাব বলিতে না পলিতে যদি আরু ৭ক মুত্ন আনিয়া ভাগকে আক্রমণ করে, এবং ডাচাও স্থির হইতে না হইতে আর এক ন্তন অাদিয়া ভাছায় উপর চড়াও করে, মুনুর্ত্ত নূতনের পর 'নূতন আফিগ্রা তাহাকে ব্যতিব্যস্ত করিয়া তোলে, ভবে নমাজ নিতাস্তই অতিষ্ঠ হইয়া উঠে। ফরাসিস্বিপ্রবের সময় কত যে নৃতীন-নৃতন অদুত ব্যাপার আসিয়া, কড় যে ছুই দিনের পুরাতন নাবালক স্থিতিকে বংগর-ক্যেকের মধ্যে প্রাস করিয়া কেলিল তাহার ইয়তা করা যায় না। ঘন্টায় ঘন্টায় পাতৃ পরিবর্ত্তন হইলে বংসরের ফল যেমন ভরানক হয়, ক্রমাগত নূত্র-নূত্র-নূত্রনের স্রোত বহিতে शाकिल সমাজেরও সেইরূপ তুর্দশা হয়।

নগ্ৰকের বিষয় সমস্যা এই যে, গতি স্থিতিকে ভঙ্গ করিবে না, স্থিতি গতিকে ८तात क्रतिरव ना, **উভয়ের** सवा-श्रव निश्चा वन्न मनाखरक उद्गीज-माध्य महेशा यहिए र-ইবে। স্মৃতি-পুরাণ-ডক্রের কর্মা যাহা এ যাবংকাল এও সমা, া ক্তির ভিত্তি-মূল ছিল আহা একগণার কালোচিত গতির উপ-र्याशी मृद्ध । वकाल देश्वालि निमानूनीलन ান্যা বঞ্চা স্থাধীনতার উত্তেজনায় মাতাইয়া ত্লিয়াহিত্র, - "লাপনার সাধীন চিন্তার পরা-মন ভিন্ন আৰু কাহাৰো কথা মানিব না" এই মহামত্রে ২ চবিদা ব**স্ব-সমাত্র**কে দীক্ষিত ক্রিয়ান্ত্র, হিন্দুধর্মের শাসন নব্য-বঙ্গের এই নবোদীশু স্বাধীনতা-স্পৃহাকে কিছুতেই বাঁৰ দিয়া আট্কাইয়া রাশিতে পারিতেছে मा -- शानित्व ना। अरे श्राधीमजा-च्याटक এতিরোধ করিতে যাওয়া নিতান্তই ধীন বুদ্ধিন কার্যা; উন্টা আরো, যাহাতে উগ ম্যাক্ রূপে চ**রিতার্থিতা লাভ করিলে** পারে ভাষাৰ উপায় অৱেষণ করা ক্লতবিদ্য বোদ্ কের ক্রব্যা।

স্থানিতার উপ্যুপরি। তিনটি থাপ আছে,—প্রথম, স্থান-চিন্তার স্ফুতি; দি-ভাচ, স্থানি চিন্ত, দ্বারা সার্বভামক ধর্ম নিয়মের সংস্থাপন, তৃতীস, স্থাধীনতার আগনারই চিন্তা-গ্রন্থত সেই স্কল্ধর্ম-নিয়ম দ্বারা আপনাকে নিয়মিত করা,—এক কগায় ধর্মা-নিয়মানুগারে চলা।

প্রথম, তাবানতার কি তি স্বাধীনতা আপনার নৃতন ক্রতির এখন উদানে অধীরে বলিয়া উঠে "আনি ক্রান্তা বলের বশবতী হইরা চলিব না, আমার নিজের সাবীন চিন্তা যাহা বলিবে তাহাই করিব।" কিন্তু স্বাধীনতা এখনও ধালক—এখনো তাহার চিন্তা পতি জাস্ম নাই; এ তুর্দান্ত নালক-বাধীনতার স্বাধীর সমাস্ক কিছুতেই

নিভরি করিতে পারে না ; আ স্বাধীনজ্ঞান-তির উত্তেজনায় প্রমন্ত হইয়া নমাজের স্থিতিকে ভঙ্গ করিতে হস্ত উত্তোলন করে। এ স্বাধীনতা স্বেচ্ছাচারিতার অধিক উপরে উটিতে পারে না।

দিতায়, সোধান চিন্তা হইতে সাৰ্ক্-ভৌমিক নিয়মের উৎপত্তি। সাবীনতা ঘণোচিত ব্যঃগ্রাপ্ত ২ইলে, জ্ঞান তাহাকে এইরূপ উপদেশ দেয় যে,<sup>শ</sup>ূনি <mark>যথন স্বাধীন</mark> চিন্তা করিতে শিধিয়াছ তথন ভাহার চরম পৰ্যান্ত যাও—মধ্য-গদায় হাল ছাভিয়া দিও লা; তোষাৰ স্বাধীন চিন্তা যে প্ৰয়ন্ত না নালভো নক সতে পৌছায় যে প্রতি নিগতি মানিও না; যতক্ষণ না সদ্ধিনাধা-রণের কল্পা**ণ-জনক ধর্ম্মনিয়ম অন্নেয়ণ ক**-রিয়া পাও, ততক্ষণ আপনাকে কৃতকার্ম यान कृतिस सा।" अप्रेतात सामीनसात ্জান-চকু ক্ৰিলাছে; স্বাধীনতা ব্ৰিসাছে যে, শুধু গতিতে কিছুই হয় না-গতির সঙ্গে নামে স্থিতি চাই; বুঝিয়াছে যে, পরিবর্তুনায় রাতি নাতির পরিব**র্ত্তন করা যেমন আবশাক**, অপরিবর্তনীয় ধাম নিয়মকে ধরিলা ুথাকা তেমনি আবশাক : িল গেই যে ধর্মা-নিয়ম তাহ। ঐ স্বাধীনতার আপনারই চিন্তা-প্রদূত – পুঁথি হইতে সংগ্রহ করা বচন মাক্ত न(१।

তৃতীয়, আগনার স্বাধীন চিন্তা-প্রসূত ধর্মানিহা আপনি চলা। আমাদের দেশে স্বাধীনতা এ যাবৎকাল ক্রমাগতই বল ভারা নিয়ন্ত্রিত হইয়া আসিতেছে। আমাদের দেশের ধর্মা পর্যান্ত বলের অধীনে ঘাড় পার্টিছা দিতে কুঠিত হয় নাই। মানু বলিয়া-ছেন অমুক কার্যা করা কর্ত্তরা অভ্যান্ত তাহা কর্ত্তরা, ধর্মা মনুর শাসনাধীন; প্রকর মান্তা পালনই সার ধর্মা—ধর্মা গুরুর শাসনাধীন। কুটী যথন পাওবদিগকে বলিবেন "তোমা

পাঁচ ভাই মিলিয়া দ্রোপদীকে বাঁটিয়া লও" তথন দেই ধর্ম-বিক্লন আদেশ পালন ক-রাই পা**ওব**দিগের **ধর্ম হইল।** দেবতার বলবান্ বলিয়া ভাহাদের অনুষ্ঠিত অধ্শান দোষের নহে তেজীয়দাং ন দোষায় । এখ-নকার জ্ঞানোচ্ছল সমাজে মনুর শাসন বা ত্তক আজ্ঞা, কিংবা ঋষিবাকা, ধর্ণোর দিংহা-মন অধিকার করিতে গেলে, তাহা নিতা-**छट्टे** हामगण्याम् (मिटिक मरा। এथन (यक्तन কাল পঢ়িগাছে ভাহাতে, ধর্ম্মের নিখন কৃত-বিদ্য ব্যক্তির ধারান চিন্তা হইতে গুলুত হইলে তবেই ভাহা লোকের এজভাজন ছইতে পারে। প্রতি জনেই গোণনা স্বাধীন লিন্তা হইতে ধশোৱ নিয়ম উত্তা-বন করিবার তারিকারা। প্রপাততঃ মনে इहेट भारत रया कार्य इहेरन दा छ-বিশেষের প্রতির দোলে যে-সে নিয়াল ধর্ণক ্নিয়ম কলিয়, নিৰ্দ্ধানিত হুইবাল প্ৰেক্ত কৌন বাৰা থাকবে না; দিন্ত বাস্তাবক মেজপ আশকার বেনন কারণ নাই, কেননা নি-দ্বান্তিত নিবমটি সভ্যা-সভাই ধণেয়র নিয়ম কি ্মা তাহার প্রাফা সহজেই হুইতে পারে। যদি সে নিয়ম মার্কভৌমিক পদ-বীর উপযুক্ত ইয়, অলাং যদি ভোৱা मर्खमाधात्रतः कार्ताभरयाना इत्र, कत्वरे তাহা ধর্ম-নিয়ম – নচেৎ নহে। ইহার একটি উদাহরণ দিতেছি; "মিখ্যা কথা কহিবে" এই নিয়ম সর্বা-সাধারণে প্রচারোপযোগী— না "সত্য কথা কহিবে" এই নিয়ম সর্বং-সাধারণে প্রচারোপযোগী ? যদি, কোন রাজা সীয় রাজ্যে এইরাপ একটা নিয়ম প্রচলিত করেন যে "কেহই মিথ্যা ছাড়া मछ। कहित्व ना," তाहा हहेत्न भकंतनह मक्टलत कथा विवास कतिटन, टक्ट काहादता ক্পায় কর্ণাত করিবে না; কেছ কাছারো কুৰায় কৰ্ণণাত না করিলে কোন কথা বলিতে

काशास्त्र। श्रवृद्धि इहेरव ना-भगन्छ बारका कथा कहा अदकवांद्विष्टे वक्त इहेशा याहेत्व, তাহার সঙ্গে মিথ্যা কহাও বন্ধ হইয়া ষা-हैता। এইतन द्वारा घारे उट्ह (य, "निया কহিবে" এ নিয়মটি যদি কোন কালে সর্বাদ সাবারণে প্রচলিত হইবার হয়, ভবে আজ হত্ত তাহার ললাটে স্পষ্টাক্ষ্যে লিখিত রছিলাছে। অভএব "মিথা। কছিলে" এ नियमि मर्या-मार्यायत्व श्राहादेवाश्राम्यां नरह। আমার নিজের সাবীন চিন্তা আমাকে বলি-তেছে যে, সভা কছিবে এই নিয়মটিই সর্বা-লাধারণে প্রচাবোপযোগী - স্নতরা আমি যদি সভেৱে নিয়মে চলি তবে আমি আমার খাণনারই সাধান ডিন্তার পরামর্থ অনুসারে চলি -ভাছারো কোন বল ছারা বাধা হইয়া हिल ना

কাৰীন দিন্তার স্ফু<sup>নির্</sup>তেই জ্ঞা**নের** উৎপত্তি মাধিত হয়; স্বাধীন চিন্তার ফলে— এক দিকে প্রাকৃতিক নিয়ম আর-এক দিকে ধর্মা-নিগ্রম এই তুই প্রকার নিয়মের আবি-ফারে-ভানের স্থিতি সাধিত হয়; এবং श्वीन विश्वी-अन्छ (महे भक्न नियम्दरू नाना ज्यानात हिन काटमा खारमान कता इहेटनहें छ्वा:नव पांड मासिड हम। छ्वा-নের এইরূপ উৎপত্তি স্থিতি এবং গতির উপত্যে সভাতার উৎপত্তি স্থিতি এবং গতি বিশেষরতেগ নির্ভর করে। বৈণিক মুনি-অধিদিগের স্বাধীন চিন্তার স্বার্জ-এভাবে वागात्तव (मान क्वारनव छे९भछि हहेश। চিল-এবং তাহার পর ম্লাদি রাজ্যির আবিষ্কৃত ধর্ম্ম-নিয়মে আমাদের দেশে জ্ঞা-নের স্থিতি সাবধানে রক্ষিত হইয়া আদি-গ্নাছে; কিন্তু মুক্রাযন্ত্রের সাহায়া বাতিরৈকে কোন দেশেই জ্ঞানের গতি রীতি মত সা-ধিত হইতে পারে না—অর্থাৎ জ্ঞানকে রীতি या कार्रा-त्यंत्व नारात्ना याहेत्व शादत ना ।

25 mg a 1997 H

**ৰাষ্ট্ৰের দেনে** তাহাই ঘটিয়াছিল। আমা-**দের দৈশে জোতিষ ছিল—**কিন্তু নাবিকীয় কার্যো জ্যোতিবৈশ্বপ্রয়োগ ছিল না; আমা-দেৱ দেশে গণিত বিদ্যা ছিল, কিন্তু যন্ত্ৰ-তন্ত্ৰে গণিতের প্ৰস্থোত ছিল না; আমা-দের দেশে ভাত্তভান িও শিল্প মাংসারিক কাৰ্য্য-ক্ষেত্ৰত ভূ-কালেৰ প্ৰয়োগ ছিল না,---.আমাদের স্থাত্ত পিতিব নিদীভূন-ভাৱে গতির পাস ভাবনুল সেইবার উপক্র**ম হইয়া**-ছिল। यागः इं ल्लार्ट्स तम्थाहेशाहि सः স্থিতি 🙉 নতি, তুট্ট সমান আবিশকে, এক বৃষ্ণায় দেখাইতে চাই যে, আমাদের দেশে স্থিতির বেল উপাদানেই অভাব নাই—আমাদের গত কিছু অভাব সমস্কট গতির প্রসঞ্চ বীন। একণে আমাদের কর্ত্রা যে,আমরা আমাদের স্ফেনীয় স্থিতির সহিত ইন্টবোপীয় গতি মিশিত করিলা নেই মূত-লগায় স্থিতির জীবন সঞ্চার করি। ইংরাজি विज्ञालय फ्लार्स्स किवन पर्धाप फिन विज्ञानिय প্রদের জ্বান হালে প্রিপ্রেন করিয়া তুলি-তেতে, কিন্তু যত ই কেন পারির্কন বরুক না— ব্রাদ্যমাজ বতক্ষা আছে ততক্ষা কোন প্ৰস্তুত্তই নৰা ৪% নিতান্ত উচ্চু ঋল হইতে পাবিবে না; সাগন চিন্তার মৃতন সদৃত্তি किश्वरणित्रमध्य जुलिल अवेशा छिटित-इंश তো হইভেই পারে, বে'ন্ভাল বস্তুর সঙ্গে मन्त अवर्षेन्स इकडे जानिश मा थाएक ? किन्न रमरे काबीन छिखा 🌇 किं इंटेटव्हें সার্বভৌমিক বর্মা-নিত্রস উদ্বোধিত করিয়া স্বাধীনতাকে যথার্থ পথে প্রচালনা করিবার জনা রোখাসমাজ বন্ধদেশে খবভার্ণ হইয়াছে। কালোচিত পরিবর্জনের নিয়ম এচারের জন্য **रियमन आमारमंत्र (मर्ट्स देश्त्रांक कि**पालिय প্রতিষ্ঠিত হইয়াছে, সেইব্রপ অপরিবর্তনীয় পর্মানয়ম প্রচারের জনা আমাদের টেশা ত্রাব্যনমাজ প্রতিষ্ঠিত হইয়াছে।

নব্য বঙ্গ-সমাজের গতির ন্দ্র, আরএকটি স্থিতির ভিত্তিমূল। আমাদের
শের স্বাধীন-চিন্তা-প্রসূত ব্রাক্তিন স্থিতি
ইংরাজি বিন্যার বিবাহ সংঘটন হইলে সেই
সঙ্গে স্থিতি এবং গতির বিবাহ-বন্ধন দৃচীভূত
হয়; ইহাই নব্যবন্ধের মন্ত্রের একমাত্র
নিদান।

खागाएवत (प्रत्येत नवा-मञ्जूषां दशका ७-কটি বিসংগ বড়ই ভুল বোবেন, সাধীন চিন্তা বলিতে ভাঁহারা ব্যক্তিগত স্বাধীন চিন্তাই বোলেন--দেশের সাধীন চিন্তা বলিয়া যে এনটা সামগ্রী আছে তাহা তাঁহাবা বোঝেন না। গেমন আমি তুমি তিনি, তেমনি আ-মার দেশ তোমার দেশ তাঁহার দেশ। দেশের সাধীন অবস্থায় দেশের মন্ডক-স্বরূপ ব্যক্তিদিগের মন ইইতে স্বভাবতঃ যেরূপ সূত্য এবং ধর্ম্ম সম্বন্ধীয় চিন্তা বিনিঃসূত হয় তাহাই দেশের **অধীন** চিন্তা। সভাৰতঃ যেরূপ চিন্তা বিনিঃস্ত হয়-অথাৎ কোন বিদেশীয় জাতি-কর্ত্তক বল-পূর্ব্যক রাধিত না ছইয়া দেরাপ চিন্তা বিনিঃস্ত হয়। প্রথমে ভেম আসিয়, সাধীন দি**স্তাকে উন্ধাইয়া দিৱে.** তাহার পর ভান আসিয়া স্বাধীনতাকে নিয়-মিত করিবে, এই হ'ড়েচ নিয়ম: যদি **আমার** ভেম না থাকে তবে আখার স্বাধান চি**ভাই বা** কিনের জন্য-স্থাধীনতাই বা কিনের জনা! যে জাতির হদেশের প্রতি আত্যন্তিক প্রেম আছে নেই জাতিই খাদেশের সাধীনতার জন্য প্রাণ দিতে পারে। প্রেমের 'উত্তেজ-নায় প্রথমে স্বাধীন চিন্তার স্কুর্চ্চি হয়; সেই ক্ষুত্তির ফলিত অবস্থায় জ্ঞানে সার্ক্তেট্রিক ধর্মা-নিয়ম-দকল উদোধিত হয়; অভঃপর ति छिष्कास्तित **एतम् शतिनारम** स्मि**र्-मकुम** निशम बाता जारी ने कार्ट्स विश्वमित इसी **এই क्षरिय प्राचीन क्षित्र स्टेटल** (स क्ष अगुर रहा प्राप्ति करू

াার স্থপর্ম — আর এক জনের বলিয়া দেওয়া শ্বে যদি আমার সাধীন চিন্তাব বিরোধী হয় তবে তাহা আমাৰ প্ৰকানচে—তাহা প্রধর্ম্ম। ফলেশের গহক্ষেত্র ঠিক ঐকগার্টি পুনকুত্তি করা যাইতে পারে, বলা বাইতে পারে যে, অনেশ-৫ে মের উত্তেজনা ৷ সদেশে कातीन विद्यात का कि रह ; (भष्टे का हिन ফলিত অবস্থায় অনেশের জানে মার্ক্টেন বর श्र में-निवान-मकल फेट्याधिक १ श्र ६ छ १ १ १ व CHE जिल्लापरभव हत्या श्रीवर्ष व्या एमसे प्रकर निवम पाता अध्यासन सामानाम । ভ্ৰিক ৰাণ নিধ্যমিত হয় এই এই স্বলেশের জাবাল চিত্রালক্ত স্বর্ঘট স্বলে শের ক্রমণা : ডাক্তক জাতিব বাল্যা **(मध्या वर्षे अपि अस्ति कारान्ति कारान**िकार বিরোধী হয়, ১লে ভাষা দলেশে পর্যা नार किन भाषाता अन्यक्षी दाव १६ क "প্রণ্ডেল ভয়াবহঃ'—অলংখ যে সর্ঘা তাপ-নার প্রশীন চিতার বিরোপ্ত - ,য বর্জ ১৯ল-भूतीक (ना**रकंड क**रक वा (नर्गा अर्थ আরোপিত – তাহা ভয়াবহ। ৫১% সেইন श्रावान विखादक छेकारीया प्रमा अस ८०० মনি স্বাধীন চিন্তাকে দম্ভীয়। কে । প্র कारन भागाजिक भीभम् साम । १५०,४४ দৈশের স্বাধান চিন্তা আরণেরে আচ্চালাক করিতে বাধা হইয়াছিল; ডিছালাল ম্ন ঝবিরা এক একার অরেণকে সংপ্রান্থ হট্যা পড়িয়াছিলেন। একণে আগাদের সাধীন চিম্তার দে ভয় নাই কিন্তু তাহার স্থানে আর এক শুরুতর ভারের পূর্ব্ব-মুচনা দেখা দিতেছে; ইংরাজি শিক। আমাদিগকৈ বল-পূর্ববি নি-क्य विमाज (माठे वहाहेश ना हाएए-এই ति छय्। এक अनुमा रक्षानिया मितन हे मूर्ते द्वीरे माथात्र कदतं - हेश्त्राटकत्। आयादनत নাৰ্থে ক্যোনি-গিরি নিকেপ করিলেই আ-শ্ৰীয় বোৰায় ঘাড় পাতিয়া দিই।

ই উরোপীয় লোকেরা যে আপনাদের সাধীন চিন্তার **স্কৃতি হইতে** আপনাদের স্**যক্ত** বিদ্যা উদ্যোধন করিছা তুলিরাছে – এবং তা-शास्त्र रमने यादीम जिल्लापित मूला (य जादा) দের সমস্ত বিদ্যার মূলাকে ছাপাটিং উঠি-য়াহে—তুল জনমত আ<mark>মারা, মে</mark> দিকপানে বিলা দেখি না। ইউলোপীয় সমস্তাবদা া অভট পালে--ও কেবল ধদি ভারান চিম্নাট্র ভাষার মধ্য সইতে অভর্যান করে— তবে ইউরেপীয় বেদার হল। একেবা**রেই** মগ্ৰহ্ণত প্ৰাংশলৈ বিপ্তিৰ হয় ৷ ভাছা र रेटल ४४८ एवं चंडच इंडाम देवका <mark>निष्ठश</mark> জাণিও সংহল্য কাল্য লাখ । ওকেলারেই বন্ধ धर्मे १ म । धन्या किलालित घणा पृष्टे**र एउथा** বিধ্যান্ত লাল লাগেল চেত্র আল লোকিত लतार १५४१ वर्षेट्र १३ मा**ट्ल**िट्स सिक्रीशम पाइण्यातः जनसम्बद्धाः स्वर्णामा वीवसम्ब হল। পথের পাসবা বলিভাম সম্বলি-হারে অসম কালা কলুলা—আঙএর ছোহা ধতৰ,'' এখন জামিলা বলিতেতি "ইউনোপ স্তিয়েত হৈ অহান ক'বে কেন্দ্ৰ——মত প্ৰবাতিহ कर्णना । जारमं भगु । साम्भासुबान-शिक्षित अत्याज्ञित न्यहत अशास जायता शीता मठ ক্রিতাম, এগন ই ইরোনের গর্মক্ষীত মান-মিক বলে প্ৰানে পানবা গ্ৰীবা নত করি-তেছি '—াবীন চিন্তা পূর্বে আমাদের নেশে নব্য ইউরোপের মত এত প্রবল ছিল ना এই भाष-किन्न अकटन यागाहन्त তাহা নাই বলিলেই হয়। পূৰ্বে অন্ততঃ वातनाक मूनि-वाविटनत मत्ना यादीन-विश्वा পাথা নাড়া দিয়া উঠিয়াছিল ;— এখন এক দিকে ইউরোপীয় পর্যক্রেমের গুরুতার এবং আর একদিকে ভ্রন্ত হিন্দুয়ানি-রূপী মৃত ঘটোৎ-কচের গুরুভার—দুইদিক দিয়া চুইভার আ-নিয়া আমাদের দেশের সাধীন-চিন্তাকে থা-তায় পিসিয়া বৰ করিবার উপক্রম করিয়াছে।

এই উত্তর-সন্ধট হুইতে আমরা নবা সমাজকে क्रका मो कब्रिटन किंडू एउटे छाराव क्रका नारे। সমগ্র মনুর বিধান এখনকার কালোচিত নহে, এ জন্য এখন আমরা তাহা নির্বি-চাবে মানিয়া চলিতে পারি না; ইউরোপের সমগ্র সামাজিক রীতিনীতি আমাদের দে-শোচিত নহে — এজনা ভাহাও আমরা নির্বিং-্টাছে যানিয়া চলিতে পারি না। এ অবস্থায় कहिंग आमार्टित এই या, এ-मिटन स्राधीन চিন্তায়—ইউরোপের যে সমক্ষ রীতি নীতি এ দেশের উপযোগী বলিয়া স্পষ্ট প্রতীর্মান হইবে, তাহা আমরা অসংকোচে গ্রহণ ক-রিব: আবার এ-কালের স্বাণীন চিন্তায়---মমু প্রভৃতি স্বদেশীয় মহাত্মাদিগের যে সমস্ত विधान वर्छगान काटलब উপযোগী বলিয়া প্রজীয়মান হইবে, তাহাও আমরা অসং-েকোলে গ্রহণ করিব। हेश्हारकता अवार्धा আতি 🕇 আমরাও আর্যজাতি,—ইংরাজদিনের সহিত জামাদের এক প্রকার জ্ঞাতি সম্পর্ক; हैश्ताकित्रिगत सर्पा असन व्यत्नक नामकी षाटक यहि। এक नगरम ष्यागादनम मध्य ছিল;—म्। न्यानिहरीत ताकाकारन रमकल অনেক সাম্প্রী আমরা অফরে হারাইয়। क्लिशाहि,--ेर्श्याक्तपत्र आधिधा-तण्ठः धिन নে গুলি পুনীয়ে দুজন বেলে উদ্দীপ্ত হইয়া উঠিতে হুযোগ পায়—তবে তেমন হুযোগ কোন শতেই আমাদের ছাড়া ইচিত হয় না। ইউরোপের বিকর্ট হইতে আমাদের यहमरनाभरमानी माजाजात उनक्रम अर्थन করিবার বৈধ প্রশালী সবিস্তরে বিহত করিয়া বলিবার এ সময় নচ্ছ—এথানে ভাছার ভুই একটি ষত্ম আতাৰ প্ৰদান করিয়াই সাহ হইতেছি। কালের দর্শন-শাস্ত্র এবং আনা **एउ प्राप्ति स्थान-भाव प्रत्येत नगा रहेट** ्रभार गर्म करिया सहित्य देन पूरे नावाच्छल ह (करती देव अवस्थित किन बाद कारा सदद

কিন্তু উভয়ের দোবাংশ উভয়-কর্ত্তক সংস্থেত विज **बर्कः উভয়ের खनाःम छिड्छा सा**ला বৰ্দ্ধিত হইরা নুতন এক সারবান দশন পাস্ত আমাদের দেশে শ্রম গ্রহণ করিতে পারে। আমাদের দেশের পারদ ভত্মাদির নানাবিধ রাসায়নিক প্রকরণ ইংরাজি কিনীয় বিদ্যার সহিত মিলিয়া মিশিয়া নৃতন এক রসায়ন বিদ্যার উৎপত্তি করিতে পারে। চিকিৎসা-বিদ্যা-সম্বন্ধে ঐরপ মিলনের কথা আরো জোরের সহিত খাটে। লোকিক শিপ্তাচার-প্রথাও এমন অনেক পাওয়া যায়, যাহা **সাধারণ আর্যজাতির মধ্যে এককালে পরি-**বাাপ্ত ছিল, — এখন বঙ্গ দেশ হইতে ভাছার অনেক গুলি উঠিয়া গিয়াছে; নব্য বঙ্গে তা-हात्र शूनक्रफीलन जान वह गम नरह। हेहात একটি সামান্য দৃষ্টান্ত— হস্ত-আনোড়ন-রূপ অভিনন্দনের প্রথা; - এপ্রথা হিন্দু স্থানি খোটা মহলে এখনো প্রচলিত আছে; ইউরোপীয় অভিনন্দন-প্রথা এবং ভারতবর্ষীয় অভিনান था भूरप्रत गर्धा क्वल बहेरूकू क्षा जन देव, पूरे रुख पूरे रुख बिन्ना बादनाजून कता थतिया जाटनाएन कता रेक्ट्रानीय अथा-এ ভিন্ন আর কিছুই নহে। প্রিক্ত কালি-नाटमत नगर दर्श रश वामादनत दन्द्र है छै-রোপের অনুরূপ অভিনয়ন-এথা প্রচলিত ছিল ;—পুরাবা রাজার সহিত চিত্ররথ গন্ধ-्कात्र नाकारकारवड मानह, क्रांका वेश कहेटए नागिया बाबालन"चागक्र विशिष्ट्यां है हार कार्यक्त इंश्वांक कमूराह Welcome dear Mean हेरात नंदबरे निविज चाह्य चित्राक्षा हैरू न्यू नदः विकास सम्बद्धित्य अस्ति इति CHA : NO WALLS INCLUDING TO THE WA THE RESERVE STATES Alcata Barrai (gialla)

क्रानं त्रातिक अविदिक्त देशतिक श्री उ ने जिन कारनाहिन श्रीकार्कन जानारमङ करमानवरे श्वाञ्च की किमा के जिक्कारेगा क्रिन, स्म-बादन दमक्रा महिन्द्रनेदक विद्योगिष्टि फटन-শের প্রকৃতি বিকৃত্ব ছাবিয়া কেন-যে আ-মুরা, ভয় করিব আছার কোন কারণ নাই। मार्बोटनत देवन यातीन जनसाय त्यक्त हिल তাহা আমরা হার বিছে, — একণকার কোন কালোচিত পরিবর্তনাক্দি সেই ছারা সামগ্রী वामानिया मनाहेग्रा तम्म, उदव छेन्छे ।-वादवा তাহাকে বন্ধ ৰবিয়া আলিপন করা আনাদি-গকে শেতি পায়। ইউরোপীয় আধুনিক আ্বা রীতি নীতি যদি আমাদের দেং-বর পুর্বাতন আর্যা রীতি-নীতিকে ভম্মের আচ্ছা-দ্ৰ হুইতে টানিয়া বাহির করে, ওবে নৃত্ন-পুরাতনের মধ্যে –গতি এবং স্থিতির মধ্যে – महर्षाह अका वसन पृशेच्छ रश, - हेश कछ ना প্রার্থনীয়।

এ দকল কুদ্র কুদ্র রীতি-নীতি আচার ব্যবহার—যাহা থাকিলেও বিশেষ কোন লাভ নাই-না থাকিলেও বিশেষ কোন হানি নাই, তাহার কথ। এখন খাইতে দিয়া—স্ব-দেশের স্বাধীন-ছিন্তা-প্রসূত ধর্ম্ম নিয়ম সকল কালোচিত গৃতির সৃহিত কিরূপে সৌহাদ-পাশে বন্ধ হইজে পারে তাহাই বিবেচনা कतिशा (पृथा वा'क। जामादमन त्मदमंद दवम ম্মৃতি পুরাণ তক্ত্র হইতে যদি এরপ এক উচ্চ ধর্ম-শান্ত মনুদ্র করিয়া পাওয়া যায়, যাহা बर्डमान हो नव छवछ छाटनव छनटाशी, **उ**ट्ट जुड़ी है नया-बद्धात दिक्ति वक्तन-कार्दा वशार्क् विविवादी। देवन-वृष्टि-शृदान-उटका মাৰিত সারাংশ – বাহার আৰ-এক নাম क्ष्य-जाश क्ष्मित्र द्वान बानद्व ক্তি-চিন্তা-প্রসূত—আৰু জেলদিকে তেনাৰ क्यान कारनाहिन्द्र के ब्रह्म कारनेत महिरमह क्षाने, क्षान जिएक द्वरण लाही नवी-

বলের বিতি সংখাশনের উপর্যাধী, আর

এক বিত্রে তেমনি ভারা নল নলের গতির

অবিরোধী, সামর-ক্লার থেটি আমাদের

চাই সেইটি আমরা ঠিক সময়ে পাইরাছি—

এজনা ভারার প্রতি সবিশেষ মন্ত্রান হওয়া

আমাদের কর্ত্রা।

স্থাবর স্থিতিশীলতা-নিবন্ধন বস্থদেশের শেচিনীয় অভ্-ভাব রামমেহন রাযের বিশাল লন্মকে কত যে তীত্ৰ বেদনায় ব্যথিত ক-রিয়াছিল, ভাছা কাথা<mark>রো অবিদিত নাই</mark> ; আর কোন কুদ্রাজ্ঞ হইলে—যাহাতে বঙ্গের স্থিতি ভাগিয়া লওভও হইয়া যায় তাহারই চেপ্তায় ভিনি আপেনার জীবন উৎসর্গ করি-তেন। কিন্তু রাম্থোহন রায়ের হৃদয় যেমন বিশাল ছিল ভাষার বৃদ্ধিও তেমনি ভীক্ষ ছিল,--একার্বারে প্রেম এবং জ্ঞানের সমান উৎকর্য যদি কোণাও দেখা গিয়া থাকে, তবে ভাগা রামমোহন রায়েই দেখা যায়। রাম-নোহন বায়ের কার্যা দেখিলেই ভাঁহার মনের মহদভাব দেলাপ্যোন দেখিতে পাওয়া যায়; দে ভাব এই যে, বঙ্গ স্বাজের স্থিতি-**ভঙ্গ** না করিয়া ধানে ধীরে তাহাতে গতির **সঞ্চার** क्तिए इहेरत। जिनि एनथिएनन हेश्तां क বিদ্যালয় ভিন্ন গতি সঞ্চারের উপায় নাই, ব্রাক্ষাসমাজ ভিন্ন স্থিতি-রক্ষার উপায় নাই; এই জন্য তিনি স্যাজরূপী তুলাদতের এক मितक खाकागमा**क जन् जात-जक मितक हैं-**-द्राष्ट्र विमानव दार्थन क्रिंद्वन ; यान वर-िएक छेठा हैता नाथ खरत नात वकि नित्य বুঁকিয়া তদতেই দুৰুদে খালত হইয়। প-**जिट्टा नागरबादन बारग्रन पूर्व** ভবিষাহ-बर्डगान्-प्रनी जिल्लाक नेवा वरत्रत छेश्याक ৰিতি এবং গতি ভিনই সাকাতে স্বাসিয়া म्बाइमान सरेबाहिल अरः डारोब क्रा रख विकार निकार कार्या गाण्य रहें। यीव पणी मारामा कि वार्ति वार्ति नारे । দানি সভাতার বিবাহ—খিতির মূল প্রাক্ষান লাল নভাতার বিবাহ—খিতির মূল প্রাক্ষান নাম লাল নগতের মূল , ইংরাজি বিদ্যালয়,—
রাম্মোহন রায় এই-ভিনটি প্রাপনার অটল
কীঠি শুল এবং নব্যবঙ্গের অটন আশ্রয়-শুশু
যুগলং সংখালন কবিয়া পুথিবীর একটি মহং
উপকার সাধন কবিয়া গিয়াছেন; ভবিষ্যতে
ইতার শুভ ফল , , কত দেশ বিদেশ ব্যাপিয়া
পভিবে, এখন আমবা তাহার বাস্পত হয় তো
ভানি না।

#### **নঙ্গীত**

রাগিণী কানাড়া—ভাল ওক**ভালা।** কি গাব আমি কি গুনাব আজি আনন্দ ধান্তে পুরবাদীজনে এনেছি ভেকে ভৌমার ওয়ত'নামে। কেমনে বৰ্ণিব ভোমার রচনা বেমনে রটিব তোমার করুণা, কেমনে গলাব হৃদয় ভাণ टिंगात यथूत टिंग ॥ তব নাম ল'য়ে চন্দ্র ভাবা विजीय भूत्ना वार्टेष्ट । রবি হতে গ্রহে ঝরিছে প্রেম গ্ৰহ হতে গ্ৰহে ছাইছে। অসীয় আকাশ নীল শতদল তোমার কিরণে সদা एम एम, তোষার অয়ত গাগ্রহ্মবাঝারে ভাগিছে<sup>শ</sup>অবিরামে। রাণিণী বাহাব-তেওরা। আৰু বহিছে বসস্ত পবন স্থন Cal गाति श्रंगक रह। কত আইন প্রাৰ্ক্তাজি গাহিছে গান होद्दं खार्गांति भारन् षानत्म रह। দলে তোমার আলোক ছালোক ভূলোকে MAN-@414-014CH-

किन-त्नाषि शादिए केला छ। वाँचि नाहर्ष से एह তব মধুর-মুখ-ভাতি-বিশ্বসিদ্ধ প্রেম-বিকশিত অন্তরে-কত লক্ত ডাকিছে "নাখ যাচি দিবস র**জনী তব সঙ্গ** হে।" উঠে সন্ধনে প্রান্তরে লোক লোকান্ডরে যশোগাথা কত ছন্দে হে। ঐ ভব শবৰ প্ৰভু অভয়পদ তব छत्र मानव मुनि वत्न (र ॥ রাগিণী বেহাগ—ভাগ বং। কেন জাগে না জাগে না আৰা প্ৰাৰ। নিশি দিন অচেতন বুলি-শ্যান। জাগিছে তাবা নিশীণ শাকাশে জাগিছে শত্ত অনিমের নয়ান। বিহুগ গাহে বনে ফুটে ফুলবাশি, চক্রমা হাসে স্থগাময় হাসি। ত্ব মাধুনী কেন জাগে না প্রাণে কেন হেরি ন, তব প্রেম-ক্য়ান। পাই জননীর অযাচিত স্লেহ ভাই ভণিনী মিলি মধ্ময় গেহ। বত ভাবে সদা তুমি আছু হে কাছে কেন করি তোমা হতে দুরে প্রাণ। রাগিণী মিশ্র কেদারা—একডালা। মীদের চাহিয়া তোমা**রে ভূলেছি** তারা ত চাহে না আমারে। ভারা আনৈ ভারা চলে যায় দুরে কেলে যার মরু মাঝাবে। তুদিনের হাসি তুদিনে ফুরায়-দীপ নিভে বার আঁখারে। (क तरह उपन मूहाराज नवन, ... ডেকে ডেকে মরি কাছারে। যাহা পাই ভাই ঘরে,নিয়ে খাই

বদের আইন আই পিন্যাসার ভূমে মুক্তিছখ পাথারে, রবি শশি তারা কোখা হয় হার। দেখিতে সী শক্তি তোমারে।

নামিনী হাবির। তাল ব্রুফ কি তাল।
নাম গ্রহন তব-সংকটে নাম কে জীবন সম্বল
নাক হৈ বন্ধু তুমি সঙ্গে অবিচল ভূথর আশ্রয়।
নীমণ সিন্ধু তরঙ্গ নাদ নামে তব নীরব
শরণ যাচি হে করুণা সিন্ধু আনন্দ সাগর।
প্রাণেশ্বর প্রাণ বিতরো,
হাদি মাঝে আসি বন্ধন ঘুচাও।
আছি নাথ দিবা নিশি ঐ চরণ-তলে
প্রসাদে বঞ্চিত ক'রো না।

রাগিণী কাকি--ভাল বং।
তার' তার' হরি দীন জনে।
ভাক তোমার পথে করুণাময়
পূজন-সাধন-হীন জনে।
অকুল সাগরে না হেরি ত্রাণ,
পাপে তাপে জীর্ণ এ প্রাণ,
মরণ মাঝারে শরণ দাওহে

রাখ এ চুকাল কীণ জনে।
বেরিল যামিনী নিভিল আলো,
রুথা কাজে মম দিন ফুরালো,
পথ লাহি প্রভু পাথের নাহি,
ভাকি ভোমারে প্রাণপণে।
দিক্ষারা সদা মরি যে ঘুরে
বাই ভোমা হতে দুর স্নদূরে,
শুরাই রুয়াত্ব পুরে

আন্ধ এ লোচন মেতি খনে।

নানিনা ৰয়ন জুপালি জালী একতালা।

তোমার কথা হেথা কেহত বলে না,

করে তথ নিছে কোনাহল।

হুবানাগরের জীরেতে বনির।

পান করে তথ্ হলাহক।

পান করে তথ্ হলাহক।

পান করে তথ্ হলাহক।

ক্ষেত্ৰ যায় ভেলে, ভোবে বৃদ্ধ লোকে,
ক্ষেত্ৰ দিবালিলি টলমল।
আমি কোৰা যাব কাছালে ভবাব,
নিয়ে বায় কৰে টানিয়া,
একেলা আমারে কেলে যাবে লোবে
অকুল পাখারে আনিয়া।
স্থানের ভরে চাই চারিয়ারে,
আঁথি করিতেছে ছলছল্।
আপনার ভারে মরি যে আপনি
কাঁপিছে হুদর হীনবল।

রাগিনী গোঁড় মল্লার। তাল কাওরালি।
তোমার দেখা পাব বলে এসেছি যে দখা
তান প্রিরত্ম হে, কোথা আছ লুকাইরে,
তব গোপন বিজন গৃহে লয়ে যাও।
দেহগো সরারে তপন তারকা,
আবরণ সব দূর কর হে,
মোচন কর তিমির,
জগত আড়ালে থেক না বিরলে
লুকারোনা আপনারি মহিমা মাঝে,
তোমার গৃহের দার থুলে দাও।

রাগিণা দেশ—তাল কাওয়াব্র।
হায় কে দিবে আর সাস্ত্রনা।
সকলে গিয়েছে হে তুমি থেওনা,
চাহ প্রসন্ন নয়নে প্রভু দীন অধীন জ্বে।
চারি দিকে চাই হেরি সা কাহারে,
কেন গেলে ফেলে একেলা আঁহারে,
হের হে, শুনা ভবন ম্য।

রানিনী বিবিট-জান চোতাল।
তোনারি মধুর হাপে ভরেছ জুবন,
মুগ্র নয়ন মন্ম প্লকিত মোহিত মন।
তর্কে অরুণ নবীন ভাতি,
প্রিলা প্রাসহ রাতি,
রূপ-রানি-বিক্লিড তকু কুত্র বন।
ভোষা পানে চাহি সকলে জুক্র,
রূপ হেরি কাকুল অন্তর,

# \*\*\*

# তত্ত্ববোধিনী পত্তিকা

্ল তোমারে ঘোরঃ। ফিরো**নর**ভর তো**মার** প্রেম চাহি।

উঠে সন্ধাত তে:মার পানে,
গ্রান পূর্ব প্রেম । গ্রান
তোমার চরণ করে ১ লগে নিখিল জন।
রাগিণা ভিলক কামেদ কাল দেঁজাল।
নয়ন বাহিছে নাল কালা শত পোয়ে কা ফাল কাল শত পোয়ে কা ফাল কাল শত পোয়ে কা ফাল কাল শত দান কোল কাল দ্বা, তোমাকে পাইলে, বি খন কা লাই, আনন্দ সিম্মু হৃদি উথলে।
গ্রাধিন প্রজ্জ-- গ্রাক্ত কাল্যালি।

ত্ব ভেষ প্রধারদে মেরেছির,
তুরেছে মন জুরেছে।
কোপা কে আছে নাহি জানি,
তোনার মাধুরী পানে মেতেছি
তুরেছে মন জুরোছে।
বাহিনী নিয়ু বিজয়। তার তেবার

ক্ষা বিশ্ব বিশ্ব কাষ্ট্র বিশ্ব কাষ্ট্র কাষ্ট্র কোলেন্দ্র জনাবির পারে জ্যোতিশ্যয়।

ক্ষা কিন্তা পিতে জনাবির পারে জেয়াতিশ্যয়।

শোক-তাপিতে জন সবে চল

গ্ৰুল চ্বাচন ।
কল ত্থ হবে মোচন ।
শাভি পাইবে হৃদ্ধ মাঝে
প্ৰেণ জাগিবে অন্তৱে ॥
কত গেগীল প্ৰবি মানগণ
লা জানি কি ধ্যানে থগন ।
ভিষিত লোচন কি অমৃত বন পানে
ভূমিল চরাচর ।
কি ধ্যাম্য গ্রে কানিকে অবগ্র

কি প্রাময় গান গাইছে স্বগণ; বিমল বিভূগুণ-বন্দনা। কোটি চন্দ্রভাৱা উলসিত নৃত্য করিছে অবিস্থামে।

#### জরপুর।\*

দান জনপুর রাজে, কেন্ন স্থলর সাজে সাজায়েছে নুগরী আপন, প্রাচীর পাথাণে গাঁথা বিপক্ষের সর্মান্ত্রাথা, কার সাধা করে তা লগুন।

\* গঙ বারের পজিকার স্থানাজাবে এই প্রয়াটী সভগ হয় নাই! শারদ জাহুনী যেন পুরুত্তিক পথ ছেন্
তট তুই রাঙা হন্দ্য-সারী,

দশি দিকে দশা ছার : লোহার ভোরণ ভার বিদারিতে বজুমানে হারি।

উঠা রাজপুত বার বণে বন্দু বাছ স্থির স্থির দাই তির্যাক নয়ন,

তীক্ষ্ণ অসি-অস্ব করে ্জাতীর গোরব ভরে শত তথি করিছে রক্ষণ।

্রিলীশ-বিজ্ঞানার এখানে বড়ই ধীর ধার যথা প্রশান্ত মাগ্র,

নেয়ে প্রতিরোধ নাই। শেও ক্লেড ভাই ভাই শেনত সংমধ্যের স্কর।

াুব্রে প্রতিরোজে । মুনির নান্য লোজে নান্য ঋষির কলা তার

নীতে নির্বায়েনী করে। যা**ঠে শিশি মুগ চরে** হাসি হালি জাফুতি **তুলায়।** 

রাজার কান্দারম ে দেব ভগদীর বৃষ্যা 🌌 কোনে ব্যালান ব্যালান ক্রালান ক্রালান ব্যালান ক্রালান ক্র

সুগ-মুগ ্টেড্ড টে বিশের প্রকৃতি লুঠে হেন যেন ভাবিয়াছে ভূনে।

অপন্ন হন্দু কেশ, হিন্দু ভোজা, হিন্দু বেশ, হিন্দু রাচি হিন্দু-প্রিরতা,

ংক্তাবে হিন্দ্কর্ম, ভিন্দু মঠে দান শর্মা। এই খানে হিন্দু স্বাধীনতা।

স্থাবীন সরল ভিত্তে নিজ নিজ যা**ন বিতে** করে বাল হিন্দু স্কুত বালা,

হিন্দ করে চিত্র চাঞ, সদেশী স্থানর কার্রে, খান লভ্য প্রস্তেরের মালা।

অহিংনা পরম ধর্ম হিন্দু হুদুরের মর্ক্তর ভাবে ভাব কলে না বিনাশ

করে না কাহারো ভয়, হাদে হাদে বিনিয়

জাহ্বাবে ছাড়ি দূরে, দূর স্থাবন স্থার

लाहीन। येम्ना পविश्वे

প্রাচীন হবন কীর্ত্তি করিয়া প্রণাথবর্তী মুহেশের মহা ইচ্ছা স্থার

পূজ্যপাদ গুরু সনে স্বল্পারার মনে

রবির রজনী গতে জ্রমে দক্ষিণের প**্র** যেতে গুরুদেবে অভিপ্রায় ।